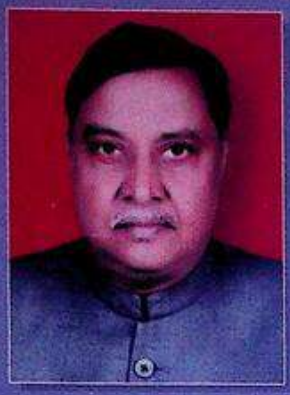
भोजपुरीभूषण

(मानग्रन्थ : इं. राजेश्वर सिंह)



प्रधान सम्पादक
प्रो० रामदरश राय

अतिथि सम्पादक
डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी



राजेश्वर सिंह कऽ मौलिक रूप एक अभियन्ता कऽ रहल बा, उनकर अभियन्ता रूप इनके साहित्य में भी लखल जा सकेला। जइसे एक काबिल अभियन्ता हमेशा नयी खोज, नया प्रयोग करेला, ओइसे राजेश्वर सिंह कऽ लेखकीय अभियान्त्रिकी नवप्रयोग ओर झुकल बा। अउर लेखक कविता-कहानी-उपन्यास-आत्मकथा लिखले में बाटें तऽ ई लेखक-अनुवादक कऽ कठिन डगर पे दउरत बा। उनकर इहे हुनर उनके अवरो भोजपुरी साहित्यकारन से अलग बइठावत बा। लीक छोड़ि के चलल उनके स्वभाव-कुल आ संस्कार में बा। ऊ शायर भी बाटें, सिंह भी सपूत भी।

ई मानग्रन्थ एक शब्दकोष के रूप में भी देखल जाई। हिन्दी-भोजपुरी दूनो भाषा में आलेख छपल बा। जदि येह ग्रन्थ के भाषाकोष पे कवनो शोधार्थी खोजबीन करी तऽ ओके हजार गो नया शब्द मिलि जाई, जवन 21वीं शताब्दी के शब्दयात्रा में देखाथी देत बाड़ें। ज्यादातर लेख शुभकामनाधर्मी बनिके, ग्रन्थ के शब्दसंकुल में उतरि के लेखक कऽमनोबल द्विगुणित करत बाटें। मगर अनुपात में अधिक आलेख राजेश्वर सिंह के बहुआयामी व्यक्तित्व अउर रचनात्मक अवदान पे रोशनी बिखेरत बाड़ें।

- प्रो0 रामदरश राय (डी.लिट्.)
(प्रधान सम्पादक)
अनद्यतन आचार्य : हिन्दी विभाग
प्राक्तन निदेशक : पत्रकारिता संस्थान
अतीत अधिष्ठाता : छात्र कल्याण
दी.द.उ., गोरखपुर विश्वविद्यालय एवं
अध्यक्ष, पूर्वांचल हिन्दी संस्थान गोरखपुर
मोबाइल : 9839809558

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरीभूषण

(अभिनन्दन ग्रन्थ : इं. राजेश्वर सिंह)

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरीभूषण

(अभिनन्दन ग्रन्थ : इं. राजेश्वर सिंह)



अतिथि सम्पादक

डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी

प्रधान सम्पादक

प्रो० रामदरश राय

www.bhojpurisahityangan.com

- प्रकाशक :
  लोकायत प्रकाशन
  बी-२, सत्येन्द्र कुमार गुप्त नगर
  लंका, वाराणसी-२२१ ००५

- संस्करण : प्रथम, सन् २०२५ ई०

- प्रतियाँ : ६२५

- © इं. राजेश्वर सिंह

- मूल्य : रुपया १५००/-

- सहयोगी संस्था :
  भोजपुरी संगम
  ६६, खरैया पोखरा (मेडिकल रोड)
  बशारतपुर, गोरखपुर पिन-२७३००४

- **भोजपुरीभूषण**
  प्रधान सम्पादक-प्रो० रामदरश राय
  ISBN : 978-81-87760-54-2

- मुद्रक :
  पूर्वांचल प्रिंटर्स
  गायत्रीनगर, पाण्डेयपुर-वाराणसी
  मोबाइल : ***09415221744***

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भूषण

(मानग्रन्थ : इं. राजेश्वर सिंह)

संरक्षक :

प्रो० रामदेव शुक्ल

डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय

डॉ० रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी भाई'

श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग'

श्रीमती राजकुमारी सिंह

प्रधान सम्पादक :

प्रो० रामदरश राय

अतिथि सम्पादक :

डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी

प्रबन्ध सम्पादक :

ले० कर्नल नवीन सिंह

इं. प्रवीण सिंह

सम्पादक मण्डल :

सुभाष चन्द्र यादव

चन्द्रेश्वर 'परवाना'

डॉ० फूलचन्द प्रसाद गुप्त

कुमार अभिनीत

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय.....✍

लीक छाड़ि तीनों चलें सायर सिंह सपूत

ई बहुतायत में देखाई पड़ल बा की अपने पे थोपाइल कामकाज आ जिम्मेवारी से तनि हटि के, नयी डगर पकरि के जे चलल बा, नया खोजले बा, नयी लकीर खिंचले बा, नयी मूरति गढ़ले बा, ऊ जल्दी अँजोर पा गइल बा। नाम कमा लिहले बा। इज्जत आ सोहरत पा गइल बा। सुन्दरकाण्ड बनि उठल बा। इतिहासपुरुष बनि के अमर हो गइल बा। कला-साहित्य-विज्ञान, तकनीक-चिकित्सा-अभियान्त्रिकी आ समाजसेवा से जुड़ल अदमी जदि बनल-बनावल राहि पे चलल बा आ की दउरल बा तऽ ओके केहू नाहीं तकले बा, ऊहे मनई जदि कवनो नवकी पगडण्डी पकरि के धावल बा आ की नवका कुँआ खोदि के ओकर पानी पियले बा तऽ समझे के चाही की ई बन्दा जरूर कुछ करी। नया कमाल देखाई। भारतेन्दु बाबू नाहक नइखे कहि गइल बाटें की- **''लीक छाड़ि तीनों चलें सायर सिंह सपूत''।**

भाषाकार आ साहित्यकार लोग ई करतब-कमाल ढेर देखवले बाटें। कबीर बुनकर रहलें, लेकिन भोजपुरी बोली-भाषा कऽ थाहि थामि के खूब अगरइलें। तुलसी पाठशाला अउर आश्रम पद्धति में पढ़िके संस्कृत आ सास्त्र कऽ ग्यान खूब बटोरलें, लेकिन निहाल भइलें अवधी के लोकभाषागार में उतरि के। जार्ज ग्रियर्सन, इण्डिया में अंग्रेज कलक्टर बनिके अइलें, लेकिन 'लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' लिखि के भारत के सगरो नामी भाषा कऽ अध्ययन-शोध कऽ गइलन। ऊ हिन्दी अउर भोजपुरी दुनहू कऽ भौगोलिक भाषिक तस्वीर खड़ा कइलें। मैक्समूलर बहरे से हिन्दुस्तान में आ के, वेद के नया शोधाधार आ मौलिक भाष्य दे के नयी भीति उठवलें। पं० विद्यानिवास मिसिर संस्कृत कऽ विद्वान-विशेषज्ञ रहलन, लेकिन हिन्दी निबन्ध के ललित जमीन पे उतरि के नया पताका फहरउलें। डॉ० रामविलास शर्मा अंग्रेजी कऽ विद्वान् रहलें, लेकिन हिन्दी भाषा आ आलोचना के आँखि पे नया चश्मा पहिरा के नयी राह देखउलें। कुबेरनाथ राय अंग्रेजी कऽ शिक्षक-आचार्य-प्राचार्य रहलन, लेकिन उहो चमकलें हिन्दी के

www.bhojpurisahityangan.com

ललित कान्तार में। अइसने जुगानी भाई, सत्तन मिसिर, चन्द्रेश्वर परवाना, नर्बदेश्वर सिंह (मास्टर साहब), रागनवल मिसिर, त्रिलोकीनाथ उपाध्याय, रामानन्द राय गँवार, भीम प्रसाद प्रजापति आदि अउरो तमाम कवि-साहित्यकार हिन्दी-भोजपुरी कऽ कवनो लाइसेंसधारी डिग्री नइखे बटोरले बाटें, लेकिन दूनों भाषा (हिन्दी-भोजपुरी) में इनकर लिखन्त-पढ़न्त-बोलन्त तनिको पातर नइखे। भोजपुरी भाषा साहित्य कऽ आ भोजपुरी आँचल कऽ ई लोग चटक हस्ताक्षर हँउवें। ई कुलि कहले आ लिखले के बहाने हम कहल चाहत बाड़ीं की उत्तर प्रदेश जल निगम में सहायक अभियन्ता से अधीक्षण अभियन्ता पद तक आपन सगरो सेवा आ जिनगी खपा देवे वाला एक इन्सान आजु भोजपुरी कऽ भाषा सेवक आ साहित्यपहरुवा बनि के एक बड़वर 'मातृभाषा-यज्ञ' करत बा। नयी रेखा खींचत बा। विज्ञान आ अंग्रेजी कऽ ई भाषा-पण्डित अपने मातृभाषा भोजपुरी कऽ कीर्तन-वन्दन करत बा। संस्कृत अउर हिन्दी में पसरल कथा-आख्यायिका-काव्य कऽ भोजपुरी भाषा में अनुवादित रूप गढ़ि के अपने पुरखा भाषा कऽ पुनरुद्धार करत बा। आजु के उत्तरआधुनिक भाषा में कहल जा तऽ पूर्वी उत्तर प्रदेश कऽ ई भाषावैज्ञानिक भोजपुरी-भाषा कऽ 'सिक्सलेन' तइयार करत बा। येह नाते ओह 'भोजपुरी-भाषापुरुष' कऽ मान बढ़ावे के चाहीं, अभिनन्दन करेके चाहीं। येह उछाह आ हुलास से भोजपुरी भाषा कऽ मान बढ़ी। भोजपुरी रचनाकारन कऽ मान बढ़ी। बाबू राजेश्वर सिंह कऽ भोजपुरी-कलम औचक चारो धाम कइले कऽ चौचक पुन्नि बटोरि लेई। महाकुम्भ में कल्पवास कइले कऽ सुफल अपनिये जनमभूमि आ करमभूमि में उठा लेई।

'भोजपुरीभूषण' इं. राजेश्वर सिंह कऽ कलम खालीभर भोजपुरी-भाषा में नइखे थिरकल बा। खड़ीबोली हिन्दी के इलाका में भी निम्मन आवाजाही बनउले बा। लेखक के रचना-संसार में झाँकल जा तऽ पहिलकी कलमयात्रा 'एक कहानी की आत्मकथा' (२००३) से शुरू भइल बा। फिलहाल, आजु तक के साहित्ययात्रा कऽ उनकर अन्तिम पड़ाव बा 'भोजपुरी योगी कथामृत' (२०२३), जवन भोजपुरी भाषा में अनुवादित होके कवनो छतनार बरगद नाईं पसरि के छाया देत बा, शोध-सर्वेक्षण कइले पे इं. राजेश्वर सिंह कऽ अब तक कुलि बीस किताबि छपल लउकलि बा। बारह गो भोजपुरी में आ आठ गो हिन्दी में।

भोजपुरी वाली किताबि बाटी-

१- **जिनगी कऽ दूबि हरियाइल** (वर्ष २००४), बारह शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह।

२- **कल्यान कऽ जुगति** (वर्ष २००७), अट्ठाईस निबन्ध-संग्रह।

www.bhojpurisahityangan.com

३- **पढ़ी समझीं मनन करीं** (वर्ष २०१६), सन्देशवाही लघुकहानियन अउर मननीय लघुनिबन्धन कऽ पुस्तिका।

४- **भोजपुरी भागवत कथा-सार** (वर्ष २०१८), सम्पूर्ण भागवत कऽ भोजपुरी भाषा में कथानुवाद।

५- **राम पियारा साधु-सन्त** (वर्ष २०१९), ५१ रामभक्त साधु-सन्तन कऽ जीवनवृत्त, भोजपुरी भाषा में।

६- **श्याम पियारा साधु-सन्त** (वर्ष २०२०), ३८ कृष्णभक्त साधु-सन्तन कऽ जीवनरेखा, भोजपुरी भाषा में।

७- **भोजपुरी महाभारत** (वर्ष २०२०), व्यास-विरचित महाभारत के अठरहो पर्व कऽ भोजपुरी-गद्यानुवाद।

८- **दीक्षागुरु** (वर्ष २०२०), दीक्षोपदेश देवे वाले २१ सन्त-गुरु-आचार्य कऽ परिचय-अवदान, महिमा-प्रताप कऽ आख्यान, भोजपुरी-गद्य में।

९- **घरेलू नुस्खा** (वर्ष २०२०), घर-रसोई, पेड़-पौधन कऽ औषधीय उपयोगिता अउर पानी के महत्ता पे भोजपुरी-काव्यभाषा में ५० छन्द।

१०- **भोजपुरी रामायण** (वर्ष २०२१), श्रीराम के अवतार आ जलसमाधि के लेके २९ खण्ड में कथाचर्चा, भोजपुरी-गद्य में।

११- **भोजपुरी पंचतन्त्र** (वर्ष २०२२), संस्कृत भाषा में रचल पंचतन्त्र कऽ ६८ कहानियन कऽ भोजपुरी-गद्यानुवाद।

१२- **भोजपुरी योगी कथामृत** (वर्ष २०२३), परमहंस योगानन्द जी महाराज द्वारा लिखल आत्मकथा योगी कथामृत के सगरो ४९ प्रकरण पे भोजपुरी गद्यभाषा में विमर्श व भाष्य, कथा शैली में।

हिन्दी वाली किताबि हयी-

१- **एक कहानी की आत्मकथा** (वर्ष-२००३)

२- **एक कहानी बीच में है** (वर्ष-२००४)

३- **सुख जागे दुःख भागे** (वर्ष-२००४)

४- **श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ** (वर्ष-२००४)

५- **गाँव से जब शहर आ गये** (वर्ष-२००५)

६- **जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी** (वर्ष-२००६)

७- **जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ?** (वर्ष-२००७)

८- **नसीब अपना-अपना** (वर्ष-२००७)

www.bhojpurisahityangan.com

इं. राजेश्वर सिंह के मानग्रन्थ के सम्पादकीय सम्भाग में उनके रचना-संसार कऽ ई फेहरिस्त साहित्य-पिपासु भइया लोगन के तनी अगूढ़ आ अप्रासंगिक बुझायी। लेकिन ई कुल सौंहारे ले अइले कऽ हमार एक मकसद ई उम्मीद भरल भविष्य देखवले कऽ बा की भोजपुरी भाषा-साहित्य कऽ एक बड़वर कोठार कऽ अभिरक्षक राजेश्वर सिंह के कथापरक आ अनुवादपरक रचनात्मक अवदान पे अब शोधकार्य हो सकेला। दूसरे, ई बाति की भोजपुरी-गद्य भी अइसने बरियार लेखक के पाके गर्व से कहि सकेला की अब हमार इलाका साहित्य के कवनो इलाका से कमजोर-पातर नइखे। भोजपुरी आ हिन्दी कऽ काव्यसागर जेतना लमहरे ले पसरल बा, ओही के आजू-बाजू हमरो गद्य के बइठल आ की ठाढ़ देखल जा सकेला। अब तऽ हमरे लग्गे गद्य कऽ अछोर कथाभाषा बा, नाट्यभाषा बा, निबन्धभाषा बा, आत्मकथाभाषा बा, अनुवाद कऽ रचनाभाषा बा, चलचित्र जगत् में पहुँचल संवादभाषा पहिले से बा। शोध जगत् आ आलोचना-संसार भी अपने सरहद में अइले-गइले कऽ अनुमति दे चुकल बा। साहित्य के गद्यलोक में उतरे खातिर आ आपन चमक-दमक-हनक देखावे खातिर जेतना उड़ान होखे के चाही, ऊ सब भोजपुरी के वर्तमान गद्यसाहित्य में ढूढ़ि के खतियावल आ देखावल जा सकेला। येह मौलिक विजन आ अन्वेषी मिशन के सामने ले आवे के खातिर हम अपने सम्पादकीय में लेखक राजेश्वर सिंह के भोजपुरी रचना-संसार (खासतौर पे भोजपुरी गद्यलोग) कऽ ठोस झलक देखवले कऽ आग्रह बनउले बाटीं। **'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति'** (आचार्य दण्डी) जइसन साहित्य-कसौटी संस्कृत-हिन्दी-भोजपुरी में तब्बो रहल, अजुवो बा। बिना ठोस गद्य के कवनो भाषा साहित्य कऽ मजिगर पहिचान नाहीं हो पावेला।

येह लेहाज से देखल जा तऽ गोरखपुर में संस्थापित संस्था 'भोजपुरी संगम' भोजपुरी-खातिर बड़वर काम करति बा। सत्तन मिसिर कऽ लगावल ई भोजपुरी-बिरवा आजु छायादार हो उठल बा। कुमार अभिनीत येह भाषावृक्ष के बराबर खादि-पानी देत बाड़ें। ओकर डारि-पात फइलावे खातिर तमाम भोजपुरी भाषाकार अउर विद्वान् लोगन के ऊ जोड़ले बाटें। जुगानी भाई, पराग जी, सामेश जी, अक्षयवर जी, आचार्य रामदेव शुक्ल जी, रामदरश राय, आद्याप्रसाद द्विवेदी जी, चित्तरंजन मिश्र जी, विमलेश मिसिर जी, रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी जी, फूलचन्द प्रसाद गुप्त जी, चन्देश्वर परवाना जी, धर्मेन्द्र त्रिपाठी जी, अजय 'अनजान' जी, भीम प्रसाद प्रजापति जी, ओमप्रकाश आचार्य जी, नर्बदेश्वर सिंह मास्टर साहब, केशव पाठक 'सृजन' जी, बागीश जी, आतुर जी, वीरेन्द्र मिश्र, दीपक जी, ब्रजेन्द्रनारायण जी जइसन अवरो भोजपुरी साहित्यकार आपन अशेष अर्पित करत बाड़े। गोरखपुर के येही 'भोजपुरी-संगम' अखाड़ा में उतरि के राजेश्वर सिंह भी,

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भाषा-साहित्य कऽ धूरि अपने माथे चढ़उले बाटें। हर 'बइठकी' में आवत-जात, सुनत-सुनावत, बोलत-बतियावत, गत्ते-गत्ते आजु असाधारण लेखक हो उठल बाड़ें। अपने परिश्रमी आ लगनशील व्यक्तित्व के बूते इं. राजेश्वर सिंह आजकल 'भोजपुरी संगम' कऽ अध्यक्ष बाड़ें। राजेश्वर बाबू कऽ इंजीनियर वाला रूप उनके भोजपुरी वाले लेखक-रूप के सामने बइठले में संकुचित बुझाला। ओइसे भी उनके एक इंजीनियर पे उनकर बीस किताबि भारी बा। हजार-दू हजार लोग जानत होइहें कि गोपालपुर स्टेट कऽ रहवइया राजेश्वर सिंह इंजीनियर रहलन। लेकिन, आजु करोड़ लोग जानि उठल बा की सिंह साहब भोजपुरी-गद्य कऽ एक पोंढ़ आ प्रौढ़ लेखक बाटें।

दरअसल, सकल लोकव्यवहार-बातचीत आ जीवन-जगत् कऽ भाषा गद्य हवे। निराला कहि गइल बाटें कि,"**गद्य जीवन-संग्राम की भाषा है।**" मैनेजर पाण्डेय तऽ यहाँ तक कहि गइल बाटें की, "**हम व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन गद्य में ही जीते हैं। असल में, हमारे छोटे और बड़े गद्यमय जीवन में कविता के कभी-कभी कुछ क्षण ही आते हैं। इस तरह गद्य ही हमारे जीवन की वास्तविक भाषा है। गद्य के विकास का अर्थ है जीवन का विकास।**" गद्य भाषा में हर तरह कऽ अभिव्यक्ति सम्भव बा। जबकि पद्यभाषा आनन्द-उपदेश आ स्मृति-सूत्र कऽ भाषा हवे। जीवन अउर सतत संवाद-व्यवहार कऽ भाषा गद्य भइला के नाते येकर उपयोगिता पद्य कऽ बनिस्पत अधिक बा। पद्य में दिन-रात जुगाली सम्भव नइखे। लेकिन गद्य में हास्य-विनोद-व्यंग्य, लिखब-पढ़ब-बोलब सब सम्भव बा। भोजपुरी-हिन्दी कऽ गद्य-महिमा बीसवीं सदी कऽ साहित्य-सौन्दर्य रहल बा। एकीसवीं सदी में तऽ ई अउर चटक आ सुन्नर हो उठल बा। अपने शुरुआत में भोजपुरी कऽ गद्य लड़खड़ा के चलल बा, कुछ लँगड़ा के दउरल बा। लेकिन पिछले ढाई-तीन दशक से सोझ खाड़ होके सरपट दउर लगावत बा। हजारी प्रसाद द्विवेदी, उदयनारायण तिवारी, कृष्णदेव उपाध्याय, विवेकी राय, विद्यानिवास मिश्र, रामदेव शुक्ल, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अरुणेश नीरन्, आद्याप्रसाद द्विवेदी, रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी भाई' जइसन वरिष्ठ भोजपुरी गद्यकारन कऽ भोजपुरी भाषा मानक गद्यभाषा कहल जा सकेला। येह मानक भाषालीक पे आपन सधल कलम चलावे वाला कुछ नया गोरखपुरी भाषाविद् भी देखात बाड़ें। जवने लेखकन में उल्लेखनीय बाड़ें-फूलचन्द प्रसाद गुप्त (भोजपुरी लोक, लोकगन्ध, आँखिन देखी), नर्बदेश्वर सिंह मास्टर साहब (भंवरा उपन्यास), रवीन्द्रमोहन त्रिपाठी (पंण्डिताइन रेखाचित्र), आद्याप्रसाद द्विवेदी ('नेह कऽ नाता' कहानीसंग्रह), भीम प्रसाद प्रजापति (दूसरा भारत, कहानी-निबन्ध संग्रह), आ अब इं. राजेश्वर सिंह (भोजपुरी महाभारत, दीक्षागुरु, भोजपुरी रामायण, भोजपुरी योगी कथामृत-

www.bhojpurisahityangan.com

सगरो अनूदित गद्यभाषा)। दर्जनाधिक किताबिन में लिखल भोजपुरी भाषा में भूमिका आ येतने समीक्षा भाषा के एक साथ कवनो एक जिल्द में जोड़ि के देखल आ पढ़ल जा तऽ डॉ० फूलचन्द गुप्त के अनुसार 'भाषाप्रहरी' कऽ सगरो भोजपुरी-अभिलेख एक 'मानक भोजपुरी' गद्यभाषा आ की मानक भोजपुरी समीक्षाभाषा कऽ किताबि नवेक आकार में आस्वाद दे उठी।

येह प्रसंग कऽ प्रसंग उठवले कऽ पाछे हमार मनसा बा की भोजपुरी के जदि लोकव्याप्ति देवे के बा, विश्वमंच पे खड़ा करे के बा, तऽ ओकर एक मानकभाषा गढ़े के परी। भोजपुरी-व्याकरण कऽ नइकी रचना करे के पड़ी। भोजपुरी भाषा कऽ अलगे से, भोजपुरी साहित्य कऽ फिर से प्रामाणिक इतिहास तइयार करे के पड़ी। भोजपुरी शब्दकोष कऽ निर्माण करे के पड़ी। येह काम में कुछ भाषामर्मी लोगन कऽ प्रयास-अवदान सराहनीय अउर प्रेरक कहल जा सकेला। जइसे 'भोजपुरी-व्याकरण' कऽ पुस्तक (डॉ० शुकदेव सिंह) आ 'भोजपुरी-शब्दकोश' कऽ ग्रन्थ (श्री चन्देश्वर 'परवाना')। अइसने, भोजपुरी के मानक भाषा रूप पे आ ओकरे साहित्येतिहास पे भी प्रामाणिक-व्यवस्थित किताबि तइयार करावे के पड़ी। ई कुलि काम जब हो जाई तऽ भोजपुरी कालजयी भाषापीठ पे बइठि जाई, विश्वभाषा के मंच पे भी लउकि जाई। ई काम भी इं. राजेश्वर सिंह के सउपल जा सकेला। उनके दिल में साहित्य-संवेदना बा आ विज्ञान कऽ बुद्धि कौशल भी। परिश्रमी आ तल्लीन मन बा। अपने अध्यक्षता में 'भोजपुरी-संगम' के संयोजक के ई नवकी स्वप्रिल संकल्पना थमावे के चाहीं। असम्भव कुछ भी नाहीं बा 'का चुप साधि रहे बलवाना'। कवनो काम खातिर केहू के ओकरे बल-पौरुष कऽ बोध करावल जा त ऊ हनुमान नाईं समुद्र लाँघि जाई। अंग्रेज गवर्नर जनरल जॉन गिलक्राइस्ट कऽ जज्बा आ नेक इरादा देखल जा सकेला। ऊहो एक ठों साहब रहल। कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज के देखरेख में ऊ हिन्दी-गद्य कऽ लिखायी शुरु करवलस, लल्लू लाल, सदल मिश्र आ इंशाअल्ला खाँ जइसन हिन्दी-विद्वानन के जोड़ि के।

येह भाषा पण्डितन कऽ कलम अगरा के चमकल। लल्लू लाल 'प्रेमसागर' लिखलें, सदल मिश्र 'नासिकेतोपाख्यान'। दूनों ग्रन्थ खड़ी बोली गद्य में। येही समय में इंशाअल्ला खाँ 'रानी केतकी की कहानी' लिखि डरलें, जवन हिन्दवी में रचाइल रहल। येह लेखकन कऽ हिन्दी-गद्य आरम्भ में लचर आ बाँगुर रहल बा। लेकिन हिन्दी-गद्य कऽ बीजांकुर येंही से लउके लागल। आगे चलिके प्रौढ़-परिष्कृत गद्य सामने आइल। आधुनिक युग 'गद्ययुग' हो गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

अइसने जदि भोजपुरी-गद्य खातिर कवनों नयी प्रतिज्ञा गोरखपुर में बने तऽ भोजपुरी कऽ, भोजपुरी लेखक-मण्डल कऽ आ खुद गोरखपुर कऽ मान-जान बढ़ि जाई। ई नया काम नया इतिहास लिखि उठी। गीता प्रेस गोरखपुर में बा। प्रेस जगत् में ई इतिहास कऽ इतिहास बा। अइसने गोरखपुर के भोजपुरिया विद्वानन से उम्मीद रखल जा सकेला की सभें मिलि के भोजपुरी भाषा के इतिहास कऽ कवनो नया इतिहास रचले कऽ समुद्यम करीं।

भोजपुरी के भाषारूप पे विद्वान लोग खूब विमर्श कइले बाटें। पहिले तऽ येकरे बोलीरूप पें खोजबीन भइल। ई कहीं 'मैथिली' में समाइल मिलल तऽ कहीं 'मगही' (मागधी) में लुकाइल। हेरले पे कासी में 'काशिका' रूप अउर गोरखपुर में 'सरवरिया' रूप। 'नगपुरिया' आ 'दक्षिणी भोजपुरी' रूप भी मिलल। आगे चलि के 'परिनिष्ठित भोजपुरी' आ 'स्टैण्डर्ड भोजपुरी' के आकृति में ढलल ई लउकल। 'भोजपुरी' आ की 'भोजपुरिया' खातिर 'बक्सरिया', 'हिन्दुस्तानी', 'देसवाली', 'पूरबिया', 'बिहारी बोली' जइसन नाम भी चलल। लेकिन लोककथा में प्रचलित आ भोजपुरी इतिहास के किताबिन में चर्चित ई बाति प्रमुख हऽ की उज्जैन में धारवंश के राजकुल में 'भोज' नाव कऽ कवनों राजा रहलँ। उनहीं कऽ कवनों वंशज बिहार के शाहाबाद जिले के छोटवर परगना में आ के बसि गइलें। एक जगहि (गाँव) से दुसरका जगहि (गाँव) में पहुँचि के आपन पुरनका रूतबा आ हनक देखवलें। भूगोल के हिसाब से इहे दूनों गाँव 'पुरनका भोजपुर' आ 'नयका भोजपुर' नाम से अजुओ जानल जात बाड़ें। तबसे आजु ले 'भोजपुरी' शब्द कऽ प्रयोग ओह क्षेत्र के जनता आ भाषा दुनहू खातिर होत रहल बा। भाषा के अर्थ में 'भोजपुरी' आ ओह इलाका में रहवइयन के अर्थ में 'भोजपुरिया' शब्द प्रचलित भइल। आगे चलिके 'भोजपुरी भाषा' आ 'भोजपुरिया भाई' लोग सगरो बिहार में, पूर्वी उत्तर प्रदेश में, नेपाल में, झारखण्ड अउर मध्यप्रदेश में फइल गइलन। फिर कलकत्ता, बम्बई आ दिल्ली में भी। अब तऽ मॉरिशस में पहुँचि के भोजपुरी कऽ गिरमिटिया पुरखा कऽ वंशज प्रधानमंत्री भी बनि उठल बाटें।

भाषा के अर्थ में 'भोजपुरी' शब्द के स्वीकृति दिहले कऽ गौरव हासिल बा, सर जार्ज ग्रियर्सन के शोधकार्य 'लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' के आ वीम्स महोदय (१८६८) के 'रॉयल एशियाटिक सोसायटी' के।

भोजपुरी भाषा-साहित्य कऽ चमक-दमक-असर कऽ तिकोना देखे के होखे तऽ जार्ज ग्रियर्सन कऽ ई प्रसिद्ध कथन पढ़ल आ गहल जा सकेला-"**भोजपुरी उस शक्तिशाली,**

www.bhojpurisahityangan.com

स्फूर्तिपूर्ण और उत्साही जाति की व्यवावहारिक भाषा है, जो परिस्थिति और समय के अनुकूल अपने को बनाने के लिए सदा प्रस्तुत रहती है। भोजपुरी का प्रभाव हिन्दुस्तान के हर भाग पर पड़ा है। हिन्दुस्तान में सभ्यता फैलाने का श्रेय बंगालियों और भोजपुरियों को प्राप्त है। इस काम में बंगालियों ने अपनी कलम से काम लिया और भोजपुरियों ने अपनी लाठी से।'' (भारत का भाषा-सर्वेक्षण)।

साहित्य जगत् के साथ-साथ फिल्म जगत् भी भोजपुरी के अस्मिता पे मुहर लगवले बा। भोजपुरी के मातृभाषा रूप पे लट्टू हो के नाचि उठल बा। भोजपुरियाभाषी सिने स्टार (राजनयिक भी) शत्रुध्न सिन्हा कहि उठल बाटें की, **''मातृभाषा संस्कार के लिए, राष्ट्रभाषा व्यवहार के लिए और विदेशी भाषा व्यापार के लिए है। भोजपुरी मजदूरों की भाषा है, युवाओं और महिलाओं की भाषा है, साथ ही साथ विद्वानों की भाषा है।''**

सगरो भोजपुरी भाषा साहित्यप्रेमी चाहत बाड़ें की भोजपुरी के अठईं अनुसूची में जगहि मिले। जहाज आसमान में उड़ावे वाले कुछ अवैज्ञानिक भाषाविद् बराबर झंझट कऽ झण्डा उठा के व्यर्थ कऽ नारा लगा जात बाड़ें की, ''भोजपुरी के जदि अलग से स्वतन्त्र संवैधानिक दर्जा मिलि जाई तऽ हिन्दी हिल जाई, मधुमेह कऽ रोगी बनि के दुबरा जाई।'' बिना पाँखि के आकाश में उड़े वाले अइसने भाषापक्षी-झुण्ड के आचार्य कवि केदारनाथ सिंह कऽ ई जिरह पढ़ि लेवे के चाहीं, माकूल जवाब मिलि जाई। केदार बाबू दो टूक कहि गइल बाटें, **''यह भ्रम छोड़ देना चाहिए कि भोजपुरी को यदि संविधान में मान्यता मिल गयी तो उससे हिन्दी को क्षति पहुँचेगी। ऐसा भ्रम न मेरे मन में है और न ही किसी और के मन में होना चाहिये। * * * संविधान में मैथिली के आ जाने से उस भाषा-विशेष में और धार आ गयी है, परन्तु हिन्दी का कोई नुकसान नहीं हुआ।''** (प्रस्तावना, तलाश भोजपुरी भाषायी अस्मिता की, अजीत दुबे)।

अभिनन्दनग्रन्थ 'भोजपुरीभूषण' कऽ सम्पादन आ प्रकाशन एक भोजपुरी-लेखक के मान-सम्मान दिहले क हौसिला बा। येही बहाने उनके रचनात्मक अवदान कऽ लेखा-जोखा भी बतावल एक साहित्यिक निमित्त बा। येह मानग्रन्थ के व्याज से भोजपुरी भाषा-साहित्य कऽ फिर से सिंहावलोकन भी हो जाई।

१४ खण्ड, १५६ अध्याय, आ ६६८ पृष्ठ में सहेजल-खतियावल 'भोजपुरीभूषण'

www.bhojpurisahityangan.com

सगरो पढ़वइया-लिखवइया के आ भाषादेवी कऽ अर्चना करवइया लोगन के सँउपल जात बा। येह ग्रन्थ के देखि के आँखि के सुख मिली। पढ़ि के भाषा-साहित्य कऽ आनन्दित स्वाद मिली। लिखले आ प्रकाशित भइले कऽ हुलास बढ़ी। देस-बिदेस के २७ करोड़ भोजपुरी-मानस के परितोष मिली। आपन पुरखा भाषा अबहिन जीयति बा, ई सुनि-जानि के सबके रोवाँ जुड़ा जाई। ई देखि-पढ़ि के हृदय गद्‌गद हो जाई की जवन रामायण, महाभारत, भागवत, पंचतन्त्र आदि संस्कृत भाषा में प्रचलित रहल बा। हिन्दी में भाष्य-सहित पढ़ल जात बा। अब ई सब कथामृत इं. राजेश्वर सिंह के भोजपुरी-अनुवाद से बहुत दिन तक जीयत रही। लेखकन (अनुवादक) आ पाठकन (भावक) के बहुत दिन तक जियाई।

राजेश्वर सिंह कऽ मौलिक रूप एक अभियन्ता कऽ रहल बा, उनकर अभियन्ता रूप इनके साहित्य में भी लखल जा सकेला। जइसे एक काबिल अभियन्ता हमेशा नयी खोज, नया प्रयोग करेला, ओइसे राजेश्वर सिंह कऽ लेखकीय अभियान्त्रिकी नवप्रयोग कऽ ओर झुकल बा। अउर लेखक कविता-कहानी-उपन्यास-आत्मकथा लिखले में बाटें तऽ ई लेखक-अनुवादक कऽ कठिन डगर पे दउरत बा। उनकर इहे हुनर उनके अवरो भोजपुरी साहित्यकारन से अलगे बइठावत बा। लीक छोड़ि के चलल उनके स्वभाव-कुल आ संस्कार में बा। ऊ शायर भी बाटें, सिंह भी सपूत भी।

ई मानग्रन्थ एक शब्दकोष के रूप में भी देखल जाई। हिन्दी-भोजपुरी दूनो भाषा में आलेख छपल बा। जदि येह ग्रन्थ के भाषाकोष पे कवनो शोधार्थी खोजबीन करी तऽ ओके हजार गो नया शब्द मिलि जाई, जवन २१वीं शताब्दी के शब्दयात्रा में देखायी देत बाड़ें। ज्यादातर लेख शुभकामनाधर्मी बनिके, ग्रन्थ के शब्दसंकुल में उतरि के लेखक कऽ मनोबल द्विगुणित करत बाटें। मगर अनुपात में अधिक आलेख राजेश्वर सिंह के बहुआयामी व्यक्तित्व अउर रचनात्मक अवदान पे रोशनी बिखेरत बाड़ें। येह किताब में इं. राजेश्वर सिंह कऽ अभिनन्दन बहुबिध आ बहुरंगी बा। उनके इंजीनियर रूप कऽ चर्चा बा तऽ एक जिम्मेदार पिता आ अभिभावक के रूप कऽ भी। उनकऽ लेखक आ रचनाकार-रूप बृहद् बनि के साक्षीकृत भइल बा। भोजपुरी-साहित्यकार रूप निर्मल आ बेमिसाल बनि के। चित्रखण्ड अउर हस्तलिपि खण्ड देखि के इं. राजेश्वर सिंह के निजी सौन्दर्यबोध से परिचय लिहल जा सकेला। ग्रन्थशिल्पी खण्ड तऽ एक तरह कऽ लघु इतिहासग्रन्थ के परिचय देत बा। 'शब्दयोगियों की दृष्टि में इं. राजेश्वर सिंह' वाला उपखण्ड तऽ ऊ सारांशवृत्त देत बा, जवने के जरिये राजेश्वर जी के सगरो रचनात्मक व्यक्तित्व कऽ परछाई पकरल जा सकेला।

www.bhojpurisahityangan.com

'भोजपुरीभूषण' के शब्दयज्ञ में जे भी आपन अक्षर-अक्षत, भाव-समिधा अर्पित कइले बा ओह सबके प्रति आपन स्नेहिल आदरभाव देत बाड़ीं। इं. राजेश्वर सिंह के सगरो शुभेच्छुगण के प्रति, बन्धु-बान्धव आ कुटुम्बीजन के प्रति नेहदान करत बाड़ीं। वोह विद्वान् लेखकन के प्रति विशेष, जे तन से, मन से, लेखन से लेखक कऽ मनोबल बढ़वले बा। सम्पादक-मण्डल के प्रति आभार देत बाड़ीं आ ग्रन्थ के संरक्षक मण्डल के प्रति विशेष कृतज्ञता। अतिविशेष 'भोजपुरी-संगम' आ ओकरे 'बइठकी' के प्रति, जहाँ बइठिके अउर जहवाँ कऽ हवा-पानी पी के, गुड़ खा के राजेश्वर सिंह कऽ 'इंजीनियर' लेखक' बनि उठल।

सरयू-किनारे कऽ अधिवासी, अधीक्षण अभियन्ता के लेखक-रूप के प्रति हमार पुनीत प्रणति बा। शत बसन्त देखीं। लिखत रहीं। छपत रहीं। मनोरथ कऽ चक्का चलत रहे।

सुग्घर छपाई आ आकर्षक ग्रन्थ रूप देवे बदे लोकायत प्रकाशन, वाराणसी कऽ निदेशक महोदय धन्यवाद अउर साधुवाद कऽ हकदार हईं। नीरोग तन-सहित लमहर उमिरि पा के जीयत रहीं। विद्वानन अउर लेखकन के प्रकाशित कइके जियावत रहीं।

मकर संक्रान्ति
१४ जनवरी, २०२५

प्रो० रामदरश राय (डी०लिट्०)
अनद्यतन आचार्य : हिन्दी विभाग
प्राक्तन निदेशक : पत्रकारिता संस्थान
अतीत अधिष्ठाता : छात्र कल्याण
दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय
एवं
अध्यक्ष : पूर्वांचल हिन्दी-मंच, गोरखपुर
मोबाइल : ९८३९८०९५५८

www.bhojpurisahityangan.com

अतिथि सम्पादक की कलम से

गोरखपुर जनपद के भोजपुरी भाषी साहित्यकारों की संस्था 'भोजपुरी संगम' ने इस संस्था के संरक्षक इंजीनियर श्री राजेश्वर सिंह जी के ७६ वें जन्मदिवस के अवसर पर एक महोत्सव का आयोजन कर अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने का एक प्रशंसनीय कार्य किया है। इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी भाषा के एक लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। इंजीनियर सिंह ने भोजपुरी व हिन्दी भाषा में लगभग दो दर्जन से अधिक मौलिक एवं अनूदित पुस्तकों का प्रकाशन करके अपने वैदुष्य, लोकसंग्रह और मातृभाषा के प्रति गहरे रागात्मक लगाव को अभिव्यक्त किया है। श्री सिंह से मेरा बड़ा आत्मीय और पुराना सम्बन्ध है। सिंह साहब जिस गोपालपुर के निवासी हैं, वह हमारे पूर्वजों का गाँव है। लगभग सवा सौ वर्ष पहले हमारे पूर्वज गोपालपुर से हटकर अपनी छावनी स्थल चंदौली में आकर बस गये। क्योंकि, उन दिनों उस कस्बे में प्लेग रोग का भीषण प्रकोप था। हमारा सिंह साहब से पारिवारिक सम्बन्ध भी है। मेरे पिताजी कभी उसके पंचायत सचिव भी थे। पिताजी का अधिकांश समय सिंह साहब के पिताजी और चाचा जी के साथ ही बीतता था।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी का लेखन सत्तावन-अट्ठावन वर्ष की आयु में प्रारम्भ हुआ जो तब से आज तक अनवरत चला आ रहा है। इनकी पहली कृति 'एक कहानी की आत्मकथा' सन् २००३ में प्रकाशित हुई थी और परमहंस योगानन्द जी की आत्मकथा भोजपुरी भाषा में 'योगी कथामृत' वर्ष २०२३ में प्रकाशित हुई है। यह एक प्रकार का चमत्कार ही कहा जायेगा कि एक सिविल इंजीनियर जो दीर्घ समय तक उ०प्र० जल निगम में सेवा देने के बाद बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार रहा, वह इस समय अभियान्त्रिकी के बाद भोजपुरी साहित्य की सेवा करने की ओर उन्मुख हुआ और भोजपुरी माई का खोइंछा भरने के लिए अपने अनेक रचनाओं की सुरभि से उस खोइंछा को गमका रहे हैं। इन कृतियों की सृजन यात्रा में इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी ने विराम का अवसर नहीं दिया है।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन से एक महती आवश्यकता की पूर्ति हो रही है। इससे अतिशय आनन्दित होने का संयोग बैठना स्वाभाविक है। इस

www.bhojpurisahityangan.com

ग्रन्थ के प्रकाशन से इंजीनियर राजेश्वर सिंह के निकटस्थ शुभचिन्तकों और मित्रों के साथ-साथ हर्षानुभूति पूरे भोजपुरी साहित्य-जगत में है।

अतिथि सम्पादक के रूप में दो शब्द लिखते समय मैं बहुत कठिनाई का अनुभव कर रहा हूँ कि क्या लिखूँ ? सारा कुछ तो प्रधान सम्पादक-प्रोफेसर रामदरश राय जी ने लिख डाला। हाँ, उदारता के आधार पर मुझे अतिथि सम्पादक का यश प्राप्त हो गया। डॉ० रामदरश राय जी ने जिस श्रम, निष्ठा और सूझबूझ के साथ इस अभिनन्दन ग्रन्थ को अथ से इति तक संयोजित किया है तथा सजाया-संवारा है, इसके लिए डॉ० राय की जितनी भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। वे सचमुच सर्वतोभद्र हैं और इसकी छाप उनके व्यक्तित्व की एक खास विशेषता है। इसीलिये मुझे पूरा विश्वास है कि इस अभिनन्दन ग्रन्थ के अन्दर से गुजरने वाला हर पाठक तृप्ति का अनुभव करेगा।

अभिनन्दन ग्रन्थ को चौदह खण्डों में विभाजित करके इंजीनियर राजेश्वर जी के सम्पूर्ण जीवन चक्र को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रस्तुत किया गया है। इस कृति का चौदहवाँ खण्ड राजेश्वर सिंह जी के बालपन से लेकर अब तक के भिन्न-भिन्न वय के चित्रों का संग्रह है। यह सबसे रोचक और महत्त्वपूर्ण खण्ड है क्योंकि यह श्रव्य (Audio) न होकर दृश्य (Visual) है। दृश्य-श्रव्य से बेहतर और प्रभावशाली माध्यम होता है। अभिनन्दन ग्रन्थ का सातवाँ भाग भी पर्याप्त आकर्षक है क्योंकि इसमें राजेश्वर जी के परिवारीजनों और इष्ट-मित्रों के अपने-अपने संस्मरण हैं। ग्रन्थ के एक खण्ड में राजेश्वर सिंह के सम्पूर्ण कृतित्व का समग्र आकलन लगभग एक दर्जन साहित्यकारों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से मूल्यांकन करके अपने आलेखों को भेजा है। अभिनन्दन ग्रन्थ के एक भाग में इंजीनियर साहब के द्वारा रचित कृतियों के कुछ भागों को बानगी के तौर पर स्थान दिया गया है। इस भाग में उनके द्वारा लिखे गये कुछ महत्वपूर्ण नुस्खों का भी संग्रहण है जो जीवन के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार कोशिश की गई है कि इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी की पुस्तकों की समय-समय पर प्रकाशित समीक्षायें, लोकार्पण समारोह के समय की प्रकाशित रपटें आदि सबको इस पुस्तक में समाहित कर लिया जाय। सुधी पाठकों को इनकी रचनाओं से परिचित होने, उनके रसास्वादन एवं मूल्यांकन करने के लिए ही इनकी कुछ चयनित रचनायें भी संकलित की गई हैं।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी की लोकप्रियता उनके लेखन के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व के कारण भी है क्योंकि वे अपने मूलत: भोजपुरी लोक में उपजी और भोजपुरी के लिए समर्पित मानती है। उनकी कृतियों में एक ओर भोजपुरी भाषा की सुगन्ध मिलती है तो दूसरी ओर उनकी आध्यात्मिक रुचि की अनुगूँज सुनाई पड़ती है। भोजपुरी भाषा में उनके द्वारा अनूदित

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी महाभारत, भोजपुरी रामायण, योगी कथामृत, भोजपुरी श्रीमद्भागवत कथा-सार, राम पियारा साधु-सन्त, श्याम पियारा साधु-सन्त आदि कृतियाँ इसकी साक्षी हैं। इंजीनियर साहब इस दृष्टि से भी अभिनंदनीय हैं कि उनका समस्त लेखन, 'सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय' हुआ है। उज्ज्वल और निष्कलुष व्यक्तित्व की जो छाप उनके लेखन पर पड़ती है उससे लेखक का व्यक्तित्व उसके लेखन से नीर-क्षीर की तरह इस प्रकार घुलमिल जाता है कि उसकी पहचान ही सबसे अलग हो जाती है। इस दृष्टि से इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी प्रणम्य हैं।

अद्भुत वैदुष्य के धनी इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के व्यक्तित्व और मस्तिष्क की विशालता का सबसे बड़ा प्रमाण है कि इनमें बहुत ज्यादा विविधतायें हैं। वे अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा के बल पर तो एक ओर सिविल इंजीनियरिंग में अच्छे अंकों से बैचलर तक की डिग्री लेकर अपने परिश्रम, योग्यता और क्षमता के बल पर उ०प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद पर सेवा देने के बाद अवकाश प्राप्त होने पर बिहार सरकार के नगरीय विकास विभाग में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में सेवा प्रदान किये। तत्पश्चात् दूसरी तरफ दर्जन भर भोजपुरी भाषा में उच्चकोटि की मौलिक और संस्कृत भाषा से अनूदित साहित्यिक कृतियों का प्रणयन कर भोजपुरी भाषा के साहित्यकारों में प्रतिष्ठा अर्जित की है। अनूदित कृतियों से लगता है कि राजेश्वर जी की अभिरुचि भारतीय दर्शन और अध्यात्म की तरफ गहराई तक पहुँची है। 'योगी कथामृत' जैसी अनमोल अनूदित कृति के द्वारा राजेश्वर जी ने एक महान योगी जिसकी जन्मभूमि गोरखपुर नगर है, को भोजपुरी प्रेमियों के समक्ष प्रस्तुत कर, एक गंभीर और श्लाघनीय कार्य किया है।

इंजीनियर राजेश्वर जी की प्रतिभा बहुआयामी है। गणित और भौतिकी के अतिरिक्त वे हिन्दी, संस्कृत और भोजपुरी भाषा के गम्भीर अध्येता हैं। रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत पुराण तथा योगी कथामृत जैसी गुरु गंभीर कृतियों का आपने उत्तम ढंग से भोजपुरी भाषा में भावानुवाद किया है जिससे भोजपुरी भाषा में और साहित्य में आपकी सिद्धहस्तता का प्रमाण दिखाई देता है। एक गंभीर सिद्ध अध्येता और जनमानस अथवा जनभावना से जुड़े लेखक की बड़ी पहचान है कि वह लोक में गहरी पैठ कर लोक की भावना का अध्ययन करने के पश्चात् महसूस करे कि लोक को और अधिक सुसंस्कृत और उदार किन-किन विषयों पर लेखन करके बनाया जा सकता है। राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी भाषी क्षेत्र के व्यक्ति हैं। भोजपुरी प्रदेश उनका कार्यक्षेत्र रहा है और भोजपुरी भाषा को ध्यान में रखकर भोजपुरी भाषा में अपनी सर्जनात्म प्रतिभा का परिचय दिया है।

www.bhojpurisahityangan.com

अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन में सम्पादक मण्डल और रचनाकारों के रचनात्मक सहयोग के अतिरिक्त अन्य कई स्रोतों से भी सहयोग मिला है। मुद्रण और प्रकाशन में पूर्वांचल प्रिंटर्स, गायत्री नगर, पाण्डेयपुर, वाराणसी के स्वत्वाधिकारी भी धन्यवाद के पात्र हैं, क्योंकि उन्होंने नियत समय के अन्तर्गत त्वरित गति से कार्य करके इस कृति को आकार देने का सराहनीय कार्य किया है। हम सब लोग इनके प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी यद्यपि अभिनन्दन ग्रन्थ के समस्त कार्यक्रम से असम्बद्ध हैं, परन्तु जब भी उनके परामर्श या सुझाव की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने नि:संकोच हम लोगों को उपकृत किया है। संरक्षक मण्डल और सम्पादक मण्डल तथा भोजपुरी संगम के पदाधिकारी और सदस्यगण सहयोग देने में कभी पीछे नहीं रहे। सबकी अपनी-अपनी भूमिका थी और सबने उसका निर्वाह किया है। हमलोग सबके प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं।

अन्त में मैं पुन: उन सभी सुधी साहित्यकार बन्धुओं और विद्वान महानुभावों तथा राजेश्वर जी के सुहृद एवं परिवारजनों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपना बहुमूल्य योगदान कर इस सारस्वत यज्ञ को पूर्णता तक पहुँचाया है। हमें विश्वास है कि यह अभिनन्दन ग्रन्थ राजेश्वर सिंह की उज्ज्वल छवि को और अधिक उज्ज्वलतम बनाने में सहायक होगा और इस कृति का भोजपुरी भाषी समाज तथा लोक में समुचित सम्मान होगा। ऐसे मनीषी, कर्मयोगी और समाज के लिए समर्पित साधक को परमात्मा शतायु रखें ताकि ज्यादा दिनों तक समाज और भोजपुरी की सेवा कर सकें। हम उनके दीर्घ जीवन के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
सतीशचन्द्र स्नातकोत्तर कॉलेज, बलिया
पूर्व अधिष्ठाता, कला संकाय
पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)
आवास : मालती कुञ्ज
एच०आई०जी०, II, 32
तारामण्डल, गोरखपुर (उ०प्र०)
मोबाइल : ९४५०६३९१७०
९४१५६३२५३८

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

क्रम	विवरण	लेखक	पृ.सं.
	सम्पादकीय	प्रो० रामदरश राय	६
	अतिथि सम्पादकीय	डा० आद्याप्रसाद द्विवेदी	१६
	अनुक्रमणिका		२०
एक : शुभकामना खण्ड			**२७-६०**
१.	शुभकामना	श्री रविकिशन शुक्ल	२९
२.	शुभकामना	श्री कमलेश पासवान	३०
३.	शुभकामना	श्री राजेश त्रिपाठी	३१
४.	शुभकामना	न्यायमूर्ति के०डी० शाही (सेवानिवृत्त)	३२
५.	भोजपुरी के प्रति निष्ठा व लगन ग्रहणीय	लालबहादुर सिंह	३३
६.	शुभकामना संदेश	प्रो० जय प्रकाश सैनी (कुलपति)	३४
७.	शुभकामना	प्रो० पूनम टण्डन (कुलपति)	३५
८.	शुभकामना	डॉ० राजा वशिष्ठ त्रिपाठी	३६
९.	शुभकामना संदेश	ई० ज्योति भूषण राय	३७
१०.	मातृभाषा का एक अनन्य प्रेमी	वीर बहादुर चन्द (एडवोकेट)	३८
११.	शुभकामना संदेश	डा० अशोक सिंह	३९
१२.	शुभकामना संदेश	डॉ० रामसमुझ (पूर्व आयकर आयुक्त)	४०
१३.	कार्यकुशल व मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी	प्रो० अलक राय	४१
१४.	दो शब्द.. इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के सम्मान में	प्रो० यू०के० वर्मा	४५
१५.	भोजपुरी के वित्तजा भक्त	प्रो० रामदेव शुक्ल	४६
१६.	भोजपुरी के रास्ते जीवन की ओर	प्रो० अनिल कुमार राय	४७
१७.	आशीर्वचन	प्रो० प्रभुनाथ सिंह 'मयंक'	५१
१८.	इं. राजेश्वर सिंह : एक बहुआयामी व्यक्तित्व	डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय	५२
१९.	राजेश्वर सिंह : भोजपुरी गद्य की खेती करने वाले-किसान लेखक	प्रो० सदानन्द शाही	५४
२०.	पहरुआ	बागेश्वरी प्रसाद मिश्र 'बागीश'	५६
दो : काव्याभिनन्दन-खण्ड			**६१-७२**
२१.	अभिनन्दन करते हैं	पवन शर्मा	६३
२२.	भोजपुरी के सान	चन्देश्वर परवाना	६४
२३.	अभिनन्दन है अभिनन्दन है	अजय यादव	६५

www.bhojpurisahityangan.com

२४.	इं. राजेश्वर सिंह (काव्य अभिनन्दन)	रामनरेश शर्मा (शिक्षक)	६७
२५.	अभिनन्दन	अमित सिंह 'बन्टी'	६९
२६.	मिलनसार व्यवहार और अपनापन से भरल - इं. राजेश्वर सिंह	विजय प्रताप शाही	७०
२७.	इं. श्री राजेश्वर सिंह जी	अरविन्द 'अकेला गोरखपुरी'	७१
तीन : रचना-खण्ड			**७३-१२६**
२८.	इं. राजेश्वर सिंह का हिन्दी रचना संसार	डॉ० सरिता सिंह	७५
२९.	इं. राजेश्वर सिंह का भोजपुरी रचना संसार इं. राजेश्वर सिंह एवं सरलता, सहजता	डॉ० विभा सिंह	९३
३०.	अपनापन और धार्मिकता से जगमग- उनका रचना संसार	सुरेन्द्र कुमार सिंह 'चांस'	१२१
चार : आत्मवृत्त-खण्ड			**१२७-१७४**
३१.	आपन राम-कहानी	इं. राजेश्वर सिंह	१२९
३२.	आत्म परिचय अउर रचना जगत	इं. राजेश्वर सिंह	१४०
३३.	इं. राजेश्वर सिंह : वंशावली	जयप्रकाश सिंह	१४३
३४.	ननिहाल की वंशावली	भूपेन्द्र प्रताप शाही	१४७
३५.	सम्मान और अलंकरण	राजकुमारी सिंह	१४९
३६.	आत्मिक-समर्पण	राजकुमारी सिंह	१६६
पाँच : हस्तलिपि-खण्ड			**१७५-२०२**
३७.	जिनगी क जरूरत पानी	इं. राजेश्वर सिंह	१७७
३८.	आँवला क उपयोगिता	इं. राजेश्वर सिंह	१८६
३९.	मोबाइल और बन्दर	इं. राजेश्वर सिंह	१८८
४०.	रोड जाम से पत्नी-विछोह	इं. राजेश्वर सिंह	१९१
४१.	UNEMPLOYMENT	Er. Rajeswar Singh	१९६
छह : भूमिका-खण्ड			**२०३-३२०**
४२.	कचरस की मिठास वाली कथाकृति 'जिनगी– कऽ दूबि हरियाइल'	डॉ० मधुर नज्मी	२०५
४३.	जिनिगिये कहनी हऽ	प्रो० प्रभुनाथ सिंह 'मयंक'	२०६
४४.	अपने माटी से जुड़ाव कऽ रोचक गाथा हऽ- ई संकलन	डॉ० वशिष्ठ अनूप	२०८
४५.	मूल्यों के आधार पर कालजयी हैं ये कहानियाँ	वेदप्रकाश उपाध्याय	२१०
४६.	दो कृतियाँ-जमीन से जुड़ी कथा	डा० जयनाथ मणि त्रिपाठी	२१२
४७.	ये कहानियाँ, साहित्यिक कहानियाँ के परिष्कार के पूर्व – की कहानियाँ हैं	सुरेन्द्र कुमार सिंह 'चांस'	२१४
४८.	जिनगी में सुधार बदे ई कहानी रचल बा	जनमेजय पाठक	२१५

www.bhojpurisahityangan.com

४९.	सुनने और सुनाये जाने वाली कहानियों का नियमन	वृजेश कुमार सिंह	२१६
५०.	'कल्यान कऽ जुगुति'-मूल्यांकन आवे वाला समय-करबे करी	डॉ० विवेकी राय	२१७
५१.	कुछ हमरियो ओर से	गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'	२१९
५२.	'कल्यान के जुगुति' से बिसवास हमार जागत बा	डॉ० मधुर नज्मी	२२१
५३.	जिनगी के सही राह देखावे के एगो नीक प्रयास	सूर्यदेव पाठक 'पराग'	२२३
५४.	भोजपुरी भागवत कथा-सार	प्रो० रामदेव शुक्ल	२२६
५५.	भोजपुरी में भागवत कथा	सूर्यदेव पाठक 'पराग'	२२८
५६.	निम्मन प्रयास	डॉ० रघुनाथ चन्द	२३१
५७.	श्रद्धालु क संतार्चन	प्रो० रामदेव शुक्ल	२३२
५८.	दीक्षा गुरु क महातिम	प्रो० चितरंजन मिश्र	२३५
५९.	'दीक्षा गुरु' : भोजपुरी जीवनी-साहित्य कऽ ज्ञान ग्रन्थ	प्रो० रामदरश राय	२३८
६०.	साधना से मिलल संत सुभाव	प्रो० रामदेव शुक्ल	२४४
६१.	राम पियारा साधु-सन्त	प्रो० सदानन्द शाही	२४६
६२.	राम पियासा साधु-सन्त : एक नजर में	सूर्यदेव पाठक 'पराग'	२५०
६३.	भोजपुरी गद्य में संत-चरित	प्रो० रामदेव शुक्ल	२५३
६४.	भोजपुरी गद्य में इं. राजेश्वर सिंह के बढ़त डेग-श्याम पियारा साधु-सन्त	डा० अद्याप्रसाद द्विवेदी	२५४
६५.	श्याम पियारा साधु-सन्त : एगो अनमोल आहार	सूर्यदेव पाठक 'पराग'	२५६
६६.	'भोजपुरी महाभारत' एक अनूदित कथाग्रन्थ	प्रो० रामदरश राय	२५८
६७.	'यत्र भारते तत्र भारते'	प्रो० सदानन्द शाही	२६४
६८.	भोजपुरी रामायण	प्रो० रामदेव शुक्ल	२६६
६९.	भोजपुरी पंचतन्त्र	प्रो० रामदेव शुक्ल	२६९
७०.	कहानिन से सीख भरल भोजपुरी पंचतन्त्र	डा- आद्याप्रसाद द्विवेदी	२७१
७१.	पूरोवाक्	सूर्यदेव पाठक 'पराग'	२७४
७२.	भोजपुरी में योगी कथामृत	प्रो० रामदेव शुक्ल	२७७
७३.	एक आदिम भूख का आख्यान है यह कृति	डा० वशिष्ठ अनूप	२८२
७४.	रूहानी सृजना-कृति ढँकने में नहीं खोलने में है	डॉ० मधुर नज़्मी	२८४
७५.	समाज की पारदर्शी झलक है यह कृति	सुरेन्द्र सिंह, सम्पादक चांस	२८७
७६.	कलात्मक तकनीक से परे, परम्परा-मुक्त तकनीक-का प्रयोग	पंकज गौतम	२८९
७७.	अपने अन्त: कलेवर में कथा-कृति	डॉ० वशिष्ठ अनूप	२९०
७८.	प्रकाशित कथा-कृतियों पर समालोचक-किस्सागोई का आकर्षण भीतर से	डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक	२९१
७९.	कहानी करने की शैली सर्वग्राही है	डॉ० उमाशंकर तिवारी	२९२
८०.	समाज के पर्दे में पोशीदा सच्चाई से इन्कार नहीं	डॉ० वेद प्रकाश 'अमिताभ'	२९३

www.bhojpurisahityangan.com

८१.	इस कथा का अनकहा पक्ष महत्त्वपूर्ण है	डॉ० वशिष्ठ अनूप	२९४
८२.	दमित-विकृत "काम" की गवाही	प्रो० प्रभुनाथ सिंह 'मयंक'	२९६
८३.	भगवत् प्रेमी पाठकों से नम्र निवेदन	इंजीनियर राजेश्वर	३००
८४.	एक आवाज आई इधर देखना	डॉ० मधुर नज्मी	३०१
८५.	सूफ़ी-दर्शन और विश्व-शान्ति	सुरेन्द्र कुमार सिंह	३०५
८६.	"सूफ़ी-दर्शन के हवाले से कुछ और"	मधुकर अष्ठाना	३१०
८७.	राजेश्वर की कहानियाँ औपन्यासिक ज़मीन पर उगी हैं	डॉ० मधुर नज्मी	३१२
८८.	विविध रंगों की सहज कहानियाँ हैं	सुरेन्द्र कुमार सिंह	३१८
सात : समीक्षा-समालोचना खण्ड			**३२१-४२२**
८९.	इं. राजेश्वर सिंह का व्यक्तित्व व कृतित्व एक विमर्श	चन्द्रगुप्त वर्मा 'अकिंचन'	३२३
९०.	भोजपुरी साहित्यकार इं. राजेश्वर सिंह	डॉ० फूलचन्द प्रसाद गुप्ता	३२७
९१.	आदमी क चिन्हे कऽ जुगुति	नथुनी प्रसाद उर्फ रामपति कुशवाहा	३३०
९२.	भोजपुरी क अनन्य साधक : इन्जीनियर राजेश्वर सिंह	डॉ० महामाया प्रसाद 'विनोद'	३३१
९३.	आधुनिक परिवेश में भोजपुरी रचना के जीवन्त सन्त : - इं. राजेश्वर सिंह	डॉ० रामअवतार चन्द	३३३
९४.	भाव आ भाषा के सहज साधक : इं. राजेश्वर सिंह	प्रो० (डॉ०) जयकान्त सिंह 'जय'	३३५
९५.	भारतीयता के भाव से भरल भोजपुरी साहित्य-सेवक : इं. राजेश्वर सिंह	डॉ० ब्रजभूषण मिश्र	३३९
९६.	भोजपुरी रामायण : एक विहंगावलोकन	डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी	३४२
९७.	बहुरंगी इं. राजेश्वर सिंह	डॉ० रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी'	३४५
९८.	भोजपुरी के अनन्य साधक : इं. राजेश्वर सिंह जी	प्रो० चितरंजन मिश्र	३४९
९९.	साहित्यिक अभियन्त्रण के विलक्षण शब्द-पुरुष : इन्जीनियर साहब	डॉ० सुधीर श्रीवास्तव 'नीरज'	३५१
१००.	भोजपुरी योगी कथामृत : एक अनुवादित-दार्शनिक प्रत्याखान	डॉ० अंगद कुमार सिंह	३५३
१०१.	अभियान्त्रिकी संग भोजपुरिया सहित्य सृजन	डॉ० रामजन्म सिंह	३६२
१०२.	कल्याण कऽ जुगुति में रचा-बसा है– भारतीयता का सेंधापन	डॉ० श्रीनाथ सहाय	३६४
१०३.	जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी	डॉ० श्रीनाथ सहाय	३६६
१०४.	भोजपुरी महाभारत : एगो स्तुत्य प्रसाद	डा० महामाया प्रसाद 'विनोद'	३६८
१०५.	भोजपुरी भाषा के प्रति अनुराग	बृजभूषण राय 'वृज'	३७१
१०६.	इं. राजेश्वर सिंह का व्यक्तित्व और कृतित्व	प्रेमलता 'रसविन्दु'	३७३
१०७.	साहित्य सेवक इं. राजेश्वर सिंह	डा० अमिताभ पाण्डेय	३७५
१०८.	सरल और सहज विचार क मनई इं. राजेश्वर सिंह	वृजेश राय	३७८
१०९.	मन, वचन, कर्म से समर्पित इं. राजेश्वर सिंह	डा० बहार गोरखपुरी	३८०
११०.	भोजपुरी के राजर्षि इं. राजेश्वर सिंह	नन्द कुमार त्रिपाठी	३८२

www.bhojpurisahityangan.com

१११.	एक शान्त चित्त साहित्य सेवक	रमेश राय	३८५
११२.	अध्यात्म के फरत फुलात जिनगी के पोषक	कनक किशोर	३८७
११३.	तेजसां हि न वय: समीक्ष्यते	योगेन्द्रनाथ शुक्ल	३९१
११४.	एगो मौन साधक के बहुमूल्य उपलब्धि	सूर्यदेव पाठक 'पराग'	३९४
११५.	विचारों का खजाना : इं राजेश्वर सिंह	भीम प्रसाद प्रजापति	४०४
११६.	भोजपुरी के अनन्य सेवक	सुभाष चन्द्र यादव	४०७
११७.	साहित्य के राहि पर इन्जीनियर	चन्देश्वर परवाना	४१२
११८.	एक साहित्यिक अभियन्ता : इन्जीनियर राजेश्वर सिंह	डॉ० ईश्वर चन्द त्रिपाठी	४१४
११९.	कर्मयोगी भोजपुरी साधक	डॉ० अद्या प्रसाद द्विवेदी	४१७
१२०.	भोजपुरी के सर्जक : इन्जीनियर राजेश्वर सिंह	प्रो० सविता कुमारी श्रीवास्तव	४२२
१२१.	सद्मानव	रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी	४२५
१२२.	भोजपुरी संगम क रखवार : इं. राजेश्वर सिंह	धर्मेन्द्र त्रिपाठी	४२८
१२३.	व्यवहार में पटु, धीर, वीर, गम्भीर व्यक्तित्व-के धनी इं. राजेश्वर सिंह	महेश नारायण त्रिगुणायत	४३०
१२४.	भोजपुरी क बड़हन सेवक इन्जीनियर राजेश्वर सिंह	रामसमुझ सांवरा	४३२
१२५.	मेरे बाल मित्र	डा० अवधेश कुमार सिंह	४३३
१२६.	मनईन में मनई इंजीनियर राजेश्वर सिंह	डा० अजय राय 'अन्जान'	४३६
१२७.	भोजपुरी के यशस्वी नक्षत्र : इं. राजेश्वर सिंह	डा० अशोक सिंह	४४०

आठ : संस्मरण खण्ड ४४३-४८०

१२८.	कुछ यादगारें	किरन शर्मा	४४५
१२९.	साथ गुजरे कुछ दिनों के दास्तान	इं. एम०आई० अंसारी	४४९
१३०.	सरलता, सहजता के प्रतीक राजेश्वर जी	डा० गंगेश्वर प्रसाद द्विवेदी	४५६
१३१.	माटी के लाल : इं. राजेश्वर सिंह	जयनाथ यादव	४६०
१३२.	भोजपुरी जगत क महान पुरोधा इं. राजेश्वर सिंह - से मिलन क एगो छोट कहानी	हरिशरण दास	४६५
१३३.	शालीन, सौम्य व्यक्तित्व	इं. दर्शन प्रसाद	४६६
१३४.	एक अभिन्न मित्र इं. राजेश्वर सिंह	इं. के०के० सिंह	४६७
१३५.	सरल, उदार अउर कर्मठ : इंजीनियर राजेश्वर सिंह	अनिल कुमार यादव	४६९
१३६.	भोजपुरी के समर्पित सेवक : इं. राजेश्वर सिंह	कुमार अभिनीत	४७५
१३७.	इंजीनियर राजेश्वर सिंह : भोजपुरी भाषा के – संवर्धन के सच्चे अग्रदूत	ध्रुव चन्द	४७७

नौ : बन्धु-बान्धव : परिजन खण्ड ४८१-५३८

१३८.	साहित्यिक रुझान	तृप्ती सिंह (तनु)	४८३
१३९.	ननिहाल की कुछ यादें	प्रमोद कुमार सिंह	४९८
१४०.	स्मृतियों के झरोखे से	भोलानाथ सिंह	५००

www.bhojpurisahityangan.com

१४१.	भाई साहब ने चकित कर दिया	डॉ० सरोज सिंह	५०२
१४२.	राजेश्वर भैया : छोटे भाई के निगाहों में	रत्नाकर सिंह, एडवोकेट	५०६
१४३.	जैसी मेरी समझ	डॉ० सुबास शाही	५०८
१४४.	साहित्य साधक अभियन्ता	तृप्ति सिंह (सन्नो)	५१२
१४५.	भोजपुरी साहित्य के विद्वान् लेखक	रमा सिंह	५१४
१४६.	सरल भी सहज भी इं० राजेश्वर सिंह जी	नर्बदेश्वर सिंह, मास्टर साहब	५१६
१४७.	सरल, सहज एवं धर्म परायण व्यक्तित्व के धनी	सुरेश सिंह	५१९
१४८.	मेरे भैया	सुधा शाही	५२०
१४९.	शालीनता के धनी बाबाजी	इं. त्वेश चन्द 'उत्कर्ष'	५२३
१५०.	अतुलनीय, अदभुत प्रेरक हमारे चाचा जी	अनिल प्रताप चन्द	५२५
१५१.	इं. राजेश्वर सिंह के रचनात्मक व्यक्तित्व पर– विद्वत टिप्पणियाँ	इं. प्रवीण सिंह	५२८
दस : साहित्य-खण्ड			**५३९-५८२**
१५२.	इं. राजेश्वर सिंह की साहित्य-संवेदना सगरो किताबिन - से तनी-तनी	सीमा सिंह	५४१
ग्यारह : अभिमत-खण्ड			**५८३-५९६**
१५३.	शब्दयोगियों की दृष्टि में इं. राजेश्वर सिंह	पूजा सिंह	५८५
बारह : मीडिया-खण्ड			**५९७-६०६**
१५४.	अखबार की गवाही	राजकुमारी सिंह	५९९
तेरह : चित्र-खण्ड			**६०७-६४८**
१५५.	छाया छवि-वीथिका	इं. प्रवीण सिंह सीमा सिंह	६०९
चौदह : ग्रन्थशिल्पी-खण्ड			**६४९-६६८**
१५६.	भोजपुरीभूषण ग्रन्थ के शिल्पकार	लेफ्टिनेन्ट कर्नल नवीन सिंह	६५१



www.bhojpurisahityangan.com



मुदमंगलमय संत समाजू ।
जो जग जंगम तीरथराजू ।।

www.bhojpurisahityangan.com

१

शुभकामना–खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

रवि किशन शुक्ला
संसद सदस्य (लोक सभा)
64 गोरखपुर (उ0प्र0)

सत्यमेव जयते

मकान नं0- एल आई जी - 46, लेक्न्यू कालोनी
तारामण्डल, सिद्धार्थ एन्क्लेव, गोरखपुर (उ.प्र.)-273017
मो0: 9499100467
दूरभाष : 0551-2272211, 011-23092455
ई-मेल : ravikishanshukla@gmail.com

दिनांक 31/12/2021

शुभकामना - सन्देश

इं. राजेश्वर सिंह पढ़ाई पूरा करने के बाद इंजीनियरिंग क्षेत्र की अनेक कार्यों को सफलतापूर्वक करने के साथ ही साथ साहित्य सृजन का कार्य भी करने लगे। हिन्दी की आठ पुस्तकों के सृजन के साथ अपने क्षेत्र मे बहुतायत में बोले जाने वाली भोजपुरी भाषा के प्रेम ने इन्हें भोजपुरी मे लिखने हेतु उद्वेलित कर दिया और इनकी लेखनी एक पर एक पुस्तकें भोजपुरी मे लिखकर प्रकाशन कराने लगीं। 'भोजपुरी रामायण', 'भोजपुरी महाभारत', 'दीक्षा-गुरू', 'कल्यान क जुगुति', 'भोजपुरी पंचतन्त्र' व 'भोजपुरी योगी कथामृत' इनकी बहुचर्चित पुस्तकें हैं। दर्जन भर पुस्तक लिखकर इन्होने भोजपुरी का मान बढ़ाया है।

मैं सज्जन, सरल और कर्मनिष्ठ इंजीनियर राजेश्वर सिंह के निमित्त 'भोजपुरी भूषण' नामक मानग्रनथ भोजपुरी - संगम, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कराये जाने हेतु सम्पादक मण्डल को अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ तथा इंजीनियर राजेश्वर सिंह के दीर्घायु, सुखद स्वास्थ्य की कामना करते हुए आगे भी भोजपुरी की इसी तरह सेवा करते रहने की आकांक्षा करता हूँ।

Ravi Kishan Shukla Member of Parliament (Lok Sabha) 64 Gorakhpur
रवि किशन शुक्ला
IC No. 467

www.bhojpurisahityangan.com

कमलेश पासवान
KAMLESH PASWAN

ग्रामीण विकास राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State for Rural Development
Government of India

D.O.No.048.VIP/GKP/MoS(RD)/2024

दिनांक: 28 अक्टूबर, 2024

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि संसदीय क्षेत्र–67 बांसगांव अन्तर्गत ग्राम–गोपालपुर (गोला) जनपद–गोरखपुर (उ0प्र0) में जन्में इंजीनियर राजेश्वर सिंह के सम्मान में "भोजपुरी संगम", गोरखपुर द्वारा एक "अभिनन्दन ग्रन्थ" तैयार करायी जा रही है। इं. राजेश्वर सिंह ने भारतीय समाज के उत्थान के लिए लगभग दो दर्जन ज्ञान वर्धक पुस्तको का सृजन किया है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा समानित भी हुए हैं।

मैं इस ग्रन्थ निर्माण कार्य हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(कमलेश पासवान)

कार्यालय: 197, ई-विंग, कृषि भवन, डॉ० आर.पी. रोड, नई दिल्ली-110001
Office: 197, E-Wing, Krishi Bhawan, Dr. R.P. Road, New Delhi-110001
दूरभाष: 011-23388823, 23388859 • फैक्स: 011-23388827
निवास: बंगला नं. 20, मदर टेरेसा क्रिसैंट, नई दिल्ली-110004
Residence: Bunglow No. 20, Mother Teresa Crescent, New Delhi-110004

www.bhojpurisahityangan.com

राजेश त्रिपाठी
विधायक
328-चिल्लूपार, गोरखपुर
सचेतक
उ.प्र. विधान मण्डल दल
सदस्य
प्राक्कलन समिति, उ.प्र. विधानसभा
सदस्य
पं.दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय कार्यसभा

A-105 मंत्री आवास परिसर, विभूति खण्ड
गोमतीनगर, लखनऊ-226010
क-7 No. 372771
क्षेत्र आवास
ग्राम व पोस्ट-मिश्रौली (संसारपार)
बड़हलगंज, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 08765955027, 7905710055
email: rajeshtripathichillupar@gmail.com

दिनांक : ...9.:1.:.2022...

आदरणीय सरयूरत्न डॉ. राजेश्वर सिंह जी,
साहित्य प्रयाग

हमें यह जानकर अतीव प्रसन्नता हो रही है कि आपकी भोजपुरी साहित्य के प्रति समर्पण, लेखनधर्मिता को मान देते हुए साहित्यिक संगम संस्था गोरखपुर द्वारा आपके सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ 'भोजपुरी भूषण' की रचना की जा रही है। गोरखपुर की दक्षिणांचल की धरती विलक्षण प्रतिभाओं से भी रत्नगर्भा है। यहाँ अनेक क्षेत्रों में अनेक विभूतियों ने जन्म लिया है। भोजपुरी साहित्य में आप भी एक ऐसी ही विभूति हैं। इसी क्रम में हम सभी ने जब आपको सरयू रत्न सम्मान देने का निर्णय लिया था तो क्षेत्र के जनमानस ने इसकी सराहना की थी।
आप एक सहज, सरल और सामाजिक, साहित्यिक व्यक्तित्व के प्रति यह समाज सदैव कृतज्ञ रहेगा।
हमारी 'भोजपुरी भूषण' अभिनंदन ग्रन्थ हेतु शुभ कामना स्वीकार करें।

(राजेश त्रिपाठी)

www.bhojpurisahityangan.com

४

न्यायमूर्ति के.डी. शाही
(से.नि.)
उच्च न्यायालय इलाहाबाद (उ.प्र.)



Add.: B-1/34, Sector-Q,
Aliganj, Lucknow (UP)
Mob.: 9412053531
9411553531

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि इं० राजेश्वर सिंह जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित एक मान ग्रंथ का प्रकाशन "भोजपुरी संगम गोरखपुर" द्वारा किया जा रहा है।

श्री सिंह पढ़ाई पूरा करने के बाद इंजीनियरिंग क्षेत्र की अनेकशः कार्यो को सफलतापूर्वक करने के साथ ही साहित्य सृजन का कार्य भी करने लगे। हिन्दी के आठ पुस्तकों के सृजन के साथ अपने क्षेत्र में बोली जाने वाली भोजपुरी भाषा के प्रेम में इन्हें भोजपुरी के उत्थान हेतु लिखने के लिए उद्वेलित कर दिया और इनकी लेखनी भोजपुरी में एक पर एक पुस्तकों के सृजन में जुट गयी। इनके एक दर्जन से अधिक भोजपुरी के पुस्तकों को प्रकाशन हो चुका है, लेखन क्रम जारी है, प्रकाशित पुस्तकों में भोजपुरी रामायण, भोजपुरी महाभारत, दीक्षा गुरू, राम पियारा साधु सन्त, श्यामा पियारा साधु सन्त, कल्याण कइ जुगुति, भोजपुरी पंचतंत्र व भोजपुरी योगी कथामृत विशेष और सर्वग्राही हैं।

मैं सज्जन, सरल और कर्मनिष्ठ इंजीनियर राजेश्वर सिंह के निमित्त मानग्रंथ प्रकाशन हेतु "भोजपुरी संगम" के संपादक मंडल को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं और इंजीनियर श्री सिंह के दीर्घायु, सुखद स्वास्थ्य और रचनाशील जीवन की ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

लखनऊ

(के०डी० शाही)
10.08-202

www.bhojpurisahityangan.com

५

भोजपुरी के प्रति निष्ठा व लगन ग्रहणीय

लाल बहादुर सिंह

पूर्व अपर न्यायधीश

आवासः

म0 न0 3/223,विजयन्त खण्ड

गोमतीनगर–लखनऊ

मो0 न07905451161

•►शुभकामना►•

हर्ष का विषय है कि उत्तर–प्रदेश जल निगम के सेवा निवृत्त इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के व्यक्तित्व पर केन्द्रित 'भोजपूरी–भूषणः इं0 राजेश्वर सिंह, संज्ञक मानग्रन्थ का प्रकाशन भोजपुरी संगम गोरखपुर,द्वारा करायी जा रही है ।

इं0 राजेश्वर सिंह ने जल निगम की सेवा एक दक्ष इन्जीनियर के रूप में करने के साथ ही साथ भोजपुरी साहित्य की सेवा विभिन्न विधाओं में एक दर्जन से अधिक पुस्तकों की रचना कर किर्तिमान स्थापित किया है । भोजपुरी भागवत कथा–सार"',भोजपुरी रामायण" ',भोजपुरी महाभारत," "भोजपुरी–पंचतन्त्र", 'भोजपुरी योगी कथामृत",इनकी बहु चर्चित पुस्तकें है । गुरू महिमा के साथ एक सौ दश सन्तों की जीवनी इनके तीन पुस्तकों, 'दीक्षा गुरू",राम पियारा,साधु–सन्त, एवं श्याम पियारा साधु–सन्त में दी गयी है ।

इनकी अपनी मातृ भाषा भोजपुरी के प्रति निष्ठा व लगन ग्रहणीय है ,इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के स्वस्थ,सार्थक और दीर्घायु जीवन की कामना करते हुए मानग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ ।

(लाल बहादुर सिंह)

www.bhojpurisahityangan.com

६

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
गोरखपुर-273010 (उ०प्र०), भारत
Madan Mohan Malaviya University of Technology
Gorakhpur–273010 (U.P.), India
(Formerly : Madan Mohan Malaviya Engineering College, Gorakhpur)
(Estd. 1962)

Azadi Ka Amrit Mahotsav

प्रो० जय प्रकाश सैनी
कुलपति
Prof. Jai Prakash Saini
Vice Chancellor



शुभकामना संदेश

मुझे आप सभी से यह साझा करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि भोजपुरी संगम, गोरखपुर इस संस्थान से वर्ष 1973 में सिविल इन्जीनियरिंग से स्नातक डिग्री प्राप्त कर इन्जीनियरिंग क्षेत्र के विभिन्न कार्यों को दक्षता पूर्वक सम्पन्न कराने के साथ ही साथ हिन्दी एवं भोजपुरी साहित्य के विकास कार्य में निष्ठा पूर्वक लगकर दर्जनों पुस्तकों का सृजन कर समाज के उत्थान में लगे हुए इं0 राजेश्वर सिंह के सम्मान में अभिनन्द ग्रन्थ तैयार कर रही है। इस कार्य हेतु मैं अपनी शुभकामना अर्पित करता हूँ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि इं0 राजेश्वर सिंह को स्वस्थ एवं सानन्द रखें ताकि वे अपनी लेखनी के जरिये समाज की अनवरत सेवा करते रहें।

22/8/24
(प्रो0 जय प्रकाश सैनी)
कुलपति

www.bhojpurisahityangan.com

७

प्रो० पूनम टंडन
कुलपति

Prof. Poonam Tandon
Vice-Chancellor

दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर-273009 (उ0प्र0)

Deen Dayal Upadhyaya
Gorakhpur University,
Gorakhpur – 273009 (U.P.)

दिनांक : 31.12.2024

शुभकामना संदेश

बड़े हर्ष की बात है कि इंजीनियर राजेश्वर सिंह के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित "भोजपुरी भूषण" संज्ञक मान–ग्रंथ भोजपुरी संगम गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कराया जा रहा है।

ई० सिंह पढ़ाई पूरा करने के बाद इंजीनियरिंग क्षेत्र में दक्षतापूर्वक कार्य करने के साथ ही साथ साहित्य सृजन का भी कार्य निष्ठापूर्वक करते रहे हैं। हिन्दी की आठ व भोजपुरी की बारह किताबों का प्रकाशित होना इनके कर्मनिष्ठता को सहज ही दर्शाता है।

ऐसे सज्जन, लगनशील व कर्मनिष्ठ इंजीनियर राजेश्वर सिंह के निमित्त मानग्रन्थ प्रकाश हेतु "भोजपुरी संगम गोरखपुर" के सम्पादक मण्डल को अपनी शुभकामनाएँ अर्पित करती हूँ।

(प्रो० पूनम टंडन)

☎ : 0551-2201577 (O), 2340458 (R), Fax : 0551-2330767 (O) Email :vcddugu@gmail.com,vc@ddugu.ac.in

www.bhojpurisahityangan.com

८

डॉ. राजावशिष्ठ त्रिपाठी
संस्थापक निदेशक, आणविक एवं आयुर्वेदिक जीवविज्ञान संस्थान, गोरखपुर
प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया लॉस एंजिल्स, कैलिफ़ोर्निया सं. रा. अ.
प्रोफेसर (सेवानिवृत), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
संस्थापक, विज्ञान जागरूकता समिति, लखनऊ
संस्थापक, वशिष्ठ बाबा मंदिर संस्थान, वसिष्ठनगर (लखनापार), गोरखपुर

शुभकामना

मुझे यह जानकर अतिशय प्रसन्नता हो रही है कि उत्तर प्रदेश जल निगम के सेवानिवृत इंजीनियर राजेश्वर सिंह के व्यक्तित्व व कृतित्व पर केन्द्रित 'भोजपुरी भूषण: इं. राजेश्वर सिंह' संज्ञक मानग्रन्थ का प्रकाशन 'भोजपुरी संगम, गोरखपुर' द्वारा कराया जा रहा है।

इं. राजेश्वर सिंह ने उत्तर प्रदेश जल निगम की सेवा एक दक्ष इंजीनियर के रूप में करने के साथ ही साथ भोजपुरी साहित्य कि सेवा में, विभिन्न विधाओं से एक दर्जन से अधिक पुस्तकों का सृजन कर, कीर्तिमान स्थापित किया है। 'भोजपुरी कथा-सार', 'भोजपुरी-रामायण', 'भोजपुरी-महाभारत', 'भोजपुरी-पंचतंत्र', 'भोजपुरी-योगी कथामृत', 'घरेलू नुस्खा' इनकी बहुचर्चित पुस्तकें हैं। गुरु महिमा के साथ इक्कीस संतों के जीवन चरित्र पर आधारित 'राम पियारा साधु-संत', अड़तीश कृष्ण-भक्तों के जीवन चरित्र पर आधारित 'श्याम पियारा साधु-संत' भगवद् भक्तों को सहज ही आकर्षित करते हैं।

इनकी अपनी मातृभाषा भोजपुरी के प्रति निष्ठां एवं लगन प्रेरणादायी व प्रशंसनीय है। इं. राजेश्वर सिंह के स्वस्थ रचनाशील एवं दीर्घ जीवन की कामना करते हुए मानग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

भवदीय,

राजावशिष्ठ त्रिपाठी

www.bhojpurisahityangan.com

९

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
अल्यूमनी एसोसिएशन, गोरखपुर–273010 (उ0प्र0)
Madan Mohan Malaviya University of Technology
Alumni Association, Gorakhpur - 273010 (U.P.)
आज़ादी का अमृत महोत्सव

ई0 ज्योति भूषण राय
अध्यक्ष
Er. J.B. Rai
President

मो0नं0–6307196485,
983883555



शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि इन्जीनियरिंग कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान करने के साथ–साथ हिन्दी एवं भोजपुरी साहित्य क्षेत्र में अपने लेखनी से लगभग दो दर्जन पुस्तकों का सृजन करने वाले अभियन्ता श्री राजेश्वर सिंह के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित एक मानग्रंथ का प्रकाशन होने जा रहा है।

वर्ष 2023 में प्रकाशित इनकी भोजपुरी भाषा में रचित पुस्तक 'भोजपुरी योगी कथामृत' जो गोरखपुर नगर में सन् 1893 में जन्में परमहंस योगानन्द जी की आत्मकथा है। इसका लोकार्पण दिनांक 25 दिसम्बर, 2023 को मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर के परिसर में आयोजित मालवीय एलुमनी मीट–2023 (पूर्व छात्र मिलन समारोह) के अवसर पर कुलपति डॉ0 जे0पी0 सैनी एवं उपस्थित अतिथियों द्वारा हर्षोल्लास से किया गया। इनके कृत्यों की जानकारी पाकर उपस्थित जन प्रसन्नता से अभिभूत हुए।

ऐसे कर्मनिष्ठ एवं भावनिष्ठ इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के निमित्त मानग्रंथ के प्रकाश हेतु सम्पादक मंडल को अपनी शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ और इं0 सिंह के दीर्घायु, सुखद, स्वस्थ और रचनाशील जीवन की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

22/8/2024

(ई0 जे0बी0 राय)
अध्यक्ष
मालवीय एलुमनी एसोसिएशन

www.bhojpurisahityangan.com

१०

शुभकामना-सन्देश

(मातृ भाषा का एक अनन्य प्रेमी)

गोपालपुर स्टेट में जन्में एक बालक का नाम राजेश्वर सिंह रखा गया। भविष्य में आगे चलकर यह बालक प्रतिभा से सम्पन्न एक व्यक्ति के रूप में समाज का अंग बना। राजेश्वर ने अपने बाल्यकाल से ही पढ़ाई में रुचि रखने वाला और हर कक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते हुए इन्जीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की। इन्जीनियर बन कर उ० प्र० जल निगम में सेवा प्रारम्भ कर आगे चलकर अधीक्षण अभियन्ता के पद पर कार्य करते हुए सेवानिवृत्त हुए। इन्जीनियरिंग विभाग के कार्यों से मुक्ति के बाद इनकी साहित्य सेवा में रुचि बढ़ी। इन्होंने भोजपुरी भाषा जिसे परिवार व गाँव के लोग आपसी बात-चीत में प्रयोग करते हैं, के विकास व उत्थान में काम करने का निर्णय किया और भोजपुरी संगम संस्था में इस हेतु काम कर रहे कुछ बुजुर्गों से सम्पर्क कर भोजपुरी भाषा में लेखन शुरु कर दिया।

इं० राजेश्वर सिंह जी ने भोजपुरी साहित्य को अपनी लेखनी से जीवन्त करने के लिए विभिन्न विधाओं में दर्जन भर से अधिक पुस्तकों का सृजन कर समाज को दिया। इनकी लिखित पुस्तकों में भोजपुरी रामायण, भोजपुरी महाभारत, भोजपुरी भागवत कथा-सार, भोजपुरी पंचतन्त्र, भोजपुरी योगी कथामृत, घरेलू नुस्खा आदि बहुचर्चित हैं। इन्होंने इक्कीस सन्तों का जीवन चरित्र गुरु महिमा के साथ 'दीक्षा-गुरु', इक्यावन राम भक्तों का जीवन चरित के साथ 'राम पियारा साधु-सन्त', अड़तीस कृष्ण भक्तों के जीवन चरित के साथ 'श्याम पियारा साधु-सन्त' लिखकर साधु-सन्तों के जीवनी के बारे में समाज के सामने परोसा है।

इं० राजेश्वर सिंह की मातृभाषा भोजपुरी के प्रति अपार निष्ठा व लगन समाज के लिए विशेष प्रेरणादायी है व वन्दनीय है। मैं इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के इस प्रतिभा एं जीवन शैली से बहुत प्रभावित हूँ। इन्होंने भोजपुरी साहित्य के लिए इन पुस्तकों एवं ग्रन्थों का सृजन करके अपने कुल खानदान के आदि महर्षि मुनी विश्वामित्र की याद दिलायी है।

मैं इनके शेष जीवन के दीर्घायु एवं स्वस्थ होने की परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ तथा इनके निमित्त 'भोजपुरीभूषण' नामक मान ग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु हृदय की गहराई से शुभकामना अर्पित करता हूँ।

वीर बहादुर चन्द
एडवोकेट
अध्यक्ष, मुक्तिधाम सेवा समिति
गोला-गोरखपुर

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी बोली !

विश्व भोजपुरी सम्मेलन



डा० अशोक कुमार सिंह
राष्ट्रीय महासचिव













शुभकामना-सन्देश

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित 'भोजपुरीभूषण' नामक मान ग्रन्थ का प्रकाशन 'भोजपुरी संगम' गोरखपुर द्वारा करायी जा रही है।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह ने भोजपुरी भाषा में विविध विधाओं में एक दर्जन से अधिक पुस्तकों की रचना कर भोजपुरी की मान बढ़ायी है। इनकी रचनाओं से अभिभूत होकर दर्जन भर से अधिक संस्थाओं ने इन्हें सम्मानित भी किया है। काशी में स्थित जीवनदीप शिक्षण संस्थान-बड़ालालपुर में दिनांक २१ फरवरी २०२४ को आयोजित मातृभाषा दिवस समारोह में इन्हें **'डॉ० विवेकी राय स्मृति सम्मान-२०२४'** से विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा भी सम्मानित किया गया है।

इं- राजेश्वर सिंह जैसे सरल, सहज, सौम्य व लगनशील व्यक्ति के निमित्त मानग्रन्थ निर्माण कराने हेतु मैं सम्पादक मण्डल को अपनी शुभकामना प्रेषित करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इं० सिंह को स्वस्थ व सानन्द रखें ताकि इनकी लेखनी से समाजोपयोगी रचनायें दीर्घकाल तक नि:सृत होती रहें।

डा० अशोक सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

१२

शुभकामना-सन्देश

यह जानकारी प्राप्त हुई कि हमारे परम मित्र एवं पड़ोसी भाई राजेश्वर सिंह जी अपने जीवन के महत्वपूर्ण ७५ साल पूरे कर रहे हैं। इस अवसर पर उनके ७५ साल के उपलब्धियों को बयां करती हुई, एक मानग्रन्थ 'भोजपुरीभूषण' प्रकाशित की जा रही है। भाई जयनाथ यादव ने भाई राजेश्वर सिंह के साथ बिताए हुए कुछ संस्मरण सहित शुभकामना सन्देश भेजने हेतु मुझसे आग्रह किया। मैं यह बताना चाहता हूँ कि राजेश्वर सिंह जी और मैं एक ही गाँव के निवासी होने के साथ ही बी.एस.ए.बी. इन्टर कालेज, गोलाबाजार में हाई स्कूल में पढ़ते थे। भाई राजेश्वर जी साइंस के विद्यार्थी थे और मैं एग्रीकल्चर का छात्र रहा। वे मुझसे एक साल सीनियर थे फिर भी हम लोगों के सम्बन्ध बहुत ही मधुर थे। वैसे तो गाँव और पड़ोस के बहुत से विद्यार्थी थे लेकिन भाई राजेश्वर सिंह, रत्नेश्वरमणि त्रिपाठी, भाई जयनाथ यादव, भाई परमहंस यादव, गंगेश्वर दूबे और मैं स्वयं, कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें सरकारी सेवा में कुछ सफलताएं मिली और सभी लोग अपने क्षेत्र में सम्मानजनक जीवन यात्रा पूरी किया। अब सभी लोग शेष जीवन को बेदाग पूरा करने की कामना रखते हैं।

राजेश्वर सिंह जी अच्छे स्कॉलर तो रहे ही और इंजीनियरिंग करके उ०प्र० जल निगम विभाग में सेवा करते हुए उच्च पदों पर पहुँच कर सेवानिवृत्त हुए। उनकी रुचि इंजीनियरिंग के साथ ही साहित्य एवं समाज सेवा में भी रही है। वह जाँति-पाँति से ऊपर उठकर सभी लोगों से प्रेम से मिलते रहे। उनकी बहुत सी रचनायें मैंने पढ़ी हैं जिसमें विविधता और समरसता है। उनकी किताब एक बार पढ़ना शुरु करने पर पूरा पढ़कर समाप्त करने की इच्छा होती है। आध्यात्मिक क्षेत्र में वे संत विचार धारासे प्रभावित दिखाई देते हैं। हम दोनों ताउम्र हैं और हम दोनों की साहित्य में एवं लेखन के कार्य में समान रुचि है। वह हिन्दी व भोजपुरी में लोकोपकारी विविध विषयों पर लेख व कहानियाँ लिखते हैं, जबकि मैं शोध आधारित सोशियो इकोनॉमिक्स समस्याओं एवं उनके समाधान संबंधी गम्भीर विषय पर लिखता हूँ। इसी वजह से हम दोनों में अक्सर बातचीत एवं मुलाकात होती रहती है।

मैं शुभकामना देता हूँ कि भाई राजेश्वर सिंह अपने आगे जीवन में भी सुखी एवं स्वस्थ रहे तथा अपने साहित्यिक रचना में व्यस्त रहें। उनका परिवार सुखी रहे। इस तरह सबके लिए मंगल कामना करते हुए अपना शुभकामना संदेश पूरा करता हूँ।

डॉ० रामसमुझ
पूर्व आयकर आयुक्त
तारामंडल-गोरखपुर
मोबाइल : ९७९४७०७५२२

www.bhojpurisahityangan.com

१३

कार्य कुशल एवं मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी इंजीनियर राजेश्वर सिंह

-प्रो० अलक राय

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जन्म से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। इन्होंने कई स्थान व संस्था से ख्याति तथा प्रशंसा प्राप्त किये। ये जलती हुई दीपशिखा जैसे हैं जो हर स्थान पर आलोक फैलाते हैं। अंधकार गर्त को भी प्रकाशित कर देते हैं। ये गरीबों के घरों में भी शांति और समृद्धि लाते हैं। ये बुझते हुए दीए को भी फिर से प्रकाशवान कर देते हैं।

इनका जन्म ४ अप्रैल सन् १९५० को गोरखपुर जिला के ग्राम गोपालपुर में हुआ था। उनके पिता स्व० समरबहादुर सिंह थे जो एक प्रबुद्ध और प्रकाशित आत्मा थे और इनकी माता स्वर्गीया परमजोता थीं जो समर्पित तथा ईश्वर भक्ति में लीन रहने वाली महिला थीं।

कहा जाता है कि सबेरा ही पूरे दिनको प्रदर्शित करती है, उसी तरह से श्री राजेश्वर सिंह भी प्रारम्भ से ही बहुत होनहार तथा ऊर्जावान व्यक्ति थे। उन्होंने इण्टरमीडिएट (विज्ञान) उत्तीर्ण करने के बाद मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी संस्थान (अब मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय) गोरखपुर से प्रथम श्रेणी में सन् १९७३ में उत्तीर्ण किया। इसके बाद उ०प्र० जल निगम में सहायक अभियन्ता के पद को सुशोभित किया तथा अन्त में अधीक्षण अभियन्ता के पद से सन् २०१० में अवकाश प्राप्त/सेवानिवृत्त हुए।

इनके गुणों को देखकर, इनकी उपलब्धियों को जानकर बिहार सरकार द्वारा लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के पद पर 'वरिष्ठ सलाहकार' के रूप में नियुक्त किया गया। ये मध्य प्रदेश में भी 'जल निगम मर्यादित' विभाग में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में कार्य किये।

इनके शानदार कार्य तथा कार्य प्रणाली जो उत्तर प्रदेश, बिहार तथा मध्य प्रदेश में था, उसे देखते साथ ही साथ साहित्यिक सेवाओं को देखते हुए उन्हें कई पुरस्कार और सम्मान भी प्रदान किये गये।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह को प्राप्त सम्मानोपाधियाँ :-

- *भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा 'महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।'।*

www.bhojpurisahityangan.com

- *राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत।*
- *राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा 'प्रेमचन्द सम्मान।,'*
- *सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा 'मेलोडी सम्मान' 2006।*
- *हिन्दी सेवा संस्थान कुशीनगर द्वारा 'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान'।*
- *'आध्यात्मिक रत्न सम्मान' सूफी साहित्य कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा।*
- *विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ 'विद्यावाचस्पति' 'विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न' एवं 'भारत गौरव'।*
- *'साहित्य कला शिरोमणि' सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष 2011, भागलपुर (बिहार)।*
- *मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिग कालेज, गोरखपुर (उ0प्र0) के एल्युमनाई एसोसिएशन द्वारा वर्ष 2011 में सामाजिक कार्यों में योगदान हेतु सम्मानित।*
- *'संगम सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था' गोरखपुर द्वारा 'संगम साहित्य सुमन' सम्मान-2020।*
- *नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर द्वारा भोजपुरी साहित्य सेवा के लिए 'नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान'-2021।*
- *सरयू अमृत महोत्सव-2021 द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखने पर 'सरयू रत्न सम्मान।'।*
- *भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार) 'संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-2021'।*
- *अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा किताब 'श्याम पियारा साधु-सन्त' पर 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' वर्ष 2023।*
- विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा 'डा० विवेकीराय स्मृति सम्मान वर्ष २०२४'।

इन्होंने भोजपुरी व हिन्दी भाषा की कई पुस्तकें लिखी हैं :-

इं. राजेश्वर सिंह की प्रकाशित कृतियाँ (भोजपुरी)

१- **जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४),** बारह शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह।

२- **कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७),** अट्ठाइस निबन्धों की पुस्तक

३- **पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६)** शिक्षाप्रद कहानी और निबन्ध की पुस्तक

४- **भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८),** सम्पूर्ण भागवत का संक्षेप में लिखी गई पुस्तक।

www.bhojpurisahityangan.com

५- राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९)

५१ राम-भक्तों की संक्षिप्त जीवनी चर्चा जिसमें वाल्मीकि से लेकर शबरी तक, महर्षि वेद व्यास, भारद्वाज मुनि, महर्षि अगस्त्य, आरण्यक मुनि, महर्षि शरभङ्ग, महर्षि अत्रि, सती अनसुया, आद्य शंकराचार्य, यमुनाचार्य, गोस्वामी तुलसीदास जी, श्री क्षेम गोसाईं जी महाराज, श्री राघवदास, महर्षि लोमशजी, समर्थ गुरु रामदास जी, श्री रामदास जी महाराज, बाबा कीनाराम अघोरी, परमहंस मामा श्री प्रयागदास जी, सन्त श्री कच्चा बाबाजी सम्मिलित हैं।

६- श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०)

३८ कृष्ण भक्तों की संक्षिप्त जीवनी चर्चा जिसमें बल्लभाचार्य, बिट्ठलनाथ, सूरदास, कृष्णदास, कुम्भनदास, परमानन्द दास, छीन स्वामी चतुर्भुजदास, नन्द दास, गोविन्द स्वामी, चैतन्य महाप्रभु, नित्यानन्द, रूप सनातन, रघुनाथ स्वामी, जीव गोस्वामी, गदाधर भट्ट, रैदास, मीराबाई, रसखान, नरसी मेहता, महाराज चतुर सिंह, नारायण स्वामी, एकनाथ, सुदामा, पीपा जी, स्वामी हरिदास जी, हरिराम व्यास जी, पृथ्वीराज जी, स्वामी तीर्थराज आदि सम्मिलित हैं।

७- भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०)

महाकाव्य 'महाभारत' की १८ पर्व-आदि-पर्व, सभा-पर्व, वन-पर्व, विराट-पर्व, उद्योग पर्व, भीष्म-पर्व, द्रोण-पर्व, कर्ण-पर्व, शल्य-पव, सौप्तिक-पर्व, स्त्री-पर्व, शान्ति-पर्व, अनुशासन-पर्व, अश्वमेध-पर्व, आश्रमवासिक-पर्व, मौसल पर्व, महा प्रस्थानिक पर्व, स्वर्गारोहण पर्व की संक्षिप्त चर्चाओं के साथ।

८- दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०)

दीक्षा देने वाला गुरु की महिमा एवं २१ सन्त गुरु रामानन्दाचार्य, रामानुजाचार्य, योगीराज देवरहा बाबा, गुरु नानकदेव, श्री दादू दयाल, महात्मा तैलंग स्वामी, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, जयदयाल जी गोयन्दका, सीताराम दास ओंकार नाथ महाराज, हनुमान प्रसाद पोद्दार, परमहंस योगानन्द, महन्त दिग्विजयनाथ, सच्चिदानन्द दास 'बंगाली बाबा', स्वामी करपात्री जी, पं. श्रीराम शर्मा, श्री राधा बाबा, महर्षि ओंकारानन्द सरस्वती, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी, महन्त अवेद्यनाथ, स्वामी शरणानन्दजी की जीवन चर्चा सहित।

९- घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०

५० घर की रसोइयाँ की सामग्री और आस पास के पेड़ पौधों की औषधीय उपयोगिता तथा पीने वाले पानी की गुणवत्ता के साथ।

१०- भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१)

श्रीराम के अवतार से जल समाधिक को लेकर घटनावार २९ खण्ड में चर्चा किया गया है।

www.bhojpurisahityangan.com

११- भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२)

संस्कृत-भाषा में पंच तंत्र कहानियों पर आधारित ६८ कहानियों के संग्रह की पुस्तक।

१२- भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३)

परमहंस योगानन्दजी की आत्मकथा के उन्चासों प्रकरण की चर्चा के साथ।

१३- रहनी करनी युगाचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी (वर्ष २०२४)

स्वामी प्रणवानन्द जी की जीवनी।

इं० राजेश्वर सिंह की प्रकाशित कृतियाँ (हिन्दी)

१- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३)

२- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४)

३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगा? (वर्ष २००४)

४- सुख जागे दुःख भागे (वर्ष २००४)

५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५)

६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६)

७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४)

८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७)

९- प्राचीन शिव मन्दिर जीर्णोद्धार (वर्ष २०२२)

उपरोक्त के अलावा ये कई पत्रिकाओं में अपने निबन्ध व लेख दिये तथा साहित्य जगत् में विशेषकर भोजपुरी साहित्य में चमकते हुए सितारे बन कर देदीप्यमान हैं। इन्होंने समाज उत्थान के लिए भी कई अवदान किया है।

सौभाग्यवश, मैं इनके साथ पिछले पचास साल से भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ हूँ। श्री सिंह मेरे विद्यार्थी रहे और मैंने इनको इन्जीनियरिंग में चार साल पढ़ाया है, समय था सन् १९७० से १९७३ तक का। उसके बाद भी जब ये उ० प्र० जल निगम में कार्यरत अभियन्ता थे, इनके कार्यों से प्रभावित रहा। ये बहुत ही कार्यकुशल और मृदुभाषी हैं। ये समाज के लिए एक सूर्य की भाँति प्रकाश स्तम्भ हैं जिनका जन्म ही 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की तरह है।

मैं उनको शुभकामना और आशीर्वाद देता हूँ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१४

दो शब्द .....
इं० राजेश्वर सिंह जी के सम्मान में-

-प्रो० यू०के० वर्मा

छह-सात वर्षों से आपका सान्निध्य, उत्कृष्ट चिन्तन, सुलझा हुआ व्यावहारिक जीवन और सकारात्मक प्रगतिशील साहित्यिक उत्प्रेरणा से भरा आपका अन्त:करण हमारे लिए आपका परिचय है। हमने आपके द्वारा भोजपुरी भाषा में रूपान्तरित कुछ साहित्यों को पढ़ा और उसके तत्त्वों के माध्यम से आपके अन्त: करण को टटोलने का प्रयास किया। निश्चय ही पूर्व जन्मों का संकल्प, वर्तमान संस्कार काल में एक के बाद एक निर्झर की तरह प्रस्फुटित होता चला जा रहा है।

अभी हमारे हाथ में 'पूज्यपाद परमहंस योगानन्द जी महाराज' के संदर्भ का भोजपुरी रूपान्तरण 'योगी कथामृत' है-पढ़ रहा हूँ और अभिभूत हूँ। हिन्दी साहित्य के साथ ही आपने भोजपुरी साहित्यों का रूपान्तरण किया यह भोजपुरी जगत् के लिए गर्व की बात है, सराहनीय है। शब्दों का चयन सुग्राह्य भी हैं और सहज भी। यह निश्चय ही बहुसंख्यक भोजपुरी प्रेमियों के लिए प्रेरणादायक है।

आपका यह विनम्र प्रयास भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में कुछ विशिष्ट कर गुजरने का संकल्प आपको उच्च आयाम में सूचीबद्ध होने का अवसर प्रदान करे। भोजपुरी प्रसंशकों के बीच आप ऐसे ही प्रेरणापुञ्ज बने रहें, साथ ही सत्यप्रयत्नों के प्रति ऐसे ही प्रवाहमान रहें। आपको इस स्नेही आत्मीय की तरफ से उज्ज्वल भविष्य के लिए ऐसी ही मंगल कामना है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१५

भोजपुरी के वित्तजा भक्त

-प्रो० रामदेव शुक्ल

यूरोपीय विद्वानों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ इंगलैण्ड की चाकरी करते हुए भारतीय संस्कृति और साहित्य को जिस रूप में दुनिया के सामने रखा उसमें कम्पनी का हित सर्वोपरि था। भारतीय नव जागरण के प्रवक्ताओं ने भी बहुत कुछ उन्हीं का अनुकरण किया। नतीजा यह हुआ कि जो कुछ भी देशी था वह सब विदेशी चश्में से देखा और दिखाया गया। इसीलिये बहुत कुछ ऐसा लिखा-लिखाया गया जो मूल से विच्छिन्न था।

आजाद भारत में जब अपनी जड़ों की खोज होने लगी तो उपेक्षित विधायें अभिव्यक्ति के नये-नये रूपों में आकार लेने लगीं। भोजपुरी की रचनाशीलता इसकी एक झलक मात्र है। इस समय भोजपुरी में जितनी रचना–शीलता आयी है वह अभूतपूर्व है। रचनाकार अपनी रचनात्मकता से गौरवान्वित होने के लिए आतुर हों ऐसा स्वाभाविक है। कविता, कहानी, संस्मरण, साधुओं और सन्तों के चरित जैसी अनेक विधाओं में सक्रिय इं. राजेश्वर सिंह भोजपुरी के पोषक माने जा सकते हैं। इन्होंने भोजपुरी को सम्पन्न बनाने के लिए जितना धन व्यय किया है, उतना मेरी जानकारी में किसी भोजपुरी भाषी ने नहीं किया।

भक्ति के अनेक प्रकारों में वित्तजा सेवा को भी पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। राजेश्वर सिंह को इस रूप में अवश्य अभिनन्दित किया जाना चाहिए।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१६

भोजपुरी के रास्ते जीवन की ओर

-प्रो० अनिल कुमार राय

इं. राजेश्वर सिंह से मेरा वर्षों पुराना परिचय है। इनसे पहली बार कभी गोरखपुर के किसी साहित्यिक आयोजन में मिला था। वहां इनसे चर्चा के क्रम में भोजपुरी भाषा के प्रति इनके गहरे सम्मान-भाव और समर्पण से प्रभावित हुआ था। इस पहली भेंट के बाद तो मिलने-जुलने का एक सिलसिला ही चल पड़ा है और इससे इनकी सृजनशीलता से मेरा परिचय निरन्तर प्रगाढ़ होता गया है। भोजपुरी भाषा और साहित्य के प्रति इनकी जैसी निष्ठा अन्यत्र बहुत कम दिखती है। इनका यह जीवन भोजपुरी के प्रति सर्वांग समर्पित है। यह समर्पण विरल हैं।

सभी भोजपुरी भाषियों की तरह भोजपुरी से मेरी भी लगाव बहुत गहरा है। घर में भोजपुरी तो रही ही है, बाहर भी भोजपुरी भाषी लोगों के साथ आत्मीय क्षणों की अभिव्यक्ति की मेरी भाषा भोजपुरी ही है। हिन्दी का शिक्षक होने और शैक्षणिक भाषा और साहित्य के निकट का सम्बन्ध बना हुआ है। हमारे विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में भी भोजपुरी है और एक शिक्षक के तौर पर भी इसकी दुनिया में मेरी वैचारिक आवाजाही बराबर बनी हुई है। इसलिए इस भाषा के व्यापक लोक-वृत्त में जो कुछ भी नया घटित हो रहा है, अपने इन्हीं निकट सम्बन्धों के कारण उससे अवगत होता रहता हूं। इं. राजेश्वर सिंह से परिचय और लगाव के पीछे यही कारण है। भोजपुरी से अपने इसी सम्बन्ध के कारण ही मेरा उनसे परिचय हो पाया और मैं उनका आत्मीय बन सका। भोजपुरी से गहन संपृक्ति की अपनी इसी सम्बन्ध-भूमि पर खड़े होकर कभी तीन-चार वर्ष पहले 'भोजपुरी संगम' द्वारा आयोजित एक लोकार्पण-गोष्ठी में मैंने इनी रचनात्मक सक्रियता की सराहना करते हुए भोजपुरी भाषा-साहित्य को सम्मपन्नतर बनाते रहने में इनके योगदान के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की थीं।

भोजपुरी भाषा-साहित्य में इं. राजेश्वर सिंह की निष्ठा और रचनात्मकता की चर्चा के क्रम में गोरखपुर में भोजपुरी के साहित्यिक वातावरण के निर्माण में लगी हुई उस संस्था की भूमिका

www.bhojpurisahityangan.com

के महत्व का स्मरण गलत नहीं होगा, जिससे इं. राजेश्वर सिंह का स्थाई सम्बन्ध है। कविवर स्व० सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन' द्वारा स्थापित और उनके सुपुत्र कुमार अभिनीत द्वारा संयोजित-संचालित 'भोजपुरी संगम' की नियमित 'बइठकी' ने गोरखपुर और आस-पास के रचनाकारों को जिस तरह प्रेरित और प्रोत्साहित किया है, वह अपने प्रभाव और परिणाम में अन्यतम है। रचना-पाठ, आलोचनात्मक विमर्श और परस्पर संवाद की सघन प्रक्रिया में यहां भोजपुरी के कवि-लेखक अपने भाव-बोध, विचार-बोध से लेकर अभिव्यक्ति-कौशल के विभिन्न रूपों तक के प्रति परिष्कार और विकास की बहुत सारी दिशाओं और पद्धतियों से परिचित होते रहते हैं। इस वातावरण का प्रतिफलन उनकी रचनाओं में दिखता है। इस 'बइठकी में सम्मिलित होने का मौका तो मुझे केवल एक बार ही मिला है, पर खबर हर बार की मिल जाती है। नई-पुरानी कई पीढ़ी के भोजपुरी कवि-लेखकों के स्थायी अभिविन्यास-केन्द्र (ओरिएंटेशन सेंटर) के रूप में इसका महत्व कुछ अलग ही है। कहना न होगा कि इस वातावरण से इं. राजेश्वर सिंह जी ने भी अपनी गति और दिशा को एक शक्ति दी है। गोरखपुर के वरिष्ठतम आचार्य डॉ० रामदेव शुक्ल का भी स्नेह-सान्निध्य इन्हें सहज ही प्राप्त है और इनके प्राय: सभी ग्रन्थों की भूमिकायें लिखकर उन्होंने इनका मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन किया है। गोरखपुर के इस साहित्यिक परिवेश और वातावरण की इन सभी क्रियाओं-गतियों के साथ बनने वाले संवादों और उनकी प्रेरणाओं के बीच इं. राजेश्वर सिंह की अपनी प्रतिभा की भूमिका को अलग से महत्व दिया जाना चाहिए, जो इनके सम्पूर्ण रचनात्मक व्यक्तित्व की निर्मिति का आधारभूत कारक-तत्त्व है। यह प्रतिभा-तत्त्व यदि नहीं होता तो केवल परिवेश और अभ्यास से वह सब कुछ नहीं अर्जित किया जा सकता था, जो आज इं. राजेश्वर सिंह के पास उनकी अपनी निधि के रूप में उपलब्ध है।

अपने विद्याध्ययन से लेकर सेवा-क्षेत्र तक गणित, विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े रहे राजेश्वर सिंह जी ने भाषा और साहित्य के लिए अपने मन और जीवन-व्यवहार में जिस तरह की एक अच्छी-खासी पवित्र जगह सुरक्षित रखी है, वह चकित करती है। पेशे से गणितीय और यांत्रिक होना जीवन को कई बार बुरी तरह अपनी गिरफ्त में ले लेता हुआ देखा-अनुभव किया गया है। इसीलिए जब ऐसी किसी सीमा से बाहर निकल कर कोई भाव, विचार, संवेदना, भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति के लिए बेचैन, सक्रिय और रचनात्मक होता है, तब कहीं जाकर वह इं. राजेश्वर सिंह बन पाता है। यह किसी भावातिरेक में किया गया प्रशंसात्मक अतिकथन नहीं है। इस रचनाकार के जीवन तथा उसके सम्पूर्ण कर्म और धर्म में भोजपुरी भाषा और साहित्य की जैसी रागात्मक उपस्थिति है, उसे जानने-समझने वाला कोई भी उनके बारे में यही कहेगा।

www.bhojpurisahityangan.com

मुझे याद है सन् २०२० में गोरखपुर जर्नलिस्ट एसोसिएशन के गोलघर, गोरखपुर स्थित सभागार में 'भोजपुरी संगम' ने इं. राजेश्वर सिंह की सद्य: प्रकाशित पुस्तक 'राम पियारा साधु-सन्त' के लोकार्पण के अवसर पर एक विचार-गोष्ठी का आयोन किया था। कुमार अभिनीत ने इस पुस्तक की एक प्रति उपलब्ध कराते हुए मुझे भी इस अवसर पर अपना विचार व्यक्त करने के लिए आमन्त्रित किया था। एक लम्बी अवधि से परिचित होने के बावजूद मेरे लिए यह उनकी पहली पुस्तक थी, जिसका मैं उस समय पाठक बन रहा था। हालांकि शायद इसी पुस्तक के साथ या इसी के आस-पास मुझे इसी वर्ष प्रकाशित इनकी 'श्याम पियारा साधु-सन्त', 'भोजपुरी महाभारत' और 'दीक्षा गुरु' शीर्षक पुस्तकें भी मिल गई थीं। जिन्हें देखने-पढ़ने का अवसर कभी बाद में निकल पाया था। लोकार्पण-गोष्ठी के लिए 'राम पियारा साधु-सन्त' पढ़ते हुए मैंने अनुभव किया था और आज भी इन सभी पुस्तकों को पढ़ते हुए एक बार फिर उसी अनुभव से गुजर रहा हूँ कि इं. राजेश्वर सिंह की बहुत सारी पुस्तकों की विषय-वस्तु धर्म और अध्यात्म की भाव-भूमि से ली गई है। 'राम पियारा' के पूर्व भी ये श्री भागवत और श्री राम महायज्ञ पर केन्द्रित पुस्तकों का प्रणयन कर चुके थे। इन पुस्तकों की इस विशिष्ट विषय-प्रकृति के बारे में सोचते हुए इस बात पर ध्यान जाना अस्वाभाविक नहीं है कि लेखक का यह विषय-चयन उसकी अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक अभिरुचि और संस्कारों से सम्बद्ध है तथा वह अपने समय और समाज के द्वन्द्वों एवं समस्याओं के समाधान के लिए इसे एक सर्वथा उपयुक्त रास्ते के तौर पर भी देखता है। रामकथा, महाभारत और साधु-सन्तों पर केन्द्रित राजेश्वर सिंह की इन पुस्तकों के पीछे मानवीय जीवन में उच्चतर नैतिक-सांस्कृतिक मूल्यों और आदर्शों की प्रतिष्ठा का उद्यम देख पाना कठिन नहीं है।

भोजपुरी के प्रति अप्रतिहत निष्ठा और समर्पण इं. राजेश्वर सिंह के जीवन का एक बड़ा मूल्य है। पर, किसी बड़े महत्व का अधिकार मात्र इससे ही नहीं मिल जाता। इससे बड़ा प्रश्न है कि यह भाषा और साहित्य आखिर क्यों ? किसके लिए ? महत्व के रहस्य का रास्ता इन्हीं प्रश्नों के उत्तर से होकर जाता है। वरना भोजपुरी के लिए उनका यह सारा राग इस बड़ी उम्र में भी उनकी महज एक किशोर भावुकता की सामान्य अभिव्यक्ति से अधिक कुछ नहीं कही जाएगी। पर, इन प्रश्नों की दृष्टि से भी इं. राजेश्वर सिंह का साहित्य एक गहरे आश्वासन की तरह नजर आता है। मनुष्यता की सुरक्षा और विकास के लिए समर्पित मूल्यधर्मी साहित्य के एक विश्वसनीय आश्वासन की तरह। धर्म-संस्कृति-अध्यात्म केन्द्रित इन सभी ग्रन्थों में उन्होंने इस महादेश के वृहत्तर आख्यान-लोक से असंख्य कथानकों और चरित्रों को उपस्थित करते हुए मानवीय जीवन-व्यवहार के विधि-निषेध के एक ऐसे आचार-शास्त्र का निरूपण किया है, जो

www.bhojpurisahityangan.com

सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास के विकास के लिए अपरिहार्य है। आज के राजनीतिक समय में हम सब अपने युग-जीवन के संकटों की चर्चा करते हुए उनके समाधान के लिए अनेक बार शासकीय नीतियों और कार्यक्रमों को दोषी ठहराते हुए उसके हस्तक्षेपकारी निर्णयों और त्वरित कार्य-योजनाओं के प्रति मुखापेक्षी दिखते हैं। इस विचार-पद्धति की सीमा यह है कि हम इन संकटों के समाधान के लिए व्यक्ति-मन या आचरण की सभ्यता के उपकरणों की भूमिकाओं के बारे में कभी सोचने की कोशिश नहीं करते। इस पर ध्यान नहीं देते कि इनके निराकरण का एक अत्यन्त प्रभावी रास्ता व्यक्ति-चरित्र की अन्त:प्रक्रियाओं से होकर गुजरता है। विचार की यह पद्धति जीवन-यथार्थ के भौतिक तर्कशास्त्र का निषेध नहीं करती। यह उसके साथ चलती हुई, उसका सहयोग करती एक पूरक पद्धति है। यथार्थ के स्थूल आग्रहों ने इसकी बहुत उपेक्षा की है। इस सन्दर्भ में देखें तो इं. राजेश्वर सिंह की यह विशिष्ट धार्मिक-अध्यात्मिक साहित्य-दृष्टि सामाजिक-सांस्कृतिक निर्माण की परियोजना में एक महत्वपूर्ण सहवर्ती भूमिका निभाती दिख सकती है। इस भूमिका का भी अपना अलग ही महत्व है।

इं. राजेश्वर सिंह के साहित्य के मूल्य और महत्व पर केन्द्रित इस ग्रन्थ के प्रकाशन के अवसर पर इस भोजपुरी-राग के साथ उनके जीवन-राग के भी अक्षुण्ण बने रहने की हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१७

आशीर्वचन

-प्रो० प्रभुनाथ सिंह 'मयंक'

सेवानिवृत्त इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी एक प्रगाढ़ संवेदनशील एवं समवेदनशील प्रख्यात रचनाकार हैं। इन्होंने ग्राम्य जीवनाभूतियों को कला एंवं साहित्य का स्वाभाविक, सहज, प्राकत रूप प्रदान करके बहुचर्चित कीर्तिमान स्थापित किया है। ग्राम्य जीवन की परिस्थियों, प्रथाओं, मर्यादाओं, भावनाओं, संवेगों एवं अन्तहसम्बन्धों को अपनी कविताओं, लेखों, कहानियों और उपन्यासों में प्रतिमूर्ति करके अपनी अद्वितीय अभिज्ञा प्रतिष्ठित की है।

इनकी कहानियों, लेखों, कविताओं एवं उपन्यासों में ग्राम्य जीवन के प्राकृत प्रेम एवं सौन्दर्य का जीवन्त निरूपण किया गया है। यों तो भारतीय संविधान में राष्ट्र भाषा के रूप में खड़ी बोली हिन्दी को अभिव्यक्ति का मूलाधार बनाया गया है किन्तु अनेक अंचलों और जनपदों में माँ की भाषा और बोली अलग-अलग रूपरंगों में अभिव्यक्ति का माध्यम बनती जा रही है। राजेश्वर सिंह जी ने भोजपुरी को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाकर भोजपुरी साहित्य का रिक्थ विस्तारित किया है। लोकरंगों को लोक-कलाओं और लोकभाषा में ढालकर न केवल भोजपुरी अंचल के जन को ही अपने भाषिक, रचनात्मक अभियान के साथ जोड़ा है, अपितु भोजपुरी की संस्कृति भाषा और उसके साहित्य को आपने अपनी गद्य-पद्य रचनाओं के द्वारा, भारत वर्ष, मारीशस, त्रीनिडाड और गुयाना इत्यादि के बहुविस्तृत अध्ययन ज्ञान फलत तक सम्प्रेषित करके अपनी धरती, अपनी माटी और अपने अंचल के ऋण को भी उतारने का स्तुत्य प्रयास किया है। उनके द्वारा रचित शीर्षक ग्रंथ इस बात का ज्वलंत प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं।

मैं कामना करता हूँ कि उनकी रचना कीर्ति कौमिदी दिनोंदिन ज्ञानाकाश की सुदूर नाभस उचाइयों तक दीप्त होकर जनमानस में आनन्दामृत की वर्षा करती रहे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१८

इं० राजेश्वर सिंह : एक बहु आयामी व्यक्तित्व

-डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय

४ अप्रैल १९५० ई० को गोरखपुर जनपद के गोला कस्बे के समीप के प्रसिद्ध गाँव 'गोपालपुर' में जन्में राजेश्वर सिंह पेशे से अभियन्ता, किन्तु तबियत से साहित्यकार हैं। उ० प्र० जल निगम के अधीक्षण अभियन्ता पद से सेवा निवृत्त इं० राजेश्वर सिंह बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। पेशे से अभियन्ता होने के साथ-साथ हिन्दी एवं भोजपुरी के साहित्यकार, समाज सुधारक, अनुवादक, भक्त और भोजपुरी के समर्थक-प्रचारक भी हैं। श्री सिंह के सर्वधर्म समभाव भी हैं। वे अयोध्या के एक सन्त के दीक्षित शिष्य भी हैं और आजमगढ़ जनपद के निजामाबाद कस्बा में स्थित एक मशहूर आस्ताना के मुरीद भी। वे विभिन्न मन्दिरों में दर्शनार्थ उपस्थित होते हैं और अस्तानों-दरगाहों पर आयोजित होने वाले उर्स में भी भाग लेते हैं। यह उनके सेकुलर होने का एक उम्दा परिचय है। इस पहलू पर उनकी निष्ठा का परिचय उनके लेखन से सहज ही प्राप्त हो जाता है। एक ओर वे अपने गाँव के शिव मन्दिर के जिर्णोद्धार का विवरण और श्री राम महायज्ञ गोपालपुर की झलकियाँ विवरणिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं तो दूसरी ओर निजामाबाद के प्रसिद्ध आस्तानों, मन्दिरों का परिचय भी अपनी पुस्तक 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' के माध्यम से कराते हैं।

इं० राजेश्वर सिंह ने हिन्दी में कहानी की छह पुस्तकें और भोजपुरी में दो की रचना की है। उनकी हिन्दी विधा की चार कहानियों में प्रधानता मनुष्य की आदिम भूख-काम वासना की है। जीवन की अन्य अनेक सम-विषम समस्याओं की ओर लेखक का ध्यान कम गया है। हिन्दी की अन्य दो एवं भोजपुरी की कहानियाँ व्यावहारिक जीवन जीने की राह दिखाती हैं। उनकी भोजपुरी की एक रचना है-'कल्यान कट्ट जुगुति'। इसमें उनके निबन्ध संगृहीत हैं। इन निबन्धों में सीख, सलाह, प्रवचन और उपदेश की प्रधानता है। उनकी यह कृति लोकमंगल की उनकी अपनी भावना की अभिव्यक्ति है। लोक-कल्याण के भावना से ही अनुप्रेरित होकर उन्होंने 'घरेलू नुस्खा' जैसी एक पद्यात्मक पुस्तक लिखी है जो घरेलू महिलाओं के लिए ज्यादा उपयोगी है। इसमें उन्होंने गुणवत्तायुक्त जल तथा औषधीय पौधों की उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला है।

www.bhojpurisahityangan.com

'पढ़ीं, समझीं मनन करीं' नामक उनकी कृति में शिक्षाप्रद कहानियाँ और निबन्ध संगृहीत है। इसी तरह लोक कल्याण की कामना से उन्होंने 'भागवत कथा-सार' भोजपुरी में प्रस्तुत किया है। 'राम पियारा साधु-संत' और 'श्याम पियारा साधु-संत' दोनों साधु-सन्तों के संकलन के साथ-साथ उन्होंने महाभारत, रामायण, पंचतंत्र और परमहंस योगानन्द की हिन्दी में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'योगी कथामृत' को भोजपुरी में प्रस्तुत-प्रकाशित किया है। सन् २०२० में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'दीक्षा गुरु' में उन्होंने दीक्षा देने वाले इक्कीस सन्त-महात्माओं की चर्चा की है।

अभियन्त्रण सेवा एक में एक ऊँचे पद से अवकाश लेने के उपरान्त इं० राजेश्वर सिंह ने समय के सदुपयोग का सर्वोत्तम मार्ग चुना है। स्वाध्याय, सत्संग, साहित्य सृजन, साधु-सन्तों की सेवा, धर्मार्थ कार्यों में सहयोग, साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं में सन्लग्नता-सम्बद्धता, साहित्यिक कार्यक्रमों-संगोष्ठियों-समारोहों में अनिवार्य उपस्थिति और अतिथियों-मित्रों को पुस्तकें भेंट करने के अपने आत्मीय एवं उत्साह पूर्ण तरीके से उन्होंने अपने को जीवन्त बना रखा है। उनकी सतत् सक्रियता, लोगों से आत्मीयता पूर्ण सम्पर्क, लेखन, विनम्रता और हार्दिकता के कारण ही उन्हें विभिन्नि संस्थाओं ने सम्मान्ति किया है।

श्री सिंह के व्यक्तित्व-कृतित्व पर केन्द्रित एक ग्रन्थ के प्रकाशन की योजना की सूचना प्रसन्नतादायक एवं स्वागत योग्य है। उस ग्रन्थ के शीघ्र सफल प्रकाशन और साहित्य को सर्वान्मना समर्पित अपने मित्र इं० राजेश्वर सिंह के सर्वप्रकारेण सुखद भविष्य के लिए सुहृदय से मंगल कामना प्रेषित है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१९

राजेश्वर सिंह : भोजपुरी गद्य की खेती करने वाले किसान लेखक

-प्रो० सदानन्द शाही

इंजीनियर राजेश्वर सिंह से पहली मुलाकात याद आ रही है। वे बनारस में मेरा घर खोजते हुए पहुँचे थे। कभी २०१८ की बात रही होगी। वे रिटायर्ड इंजीनियर से ज्यादा हमारी तरफ के सम्भ्रान्त से किसान लग रहे थे। उनका स्वागत सत्कार करते हुए एक अवकाश प्राप्त इंजीनियर मुझसे मिलने क्यों आयेगें ही सोच रहा था। लेकिन वे गोरखपुर से आये थे और वह भी उस मुहल्ले राप्तीनगर से जहाँ मैने न केवल जीवन के अनेक वर्ष व्यतीत किये थे बल्कि उन दिनों की गवाही देता एक छोटा सा घर आज भी मौजूद है, सुबह का वक्त मुझे विश्वविद्यालय निकलना था। उन्होंने बताया कि वे अवकाश ग्रहण करने के बाद भोजपुरी लिखते हैं। यह कहते हुए मुझे अपनी दो-तीन किताबें दी जिनमें भोजपुरी भागवत कथा-सार भी थी। मेरा भोजपुरी लेखन की दुनिया से किंचित परिचय रहा है। अमूमन भोजपुरी सेवी लोग कविता, गीता, गज़ल लिखते हैं। कभी कभार कहानियाँ और निबन्ध भी मिल जाते हैं। लेकिन भोजपुरी गद्य कम कम लिखा जाता है। इसकी एक वजह यह भी है कि लिखत पढ़त में भोजपुरी गद्य का स्वरूप स्थिर नहीं हुआ है। लेकिन हर भाषा को, जो एक विस्तृत क्षेत्र में बोलचाल की भाषा रही हो, उसे लिखित रूप में आने पर ऐसी स्थितियों से दो चार होना ही पड़ता है। इसलिए भोजपुरी गद्य के स्वरूप पर तर्क वितर्क करने से बेहतर है कि भोजपुरी गद्य लिखा जाय और प्रभूत मात्रा में लिखा जाय। मुझे राजेश्वर जी ऐसे ही उद्यमशील व्यक्ति लगे।

मौलिक लेखन के मुगालते में पड़े रहने के बजाय उन्होंने सुनी और समझी हुई कहानियों को भोजपुरी में लिखने की ठानी और लिख रहे हैं। भागवत कथा जिसका हिन्दू समाज में बहुत ज्यादा महत्व है उसे सरल भोजपुरी में रूपान्तरित करना आसान काम नहीं था। यह रूपान्तरण सामान्य भोजपुरिया, जो न संस्कृत जानता और न ही हिन्दी, के लिए उपयोगी है ही स्वयं भोजपुरी गद्य के विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास भी है और प्रयोग भी।।

वे उस समय अपनी एक नयी किताब 'राम पियारा साधु-सन्त' की पांडुलिपी ले आये थे। उन्होंने मुझसे भूमिका जैसा कुछ लिखने के लिए कहा। मैने लिखा भी। और चलते-चलते यह सुझाव दिया कि महाभारत को भी भोजपुरी में प्रस्तुत कीजिए। यह देखकर मुझे घोर आश्चर्य हुआ

www.bhojpurisahityangan.com

कि वे साल भर के भीतर महाभारत की कहानियों को भोजपुरी रूपान्तरण कर के ले आये और फिर कुछ लिखने का आग्रह किया। मैं अपने अनुभव से जानता हूँ कि महाभारत पढ़ना ही किसी तप से कम नहीं है। हमारे इलाके में यह अंधविश्वास प्रचलित है या कि किया गया है कि महाभारत पढ़ने और उसकी प्रति घर में रखने से घर में महाभारत होता है। ऐसे वातावरण में रहते हुए राजेश्वर जी ने न केवल महाभारत पढ़ी बल्कि उसे भोजपुरी में प्रस्तुत करके सर्वजन सुलभ बना दिया। फिर रामायण पर हाथ लगाया। पंचतन्त्र की कहानियों का भोजपुरी रूपान्तरण किया। साल बीतते बीतते भोजपुरी के ख़ज़ाने में एक नयी किताब लेकर राजेश्वर जी हाजिर होते रहे। उनके द्वारा किए गये ये भोजपुरी रूपान्तरण भोजपुरी गद्य के विकास में नींव के पत्थर सा होंगे। लेकिन बात इतने से पूरी नहीं होगी। उन्होंने जिन किताबों की भोजपुरी में प्रस्तुति की है वे सामाजिक रूपान्तरण की दृष्टि से भी मूल्यवान हैं।। संत स्वभाव कैसा होता है ? संतों के लक्षण क्या होते हैं से लेकर पंचतन्त्र की नीति कथाएं तक हमारे सामाजिक चित्त को उन्नत बनाने के परम्परा सिद्ध उपाय हैं। कभी स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि संस्कृत के लोहे के संदूक में बंद ज्ञान को उसके बाहर निकालने की जरूरत है। राजेश्वर जी यह काम वैसे ही कर रहे हैं जैसे हमारा किसान लाभ हानि के भाव से ऊपर उठकर हर साल खेती करता है और लोगों का पेट भरता है।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भी हर साल ऐसे ही संस्कृत के किसी आकर ग्रन्थ को सरल भोजपुरी में प्रस्तुत कर भोजपुरिया मन की भूख को दूर करने का उपाय कर रहे हैं। मैने पिछली मुलाकात में उनसे अनुरोध किया कि अब भारतीय संविधान का भोजपुरी रूपान्तरण कर दीजिए। उन्होंने कुछ हाँ, हूँ तो नहीं किया, लेकिन मुझे यकीन है कि भोजपुरी को संवैधानिक दर्जा जब मिले संविधान को भोजपुरी रूप अगले साल तक जरूर मिल जाये और यह काम करेंगे इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी।

राजेश्वर सिंह जी जीवन के पचहत्तर साल पूरे कर रहे हैं। मैं कामना करता हूँ कि वे ईशावास्योपनिषद् के ऋषि के अनुरूप कर्म करते हुए सौ वर्ष जियें और भोजपुरी के खजाने में प्रति वर्ष श्री बृद्धि करते रहें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

२०

पहरुआ

-बागेश्वरी प्रसाद मिश्र 'बागीश'

सेहत सम्बन्ध इयार दोस्त, हीत–नात, पइसा रूपया के सही समझ रिटायर भइला के बाद आ साठ साल के बाद ठीक-ठीक बुझाये लागेला। सुगर, ब्लड प्रेशर, सीमित आमदनी, भागत उमिरि आ पिठिआवत बेमारी आगे पीछे लउकल ना छोड़ेला।

गाड़ी घोड़ा, मोटर सायकिल, स्कूटी चलवला में जवन शान आ आराम जोगनी के गहना अइसन अबहिन ले सजल धजल रहे अब गँटई के घेघ बुझाए लागल बा।

घेघा तोपला ढपला के खोजबीन में पाँच सौ रूपया फीस देहला के बाद डाक्टर पैदल चलला के, पसीना बहवला के गमछा कपारे पर ओढा देहलस।

हम पैदल राप्तीनगर चौराहा से आगे पावर हाउस के तरफ पश्चिम साझी खान टहलत चलि जात रहनी, तबले दाहिनी ओर एगो लाल रंग के बड़हन साइन बोर्ड आँखी पर चमके लागल। लिखल रहे 'ब्लड बैंक'।

'ब्लड बैंक' से हमरा कवनो जरूरत ना रहे, ए लिए फालतू बाति के सोचल छोड़ि के हम एने ओने ताके लगनी। तबले ओही महान से सटल एगो तीन मंजिला मकान के लोहा के गेट लगल फाटक लउकि गइल। गेटवे के एक तरफ नेम प्लेट लगल रहे। 'गुरुधाम' एम.आई.जी. ७७, 'गुरुधाम' के नाम देखि के मन में एक पवित्र विचार मन में आवे लागल। मन में द्वन्द्व आवे लागल आजकल त लोग मकान के नाम 'सिंह हाउस', 'पासवान पैलेस', 'मालती महल', 'ताज पैलेस' आदि-आदि हैसियत बढ़ावत लिखेला, त ई कवन आदमी बा, जवन आजकल घोर कलयुग में अपने मकान के नाम 'गुरुधाम' शान से लिखलेबा। हमार निगाह फाटक के दोसरे तरफ जब गइल त 'इंजिनियर राजेश्वर सिंह' लिखल देखके चिहुकि गइल। नाम जानल सुनल परिचित लागल। 'इन्जिनियर राजेश्वर सिंह' हमरा साथे 'भोजपुरी संगम' के लगभग हर एक बइठकी में साथे भेटा जालें। 'भोजपुरी संगम' में कविता पाठ, हर एक बइठकी में होला। कहानी विवेचना सब कुछ होला।

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर इंजीनियर राजेश्वर सिंह चूँकी गद्य, कहानी लेखक हवें, ज्यादातर चुप-चाप बइठल देखत समझत रहेलें। कविता पढ़ला, बोलला, चलला खातिर जहाँ कवि लोगन में चढ़ा-ऊपरी लागल रहेला, उहाँ राजेश्वर सिंह बिल्कुल साधारण रूप में शान्त रहेलें। लोग त आजु ले उनकर कबो कड़ेर आ गुस्साइल बोली ना सुनले होई। अइसन साधारण, उच्च व्यक्तित्व के धनी राजेश्वर सिंह के ही 'गुरुधाम' हो सकेला। ए हिम्मत के साथ हम गेट के काल बेल दबा देहलीं।

ऊपर के एगो छोट बच्ची बोलल ऊपर आ जाईं। हमरे समझ में ना आवे, हिम्मत ना परे की आगे बढ़ीं। कारण मने मन डर लागे की एक त इंजीनियर, ऊपर से ठाकुर। कहीं कौने अतरे कवनो पालतू एलसीसीयन बुलडाग बइठल होखे आ सीढ़ी पर चढ़ते दबोच ले। अक्सर आजुकल साहब लोग गेट पर 'कुत्ते से सावधान' के बोर्ड लगा देला। लेकिन एने वोने तकला पर अइसन कवनो बोर्ड ना देखाई देहलन त हिम्मत बान्ही के हम सीढ़ी से ऊपर चढ़ि गइलीं।

ऊपर जाते इंजीनियर साहब के लइका प्रवीण सोफा पर बइठा के तुरते पानी बिस्किट लिया के ध देहलें। जइसन पिता उहे संस्कार बेटा में। एह कलयुग में हम देखते रहि गइलीं।

भोजपुरिया माटी के पारिवारिक रहन-सहन देखि के हमार मन गदगद हो गइल आ पूरा निश्चित हो गइल की हम सही जगहीं आ गइल बानीं। पानी पियते भर में इंजीनियर राजेश्वर सिंह आ गइलें, आ बतकही चालू हो गइल।

बाते-बाते में इंजीनियर राजेश्वर सिंह के सादा जीवन, सरल उच्च विचार के एतना जानकारी हमके मिलल जवना के बिना आप लोगन के बतवला हमरा रहल नाहीं जात बा।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह के जन्म ४ अप्रैल १९५० में ग्राम पोस्ट गोपालपुर, (गोला)-जनपद गोरखपुर में भइल रहे। पिता स्वर्गीय समर बहादुर सिंह आ माई के नाम परमजोता देवी रहे।

प्राथमिक शिक्षा जबरिया स्कूल गोपालपुर, हाईस्कूल गोला से तथा इन्टर के पढ़ाई डी०बी० इन्टर कालेज, गोरखपुर में भइल।

राजेश्वर सिंह १९७३ में मालवीया इन्जिनियरिंग कालेज गोरखपुर से बी.ई. सिविल इंजीनियरिंग के डिग्री प्राप्त कइले। ओही कालेज में उनकर नौकरी भी छात्रन के पढ़ावे बदे लगि गइल।

इंजीनियर साहब के शादी श्रीमती राजकुमारी सिंह से भइल। इंजीनियर साहब के शादी में खूब भयंकर बारिस भइल रहे। गाँव में ओह समय त कवनो मैरेज हाल वगैरह त रहे ना। बरतिया लोग, एने ओने, एह दुआरी, ओह दुआरी मड़ई पलानी देखि के लुकाए लागल। आन्ही पानी एतना जोर रहे कि लोग केतनो पलानी पकड़ि के खड़ा रहे लेकिन रोकि नाहीं पावल आ पलानी देखते-देखते उड़ि के सरेहे में चलि गइल। राति भर लोग भागत लुकात फिरलें।

इंजीनियर साहब के श्रीमती जी काफी धर्मपरायण, सीधी-सादी एगो भोजपुरी महिला हईं। जेकर

www.bhojpurisahityangan.com

पुन्य प्रताप से, उनकर एगो बेटा नवीन सिंह सेना में कर्नल बाटें तथा दोसरका बेटा प्रवीण सिंह गोरखपुर के जानल मानल नाम बाटे।

श्रीमती राजकुमारी सिंह के प्रेरक व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार, रिश्ता-नाता, सम्बन्ध जोड़ बना के राखे के प्रभाव से राजेश्वर सिंह के इंजीनियर के धर्म गुण के अलावा साहित्य लेखन में बहुत विश्वास बढ़ल।

हमरे मन में एगो बाति हरदम खटकत रहे की इंजीनियर राजेश्वर सिंह एगो लमहर, छरहर, हट्टा-कट्टा डील-डौल क आदमी पेशा से सिविल इंजीनियर पइसा बनवल तजि के अउरी कवनो धन्धा ना करि के लेखन के छेत्र में कइसे आ गइलें। लेखन में भी भोजपुरी अउर ओहू में गीत गवनई छोड़ि के कहानी। गीत-गवनई के त मंच, कवि सम्मेलन में थोड़ बहुत पूछ, प्रचार आदमी बड़लहू बा, बाकिर भोजपुरी गद्य, कहानी, लिखला में कपार खपावल, छपवावल फेरू पढ़वइया पोल्हावल केतना हिम्मत धैर्य आ भोजपुरी सेवा के काम बा ई केहू भोजपुरी पहरुआ ही जानेला। भोजपुरी के पालल, पोसल, पेड़ बढ़ावल बहुत जीवट आ निष्काम पहरुआ क सकेला।

कहानी लेखन के बीज राजेश्वर सिंह के उपजाऊ कोर मन में बचपन में ही परि गइल रहे। गाँव के मदन धोबी गदहा पर कपड़ा लादि के घाटे पर धोए ले जा। गदहा के चरे खातिर छोड़ि दें। गदहा काफी बदमाश रहे। गाँव के लइके गदहा के दउड़ावत फिर ओही साथे राजेश्वर सिंह भी लिहो, लिहो करत दउड़े लागें। राजेश्वर सिंह के ई हरदम के कार रहे। लेकिन सुलभ बालमन मदन धोबी के रोज कहानी के धार्मिक किताब कहीं से ले आके अपने ईयार बढ़ई से बचवा के सुनला के बड़ा, ध्यान से देखे लागल।

कहानी के यिहे बीया धीरे-धीरे बढ़े लागल। आ राजेश्वर सिंह बहराइच में नोकरी के दौरान वोह समय के कहानी, किताब, धर्म युग, मनोहर कहानियाँ, सत्य कथा पढ़े लगलें। कहानी में एतना मन रमि गइल की एक रात में सत्यकथा के पूरा किताब पढ़ि जा।

किताब पढ़त-पढ़त मन में आवे लागल की सब कहानी त कहीं न कहीं घटल जरूर बाटे त काहें न हमहूँ सब घटल बढ़ल कहानी लिखीं। लिखल शुरू क देहलें, लेकिन मन में डेराए लगले की पता नाहीं छपि की नाहीं, केहू पढ़ी की नाहीं, अच्छा लागी की बुरा लागी लोगवा का काही जग हँसाई त ना होई।

लेकिन लीखल ना छोड़लें। लिख-लिख के बन्डल बना के धरे लगलें। काफी बन्डल हो गइल। एही बीच उनकर तबादला बहराइच से हो गइल। पूरा समान बन्डल ले आके गाँवे रखि देहलें आ आजमगढ़ डिपुटी ज्वाइन क लेहलें। डियुटी, घर जंजाल में फँसि गइलें। चौदह-पन्द्रह साल बाद गाँवे में घर के रंगाई-पुताई के समय मजदूर लोग सामाने के साथे कागज के बन्डल

www.bhojpurisahityangan.com

सुखावे खातिर छते पर डारि देहल। इंजीनियर राजेश्वर सिंह जब देखलें आ पढ़लें त इयाद परल की ई त सब कहानी के बन्डल हवे। सहेज के आजमगढ़ ले अइलें आ जीराक्स करा के मेजे पर ध देहलें।

इंजीनियर साहेब के आजमगढ़ डेरा पर वोह समय के मशहूर शायर मधुर 'नजमी' के आइल गइल रहे। एक दिन नजवी साहब के नजर टेबल पर धइल जिराक्स पर पड़ल त उठा के पढ़े लगले, आ उठा के, अपना घरे ले गइले। उनके काफी पसन्द आइल आ अपने तरफ से सुधार करि के ले आके देहलें आ कहले सिंह साहब काहें नाहीं छपवा देत बाड़ीं।

इंजीनियर साहब कहले के छापी, हमके त नाहीं भरोसा बा। एही बीच इंजीनियर साहब के बचपन क इयार (जयनाथ यादव) जे अखबार में काम करत रहे आ गइलें। नजमी साहब उनके जानत रहलें उनकर एगो प्रिन्टिंग प्रेस बनारस में रहे। 'नजमी' साहब उनके देखते कहले 'काहो इंजीनियर साहब के किताब ना छपाई।' ऊ तुरते कहलें का कहत बानी इंजीनियर साहब के किताब ना छपाई त केकर छपाई।

मधुर 'नजमी' के प्रयास आ प्रेरणा से छपाई पूरा हो गइल। राजेश्वर सिंह के हौसला काफी बढ़ि गइल। समय से खाद-पानी आ वातावरण मिलला से मन एतना हरियाइल की धोबी आ बढ़ई के अंकुरण से इंजीनियर साहब के साहित्यिक गाछि काफी बढ़ि गइल।

इंजीनियर साहब के पहिला कहानी संग्रह में 'एक कहानी की आत्मकथा' २००३ में प्रकाशित भइल। अउर कहानी नीचे दीहल बा।

१- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), २- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४), ३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ? (वर्ष २००४), ४- सुख जागे दुःख भागे (वर्ष २००४), ५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), ६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६), ७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), ८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७)।

चाल चलत हाव भाव, चिन्तन आ गाँव घर के शादगी इंजीनियर साहब के रोम-रोम में झलकत रहेला। उंनका कोमल निश्चल मन पर समाज, सुख-दुःख, पाप-पुन्य, धरम-करम के एतना अथाह सम्पति बा जेकर झलक उनका नीचे भोजपुरी रचना आ नाम से लउके लागल बा।

१- जिनगी कट्ट दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), २- कल्यान कट्ट जुगति (वर्ष २००७), ३- पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६), ४- भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८), ५- राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९), ६- श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०), ७- भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०), ८- दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०), ९- घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०,

www.bhojpurisahityangan.com

१०- भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१), ११- भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२), १२- भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३)।

ऊपर वर्णित सब कहानी देखते पता चलि जाता कि कवनो लालच प्रशंसा, प्रचार खातिर ना लिखि के एक मात्र ध्येय जन कल्याण, सामाजिक चेतना आ भोजपुरी के खजाना बढ़ावल बाटे। राजेश्वर सिंह जइसन निष्काम, मेहनत आ संरक्षण से भोजपुरी भाषा आ संस्कृत काफी समृद्ध हो गइल बा। भोजपुरी के एह 'पहरुआ' के अपने आपे एतना सम्मान मिलल बा की लिखला में कई पन्ना भरि जाई। आजकल जब लोग जाति-पात, पार्टी, पइसा से घर बइठले आन लाइन सम्मान पा जाता, त तनी एह 'पहरूआ' के सम्मान के भी मूल्यांकन कइल जरूरी बा।

१-भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा "महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।"।

२-राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत।

३-"आध्यात्मिक रत्न सम्मान" सूफी साहित्य कृति "जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी" पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा।

४- विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ "विद्यावाचस्पति" "विद्यासागर", "भारतीय भाषा रत्न" एवं "भारत गौरव"।

५-"साहित्य कला शिरोमणि" सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष २०११, भागलपुर (बिहार)।

६- 'संगम साहित्य सुमन' संगम साहित्यिक संस्था गोरखपुर द्वारा।

ई त कुछ मुख्य सम्मान बाटे बाकिर ढेर सगरो दर्जन भर पुरस्कार मिलल बा, जेकर कबो कवनो जगही जिकिर इंजीनियर साहब ना कइलें, जब कि आजु कल फेस बुक खोलते कवि, लेखक लोगन के रोज-रोज के सम्मान पत्र देखते मोबाइल के स्क्रीन चटके लागेला।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह अपने जीवन के पचहतरवाँ साल में पहुँचत बाड़े। उनके एह मुकाम तक पहुँचवले में हम उनके श्रीमती आ लइकन, नाती, पोता सबके शुभकामना आ धन्यवाद देत बानी, जे लोग हमेशा उनके जीवन स्वास्थ्य आ लेखन में सहायक आ सहयोगी रहल। भगवान राजेश्वर सिंह के स्वस्थ आ दीर्घायु बनावें जेसे भोजपुरिया समाज आ भाषा के सतत रक्षा हो सके।

'भोजपुरी पहरुआ' इंजीनियर राजेश्वर सिंह के कोटि कोटि बधाई, शुभकामना पुस्तक अइला खातिर।

www.bhojpurisahityangan.com

२

काव्याभिनन्दन–खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

२१

अभिनन्दन करते हैं

-पवन शर्मा

हे समरबहादुर के लाल राजेश्वर
आज सब तेरा अभिनंदन करते हैं
हर्षित चेहरे करतल ध्वनि से,
तेरा वंदन करते हैं।
आप हो सामने और गोपालपुर विसरा दूं
ऐसे कैसे काम चलेगा
गोपालपुर है जब तक जिंदा,
भइया तब तक आपका नाम चलेगा।
पहली भेंट जहां हुई,
उस धरा को नमन करते हैं
याद बहुत आता है नखडू
आज अगर जिंदा होता
हर काज में हाथ बँटाता
उड़ता एक परिंदा होता
उनके लिये जो आज नहीं है हम
अपनी चश्में नम करते हैं।
सुख की घड़ी हो या दुख की बेला
आप हमेशा खड़े रहे
और भी थे बड़े लेकिन
भइया आप हमेशा बड़े रहे
स्वभाव आप सा अपनाने की
कोशिश का प्रण करते हैं।
आज सोनू,मोनू,तनु के संग
बच्चे सारे गदगद हैं
आपकी छाया में खेल रहे हैं
जैसे आप घर के बरगद हैं
आपके उपदेशों को सारे
जीवन का आक्सीजन करते हैं॥

www.bhojpurisahityangan.com

२२

भोजपुरी के सान

-चन्देश्वर 'परवाना'

कइसो केहू परखि जान ले, ग्यान अउर विग्यान हईं।
इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी के सान हईं।।

चेहरा पर मुस्कान गजब बा देखि जिया हरसाला।
भेद-भाव ना तनिक हिया में आपन सभे बुझाला।।
प्रेम-भाव संबंध निभावत भरल नेहि के बान हईं।
इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी के सान हईं।।१।।

मन के भाव समझि लीं मन में मन से मान करीलें,
तनिक न कटुता पनपे पावे हरदम नेहि भरीलें,
पहिली बेर मिलल ओकरो ना लागर ही अंजान हईं।
इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी के सान हईं।।२।।

अपने बोली के दरजा दिहलीं जइसे महतारी,
भोजपुरी संगम पर बाटे राउर किरपा भारी,
साहित्य कला के साथे-साथे नेक भला इंसान हईं।
इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी के सान हईं।।३।।

बादर अइसन फाटत जाई, आई भले झकोरा,
सदा निरोग रहीं जिनगी भर भगवन इहे निहोरा,
सरस बना दीं परवाना के अइसन मधुरी तान हईं।
इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी के सान हईं।।४।।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

२३

अभिनन्दन है अभिनन्दन है

-अजय यादव

ई० राजेश्वर सिंह जी

सन् उन्नीस सौ पचास चार अप्रैल जे सुभ दिन आइल।
राजेश्वर जी पैदा भइनी सबकर मन हरसाइल।।

बाबू समर बहादुर सिंह जी परमजोता जी माई।
चार बहिन के एक दुलरुआ राजेश्वर जी भाई।

गोला की लगहीं बा गोपालपुर ह गउवां के नउवाँ।।
गोरखपुर ह जिला जहाँ के हईं निवासी रउवा।

गाँव से लेके गोरखपुर ले कइलीं खूब पढ़ाई।
हित नात परिजन पुरजन से पइलीं खूब बड़ाई।।

इंजीनियर बनि गइनी रउवाँ कइनी देस के सेवा।
दूध दही का साथे खइनी माखन मिसरी मेवा।।

सावंर रंग सलोना चेहरा छरहर काया पवनी।
सौम्य शांत सहज रउवा के ईश्वर खूब बनवनी।

सन् उन्नीस सौ इकहत्तर में शुभमंगल दिन आइल।।
राजकुमारी जी की संग जिनगी के गाँठ बन्हाइल।

बड़का बेटा श्री नवीन जी सेना में अधिकारी।।
छोटका बेटा श्री प्रवीनजी ज़न-जन के हितकारी।

बेटी तृप्ति सिंह जी बानी माँ के परम दुलारी।।
सास ससुर के सेवा करिके बानी बहुत सुखारी।

www.bhojpurisahityangan.com

त्याग तपस्या अउर साधना कबो ना निसफल होला।
अमर कीर्ति रहि जाला जग में भलही बदली चोला।।

दू दर्जन ग्रंथन के लिखि के कीरति कइनी भारी।
ईश्वर की किरिपा से अबहीं पढ़ल लिखल बा जारी।

मिलल जवन सम्मान मान ओकर बा बहुत बधाई।।
रहीं स्वस्थ सानन्द सदा ईश्वर से इहे मनाई।।

हिन्दी भोजपुरी सेवक के माथे चमके अक्षत चंदन।
देवता देवी रहे सहाई अजय यादव करे अभिनंदन।।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

२४

इंजीनियर राजेश्वर सिंह (काव्य-अभिनन्दन)

-रामनरेश शर्मा 'शिक्षक'

करुं बन्दगी काव्य अभिनन्दन का।
कि करूं राजेश्वर सिंह इंजीनियर का।।

धन्य हुई वह धरा जहाँ आपने जन्म लिया।
ऐसा अमिट कार्य किया, मानव को दे दिया।।

कर्म किये बिना काम न होता,
काम किये बिना नाम न होता।

भोजपुरी की पहचान दिलाये आप ने,
धन्य हुई माता और आपके पिता ने।।

समर बहादुर के राजदुलारे, पमरजोता के तुम अपने प्यारे।
जन्मतिथि चार अप्रैल उन्नीस सौ पचास की।।

पूरा किये प्रभु राम उनके आस को।
गोपालपुर गोला, गोरखपुर में जन्म लिया है।।

अधीक्षण अभियन्ता पद से अवकाश प्राप्त किया है।
महाभारत को भोजपुरी में सुन्दर ढंग से बाँध दिया है।।

देश के सभी कोने-कोने से सम्मानों को लाद दिया है।
रामायण को अवतार से समाधी तक भोजपुरी में पार किया।।

पंच-तंत्र की कथा-कहानी साधु संत हैं रामपियारा।
भागवत कथा सार भोजपुरी में, साधु संत हैं श्याम पियारा।।

www.bhojpurisahityangan.com

बारह पुस्तक भोजपुरी की आप से समाज पाया है।
हिन्दी के आठ काव्य आपने हम सबको पठाया है।।

कठिन काम समाज सेवा का आपने व्रत लिया है।
धर्म-धुरन्धर, कर्मनिष्ठ बन सबको आपने पूरा किया है।।

जो समाज हित कार्य करता है नाम उसी का होता है।
परमारथ में समय गंवाता उसका नाम अमर होता है।।

बहुते आये कुबेर किसी ने वीड़ा उठाया ना।
धन की लालच छोड़ आपने कहीं ध्यान भटकाया ना।।

विशेष आपको धन्यवाद !

❖

www.bhojpurisahityangan.com

२५

अभिनन्दन

-अमित सिंह 'बन्टी'

जेकर पिता समर बहादुर माता रहलिन परमजोता।
खेलत-कूदत पढ़त-लिखत हो गइलन एक जोधा ॥

गोपालपुर में पैदा भइलन, अनिवार्य पाठशाला में पढ़ाई कइलन ।
पाँच पास कर काशी गइलन, दुइये साल में वापस अइलन ॥

हाईस्कूल श्रेणी प्रथम हो गोला कालेज क मान बढ़वलन ।
इन्टर पढ़ते तरह-तरह क सपना लागल भरमावे,
आखिर इन्जीनियरिंग क राह पकड़लन ॥

चार साल कठोर मेहनत कइ के, इन्जीनियर बन आ गइलन ।
माता पिता के संघरी कुल-खानदान क मान बढ़वलन ॥

जल निगम में नौकरी कइ के, स्वच्छ जल गुणगान कइलन,
स्वच्छ जल क सेवन करीं, पालिया, अतिसार आदि से बचीं ।

पानी बर्बादी रोके खातिर, तरह-तरह क नारा लिखलन,
नल लगायीं, पानी बचायीं, अगली पीढ़ी क जान बचायीं ॥

सौ रोगन क इहो दवा, स्वच्छ जल और साफ हवा ।
किसिम किसिम क किताब लिखि के साहित्य सेवा में लगलन ॥

हिन्दी भोजपुरी भाषा, क जी भर मान बढ़वलन ।
अइसन कर्मठ लगनशील क करत हयीं हम सब अभिनन्दन ।
स्वस्थ सानन्द रहें राजेश्वर जी ईश्वर से करत हयीं वन्दन ॥

www.bhojpurisahityangan.com

२६

मिलनसार व्यवहार और अपनापन से भरल इं. राजेश्वर सिंह

-विजय प्रताप शाही

जब हम 'श्री हनुमंत प्रकाश' के दोहा, चौपाई लिखत रहलीं तब पहिली बार आप आदरणीय श्री राजेश्वर सिंह (इंजीनियर साहब) से साहित्य से जुड़ल चर्चा बाति भइल। आपके बहुतै मिलनसार व्यवहार, अऊर अपनापन देखि के हम अचरज में पड़ि गइलीं, मने एतना सरल, सहज आ सम्मोहन विचार भाव बहुते कम देखे के मिलेला। हालाँकि एकरे पहिले कई बेर गाहे बगारे आपसे भेंट भइल रहल बाकिर न त हम ई जानत रहलीं कि आप एतना बड़वर साहित्यकार हईं, आ न ते आपे ई जानत रहीं कि हमहूँ कुछू लिखि पढ़ि लेईले। आप के बारे में ई कहि सकीले कि भोजपुरी भाषा अउर साहित्य के समृद्ध कइले में आप के भी बड़वर हाथ बा। ई आपके मिलल ढेर के ढेर सम्मान अउर ढेर खानीं प्रकाशित कृतियन के देखि सुनि के साबित हो जाला। आप के व्यक्तित्व एतना बड़वर बा कि हमरे जइसन मनई ढेर कुछ नाई कहि पाई, दुई चार पंक्ति के बारे में लिखत बाटीं, देखल जा.....

जेकर बोली मिसिरी जइसन, जेकर व्यवहार शहद लेखाँ ।
कीरति जेकर महमह महके, केवड़ा के मीठ महक लेखाँ ।।
जिनके हाथे से गति पवलिस, आपन ई भोजपुरिया भाषा ।
उनके सँगरी ऊठल बइठल, पुरवउलिस मन के अभिलाषा ।।
भाषा पर अपने लेखन से, साहित्यिक रंग चढ़ाई ले ।
जे के चाहीं सहजोग कबो, सुबहित रसता देखलाई ले ।
जब भाव प्रेम के जागि गइल, तब प्रेम पियारा लिखि दिहलीं।।
भोजपुरिया ग्रंथ महाभारत, सारा के सारा लिखि दिहलीं ।।
अब ना जाने केतनी रचना, केतना पुस्तक लिखले बानी ।
एह भोजपुरी में आपो के, बाटे नाहीं कौनो सानी ।।
हइ बड़े भागि से आजु 'विजय', सान्निध्य आपके पाइ ले ।
दुनहुन हथवा के जोरि-जोरि, श्रद्धा से शीष नवाई ले ।।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

२७

इंजीनियर श्री राजेश्वर सिंह जी

-अरविन्द 'अकेला गोरखपुरी'

भोजपुरी संगम साहित्यिक संस्था के संरक्षक इंजीनियर राजेश्वर सिंह से हमार भेंट भोजपुरी संगम के छाछठवीं बइठकी दिनांक ९ अगस्त २०१५ के कुमार अभिनित जी के घरे भइल। भोजपुरी संगम के बइठकी क शुरुआत तट्ट वर्ष २०१० से रहल, बाकिर हमार आइल-गइल ०९ अगस्त २०१५ से भइल। इं० राजेश्वर सिंह जी के देखले के बादि इ ना बुझाइल कि इहाँ से एगो सम्बद्ध रचनाकार कवि हईं। धीरे-धीरे इ बुझाइल कि इहां के सेवा खतम कट्ट के दूसरका सेवा में बरिआरे जागल बानी। वर्ष २०१५ ले इहाँ के दूगो भोजपुरी रचना के किताब 'जिनगी के दूबि हरियाइल (२००४)' आ 'कल्यान के जुगुति (२००७)' प्रकाशित हो चुकल रहल। इहाँ के अबले (२०२४) चौदह बेर अलग-अलग संस्था से सम्मानित हो चुकल बानी। आगे हमार आ इंजीनियर साहब के यात्रा सुरु भइल जवन आजु ले बरकरार बा।

भोजपुरी संगम के संरक्षक के रूप में पा के मन गद्-गद् हो जाला। इहां के गैर हाजिरी में ई बुझाला कि आपन कुछ व्यक्तिगत रूप से हेराइल बा। इंजीनियर साहब के कई गो रचना गद्य/पद्य में पढ़े के मिलल, जवना से बहुत कुछ सिखे के मिलल। जइसन कि 'राम पियारा साधु-सन्त', 'श्याम पियारा साधु-सन्त', 'भोजपुरी महाभारत' के पढ़त में सबदन के संयोजन, उद्देश्य, व्याकरण भा उपसंहार, साफ-साफ लउकेला।

इंजीनियर साहब सौम्य, सरल व्यक्तित्व के धनी, काव्य के प्रति समर्पित, सामाजिक ताना-बाना में अपने के पिरोअत दुसरे के खातिर अनुकरणीय बानीं।

ईश्वर से निहोरा बा कि इंजीनियर साहब के छतर छाया हमनी के ऊपर एहि तरे सब दिन बनल रहें।

www.bhojpurisahityangan.com

कविता-

१-

इन्जीनियर राजेश्वर जी के बन्हल रहे सब थाती ।
कवि जगत में चमकत रहे रचल राउर पाती ।।
राम पियारा श्याम पियारा, भोजपुरी महाभारत ।
पढ़ीं समझी मनन करीं, वान्ही ज्ञान के गाँती ।।

२-

भोजपुरी संगम संरक्षक, नील गगन अस छतरी ।
राउर लिखल पसरत रहि फइले लेखन के गंठरी ।।
मिलत रहे भोजपुरिया नेह तार दिन हर रोज ।
पढ़त रहिं जा बढ़त रहि जा, बान्हत रहिं जा मोटरी ।।



www.bhojpurisahityangan.com

३

रचना–खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

२८

इं. राजेश्वर सिंह का हिन्दी रचना संसार

-डा० सरिता सिंह

इंजीनियर राजेश्वर सिंह ने सिविल इन्जीनियरिंग की डिग्री लेने के बाद मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज जहाँ से अध्ययन किया था, में अध्यापन कार्य लगभग दो माह करने के बाद ही उत्तर प्रदेश सरकार की स्वायत्त शासन अभियन्त्रण विभाग में सहायक अभियन्ता के पद पर नौकरी कर ली थी। यही विभाग अक्टूबर १९७६ में "उ०प्र० जल निगम" में परिवर्तित हो गया तथा समस्त कर्मचारी व अधिकारी इस उ० प्र० जल निगम के हो गये। इंजीनियर सिंह तब से लगातार इसी विभाग के जरिये समाज की सेवा करते रहे हैं। तकनीकि शिक्षा के बाद तकनीकि कार्यों को करते-कराते रहने के साथ जीवन में साहित्यिक रुचि कब और कैसे जाग गयी और इस क्षेत्र में अवदान करते रहे इस बारे में उनसे जानकारी प्राप्त करने मैं उनके पास एक दिन जा पहुँची। जो जानकारी उन्होंने दी उसकी संक्षिप्त विवरण दी जा रही है। उन्होंने बताया-

"मेरे पूज्य पिताजी, गाँव पर रहकर पैतृक जमीन-जायदाद की देखभाल करते थे, गाँव-घर छोड़कर, एक दिन भी बाहर रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता था। पिताजी तीन भाई थे। संयुक्त परिवार होने के नाते, गाँव पर रहने वाले सदस्यों की कमी न थी। होली, दशहरा, दीवाली एवं ग्रीष्म ऋतु में विद्यालयों में अवकाश होने पर परिवार के बाहर रहने वाले सदस्य भी गाँव आकर छुट्टियाँ मनाते थे। मेरे भी बच्चे इन अवकाशों में गाँव आ जाया करते थे। नौकरी के सिलसिले में मेरी बहराइच जिला में तैनाती थी। हमारा विभाग पेयजल आपूर्ति के कार्य से जुड़ा हुआ होने के कारण प्राय: ग्रीष्म-ऋतु में छुट्टी नहीं मिल पाती थी। मुझे अपनी ड्यूटी पर अकेले ही रहना पड़ता था। वर्ष १९८० से १९८८ के मध्य जनपद बहराइच में मैं तैनात था। विद्यालयों के ग्रीष्मावकाश तथा दशहरा से दीपावली तक के अवकाश-काल में बच्चों के गाँव चले जाने के कारण, मुझे अकेले ही रहना पड़ता था। विभागीय कार्यों के पूर्व एवं बाद के समय में घर में अकेले रहने के कारण उपन्यास एवं कहानियाँ पढ़कर समय व्यतीत करता था। पुस्तकों के पठन-काल में ही मेरे में एक दिन प्रश्न उठा, क्या मैं ऐसी कहानियाँ नहीं लिख सकता ?"

विद्यार्थी जीवन में हिन्दी विषय की परीक्षाओं में सबसे कम प्राप्तांक पाना सोचकर मन में लेखन-क्षमता के प्रति शंका होती थी फिर सोचा कि कौन अपने लेख को किसी को दिखाना है,

www.bhojpurisahityangan.com

चलो ! कुछ लिखने का प्रयास किया जाय। फिर मैंने अपने पड़ोसी गाँव के दो-एक लोगों के जीवन की कुछ खास जिज्ञासा भरी घटनाएँ सुनी थी। मैंने अपनी टूटी-फूटी भाषा में उन्हें लिखना प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे तीन-चार छोटी-बड़ी कहानियाँ लिख डाली। परन्तु इन्हें किसी को दिखाया नहीं। कभी-कभी 'स्वान्त: सुखाय' उन्हें पढ़ लिया करता था। स्थानान्तरण के समय वह बण्डलों के बीच कहीं बधँ कर रख गयी। सरकारी नौकरी में प्रत्येक स्थानान्तरण के बाद कागजात का एक बण्डल और जुड़ना स्वाभाविक होता है। अत: लिखी हुई सामग्री बण्डल स्मरण से ओझल हो गयी। सत्तरह-अट्ठारह वर्ष बाद अचानक पुराने कागजात की हिफाजत के समय इन कागजों पर नजर पड़ी जो फटे और बर्बाद होते नजर आये। फिर मैंने उनकी हिफाजत करने के उद्देश्य से जेराक्स करा लिया।

वो जेराक्स कराई प्रतियाँ मेरे निवास में एक मेज पर पड़ी हुई थीं। अचानक एक दिन पूर्वांचल के मशहूर साहित्यकार कवि-शाइर डा० मधुर नज़्मी साहब का आगमन मेरे आवास पर हुआ। बातचीत के दरम्यान उनकी नजर इन कागजात पर पड़ी और वे उन्हें उठाकर देखने लगे। कुछ अंश पढ़ कर उन्होंने पूछ लिया कि इसे किसने लिखा है ? सकुचाते हुए मैने अपने लेखन की कहानी उन्हें बता डाली। सुनते ही वे हँस पड़े और कहने लगे कि आप बेकार समझकर जिन्हें घर के कोने में डाले पड़े हैं, वे बहुत उपयोगी चीजे हैं। इन्हें लोगों के बीच जाना चाहिए। समाज में पर्दे के पीछे क्या हो रहा है ? लोगों को जानना चाहिए। फिर डॉ० मधुर नज्मी जी अपने साथ सामग्री ले गये और पूरा पढ़कर पुस्तकीय स्वरूप देने में अपना योगदान प्रारम्भ कर दिये। इन्हीं के श्रम और सहयोग तथा हौसला बढ़ाने का परिणाम है पहली कृति "एक कहानी की आत्मकथा"। डॉ० मधुर नज्मी इस कथा-कृति की प्रकाश-प्रेरणा के सूत्रधार हैं। बचपन के मेरे सहपाठी श्री जयनाथ यादव जी ने अपने प्रेस की सेवायें देकर पुस्तक का कार्य आसान बना दिया। मेरी इस कहानी के कुछ पात्र कहानी लिखते समय जिन्दा थे परन्तु इस समय तक सब के सब काल-कवलित हो चुके हैं। पात्रों की सामाजिक मर्यादा को दृष्टि में रखते हुए उनके नाम बदल दिये गये थे। किन्तु उनसे जुड़ी गुई स्थितियाँ ज्यों कि त्यों अपरिवर्तित रहीं।

अपनी हिन्दी रचनाओं की एक-एक प्रति को बाँध कर बण्डल बना कर रखे हुए थे। उन्होंने एक बण्डल उठाकर मुझे देते हुए कहा कि इन्हें पढ़ियेगी फिर इनके बारे में अपनी कुछ टिप्पणी दीजियेगा। उन्होंने फिर कहा कि लेखों के कुछ-कुछ अंश पेन्सिल से घेरे हुए हैं, समयाभाव हो तो पेन्सिल से घेरे अंश ही पढ़ लेने से पूरे लिखावट का आभास हो जायेगा, जल्दबाजी होने पर उसी पर नजर डाल लीजियेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि पूरा पढ़े बिना मन मानेगा नहीं। यह कहते हुए उन्होंने चाय-वाय पिलाकर मुझे विदा किया। घर लाकर मैं एक-एक किताब के कुछ पन्ने पलट कर देखे और उनसे कुछ उधृत कर लिखना शुरू कर दिया।-

www.bhojpurisahityangan.com

"एक कहानी की आत्मकथा" नामक उपन्यास की कथा सूरज नाम के एक व्यक्ति जिसका मस्तिक शरीर के अन्य अंगो के विकास से साथ ही साथ पूरी तरह विकसित नहीं हो सका था, घूमती है। बचपन से ही सूरज बहुत कम और अस्पष्ट शब्दों में अपनी बात कहता। अपरिचित आदमियों के लिए उसकी बात समझना मुश्किल था। जैसे यदि कोइ उससे पूछता कि आप कहाँ गये थे ? वह इसे सिर्फ इतना ही कहता, "नदी जा।" कथानक का कुछ-कुछ अंश नीचे दिया जा रहा है-

"समय बीतता गया, सूरज धीरे-धीरे युवा अवस्था को पहुँच गया। शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ होने के कारण, वह घर-गृहस्थी के कामों में अपने पिता जी का पूरा हाथ बँटाता था। पिता ठाकुर उदयभान सिंह ने सूरज की कार्य-क्षमता को देखते हुए चार-पाँच पशुओं के रख रखाव का भार पूर्णतया सूरज पर छोड़ रखा था। मात्र खेत जोतने के दिनों में एक हलवाहा रख लिया करते थे, जो केवल हल जोतता था। सूरज के शारीरिक श्रम से वे बहुत सन्तुष्ट थे।"

युवावस्था में पहुँचने के साथ-साथ शारीरिक अंगों का विकास होना स्वाभाविक है। पुरुषों के मुख पर दाढ़ी, मूँछों का विकास, इसी का संकेत है। सूरज जब युवावस्था की दहलीज तक पहुँचने लगा तो उसके साथ ही साथ उसके शारीरिक अवयवों, मनोवृत्तियों, मनोभावों में परिवर्तन आने लगा। नारी के प्रति आकर्षण-भाव उसके अन्तर्मन में कुलबुलाने लगा।.....

हरिजनों की बस्ती में एक लाल नामक व्यक्ति का परिवार था। उसके परिवार में वह, उसका बृद्ध बाप तथा नयी व्याहता दुल्हन थी। लाल की कुछ जमीन उसके पट्टीदारों ने ले ली थी। इसके लिए वह मुकदमा लड़ रहा था। इस मुकदमें की बाबत ठाकुर उदयभान सिंह ने लाल के पिता की काफी मदद की थी। लाल के पिता इनके एहसानों से दबे थे। फलत: परिवार के सभी सदस्य, ठाकुर साहब के घर आकर, कभी-कभार कुछ बेगारी यानी नि:शुल्क काम कर दिया करते थे। घर गृहस्थी का कार्य अल्प आय में चलने के कारण, लाल नौकरी की तलाश में पंजाब चला गया। अब घर में बची लाल की नव यौवना अल्हड़ पत्नी, जिसका नाम था रमरतिया तथा उसका वृद्ध पिता। ससुर को वृद्ध होने के कारण रमरतिया को ही घर गृहस्थी सम्हालने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा। कभी-कभार बेगारी करने ठाकुर साहब के घर जाना-आना शुरु हुआ। फिर उसने खेतों-खलिहानों में भी मेहनत-मजदूरी करनी शुरु कर दी।

रमरतिया एक साँवले रंग की युवती थी। नाक-नक्श तो साधारण था पर भरपूर गदराई यौवना और हँसमुख प्रकृति की थी। पानीदार चेहरा किसी को भी मोहित करने के लिए रसपूर था। उसकी खनकदार हँसी और हाजिर जवाबी देखते-देखते गाँव के कद्रदानों में फैल गयी। सम्भवत: इसी कारण भी गाँव के कुछ लोग उसके ससुर को कमाने-धमाने की बात समझाकर जल्द ही बहू के पैर घर के बाहर निकालने के लिए उकसाने लगे। रमरतिया पढ़ी-लिखी तो थी नहीं, किन्तु

www.bhojpurisahityangan.com

बहुत तेज व खेली खायी युवती थी। वह ऊँच-नीच खूब समझती थी। इसलिए वह हर किसी के यहाँ काम करने जाने से मना कर देती थी। वह अभी केवल ठाकुर साहब के ही काम पर जाती थी। साथ ही साथ गाँव के लोगों की मानसिकता और मनोविज्ञान को जाँचना-परखना चाहती थी। घर से उसके पाँव जल्द बाहर निकले, यह वह भी तो चाहती थी, क्योंकि अपने पति के साथ गुजरे उसके चन्द दिन उसे समझाने लगे थे कि सिर्फ एक साथी की सीमित आमदनी से परिवार का काम चलने वाला नहीं है।

अपनी अल्हड़ता के नाते पति के साथ पहली ही रात में पति की शारीरिक क्षमता को पूरे तौर पर समझ गयी थी। बाद में धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा, यह सोच कर वह खामोश हो गयी। आखिरकार खामोशी की भी एक हद होती है। कई रातें गुजरने के बाद जिस्मानी जरूरत अतृप्त ही रही। लाल से उसकी उम्मीद पर पानी फिरता महसूस हुआ। लाल शारीरिक रूप से ठीक दीखता था। पर वह दमा का मरीज था। कुछ जरूरी अंगों में भी कमी थी। लब्बोलुआब वह रमरतिया की मनोकामना तृप्त करने में पूर्णतया अक्षम था। गवना लाकर दुल्हन घर में बिठाकर चन्द महीनों में ही वह पंजाब.....

..... एक दिन रमरतिया को बुलाने सूरज उसके घर गया और बिना आवाज दिये उसके मकान में घुस गया क्योंकि दरवाजे पर कोई था नहीं। रमरतिया अठखेलियाँ करती हुई सूरज को छेड़ते हुए सूरज से मनुहार की मुद्रा में कहने लगी-"सूरज बाबू ! बड़े वो हो कुछ सोचते नहीं हो, घर में घुसे चले आते हो। कोई देख लेगा तो क्या कहेगा ?" इस पर सूरज बोला-"कोई क्या कहेगा ? यदि कोई कुछ कह देगा तो लट्ठ (लाठी) से उसकी खोपड़ी तोड़ दूँगा। मैं क्या कर रहा हूँ कि कोई कुछ कह सकेगा ?" वास्तव में सूरज, कभी आवाज देता और कभी बे-आवाजके किए भी अन्दर चला जाता था। वह लापरवाही से घर में बैठी होगी और ऐसे ही उसके जिस्म के कुछ खुले हिस्से दिख जायेगें।

मनाही के बावजूद सूरज का बिना आवाज दिये घुसते चले जाना और वासना से पूरित नजरों से उसे निरन्तर देखते रहना, ऐसा बार-बार करने से रमरतिया ताड़ गयी सूरज अपने में पूर्ण पूरूष है। सूरज द्वारा आगे बढ़कर कोई हरकत न करने की वजह रमरतिया सोच में पड़ गयी। सूरज कई बार मुझे अकेले में मिला है किन्तु इसने किसी भी प्रकार का संकेत नहीं दिया है। उसने सोच कर समझा कि वह बाउक (अनाड़ी) है, औरत और मर्द के एकान्तिक सम्बन्धों को पूर्ण रूप से नहीं जानता, अन्यथा कोई हरकत करता जरूर। अत: उसने एक दिन दुपहरिया में .....

..... फलत:, उसने सूरज को औरत और मर्द के पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में, एक निपुण शिक्षिका की भाँति मौखिक और प्रायोगिक अभिज्ञान से अभिभूत कर दिया। सूरज को इस

www.bhojpurisahityangan.com

प्राथमिकी से इतनी आनन्द की अनुभूति हुई कि वह रमरतिया की दीवागनी में खोया-खोया रहता। अब जब भी समय निकलता सूरज रमरतिया के घर अकेले पहुँच जाता। दोनों एक दूजे का जम कर सुख भोगते।

..... जैसे-जैसे समय सोपान चढ़ता गया, रमरतिया गाँव के लिए पुरानी होती गयी। अब जब ठाकुर साहब के यहाँ कोई काम नहीं होता तो यदा-कदा औरों के काम पर भी चली जाया करती। उसके परिचय का दायरा बढ़ता गया।.....

अब सूरज रमरतिया से निराश होकर दूसरे शिकार की टोह में रहने लगा। नये-नये शिकार मिलते गये।.....

..... इस तरह सूरज को लगभग हर उम्र की महिलाओं को समझने का मौका सहज ही मिलता गया और इस प्रकार एक दर्जन से अधिक युवतियों को अपनी हवश का शिकार बनाया।

इस समस्या का दोषी वास्तव में सूरज है या सामाजिक दमित इच्छा-भावना से उपजी कु-व्यवस्था। यह सवाल कई-कई सवालों कई-कई कहानियों और कई-कई उपन्यासों की अन्तर कथाओं और दमित जन जातियों की आत्मकथा का हिस्सा है। इसके हिस्सेदार सूरज जैसे अनेक सामाजिक पात्र, कथानक हैं। गाँव से लगायत शहर तक सी कहानियों-कथाओं की भरमार है। हमारे कथाकार न जाने क्यों ऐसी परिस्थितियों से न टकरा कर अपनी कलम से ऐसे अछूते विषयों को छूने से गुरेज करते हैं। आज जरूरत है ऐसी घटनाओं से आँख मिलाकर, सारे प्रकरणों को लेखन वद्ध करने की। ऐसा करने से सामाजिक कुरीतियों, अव्यवस्थाओं की कथार्सिस होगी और कितने ही सूरज और महिला-पात्र लुकी छिपी की हरकतों और भटकाव की स्थिति से उबर जायेंगे। सूरज तो इसी कहानी की आत्मकथा भर है।

इस आत्मकथा की कथा में कहानी की पर्तें दर पर्तें हैं। इसकी मांग को भरने की शर्तें आसान भी नहीं हैं। हमारे कथाकार बन्धुओं का प्रयास चिमटा से अंगारा छूने जैसे है। ऐसी स्थिति से वैचारिक रूप से टकराने और निष्कर्ष निकलने तक इन्तजार करने का है। यह कहानी सूरज के इर्द-गिर्द चक्कर जरूर लगा रही है किन्तु सूरज सरीखे कितने ही पात्रों की खूबियों-खामियों की अक्कासी करेगी। गाँव-गाँव का ही नहीं, शहराती माहौल में भी ऐसे कितने ही घटना-चक्र हैं जो निरन्तर चक्रित हो रहे हैं। एक कथाकार की संवेदना लेकर मेरा मन किसी के इस शेर की ओर बार-बार संकेत कर रहा है-

नाचते-नाचते इस गली उस गली,
हम कथा से कटे हो गये कथकली ।।

www.bhojpurisahityangan.com

(उपन्यास 'एक कहानी की आत्मकथा' कथाकार इंजीनियर राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : काव्यमुखी साहित्य अकादमी, आदर्श नगर-गोहना मुहम्दावाद, जिला-मऊ, पिन-२७६४०३ के कुछ अंश पृ.सं. ६-८, ९, ११, १५, १६, ४१)

O O O

उपन्यास **'एक कहानी बीच में है'** में निहित बातचीत का एक रसगर अंश और अन्त

".....देखिये पुजारी जी, पेट की भूख एक ऐसी भूख होती है जो बच्चे, बूढ़े, जवान सबको एक जैसी लगती है जिसकी पूर्ति हर कोई भूख मिटाने वाली चीज खा-पीकर करता है। एक ऐसी भी भूख है जो बाल्यावस्था में न लगकर, बढ़ती उम्र के साथ लगती है। यानी की जब बच्चे पन्द्रह-सोलह की उम्र पार करते हैं तो इस भूख का एहसास शिद्दत से होने लगता है। आप समझ गये होगें कि यह भूख यौवनावस्था की भूख होती है। यदि समय से शादी हो जाती है तो दाम्पत्य-सूत्र-बन्धन में बँधकर कुछ लोगों को अधिकृत रूप से अपनी भूख-तृप्ति का सौभाग्य मिल जाता है। पर बहुत से लोग हैं जिनकी समय से शादी नहीं हो पाती है या हो भी जाती है तो असमय ही विधुर या विधवा हो जाती हैं। ऐसे लोगों को समाज की तरफ से यौवनावस्था की भूख-तृप्ति का हक नहीं है। फलत: लोग लुका-छिपी कर अनधिकृत रूप से अपनी भूख-तृप्ति के लिए मजबूर होते हैं। बहुत उसमें सफल नहीं हो पाते हैं तो सिवा घुट-घुट कर जीने के और कोई विकल्प नहीं रहता। जिस तरह उदर की भूख मिटाने के लिए, रोटी बच्चे भी खाते हैं सयाने भी उसी प्रकार यौवनावस्था की भूख में उम्र का सवाल नहीं रहता है....."

"..... बातों-बातों से चन्दा अपने आप को एक भरपूर युवती का आभास पुजारी को कराती रही। अपने कपड़ों के प्रति लापरवाही बरत कर पुजारी का आकर्षण बढ़ाती गयी। उसके मन में चन्दा के प्रति मधुरिम भाव आने लगा। बातों-बातों में चन्दा के प्रति मन में ऐसा बीज बो दिया गया कि उसके मन में चन्दा के साहचर्य की ललक गुणात्मक होती गयी। पुजारी बार-बार चन्दा की तरफ ललचायी नजरों से देखने लगा इसी बीच ....."

"..... अभी मुस्कुराहट भरे अन्दाज में दोनों एक-दूसरे का अभिवादन स्वीकार ही कर पाये थे कि बगल के अरहर खेत से एक गाँव की सयानी ब्याहता लड़की निकली और दोनों के अभिवादन के अन्दाज को देखकर बोल पड़ी-कहीं मैं देवर-भौजाई के बीच कवाब में हड्डी तो नहीं बनी ? इस पर पुजारिन ने मुस्कराते हुए अन्दाज में कहा, "अरे तुम जैसी चीज है तो बीच में हड्डी क्यों बनेगी ? मलाई बनेगी मलाई ?" ....."

"..... अरे भाभी ! अब तो भूख बड़ी लग गयी है। केवल इस खाने से थोड़े पेट भरने वाला है। आप जानती ही हैं कि मेरा घर भी खाली है। अब तो मलाई जैसी चीज की जरूरत

www.bhojpurisahityangan.com

है ? पुजारिन भी कब चूकने वाली थी-रास्ते में मीरा मिली तो क्यों नहीं लेते आये।'' इस बार दोनों की नजरें सहजत: मिल गयीं दोनों सारगर्भित अन्दाज में हँस पड़े फिर शिवनन्दन ने कहा, ''घर से मलाई खाने के नियति से ही तो यहाँ चला हूँ, वह तो यूँ ही मिल गयी। जहाँ पर खाने को सोच कर चला हूँ, वहाँ तो आ ही गया.....''

''..... चन्दा के साथ एक घटना और घटी। जब वह खेतों के पास पहुँची ही थी कि इसके पति का एक पुराना साथी रामू मिल गया। कहीं दूर शहर में नौकरी करता था। साल-दो साल में गाँव जब भी आता तो अपने मित्र के लिए भेंट स्वरूप कोई न कोई चीज जरूर लाता था। प्रेमपूर्वक लाकर साथी को देता था। पर जब से पति की मृत्यु हुई तो इसके जाने-आने का सिलसिला टूट गया था। आज काफी दिनों बाद इससे चन्दा की मुलाकात हुई थी। चन्दा और वह दोनों फुरसत में थे। अत: नमस्कार के साथ-साथ रुक कर समाचारों का आदान-प्रदान होने लगा। चन्दा ने तोहफा (भेंट) की याद दिलायी और मुस्कराते हुए कहा-''जबसे आप के मित्र नहीं है, तबसे आपने बिल्कुल भुला दिया। अरे! हम क्या आपके कुछ नहीं लगते ?'' रामू बोला-''क्यों नहीं, क्यों नहीं ? अरे! आप के लिए जान हाजिर है। तोहफे की क्या बात है।'' चन्दा बोली- आपके जान की मालकिन दो साल पहले ही यह लोक छोड़ कर चली गयीं। अब तो खाली हैं इसलिए अब सबको हाजिर करते फिर रहे हैं। बातचीत के समय माहौल काफी संजीदा और सरस होता गया। रामू तो पिछले दो साल से विधुर का जीवन व्यतीत ही कर रहा था। अत्यन्त कामी स्वभाव का था। शहरों में वेश्यालय होते हैं जिसके द्वार बिना रोक-टोक के ऐसे लोगों के लिए खुले होते हैं।

फलत: रामू पत्नी की अनुपस्थिति में वेश्यालयों के चक्कर काटने लगा था। क्या पता था कि उसे ऐसा रोग हो जायेगा, जिसके चलते लोगों के बीच मुँह छुपाना पड़ेगा। यानी की गुप्तरोग का शिकार हो गया। डाक्टर से परामर्श लेकर दवा का लम्बा कोर्स लेकर गांव चला आया था। सोचा था कि यहाँ आराम करेंगे, दवा जल्द असर करेगी। पर वासना-पूरित मन नजरों पर असर दिखाया और नजरें शिकार की तलाश करने लगीं। रामू सुन चुका था कि चन्दा पर पुरुष के साथ एकाध माह गायब रही। अत: उसे दूर से आते देखकर उसकी तरफ बढ़ चला। बातचीत के समय चन्दा के सामने अपने गुप्त रोगों की बात छुपाकर सहवास का प्रस्ताव रख दिया। बड़े तोहफे की लालच भी दी। चन्दा के लिए पर पुरुष समागम कोई नई बात थी नहीं, वह तो खुद आये दिन शिकार की तलाश में रहा करती थी। फलत: इधर-उधर देखकर अनुकूल वातावरण जानकर उसने रामू के सामने समर्पण कर दिया। बड़े तोहफे के लालच में उसने उसे भरपूर तृप्त करने की कोशिश की। रामू और जो तोहफा दिया वो तो दिया ही पर गुप्त रोगों का तोहफा गुप्त रूप से अवश्य दे दिया। नतीजा यह हुआ कि कुछ दिन बाद चन्दा गुप्त रोग का शिकार

www.bhojpurisahityangan.com

हो गयी। उसने शर्म वश किसी से बताया तक नहीं। देहाती इलाज करती रही। धीरे-धीरे रोग उस पर बुरी तरह छा गया और लाइलाज होता चला गया। उसके पड़ोस की महिलाओं को धीरे-धीरे इसका आभास होने लगा। परन्तु चन्दा कष्ट के बुनियादी कारण को बताने की बजाय निरन्तर टालती रही। एक दिन पड़ोस की एक महिला ने उसके बेटे रामहरी को उसके बीमार होने की जानकारी देते हुए, शहर ले जाकर इलाज कराने की सलाह दी। रामहरी शहर ले जाकर डाक्टर को दिखाकर एक रिश्तेदार के वहाँ रुक कर इलाज कराने लगा। परन्तु बीमारी नियन्त्रण में न आकर निरन्तर बढ़ती गयी और एक दिन चन्दा की जीवन-लीला ही महा-मिलन को प्राप्त हो गयी। सच ही कहा गया है-

"बुरे काम का बुरा नतीजा।"

(उपन्यास-'एक कहानी बीच मे है', कथाकार इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : काव्यमुखी साहित्य अकादमी, आदर्श नगर-गोहना मुहम्मदाबाद, जिला-मऊ, के कुछ अंश पृ. सं. ३८, ४२, ५४, ६५)

O O O

उपन्यास **"जिन्दगानी ! ये तेरी कैसी जिन्दगी ?"** में निहित बातचीत के सारगर्भित अन्दाज

"..... रात को प्रेमा ने मेहमान को काफी प्रेम से और लीजिये और लीजिये, कुछ तो लीजिये, कहके खूब खिला रही थी। मेहमान महोदय भाँग के नशे में जमकर खा रहे थे। नशे की खुमारी में अपनी असली उम्र भूलकर आदतन किशोर बालकों की तरह हरकत करने लगे। शेरो-शाइरी और लतीफों का तो क्या कहना। प्रेमा बीच-बीच में उन्हें छेड़ती रही। वे और सुनाने लगते। पति सरदर्द का बहाना करके बिस्तर पर चले गये। प्रेमा सहानुभूति में जाकर उन्हें चादर ओढ़ाकर कह आई इन्तिजार मत करना, आज बूढ़े की बारी है....."

"..... अरे ! वो तो सो गये और आप जैसे रसिया आदमी रोज-रोज कहाँ मिलेगा ? देखने में बाहर से जितनी उम्र आप की लगती, अन्दर से उतनी है नहीं। आप की हर इक अदा जान लेवा है। मन तो कह रहा है कि आप के पास ही बैठकर लतीफे सुनती रहूँ। यह कहती हुई नख़रीले अन्दाज में वह मेहमान के बिस्तर पर बैठ गयी। वह सकुचा कर थोड़ा सिमट गया। प्रेमा बोली, 'अरे ! आप क्यों सिमट गये ? सिमटना तो हमें चाहिए जो आप के पास फैलती चली जा रही हूँ, छोड़िए यहाँ है ही कौन, जो देख लेगा'....."

".....क्यों कुछ वैसे हो क्या ? अच्छे खासे नव जवान हो। लड़कियाँ, औरते देखकर कुर्बान होती होंगी। खुद पीछा करती होंगी। इतनी दमदार भुजाओं में भला कौन औरत समाने की हसरत नहीं रखती होगी....."

www.bhojpurisahityangan.com

"..... कुछ देर बाद, उसने अपनी तरफ से और खुलकर बतियाना शुरू कर दिया तथा अनुभवी व्यक्ति के साथ दोस्ती करके जीवन के संगोपित रहस्यों की जानकारी प्राप्त करना समझदारी की बात है, ऐसा उसके मस्तिष्क में बैठा दिया साथ ही साथ नारी तन-मन के गूढ़ रहस्यों की विशेष जानकारी देकर नर-नारी सम्मिलन की प्रायोगिक तालीम दे डाली, फिर क्या था ? ....."

"..... प्रेमा कटाक्ष भरी मुद्रा में प्रेमवती से बोली, 'क्यों भई ! अचानक तुम्हारी भूख बढ़ गयी है क्या ? सनी दिखलाई नहीं पड़ रहा है। लगता है बेचारा तुम्हारी ही भूख मिटाने में जुटा रहता है ? लगता है तुम्हारी ही सेवा में थक जा रहा है। घर से निकलने की हिम्मत नहीं हो रही है'....."

"..... प्रेमवती बोली, 'अरे बहन जी ! मैं तो समझ रही थी कि उसको आपकी सेवा से फुर्सत नहीं मिल रही है'....."

"..... ऐसा कहते -कहते वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसके हँसने के अन्दाज से सनी की और बात करने की हिम्मत बढ़ गयी और आगे कहने लगा, 'अरे भाभी ! हम लोग तो अभी नादान बच्चे हैं। दुनियादारी कुछ जानते नहीं। भाभियों की कुछ कृपा भी नहीं हो रही है कि कुछ दुनियादारी सीखने को मिल सके। भाभी झट उसके आशय को ताड़ गयीं और उसको उकसाने के लिए कुछ स्पष्ट इशारा करके बोली'....."

सभी ने बदनामी के डर से पुलिस में घटना की सूचना न देने का निर्णय लिया। पर प्रेमा के गिरे हुए आचरण का चिन्हित उल्लेख शिक्षा-विभाग के अधिकारियों से कर दिया। तत्काल कड़ी से कड़ी कार्यवाही हेतु अधिकारियों पर जोर पड़ने लगा। प्रेमा का तत्काल स्थानान्तरण सलार मुहल्ले में कर दिया गया और एक जाँच अधिकारी की नियुक्ति कर दी गयी। जाँच अधिकारी के समझ तथ्य प्रस्तुत होने के बावजूद विभागीय प्रतिष्ठा न गिरे, इस कारण प्रेमा पर स्पष्ट दोषारोपण नहीं किया गया, और धीरे-धीरे मामला फाइलों में दबा दी गयी।

देश, समाज और परिवार के निर्माण में "आचरण" व व्यक्तित्व का एक महत्तम हिस्सा होता है। इनके बगैर समाज का कोई चेहरा नहीं है। निरन्तर पतनोन्मुख होते जा रहे समाज का प्रेमा एक उदाहरण है। प्रेमा सरीखी अध्यापिकाएँ, समाज सेविकाएँ अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए अपने सहित, अपरिपक्व छात्रा सबाना जैसी मासूम को भी नहीं बख्शती हैं और उसे अपनी दरिन्दगी और कुस्सित मानसिकता से दूसरो तक पहुँचाने में संकोच नहीं करती हैं। हमारे समाज का वास्तविक चेहरा सर कटी लाश जैसा होता जा रहा है। प्रेमा में प्रेमाएँ, शबाना में शबानाओं और मनोहर में मनोहरों को समाज में भिन्न-भिन्न रूप-प्रतिरूपों में देखा-परखा और महसूस किया जा सकता है।

www.bhojpurisahityangan.com

ऐसी सामाजिक हरकतों का पर्दाफाश करना साहित्यकार का महान दायित्व धर्म है। पर्दा डालने से, मोलम्मा चढ़ाने से विकृतियाँ साकारित होगी। हमारी ये शिक्षिकायें समाज का मुखौटा लगाकर यदि इसी तरह करती रहें तो समाज दिन-ब-दिन अपने पराभव को प्राप्त हो जायेगा। अनिवार्यता इस बात की है कि जहाँ-जहाँ समाज में इस किस्म की स्थितियों के सुराग हैं, वहाँ-वहाँ जन-जागृति जरूरी है और समाधान मूलक विद्रोह अनिवार्य है। ऐसा न होने की स्थिति में समाज का कल्याण कितना होगा, इसको समय बतायेगा। समाज में डिटॉल ही में कीड़ों की उपस्थिति से विचार-पक्ष आहत होता महसूस हो रहा है। हमें सामाजिक स्तर पर देश की पतनशील होती स्थिति को निरन्तर बचाना है और आचरण की हिफाजत करनी है। किसी शाइर का यह शेर परिस्थिकी के मद्देनजर कितना मुनासिब है-

''ना फ़हम कर रहे हैं रियाजे-सुखन तबाह-
अफसोस यह कि अहले-सुखन बोलते नहीं ।''

(उपन्यास : 'जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ?', कथाकार-इं० राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : काव्यमुखी साहित्य अकादमी, आदर्श नगर-गोहना मुहम्मदाबाद, जिला-मऊ के कुछ अंश पृ. सं. ५७, ६५, १०१)

O O O

पुस्तक **''जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी''** में प्रकाशित सत्तरह कहानियाँ हैं जो 'सरकार शाह अब्दुल्लाह शाह' 'शाह गोला दीवान' सरकार के जीवनकाल से सम्बद्ध है। सरकार के विषय में अब तक जो भी ऐतिहासिक तथ्य अन्य पुस्तकों में प्रस्तुत किये गये हैं पढ़ने और तर्क करने पर भ्रामक सिद्ध होते हैं। ये सत्तरहों कहानियाँ 'ट्रांस' की स्थिति में लिखी गयी हैं। श्री रणधीर सिंह जो जिलाधिकारी आजमगढ़ के आवास के पास सपरिवार रहते थे, जिलाधिकारी आवास के दक्षिण मुहल्ला परानापुर में कुछ दिन सपरिवार रहकर अपने पैतृक गाँव मझगाँवा में निवास कर रहे हैं। उनकी सुपुत्री रेखा सिंह उर्फ टुन्नी जिसकी शिक्षा कक्षा पाँचवीं की है, सहित पूरा परिवार 'शाह गोला दीवान सरकार' से घनीभूत ढंग से जुड़ा है। बेटी टुन्नी ने बताया कि उसे एहसास होता था कि सरकार के आस्ताने से कोई शक्ति मुझे लिखने के लिए हुक्म कर रही है और कागज-कलम लेकर लिखने बैठ जाती थी। बेटी रेखा सिंह उर्फ टुन्नी को 'ट्रांस' की स्थिति में आई ये कहानियाँ सूफीज्म को समझने में एक विशिष्ठ आयाम देती हैं। टुन्नी की तत्कालीन स्थिति यह होती थी कि वह आँख बन्द करती थी तो कहीं की भी हकीकत बयानी पूछने पर करने लगती थी। इन पंक्तियों का लेखक, रणधीर सिंह का समूचा परिवार, इस स्थिति का चश्मदीद और बयान का गवाह और श्रोता रहा है।

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक में दी गयी **''सत्तरहवीं घटना''** का जिक्र किया जा रहा है-

सामी और रामदीन दो भाई थे। सामी बड़ा तथा रामदीन छोटा था। सामी के पास पत्नी, एक लड़का तथा एक लड़की होने के साथ ही साथ पिता से प्राप्त संचित धन भी था। पैसा होने के कारण घमण्डी प्रबृत्ति का हो गया था। खेती के काम में न तो स्वयं भाग लेता था न ही अपने बच्चों को हाथ बटाने देता था। छोटा भाई रामदीन एवं उसकी पत्नी ही खेती के साथ-साथ घर का भी सारा काम-काज किया करते थे। रामदीन की पत्नी को गोद में एक छोटी सी बच्ची थी। माँ-बाप के काम-काज की व्यस्तता के कारन बेचारी बच्ची लाड़-प्यार को तरस जाती थी। रोते-बिलखते ही उसका सारा दिन गुजर जाता था। रामदीन की पत्नी को रात में कम दिखाई पड़ता था। वह रात में ठीक से खाना भी नहीं बना पाती थी। रोटी बनाते समय अक्सर उसके हाथ जल जाया करते थे। रोटियाँ भी अक्सर जल जाया करती थीं, जिसके कारण जेठानी की गाली और तीखे व्यंग्य सुनने पड़ते थे। कभी-कभी जेठानी मार भी देती थी। रामदीन को पत्नी के मजबूरी पर तरस आता था। वह उसको दिल से मानता था। भाई की डाँट-फटकार तो स्वयं सुन लेता था। परन्तु, भाभी द्वारा पत्नी पर किये जा रहे अत्याचार अच्छे नहीं लगते थे। भाभी एक दिन जब उसकी पत्नी पर मारने हेतु हाथ उठाई, तो झट हाथ पकड़ कर उससे कहने लगा- ''भाभी ! जब उसे दिखाई नहीं पड़ता तो रात को खाना आप क्यों नहीं बना लेती ?'' भाभी उस समय तो चुप हो गयी। परन्तु पति के आने पर नमक-मिर्च लगाकर उसके कान भर दिये, जिससे पति आग बबूला होकर रामदीन को डंडे से पीटने लगा। पड़ोसियों के बीच-बचाव से किसी तरह शान्ति हुई।

अगले दिन रामदीन जब खेत पर गया तो रात की घटना सोच-सोच कर रोने लगा। संयोगवश उधर से गुजर रहे सरकार ''शाह गोला दीवान'' सरकार ने रामदीन से पूछा-''क्यों भाई ! क्यों रो रहे हो ? क्या मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकता हूँ ?'' रामदीन बोला-''बाबा ! मेरी पत्नी को रात में दिखाई नहीं पड़ता, वह रात में खाना ठीक से नहीं बना पाती, जिसके कारण उसको तरह-तरह की यातनाएँ सहन करनी पड़ती है। उसकी बेबसी और लाचारी पर भाभी जरा भी तरस नहीं खातीं।'' बाबा ने कहा- ''इक्कीस दिन तक अपनी बीबी की आँख पर नीम की पत्ती पीस कर रख कर पट्टी बाँधो उसके बाद रात को भी दिखने लगेगा।'' बाबा ऐसा कहते हुए आशीर्वाद देकर अपने मार्ग पर चल दिये।

रामदीन बाबा के बताये उपाय को नियम से करने लगा। इक्कीस दिन में उसकी पत्नी को रात में भी पर्याप्त दिखाई पड़ने लगा जिससे वे दोनों खुशी-खुशी रहने लगे।

(किताब : 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी', कथाकार-इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक :

www.bhojpurisahityangan.com

काव्यमुखी साहित्य अकादमी-मऊ के कुछ अंश, पृष्ठ सं. २४, ४५)

O O O

किताब ''श्रीराम महायज्ञ-गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ'' के कुछ अंश (पृष्ठ संख्या २४, २५)

देखते ही देखते श्रीराम महायज्ञ का अन्तिम दिन २३ जून सन् २००३ आ गया। निर्धारित सभी आयोजन प्रभु श्रीराम की कृपा से सकुशल सम्पन्न हो गया। पुरोहितों एवं प्रवचन कर्ताओं की बिदायी ग्रामवासियों द्वारा यथाशक्ति दक्षिणा प्रदान करके कृतज्ञता भरे भाव के साथ की गयी। श्रद्धा का चरमोत्कर्ष उस समय देखने को आया। जब स्व० समर बहादुर सिंह के परिजन ने आखिरी दिन दस हजार रुपया एक मुश्त लाकर महात्मा हरिशरण जी को भेंट करते हुए निवेदन किया कि महाराज जी ! आये हुए पुरोहित गणों और प्रवचन कर्त्ताओं को देय दक्षिणा में इसे सम्मिलित कर लीजिएगा। इन लोगों की पूर्ण संतुष्टि पर ही हम ग्रामवासियों को यज्ञ का पूरा लाभ मिल सकेगा। महात्माओं ने इसे स्वीकार किया और दक्षिणा के रूप में वितरित कर दिया, जिससे सभी लोग सन्तुष्ट प्रसन्न-मुद्रा में विदा हुए।

कवि सम्मेलन : श्रीराम महायज्ञ के कार्यक्रमों में यज्ञ समापन के पूर्व संध्या यानि की २३ जून की शाम को आयोजित एक कवि सम्मेलन का भी आनन्द प्राप्त करने का अवसर लोगों को मिला। इस कार्यक्रम में आजमगढ़ एवं मऊ के कविगण पधारे थे। विश्वयात्री कवि और शाइर डॉ० मधुर नज्मी, अश्क चिरैयाकोटी एवं वैभव वर्मा जी के गाये गीत श्रोताओं को आज तक मंत्र-मुग्ध किए हुए हैं। इस प्रकार का आयोजन ग्राम में पहली बार होने से ग्राम वासी अति प्रसन्न हुए।

भजन-गायन : यद्यपि गाँव के कीर्तन-कारियों द्वारा नित्य प्रति कीर्तन-भजन का गायन होता था, परन्तु कार्यक्रम की पूर्व संध्या एवं पूर्णाहुति के दिन आजमगढ़ के श्री कौशल कुमार राय जो पूर्वांचल के मशहूर भजन एवं लोकगीत गायक हैं। उन्हें ग्रामवासियों को सुनने का अवसर मिला जिससे उत्सव की गरिमा में चार-चाँद लग गया।

O O O

कहानी संग्रह पुस्तक ''नसीब अपना-अपना'' के कहानी ''किस्मत शोरू की'', की कुछ पंक्तियाँ (पृ.सं. १, २, ३, ४ से)

ईश्वरीय सत्ता के महात्म्य, करिश्मा और कारनामे को उजागर करते हुए संत कवि मलूक दास ने, उस परम सत्ता के विधान को कुछ इस प्रकार रेखांकित किया है।

www.bhojpurisahityangan.com

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम ।
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम ।।

कहते हैं कि प्राणी मात्र के शरीर धारण कराने से पूर्व ईश्वर उसकी शरीरी आवश्यकता की पूर्ति के निमित्त, खाद्य-वस्तु की व्यवस्था हेतु संकल्पित होता है। इस बात की पुष्टि में एक कवि ने ऊपर दर्शायी गयी पंक्तियों में अजगर सहित अनेकश: पशु-पक्षियों की भोजनीय व्यवस्था की ओर ध्यानाकर्षण किया है। अजगर न तो शिकार करने कहीं जाता है, न ही पशु-पक्षी अपने भोजन हेतु अन्न उगाते हैं, परन्तु कुदरत स्वमेव इसकी व्यवस्था दे देती है। जिन प्राणियों में स्वादानुभूति की प्रबलता होती है, अच्छे-बुरे की परख हेतु इन्द्रियाँ विकसित होती है उन्हें यथा-योग्य भोजनादि एवं रहन-सहन की सुविधायें आदि किस्मत के रूप में प्रदत्त होती हैं। प्रकारान्तर से इस बात की पुष्टि बड़े ही सहज ढंग से हो जाती है कि कोई प्राणी दो जून का भोजन बड़ी कठिनाई से प्राप्त करता है तो किसी के समक्ष उसकी आवश्यकता एवं ग्रहण करने की क्षमता से अधिक परोस दिया जाता है। वह खा नहीं पाता और जूठन के रूप में छोड़ देता है।

कुछ महात्माओं ने तो किस्मत के बारे में कहा है कि प्राणी अपने पूर्व जन्म में किये गये अच्छे-बुरे कर्मों का प्रतिफल भोगने के लिए पुन: जन्म लेता है और उसका स्वरूप उसके भाग्य यानी की किस्मत में परमेश्वर द्वारा लिख दिया जाता है। उसे भोग भोगना ही पड़ता है। संत तुलसीदास जी ने भी पंक्तियों में सम्भवत: इसी बात को रेखांकित किया है-

''जो जस करहिं, सो तस फल चाखा''

महात्माओं के अनुसार निरन्तर सद्कर्म करने, सतत् भगवत्-भजन करने से भगवत्कृपा से ही उनमें गुणकारी परिवर्तन सम्भव हो पाते हैं। अन्य योनियों के प्राणी अपने शरीर पालने एवं सुख-दुख की अनुभूति करते-करते जीवन-लीला समाप्त करके दुनिया छोड़कर चले जाते हैं। अन्य योनियों में बात आती है एक कुत्ते की जो भाग्य से ''शेरू'' नामधारी है।

''.....शेरू के कारण, घर में बराबर चहल-पहल बनी रहने लगी। शेरू के कारण पति-पत्नी घर से बंध गये। शेरू को घर में अकेले छोड़कर कहीं जाना-आना बन्द हो गया। मित्र लोग उलाहना देन लगे।''

''.....कुछ माह बाद ही बचपन के एक अनन्य मित्र राजेश के लड़के की शादी पड़ी। विद्यार्थी जीवन से ही दोनों की मैत्री लोगों के चर्चा का विषय बनी हुई थी। छोटे-बड़े हर उत्सव में दोनों जरूर एक दूसरे के घर पर पहुँच कर हाथ बँटाते थे। दोनों ही के हर रिश्तेदार इनकी मैत्री की सघनता को जानते थे। फलत: एक से मुलाकात के समय दूसरे की भी चर्चा जरूर करते थे।'' राजेश ने अपने मित्र एवं अपनी भाभी विमला से निमन्त्रण-पत्र भेज कर प्राप्त होने की पुष्टि के

www.bhojpurisahityangan.com

साथ ही साथ दूरभाष से शादी में उपस्थित होने हेतु बहुत आग्रह किया था, परन्तु उत्सव के एक दिन पूर्व दूरभाष से यह सुनकर कि शादी में नही आ पायेंगे, राजेश को अत्यन्त अचम्भा हुआ। अपने मित्र से फौरन पूछा-"खैरियत तो है न ?" आखिर आप क्यों नहीं आ पा रहे हैं ? इस पर मित्र का यह जवाब सुनकर कि "शेरू" अकेला पड़ जायेगा, वह दुखी होगा, हम लोग नहीं आ पा रहे हैं। राजेश को थोड़ी देर तक आश्चर्य हुआ। थोड़ी ही देर के लिए पुराने सम्बन्ध और घटनायें मानस-पटल पर दौड़ गयीं। शीघ्र ही राजेश ने अपने को संयत करके समझा लिया। उत्सव के हर दिन रिश्तेदार राजेश से पूछते कि आपके मित्र कुमार साहब नहीं दिखाई पड़ रहे हैं तो कुछ बहाना बनाकर टाल देते, परन्तु कुत्ते की किस्मत को दाद जरूर देते, जिसके चलते दशकों की मित्रता दर किनार और नजरन्दाज हो गयी थी।

O O O

कहानी संग्रह "सुख जागे दुख भागे" के एक कहानी का कुछ अंश

लता धीरे-धीरे सयानी होने लगी। उम्र के साथ ही उसके रूप-रंग में निखार आने लगा। यह निखार जवानी का सुराग था। ऐसे दिलकश आलम में लता को किसी से सुनी हुई ये पंक्तियाँ बराबर उसके जेहन से टकराती थीं और वह मुग्ध नायिका की भाँति गुनगुनाती रहती थी और अपने में बहबे-रब्बाब रहती -

"सुरांग है ये किसी पर शवाब आने की-
हया के रंग दिखें फस्ल जिस्म की महके "

घर वालों ने अन्ततः लगभग पचीस किलोमीटर दूर बूढ़नपुर के समीप एक अच्छे खाते-पीते परिवार में उसकी शादी कर दी। लता की मोहनी सूरत एवं सेवा-भाव ने, परिवारजनों का दिल जीत लिया और वह सबकी दुलारी बहुरिया बन गयी। पति तो इतनी खूबसूरत एवं गृहकार्य में दक्ष पत्नी पाकर अपने भाग्य का सराहना करते न अघाता था। शादी के अभी दो वर्ष भी नहीं गुजरे थे कि पति एक लम्बी बीमारी की आगोश में आ गया और निरन्तर कमजोर होता गया। लता अपनी सेवा से उसे मुग्ध किये रहती थी। लगातार दवा होती रही परन्तु बीमारी ने उसका दामन नहीं छोड़ी और एक दिन उसे इस दुनिया से ले उड़ी। देखते ही देखते लता की दुनिया उजड़ गयी। उसके दुख का पारावार नहीं थी। जिस घर में बराबर हँसते-बिहँसते लता लोगों की दौड़-दौड़ कर सेवायें करती रहती तथा अपनी हाजिर जवाही से लोगों का मनो-विनोद किया करती थी। उसी घर में मायूस एवं उदास रहने लगी। परिवार के लोग उससे दो शब्द सुनने को तरसने लगे।

www.bhojpurisahityangan.com

लता की सास इसे बहुत चाहती तथा मानती थी परन्तु इसकी जेठानी इसके गुणों एवं परिवार पर शीघ्र छा जाने के कारण अन्दर ही अन्दर ईर्ष्या करने लगी थी। जिसका नतीजा यह हुआ कि अब मौका देखकर इस पर छींटाकशी और व्यंग्य-बाण बरसाने से नहीं चूकती थी। लता को रोने के अलावा और विकल्प नहीं सूझता था। लता के पिता जी उससे मिलने आये तो इसकी दीन दशा देखी न गयी और लता को मायके लिवा जाने के दिन तय करके चले गये। कुछ दिन बाद आकर भाई संग लिवा गया। बड़ी बहन भी मायके आयी और बहन की दशा देखकर अत्यन्त दुखी हुई। ..... राय-मशविरा कर कढ़ाई-बुनाई जैसी कुछ ट्रेनिंग दिलाने अपने साथ शहर ले गयी ताकि इसके पास जीने का कुछ सहारा हो जाये और कुछ पैसा भी कमा लिया करेगी। रुपये-पैसे की मोहताजी नहीं रहेगी।

..... शहर में व्यूटीशियन की ट्रेनिंग के दौरान अपनी बड़ी बहन के देवर समीर के साथ छः माह का प्रवास लता के जीवन को एक और हसीन मोड़ पर ला खड़ा कर दिया। ट्रेनिंग तथा समीर के साथ ने लता के दैनिक जीवन को व्यस्ततम् बना दिया।

परिणामतः वैधव्य जीवन की तल्खियों से धीरे-धीरे उसका ध्यान हटता गया। वह सामान्य होकर सहज जीवन जीने लगी। रूप-यौवन की आकर्षक सम्पदा के साथ-साथ, लता का मनोहारी व्यक्तित्व फिर गृह-कार्य में दक्षता का जादू समीर के ऊपर भी धीरे-धीरे चढ़कर, एक विनम्र खामोशी के साथ बोलने लगा। संस्कारित परिवारक की बदौलत वह कभी खुलकर लता के सामने अपने मनो-भावों को व्यक्त तो नहीं कर सका किन्तु मन के संगोपित भावों को मुखरता मिल सके इसका इन्तजार था। पहल कैसे हो ? यह भाव मन को बेसुकून किये हुए था।

.....समीर यकायक उठा और अपने मित्र अरविन्द के घर जा पहुँचा। वहाँ दोस्तों की महफिल जमी थी। अरविन्द के मित्र इकट्ठा होकर तास खेल रहे थे। भाभी नीरा रसोई घर में चाय बना रही थी। चाय लेकर जब सबको देने आयी तो समीर को देखते ही बोल पड़ी-"क्यों समीर बाबू ! आजकल दिखाई नहीं पड़ रहे हो ? अरे भाई ! दिखलाई ही क्यों पड़ोगे ? आखिर घर में भइया की साली जो आ गई है ?" वह यह कहती हुई चाय देकर लौटने को हुई तब तक बैठे हुए एक मित्र ने शिगूफा छोड़ दिया "अरे भाभी जी ! बेचारा कैसे घर छोड़े?" कहावत है कि-"साली होती है आधी घर वाली" उसके यह कहते ही सभी ठहाका मार कर हँस पड़े। तब तक एक दूसरे मित्र ने किसी कवि की इन पंक्तियों का उद्घोष कर दिया-

"विद्या, बनिता, वनलता ये न गते कुल जात-
जाके निस दिन संग रहत, ताही सो लिपटात ।"

तीसरे मित्र ने इसकी शाब्दिक व्याख्या कर दी। सबको समझाते हुए समीर की तरफ मुखातिब

www.bhojpurisahityangan.com

होकर कहने लगा कि विद्या और वन लता जैसा लिपटने का कार्यक्रम तो नहीं न शुरू हो गया ? इस तरह के हुए हास-परिहास से समीर काफी झेंप गया। घर लौटते वक्त सबके द्वारा कही गयी एक-एक बात उसके मन मस्तिष्क में कौंधने लगी और मन किसिम-किसिम से कुलाँचे भरमे लगा।

"..... कुछ अन्तराल के बाद लता को साथ लेकर समीर नीरा भाभी के घर मुलाकात करने जा पहुँचा। संयोगवश नीरा अकेली थी। घरेलू कार्यों से फुर्सत थी, फलत: इन लोगों के साथ बातचीत करने आराम से बैठ गयी।" बातों ही बातों में समीर से बोली-"तुम दोनों का सामाजिक सम्बन्ध जीजा-साली का जुड़ा है। फिर कोई कैसे न कुछ कहे ? यहाँ तो गुंजाइश ही गुंजाइश है। यह कहते-कहते नीरा मीठी चुटकी लेने के अन्दाज में दोनों की तरफ नजर डालकर, खिलखिलाने लगी। समीर और लता भी नीरा के हँसने के अंदाज से खामोश न रह सके और उनकी खिलखिलाहट में साथ देनें लगे।.....इस तरह लता और समीर को अपनी बार-बार के मुलाकातों के दरम्यान नीरा करीब और करीब ला कर शादी हेतु उकसाती रही।"

".....समीर और लता एक दिन अरविन्द के घर जाकर मन्दिर में जाकर शादी करने का प्रस्ताव रखा। अरविन्द और नीरा अपनी मित्र मण्डली के साथ सुनिश्चित तिथि पर लता और समीर की शादी रचा कर खुशियाँ मनाये और समीर तथा लता सदैव-सदैव के लिए एक-दूजे का बना दिया।"

"सुख जागे दु:ख भागे" कहानी संग्रह, लेखक इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : काव्यमुखी साहित्य अकादमी, आदर्श नगर-गोहना मुहम्मदाबाद, जिला मऊ के कुछ अंश पृ. सं. १ से ८ तक।

O O O

उपन्यास "गाँव से जब शहर आ गये" का कुछ रसगर अंश :

"बहराइच नगर के अपने गृह में प्रवेश करते ही नीमा को आव दीखा न ताव, धधाकर मिलने अपनी सहेली पड़ोसिन नीलम के पास जा पहुँची। रास्ते भर सोच रही थी की नीलम को अकेली छोड़कर आयी थी, वह बहुत खफा होगी परन्तु सामने पड़ते ही दोनों ने सदियों बिछुड़े हमसफर की तरह एक दूसरे को बाँहों में भर लिया। कुछ देर तक शिकवा-शिकायतों के साथ समाचारों का आदान-प्रदान होता रहा, फिर नीमा से पूछ बैठी,-"क्या राजू इधर दिखलाई पड़ा था ?" नीलम में बड़े ही मोहक, अदा से नीमा की तरफ देखती हुई बोली, "खूब" पुन: बोली-क्या मतलब ? नीलम बोली, यार ! तुम्हारे जाने के बाद वही तो था, जो यदा-कदा आकर दिल बहला जाया करता था।" नीमा को उसके कहने के अन्दाज से कुछ शंका होने लगी। फलत:

www.bhojpurisahityangan.com

नीमा के चेहरे पर नजर गड़ा कर बोली, "क्या मतलब ?" फिर नीमा ने बिना कुछ छिपाये राजू और अपने सम्बन्धों की खुली चर्चा कर डाली। यह सब सुनकर नीमा ने कहा , "यार ! तुम तो बहुत बड़ी अदाकारा निकली ?" नीलम ने कहा-"अरे भई ! मैं यदि तुम जैसी सयानी नारी को पटा सकती हूँ तो नये छोकरों को पटाने में कितनी देर लगेगी और फिर वह तो हमारी सहेली का दोस्त होने का नाते आधा यूँ ही पट गया था।" इस प्रकार काफी देर तक दोनों ही समाचारों का आदान-प्रदान करके हँसी-ठिठोली करती रहीं।

".....औरत-औरत के सम्मिलन का रास्ता और सिलिसिला हमवार होता गया। यद्यपि कि इस तरह के आयोजन, आज समाज में विकल्प शून्यता के स्थिति में आते हैं किन्तु जिनकी प्रवृत्तियाँ दुराचार जनित हो जाती हैं, वे कोई न कोई विकल्प तलाश ही लेते हैं, जैसे कि नीमा और नीलम ने समाज और परिवार की आँखों में धूल झोंक कर अपने-अपने विकल्प का समाधान तलाश लिया। यह तलाशने की प्रक्रिया यकीनन समाज-परिवार और मर्यादा के प्रतिकूल है, किन्तु जिससे मनुष्य मन को सुकून मिलता है, उसे भी नजरन्दाज नहीं किया जा सकता ? ऐसे में मन जब आन्दोलनकारी हो जाता है तो उसके संवेग पर काबू पाने के लिए सिर्फ एक ही मुनासिब रास्ता बचता है कि अध्यात्म की ओर उन्मुख हुआ जाय और धीरे-धीरे यह उन्मुखता मनुष्य की जिन्दगी को हर नजरिया से सँवारने लगती है।"

(पुस्तक 'गाँव से शहर जब आ गये', लेखक : इंजीनियर राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'काव्यमुखी साहित्य अकादमी' गोहना-मुहम्मदाबाद, जिला-मऊ, उ०प्र० के कुछ अंश, पृ. सं. ६२ से ६६ के मध्य)

O O O

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी द्वारा पुस्तकों का एक बण्डल जो दिया गया था, उसके बीच एक बहुत पतली किताब थी जिसका नाम है "श्री शिव मन्दिर जीर्णोद्धार"। बहुत पतली होने से मैने सोचा कि कहीं किसी मन्दिर का चित्र भूल से किताबों के बीच दबा चला आया है। परन्तु उसके सामने और पीछे के चित्र को ध्यान से देखा तो पता चला कि एक ही मन्दिर का पुराना और मरम्मत कराकर दुबारा खिंचा हुआ चित्र है। फिर जिज्ञासा बढ़ गयी किताब के मुख्य कवर पृष्ठ को खोल कर देखी तो प्रस्तुतकर्ता सेवक के रूप में इं. राजेश्वर सिंह था, तो किताब के सभी पन्नों पर नजर डाली। किताब में श्री शिव चालीसा और श्री हनुमान चालीसा देने के बाद मन्दिर के निर्माण और देख-रेख व मरम्मत के अभाव में जीर्णशीर्ण हालत में पहुंच जाने के कारण दयनीय स्थिति में पहुँच जाने की बात लिखी गयी है।

मन्दिर सन् १८०२ में बना था, मरम्मत कार्य जून-२०२२ में हुआ। ग्रामवासियों एवं उनके

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ रिस्तेदारों ने मरम्मत व जीर्णोद्धार के लिए खुले मन से सहयोग किया और मन्दिर का स्वरूप बदल गया। योजना कैसे-कैसे बना और क्रियान्वित हुई इसका व्यौरा देते हुए किताब लिखकर इस आशय से वितरित किया गया कि समाज के लोग पुराने देव स्थलों को जन सहयोग से सुधार कर पुण्य का भागी बनें और आपसी सद्भाव बढ़ायें। मन्दिर इं. राजेश्वर सिंह के पैतृक गाँव में स्थित है। किताब के आखिरी पृष्ठ पर शिवजी की आरती भी है।

इंर्जानियर राजेश्वर सिंह द्वारा रचित छोटी-बड़ी कहानियाँ व लेख पढ़ने के लिए मिलीं जो बहुत ही प्रभावशाली हैं। इनमें भरपूर कहानी पन है। शुरू करने के बाद अन्त तक पढ़े-बिना जी नहीं मानता। हमने तो इनके कुछ-कुछ अंश ही यहाँ दिये हैं। ये सर्वग्राही और शिक्षापरक हैं। हमारी कामना है कि इनकी कलम ऐसे ही बराबर चलती रहे और समाज को निरन्तर मार्गदर्शन मिलता रहे। ईश्वर इन्हें सदैव स्वस्थ और सानन्द रखें।

❖

मत भटकीं अपनी डगर से

मनई के चाही की भगवान के लगे पहुँचले कट्ट डगर तय कइले अउर वोकरा मजबूती से पकड़ि के आगे बढ़े। एहर-वोहर बउड़िआये यानी भटके न। जवना मतिन छोट-छोट नाला अउर नदी से बहत-बहत बारिस क पानी समुन्दर में जाइके मिल जाला वोही मतिन सगरो मत-मतान्तर कट्ट बतावल डगर अपना-अपना ढंग से घुमा फिराके भगवान तक पहुँचा देलन।

www.bhojpurisahityangan.com

२९

इं. राजेश्वर सिंह क भोजपुरी रचना संसार

-डॉ0 विभा सिंह

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी इन्जीनियरिंग क पढ़ाई चार साल कइले के बाद डिग्री लेई के इन्जीनियरिंग के क्षेत्रमें लगभग चालीस बरिस सेवा कइलन, फिर भोजपुरी भाषा में लिखल-पढ़ल कइसे शुरू कइ दिहलन, ई सवाल मन में बेर-बेर कौंधल करत रहे। अचके एक दिन उठलीं अउर इहे सवाल दिमाग में लिहले उनके डेरा पर पहुँच गइलीं। देखते हँसत-मुस्कात पूछि पड़लन-"अरे ! आज छुट्टी के दिन अचके कइसे गोड़ उठल बा लागत बा कउनो गम्भीर समस्या दिमागी में उठि पड़ल बा?" उनके कहले के अन्दाज से हमहूँ के हँसी आ गइल। हम कहलीं-"हमरे दिमाग में ढ़ेर दिन से एगो बात उलझल बा। वोके बताइब बाकी पहिले चाय-वाय क आदेश देईं, बात लमहर बा।" इन्जीनियर साहब अपने नौकर के बोलववलन अउर चाय-पान क आदेश दिहलन। थोड़िके देर में कुछ खाये-पीये क सामान आवे लागल। अस्थिले हमनी के बइठि के बतकही शुरु कइलीं।

हम बोल पड़लीं-"रउरे ई बतायीं कि इन्जीनियरिंग के पढ़ाई कइले के बाद घूमि-घूमि के पचीसन जगहीं नौकरी कइलीं, हिन्दीं में कुछ किस्सा-कहानी लिखल शुरू कइलीं, फिर अचके भोजपुरी भाषा में लिखे-पढ़े कइसे शुरू कइ दिहलीं? एक-प-एक रचना राउर चलल चलि आवत बाड़ीं सं, तनी एकरे बारे में बतावल जा। अइसन त नाहीं न बा कि लिखवइया केहू अउर बा, रउरे आपन नाम डारि देत बानी ? कउनो आरोप ना लगावत बानीं, असलियत जानल चाहत हयीं।"

इन्जीनियर साहब हमरे बात प ठठा के हँसलन अउर कहे लगलन-लागत बा पहिले हमके किताबिन क अपने हाथे क लिखल मूल प्रति ले आइ के रउरे सामने रखे के पड़ी। अगले-बगले रैक पर नजर दउड़वलन, एगो बस्ता में बान्हल गठरी पर उनकर नजर टिक गइल, उठि के वोके उठा लिहलन अउर अपने लगे ले आइके गठरी खोल के तीन-चार छोट-छोट बन्हल कागज क

www.bhojpurisahityangan.com

बन्डल देखवलन अउर कहलन-"अउरो कहीं राखल होई। जदि रउरे हमार लिखल अक्षर ध्यान से देखले होईं अउर चीन्ह सकीं तट्ट इन्हन के देखीं कि का ह।"

दूरवें से उनकर लिखल अक्षर चिन्हा गइलीं, हम तनी लजा गइलीं अउर बोल पड़लीं कि- "ई त कुल्ही रउरे लिखल हयीं।" हमके एक सवाल भा संका क समाधान त हो गइल रहे, बाकिर हम दूसरका सवाल कि लिखाई क शुरुआत कइसे भइल ? बोल पड़लीं।

इन्जीनियर साहब चाय के तरफ इशारा करत कहलीं-"देखीं, हउ जुड़ात बा, तनी वोके इज्जत बक्शीं।" फिर उहाँ के कहे लगलीं-"हिन्दी में तट्ट किस्सा-कहनी लिखत रहलीं। अचके एक दिन दिमाग में आइल कि हमनी के देहात में पैदा भइलीं, जबसे होश सम्हारल गइल भोजपुरी बोले शुरू कइलीं, बाकिर भोजपुरी में लिखल कउनो साहित्य पढ़े के ना मिलेला। किताब के दुकान पर भी कहीं ना मिलत, त काहें न हम भोजपुरी में लिखल शुरू करीं।"

एक दिन फुरसत में कागज, कलम ले के बइठलीं, अउर अपने गाँव केएगो बुर्जुग मदन धोबी के दिनचर्या जवने से हम बचपन में प्रभावित रहलीं लिखे शुरू कइलीं। लिख के रख लिहलीं। एक दिन एगो कवि-शाइर डा० मधुर नज्मी साहब अइलन, हम उनके देखवलीं। ऊ पढ़लन अउर कहे लगलन-"अरे साहब ! आप त भोजपुरी भी बहुत बढ़ियाँ लिख लेत बानी।" फिर त अब कब्बों-कब्बो एकाध कहानी भोजपुरी क लिख के रख लेत रहलीं। जब कहानियन क संख्या बारह पहुँच गइल त एकर चर्चा फिरो नज्मी साहब से कइलीं। ऊ बोल पड़लन-अब त एगो किताब छपे लायक हो गइल, काहें न छप जा।

भोजपुरी क पहिली किताब "जिनगी क दूबि हरियाइल" के छपले क पयान रचा गइल अउर कुछ दिन में किताब छप के आ गइल। हमरो हौसला बढ़ चलल, फिर तट्ट हिन्दी के साथ-साथ भोजपुरी लिखाइल जारी हो गइल। भोजपुरी क एक प एक बारह किताब अब तक प्रकाशित हो चुकल हयी अउर तेरहवीं भी लिखा चुकल ह, छपे वाली ह। बतकही के बाद सगरो किताब क एक-एक प्रति देखे बदे हमरे हवाले कइलन, किताबिन क कुछ-कुछ अंश दियात बा :

"..... यानि जबले मनई के दिल-दिमाग 'प्रेम' से ना भरी, सगरो जहान बदे प्रेम ना उमड़ी। ऊ कुच्छु हो जाय पंडित ना हो सकी। प्रेम से भरल-पूरल भइला से, पंडित यानि सगरो चीज कट्ट जानकार हो जायी।" एही तरे समाज कट्ट बुजुरुग लोग अपना-अपना जिनगी कट्ट अनुभव लइकन के सुना अउरी बता के, उनके जीये के रास्ता देखावेलन। कहाउत ह कि मनई अपने जिनगी में जवन अच्छा-बुरा करम करेला ओही के आधार पर अगिले जनम में सुख-दुख भोगे खातिर जनम लेला। एही बाति के ध्यान में राखि के एक दिन एगो बुजुरुग अपने परिवार के कुछ लोग के बइठाइ के एगो कहानी सुनावे लगलन-

www.bhojpurisahityangan.com

"एक बार क बाति ह, भगवान शंकरजी अउर माई पार्वती जी मिरतू लोक में मनई क रूप धई के घूमे लगलन। दूनो जने चलत-चलत चलि जात रहलन। देखत हवन कि एगो पेड़ के नीचे एगो गरीब मनई भुइयाँ बइठ के रसरी बरत रहल। एह लोगन के पियास लागल रहे। ई लोग वोह मनई के लग्गे खड़ा हो गइलन अउर कहे लगलन कि ए भाई ! पियास लागल बा तनि पानी पिया द। ऊ मनई चट से उठल अउर खटिया ले आइ के वोह लोगन के बइठा के पानी पीये खातिर निहोरा कइलस। दूनो जनी पानी पी के उठलन। शंकर जी वोह मनई के ओर मुँह कइ के कहलन-जा तूँ मरि जा। ई कहत चल दिहलन। साथे-साथे पार्वती जी भी चले लगली।

कुछ दूर आबादी के बीच गुजरे लगलन तट्ट देखत हउअन कि एगो बनिया के दुकान पर कुछ लोग बइठल हवं। बनिया गहकिन से बतिअवले अउर उनके रिझवले में रमल बा। मुड़ी एँहर-ओंहर ना घुमावत बा। दूकान के अन्दर मटका में ढँकल पानी लउकत रहल। शंकर जी दुकानी पर जा के बनिया से कहलन-'ऐ भाई ! पियास लगल बा, तनी पानी पिया देतट्ट।' बनिया कड़क आवाज में बिना उनकी ओर मूड़ी घूमवले बोल पड़ल-'जा-जा कहीं अउर पानी पीअ। इहवाँ पिजाऊ खुलल बा ? देखत नइख गहकिन के !' एतना कहत-कहत हाथ हिला-हिला के दूर जाये के इसारो कइ दिहलस। शंकर जी उहवाँ से चले खातिर मुड़लन लेकिन ई कहत चललन तूँ अइसहीं फला-फूलट्ट।

शंकर जी के मुँहे से पारवती जी ई सुनि के बड़े अचरज में पड़ि गइली। सोचे लगली कि जे पानी पिअवलस ओके मरि गइले क आशीर्वाद संकर जी दिहलन, अउर जे पानी ना पिअवलस ओके फरे-फूले खातिर आशीर्वाद दिहलन। ई कवन बात भइल ? पारवती जी से रहि ना गइल। थोड़ी दूर आगे चलले पर पूछि पड़ली-"भगवन् ! जे पानी पिअवलस ते के मरे खातिर आशीर्वाद दिहलीं, अउर जे पानी ना पिअवलस ओके फरे-फूले खातिर आशीर्वाद दिहलीं?" एह बाति क रहस्य हमरे समझ में ना आइल।

शंकर भगवान् उनसे एकर रहस्य खोलि के एह मतिन समझावे लगलन-"पानी पिआवे वाला मनई पिछले जनम में निम्मन काम-काज ना कइलस, जवने से गरीबी में जीयत बा। ओकरे दुख के काटे भा छुटकारा दियावे बदे मरे बदे आशीर्वाद दिहलीं। बनिया अपने बाती के जाल में फँसा के ठही कइके, पइसा कमइले में लागल रहल। ऊ पाप क काम करत रहल। एहसे वोके आशीर्वाद दिहलीं कि अइसहीं फला-फूला यानि पाप बढ़ाव। पाप बढ़ले क नतीजा होइ कि अगिले जनम में दुखी जीवन जीये के पड़ी।"

शंकर भगवान कट्ट ई बाति सुनि के माता पार्वती जी अचरज में पड़ि गइली। आशीर्वाद क असर अगिले जनम तक भोगे के पड़ी, सुनि के उनकर शंका दूर हो गइल। बुजरुग लोग

www.bhojpurisahityangan.com

के बाति सुनि के, उनके साथ रहला से, जिनगी कट्ट असली मकसद आसानी से समझ में आ जाला अउरी जिनगी कट्ट तमाम गुत्थी आसानी से सुलझि जाले।

(भोजपुरी कहानी क किताब 'जिनगी क दूबि हरियाइल' : लेखक-इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : काव्यमुखी साहित्य अकादमी, गोहना मुम्मदाबाद, जिला-मऊ में निहित कहानी- 'जो जस करइ सो तस फल चाखा' का कुछ अंश पृ.सं. २५ से २७)

O O O

केहू कहले बाड़न-

करत-करत अभ्यास ते, जड़मत होत सुजान ।
रसरी आवत जात ते, सिल पर पड़त निसान ।।

रसरी जइसन कोमल मुलायम चीज के बेर-बेर रगड़ भइले से पाथर अइसन कड़ा-सखत चीज पर निसान पड़ि जाला। भगवान जइसन बहुते कोमल, दयालू, आसानी से पसिजै वाला प मनई के भाव अउर रगड़ कट्ट असर काहें नाहीं होई। जब बार-बार लगातार उनसे सटवट्ट तट्ट असर उनके पट्ट होइवे करी। मनई चाहे कउनो जानवर क नाम लेके एक बेर पुकरले पट्ट ऊ तुरन्त मुड़ी घुमा के ताके लागी अउर आगे क आवाज अकने लगी कि का कहात बाट्ट, आवाज कहवाँ से आवत बाट्ट भगवान के जदि केहू पुकारी चाहे उनकरा से सटले कट्ट कोसिस करी तट्ट ऊँ काहे ना सुनिहें। काहें ना ध्यान दीहें। ऊ सबकर हउअन अउर सबही उनकर हट्ट। हम जदि अपने से उनके अलग कइल चाहीं तब्बो हम ना कइ पावे के हईं। सगरो दुनिया उनहीं क बनावल हट्ट सबमें सब जगहीं हर पल, हर क्षण ऊ मौजूद हउअन। खाली हमनी के उनसे परेम कइले अउर बढ़उले कट्ट काम बाट्ट जवना से आनन्द मिली अउर उनकरा मौजूदगी कट्ट एहसास होई। संत तुकाराम जी कहले हउअन-

गुड़ सा मीठा है भगवान, बाहर भीतर एक समान ।
किसका ध्यान करूँ सविवेक, जल तरंग से हैं हम एक ।।

एही मतिन कबीर दास जी भी कहले हउअन-

लोगा भरम न भूलहू भाई ।
खालिकु खलक-खलक महि खालिकु पूर रहयो सब ठाई ।।
माटी एक अनेक भातिं करि साजी साजन हारै ।
ना कछु पोच माटी कै भाँणे ना कछु पोंच कुमारै ।।

www.bhojpurisahityangan.com

सब महि सच्चा एको सोई, तिसका किया सब कुछ होई ।
हुकुम पछानै सु एकी जानै बंदा कहिये सोई ।।
अल्लह अलख न जाई लखिया गुरु गुड़ दीना मीठा ।
कहि कबीर मेरी संका नासी सर्व निरंजन डीठा ।।

"वासुदेव सर्वम्" यानि की सबमें भगवान हउअन, एह भावना से भरि के जब भगत लोग सबही में भगवान की मौजूदगी कट्ट एहसास करे लागेलन तट्ट भगवान के परेम के ऊँचाई अउर गहराई हमेसा आनन्द से भरल रहेलन। भगवान में परेम बढ़ाये खातिर रोज-मर्रा की जिनगी में कइसन भाव राखै के चाही एह पर केहू भगत नीचे मतिन सुझाव दिहले बाड़न-

1. जब कहीं जाय तऽ समझे के चाही कि भगवान कऽ परिक्रमा करत हयीं।

2. कुछु निरेखे तऽ समझे के चाही की हम भगवान के तरह-तरह के रूपन के देखि रहल हयीं।

3. जब खाना खाईं तऽ ई मानीं कि भगवान कऽ परसादी पावत हयीं।

4. जब पानी पीयीं तऽ ई माने के चाही कि भगवान क चरनामृत पियत हयीं।

5. जब सूते जायीं तऽ भगवान कऽ गुन-गान करत सूतीं। ई मानीं की माई के समान भगवान के गोदी में सूतत हयीं।

6. जब जागीं तऽ ई मानीं कि भगवान क काम करे बदे जागल हयीं।

7. जवन काम करीं ओकरा के भगवान कऽ काम मानि के परेम से मन लगा के करीं। काज निक-नोहर हो, एह कर भरपूर कोशिस करीं।

(किताब : कल्यान कऽ जुगुति, लेखक : इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : काव्यमुखी साहित्य-अकादमी, गोहना मुहम्मदाबाद जनपद-मऊ के लेख : 'बढ़ायीं, पीरितिया भगवान से' के पृ. सं. 23-24 से)

O O O

राजा परीक्षित श्री शुकदेव जी से पूछलन-"भगवन् ! भगवान त सब केहू के एक नजर से देखेलन। उनके समदर्शी कहल जाला। उनकर केहू से न त दोस्ती हउए अउर न त दुश्मनी। त काहें ऊ इन्द्र के उकसवले से राछसन के मरलन ? उनके न त इन्द्र से कुछ पावे के रहल अउर न त राछसन से कउनो दुश्मनी रहल।"

श्री शुकदेव जी कहलन-"राजन ! तुहार सवाल सांच ह। भगवान केहू क पक्ष लेवे वाला

www.bhojpurisahityangan.com

ना हउअन, वाकिर काल उनके अर्धीन हउए। कालरूप ईश्वर जब सत्वगुण में बढ़ोत्तरी होला तब देवता अउर ऋषि लोगन के अपनावेलन अउर उनकर बल बढ़ावेलन। ओही समय रजोगुणी अउर तमोगुणी राछस लोगन क संघार कइ के अपनावेलन। सही बात इहे ह कि ऊ सम हउअन, समभाव सबमें राखेलन। उनके में विषय भाव तनिको ना हउए।''

भगवान सगरो जीव क हितैषी हउअन। ऊ जवन करेंलन जीव के कल्याण खातिर करेलन। भगवान राछसन के मारेलन उनके तारे खातिर कल्याण करे खातिर। जइसे महतारी अपने लइका के देहिं में भइल फोड़ा लइका के पकड़ि के खुदे चीर लगवावेली, ताकि लइका क भला हो। फोड़ा के तकलीफ से छुटकारा मिल जाय। एकरे पीछे भावना होला, बच्चा के कल्याण क। ओही नियर भगवान राछसन के दण्ड देलन उनके कल्याण खातिर।

एगो बात इहो ह कि भगवान से दुश्मनी करे वाला बार-बार उनके याद कइ के उनहीं में लीन हो जालन। प्रेम से, बैर से, क्रोध से, चाहे आलस्य से कउनो तरह भगवान के याद करे वालन क कल्यान होवे करेला।

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ । नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ।।
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा । करउँ नाइ रघुनाथहि माथा ।।

-रामचरित मानस, बालकाण्ड, २७/२

तुलसीदास जी अइसहूँ कहले बाड़न-

तुलसी अपने राम को रीझ भजौ या खीज ।
उलटौ सीधो ऊगहै खेत पड़े को बीज ।।
कामाद द्वेषाम्दयात्स्नेहाद्यथा भक्तयेश्वरे नमः ।
आवेश्य तदघं हित्वा बहवस्तग्दतिं गताः ।।

-श्री मद्भागवत, ७-१-२९

शुकदेव जी कहलन-राजन् एही बारे में तुहार दादा युधिष्ठिर भी नारद जी से सवाल कइले रहलन। युधिष्ठिर नारद जी से कहलन-''भगवन ! राजसूय यज्ञ के समय जब भगवान् श्री कृष्ण शिशुपाल क वध कइलन त हमरे आँखिन के सामने शिशुपाल के देही से निकलल तेज कृष्ण जी में समा गइल अउर शिशुपाल के मुक्ति मिल गइल। अइसन सद्गति त भगवान के भक्त जवन हरदम उनके भजेलन तवन जल्दी ना पवतन फिर भगवान से दुश्मनी करे वाला शिशुपाल के ई निम्मन गति कइसे मिल गइल ?''

नारद जी बोललन-''राजन् ! चाहे भक्ति से हो चाहे दुश्मनी से, स्नेह हो चाहे कउनो कामना

www.bhojpurisahityangan.com

से हो भगवान क चिन्तन होखे के चाही। हरदम भगवान के चिन्तन में लगल रहे के चाही। उठत-बइठत, खात-पीयत, सुतत-जागत, चलत-फिरत उनहीं के ध्यान में रमल रहे के चाही। एह तरीकन में दुश्मनी क भाव सबसे करकस होला-मनई जेह से दुशमनी क भाव राखेला, ओहसे चौबीसो घण्टा दिमाग लगवले रहेला। शिशुपाल दुश्मनी के भाव से भगवान श्री कृष्ण के चिन्तन में लगल रहे, एह तरह से उनहीं में रम गइल रहे। एही क नतीजा भइल कि भगवान ओहके नीक गति दिहलन।'' शिशुपाल के पिछले जनम के कहानी एह मतिन रहल।

आगे नारद जी बतवलन-''युधिष्ठिर ! तुहरे मौसेरे भाई शिशुपाल अउर दन्तवक्त्र दूनो विष्णु भगवान क पार्षद रहलन। एक समय क बात ह कि ब्रह्मा क मानस बेटवा सनक, सनत्व, कुमार सनन्दन वगैरह चारो भाई क इच्छा बैकुण्ठ जाइ के भगवान विष्णु के दर्शन क भइल।'' ई लोग पाँच-छः बरिस के लइका नियर लागत रहलन। ऊपर से नंगा रहत भी रहलन। मन में इच्छा होते ई लोग घुमत-फिरत बैकुण्ठ धाम पहुँच गइलन। उहवाँ एह लोगन के जय-विजय नाम क द्वारपाल लइका समझ के रोक दिहलन; भीतर नाहीं घुसे दिहलन। ऋषि लोगन के बहुत दुख भइल अउर द्वारपालन के फटकारत कहलन-''अरे तुहन लोगन के हउअ ? भगवान क भक्ति कइले के कारन इहाँ आ गइल हव, बाकिर आपन स्वभाव ना बदलल। तुहन लोग भगवान के एह पवित्र धाम में रहे लायक ना हउअ।''

ऋषि लोग ओह लोगन के शाप दे दिहलन अउर कहलन-''मूर्ख लोग ! तुहन लोग जल्दी से राछस योनि में जा। तीन जनम ले शाप भोग के फिर बैकुण्ठ में आ जइह।'' सनक ऋषि लोगन के शाप के कारन ई दूनों द्वारपाल जय-विजय तीन असुर योनि में रहलन। पहिले जनम में दिति क लइका हिरण्याक्ष अउर हिरण्यकशिपु भइलन। जेह के भगवान बाराह अउर नर-सिंह अवतार लेइ के मरलन। दूसरे जनम में विश्रवा मुनि के कोशिनी (कैकसी) से रावण अउर कुम्भकर्ण भइलन। जेहके श्री रामचन्द्रजी मरलन। तिसरका जनम में उहे शिशुपाल अउर दन्तवक्त्र तुहरे मौसी क लइका भइलन जेहके भगवान श्री कृष्ण मरलन फिर ऊ लोग भगवान क पार्षद बन गइलन।

(भोजपुरी किताब : 'भोजपुरी भागवत कथा-सार' लेखक : इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : लोकायत प्रकाशन, बी-२, सत्येन्द्र कुमार गुप्त नगर, लंका-वाराणसी-२२१००५, के पृ.सं. १०० व १०१ से)

○ ○ ○

मनई के चंचल मन अउर आँख, कान, नाक, जीभ ई कुल्हि इन्द्रियन पर काबू कइल संयम

www.bhojpurisahityangan.com

हउए। संयम मनई के सही राही प चले खातिर उकसावेला। साधू-संत कहेलन कि मनई बिना संयम के आगे ना बढ़ पावेला। संयम से रहला पर मनई कट्ट जिनगी सुखी रहेला। आजु-काल्हि केहू से संयम कट्ट बात कइल जाय त तुरन्ते कही संयम सबके खातिर नाहीं हउए। ई खाली साधु-संन्यासी लोगन खातिर ह। सोचे समझे वाला मनई एह मतिन ना कही। काँहे से कि एकहर जरूरत सगरो मनई के जिनगी में हउए। एकरे बिना नींक-नोहर जिनगी जीयल सम्भव ना होला।

आजु-काल्हि मनई के जिनगी में बहुतेरे किसिम कट्ट समस्या आवेलिन जवना के हल कइले कट्ट एक ही उपाय हउए-संयम से जियले कट्ट तरीका। जदि मनई अपना खइले-पियले, बात-चीत अउर काम-काज कइले के तरीका में संयम अपना ले त कउनो समस्या रहबे ना करी। लोभ, मोह अउर भोग में सनल मनई कबहूँ सुखी ना रहि सकत। ई कुल्हि ऊपर में देखले में त सुन्नर लउकी बाकिर भीतर से कुछउ ना होला एकदम खाली-खाली।

संयम क डगर जे पकड़े बा, ओह के अन्दरूनी सुख-शान्ति अउर आनन्द पुरहर मिलेला। ओहके कउनो किसिम क दुख ना मिलत। ऊ गलत काजन में कब्बो ना फँसत। आध्यात्मिक तरक्की खातिर संयम जेतना जरूरी हउए ओतने जरूरी हउए व्यावहारिक जिनगी जियले में भी। व्यावहारिक जिनगी के रसगर बनवले में एकर हाथ बड़हन हउए।

धियान इहो देवे के चाही कि कउना-कउना चीजन में संयम राखल जरूरी हट्ट। बोली क संयम, खइले-पीयले क संयम, दोस्ती में संयम, पूजा-पाठ में संयम। मतलब ई ह कि हर दिशा में संयम बर्तले क जरूरत ह। संयम अइसन चीज हउए जवना से असम्भव काज भी सम्भव हो जाला।

(किताब : 'पढीं समझीं मनन करीं', लेखक : इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'भोजपुरी संगम', ६६-खरैया पोखरा-गोरखपुर-२७३४०४ पृ.सं. ६८,६७)

O O O

कल्ले-कल्ले प्रभु के प्रकट भइले क समय आ गइल। योग, लग्न, ग्रह, वार अउर तिथि सब अनुकूल हो गइल। पवित्र चइत क महीना रहल, नवमी तिथि रहल। अजोर पक्ष अउर भगवान क प्रिय अभिजित मुहूर्त रहल। दुपहरिया क समय रहल। न बहुत सरदी अउर न गरमी रहल। ऊ घड़ी सब लोकन में शान्ति देवे वाला रहल। शीतल, मन्द अउर सुगन्धित वायु बहत रहल। सगरो देवता विमान सजा-सजा के आकाश में आ गइलन अउर दूनो हाथ जोड़ के अजुरी से फूल बरसावे लगलन। नाग, मुनि अउर देवता स्तुति करे लगलन। फिर अपने-अपने लोक के लवटि गइलन।

www.bhojpurisahityangan.com

श्याम शरीर वाले चारो बाहिन में आपन खास अस्त्र-शस्त्र धारन कइले, दिव्य गहना अउर वनमाला पहिनले बड़-बड़ आँखिन वाले भगवान कौसल्या जी के सामने प्रकट भइलन। दूनो हाथ जोड़ के महतारी कहे लगली-'हे अनन्त प्रभु ! हम कउने तरह राउर स्तुति करीं रउरे आदि हयीं, अनन्त हयीं।' महतारी के ज्ञान पैदा होत देखि के प्रभु मुस्कइलन अउर पिछले जन्मन क कथा सुना के समझवलन जवने से उनके लइका क लइकई क सुख मिले मतलब भगवान के प्रति पुत्रभाव हो जाय। महतारी क जइसहीं बुद्धि फिरल ऊ निहोरा करे लगली कि प्रभु ई रूप तजि के प्रिय बाललीला हमरे खातिर कइल जाय जवने से सुख मिले। भगवान तुरन्त बालरूप धारन कइ के रोये लगलन।

राजा दशरथजी बेटा जनमले क खबर सुनते गदगद हो गइलन मानो ब्रह्मानन्द में समा गइल होखें। मन में अतिशय प्रेम भइले से देहि पुलकित हो गइल, आनन्द में विभोर हो गइलन, सहजे मुँहे से निकल पड़ल-

जाकर नाम सुनत सुभ होई । मोरे गृह आवा प्रभु सोई ।।

रानी कैकयी अउर रानी सुमित्रा भी सुत्रर-सुत्रर लइकन के जनम दिहली। अवधपुरी में घर-घर मंगल गीत गवाये लागल खुशी मनाये लागल। ध्वजा, पताका, अउर तोरणन से नगर छा गइल। राजा-प्रजा के खुशी क ठिकाना ना रहल। राजा भरपूर दान दिहलन। दान पवइया भी खुशी में पावल दान लुटा दिहलन। सगरो जगह आनन्द ही आनन्द। टोली बना के मेहरारू सोहर गीत गावे लगली।

दुअरा प बाजेला बधईया महलिया उठे सोहर हे ।
ए ललना लिहले जनम श्रीराम त नर नारी खुश भइले हे।।

दशरथ के पुरल अरमनवा त मनवा अंजोर भईले हे ।
ए ललना जन्म लिहले श्रीराम त अंगनवा अंजोर भइले हे।।

झुमेले नाचेले गावेले खुशीयाँ मनावेले हे ।
ए ललना देव लोग आके आसमनवाँ फूल बरसावेले हे ।।

नाचलें हे भाट पवरिया नगरिया गुलजार भईले हे ।
ए ललना गावें जीउ त आज सोहर खुशियाँ अपार भइले हे ।।

धनि धनि राजा दशरथ धनि रानि कोसिला नु हे ।
ए ललना धनि रे अवधवा के भाग, जहाँ रे राम जनम लेलें हे ।।

www.bhojpurisahityangan.com

किनका से जनमे बबुआ रामचन्दर, हे किनका से लक्षमण हे ।
ए ललना किनका से भरत भुवाल महलिया उठे सोहर हे ।।

कोसिला से जनमे बबुआ रामचन्दर सुमितरा से लक्षमण हे ।
हे ललना केकई से भरत भुआल महलिया उठे सोहर हे ।।

शंकर जी डमरू बजावेलें ब्रह्मा वेद गावेलें हे ।
ए ललना देव लोग चढ़ि के विमनवा त फूल बरसावेले ।।

धन्य-धन्य रानी कोसिला त धनि तहार भगिया नु रे ।
ए ललना आदि पुरुष भगवान के गोद में खेलावलु हे ।

विप्र लोग याचक लोग आवलें मंगल गावले हे ।
ए ललना मुँह माँग पावलें जय जयकार सुनावलें हे ।।

तुलसीदास सोहर गावेलें गाई के सुनावेलें हे ।
ए ललना युगे युगे जियस चारो लाल,
महलिया उठे सोहर हे ।।

".....महर्षि विश्वामित्र जी राछसन क ताण्डव व बार-बार यज्ञ नष्ट-भ्रष्ट कइले से आजिज आइ के महाराज दशरथ से रक्षा बदे किशोर वय के राजकुमारन श्रीराम-लक्ष्मण के संग लेके चललन, अउर राछसन के मरवावत, जनकपुर सीता स्वयंवर दिखावे बदे जा पहुँचलन।" श्रीरामजी बाग अउर नगर घूमे चल पड़लन। वोह घड़ी क चर्चा फुलवारी गीत में कउने नियर कइल गइल बा-

देखकर रामजी को जनक नन्दनी बाग में,
वो खड़ी की खड़ी रह गई ।
राम देखे सिया को सिया राम को,
चारो अँखिया मिली की मिली रह गयी ।
एक सखी ने कही जानकी के लिए,
कैसी जोड़ी रची है विधाता सुघर ।
कैसे तोड़ेंगे धनुहा ये छोटे कुँवर,
मन में संका बनी की बनी रह गयी ।

www.bhojpurisahityangan.com

दूसरी ने कही सखी सच मान लो तू,
इनका चमत्कार नहीं जानती ।
एक ही बाण में मारे ताड़का राछसी,
बस जहाँ की पड़ी की पड़ी रह गई ।
देखने को जनकपुर गये राम वो,
सारी सखियाँ झरोखन से देखन लगीं ।
जब नजर से नजर का नजारा हुआ,
बस जहाँ की खड़ी की खड़ी रह गई ।।

".....चारो भाइन क एक साथ वियाह भइल फिर बारात जनकपुर से अयोध्या लवटलि। अयोध्या पहुँचते सगरो नगर में खुशी क लहर दौड़ पड़लि।.....बाराती राजद्वार पर पहुँचते महतारी लोग बहुअन के संग कुमारन के परिछे लगली। सुन्दर सुहावन परिछन गीत गूँजे लागल-"

परिछन करहि चलेली तीनो मइया
फूल-माला लोढ़ा सब साज रे ।
चारो लला संग सुन्नर दुलहिन देखि
देखि बढ़त उछाह रे ।।
सुन्नर जोड़िन निरेखत कौसिला मइया
आँखि मूनि होत निहाल रे ।
परिछन करे आगे बढ़ें माई कैकयी
गदगद मन अपार रे ।।
माई सुमित्रा लुटावें हीरा-मोती
सब जन हर्षत अगाध रे ।
धनि धनि भइली अयोध्या नगरी पाई
के बहुअरि चारु रे ।।

कुल रीति के अनुसार बहुअन के कुमारन के साथ गृह प्रवेश करा के पूजा-पाठ करावल गइल। महल में चारो ओर आनन्द ही आनन्द। रोज आनन्द अउर उत्सव राजमहल में होखे लागल।

(किताब : 'भोजपुरी रामायण', लेखक : इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'लोकायत प्रकाशन', लंका-वाराणसी के पृ.सं. ३,४,५,३२,४६)

○ ○ ○

www.bhojpurisahityangan.com

गुरु-तत्व नित्य ह अउर ऊ कहीं भी, कउनो भी घटना हो, कउनो परिस्थिति से, कउनो किताब से, कउनो मनई से भी मिल सकेला। एहसे ई बात साँच ह कि गुरु के बिना ज्ञान ना हो पावत। गुरु में हमेशा ईश्वर क भाव राखे के चाही तब्बे पूरा अउर जल्द लाभ मिलेला। कहल गइल बा-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

अर्थात् ईश्वर ही गुरु हउअन। गुरु-दक्षिणा के रूप में चेला अपने गुरु के अपने इच्छानुसार सामग्री व धन उपहार में दिहल करेलन। बाकिर सचमुच गुरु-दक्षिणा 'मैं' अउर 'मेरा' ना राखल ही गुरु दक्षिणा होला। गुरु-दक्षिणा दिहले के बाद चेला के आपन चिन्ता ना रहेले, ओकर चिन्ता गुरु करे लगेलन।

गुरु गोविन्द दोउ खड़े, किनके लागूँ पाय ।
बलिहारी गुरु आपकी, गोविन्द दियो लखाय ।।

गुरु की महिमा गोविन्द से भी बढ़ के बतावल गइल ह, बाकिर ई महिमा ओह गुरु क ह, जे चेला क उद्धार कइ सके। सन्त लोगन के वाणी में आइल ह-

चौथे पद चीन्हे बिना शिष्य करो मत कोय ।

मतलब ई ह कि जबले अपने में चेला क उद्धार कइले क ताकत ना आ जाय, तबले केहू के गुरु ना बने के चाही। कारण ई ह कि गुरु बन गइलन अउर उद्धार न कइ सकल त बड़ा दोष लगी-

हरइ सिष्य धन सोक न हरई । सो गुर घोर नरक महुँ परई ।।

-श्री रामचरित मानस, उत्तर०, ९९/४

ऊ घोर नरक में एहसे पडेला कि मनई दूसर जगह जाई के आपन कल्यान कइ सकत रहल, बाकिर चेला बना के ओह के एक जगही अटका दिहल गइल। ओके आपन कल्यान करे बदे मनई क शरीर मिलल रहल, बाकिर ओह में रुकावट पैदा कइ दिहल गइल। जवने मतिन एगो कुकुर के मालिक घर में करिया त दिहलन बाकिर खाये के कुछ न दें त कुकुर भूख के मारे तड़पी, ओही नियर आजु-काल्हि दशा चेला लोगन क हो रहल बा। गुरु जी त चेला क कल्यान कइ ना सकेलन अउर चेला के दूसर जगही जाये ही ना देत बाड़न। ऊ जदि कहीं अउर चल भी जाय त गुरु जी धमकावे लागत बाड़न। श्री करपात्री जी महाराज कहल करें कि-जवन गुरु आपन चेला त बना लेलन बाकिर ओकर उद्धार ना कइ पवलन, त उनके अगले जन्म में कुकुर बने के पड़ेला अउर चेला चींचड़ बनके उनकर खून चूसेला।

www.bhojpurisahityangan.com

".....ठाकुर (श्री श्री सीताराम दास ओंकार नाथ जी महाराज) क विश्वास रहे कि श्रद्धा चाहे अश्रद्धा जइसे भी हो जीव के नाम जप करे के चाही, ओकर फल कबहूँ बेकार ना जालन। शास्त्रन क नाम बता-बता के कहलन-

श्रद्धया हेलया नाम रटन्ति मम जन्तवः ।

तेवां नाम सदा पार्थ वत्तंत हृदये मम ।।

हे अर्जुन ! श्रद्धा से होखे चाहे अवहेलना से, जे लोग नाम लेतन, ऊ लोगन क नाम हमरे हृदय में समाइल रहेला। एही से मिसाल दे के ऊ बार-बार समझवले हउअन कि कवने तरह भक्ति के साथ चाहे अवहेलना के साथ नाम लिहले से काम बन जाला। आग में हाथ भक्ति चाहे बिना भक्ति के जदि डाली त हाथ जली जरूर। बिच्छू के डंस मरले, कउनो तेजाब हाथ में लिहले चाहे भूल से जहर खा लिहले प ओहकर फल मिलले बिना ना रही। एही तरह अनन्तकोटि ब्रह्माण्डन क मालिक श्री भगवान के असीम शक्ति से भरल-पूरल नाम के अश्रद्धा चाहे अभक्ति के संग बोलले से काम काहें ना बनी। काम होयी एह बात क पुष्टि कुछ समय ले नाम जप कइले से अपने आप हो जायी। नाम जप कइले से ज्योति अउर नाद क प्राप्ति हो जाले। काम होत बा, एहकर बिना शंका प्रमाण अपने आप मिल जाला।

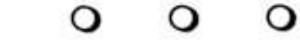
श्री ठाकुर नाम-साधना क जवने रास्ता के देखवले हउअन, एहकर एगो विशेषता ई ह कि कउनो एक सम्प्रदाय विशेष क राह ना ह। ई राह ह सगरो सम्प्रदाय खातिर समान भाव से ग्रहण करे वाला अउर फलदायी। नाम ह-

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ।।

इहे नाम कलियुग में तारक ब्रह्म नाम ह। यह सोलह अक्षर क नाम महामन्त्र खाली वैष्णव ही ना, शैव, शाक्त, सौर, गाणपत्य आदि सब केहू एह मंत्र के अपने-अपने इष्टदेव के नाम मन्त्ररूप से पा सकेलन। ठाकुर जोर दे के कहले हउअन-'भक्त, ज्ञानी, योगी सब केहू बदे 'नाम' ही आसान रास्ता ह।' अपने अनुपम भाषा में ऊ कहलन-'नाम जप ही त महा योग ह, जोर-जोर से राम-राम कहल कीर्तन योग ह, मन ही मन में राम-राम कहल मंत्र योग ह।'

(भोजपुरी किताब : 'दीक्षा-गुरु', लेखक-इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'लोकायत प्रकाशक' बी-२, सत्येन्द्र कुमार गुप्त नगर, लंका, वाराणसी-२२१००५ के लेख 'गुरु' पृ. सं. ६-७ एवं लेख 'श्री श्री सीतारामदास ओंकारनाथ जी महाराज' के पृ.सं. ११९ से १२१ के बीच)



www.bhojpurisahityangan.com

सम्वत् १६१६ में तुलसीदासजी कामदगिरि के पास निवास करत रहलन। ओही समय श्री गोकुलनाथजी के प्रेरणा से श्री सूरदासजी उनके पास अइलन। ऊ तुलसीदासजी के आपन सूरसागर दिखवलन अउर गा के दूगो पद सुनवलन। तुलसीदासजी किताब उठा के हृदय से लगा लिहलन अउर भगवान श्रीकृष्ण क महिमा गवलन। सूरदासजी क हाथ पकड़ि के उनके सन्तुष्ट कइलन अउर श्रीगोकुलनाथ जी के एगो चिट्ठी लिख भेजलन। सात दिन सत्संग कइ के सूरदासजी लवटि गइलन।

ओही दिनन में मेवाड़ से मीराबाई क चिट्ठी लेके सुखपाल नामक ब्राह्मण आइल रहलन। उनकर चिट्ठी पढ़ि के तुलसीदास एगो पद बना के जबाव भेजलन कि सब छोड़ि के भगवान क भजन कइल उत्तम ह-

जाके प्रिय न राम बैदेही ।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ।।
तज्यो पिता प्रहलाद, विभीषण बंधु, भरत महतारी ।
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज बनितन्हि, भये मुद मंगलकारी ।।
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेब्य जहाँ लौं ।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटै बहुतक कहौं कहाँ लौं ।।
तुलसी सो सब भाँति परमहित पूज्य प्रान ते प्यारो ।
जासों होय सनेह रामपद, एतो मतो हमारो ।।

एकरे बाद गोस्वामी जी काशी पहुँचलन अउर उहवाँ प्रहलाद घाट प एक ब्राह्मण के घर निवास करे लगलन। उहाँ उनके अन्दर कविता लिखले क कला अपने आप जाग गइल अउर संस्कृत में रचना करे लगलन। उनके साथ अचरज होखे लागल कि दिन में जवन कुछ लिखें रात में गायब हो जाय। ऊ बुझि ना पावें कि का करीं।

आठवाँ दिन रात में उनके सपना लउकल। भगवान् शंकर कहलन कि तूँ अपने भाषा में कविता क रचना कर। नींद उचट गइल, गोस्वामी तुलसीदासजी उठ के बइठ गइलन। उनके हृदय में सपना क आवाज गूँजे लागल। ओही घड़ी भगवान् शिव अउर माता पार्वती जी उनके सामने प्रकट हो गइलन। तुलसीदास साष्टाङ्ग प्रणाम कइलन। शिवजी कहलन-"भैया ! अपने मातृभाषा में कविता लिख, संस्कृत के पचड़ा में मत पड़ट्ट। जवना से सबकर कल्यान होखे, उहे काम करे के चाही। तूँ अयोध्या जा के रहट्ट अउर उहवें कविता क रचना करट्ट। हमरा आशीर्वाद से तुहार कविता सामवेद जइसन सफल होई। एतना कहि के गौरीशंकर गायब हो गइलन।" एह लोगन के कृपा अउर अपने भाग्य के सराहत तुलसीदासजी अयोध्या जा पहुँचलन।

www.bhojpurisahityangan.com

तुलसीदास जी अयोध्या में रहे लगलन। कुछ दिन बीतत गइल। संवत् १६३१ आ गइल। ओह साल चैत्र शुक्ल रामनवमी के दिन लगभग उहे योग जुट गइल, जइसन त्रेता में रामनवमी के दिन रहल। ओह दिन सबेरे-सबेरे श्रीहनुमान जी प्रकट होइ के गोस्वामी तुलसीदास जी क तिलक कइलन। शिव, पार्वती, गणेश, सरस्वती, नारद अउर शेष जी आशीर्वाद दिहलन। सब कर कृपा अउर आशीर्वाद पा के तुलसीदास जी श्रीरामचरित मानस क रचना शुरू कइ दिहलन। दू बरिस सात महीना छब्बीस दिन में श्रीरामचरित मानस क रचना पूरा भइल। सम्बत् १६३३, मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में राम वियाह के दिन सातो काण्ड पूरन हो गइल।

".....गोस्वामी जी समय-समय पर बहुत जगहिन पर घूमत-फिरत रहलन। घुमाई के बीच बहुतेरे चमत्कार भरल काज भी भइलन।"

एक बार गोस्वामीजी घूमत-फिरत नीमसार पहुँचलन। बानखण्डी जी के निहोरा प सगरो तीर्थ स्थानन के ढूंढ़ के ओकर स्थापना करवलन। उहवाँ से कइ जगह घूमत-घामत वृन्दावन पहुँचलन। उहाँ रामघाट प ठहरलन। चारो ओर धूम मच गइल। लोग दर्शन करे खातिर आवे लगलन। गोस्वामीजी नाभादासजी के लगे गइलन। ऊ बड़ा सम्मान कइलन। उनके संग राधाकृष्ण मन्दिर में दर्शन करे गइलन। पुजारी कहि पड़लन-

अपने अपने ईष्ट के, नमन करें सब कोय ।
परसुराम बिन ईष्ट के, नवै सो मूरख होय ।।

तब तुलसीदासजी भगवान श्रीकृष्ण के सामने कहलन-

का बरनउँ छवि आप की, भले बने हो नाथ ।
तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष-बान लेउ हाथ ।।

तुलसीदास के प्रार्थना करते समय भगवान् श्रीकृष्ण भगवान् राम के रूप में धनुष-वाण के साथ दर्शन दिहलन। भगवान बहुते भक्तन से स्नेह रखेलन, उनकर लीला अइसने होला। बरसाने भर में ई बात फैल गइल गोस्वामीजी के स्थान प भारी भीड़ हो गइल। गोस्वामीजी कहलन कि भगवान हमेशा अपने भक्तन क इच्छा पूरा करेलन।

एक बार दिल्ली क बादशाह आपन आदमी भेज के तुलसीदास के अपने लगे बुलवलन अउर कवनो चमत्कार दिखावे के कहलन, गोस्वामी जी कहलन कि हमके कउनो चमत्कार ना मालूम ह। बादशाह खीझ के उनके कैद कइ लिहलन, अउर जेल में डाल दिहलन। जेल में जाते तुलसीदास- 'ऐसी तोहि न बूझिये हनुमान हठीले।' पद क रचना कइलन। फिर त बानर न जाने कहाँ से आ गइलन अउर भारी उत्पात मचावे लगलन। महल में कोहराम मच गइल। बादशाह बहुत चोटा गइलन, फिर त तुरन्त गोस्वामी जी जेल से बाहर कइ दिहल गइलन अउर

www.bhojpurisahityangan.com

खूब निहोरा कइ के अपराध से क्षमा मंगाइल। बादशाह बहुत सम्मान के साथ उनके विदा कइलन।

गोस्वामीजी के पास चन्द्र नाम क एगो ब्राह्मण हत्या कइले के बाद आइल अउर दूर खड़ा हो के ऊ राम-राम कहे लागल। अपने इष्टदेव क नाम सुन के तुलसीदास आनन्द-मग्न हो गइलन अउर ओकरे लगे जाइके ओहके सीना से लगा लिहलन। आदर से भोजन करवलन अउर खुस होके कहलन-

तुलसी जाके बदन ते, धोखेहुँ निकसत राम ।
ताके पग की पगतरी, मेरे तन को चाम ।।

-वैराग्य-संदीपनी

ई बात बात-बात में सगरो नगर में फैल गइल। साँझ होत-होत बड़हन-बड़हन ज्ञानी, ध्यानी, विद्वान इकट्ठा हो गइलन। ऊ लोग गोस्वामी जी से पूछ पड़लन-'ई हत्यारा कइसे शुद्ध हो गइल?' गोस्वामीजी कहलन-वेदन में, पुराणन में, नाम महिमा लिखल ह, ओहके रउआँ सभे पढ़ लेयीं।

(भोजपुरी किताब : 'राम पियारा साधु संत' लेखक-इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'लोकायत प्रकाशन' बी-२, सत्यन्द्र कुमार गुप्त नगर, लंका-वाराणसी (२२१ ००५) के पृष्ठ सं० ५० से ५५ के बीच)

O O O

".....श्री कृष्ण जी के लग्गे गइले में सुदामा जी आनाकानी कइलन, बाकिर पत्नी के बहुत कहले सुनले प ई सोच के तैयार भइलन कि एही बहाने श्रीकृष्णचन्द्र क दुर्लभ दर्शन मिल जाई। बाकिर खाली हाथ जायँ कइसे ?

पत्नी से कहलन-'जदि भेंट देवे खातिर कुछ होखे त ले आव।' पति क बात त निम्मन रहल, बाकिर घर में कुछ हो तब न दें ? घर में अन्न क एक दाना भी ना रहल। संकोच के साथ पड़ोस में गइली अउर मांगे लगली। पड़ोसिन चार मुट्ठी चावल दे दिहली। ब्राह्मणी ओह चावल के एगो मइला-कुचइला कपड़ा में बाँन्हि के गठरी बनवली अउर पकड़ा दिहली साथ में उल्लास के साथ बोल पड़ली-

सिद्धि करौ गनपति सुमिरि बाँधि दुपटिया खूँट ।
चले जाहु तेहि मारगहि माँगत बाली बूट ।।

-नरोत्तम कवि

www.bhojpurisahityangan.com

सुदामा 'अच्छा' कहि के चावल क पुटलिया बगल में दबा के द्वारका के ओर रवाना हो गइलन। बहुत दिनन के बाद प्रिय मित्र के मिलले क होखे वाला आनन्द क सुन्नर-सुन्नर कल्पना करत निष्काम सुदामा द्वारका पहुँचलन।

सुदामा जी पूछत-पूछत महल के पहिला ड्योढ़ी प पहुँचलन। द्वारपाल सिर झुका के कुशल-समचार पूछले के बाद कहलस-'हे द्विजराज ! रउआँ के हयीं अउर केसे मिले आइल बानी ?' सुदामा कहलन-'भाई ! हमार संघतिया श्रीकृष्ण इहवाँ रहेलन, हम उनही क दर्शन करे आइल हयीं।'

सुदामा के मुँहे से श्रीकृष्ण खातिर संघतिया शब्द सुन के माथा चकरा गइल, ऊ सोचे लागल कि कहीं ब्राह्मण पगला ना न गइल ह। फिर सोचलस हमरे प्रभु त दीनबन्धु हवँ। दीन क मित्र बनल स्वाभाविक ह। आदर सहित ब्राह्मण के उहवेंबइठा के द्वारपाल अन्दर गइल।

द्वारपाल तहँ चलि गयो, जहाँ कृष्ण यदुराय ।
हाथ जोरि ठाढ़ो भयो, बोल्यो सीस नवाय ।।

-नरोत्तम कवि

जा के बोलल-नाथ !

सीस पगा न झगा तन पै प्रभु ! जाने को आहि बसै केहि गामा ।
धोती फटी-सी, लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह की नहिं सामा ।।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल देखि, रह्यो चकि सो वसुधा अभिरामा ।।
पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा ।।

-नरोत्तम कवि

भगवान् 'सुदामा' शब्द सुनते सगरो सुध-बुध भुला गइलन, अउर हड़बड़ा के उठ गइलन। मुकुट उहवें रहि गइल, पीताम्बर कहीं गिर गइल, चरण पादुका भी ना पहिन पवलन, अउर द्वार के ओर दौड़ पड़लन। दुआरी प पहुँचते सुदामा के गोड़न प गिर पड़लन।

आज भक्त अउर भगवान क सखा के रूप में मिलन हो रहल बा। कृष्ण-सुदामा दूनो जनी के आँखिन से आँसुअन क धारा गंगा-गोदावरी से भी जियादा कल्याणकारी हो के जगत के पवित्र कइ रहल ह। महाराज क हजारन गो रानी अउर द्वारकावासी नर-नारी ब्राह्मण के सौभाग्य के सराहत हउअन। देवता चकित हो के लीलाधारी क लीला देख रहल हउअन। देवराज इन्द्र, कल्पवृक्ष, कुबेर अउर सुमेरु घबरात हउअन कि कहीं भगवान हमार सब कुछ सुदामा के न दे दें। ऋषि, मुनि अउर भक्तगण भक्तवत्सल भगवान् के मिलनरीति के निरेखि के आनन्दित हो रहल हवँ।।

www.bhojpurisahityangan.com

भगवान सुदामा के बेवाई से फटल चरनन के देखि के रोअत कहे लगलन-

ऐसे बिहाल बिबाइनसों,
पग कंटक जाल गड़े पुनि जोये । हाय महादुख पाये सखा तुम,
आये इतै न कितै दिन खोये ।। देखि सुदामा की दीन दसा,
करुणा करके करुनानिधि रोये । नैनन के जलसों पद धोये ।।

परात क पानी छूवलहू क जरूरत ना भइल। सरकार अपने अँसुअन के धारा से ही सुदामा के गोड़न के पखार डरलन अउर उनके छाती से लिपटा लिहलन। बहुत देर ले छाती से लगवले हउअन, भगवान अलग ना करत हउअन। चारो ओर तमाम लोग इकट्ठा हो गइल हव। अन्त में उद्धव अउर अक्रूर के भगवान से निहोरा करे के पड़ल। भगवान छाती से हटा गलबांही डरले उनके महल के अन्त:पुर के ओर चल दिहलन।

भगवान आदर सहित ले जाके अपने दिव्य पलंग प बैठवलन। पूजन क सामान खुद इकट्ठी कइके अपने हाथन से उनके गोड़न के धोवलन अउर ओह जल के अपने मस्तक प लगवलन। रुक्मिर्णाजी सहित सगरो रानी भी पाँव पखरलिन अउर जल के महल में छिड़का के पवित्र करवली। .....भगवान् अपने प्रिय मित्र के ओर प्रेमपूर्ण नजर डाल के हँसत कहलन कि-'भाई ! तूँ हमरे खातिर कुछ भेंट ले आइल हउअ ?' भक्तन क प्रेमपूर्ण तनिको दिहल सामान के हम ढेर मानेलिन, काँहे कि हम प्रेम क भूखाइल हयीं। जे भक्त ना ह उनकर ढेर सा दिहल सामानन भी हमके सन्तुष्ट ना कइ पावेले।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्रामि प्रयतात्मनः ।।

-श्रीमद्भावत, १०/८५/४

जवन भक्त पत्र, पुष्प, फल अउर जल आदि हमके प्रेम से देला ओह शुद्धबुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त क प्रेम के साथ दिहल सामान हम प्रेम से खायेलीं।

भगवान् के एतना कहलहूँ प सुदामा चावल क गठरी भगवान के ना दिहलन। भगवान के अतुल राजसम्पत्ति अउर वैभव देखि के सुदामा के चावल दिहले में बड़ा लाज लागत रहल।

तब सगरो प्राणिन के अन्दर क बात जान लेवे वाले हरि अपने पास ब्राह्मण के अइले क कारण बूझि के विचार कइलन कि 'ई हमार निष्काम भगत अउर प्रिय सखा हउअन। ई धन के इच्छा से पहिलहूँ कब्बो हमार भजन ना कइलन अउर अब्बो न कउनो कामना रखेलन, एही से चावलन क भेंट दिहल ना चाहत हउअन। बाकिर अपने पतिव्रता पत्नी के प्रार्थना प

www.bhojpurisahityangan.com

आइल हउअन, एहसे हम इनके ऊ भोग अउर मोक्षरूप धन देब जवन देवता लोगन के भी दुर्लभ बा।'

एह नियर विचार कइ के भगवान् 'ई का ह ?' कहिके जल्दी से सुदामा के बगल में दबल चावलन क पोटली जबरदस्ती खींच लिहलन। कपड़ा पुरान रहल, पोटली खुल गइल अउर चाउर चारो ओर छितरा गइल। भगवान प्रेम से बटोरे लगलन अउर कहे लगलन-

नन्वेतदुपनीतं मे परमप्रीणनं सखे ।
तर्पयन्त्यङ्ग मां विश्वमेते पृथुकतण्डुलाः ।।

-श्रीमद्भागवत, १०/८१/९

'हे सखे इहे त हमके खूब खुश करे वाली प्यारी भेंट ह ई चावल हमके अउर सगरो संसार के तृप्त करे वाला ह। ई कहत भगवान एक मुट्ठी चावल चबा गइलन अउर ओकरे बढ़ियाँ स्वाद क बखान करे लगलन। तुरन्ते दूसर मुट्ठी भरलन।' एतने में पास बइठल लक्ष्मीरूपिणी जगज्जननी श्रीरुक्मिणी जी भगवान् युनन्दन क हाथ पकड़ लिहली अउर कहे लगली-

'हे प्रभो ! बस कइल जाय। राउर एतना प्रसन्नता ही मनइन के कल्याण खातिर पर्याप्त ब। हमके कृपा से मिले वाली एह लोक अउर परलोक क राउर रचल हर तरह क सम्पत्ति भा ऐश्वर्य एह ब्राह्मण के एक मुट्ठी चाउर से मिल गइल। अब अउर चाउर चबा के का हमहूँ के दे डारल चाहत हयीं।'

सुदामाजी कुछ समय ले उहवाँ ठहरलन। भगवान् से आज्ञा ले के घर लौटलन। श्री कृष्ण महाराज उनके कुछ भी धन ना दिहलन अउर न ही ऊ मंगलन, ऊ त भगवान क दर्शन पा के आनन्दित हो गइल रहलन। भगवान से मुलाकात अउर ठहराव काल क सेवा-सुश्रूषा क याद करत अपने घर के ओर बढ़त जात रहलन। बाकिर भगवान के त सुदामा के सती स्त्री के मन उठल कामना के पूरा करे के रहल। ऊ तुरन्त विश्वकर्मा जी के बुला के आदेश दिहलन जवने से सुदामा क झोपड़ी राती-रात देवता लोगन के दुर्लभ दैवीविलास-नगर में बदल गइल। सुदामा अपने गाँव के नगीचे पहुँच के देखत हउअन कि उहवाँ उनकर झोपड़ी क कहीं अता-पता ना ह। जहाँ झोपड़ी रहल उहवाँ आज सूर्य, चन्द्रमा अउर अग्नि के समान तेजयुक्त बड़े-बड़े ऊँच महल बनल हउअन। ओकरे आस-पास बाग-बगीचा लगल हवँ, बहुतेरे चिरई तरह-तरह किलोल करत अपने मधुर गान से मनइन क मन मोहत हयी। सुदामा जी ई कुल्हि देखि के दंग रहि गइलन। सोचे लगलन कि का हम दूसर नगरी में आ गइल हयीं ? पति क शुभ आगमन सुन के उनके आगवानी बदे उनकर मेहरारू सज-धज के आरती क थाल लिहले महल से बाहर निकललीं। सुदामा

www.bhojpurisahityangan.com

जी बुझि गइलन कि ई कुल्हि भगवान श्री कृष्णचन्द्र के कृपा क देन ह। पत्नी सहित सुदामा जी महल में प्रवेश कइलन।

भक्तराज सुदामा अनासक्त रूप से जगत् में रहत दिन-रात भगवान क भजन करे लगलन अउर कल्ले-कल्ले विषय के तजि के अहंभाव के मिटा के ब्रह्मपद के पा गइलन।''

(भोजपुरी किताब : 'श्याम पियारा साधु सन्त', लेखक-इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'लोकायत प्रकाशन' बी-२, सत्येन्द्र कुमार गुप्त नगर, लंका-वाराणसी-२२१००५ के पृष्ठ सं. १५० से १५६ के बीच)

O O O

.....श्रीकृष्ण द्वारिकापुरी से पाण्डवन के पास अइलन। बतकही में मालूम भइल कि राजा द्रुपद अपने पुरोहित के कौरवन के पास सन्धि के प्रस्ताव के साथ भेजले रहलन, ऊ ई जबाव ले के लवटलन कि राज्य क बात त दूर ह, सूई के अगिले हिस्सा यानी नोंक के बराबर भी जमीन दुर्योधन पाण्डवन के ना दिहें।

एह पर श्रीकृष्ण पाण्डवन से सलाह करे लगलन कि आगे का करे के चाही। पाण्डव, खास तौर से महाराज युधिष्ठिर क विचार रहल कि युद्ध से वंश क नाश हो जायी, गो कि अर्जुन के शस्त्र शिक्षा से विश्वास रहल कि विजय निश्चित होई। फिरो भीष्म, द्रोण आदि के सामने हथियार उठवले में लाज लगल रहल। भीम मन से युद्ध चाहत रहलन बाकिर बाहर से महाराज युधिष्ठिर क बहुत अदब कइले के कारन कुछ ना बोललन। नकुल अउर सहदेव क आपन कउनो राय ना रहल। ऊ अपने बड़ भाईन के आदेश प चलत चाहत रहलन। श्रीकृष्ण क महाराज युधिष्ठिर से बतकही से नतीजा निकलल कि सन्धि हो जाय अउर आधा राज्य दिहले के बजाय दुर्योधन पाण्डवन के गुजारा करे भर के पाँच गाँव दे दें। श्रीकृष्ण ई सन्धि प्रस्ताव के साथ कौरवन के पास जाये के तैयार हो गइलन, गो कि अन्दर मन से जानत रहलन कि कौरव तइयार ना होइहें, युद्ध निश्चित ह।

पाण्डव से मिलले के बाद श्रीकृष्ण द्रौपदी से मिले गइलन। ऊ कृष्ण क बड़ा आदर कइलिन। हाथ पकड़ि के स्नेह के साथ आसन प बइठा के जलपान करवली, दासी के बदले खुद चावर ले के डुला के हवा करे लगली। रुक्मिणी, सत्यभामा अउर प्रद्युम्न आदि क हाल-चाल पूछली। एकरे बाद बोलली "कृष्ण ! तूहें न्योता ले के तिसरकू पाण्डव गइल रहलन, महाभारत युद्ध होखे वाला ह, तूँ सुनलही होब।" श्रीकृष्ण कहलन-'बाकिर महाराज युधिष्ठिर क इच्छा युद्ध क ना ह, ऊ सन्धि चाहत हउअन। भीम अउर अर्जुन भी उनसे सहमत हउअन। कम से कम ले के सन्धि

www.bhojpurisahityangan.com

कइ लिहें। हकवाली कउनो बात ना ह, ऊ लोग भाइन से लड़ाई ना चाहत हउअन। हमके सन्धि प्रस्ताव ले के जाये वाला दूत बनवले हउअन।' द्रौपदी क भाव बदलि गइल। बोल पड़ली-"हे केशव ! का तुहरो इहे इच्छा हउए ? हमार बेइज्जती तुहें याद ना ह ?" एकरे बाद अपने खुलल बालन क एगो गुच्छा पकड़ के दिखावत बोललीं-'एहकर चोटी अबहिन ले ना बन्हल यदुपति।' कहत-कहत आँसुन से आँख डब-डबा गइल, आँसू गिरे लागल। कृष्ण कहलन-'बहन ! धीरज रख, दुर्योधन सन्धि क प्रस्ताव ना मनिहें, युद्ध जरूर होई अउर तुहार मंसा पूरन होई।' द्रौपदी विश्वास भरल नजर से कृष्ण के देखे लगली। कृष्ण बाहर अइलन अउर सात्यकि के लेइ के हस्तिनापुर रवाना हो गइलन।

भगवान श्रीकृष्ण के द्रौपदी क चीर हरण के समय विलाप क ब्यौरा याद करावे बदे महाकवि पं० चन्द्रशेखर मिश्र अपने कविता में लिखले बाड़न-

भूलत ना हमइँ ऊ दिनवा,
द्रौपदी कहलीं तनी हाली से अइहऽ ।
घाती बड़ा मुदई कुलियइँ,
बिचवाँ ओन्हने के बचाइ के जइहऽ।
दूत युधिष्ठिर कै बनला,
दुरयोधन से भले सन्धि करइहऽ।
लेकिन ई विथुरी केसिया मोर,
याद रहइ हरि भूलि न जइहऽ।।

-भीष्म बाबा, पृष्ठ २३

श्रीकृष्ण के हस्तिनापुर अइले के खबर से लोगन में बड़ा उत्साह फैलल। प्रजा दिल से पाण्डवन के पक्ष में रहल। ऊ युद्ध ना चाहत रहल, उहो पाण्डवन से जे आपन सब कुछ गवाँ के उनकर रक्षा करत रहलन। प्रजा के एहसास होत रहल कि कृष्ण के अइले से उनकर भलाइये होई। बाकिर जब ई सुनलन कि कृष्ण पाण्डवन के तरफ से सन्धि क प्रस्ताव ले के आ रहल बाड़न त उनकर खुशी क हद हो गइल अउर आपन-आपन टोली बना के स्वागत खातिर चल दिहलन। धृतराष्ट्र अउर दुर्योधन के जब खबर मिलल, पहिले अइले क कारन ना जान पवलन, सोचलन दुर्योधन मिले गइल रहलन, एहसे खुश होइके कृष्ण भी आ रहल बाड़न। नींक खातिरदारी से अपने ओर कइ लिहले के लालसा से महाराज धृतराष्ट्र भी दुर्योधन, दु:शासन आदि लइकन अउर मन्त्री लोगन के साथ लेके स्वागत करे चल दिहलन, एह तरह से बड़हन समारोह के रूप

www.bhojpurisahityangan.com

में स्वागत-सत्कार भइल। नगर में घुमले के बाद बहुत निहोरा भइले प भी ऊ कौरवन के इहाँ ना ठहरलन। ठहरे बदे विदुर के वहाँ पहुँच गइलन अउर महारानी कुन्ती क दर्शन कइलन। युद्ध के बारे में विदुर अउर कुन्ती से कई किसिम क बात-चीत भइल। कृष्ण के विश्वास रहल कि सन्धि क प्रस्ताव दुर्योधन के मन्जूर ना होई, फिरो लोगन के पाण्डवन के साँच मनोदशा क जानकारी देवे आइल रहलन, जवने से प्रजा क दिल पाण्डव के साथ रहे, अइसन बात बिदुर अउर कुन्ती से कहलन। फिर अकेले में कुन्ती से कहलन कि ऊ कर्ण के उनकर परिचय बता दें अउर कोसिस करें कि कर्ण कौरवन क साथ छोड़ के पाण्डवन के संग हो जाय। जदि कर्ण दुर्योधन क साथ ना छोड़िहें त पाण्डवन खातिर मुश्किल हो जाई। महाबीर कर्ण के सगरो शक्ति पास रहल हरावल ना जा सकेला। एह से उचित ई होई कि दुर्योधन क पक्ष न छोड़ले के दशा में कुन्ती मातृऋण क वास्ता दे के कर्ण से वर माँगें अउर वर में ई माँगे कि अर्जुन के सिवा अपने दूसर भाइन प मार डाले वाले अस्त्रन क प्रयोग न करें।

अगिले दिन कौरवन के सभा में श्रीकृष्ण अइलन।.....

श्रीकृष्ण कहल शुरु कइलन, "कौरव अउर पाण्डव दूनों ऊँच कुल में पैदा भइल हमार मित्र हउअन। एगो तनिक बात खातिर आपस में लड़ि के नष्ट हो जायँ, ई एह लोगन के केहू हितैषी के नींक ना लगी। एहसे क्षत्रिन क सगरो शक्ति नष्ट हो जाई, अउर देश में धर्म, शास्त्र, ऋषि अउर ब्राह्मणन क रक्षा कार्य ठप हो जाई जवने से अत्याचार अउर भ्रष्टाचार क बढ़ोत्तरी होखे लागी। हमनी क सनातन संस्कृति कल्ले-कल्ले गायब हो जाई। ई लड़ाई कउनो तरह से हितकर ना हउए। फिरो पाण्डव पुरहर निर्दोष हउअन। ऊ लोग अपने प्रतिज्ञा के मानत काम कइलन अउर वनवास व अज्ञातवास क भारी दुख सहन कइलन। महाराज युधिष्ठिर के धोखा में डारि के उनसे जुआ खेलावल गइल। उनकर सुभाव जुआ खेलले क ना रहलहू प जुआ खेला के छल से हरावल गइल। जुआ कपट भरल रहल। पहिले त महाराज युधिष्ठिर क दुर्योधन के अधीन शकुनि के संग जुआ खेलल होखही के ना चाहत रहल, राजा के साथ बिना मुकुट के दुर्योधन भी जुआ खेल ना सकल रहलन, जदि खेल भइबो कइल त उनकर राज्य जीते वाले शकुनि के अधिकार में होखे के चाही, अइसन ना भइल, ओह अधिकार पर दुर्योधन मुकुट पहिन के बइठल हउअन। दुर्योधन के तरफ से शकुनि के खेलल भी न्याय के अनुसार ना रहल काँहे कि दुर्योधन राजा ना रहलन। एहसे साफ ह कि जुआ अन्याय भरल रहल अउर कबहूँ जुआ न खेले वाले महाराज युधिष्ठिर अपने भाईन के न खेलले के कारन होखे वाले अपमान से बचावे खातिर खेललन। इनकर मान-सम्मान बचल रहे एहकर ध्यान रखलन। उनके महानता क हद ई रहल कि जवन कुछ दाँव रखे के उनसे कहाइल ऊ राखत गइलन, एकरे बाद वनवास अउर अज्ञातवास क शर्त रखाइल, ऊ दुर्योधन क मुँह देखि के ई कुल्हि मंजूर करत, राखत, अउर हारत चलि गइलन।

www.bhojpurisahityangan.com

अपने संग भाइन अउर द्रौपदी तक के दाँव प रखे वाले धर्मपुत्र युधिष्ठिर एगो भाई के का समझवलन, ई ओह भाई के समझ में चाहे न आवे बाकिर भारतवासी एहके समझत हउअन अउर समझत रहिहें। बाकिर ओह भाई क पग-पग प का रूप रहल ? अपने घर ही के मेहरारू महारानी द्रौपदी के सिरे क बाल पकड़ि के खींचत भरल सभा में मंगवा के कपड़ा उतरवा के नंगा कइले क नीच काज कइले तक क कोसिस कइलन। वन में आपन वैभव दिखा के भाइन के चिढ़वले क काम भइल। आखिर में ऊ कुल के मेहरारून के संग बान्हि के ले जात के समय उहे पाण्डव उहें अपमानित भाई लोग उनकर रक्षा कइले रहलन। एक ओर पाण्डव-वधू द्रौपदी के साथ दुर्योधन-दु:शासन आदि कौरवन क व्यवहार प नजर, दूसरे ओर गन्धर्व चित्ररथ से बान्हल कौरव-कुल मेहरारून के संग युधिष्ठिर-भीम आदि पाण्डवन क व्यवहार प नजर डालल जाय। अउर भी बहुतेरा उत्पात पाण्डवन के संग कौरव लोग कइलन-करवलन। विराट क गोधन चोरावले के उद्देश्य से साफ जाहिर ह कि पाण्डवन क अज्ञातवास मालूम हो जाय अउर ऊ फिर से वन क राह पकड़ें। एक तरह महाराज युधिष्ठिर क अइसन व्यवहार कि सुर अउर असुरन प विजय पाये वाले अर्जुन जइसन महाबीर भाई के रहत बार-बार युद्ध से बचले क कोसिस अनायास प्रजा क नाश अउर धन-हानि क ना चाहल, आपन पुरहर अधिकार के जगही खाली आधा राज्य ले के ही शान्ति से रहल चाहत हउअन।''

श्रीकृष्ण के एतना कहत-कहत प्रजा लोगन के कण्ठ से 'महाराज युधिष्ठिर क जय हो' क आवाज निकले लागल। दुर्योधन क धैर्य कृष्ण के बातन से टूटे लागल। एक बार पगला उठलन। चिल्लाये लगलन-'बाँध ल इनके, ई पाण्डवन क चमचा-चाटुकार हउअन।' दु:शासन समेत कुछ कौरव बन्हना ले के आगे बढ़लन। सभा में खलबली मच गइल। दू-एक नौजवान तलवार ले के कृष्ण क रक्षा करे आगे आ गइलन। महाबीर भीष्म गुस्साइ के कौरवन के डाँटे लगलन। कृष्ण के चेहरा प अउर चमक आ गइल।

महाराज धृतराष्ट्र घबड़ा के बोल पड़लन-'केशव ! हम त इहे चाहत हयीं कि ई दूनो भाई आपस में समझौता कइ लें। लड़ाई-झगड़ा से कउनो लाभ ना होखे वाला हउए। पाण्डव कउनो गैर त हवन ना, बाकिर दुर्योधन के न जाने का सूझ रहल बा।'

दुर्योधन घमण्ड के साथ बोललन-'रउआँ आँख त ह ना कि देखि सकीं। ई कुल्हि कृष्ण क चाल ह हमके नीचा दिखावे खातिर। कृष्ण अबहिन ले जवन कुछ कहलन सब पाण्डवन के तारीफ में। ई कुल्हि दूत क काम ना हउए। कृष्ण ई ना कहलन कि राज्य क सचमुच अधिकारी दुर्योधन हउअन काँहे कि जेठ उनकर बाऊ हउअन, पाण्डु ना। पाण्डु एहसे राजा भइल रहलन कि उनकर जेठ भाई आन्हर रहलन। बाकिर उनके जेठ भाई क लइके त आन्हर ना हउअन। फिर राज्य उनकर न हो के युधिष्ठिर क कइसे हो सकेला ? एकरे अलावा युधिष्ठिर आपन राज्य

www.bhojpurisahityangan.com

हार चुकल हउअन, अब समझौता क कवन बात रहि गइल ह ? न्याय से जवन राज्य ना मिल सकेला ओके अन्याय से लेवे खातिर पाण्डव ठान लिहले हउअन। युद्ध क तइयारी उनही लोग पहिले शुरू कइलन हँ। हमनी के आपन रक्षा करेके ह। ई कुल्हि पाण्डवन से के करावत बा? कृष्ण। इहवाँ कृष्ण के जबान से सबके मालूम हो चुकल ह कि ऐंठ के साथ पाण्डवन के अधिकार खातिर कृष्ण लड़े आइल हउअन। हम राज्य भी देयीं अउर माथा भी झुकायीं। ई कब्बो ना हो सकेला।'

सावास महाराज दुर्योधन ! कहिके कर्ण दुर्योधन क हिम्मत बढ़वलन। शकुनि मुस्करा के सभा के देखे लगलन, भावना के विजय क गर्व के साथ। दुःशासन तपाक से दुर्योधन के पान खियवलन।

कृष्ण कुछ देर तक चुप रहलन, फिर धीरे-धीरे बोले लगलन, महाराज युधिष्ठिर इहो कहलन कि 'जदि हमार आधा हिस्सा दुर्योधन दिहल न चाहें, त जिनगी गुजारे बदे हम पाँच भाइन के खाली गाँव दे दें, तब्बो हम युद्ध ना करब।'

दुर्योधन कहलन-'इहो एगो हेकड़ी हउए। लड़ाई में जइसे उनही क जीत होत होखे। फिर हारल युधिष्ठिर हउअन न कि कृष्ण। हमरे जुआ खेल के बारे में त बहुत कुछ कृष्ण कहि डरलन, बाकिर एह माँग के बारे में ई ना बतवलन कि माँगनहार युधिष्ठिर काँहे ना अइलन, कृष्ण के काँहे भेजलन।'

'धन्यवाद, महाराज दुर्योधन ! खूब कहलीं।' कहि के कर्ण जोर से हँसे लगलन।

कृष्ण से ना रहि गइल बोले लगलन-'दुर्योधन ! तूँ एतना मदाइल हब कि बात तुहरे माथा में सोझे ना घुसत । जेठ भाई के माँगनहार बना के सामने खड़ा कइल चाहत हउअ, तनिको लाज ना लागत ह-महामूर्ख! साक्षात् धर्म, महाराज युधिष्ठिर तुहरे गोड़े प गिर सकेलन, बाकिर जब निःस्वार्थ भाव रही तब। जब उनके स्वार्थ क बात उठेले त अपने ओही गुणन के कारन ऊ हमरे जइसने क सेवा पावेलन।'

'धन्य कृष्ण, धन्य माधव !' कहि के भीष्म मगन हो गइलन।

कृष्ण कहि चललन-"तुहार नाश निश्चित ह। तुहरे समझ में ना आ सकेला कि शिक्षा अउर तपस्या से पाण्डवन क ताकत केतना बढ़ि गइल ह। अर्जुन कहाँ पहुँच गइल हउअन। कीचक, जरासन्ध के जीते वाला महाबली भीम केतना ताकतवर हो गइल हवन। तुहार सेना पाण्डवन के बाणन के आग से भस्म हो जाई। तूँ पछतात आपन जान तजि देब।" कहत कृष्ण तेजी से सभा के बाहर निकल गइलन।

(भोजपुरी किताब : 'भोजपुरी महाभारत', लेखक- इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'लोकायत

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशन' बी-२, सत्येन्द्र कुमार गुप्त नगर, लंका-वाराणसी-२२१००५ के पृष्ठ सं. १७८ से १८५)

O O O

"एक जगहीं बहुत बड़हन एगो बरगद क पेड़ रहल। उहवाँ एगो कौवा अउर वोकर पत्नी कौवी रहत रहलि। बच्चा जनते एगो साँप आइके खा जाइल करे। सांप के एह हरकत के बारे में दुखी मन से ऊ जाइ के अपने एगो मित्र सियार से आ के कहलसि अउर पुछलसि कि "अइसन स्थिति में हमरा के का करे के चाही ? साँप पेड़ के कोटर में रहेला, वोसे कइसे बचाव होखे?"

सियार कहलस-"तूँ कउनो राजा के नगर में जा। नगर में राजा, मन्त्री भा कउनो मनई लापरवाह होखें त वोकर हीरा क हार उठा ले आव। हार के साँप के कोटर में डाल द। कउनो लालची मनई हीरा के पावे खातिर सांप के मार डारी।" सियार क बात सुनते कौआ अउर वोकर पत्नी उड़ गइलन अउर तलाश करे लगलन। एक जगह पोखरा के किनारे राजा के रनिवास क एगो महिला आपन मोतिन क हार गटई से निकार के पोखरा के किनारे धइ के नहात रहलि। कौवी हार झट से चोच में दबवलसि अउर ले के भागे लागल। रखावे वाले पियादा देखते डंडा लेके कौवी के पीछे-पीछे भागे लगलन। कौवी हीरा क माला कोटर में डालि के दूर जा के लुका के निरेखे लगलि। पियादा लोग कोटर में झाँक के देखत हउअन कि माला के ऊपर करिया सांप फन निकलले बइठल ह। पियादा डंडा से मार-मार के सांप के मुआ दिहलन अउर माला ले गइलन। एही से कहल बा-जवन उपाय से हो सकेला, ऊ ताकत के इजहार से ना हो पावत। बुद्धिमान मनइन खातिर कुछऊ असम्भव नइखे।"

(किताब : 'भोजपुरी पंचतन्त्र', लेखक- इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'लोकायत प्रकाशन', लंका-वाराणसी के पृ.सं. २९-३० से)

O O O

".....क्रियायोग एगो सरल मन:कायिक प्रणाली ह जवने से मनई के खून से कार्बन निकल जाला अउर ऊ आक्सीजन से भरि जाला। ई अतिरिक्त आक्सीजन क अणु प्राण-धारा में बदलि जाला, जवन दिमाग अउर मेरुदण्ड के चक्रन में नई शक्ति क बहाव करा देले। शिराअन में बहे वाली अशुद्ध खून (Venous Blood) क संचय रूक गइले पर योगी ऊतकन (Tissues) में होखे वाली कमी के रोक सकेला भा कम कइ सकेला। उन्नत योगी मतलब योग-साधना में ऊँचाई पा गइल योगी अपने कोशिकन (Cells) के प्राण शक्ति के रूप में बदल सकेला। एलिजाह, ईसामसीह, कबीर, अउर दूसर महान लोग क्रिया योग भा वोही के नियर कउनो तौर-तरीका के इस्तेमाल में

www.bhojpurisahityangan.com

निश्चित रूप से दक्ष मतलब पुरहर जानकार रहलन जवने से ऊ लोग अपने देह के अपने इच्छा से प्रकट चाहे अन्तर्धान कइ सकत रहलन।

क्रिया योग एगो बहुत पुरान विज्ञान ह। लाहिड़ी महाशय के उनके गुरु बाबाजी से उनके मिलल रहल, जे अन्हराइल युगन में एहके लुप्त हो गइले के बाद फिर से वोके प्रकट कइ के सुधरलन। बाबाजी एही के क्रिया योग क सीधा सादा नाम दिहलन।

बाबाजी लाहिड़ी महाशय से कहले रहलन-"एह उन्नीसवीं शताब्दी में जवन क्रिया योग हम दुनिया के तुहरे जरिये दे रहल बानी, ई वोही विज्ञान क फिर से ऊपर उठावल मतलब नया कइल ह जवन श्रीकृष्ण हजारन साल पहिले अर्जुन के दिहले रहलन अउर जवन बाद में पतंजलि, सेंट जॉन, ईसा मसीह, सेंट पॉल अउर ईसा मसीह के दूसर चेलन के मिलल रहे।"

भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण क्रिया योग क चर्चा दू बार कइले हवं। एक श्लोक में कहि रहल हवं : "अपान वायु में प्राणवायु के हवन से अउर प्राणवायु में अपान वायु के हवन से योगी प्राण अउर अपान दुनहुन क गति के रोक देला अउर एह तरह ऊ प्राण के हृदय से मुक्त कइ लेला अउर प्राणशक्ति पर नियन्त्रण कइ लेला।" मतलब ई ह कि "योगी फेफड़न अउर हृदय क काम कइल रोक देला अउर प्राणशक्ति के वोह अलग से आपूर्ति के सहायता से देहं में होखे वाले गिरावट के रोक देला अउर अपान के नियंत्रण में कइ के देही में बुढ़ापा ले जाये वाले बदलाव के भी रोक देला। एह मतिन गिरावट अउर बढ़ोत्तरी दुनहुन के रोक के प्राणी प्राण-नियंत्रण सीख लेला।"

गीता क दूसर कुछ श्लोकन में कहल गइल ह : "ऊ ध्यान-पारंगत (मोक्ष परायण) मुनि सदा खातिर मुक्त हो जाला, जवन 'चरम लक्ष्य' के पवले खातिर अपने नजर के भ्रूमध्य में स्थित कई के नाक अउर फेफड़न में विचरे वाला प्राण अउर अपान क निराकरण (सम) करत बाहरी विषय-भोग से अपने ध्यान के हटवले में अउर इच्छा, भय अउर क्रोध के निकाल बाहर कइले में समरथ ह, अउर जे अपने इन्द्रियग्राही मन व बुद्धि के जीत लिहले ह।'

भगवान् श्रीकृष्ण इहो कहले हवं हमहीं (अपने पहिले के अवतार में) ई अविनाशी योग एगो पुरान ज्ञानी विवस्वत (सूर्य) के दिहले रहलीं, विवस्वत एके अपने बेटा महान् स्मृतिकार मनु के अउर मनु सूर्यवंश के संस्थापक इक्ष्वांकु के दिहलन। एह मतिन परम्परा से मिलल ई राजयोग राजर्षी लोग जनलन, बाकिर हे अर्जुन ! वोकरे बाद ई योग बहुत काल से एह पृथ्वीलोक में लुप्त जइसन हो गइल। एक से दूसर के लग्ले पहुँचत राजयोग क ऋषि लोग भौतिकवादी युगन के शुरू भइले तक रक्षा कइलन। फिर पुरोहितन क गोपनीय रखले क सोच अउर मनइन क उदासीन भइले के कारन ई पवित्र विद्या कल्ले-कल्ले न मिले वाला हो गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

योग क श्रेष्ठतम शास्त्रकार पुरान ऋषि पतंजलि क्रियायोग क दू बार चर्चा कइले हउअन। ऊ लिखले हउअन : "शारीरिक तप, मन क निग्रह अउर ओम् क ध्यान मिलके क्रियायोग बनेला।"

ध्यान में साफ-साफ सुनाई देवे वाला ओम् क ब्रह्मनाद के पतंजलि ईश्वर कहेलन। ओम् सृष्टिकर्ता शब्द ब्रह्म ह, ऊ स्पन्दनशील सृष्टि यन्त्र क गुंजन ह, अउर ईश्वर के अस्तित्व क साक्षी ह। योग क नया साधक भी जल्दिये ओम् क अद्भुत आवाज के सुन सकेला। एह परमानन्दमय आध्यात्मिक आवाज से वोह के पुरहर विश्वास हो जाला कि सूक्ष्म लोकन से वोकर सम्पर्क हो रहल बा।

पतंजलि दूसर बार फिर से क्रिया प्रविधि क भा प्राणायाम क चर्चा एह मतिन कइले हवं : "वोह प्राणायाम से मुक्ति पावल जा सकेले, जवन श्वाँस अउर प्रश्वाँस क गतिविच्छेद से निष्पन्न होला"

".....ईश्वर के साथ एकाकार भइले क शुरुआती अवस्था (सविकल्प समाधि) में साधक क चेतना परमतत्व में विलीन हो जाले, वोकर प्राणशक्ति शरीर से खीच जाले, अउर शरीर क हिलल-डुलल बन्द हो के कड़ा भा मुअले जइसन मालूम पड़े लगेले। योगी के मालूम रहेला कि वोकरे शरीर में चले वाली सगरो जीवन क्रिया वोह अवस्था में रूकल रहेलीं। बाकिर जइसे जइसे ऊ उन्नति कइ के ऊँच से ऊँच मतलब उच्चतर अवस्था (निर्विकल्प समाधि) में पहुँची, वइसे-वइसे देह के बिना हिलले-डुलले ही परमतत्व के साथ एकरूपता कइ लेला, इहवाँ ले कि साधारण चेतना के भी जब ऊ जाग रहल होला, संसार में अपने जिम्मेदारियन के निभावत के समय भी ऊ ईश्वर के संग जुड़ल रहेला।"

(किताब : 'भोजपुरी योगी कथामृत', लेखक- इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'लोकायत प्रकाशन'स लंका-वाराणसी के पृ.सं. ३०० से ३०३ के बीच)

O O O

घर के रसोई में खाये-पीये वाले सामान जइसे मिर्च-मसाला आ घर के आस-पास अइसन पेड़-पौधा होलन जवने में औषधीय गुण होले। बाकिर एह कुल्हिन के गुण-धर्म आ औषधीय उपयोगिता क जानकारी आम जन के ना होत जवने से ओकर इस्तेमाल कइ के अपने के निरोग ना रखि पवतन। एही सोच के साथ "घरेलू-नुस्खा" नामक किताब में घर के रसोई सामग्री अउर आमतौर से घर के आस-पास पाये जाये वाले पेड़-पौधन के औषधीय उपयोगिता क जानकारी दिहल गइल बा।

बीमारी के शुरुआत में गुण धरम के आधार पर एह चीजन क प्रयोग तुरन्त शुरु कई देवे

www.bhojpurisahityangan.com

के चाही। आराम न मिलले के हालात में योग्य चिकित्सक से सलाह लेइ के निरोगता पा लेवे के चाही। किताव में पचासन वस्तु के बारे में चर्चा बा। एकरे अलावा पीये वाला पानी के गुणवत्ता क जानकारी भी दिहल बा।

(किताव : 'घरेलू नुस्खा', लेखक- इं. राजेश्वर सिंह, प्रकाशक : 'लोकायत प्रकाशन', बी-२, सत्येन्द्र कुमार गुप्त नगर, लंका-वाराणसी-२२१००५)

एह वर्णित बारह किताबिन के अलावा जानकारी दिहलन कि ऊ एगो किताब "योगाचार्य प्रणवानन्द जी" जे भारत सेवाश्रम संघ क संस्थापक रहलन के जीवन-चरित्र के बारे में वर्ष २०२४ में लिख लिहले बाड़न। ई किताब अप्रकाशित बा एकर नाम रखले बाड़न-'रहनी-करनी योगाचार्य प्रणवानन्द जी'।

इ. राजेश्वर सिंह क लेखनी एह गवें शतत् चलत रहे अउर समाज के निम्मन-निम्मन ज्ञानवर्धक व जीवनोपयोगी रचना मिलत रहे। भगवान से निहोरा बा कि उनके सदा स्वस्थ्य अउर सानन्द रखें तथा लमहर जिनगी दें। जब तक जगत् में रहें लेखनी चलत रहे अउर हम सबके आशीर्वाद मिलत रहे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

३०

इं० राजेश्वर सिंह एवं सरलता, सहजता, अपनापन और धार्मिकता से जगमग उनका रचना संसार

-सुरेन्द्र कुमार सिंह 'चांस'

भोजपुरी और हिन्दी के प्रतिष्ठित और लोकप्रिय साहित्यकार इं० राजेश्वर सिंह का जन्म उ०प्र० में गोरखपुर जनपद के अन्तर्गत स्थित गाँव गोपालपुर, ब्लाक और तहसील गोला में ४ अप्रैल १९५० को हुआ था। इनके पिता स्व० समर बहादुर सिंह अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न किसान थे। माता स्व० परमजोता एक आदर्श और उदार स्वभाव की गृहणी थी। बचपन में वो कुशाग्र बुद्धि के थे और शिक्षा में उनकी रुचि थी, फलतः २३ साल की उम्र में ही उन्होंने इन्जीनियरिंग की उपाधि हासिल कर ली। बी.ई. (सिविल) की डिग्री हासिल करने के बाद इसी उम्र में ही उन्होंने उत्तर प्रदेश जल निगम में सेवा का योगदान किया और तरक्की करते हुए अधीक्षण अभियन्ता के पद तक पहुँचे और इसी पद से २०१० में सेवा से निवृत्त हुए। सेवा निवृत्त होने के बाद गोरखपुर में अपने परिवार के साथ रहते हुए साहित्य की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया। यद्यपि सेवा निवृत्त होने के बाद उन्होंने अपना कुछ समय बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार होने का दायित्व भी निभाया था।

मेरे एक परम मित्र और शुभचिंतक डॉ० मधुर नज्मी, उन्होंने ही पहली बार मुझे इन्जीनियर साहब से उनके कार्यालय में मिलवाया था। उन दिनों मैं अपनी वैचारिक अभियान की पत्रिका चांस का सम्पादन एवं प्रकाशन किया करता था। मैं सझता हूँ यह समय २००२ के अंत या २००३ की शुरुआत का था। मैं समझता हूँ ये वो समय था जब उनके अंदर का लेखक बाहर आने के लिए मचल रहा था। उनकी कहानियां और आलेख अखबारों एवं साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होना शुरु हो रहे थे। मेरी अपनी पत्रिका चांस में भी उनकी कहानियां प्रकाशित हुआ करती थीं। मुलाकातों के सिलसिले और बातचीत से मुझे उनके व्यक्तित्व को पढ़ने और समझने का अवसर मिला। उनके व्यक्तित्व के बारे में मेरा अपना आकलन ही मेरे और उनके बीच सम्बन्धों का आधार बन गया और मुलाकातों का सिलसिला जो उस दौर में शुरु हुआ था आज तक बरकरार है। वे जितने सरल थे उतने ही व्यवहारिक। उनकी सरलता और व्यावहारिकता ने उनकी प्रशासनिक क्षमता को बहुत बल दिया था। फलतः वे अपने स्टाफ में जितने लोकप्रिय थे उतने ही अनुशासित

www.bhojpurisahityangan.com

थे। उनके इस व्यक्तित्व का प्रभाव उनकी रचनाओं में सर्वत्र बिखरा हुआ है। उनके इस व्यक्तित्व का प्रभाव ही उनको अपने वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों का सहयोग प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता था। मूल रूप से उनके स्वभाव की सरलता उनके रचना संसार में बिखरी पड़ी है। वो समाज से जो कहना चाहते थे जो संदेश देना चाहते थे बहुत ही सरलता से उनके रचना संसार का हिस्सा बन जाया करता था। सरलता जीवन की तरह कहानियों में भी देखने को मिल जायेगी। कम लोग इस बात से सहमत होंगे की क्रांति भी सरलता का ही एक रूप है। सामाजिक अवधारणाओं को तोड़ने का दृष्टांत उनकी कहानियों में मिल जायेगा। सौतेली मां में बेटे को तब पता चलता है कि उसकी मां उसकी सौतेली मां है जब उसका विवाह होता है। मां से भी अधिक प्यार देती है सौतेली मां। कितनी सरलता से सौतेली मां की नकारात्मक अवधारणा को तोड़कर उसे पूजनीय बना देते हैं, राजेश्वर सिंह। सौतन भी इसी प्रकार की होती है, जिसमें पत्नी ही अपने पति को दूसरे विवाह के लिए प्रेरित करती है। सबसे बड़ी बात तो है कि नायक के दूसरे विवाह के सम्पन्न हो जाने के बाद भी दोनों पत्नियों के बीच प्रगाढ़ आत्मिक सम्बन्ध जीवन भर कायम रहा।

सरलता, सहजता, सहयोग, मृदुभाषिता और सबके भले की भालना उनके स्वभाव में थी। साहित्यिक, सामाजिक और धार्मिक आयोजनों में उनकी विशेष अभिरुचि थी। इस तरह के आयोजनो में वो शामिल भी होते थे और सहयोग भी करते थे। खुद भी इस तरह के आयोजन वो करवाया भी करते थे। जल निगम का उनका कार्यालय एक तरह से सामाजिक, साहित्यिक और धार्मिक आयोजनों का केन्द्र बन गया था। आजमगढ़ के बाहर के साहित्यकार भी उनके बुलावे पर उनके कार्यालय में आया करते थे। आजमगढ़ में लगभग सारे साहित्यकार उनके मुरीद हो गये थे। वो सबका सम्मान भी करते थे और सहयोग भी करते थे।

स्वभाव और अभिरूचियों के सम्मिलन से उनके अंदर एक अपने तरह के साहित्यकार का अभ्युदय हो रहा था। डॉ० मधुर नज्मी जो देश के जाने-माने गजलकार थे, वे राजेश्वर सिंह जी के अभिन्न मित्र थे उन्होंने देश भर की जानी-मानी पत्रिकाओं और साहित्यकारों से उनको जोड़ रखा था और उनका अपना प्रभाव भी लोगों पर पड़ने लगा था। फलत: उनकी कहानियाँ और आलेख देश की विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे थे। परिस्थितियाँ और उनकी लगनशीलता उनका उत्साहवर्धन कर रही थीं। इन सबके बावजूद ध्यातव्य हो कि वो अपनी प्रशानिक जिम्मेदारियों पर अपनी इन व्यस्तताओं का प्रभाव नहीं पड़ने देते थे। अपनी संस्थागत जिम्मेदारियों एवं दायित्वों के प्रति बेहद सतर्क और संवेदनशील थे। उनके पूरे कार्यकाल में जल निगम विभाग की कोई नकारात्मक या शिकायत संदर्भित समाचार किसी अखबार में कभी प्रकाशित नहीं हुआ था। एक और विशेषता थी, उनके अंदर कि वो समस्याओं और शिकायतों का तत्परता से निवारण कर दिया करते थे। शिकायत चाहे किसी आम आदमी की हो चाहे किसी जनप्रतिनिधि की निस्तारण

www.bhojpurisahityangan.com

के प्रति उनकी तत्परता समान रूप से थी। इतनी प्रशासनिक व्यस्तताओं के बीच भी वो लिखने के लिये समय निकाल लिया करते थे। फलत: उनकी पहली किताब साहित्य काव्यमुखी प्रकाशन से 'एक कहानी की आत्मकथा' के रूप में प्रकाशित हुयी। इस किताब की भूमिका डॉ० वशिष्ठ अनूप ने लिखी थी, जो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं। स्त्री और पुरुष के बीच शारीरिक सम्बन्ध पर आधारित यह कथानक, अपने समय के तथाकथित मानको से एक कदम आगे था।

आज जब स्त्री-पुरुष के बीच सम्बन्धों के खुलेपन को आधुनिकता का नाम दिया जा रहा है, तरक्की की तरह देखा जा रहा है। ऐसा कहने वाले अपने को भारतीय समाज में सेक्सुअल वर्जनाओं को तोड़ने की अपनी विशिष्टता का दावा पेश कर रहे हैं। राजेश्वर सिंह उनको आइना दिखाते हैं। सामाजिक यथार्थ और सच्ची घटना पर आधारित उनका कथानक इस बात का प्रमाण देता है कि भारतीय समाज वर्जनाओं को तोड़कर जीने वाला समाज है। जब महानगरों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में खुलेपन की चर्चा हो रही है। लिव-इन-रिलेशन को संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। इसे सभ्यता पर आक्रमण के रूप में निरूपित किया जा रहा है तब राजेश्वर सिंह अपनी किताब एक कहानी की आत्मकथा लेकर उपस्थित होते हैं और महानगरों से दूर गांव की एक कहानी के साथ जो स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की कथा सुनाते हैं। आज जिस भी नजरिये से देखें या इसे ये आप का अपना नजरिया है पर एक सामाजिक यथार्थ।

विषयों की विविधता और उनकी सीमाओं का एक दायरा होता है, एक विषय पर अनगिनत विचार आपको मिल सकते हैं, अनगिनत किताबें आपको मिल सकती हैं। इं० राजेश्वर सिंह की रचनायें उनके अपने स्वभाव की अनुकृति हैं। उनके अंदर सहयोग और कल्याण की भावना है जो मैं समझता हूँ उनकी यह भावना व्यक्त हुई है उनकी किताब 'जिनगी कट्ट दूबि हरियाइल' में, जो २००४ में प्रकाशित हुयी थी। इस किताब में उनकी बारह कहानियां हैं, पठनीयता इन कहानियों की विशिष्टता है पर केन्द्र में है सहयोग और कल्याण की भावना जो हर कहानी में संदेश के रूप में हमारे सामने आती है। वे सिर्फ संदेश ही नहीं देते हैं उनको व्यवहार में लाने का रास्ता भी सुझाते हैं ताकि आदमी उन सन्देशों को अपने जीवन के व्यवहार में उतार सके। कल्याण की युगति उनके निबन्धों का संग्रह है जो इसी निमित्त है। कहानियों के अन्दर कहानियाँ लिखते हैं, अपने सन्देशों को प्रभावी बनाने के उपक्रम में।

अपने को व्यक्त करने की धुनि ही साहित्यकार को मौलिक बनाती है और राजेश्वर सिंह जी इसी धुनि में हैं और आज भी हैं। समाज में, साहित्य में, धर्म में जहाँ भी कुछ अच्छा लगता है उन्हें समाज के हित में वहां ठहर कर वे उसे ग्रहण करते हैं और अपनी शब्द शैली में लोगों के सामने सरल रूप में प्रस्तुत करते हैं।

भारतीयता विविधता का संगम है और जो भी है सामने उसे स्वीकार कर लेने का जीवन

www.bhojpurisahityangan.com

दर्शन है। दुनिया के सारे धर्म उसका हिस्सा हैं, अंश हैं। राजेश्वर सिंह एक चैतन्य भारतीय नागरिक हैं। उनका सबमें विश्वास है, स्वीकार्यता उनके जीवन का व्यवहार है। उनकी एक किताब है, 'जिस्म से रूह तक रौशनी रौशनी'। सूफी संत 'शाह गोला दीवान' के आस्ताने को प्रतीक मानकर सूफी दर्शन पर लिखी गयी। उनकी यह किताब उनकी आस्था और विश्वास का प्रतीक है। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम डॉ० सूरजभान के उस आस्ताने पर आने की एक सूचना जिला प्रसाशन को एक बार मिली तो पता चला कि उस स्थान पर जाने का कोई रास्ता तो है ही नहीं। रास्ते का निर्माण आवश्यक था और समय बहुत कम था तो तत्कालीन जिलाधिकारी ने यह दायित्व व्यक्तिगत रूप से राजेश्वर सिंह को उनकी कार्य करवाने की क्षमता से आकृष्ट होकर दिया था और राजेश्वर सिंह जी ने सड़क निर्माण का काम दिन रात लग निर्धारित समय से पूर्व ही सम्पन्न करवा दिया था।

मजेदार बात तो ये थी कि कस्वे के लोगों ने भी दिन रात विभागीय कर्मचारियों को श्रम का सहयोग किया था। इस प्रशासनिक दायित्व के निर्वहन के सिलसिले में ही वो आस्ताने के सम्पर्क में आये और उसके मुरीद हो गये और इतनी गहराई से जुड़े की सूफिज्म पर एक पूरी किताब ही लिख दिये। यद्यपि इस किताब के लेखन में उन्हें उनके परम मित्र डॉ० मधुर नज्मी का भरपूर सहयोग और मार्गदर्शन भी मिला था। मैं जिस्म से रूह तक रौशनी रौशनी की बात कर रहा हूँ। इस किताब में उन्हें काफी लोकप्रियता प्रदान किया था और उसकी चर्चा भी खूब हुयी थी।

मुझे लगता है कि जीवन में इसी तरह की छोटी-छोटी घटनायें ही उनकी रचना के मूल आधार हैं। वे जीवन के आसपास घटती हुयी घटनाओं से गहराई से जुड़ते हैं और उसे ही अपने लेखन का आधार बना लेते हैं। इसलिए उनकी रचनायें कल्पना की उड़ान न होकर जीवन का सरल सा व्यहार सी दिखती है।

यही कारण है कि उनकी रचनाओं के सामने पठनीयता का संकट नहीं होता। कथ्य के प्रति पाठक की दिलचस्पी बनी रहती है। विषय कोई भी हो अगर आप उनकी किताब को पढ़ना शुरु करें तो एक बार में ही उनकी पूरी किताब पढ़ डालेंगें। कुछ आलोचक यह भी कहते हैं कि राजेश्वर सिंह जी की कहानियों में नदी, पहाड़, पेड़, झरना, पशु, पक्षी, प्रकृति तो हैं ही लेकिन राजेश्वर सिंह अपने अनुभव की सच्चाई को लोक संवेदना से जोड़कर अपनी रचनाओं को एक सरल और सहज परिवेश देते हैं और उसी के अनुरूप सरल भाषा का उपयोग करते हैं, यही कारण है कि उनकी रचनायें जीवन से जुड़ी रहती हैं। उनकी एक किताब है, जो कहानियों और निबन्धों का संग्रह है जिसका नाम है, 'पढ़ीं, समझीं, मनन करीं'। ये किताब पाठक को अपनी रचनाओं से जोड़ने और रचना के संदर्भ और संदेश को पाठक तक पहुंचाने का सफल प्रयोग है। ये उनका लेखकीय कौशल है कि वे इस तरह से अपने संदेश के इर्द-गिर्द कहानियां बुनते

www.bhojpurisahityangan.com

हैं कि पाठक की जिज्ञासा बनी रहती है।

सेवा निवृत्त होने से पहले इनकी १० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं थी। हिन्दी में एक कहानी की आत्मकथा, एक कहानी बीच में है, जिन्दगानी ये कैसी तेरी जिन्दगी, सुख जागे दुख भागे, जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी, श्रीराम महायज्ञ, गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ, नसीब अपना अपना और भोजपुरी में जिनगी कट्ट दूबि हरियाइल और कल्यान कट्ट जुगति। इनमें कुछ लम्बी कहानियाँ हैं जिन्हें लघु उपन्यास भी कहा जा सकता है। रोचक निबंध है, इनके अंदर विषयों की व्यापकता है। लेकिन सेवा निवृत्ति के बाद के कालखंड में जो उनकी रचनायें विभिन्न किताबों में प्रकाशित हुयी हैं उनका केन्द्रीय तत्व भारतीय संस्कृति है, धर्म है, अध्यात्म है। शायद वे इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मानव-कल्याण के सूत्र भारतीय संस्कृति में सन्निहित हैं। भारतीय मन का विश्वास और भारतीय समाज का व्यवहार भी यही रहा है। भारतीय समाज का व्यवहार भी इसी विशिष्टता पर आधारित है। जब-जब धर्म की तात्विकता जीवन के व्यवहार से जुड़ी है, सामाजिक परिवर्तन हुये हैं और जड़ता टूटी है। नयी परम्परायें स्थापित हुई हैं।

भारतीय संस्कृति के इस जैविक गुण के वशीभूत हो इं० राजेश्वर सिंह सभ्यता के अतीत पर नजर डालते हैं और भारत के लोकप्रिय महाग्रन्थों का अध्ययन करते है। उन्हें लगता है कि इन ग्रन्थों के सारतत्त्व का भोजपुरी भाषा में अभाव है। इसी अभाव की सम्पूर्ति करने में वे गहराई से जुड़े हुए हैं। भोजपुरी रामायण, भोजपुरी महाभारत इसी अभाव की सम्पूर्ति में प्रकाशित पुस्तकें हैं। एक सिलसिला है भोजपुरी रचनाओं का सेवा निवृत्ति के बाद, लोकप्रिय ग्रन्थ ही नहीं लोकप्रिय आध्यात्मिक संस्थानों, सन्त-महात्माओं के जीवन के संदेश और उनके ग्रन्थों तक राजेश्वर सिंह की नजर जाती है वे उसे आत्मसात करते हैं और भोजपुरी भाषा में उनका प्रतिपादन करते हैं। गोरखपुर की साहित्यिक भोजपुरी संस्था भोजपुरी संगम को अविस्मरणीय एवं अभूतपूर्व योगदान देते हैं। भोजपुरी भाषा में लिखा गया उनका ग्रन्थ, भोजपुरी योगी कथामृत उनके रचना संसार का अद्भुत ग्रन्थ है। पूज्यपाद परमहंस योगानन्द जी महाराज के जीवन और उनके संदेशों पर आधारित यह ग्रन्थ भोजपुरी साहित्य में मील का पत्थर है इससे उनकी ख्याति देश की सीमाओं से बाहर वहां-वहां तक पहुंची है जहाँ-जहाँ पूज्य महाराज के शिष्य रहते हैं और उनके संदेशों का प्रचार एवं प्रसार करते हैं। इस किताब पर तो एक किताब लिखी जा सकती है।

आज का मानव समाज अभूतपूर्व संकट के दौर से गुजर रहा है। धर्म, अधर्म, राजनीति और अपराध के बीच पहचान का संकट है। साहित्यकार संकट के समाधान के अपने स्वाभाविक दायित्व से विमुख होकर खुद सवाल उठाने, तरह-तरह के विमर्श खड़े करने में मशगूल हैं। प्रतिरोध साहित्य की मुख्य धारा बनती जा रही है। मुमकिन है उत्तर देने की कोई जमात उनके सपने में हो, मुमकिन है ये सपना राजनैतिक हो। जो भी हो मानव समाज संकट से और सवालों से घिरता जा रहा है। आकाश से एक देश दूसरे देश की जमीन पर विध्वंसक, बारूदी हथियारों से

www.bhojpurisahityangan.com

आग की तरह बारिस कर रहे हैं। राज व्यवस्थायें हार जीत की गणित में उलझकर अपने अस्तित्व की उपयोगिता के लिए सम्मोहक आईडियाज का मिडिया के माध्यम से प्रचार कर रही है। ऐसे समय में मानव-समाज के कल्याण के लिये भारतीय मन में सदियों से अवस्थित भारतीय संस्कृति में विश्वास कि हमारी मानव सभ्यता आधुनिक समय में आधुनिक रूप में समाज का भला करेगी कि तरफ सांकेतिक रूप से इं० राजेश्वर सिंह इशारा करते हैं। मैं तो व्यक्तिगत रूप से इस विश्वास का आदमी हूँ कि दुनिया इसलिए अभूतपूर्व संकट से घिर गयी है कि हमारे जीवन का व्यवहार हमारी सभ्यता से दूर चला गया है।

ऐसे में आदरणीय राजेश्वर सिंह का भोजपुरी भाषा में लिखा गया साहित्य हमें हमारी और हमारी संस्कृति की याद दिलाता है और हमें आश्वस्त भी करता है कि हम अपनी संस्कृति को अपने जीवन के व्यवहार में लाकर न सिर्फ खुद को संकट से उबार सकते हैं बल्कि पूरी मानव-सभ्यता को उस अभूतपूर्व संकट से बाहर निकालने की दिशा प्रदान कर सकते हैं जो हमारी सभ्यता का अभिष्ट भी है। तो बहुत बहुत धन्यवाद आदरणीय राजेश्वर सिंह जी को उनके इस अवदान के लिये। साहित्य को जीवन में और अपनी सनातन संस्कृति से जोड़ने के लिये।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

४

आत्मवृत्त-खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

३१

आपन राम कहानी

-इं. राजेश्वर सिंह

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम क जन्म स्थली तीर्थ शिरोमणि अयोध्यानगरी के स्पर्श करत निरन्तर बहे वाली परम पवित्र सरयू नदी के तट से दू किलोमीटर के दूरी पर उत्तर दिशा में अयोध्या के जनकपुर से जोड़े वाली श्रीराम-जानकी मार्ग पर बसल रियासती गाँव गोपालपुर, जनपद गोरखपुर (उ०प्र०) के तहसील मुख्यालय गोला बाजार से चार किलोमीटर के दूरी पर स्थित ह। गोपालपुर के पूरब में ग्राम देवकली ह। एह दूनो गाँव क मिलल-जुलल आबादी के कारन दूनों गाँव क स्वरूप एक जइसन लगेला। सुदूर के लोग एह गाँव के भी गोपालपुर के रूप में ही जानेलन अउर पुकारेलन। गाँव देवकली के उत्तर में बरजिता नाम क एगो मनोरम तालाब भी हउए, जवने के क्षेत्रफल लगभग इक्कीस एकड़ हउए। एह गाँव में पूर्बी उत्तर प्रदेश में रहे वाले लगभग हर जाति को लोग बसल हउअन। एही गाँव में बाबू समर बहादुर सिंह रहलन जेके गाँव के बासिन्दा लोग आदर से बबुआजी कहत रहलन। बबुआजी अपने उदारता, सहृदयता, सज्जनता अउर नेक नियती के कारन लोगन में भरपूर सम्मान पावत रहलन।

देश के अंग्रेजन से आजादी मिलले के बाद सन् १९५० में चार अप्रैल के बबुआजी के घर दू लइकनी के बाद एगो बेटवा पइदा भइल। गाँव में खुशी क लहर दौड़ पड़ल। प्रियजन आ-आ के बधाई देवे लगलन। मेहरारुन के सोहर गवले क ताता लग गइल। बेटवा क समय-समय पर हिन्दू रीति-रिवाज से निम्मन संस्कार बदे उत्सव मनावल जाये लागल। लइका क नाम धराइल राजेश्वर सिंह, जवने नाम से हम आज भी जानल जात हयीं।

अनिवार्य शिक्षा दिअइले के सरकारी जोजना के अन्तर्गत गांव में दू गो प्राइमरी विद्यालय चलत रहलन। हमार बेसिक प्राइमरी अनिवार्य पाठशाला नं० २ जवन गाँव के पश्चिमी छोर पर रहे वोह में लिखाइल। कक्षा पाँच तक क शिक्षा गाँव पर पूर भइले के बाद उदय प्रताप कालेज, वाराणसी में आगे के पढ़ाई खातिर जाये के पड़ल। कारण कि उदय प्रताप कालेज से हमरे चाचा बाबू धनवंत सिंह क घर लगभग एक किलोमीटर दूर भोजूबीर चौराहा पर ही रहल। चाचाजी रेलवे में सेवारत रहलन।

उदय प्रताप कालेज में कक्षा ६ क पढ़ाई पूरा भइल। सातवीं कक्षा में कुछ महीना पढ़ाई

www.bhojpurisahityangan.com

भइले के बाद माह दिसम्बर में छ:माही परीक्षा शुरू भइल रहल। दुईये प्रश्नपत्र क परीक्षा हो पवले रहल कि महतारी के मौत सूचना तार से बनारस चाचा के लग्गे पहुँच गइल। दू-तीन घण्टा के बीमारी में महतारी स्वर्ग सिधार गइल रहली। पूरा परिवार सदमा में पड़ गइल। सूचना पर विश्वास ना होत रहल। वोह समय दूरभाष, मोबाइल फोन क सुविधा ना रहल। सूचना क पुष्टि क अउर कउनो तरीका ना रहल। अगिले दिन भोरे मिले वाली पहिली रेलगाड़ी से पूरे परिवार क लोग चलि पड़लन। बस से गोरखपुर अइले क सुविधा वोह समय रहल ना। रेलगाड़ी भी गिनल-चुनल एक्के-दू रहली। गाँव आये बदे रेलगाड़ी से इन्दारा जंक्शन आइ के बदले के पड़े, फिर दोहरीघाट खातिर काफी समय बाद गाड़ी मिलल। शाम चार बजे दोहरीघाट पहुँचले पर स्टीमर से घाघरा नदी पार कईके बड़हलगंज सब आइल। बड़े मुश्किल से इक्का गांव गोपालपुर आये खातिर तइयार भइल। मुंहमांगा किराया देइ के बड़हलगंज से बीस किलोमीटर दूर कंकड़ वाला कच्चा रास्ता में हिल्लत-डूलत गाँव के सिवाने आठ बजे रात ले इक्का पहुँचल। अन्हरिया रात, सन्नाटा छवले, सड़क पर कउनो मनई ना लउकल। चाचा जी थोड़ी दूर मकान देखि के आवाज लगवलन-"केहू बा हो !" मकान से एगो मनई बाहर निकल के लग्गे अवते पहिचानत सलाम ठोकलस। चाचा जी पूछि पड़लन-"हमरे घरे क का हाल ह ?" ऊ गम्भीरात कहंलन-"बड़की चाची ना रहि गइली। ऊ काल्हि गुजर गइली। आज लाश फुंका गइल।"

ऊ मनई इक्का से सामान उतार के कपारे पर धइलस अउर गोड़े-गोड़े घर पहुँचवलस। दुआरे पर पहुँचते कोहराम मचि गइल। स्वजन के पा के सब भोंकार मारि के रोअे लागल। पास पड़ोस क लोग भी रहलन। कउनो तरह सब चुपाइल।

श्राद्ध आदि सगरो क्रिया-कर्म पूरा भइले के बाद चाचाजी हम सबके साथ लेइ के बनारस लवटि अइलन। पढ़वइया लइकन के सालाना परीक्षा तक उहाँ रहल जरूरी रहल। सालाना परीक्षा के बाद चाचा के छोड़ के सबके गोपालपुर में रहले क जोजना बनि गइल रहल। चाचाजी के नौकरी के चलते बनारस रहही के रहल।

कक्षा आठ के पढ़ाई खातिर लगभग पांच कि०मी० दूर गोला में स्थित वी.यस.ए.वी. इन्टर कालेज में दाखिला भइल। गाँव से कई लइके वोह कालेज में पढ़ें जायँ। एह से तीन-चार लइकन क टोली बनाके बोलत-बतियावत सब आगे-पीछे चलत जाय। एही तरह टोली बना के सब सांझ के लवटे। हमरे कक्षा क क्लास टीचर रहलन श्री नेमधर्म पाण्डेय जी। वोह समय हम कद-काठी से छोटहन भइले के नाते कक्षा में अक्सर आगे बइठे के पड़े। हाजिरी लेत क जब पीछे से आवाज हमार आवे त क्लास टीचर पाण्डेयजी बुला के अगली पंक्ति में बेंच पर जगह दिया के बइठावें। कल्ले-कल्ले छ:माही परीक्षा गुजरल फिर सालाना भी आइ गइल, ओकरे बाद गर्मी क छुट्टी हो गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

मई माह के आखिरी सप्ताह में गोपालपुर में ही एगो तिवारी जी के लइकी के वियाहे क दिन तय हो गइल। वियाह गोला से पूरब ग्राम परसिया में तय रहल। बारात में हमरे बड़े भाई वकील साहब जे बासगाँव में वकालत करत रहलन, उनकर एगो संघतिया मिश्राजी पेशगार भी आवे के रहलन। मिश्राजी लड़के वालन क पट्टीदार रहलन। मिश्राजी हमरे भाई साहब से बरात में शामिल होखे बदे गोपालपुर अइले क जानकारी दिहलन। साथे-साथे मजाक में कहलन-"ए वकील साहब ! रउरे जनते बाड़िन कि बभने क बनावल बभने खालन की त बैले खालन। वइसे हमहन के त आदत बा बाकिर रउरे गाँव में आइ के हमनी क कुछ अउर खाइल चाहत हयीं।" वकील साहब स्वभाव से मेहमानन क स्वागत-सत्कार में विशेष रुचि राखत रहलन। ऊ मिश्राजी से कहि उठलन-"रउरे लोगन क गाँव में आइल हमरे सौभाग्य क बात ह। अपने साथे अउर केहू खास लोग होखें त बता दिहल जाई, हम अपने घर अलग से सब कर व्यवस्था करा देब।"

वियाहे क दिन आइ गइल। वकील साहब चौदह-पन्द्रह लोगन के भोजन बदे व्यवस्था का निर्देश दे दिहलन। समय से भोजन तइयार हो गइल। मिश्राजी संकेत दिहले रहलन कि द्वार-पूजा के बाद ही हमहन के खा-पी के अपने गाँव लवटि आइब। दुआरा पर तीन गो तखत पर सफेद चादर बिछा के चारो ओर कुर्सी लगा के मेहमानन क प्रतीक्षा होखे लागल। द्वारपूजा लगभग आठ बजे समाप्त हो गइल। मिश्राजी अउर उनके कुछ साथी हमरे दरवाजा पर बड़े भइया के साथ आइ गइलन। भइया वोह लोगन के कुर्सी पर बइठे के इशारा कइके साथ-साथ खाना परोसले क इसारा कइ दिहलन। खाना परोसवइया में सबसे पहिले हाथ में कुछ सामान लेइ के घर के अन्दर से हम बाहर निकललीं, संजोग से मेहमानन में हमार क्लास टीचर नेम धर्म पाण्डेय जी दरवाजा के ठीक सामने के कुर्सी पर बइठल रहलन। उनकर नजर हमरे पर जइसहीं पड़ल, अचके बोल पड़लन-"अरे राजेश्वर तूँ !" हमरे भइया क ध्यान पाण्डेय जी के ओर गइल ऊ कहे लगलन-"मास्टर साहब ! ई हमार भाई ह।" पाण्डेय जी कहलन-"ई कब्बो हमके बतवलस ना कि आप क भाई ह, इहे त क्लास में प्रथम आइल ह, टाप कइलस ह।" ई सुनते वकील साहब गदगद हो गइलन। एगो दूसर मास्टर शाही जी भी वोह लोगन में रहलन कहे लगलन-"सालाना परीक्षा होत के समय हम कमरा में निगरानी करत रहलीं, त ई लइका कई बार एक्स्ट्रा कापी मांग-मांग के लिखलस, त वोह घड़ी हम सोचे लगलीं कि अउर लइके एक्स्ट्रा कापी ना मांगत हउअन, ई एतना छोट लइका का लिखत होई ?" वार्षिक परीक्षा क नतीजा घोषित भइले में अबहिन तीन दिन बाकी रहल। हमार नतीजा वोही दिन निकल गइल रहे। हमरे खुसी क ठिकाना ना रहल। भाई साहब भी बहुते खुस भइल रहलन। उनकर खुशी क इजहार अगिले दिन जाहिर भइल जब ऊ कइ लोग के बीच साबासी देत हमके स्कूल जाये खातिर एगो साइकिल दिहले क घोषणा कइलन। फिर हम नवीं कक्षा क पढ़ाई करे साइकिल से जाये-आवे लगलीं।

वर्ष १९६६ में हम हाई स्कूल विज्ञान के छात्र के रूप में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कइलीं।

www.bhojpurisahityangan.com

गोला इन्टरमीडिएट कालेज में विज्ञान क पढ़ाई क सुविधा इण्टरमीडिएट में ना रहले के कारण हमके डी०बी० इण्टर कालेज गोरखपुर में दाखिला लेवे के पड़ल। इन्टर के बाद बी.एस.सी क पढ़ाई पढ़े लगलीं। वोह समय गोरखपुर शहर में मुहल्ला अहलदादपुर में अपने चाचा बाबू छंगे सिंह के साथ रहत रहलीं।

एक दिन चाचा बाबू छंगे सिंह अलहदादपुर के घर से पैदले केहू से मिले जगन्नाथपुर मुहल्ला में एगो गली से गुजरत रहलन। वोही गली में हमहन क एगो पट्टीदार डा० रघुनाथ चन्द जे दिग्विजयनाथ डिग्री कालेज में आचार्य रहलन, रहत रहलन। ऊ आवास में बाहर के बरामदा में बइठल पड़ोसी तिवारी जी से बतियावत रहलन। उनकर नजर चाचा पर पड़ि गइल। ऊ इनके काका कहत रहलन। बोल पड़लन-"ए काका, कहाँ गोड़ उठल बा ! तनी हमनियों के आशीर्वाद दिहले जाईं।" चाचा ठमक गइलन अउर उनकर निहोरा नकार ना पवलन। उनके बरामदा में चढ़ि के कुर्सी पर बइठ गइलन। हाल-चाल बतियावत डा० रघुनाथ चन्द पूछि पड़लन-"काका ! ई बताव बड़का काका क लइका राजेश्वर का करत हवं।" चाचा कहलन-"बी.एस.सी. में पढ़त हवं।" डा० रघुनाथ चन्द कहलन-"उनके इन्जिनियरिंग काहें ना करा देत हउअ ?" चाचा कहलन-"वोह में कइसे नाम लिखाई ?" डा० चन्द कहलन-"भला बाट ! अरे ई तिवारी जी कउने दिन काम अइहें। ई इन्जिनियरिंग कालेज में एडमीनिस्ट्रेटिव अफसर हउअन।" डा० चन्द तिवारी जी के ओर मुखातिब होइ के कहलन-"बतायीं तिवारी जी !" तिवारी जी कहलन-"देखीं, बाबू साहब, फीजिक्स, कमेस्ट्री अउर मैथेमेटिक्स क अंक जोड़ि के मेरिट लिस्ट बनेले। अधिक अंक वाले ऊपर रहेलन। ऊपर से लइके बुलावल जाला, जदि ना अइतन त नीचे वाले बुलावल जालन। रउरे पहिले फार्म भरवा के कालेज में जमा कराईं, फिर देखल जाई।"

संजोग क बात रहे कि ऊँच मेरिट वाले कुछ लइके प्रवेश लेवे ना आइलन, त बाद वालन के बुलावे के पड़ि गइल। हमरो पुकार भइल, प्रवेश मिल गइल। गो कि कक्षा में एक महीना पहिलहीं पढ़ाई शुरु हो गइल रहे, बाकिर सहपाठिन के सहयोग से पिछड़ल काम भा पढ़ाई पूरा कइसो-कइसो पहिला समेस्टर क समय पूरा होत-होत हो गइल। दूसरका समेस्टर पूरा भइले के साथ इन्जीनियरिंग क पहिला साल क पढ़ाई पूरा मानल जाले, हम पहिला साल के बाद कक्षा में सगरो विद्यार्थियन में अंक के आधार पर चौथा स्थान पा गइलीं। नतीजा भइल कि दूसरे साल के पढ़ाई में शिक्षा शुल्क माफ भइले के साथे साथ वजीफा भी कालेज से मिले लागल जवने से परिवार पर आर्थिक बोझा हल्लुक हो गइल। दूसरे साल के बाद कक्षा में तीसरा अउर तीसरा बरिस के पढ़ाई के बाद दूसरका स्थान पा गइले से तीसरे अउर चौथे बरिस के पढ़ाई में भी शिक्षा शुल्क माफी अउर वजीफा क क्रम जारी रहल। एह मतिन प्रभु के कृपा से कालेज से सहायता मिल गइले से इन्जीनियरिंग क पढ़ाई आसानी से पूरा हो गइल रहल।

चौथे बरिस क पढ़ाई हमनी के पढ़त के समय समाज में सिविल इन्जीनियर क मांग बढ़

www.bhojpurisahityangan.com

गइल रहे। डिग्री पवते सगरो विद्यार्थी सरकारी नौकरी पकड़ लें। शिक्षण संस्थानन में अध्यापक क कमी होखे लागल। एहसे इन्जीनियरिंग कालेज व डिप्लोमा पढ़ावे वाले पालीटेकनिक कालेज इन्जीनियरिंग कालेज के अन्तिम वर्ष मतलब चौथे बरिस के होनहार पढ़वइया लइकन पर नजर रखे लगलन अउर चौथे बरिस क नतीजा घोषित भइले से पहिलहीं उनके अपने इहवां नौकरी दिहले क जुगति के लग गइलन। हमरहू कालेज में सहायक लेक्चरर के रिक्त पद क विज्ञापन जारी कइ दिहल गइल अउर औपचारिक मौखिक परीक्षा तिथि चतुर्थ वर्ष के नतीजा निकलले के तिथि के आस-पास रखा गइल। कालेज के एगो अध्यापक द्वारा उकसा के हमहूँ के सहायक लेक्चरर पद हेतु आवेदन करा दिहल गइल। मौखिक परीक्षा में चुनाव हो गइले के साथे-साथ एक ही दिन बाद अन्तिम बरिस क नतीजा भी आ गइल। फिरो इन्जीनियरिंग कालेज में नौकरी ग्रहण कइ के अपने घर आई के परिवारजन के खुशखबरी सुनवलीं।

हमरे साथ क सगरो लइके कउनो न कउनो सरकारी नौकरी में घुस गइल रहलन। देखा-देखी हमरो मन सरकारी नौकरी कइले खातिर ललच गइल। कुछे दिन बाद एल.एस.जी.ई.डी. (वर्तमान में उ०प्र० जल निगम) में सहायक अभियन्ता के पद क नियुक्ति-पत्र मिलल। हमहूँ एल.एस.जी.ई.डी. चलि गइलीं। एही एल.एस.जी.ई.डी. के बाद में उ० प्र० सरकार द्वारा उ० प्र० जल निगम के रूप में बदल दिहल गइल अउर समस्त कर्मचारी-अधिकारी उ०प्र० जल निगम क हिस्सा बन गइलन। विभाग में सहायक अभियन्ता, अधिशासी अभियन्ता व अधीक्षण अभियन्ता के पद क जिम्मेदारियन के निभावत हम ३० अप्रैल २०१० के निगम के सेवा से निवृत्त हो गइलीं।

हमरे पूज्य पिताजी जे के हम बाबूजी कहत रहलीं गाँव पर रहि के पुस्तैनी जमीन-जायदाद क देखा-भाली करत रहलन। गाँव छोड़ के, एक्को दिन खातिर बाहर रहल उनके नीक ना लागत रहे। बाबूजी तीन भाई रहलन। मिलल-जुलल परिवार भइले के नाते गाँव पर रहे वाले सदस्यन क कमी ना रहे। होली, दसहरा, दीवाली अउर गर्मी के दिन में स्कूलन में छुट्टी भइले पर बाहर रहे वाले सदस्य भी गाँव आइके छुट्टि मनावल करें। हमार लइके भी एह छुट्टियन में गाँव आ जाइल करें। नौकरी के सिलसिला में हमार बहराइच जिला में तैनाती रहल। पीये वाले पानी के विभाग में नौकरी कइले के कारन अक्सर गर्मी के दिनन में छुट्टी ना मिलत रहे, जवने से हमके ड्यूटी पर अकेले रहे के पड़त रहे। वर्ष १९८० से ८८ के बीच जनपद बहराइच में हम रहलीं। स्कूलन में गर्मी के छुट्टी अउर दसहरा से दीपावली तक के छुट्टी के समय में लइकन के गाँव चलि गइले से हमके अकेल रहे के पड़े। विभागीय सेवा से पहिले अउर बाद के समय में घर में अकेल रहले के कारन उपन्यास अउर कहानिन के पढ़ के समय गुजारल करीं। किताबिन के पढ़ले के समय अचके हमरे मन में एक दिन सवाल उठल कि का हम अइसन कहानी ना लिख सकतीं ?

www.bhojpurisahityangan.com

छात्र-जीवन में हिन्दी विषय के परीक्षा में सबसे कम प्राप्तांक मिलल सोच के मन में लिखले के क्षमता के प्रति शंका भी हो उठल। फिर सोचलीं कि कवन अपने लिखल लेख के केहू के देखावे के बा। चल ! कुछ लिखले क कोसिस कइल जाय। फिर हम अपने पड़ोसी गाँव क दू-एक लोगन के जिनगी क कुछ खास जिज्ञासा भरल घटना सुनले रहलीं हम अपने टूटल-फूटल भासा में वोके लिखल शुरू कइ दिहलीं। कल्ले-कल्ले तीन-चार छोट-बड़ कहानिन के लिख डरलीं। बाकिर इनहन के केहू के देखवलीं ना। कब्बो-कब्बो "स्वान्तः सुखाय" इनहन के पढ़ लेत रहलीं। स्थानान्तरण के समय ऊ सब बण्डलन के बीच बन्हा के रखा गइल। सरकारी नौकरी में हर स्थानान्तरण के बाद कागजात क एगो बण्डल अउर जुड़ल स्वाभाविक होला। एहसे लिखल सामान क बण्डल याद से बिछुड़ि गइल मतलब भुला गइल। भुलइले क एक कारण इहो रहे कि कुछ कम प्रयोग में आये वाले भा अतिरिक्त सामान के साथ ए बण्डलन के गाँव के मकान में ले जाइ के रख दिहल गइल रहल। लगभग सत्तरह-अट्ठारह साल के बाद एह बण्डलन पर नजर पड़ल। हिफाजत के नजरिया से एह सब के मकान के छत पर धूप में फैला के रखाइल। मजदूरन के लापरवाही से बण्डल खुल गइलन अउर हवा के झोंकन से कागजात बिखरे लगलन। छत पर जा के हम कागजातन के सम्हारे लगलीं। वोही समय कहानिन पर नजर पड़ल। उनहन के सम्हारि के आजमगढ़ अपने तैनाती के जगह ले अइलीं अउर जेराक्स करा के तरतीब से कइ के डेरा पर ले अइलीं। जेराक्स प्रति कुल्ही एगो मेज पर राखल रहल।

अचके एक दिन पूर्वांचल क मशहूर साहित्यकार कवि-शाइर डॉ० मधुर नज़्मी साहब डेरा पर अइलन। बतकही के दौरान उनकर नजर एह कागजातन पर पड़ल अउर ऊ बोके उठा के निरेखे लगलन। कुछ अंस पढ़ के पूछि पड़लन कि एहके के लिखले ह ? सकुचात हम बोल पड़लीं-"नज्मी साहब, हमहीं लिखलें हयीं।" सुनते ऊ हँस पड़लन अउर कहे लगलन कि आप जवने के बेकार समझि के घर के कोना में डार दिहले हयीं, ऊ बहुते उपयोगी चीज हउअन। एके लोगन के बीचे जाये के चाही। समाज में पर्दा के पीछे का हो रहल बा, लोगन के जाने के चाही। फिरो डॉ० मधुर नज्मी साहब सामग्री अपने संघरी ले गइलन अउर पुरहर पढ़ि के पुस्तकीय रूप दिहले में जुट गइलन। इनही के मेहनत अउर सहयोग व हौसला बढ़वले क नतीजा ह कि पुस्तक सामने अइले क क्रम बनल। लइकई क हमार संघतिया जयनाथ यादव जी अपने प्रेस क सेवा के दे के किताब के छपाई क काम आसान कइ दिहलन। एक-प-एक किताब लिखात गइली अऊर छपत गइली।

जनपद आजमगढ़ में अधिशासी अभियन्ता के पद पर कार्य करत के समय कुछ अउर स्थानीय साहित्यकार से मुलाकात भइल। ऊ लोग भी हमरे लेखन क सराहना कइल अउर उत्साहित कइ के जियादा लिखे के मन बढ़वलन। कल्ले-कल्ले कहानी संग्रह अउर लघु उपन्यास किसिम क आठ गो किताब लिखा के छपा गइल। एही बीच एक दिन मन में आइल कि हमनी के गाँव-

www.bhojpurisahityangan.com

गवई क भाषा भोजपुरी क कउनो साहित्य पढ़े के ना मिलत बा, काहें न भोजपुरी में लिखले क कोशिस करीं। एगो कहानी लिख के देखवलीं। साहित्यकार बन्धु लोग प्रतिक्रिया जाहिर करत कहलन कि "रउरे त भोजपुरी में भी बड़ा नींक लिखत बानी। एहू में लिखल करीं।" छोट-छोट कइगो कहानी लिखाइल जवने के, इकट्ठा कइ के भोजपुरी क पहिला किताब छपल-"जिनगी का दूबि हरियाइल"। फिर त भोजपुरी लेखन क भी सिलसिला चल पड़ल, नतीजा भइल भोजपुरी में भी तेरह किताब लिखा गइली अउर बारहगो प्रकाशित हो गइली। तेरहवीं किताब भोजपुरी रहनी करनी योगाचार्य प्रणवानन्द के प्रकाशन में बा। कई संस्थाअन से प्रकाशित किताबिन पर सम्मान भी मिल गइल बा।" भोजपुरी भाषा साहित्य क सेवा कइ तरह से हो रहल बा। समाजोपयोगी सद्साहित्य पर्ची पर छपवा के जन-जन में बाँटल, भोजपुरी के प्रति श्रद्धा व प्रेम रखवइया लोगन के भोजपुरी साहित्य लिखे बदे उकसावल अउर मासिक बइठकी करा के साहित्य समीक्षा करा के साहित्य के स्तर के सुधारल व ऊँचा उठावल आदि निरन्तर जारी राखल जा रहल बा।

बहराइच में तैनीती के समय उत्तर प्रदेश जल निगम क खण्ड कार्यालय फैजाबाद (अयोध्या) में रहल जवने से हम जुड़ल रहलीं। खण्ड कार्यालय के अधिशासी अभियन्ता से परामर्श भा जरूरी आदेश पावे बदे हमके फैजाबाद अक्सर जाये के पड़े। रात के रूकहू के पड़े। राम जन्म भूमि के पीछे दूराही कुआँ के पास मन्दिर में हमार बहिन-बहनोई क परिवार रहत रहे, हम वोह लोगन के संघरी ठहर जाइल करीं। एक बार बतकही के दरम्यान हम अपने बहनोई श्री आदित्य प्रकाश शाही से कहलीं कि अयोध्या नामी-गिरामी हम हिन्दुअन क तीर्थ स्थान ह, का सिद्ध सन्त, महात्मा इहवां हउअन ? शाही जी कहलन-काँहे नाहीं ? बिहाने एगो महात्मा जी जे बिरला धर्मशाला में रहेलन आपके मिला देत हयीं। उहवें से बहराइच लवटले खातिर बस भी मिल जाई। शाही जी अक्सर उहवाँ जाइल करें। वोह महात्मा से प्रभावित हो के गुरु-दीक्षा भी ले चुकल रहलन। रास्ते में ऊ एगो फूल क माला खरीदलन। हमें एहसास भइल कि ऊ माला महात्माजी के सम्मान करे बदे लिहलन ह। हमहूँ एगो माला खरीद लिहलीं। दूनो जनी बिरला धर्मशाला में घुसलीं। हम त पहिली बार गइल रहलीं। एहसे ऊ आगे-आगे अउर हम शाही जी के पीछे-पीछे रहलीं। शाही जी एगो कमरा के सामने जाइ के ठमक गइलन। अन्दर तख्त पर आसनी पर बइठल सन्त-महात्मा क नजर इनके पर पड़ल। ऊ कमरा के अन्दर घुसे बदे इसारा कइलन। शाही जी उनके गला में माला पहिना के साष्टांग प्रणाम कइलन। जइसे ही ऊ उठ के किनारे भइलन हमहूँ आगे बढ़ि के महात्माजी के गला में अपने हाथे क माला डारि दिहलीं अउर प्रणाम कइलीं। महात्मा जी अपने गटई में पहिनल माला निकाल के हमरे गटई में डारत बोललन-"बइठट्ट।" फिर शाही जी से पूछ पड़लन-"यह कौन है ?" शाही जी बता दिहलन-"रिश्तेदार हैं। इनको दर्शन की लालसा थी। साथ लियवा लाये।" महात्मा जी कुछ प्रसाद दिहलें अउर थोड़ी देर बइठ के हम लोग लौट अइलीं। कमरा से बाहर अवते शाही जी बोल परलें-"भाई साहब ! लगता है आपका और इनका

www.bhojpurisahityangan.com

लम्बा साथ है।" हम बोललीं-"शाही जी, हम आपके कहले क मतलब समझत ना हयीं।"

शाही जी फिर कहे लगलन-"बाबा जी, अपने गले से निकाल के माला किसी को नहीं पहिनाते हैं। लग रहा है आप लोगों का पूर्व जन्म का साथ हो।" शाही जी हमरे दिमाग में एगो सवाल डाल दिहलन। हाँ, हमहूँ ई महसूस कइलीं कि एह छोटहन मुलाकात से हमरे में श्रद्धा महात्मा जी के प्रति हो उठल रहे। अब हम जब्बे अयोध्या जाईं बिनु उनके दर्शन के ना लवटीं। महात्मा जी बंगाल क मूलत: रहलन एहसे बंगाली बाबा के नाम सेही जानल जात रहलन। हमार श्रद्धा बढ़त जात रहल। बाबाजी साल में दू-तीन आयोजन करावत रहलन। हम ओह में विभागीय काम से छुट्टी ले के सामिल होखे लगलीं। कल्ले-कल्ले दू-तीन साल गुजर गइल।

हमरे गाँव गोपालपुर में एगो नया मकान बनल। परिवार के सबकर इच्छा भइल कि बाबाजी से निहोरा कइल जाय कि एक बेर चल के आपन गोड़ मकान में डार दें त मकान पवित्र हो जाई फिर हमनी के रहल जाई। हम शाही जी के संग बाबाजी के लग्गे जाई के हाथ जोड़ के निहोरा कइलीं। बाबा जी सहमति जाहिर करत कहलन-"बाबा चलेगा। हाँ, एक बात है कि गाँव पर जितना समय रहेगा नाम संकीर्तन होते रहना चाहिए। कार्यक्रम तयकर बताओगे।"

बाबा क आदेश पाइ के हमनी के लवटि के कार्यक्रम बनवलीं। गृह-प्रवेश के साथे-साथे हमरे भतीजा वब्बन बाबू के शादी के तिलक कार्यक्रम क भी जोजना बन गइल रहल। गाँव में कीर्तनकारी लोगन क अच्छा टोली रहल। एहसे चौबीस घंटा क लगातार संकीर्तन भी रखाइल। बाबा जी नियत समय पर शाही जी के संग पधरलन। कार्यक्रम धूम-धाम से सम्पन्न भइल। संकीर्तन में रामजी सोनार उर्फ तन्ने के गायन से बाबा विशेष प्रभावित भइलन, अउर बोलवा के पीठ ठोंक के आशीर्वाद देत कहलन-"जब भी गुरुधाम-अयोध्या में कार्यक्रम होगा, तुम अपनी टोली लेकर आओगे।" ई समय रहल वर्ष १९८७ के गर्मी क दिन तब से गोपालपुर से कीर्तनकारी साल में दू बार अयोध्या जा के गुरुधाम में चौबीस घण्टा क संकीर्तन करत आ रहल हवं। पहिले रामजी सोनार के अगुआई में अब उनके स्वर्ग सिधार गइले पर पण्डित रामअचल तिवारी के अगुआई में सिलसिला जारी बा।

कार्यक्रम में सामिल होखे बदे श्री जीतेन्द्र पाण्डेय जी, ब्लाक-प्रमुख, भटहट-गोरखपुर भी गोपालपुर आइल रहलन। ऊ बाबा जी क दीक्षित शिष्य रहलन। ऊ हमसे अचके पूछि पड़लन-"इन्जीनियर साहब ! रउरे बाबा जी से दीक्षा ले लिहले हयीं कि ना ?" हम कहलीं-"अबहिन त ना, बाबा जब उचित समझिहें त देवे करिहें।" ऊ कहलन-"बिना मंगले केहू से कुछ ना मिलत। एक बेर त रउरे के निहोरा करही के पड़ी।" हमके बुझाइल कि हम कुछ भूल कइ रहल हयीं। हम पत्नी साथ बाबा जी लग्गे जा के हाथ जोड़ के कहलीं-"बाबा ! हमनी के दीक्षा कब मिली?"

बाबा कहलन-"हमारा गुरु जी के अगिले अभिर्भाव तिथि के दिन दीक्षा होगा।" एह मतिन

www.bhojpurisahityangan.com

आठ फरवरी सन् १९८८ के दिन हम पति-पत्नी बाबा से विधिवत दीक्षा पा गइलीं, अउर सदा खातिर जुड़ गइलीं।

बहराइच में विभागीय सेवा करत-करत पाँच बरिस से जियादा होखे लागल। हमार स्थानान्तरण आदेश जिला बस्ती खातिर हो गइल। हमार जेठरा लइका कक्षा नौ पास कइ के दसवीं में जाये वाला रहलन। उनके शिक्षा में व्यवधान पड़ि गइल। विद्यालय बदलले से दसवीं कक्षा के बोर्ड परीक्षा में अच्छा प्राप्तांक मिलले में संदेह लागत रहल, एहसे दसवीं क पढ़ाई बहराइच में ही जारी करवले क विचार बन गइल। बहराइच से बस्ती क दूरी १४० कि०मी०, न त सीधी बस सेवा अउर न ही ट्रेन सेवा। हम बहराइच से कार्यमुक्त होइ के अयोध्या जाइ के गुरुजी के सेवा में लग गइलीं, अउर आपन परेशानी गुरु जी से बतवलीं। एक सप्ताह बाद बाबा जी (गुरु जी) कहलन-"एक बार तूँ अपने विभाग के मुख्यालय लखनऊ जा अउर अधिकारी से मिल के बहराइच के नजदीक बदली करा ले।" बाबा क आदेश पा के हम लखनऊ स्थित कार्यालय लगभग पाँच बजे कार्यालय बन्द भइले के समय पहुँचलीं।

स्थानान्तरण कार्य से जुड़ल अधिकारी से मिललीं अउर हम उनसे आदेश के बदले बदे निहोरा कइलीं। पल भर सोच के ऊ कहलन-"गोंडा चलि जइब ?" हम बहराइच के सबसे नगीच जिला गोंडा के प्रस्ताव पर तपाक से सहमति जता दिहलीं। ऊ आश्वासन दे दिहलन कि बदली हो जाई। हम सम्बन्धित बाबू से जा के अधिकारी से भइल बतकही बतवलीं। ऊ तुरन्तें टाइप मशीन प कागज-कार्बन लगवलस अउर तीन-चार मिनट में टाइप कइ के अधिकारी के लग्गे ले चलल; वोकरे पीछे-पीछे हम लग गइलीं। अधिकारी हमके देखते पूछि पड़लन-"अब का ?" पीछे से हम बोल पड़लीं-"सर ! आदेश।" ऊ बाबू के तरफ नजर डाल के कहलन अरे ! आदेश टाइप भी हो गइल, ले आव। हँसत हस्ताक्षर कइलन, शायद कउनो अउर काम में बाबू द्वारा एतना तत्परता से काम के अन्जाम देत पहिले न पावत रहल होखें। हम गुरु जी के मन ही मन प्रणाम कइलीं अउर आदेश ले के लवटि पड़लीं। रास्ते भर गुरु कृपा के महिमा क एहसास करत चलि अइलीं।

तीन बरिस बाद हमार बदली गोण्डा से बनारस हो गइल। हम अयोध्या गुरुजी के लग्गे गइलीं। प्रणाम कइ के उनके सामने बइठ गइलीं। हाल-चाल बतावत कट्ट कहि पड़लीं-"हमार बंदली गोण्डा से बनारस हो गइल ह।" गुरुजी पल भर आँख मुनलन अउर बोल पड़लन-"विश्वनाथ बुला रहा है तो क्यों नहीं जाते ? चला जा।" हमके आदेश मिल गइल। हम वापस गोण्डा पहुँच के सामान सहेज के बान्हत लाद-फान के बनारस चल दिहलीं। उहवाँ कार्यभार सम्भालत लगभग छः महीना गुजरल होई कि अचके पत्नी क तबियत जियादा खराब हो गइल। आनन-फानन में पंडित कमलापति के आवास के पास एगो नर्सिंग होम में जा पहुँचलीं। जाँच-पड़ताल के बाद डाक्टर तुरन्त आपरेशन कइले क सलाह दिहलन। आपरेशन हो गइल। दस दिन बाद अस्पताल से घर

www.bhojpurisahityangan.com

अइले के बाद आपरेशन के जगहीं से मवाद आवे लगल। डाक्टर के पास ले जाइल गइल। घाव ठीक भइले क नाम न ले। डाक्टर निरन्तर ड्रेसिंग व दवाई चलावे लगलन। लम्बे समय तक लाभ न मिलले के दशा में बी.एच.यू. के सर सुन्दरलाल हास्पिटल सम्पर्क कइल गइल। हास्पिटल क सुपरिन्टेन्डेन्ट राष्ट्रीय स्तर क नामचीन सर्जन रहलन। जइसहीं पत्नी जख्म क पहिले के उपचार के बारे में बतावल शुरू कइली कि-डाक्टर अग्रवाल आपरेशन कइले रहलन, इतना सुनते ही भड़क गइलन अउर बोल पड़लन-"मैं कम्पाउन्डर हूँ क्या कि अग्रवाल आपरेशन किये और मैं बैण्डेज करूँ, जाइए उन्हीं से मिलिए।" उनके कहने के तौर-तरीका से हमारी पत्नी हत्प्रभ हो उठके कमरा से बाहर आ गइली अउर बोल पड़ली-"हम इनसे इलाज न करइबें, ई कवन डाक्टर हवँ कि सींधे मुँह बात ना करत हउअन।" उनकर कहल शब्दन के कह सुनवली। सब घर लवटि आइल। दूसर-तीसर डाक्टरन से सम्पर्क कइ-कइ के इलाज जारी रहल, कउनो लाभ होत ना रहल। एक डाक्टर साहब कहलन कि घाव दवा से ना सूखाई, जेतना भी अंग्रेजी दवा सम्भव रहल इनके खिया गइल बा। ऊ कहलन कि बी.एच.यू. के हास्पिटल जाये के पड़ी, सर्जरी क केस हउए। उनसे पहिले क घटना बतावल गइल। ऊ कहलन-"वोह अस्पताल में कइगो सर्जन हउअन। हम डा० वी०के० शुक्ला, रीडर के अच्छी तरह से जानत हयीं, अपने साथ ले के चलब अउर देखवाइब।" डाक्टर संग ले जाइके डा० शुक्ला के देखवलन अउर केस हिस्ट्री क जानकारी दिहलन।

डा० शुक्ला बहुत ही विनम्र अउर सरल व्यक्ति रहलन। ऊ जाँच पड़ताल कर-करा के अपने संग एगो बरिष्ठ लेक्चरर जवन उनकर मित्र रहलन के लेके पेट क आपरेशन कइलन। अस्पताल में लगभग पन्द्रह दिन भर्ती रहली। घाव ठीक ना भइल मवाद बनल समाप्त ना भइल। ऊ फिर नये सिरे से जाँच पड़ताल कइलन-करवलन। सब ठीक मिलले के साथ टी०बी० रोग क लक्षण आ गइल। ऊ फिर निर्णय लिहलन की टी०बी० क दवाई सात-आठ महीना खियावल जरूरी ह। घाव क सफाई, मलहम-पट्टी एक-एक दिन आतर दे के होखे लागल। आठ माह बाद फिर सगरो-जाँच कराकर डा० शुक्ला कहलन कि एक बार फिर से आपरेशन करे के पड़ी अउर आँत क खराब अंश निकाले के पड़ी। आपरेशन भइल अउर आठ दिन में घाव ठीक हो गइल, स्वस्थ हो गइली। एह मतिन लम्बी बीमारी क सामना करे के पड़ल।

एह बीच दू-तीन महीना पर ही अयोध्या गुरुजी के पास जा पवलीं। एक बार दुखी मन से गुरु जी से कृपा करे बदे निहोरा कइलीं कि आशीर्वाद दे के जल्दी ठीक करायीं। बाबा डाँटत कहलन-"तूँ क्यों चिन्ता करता है ? बाबा है न ! तेरा काम है सेवा करना, जा सेवा कर। ठीक हो जायेगी।" गुरु जी के आश्वासन से मन के शान्ति अउर मजबूती मिलल अउर सेवा पूर्ण मनोयोग से करे लगलीं। जब कब्बो मन खिन्न होखे त गुरु जी क वाणी याद करीं अउर उनकर ध्यान करीं। कहल भी ह-"गुरु रूप ध्यान करो शान्ति पावे जीवने ।।"

www.bhojpurisahityangan.com

सन्त-महात्मा लोगन के मुँहे से सुनले रहलीं कि-बीमारी दू तरह क होले-एगो त कुपथ्य सेवन अउर दुसरका प्रारब्ध जनित। जवन चीज शरीर के सहन कइले के क्षमता से अधिका हो, वोह के अपनावल (जइसे अधिका खाइल-पियल, जाड़े के दिन में नंगा घूमल-फिरल मतलब जड़ाइल भा घामें में जियादा समय रहल आदि) वोकरे चलते बिमार पड़ल, ऊ थोड़ि के दवा-इलाज से जल्दी ठीक हो जाले। बाकिर दूसरका बिमारी जवन प्रारब्ध जनित यानी पिछले जन्म के बुरे कामन के कारन दुख रुप से भोगे के पड़ेला, वोकर भोग काल पहिले से निश्चित होला, बिना भोग काल पूरा भइले बिमारी ठीक ना होत चाहे केतनो इलाज कइल जाय। सन्त जन के मुँहे सुनल ई बात ओह घड़ी अक्सर याद आवे। दवा-इलाज के अलावा जप, पूजा, टोटका आदि भी बहुते कइल गइल बाकिर वोकर कउनो प्रत्यक्ष लाभ ना लउकत रहे। हाँ, कोशिस कइले से सन्तोष मन के हो जात रहे।

बिमारी लम्बा खिंचले से दूर रहि रहल नात-रिश्तेदार-हितैषी लोगन के मन में तरह-तरह के संशय होत रहल। कुछ लोगन के असाध्य रोग हो गइले क भ्रम हो गइल अउर तरह-तरह क शंका क चर्चा करे लगलन। एकाध लोगन के मुँहे मृत्यु हो गइले तक क बात निकल गइल। बासगांव के बगल भैरोपुर के हमरे फूफा क नाती प्रेम बाबू चिन्ता में पड़ि के अपने बगलगीर के साथ लेइ के बनारस चल दिहलन, डेरा क पता पूछत-पूछत पहुँच के जइसहीं खड़ा भइलन देखत हवं कि जीप में कुछ सामान रखात बा अउर हमार पत्नी जीप में कहीं जाये बदे बइठ रहल हयी। हमहन क नजर उनके पर पड़ल त चौंक पड़लीं, मुँहे आवाज निकल पड़ल कि अचके कइसे ? उ कहे लगलन-"हमहन के बुरा खबर मिलल त रहि ना गइल चलि पड़लीं।" खैर सबके देखि के सन्तोष भइल। उनसे बतावल गइल कि डाक्टर फिरो आपरेशन करे के कहलन हवं, वोही बदे बी०एच०यू० जाइल जात ह। उनके पानी-कानो पिया-खिया के विदा कइल गइल अउर हमनी क तिसरकी बेर आपरेशन बदे रवाना भइलीं। दस दिन बाद स्वस्थ्य हो के पत्नी लवटली। आगे क जिनगी गुरुकृपा से आराम से कटे लगलि। सहजे मुँहे से निकल पड़ेला-

'श्री गुरु कृपा हि केवलम्'

❖

www.bhojpurisahityangan.com

३२

आत्म परिचय अउर रचना जगत

पूरा नाम	-	**इंजीनियर राजेश्वर सिंह**
माता	-	स्व० परमजोता
पिता	-	स्व० समर बहादुर सिंह
जन्मतिथि	-	४ अप्रैल १९५०
जन्म स्थान	-	ग्राम व पोस्ट-गोपालपुर, ब्लाक व तहसील-गोल, जिला-गोरखपुर (२७३ ४०८)
शिक्षा	-	बी. ई. (सिविल) वर्ष १९७३, एम.एम.एम. प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर
वर्तमान पता	-	एम.आई.जी. ७७, राप्तीनगर प्रथम, गोरखपुर (२७३००३)
पूर्ण व्यवसाय	-	उ.प्र. जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से अप्रैल २०१० में सेवानिवृत्त, बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार।
मोबाइल	–	९४१५२०८५२०
ई-मेल	-	rajeswarsingh1950@gmail.com

सम्मानोपाधियाँ :

- *भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा* ***'महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।'***।
- *राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत।*
- *राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा* ***'प्रेमचन्द सम्मान।'***
- *सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा* ***'मेलोडी सम्मान' 2006।***
- *हिन्दी सेवा संस्थान कुशीनगर द्वारा* ***'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान'।***
- ***'आध्यात्मिक रत्न सम्मान'*** *सूफी साहित्य कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा।*
- *विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ* ***'विद्यावाचस्पति' 'विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न'*** *एवं* ***'भारत गौरव'।***
- ***'साहित्य कला शिरोमणि'*** *सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष 2011, भागलपुर (बिहार)।*

www.bhojpurisahityangan.com

- *मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर (उ0प्र0) के एल्युमनाई एसोसिएशन द्वारा वर्ष 2011 में* ***सामाजिक कार्यों में योगदान*** *हेतु सम्मानित।*
- *'संगम सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था' गोरखपुर द्वारा* ***'संगम साहित्य सुमन'*** *सम्मान-2020।*
- *नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर द्वारा भोजपुरी साहित्य सेवा के लिए* ***'नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान'-2021।***
- *सरयू अमृत महोत्सव-2021 द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखने पर* ***'सरयू रत्न सम्मान।'।***
- *भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार)* ***'संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-2021'।***
- *अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा किताब 'श्याम पियारा साधु-सन्त' पर* ***'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार'*** *वर्ष 2023।*
- *विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा* ***'डा0 विवेकीराय स्मृति सम्मान वर्ष 2024'।***

इंजीनियर राजेश्वर सिंह की प्रकाशित कृतियाँ :

भोजपुरी भाषा की कृति :

१- **जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४)**, बारह शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह

२- **कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७)**, अट्ठाइस निबन्धों की पुस्तक

३- **पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६)**, शिक्षाप्रद कहानी और निबन्ध की पुस्तक

४- **भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८)**, सम्पूर्ण भागवत का संक्षेप में लिखी गई पुस्तक

५- **राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९)** : ५१ राम-भक्तों की संक्षिप्त जीवनी चर्चा जिसमें बाल्मीकि से लेकर शबरी तक, महर्षि वेद व्यास, भारद्वाज मुनि, महर्षि अगस्त्य, अरण्यक मुनि, महर्षि शरभङ्ग, महर्षि अत्रि, सती अनुसूया, आद्य शंकराचार्य, यमुनाचार्य, गोस्वामी तुलसीदास जी, श्री क्षेम गोसाईं जी महाराज, श्री राघवदास, महर्षि लोमशजी, समर्थ गुरु रामदास जी, श्री रामदास जी महाराज, बाबा कीनाराम अघोरी, परमहंस मामा श्री प्रयागदास जी, सन्त श्री कच्चा बाबाजी सम्मिलित हैं।

६- **श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०)** : ३८ कृष्ण भक्तों की संक्षिप्त जीवनी चर्चा जिसमें बल्लभाचार्य, बिट्ठलनाथ, सूरदास, कृष्णदास, कुम्भनदास, परमानन्द दास, छीन स्वामी चतुर्भुजदास, नन्द दास, गोविन्द स्वामी, चैतन्य महाप्रभु, नित्यानन्द, रूप सनातन, रघुनाथ स्वामी, जीव स्वामी, गदाधर भट्ट, रैदास, मीराबाई, पीपा जी, स्वामी हरिदास जी, हरिराम व्यास जी, पृथ्वीराज जी, स्वामी तीर्थराज आदि सम्मिलित हैं।

७- **भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०)** :महाकाव्य 'महाभारत' की १८ पर्व- आदि-पर्व, सभा-पर्व, वन-पर्व, विराट-पर्व, उद्योग-पर्व, भीष्म-पर्व, द्रोण-पर्व, कर्ण-पर्व, शल्य-पर्व, सौप्तिक-पर्व,

www.bhojpurisahityangan.com

स्त्री-पर्व, शान्ति-पर्व, अनुशासन पर्व, अश्वमेध पर्व, आश्रमवासिक-पर्व, मौसल पर्व, महा प्रस्थानिक पर्व, स्वर्गारोहण पर्व की संक्षिप्त चर्चाओं के साथ।

८- **दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०)** : दीक्षा देने वाले गुरु की महिमा एवं २१ सन्त गुरु रामानन्दाचार्य, रामानुजाचार्य, योगीराज देवरहा बाबा, गुरुनानक देव, श्री दादू दयाल, महात्मा तैलंग स्वामी, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, जयदयाल जी गोयन्दका, सीताराम दास ओंकार नाथ महाराज, हनुमान प्रसाद पोद्दार, परमहंस योगानन्द, महन्त दिग्विजयनाथ, सच्चिदानन्द दास 'बंगाली बाबा', स्वामी करपात्री जी, पं. श्रीराम शर्मा, श्री राधा बाबा, महर्षि ओंकारानन्द सरस्वती, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी, महन्त अवेद्यनाथ, स्वामी शरणानन्द जी की जीवन चर्चा सहित।

९- **घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०:** घर की रसोई एवं आस पास के पेड़ पौधों की ५० सामग्रियों की औषधीय उपयोगिता तथा पीने वाले पानी की गुणवत्ता के साथ।

१०- **भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१)** : श्रीराम के अवतार व जल समाधि को लेकर घटनावार २९ खण्ड में चर्चा किया गया है।

११- **भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२)** : संस्कृत भाषा में पंच तन्त्र कहानियों पर आधारित ६८ कहानियों के संग्रह की पुस्तक।

१२- **भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३)** : परमहंस योगानन्द की आत्मकथा के उन्चासों प्रकरण के चर्चा के साथ।

१३- **रहनी करनी युगाचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी** (अप्रकाशित)

हिन्दी भाषा में प्रकाशित कृतियाँ :

१- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३)
२- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४)
३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी (वर्ष २००४)
४- सुख जागे दुःख भागे (वर्ष २००४)
५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५)
६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६)
७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४)
८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७)
९- प्राचीन शिव मन्दिर जीर्णोद्धार (वर्ष २०२२)

अनेक संस्थाओं एवं पत्रिकाओं से सम्बद्धता विद्यमान है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

इं० राजेश्वर सिंह : वंशावली

-जय प्रकाश सिंह, एडवोकेट

इं० राजेश्वर सिंह के कुल के सदस्य और इं० सिंह से रिश्ता

श्री जगत सिंह (प्र पितामह), जाति-क्षत्रिय, गोत्र-कौशिक

↓

श्री शिवमंगल सिंह (पितामह)

↓

श्री समर बहादुर सिंह	श्री छंगे सिंह	श्री धनवंत सिंह
(पिता)	(चाचा)	(चाचा)
श्रीमती परमजोता सिंह	श्रीमती कृष्णमती सिंह	श्रीमती रामसुराती सिंह
(माता)	(चाची)	(चाची)

↓

इं० राजेश्वर सिंह + श्रीमती राजकुमारी सिंह (पत्नी)

श्रीमती लक्ष्मी सिंह	+	श्री प्रताप नारायण सिंह
(बहन)		(बहनोई)
श्रीमती इन्द्रा सिंह	+	श्री प्रताप नारायण सिंह
(बहन)		(बहनोई)
श्रीमती सुधा शाही	+	डा० सुबास शाही
(बहन)		(बहनोई)
श्रीमती सुनीता शाही	+	श्री आदित्य प्रकाश शाही
(बहन)		(बहनोई)

इं. राजेश्वर सिंह का वंशवृक्ष अगले पृष्ठ पर

www.bhojpurisahityangan.com

इं० राजेश्वर सिंह + श्रीमती राजकुमारी सिंह (पत्नी)

कर्नल नवीन सिंह (पुत्र)	श्री प्रवीण सिंह (पुत्र)	श्रीमती तृप्ति सिंह (पुत्री)
श्रीमती पूजा सिंह (बहू)	श्रीमती सीमा सिंह (बहू)	श्री प्रशान्त कुमार सिंह (दामाद)
शौर्य वीर सिंह (पौत्र)	श्रेष्ठ वीर सिंह (पौत्र)	सम्राट सिंह (नाती)
धैर्य वीर सिंह (पौत्र)	कौशिकी सिंह (पौत्री)	स्वस्तिका सिंह (नातिन)

इं. राजेश्वर सिंह के कुल के चाचा श्री छंगे सिंह के बाद के सदस्य और उनसे रिश्ता

श्री छंगे सिंह (चाचा) + श्रीमती कृष्णमती सिंह (चाची)

डा० तेज प्रताप चन्द (भाई)	श्री तारा प्रसाद सिंह (भाई)	श्री जय प्रकाश सिंह (भाई)
श्रीमती शान्ती चन्द (भाभी)	श्रीमती राजेश्वरी सिंह (भाभी)	डा० सरोज सिंह (भाभी)

डा० राजेन्द्र प्रताप चन्द (भतीजा)
श्रीमती जोती चन्द (बहू)
→ तन्वी चन्द (पौत्री)+रघुबन्स सिंह (दामाद)
→ तान्या चन्द (पौत्री)+कपिल सिंह चौहान (दामाद)

श्री अनिल प्रताप चन्द (भतीजा)
श्रीमती उषा चन्द (बहू)
→ तुषार प्रताप चन्द (पौत्र)
→ त्वेष प्रताप चन्द (पौत्र)

श्री मनोज प्रताप चन्द (भतीजा)
श्रीमती कुसुम चन्द (बहू)
→ तनुश प्रताप चन्द (पौत्र)
→ तनीशा चन्द (पौत्री)

श्रीमती मंजू सिंह (भतीजी)
श्री श्रीप्रकाश सिंह (दामाद)

www.bhojpurisahityangan.com

श्री छंगे सिंह (चाचा) + श्रीमती कृष्णमती सिंह (चाची)

डॉ० तेज प्रताप चन्द (भाई)
श्रीमती शान्ती चन्द (भाभी)

श्री तारा प्रसाद सिंह (भाई)
श्रीमती राजेश्वरी सिंह (भाभी)

श्री जय प्रकाश सिंह (भाई)
डॉ० सरोज सिंह (भयहू)

श्री बब्बन सिंह + श्रीमती कमला सिंह
(भतीजा) (बहू)
श्रीमती श्यामा सिंह + श्री अजय कुमार शाही
(भतीजी) (दामाद)
श्रीमती साधना सिंह + श्री रणवन्त सिंह
(भतीजी) (दामाद)

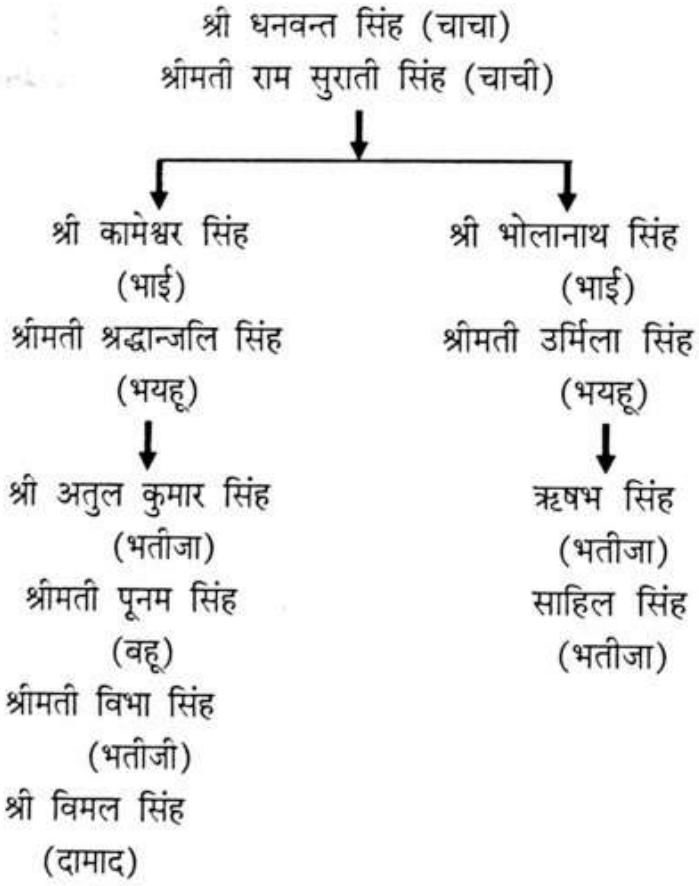
शिवम् सिंह (पौत्र)
शुभम् सिंह (पौत्र)
पूजा सिंह (पौत्री)
श्रीमती कविता सिंह (पौत्री) - श्री अरुण सिंह

श्री नितिन कुमार सिंह (भतीजा)
श्रीमती निधि सिंह (बहू)
श्री रधिन कुमार सिंह (भतीजा)
श्रीमती पूजा सिंह (बहू)
डॉ० स्मृति सिंह (भतीजी)
श्री अंचल कुमार सिंह (दामाद)

अगले पृष्ठ पर इं. राजेश्वर सिंह के चाचा श्री धनवन्त सिंह के बाद के सदस्यों का विवरण

www.bhojpurisahityangan.com

इं. राजेश्वर सिंह के कुल के चाचा श्री धनवन्त सिंह के बाद के सदस्य और उनसे रिश्ता



❖

www.bhojpurisahityangan.com

३४

ननिहाल वंशावली

-भूपेन्द्र प्रताप शाही

इं. राजेश्वर सिंह के ननिहाल के सदस्य और उनसे इं. सिंह का रिश्ता

श्री जमींदार शाही (प्र. नाना जी), जाति, क्षत्रिय (विशेन), गोत्र : वत्स

↓

श्री रामअधीन शाही (नाना जी)
श्रीमती मोहरा शाही (नानी जी)

↓

श्रीमती शिनिका (मौसी जी)
श्रीमती परमजोता सिंह (माता जी)
श्रीमती कृष्णमति सिंह (मौसी जी)
श्रीमती धाना सिंह (मौसी जी)

श्री रामप्यारे शाही (मामाजी) — श्रीमती बिंदु शाही (मामी जी)

श्री विजय नारायण शाही (मामाजी) — श्रीमती विलायिता शाही (मामी जी)

↓

श्री नरेन्द्र प्रताप शाही (भाई)
श्रीमती गायत्री शाही (भयहू)

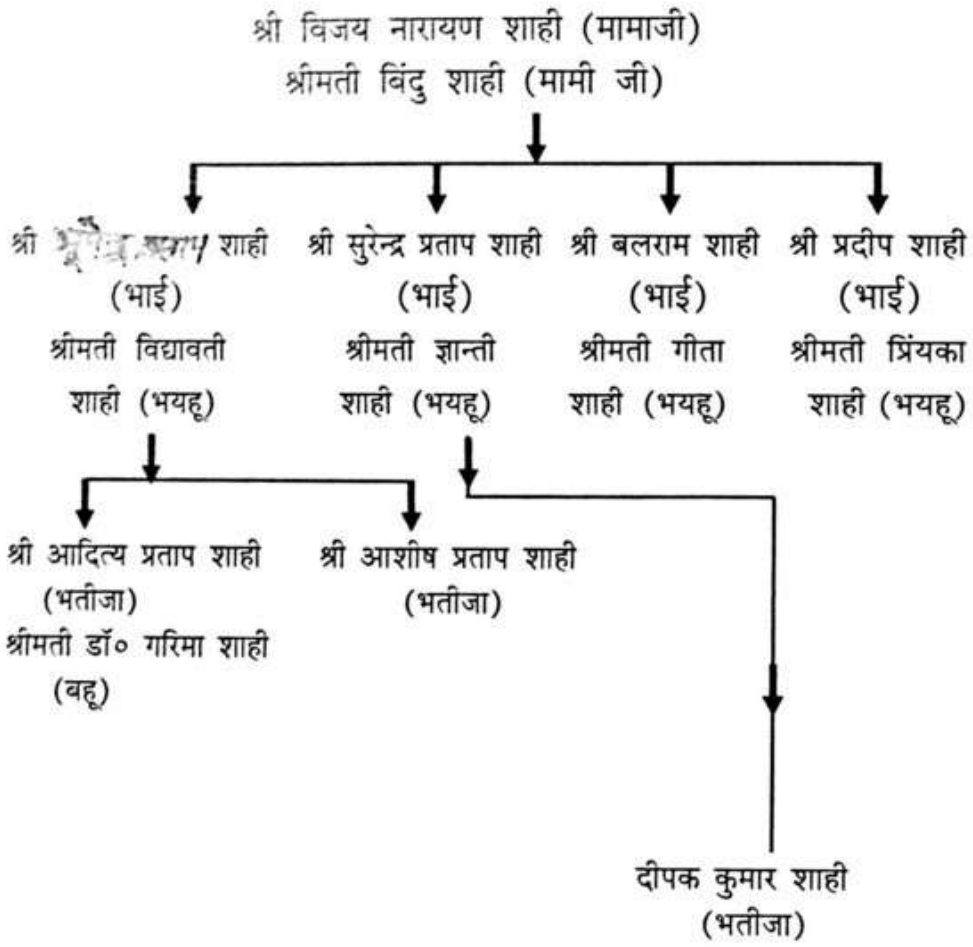
↓

श्री ऋषभ शाही (भतीजा)
श्रीमती सुधा शाही (बहू)

श्री संदीप शाही (भाई)
श्रीमती खुशबू शाही (भयहू)

अगले पृष्ठ पर

www.bhojpurisahityangan.com



ननिहाल :

ग्राम सेमरा बुर्जुग, पोस्ट-सेमरा खुर्द (बड़हलगंज-गोरखपुर) से २० किलोमीटर पर राप्ती नदी के तट पर स्थित है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

सम्मान एवं अलंकरण

-राजकुमारी सिंह

अधीक्षण अभियंता (जल-निगम) एवं प्रसिद्ध कहानीकार राजेश्वर सिंह जी के सम्मान में

सम्मान-पत्र

मन के निर्मल भावों का जब,
शब्द – शब्द से प्यार हुआ है ।
जीवन के इक क्षण से जब–जब,
झंकृत मन का तार हुआ है ।
कुछ शीतल मृदु जल गंगा का,
सागर से जब खार हुआ है ।
आस – पास की घटनाओं का,
भावों से जब व्यापार हुआ है ।
तब राजेश्वर जी के भीतर, एक कहानीकार हुआ है।।

* " नसीब अपना–अपना उनका ",
संग्रह और कहानी है ।
" जिनगी क दूबि हरियाइल " में,
अपनी भोजपुरी की बानी है ।
" गॉव से जब शहर आ गए",
में यह मन लाचार हुआ है ।
जैसे मन का कोना–कोना,
केवल एक बाजार हुआ है ।
तब राजेश्वर जी के भीतर, एक कहानीकार हुआ है।।

* जब–जब जग की जिजीविषा को,
देखें उनकी खुली ये ऑखें ।
घटना – परिघटना पर चौंकें,
उनके सांसों की हर पांखें ।
कर्तव्यों के कारण उनका,
ये जीवन दो धार हुआ है ।
मन की गणित बनी अभियंता, हृदय कहानीकार हुआ है.....

–रश्मि शाक्या
मोराबाजार, गाजीपुर (उ0प्र0)
मो0–9453517863

www.bhojpurisahityangan.com

कथाकार इंजीनियर राजेश्वर

को

'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार'

● हिन्दी-कहानी और उपन्यास विधा के प्रमुख हस्ताक्षर, इंजीनियर राजेश्वर की, साहित्य में, अनेकशः कथा-कृतियाँ हैं. साहित्य की दिशा में इनकी अबाध-अक्षर गति है. इनके साहित्यिक अवदान को दृष्टि में रखते हुये 'राहुल सांकृत्यायन स्मृति-केन्द्र' आज़मगढ़, इनको अपने विशिष्ट सारस्वत पुरस्कार 'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार' से विभूषित करता है।

9 अप्रैल, 2010

अध्यक्ष :

अमरनाथ तिवारी

महासचिव :

प्रभु नारायण पाण्डेय 'प्रेमी'

राहुल सांकृत्यायन स्मृति-केन्द्र, आज़मगढ़

क्रमांक - २६

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, गांधीनगर

प्रमाणित किया जाता है कि

..... डॉ० ई० राजेश्वर सिंह पटना .....

को

उनकी सुदीर्घ हिन्दी-सेवा, सारस्वत साधना, कला/विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों, शैक्षिक प्रदेयों, महनीय शोधकार्य तथा राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के आधार पर

आज

विद्यासागर

की

उपाधि के लिए अधिकृत किया गया

कुलपति

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, गांधीनगर, ईशीपुर, भागलपुर-813206 (बिहार)

दिनांक :

कुलसचिव

भारतीय अधिनियम के अन्तर्गत निबंधन सं० 244/82-83

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी विकास मंडल

भोजपुरी भवन, निराला नगर सीवान (बिहार) 841226

सम्मान पत्र

ई० राजेश्वर सिंह

भोजपुरी भाषा, संस्कृति आउर लोक परंपरा के संबर्द्धन में राउर महत्वप योगदान आ अपना लेखनी, वाणी आ श्रम से मातृभाषा के प्रति रउरा अवदान के आदर ; भोजपुरी विकास मंडल अपने के "**सन्त कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान**" से सम्मानित ; रहल बा।

साथे साथ भोजपुरी के सेवा होत रहे आ एकरा साहित्य के भंडार में बढोत होत रहे एह खातिर ई संस्था राउर स्वस्थ आ शतायु जीवन के मंगलकामना कर रहल ;

दिनांक- 24 अक्टूबर 2021

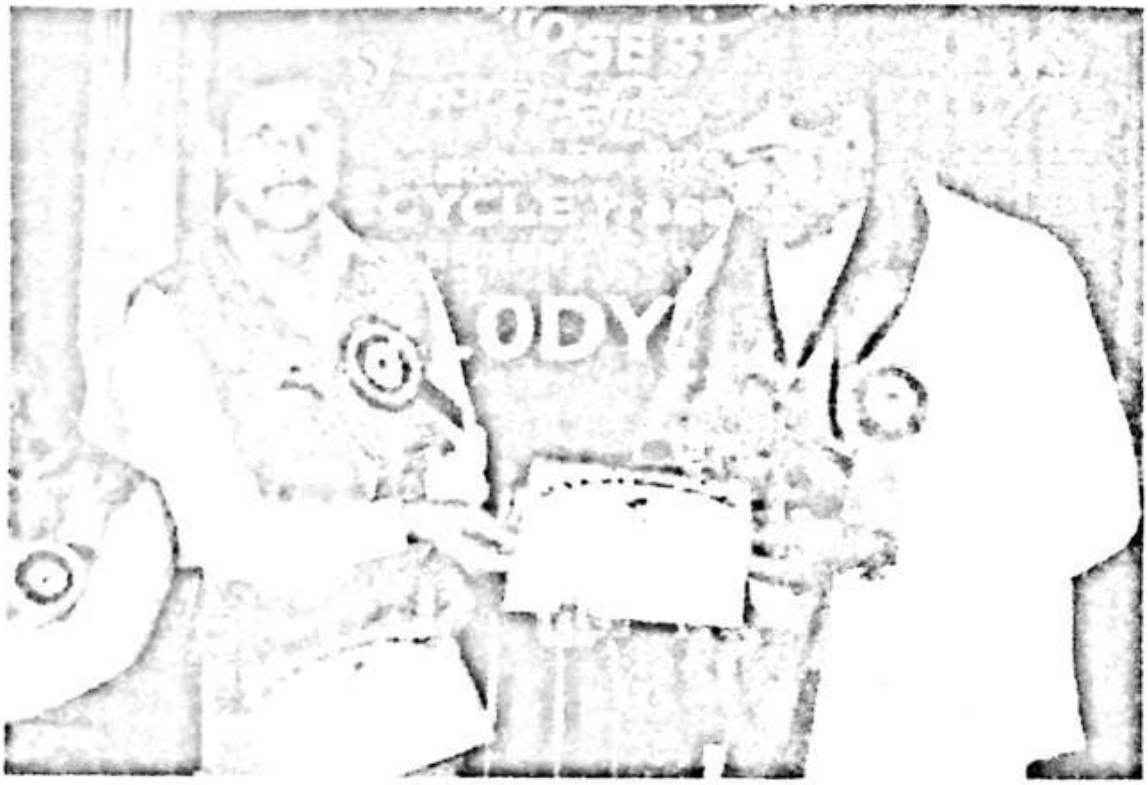
आयोजन समिति

अध्यक्ष
अवधबिहारी चौधरी
विधायक एवं पूर्व मंत्री

सचिव
डा0 अरविन्द सिन्हा

मार्कण्डेय
सचिव
भोजपुरी विकास मंडल
मो0 :- 9204410553

www.bhojpurisahityangan.com



सनरोज-संस्थान उ0प्र0 द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम "मेलोडी, 2006" के अन्तर्गत साहित्यिक सेवा की दिशा में प्रशंसनीय योगदान के लिए, वरिष्ठ कथाकार इन्जीनियर राजेश्वर को प्रशस्ति-पत्र एवं अंग वस्त्रम् भेंट करके साहित्यकार, मुख्य अतिथि, जिलाधिकारी डॉ0 हरिओम ने, विगत 28 नवम्बर 2006, को सम्मानित किया। कार्यक्रम में गीत, गजल, समीक्षा-विधा के मानक साहित्यकार डॉ0 मधुर नज़मी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

www.bhojpurisahityangan.com



सम्मान-पत्र

'संगम' सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था

33 रीड्स धर्मशाला, गोरखपुर

श्री/श्रीमती राजेश्वर सिंह पुत्र/पुत्री —

निवासी गोरखपुर को

उनकी ~~सांस्कृतिक~~ / साहित्यिक / ~~सामाजिक~~ गतिविधियों और उसकी निरंतरता की प्रशंसा

करते हुए संस्था उनको संगम साहित्य सुमन सम्मान से सम्मानित

करती है तथा इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

दिनांक 24/11/2020

अध्यक्ष :
नरसिंह बहादुर चन्द

www.bhojpurisahityangan.com



Regd. No. F-12787, THANE
WORKING AREA : ALL INDIA & FOREIGN

ESTABLISHED : 2003
PH.NO (0251) 2662496 / 2662148

खानक़ाह सूफ़ी दीदार शाह चिश्ती

क्रमांक: ११००३/०६

सम्मान पत्र

दिनांक : १० जुलाई ०६

प्रतिष्ठा में,

माननीय श्रीयुत इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी

नगर : ग्राम+पो.+जी.+राष्ट्री नगर, जोधपुर (राजस्थान)

विषय : "जिन्स के क्षेत्र में रौशनी-रौशनी" कृति पर विशेष सम्मान।

उपर्युक्त विषयक जनसेवा, राष्ट्रसेवा तथा आपकी लोकप्रियता को देखते हुए संस्थान आपको - "आध्यात्मिक रत्न" मानद-उपाधि से सम्मानित करती है। खानक़ाह ट्रस्ट की ओर से बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामना आप स्वीकार करें।

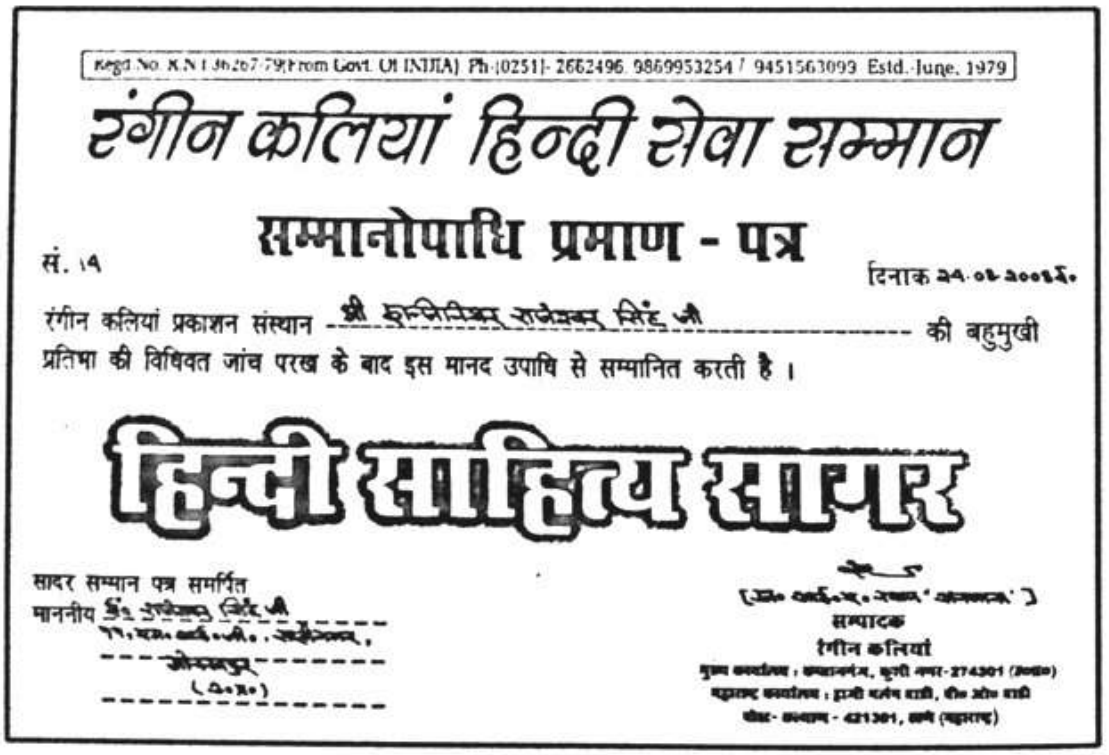
(सम्मानित करने का स्रोत: टी.वी., पत्र-पत्रिका, जनता से पूछताछ, पत्रकारों की रिपोर्ट, प्रत्यक्ष मूल्यांकन एवं प्रेक्षण..)

सम्मान पत्र की फ़ोटो-प्रति सूचनार्थ प्रेषित :

1. माननीय राष्ट्रपति महोदय, भारत
2. माननीय राज्यपाल जी, ३०प्र०, लखनऊ
3. मा० मुख्यमन्त्री महोदय, ०प्र०, लखनऊ
4. मा० प्रमुख सचिव, ०प्र०, लखनऊ
5. मा० प्र० मुख्य सचिव, ०प्र०, लखनऊ
6. मा० निदेशक, हिन्दी संस्थान, ०प्र०
7. मा० निदेशक, साहित्य अकादमी, दिल्ली

PRESIDENT
KHANQUAH SUFI DEEDAR SHAH CHISHTI
HAJI MALANG WADI, B.O. WADI,
P.O. KALYAN 421301, THANE (M.H.)

(का. आई.ए.खान 'आलमगीर')
अध्यक्ष
खानक़ाह सूफ़ी दीदार शाह चिश्ती
हाजी मलंग वाड़ी, बी.ओ.वाड़ी
पो.-कल्याण-421301, जिला - ठाने (महाराष्ट्र)



Regd No. K.N.I-36267/79(From Govt. Of INDIA) Ph-(0251)- 2662496, 9869953254 / 9451563093 Estd.-June, 1979

रंगीन कलियां हिन्दी सेवा सम्मान

सम्मानोपाधि प्रमाण - पत्र

सं. १९

दिनांक २१.०६.२००६.

रंगीन कलियां प्रकाशन संस्थान - श्री इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी - की बहुमुखी प्रतिभा की विधिवत जांच परख के बाद इस मानद उपाधि से सम्मानित करती है।

हिन्दी साहित्य सागर

सादर सम्मान पत्र समर्पित
माननीय श्री राजेश्वर सिंह जी
नगर, ग्राम+पो.+जी.+राष्ट्री नगर,
जोधपुर
(राजस्थान)

(डॉ० आई०ए० खान 'आलमगीर')
सम्पादक
रंगीन कलियां
मुख्य कार्यालय : कल्याणगंज, कुरी नगर-274301 (उ०प्र०)
महाराष्ट्र कार्यालय : हाजी मलंग वाड़ी, पी० ओ० वाड़ी
पोस्ट- कल्याण - 421301, ठाने (महाराष्ट्र)

www.bhojpurisahityangan.com

सं० - 32 दिनांक- 13 दिसंबर 2018

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ

गाँधीनगर, ईशीपुर, जिला - भागलपुर (बिहार)



सम्मान पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि

इं० राजेश्वर सिंह (उ० प्र०)

को उनकी सुदीर्घ हिन्दी सेवा, सारस्वत साधना,
कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ, शैक्षिक प्रदेयों, महनीय शोधकार्य
तथा राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के आधार पर इस विद्यापीठ की अकादमिक परिषद
की अनुशंसा पर आज

भारत गौरव

सारस्वत सम्मान प्रदान किया जाता है ।

कुलसचिव	कुलपति	कुलाधिपति
डॉ. देवेन्द्रनाथ साह	डॉ. लेजनारायण कुशवाहा	डॉ. सुमनभाई 'मानस भूषण

www.bhojpurisahityangan.com



सरयू अमृत महोत्सव 2021

सरयू तट 'मुक्तिपथ' शहीद स्मारक, बड़हलगंज-गोरखपुर

ई. राजेश्वर सिंह जी

साहित्यकार

समाज के विशाल फलक पर आपकी ओजपुर्ण और प्रेरक उपस्थिति से हम अभिभूत हैं ।

साहित्य क्षेत्र में आपका अतुलनीय योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा ।

आपका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा बनेगा ।

हम आपको

सरयू रत्न सम्मान

से विभूषित कर गौरवान्वित हैं ।

19.8.2021

राजेश त्रिपाठी

मुक्तिपथ वाले बाबा
पूर्व मंत्री उ. प्र. शासन
पूर्व विधायक चिल्लूपार

मुख्य संयोजक
सरयू अमृत महोत्सव आयोजन समिति
बड़हलगंज-गोरखपुर उत्तर प्रदेश
मो॰ 7905710055
Email:rajeshtripathi10@gmail.com

www.bhojpurisahityangan.com

सम्मान पत्र

ई० माननीय राजेश्वर सिंह जी

कथाकार एवं कुशल निबन्धकार
अधीक्षण अभियन्ता, जल निगम, आजमगढ मण्डल
की
अब तक प्रकाशित खड़ी बोली और भोजपुरी की
लगभग एक दर्जन रचनाओं की
सामाजिक और जनहितकारी दृष्टिकोण की
सराहना करते हुए
मुंशी प्रेम चन्द जयंती के अवसर पर
हम उन्हें
प्रेमचन्द सम्मान
प्रदान करते हुए हर्ष का अनुभवन करते है।

31 जुलाई 2009

अमर नाथ तिवारी
अध्यक्ष

राहुल सांस्कृत्यायन स्मृति केन्द्र, आजमगढ़

प्रभु नारायण पाण्डेय "प्रेमी"
मंहामंत्री

www.bhojpurisahityangan.com

सम्मान पत्र

ई0 माननीय राजेश्वर सिंह जी

कथाकार एवं कुशल निबन्धकार
अधीक्षण अभियन्ता, जल निगम, आजमगढ़ मण्डल
की
अब तक प्रकाशित खड़ी बोली और भोजपुरी की
लगभग एक दर्जन रचनाओं की
सामाजिक और जनहितकारी दृष्टिकोण की
सराहना करते हुए
मुंशी प्रेम चन्द जयंती के अवसर पर
हम उन्हें
प्रेमचन्द सम्मान
प्रदान करते हुए हर्ष का अनुभवन करते है।

31 जुलाई 2009

अमर नाथ तिवारी
अध्यक्ष

राहुल सांस्कृत्यायन स्मृति केन्द्र, आजमगढ़

प्रभु नारायण पाण्डेय "प्रेमी"
महामंत्री

www.bhojpurisahityangan.com

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में भोजपुरी निबंध (श्याम पियारा साधु सन्त) पर

इंजिनियर राजेश्वर सिंह

को

हरिशंकर वर्मा पुरस्कार

अर्पित कइल गइल

प्रो. (डॉ.) जयकांत सिंह 'जय'
महामंत्री

सत्ताईसवाँ अधिवेशन
16-17 दिसम्बर 2023
तुलसी भवन, जमशेदपुर

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र
अध्यक्ष

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

स्वर्ण जयंती वर्ष

२७वाँ अधिवेशन, जमशेदपुर

श्री/श्रीमती/सुश्री/डॉ. इं. राजेश्वर सिंह

पता गोरखपुर (उ. प्र.)

दिनांक १६-१७ दिसम्बर २०२३ के तुलसी भवन, जमशेदपुर में सम्मेलन के स्वर्ण जयंती वर्ष में आयोजित २७वाँ अधिवेशन के अवसर प भाग लिहलीं आ विचार गोष्ठी*/ कवि सम्मेलन/सांस्कृतिक कार्यक्रम में विशेष रूप से योगदान दिहलीं।

*विषय :

(डॉ० ब्रजभूषण मिश्र)
अध्यक्ष

(डॉ० जयकान्त सिंह 'जय')
महामंत्री

www.bhojpurisahityangan.com

विश्व भोजपुरी सम्मेलन



मातृभाषा दिवस 21 फरवरी 2024

सम्मान-पत्र

मान्यवर / माननीया ईं० राजेश्वर सिंह

भोजपुरी भाषा, साहित्य, कला एवं भोजपुरी समाज में समय-समय पर राउर योगदान खातिर हम आभार प्रकट करत बानी!

राउर योगदान के इयाद में ई सम्मान-पत्र शुभकामना सहित समर्पित बाटे!

अजीत दूबे	डा. अशोक कुमार सिंह	चन्द्रकान्त सिंह	ओमधीरज
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	अध्यक्ष उ.प्र.	महासचिव उ.प्र.

कार्यालय : जीवनदीप चैरिटेबल ट्रस्ट, बड़ा लालपुर, जमनी, वाराणसी

Ph. : 0542-2206006, Mob : 9208604952, 9415225142
E-mail : vishwabhojsamm@gmail.com | Website : www.vishwabhojsamm.com

www.bhojpurisahityangan.com

वरिष्ठ कथाकार इंजीनियर राजेश्वर

का

सारस्वत–सम्मान

● वरिष्ठ कथाकार इंजीनियर राजेश्वर अपनी रचना–प्रक्रिया में, भरपूर पढ़े जाने वाले, लोकधर्मी चिन्तन के कथाकार, उपन्यासकार हैं **'एक कहानी की आत्मकथा'**, 'एक **कहानी बीच में है'**, **गाँव से शहर जब आ गये, 'ज़िन्दगानी ये कैसी तेरी ज़िन्दगी?'**, 'सुख **जागे दुःख भागे'**, **श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक, झलकियाँ**, 'नसीब **अपना-अपना'**, सूफ़ी–दर्शन की ज़मीन से जुड़ी, वैश्विक फलक पर रूहानियत से भरपूर 'सरकार शाह गोला दीवान' की दरगाह शरीफ़ निज़ामाबाद, आज़मगढ़ की ऐतिहासिकता को उजागर करने वाली, कथा–कृति **'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी'**, **-जिनिगी कऽ दूवि हरियाइल'**, **'कल्याण कऽ जुगुति.....'** प्रकाशित कृतियाँ, साहित्य की अ–क्षर निधि हैं। इनकी कहानियों, उपन्यासों में लोक–संवेदना, जन–चेतना, लोक–मन की भरपूर समन्विति और तात्त्विकता है। इंजीनियर राजेश्वर अपनी रोज़गारी ज़िन्दगी में पेशे से अधीक्षण अभियन्ता उत्तर प्रदेश जल निगम, आजमगढ़ हैं.

इनकी कहानियों, की मर्मी भाषा हिन्दी है किन्तु उर्दू और भोजपुरी के सारगर्भित शब्दों का वाजिब प्रयोग पाठकों को सहजतः बाँध लेता हैं. कहानी कहने की इनकी विशिष्ट शैली इतनी सरल–सहज है कि पाठक 'सटला तऽ गइला' की स्थिति में हो जाता है.

गोरखपुर जनपद के रियासती गाँव गोपालपुर में 4 अप्रैल 1950 में पैदा हुए राजेश्वर अपने विद्यार्थी जीवन से ही परम मेधावी, छात्र के रूप में अपनी पहचान से प्रभावित करते रहे हैं। कहानी और उपन्यास संदर्भ में इनका मानना है कि 'वर्तमान परिवेश में दोनों ही विधाओं में अपेक्षित पारदर्शिता का अकाल है। कारण अकारण नहीं है। हमारे कथाकार बन्धु, समस्याओं से टकराने से कतराते हैं। फ़ार्मूलाबद्ध विचार–धारा **जब** लेखन प्रक्रिया में आती है तो सृजन आहत होता है।'

● एक साक्षात्कार में इंजीनियर राजेश्वर **का** यह अभिकथन पूरे साहित्य की वर्तमान गति को रेखांकित और रूपांकित करता है। एक **कर्मयोगी**–साधक की भाँति इनका सूफ़ियाना मिजाज़, बहुआयामी और सबको क़रीने से बाँधने **वाला है**। इंजीनियर राजेश्वर के हवाले से लब्बोलुबाब डॉ० मधुर नज्मी के शब्दों में सिर्फ़ **इतना ही कह**ा जा सकता है कि–

'जहाँ में आती है मुश्किल से हस्तियाँ ऐसी.
कि जिनकी फ़िक्रो-नज़रियात से सदी महके'.

9अप्रैल, 2010

'राहुल सांकृत्यायन स्मृति-केन्द्र' आज़मगढ़

www.bhojpurisahityangan.com

सिद्धार्थ मानव विकास समिति

देवकली-गोपालपुर, गोरखपुर

सम्मान-पत्र

माननीय श्री राजेश्वर सिंह सुपुत्र श्री समर बहादुर सिंह, ग्राम-देवकली-गोपालपुर, जनपद-गोरखपुर के निवासी हैं। आप अपने विद्यार्थी जीवन में एक मेधावी छात्र रहे हैं। आपने ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययन कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता अर्जित की है।

इस क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए आप हमेशा प्रेरणा श्रोत रहे हैं तथा हम ग्रामवासियों के उत्थान में आपका योगदान सदैव रहा है। आप इस गाँव एवं क्षेत्र के गौरव हैं।

इसलिए सिद्धार्थ मानव विकास समिति भारत रत्न बाबा साहब डा0 भीमराव अम्बेडकर - जयन्ती के शुभ अवसर पर आपका हार्दिक सम्मान करती है।

14 अप्रैल, 2005

रामानुज सिद्धार्थ	राकेश कु. सिद्धार्थ	रामनाथ एडवोकेट
सचिव	अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष

www.bhojpurisahityangan.com

बी० एस० ए० वी० पी० जी० कालेज

गोला, गोरखपुर (उ० प्र०), मो०- 9935473867

पत्रांक..... दिनांक .....

मान पत्र

किस मिट्टी में कितना सोना है कितना लोहा दिखाई नहीं देता लेकिन मिट्टी अपने गंध से सब बता देती है की क्या कहां और कितना है। गोरखपुर जनपद के दक्षिणी छोर पर जान धारा सरयू के अंचल में गोपालपुर स्टेट जो अब एक कस्बे के रूप में जाना जाता है। उस पवित्र आध्यात्मिक भूमि पर चार अप्रैल 1950 को जन्म लेने वाला बालक अपनी आरंभिक पहचान अपने नाम राजेश्वर सिंह से बनाई।अपार मेधा संपन्न मौन बालक ने जब अपनी शैक्षिक साधना आरंभ की तो आश्चर्य हुआ महज 23 वर्ष की अवस्था में सिविल इंजीन्यरिंग में डिग्री प्राप्त कर अंचल को विश्चम्भित कर दिया। निरंतर अपने कर्मपथ पर अग्रसर होते हुए इस क्षेत्र में अप्रतिम ऊँचाई प्राप्त की। आप उत्तरप्रदेश जलनिगम में अधीक्षण अभियंता पद को सुशोभित कर 2010 में कृतकार्य हुए। आपके उपलब्धियों का महाप्रबंध अनेक परत,सैंकड़ों अनुच्छेदों में फैली हुई है। जिसे केवल स्मरण किया जा सकता है।

माँ सरस्वती इनके साथ अपने सम्पूर्ण देयमान के साथ हृदय में अवतरित हुई तो एक भौतिक कारीगर का हृदय इतना भावसंपन्न हुआ की अकस्मात साहित्य राशि उमड़ पड़ी फिर क्या लोक से लेकर अध्यात्म के इतने चित्र खींचे जिसे देख व पढ़करआश्चर्य होता है। विविध प्रसंगो का इनका साहित्य चित्रपट है। पुराण,चरितकाव्य,लौकिक साहित्य के विविध प्रसंग लोक जीवन प्रकृति मौसम ऋतुए और उनसे ओत-प्रोत साहित्यिक सूक्तियाँ जीवनोपयोगी वनस्पतियाँ उनके प्रयोग एवं उपचार की सहज उक्तियाँ सब विद्यमान हैं इनका रचना संसार मानव और प्रकृति का समग्र एल्बम है। इनकी लेखनी और साहित्य का सम्मान भारत वर्ष के समस्त साहित्यतिक संस्थानो ने आदर और सम्मान दिया। कम समय में शताधिक रचनाएँ निःसंदेह देवाग्र,गणेश एवं विणापाणि अपने सम्पूर्ण औचित्य विधान के साथ इनके भीतर उतर गई । इनकी रचनाओ का साहित्य का लोक में कितना आदर होगा इस विषय में कुछ कहना आसान नहीं है। निःसंदेह राजेश्वर सिंह की रचना एवं भाषा प्रवाह को देखते हुए अनथक भाषा भागीरथ की उपाधि दी जाए तो अतियुक्ति नहीं होगी।

डॉ० पुलस्त्य मणि त्रिपाठी

आचार्य

बी०एस०ए०वी०पी० जी० कालेज

गोला, गोरखपुर

www.bhojpurisahityangan.com

दिवगत परिजनों की याद में

आँसू पोछो–वृक्ष लगाओ

एक सामाजिक आन्दोलन

डा० प्रवीण तिवारी
बी.एस., एम.ए., एम.बी.ए., पी.एच.डी
संचालक

दिनाक.....

मान पत्र

गोरखपुर जनपद के दक्षिणी छोर पर बसे हुए गोपालपुर जो कभी सामान्य स्टेट हुआ करता था जिसकी संपन्नता और न्यायप्रियता पहचान थी। आज वह स्मृति शेष एक कस्बे के रूप में है। लेकिन वह अपने गर्भ में आज भी बहुमूल्य राशियों को छिपाये हुए है। जिसमे से एक रत्न इंजीनियर राजेश्वर सिंह में दिखाई दे रहा है। आपका जन्म एक श्रमशील एवं मर्यादावान पवित्र कुल में हुआ जहां शील और विनम्रता का राज्य था। उस परिवार के आँगन में आप ने जीवन की शुरुवात की. परिणाम निकला कि सरस्वती आपके मेधा को निरंतर सवारने लगी। और 1973 में बी. ई. (सिविल इंजीन्यरिंग) बन गए, इस कार्यपथ पर चलते हुए उत्तरप्रदेश जलनिगम में अधिक्षण अभियंता के पद को प्राप्त कर परिवार एवं अंचल का नाम बढ़ाया।

अद्भुत संयोग हुआ कि एक इंजीनियर का जीवन तो उसके भीतर भाव कि गंगा उद्दाम वेग के साथ प्रवाहित हो गयी थी। अवसर मिलते ही अनेक रचना स्रोतस्विनी निकली। लोक से अध्यात्म तक ज्ञान से प्रेम और वैराग्यतक की घटनाए रचना के रूप में प्रवाहित हो गई। जिसमे जीवन के विविध प्रसंग एवं प्रकृति के सम्पूर्ण उपदान की महत्ता का सत्य उद्घाषित हो उठा। आपकी सारगर्भित रचनाओ को अद्यतन साहित्य के समस्त संस्थाओ में उपस्थिति दर्ज करायी। और सबसे आदर, सम्मान एवं पुरस्कार को प्राप्त किया। अभी आपकी अनथक साधना चल रही है। आप की यह यात्रा अविरल प्रवाहित होती रहे। इस अंचल की पहचान आपसे बनती रहे। यही मेरी सम्पूर्ण भावनाए एवं कामना है आप साहित्य सिंधु है।

प्रवीण तिवारी
(डा. प्रवीण तिवारी)

मो0-9956024014, 8299812035

www.bhojpurisahityangan.com

कपिलवस्तु महोत्सव, सिद्धार्थनगर

2007

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं करोति यः!
स सन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः!!

सम्मान-पत्र

श्री राजेश्वर सिंह अधिशासी अभियंता जल निगम सिद्धार्थनगर को कपिलवस्तु महोत्सव-2007 के सफल आयोजन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपने आपसी समन्वय, समझदारी, विवेक एवं टीम भावना के साथ कार्य करतें हुये कपिलवस्तु महोत्सव के विभिन्न कार्यक्रमों को सकुशल सम्पन्न कराया है। समिति इसके लियें आपकी सराहना करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

(आर०एस०श्रीवास्तव)	(राजकुमार श्रीवास्तव)	(डा०रमाकान्त शुक्ल)
जिला सूचना अधिकारी	मुख्य विकास अधिकारी/संयोजक	जिलाधिकारी/अध्यक्ष
सिद्धार्थनगर	सिद्धार्थनगर	सिद्धार्थनगर

कपिलवस्तु महोत्सव आयोजन समिति, सिद्धार्थनगर (उ०प्र०)

www.bhojpurisahityangan.com

३६

आत्मिक-समर्पण

-राजकुमारी सिंह

पुस्तक

'श्री राम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ'

श्री गुरु शरणम्

श्रीहरि गुरु शरणम्



परपूज्य ब्रह्मलीन श्री बंगाली बाबा जी महाराज

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक 'दीक्षा गुरु'

आत्मिक समर्पण

जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
जय गुरु
ॐ



श्री सीतारामदास ओंकारनाथ महराज

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल'

समर्पन



प्रज्ञा-चक्षु कवि संत कबीरदास जी के हमार परनाम बा, जेकरा अच्छर अवदान से विश्व-साहित्य अउर हमार इ भोजपुरी भासा परभावित बा।

-इंजीनियर राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक 'एक कहानी की आत्मकथा'

आत्मिक समर्पण



पिता स्व० समर बहादुर सिंह

जिनकी सहजता, साधुता, समयबद्धता, संयमित जीवन,
मोहन व्यक्तित्व, सु-संस्कृत आचरण, धर्मनिष्ठता का
अवदान पाकर,
मैं अपने व्यवहारिक जीवन में
ऊर्जस्वित हूँ.....
–राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक 'जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ?'

आत्मिक समर्पण



स्वर्गीया माँ परमजोता सिंह

को

सादर, विनम्र काव्यांजलि सहित श्रद्धांजलि जिनकी ममता की घनी छाँव मेरी जिन्दगी को ऊर्जस्वित और गतिमती करती है।

''क्या चश्मे-इनायत माँ की है कि जिसने हिफ़ाज़त जाँ की है ।
बचपन से जवानी तक उसने हर इक मुश्किल आसाँ की है ।
रौशन है जो दिल का आईना तासीर दरें - जानाँकी है ।
क्या खूब हसीं लफ्जों की किरण क़ागज प' कलम टाँकी है ।
तामीरे - चमन की राहों में - बच्चे का खिलौना झाँकी है ।।''

-इंजीनियर राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक 'एक कहानी बीच में है'

एक रूहानी समर्पण



स्व० डॉ० तेजप्रताप चन्द

सज्जनता की प्रतिमूर्ति, धीर-गम्भीर विचारक, अन्तर्राष्ट्रीय इतिहासविद् अग्रज स्व० डॉ० तेज प्रताप चन्द, रीडर-गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर को जिनके शालीन व्यक्तित्व की प्रतिकृति मुझ तक यात्रित होकर मेरे अदना-से व्यक्तित्व को हर कोण से सँवार गयी है।

"किरदार भी फ़ना करे हस्ती के साथ-साथ,
इतना भी ज़ोरदार नहीं है क़जा का जोर ।।"

-इंजीनियर राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल'

आत्मिक समर्पण



जीवन-संगिनी

श्रीमती राजकुमारी सिंह

को

भरपूर दुलार के साथ

एगो सनेह-सनल भेंट

-राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक 'गाँव से जब शहर आ गये'

आत्मिक समर्पण



द्वि-वर्षीय पौत्र शौर्य को स-स्नेह जिसकी किलकारियाँ,
तोतली बोलियों के माधुर्य से समूचा
पारिवारिक परिवेश गुंजरित है.....

इं. राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

आत्मिक समर्पण



बेबी धैर्यवीर को स-स्नेह जिसकी
किलकारियों से हमार गृह-मंदिर पल-पल
गुंजरित है.....इं. राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

५

हस्तलिपि–खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

३७

जिनगी कऽ जरूरत पानी

-इं. राजेश्वर सिंह

जिनगी कऽ जरूरत पानी

सगरो पेड़-पौधा अउर प्राणी मात्र में जिनगी के बनवले रेह खातिर जरूरी पानी केतना अजूबा हउए। एहकर आपन कउनों रंग ना भइलहू पर इन्द्र धनुष के सगरो रंगन के धारन कइ सकेला। एहकर आपन कउनो आकार ना होला, बाकिर असंख्य आकार बना सकेला। एह में कउनो गति ना होला बाकिर जदि गतिमान हो गइल अउर गति में तेजी आ गइल त हाइड्रो इलेक्ट्रिसीटी जइसन शक्ति अउर भारी ऊर्जा क स्रोत बन सकेला। एकरे शान्त रूप के देखि के मनई ध्यान में डूब जाला, ध्यानावस्थित होजाला, त उग्र रूप देखि के भयभीत हो जाला। कब्बो बरखा के रूप में वरदान बन के आ जाला त कब्बो विनाश करे वाला बाढ़ क रूप धारन कइ के जल-ताण्डव करे लगेला। केतना अजीब ह ई पानी।

पानी के जगह-जगह बहुतेरे नाम से पुकारल जाला - अम्बु, जल, सलिल, तोय, वारि, पय-जीवन, अमृत आदि पानी क नाम ह। लेटिन में अक्वा कहल जाला, त अंग्रेजी में वाटर। पेड़-पौधन के देहि में वजन क लगभग ७०-७५

www.bhojpurisahityangan.com

प्रतिशत अंश पानी होला। मनई के देहि में वजन के लगभग 90-95 प्रतिशत अंश पानी होला। इहे कारन हउए कि हर जीवधारी के चाहे ऊ मनई हो, पशु-पक्षी हो या पेड़-पौधा होखे, जिनगी चलावे खातिर पानी क जरूरत होले। गो कि एक मनई के जिनगी चलावे खातिर पानी हर रोज कम से कम आठ से दस लीटर चाही, बाकिर ओहके नहाये, धोये, खाना पकवले क व्यवस्था खातिर गाँव-गवई में 40-45 लीटर प्रति व्यक्ति जरूरत आँकल गइल ह। जियादा आबादी वाला गाँवन अउर नगरी क्षेत्र जहवाँ सीवर व्यवस्था ना ह, में एक मनई खातिर 70 लीटर पानी, सीवर व्यवस्था वाले नगरन में हर एक मनई खातिर 135 लीटर अउर मेट्रोपालिटन-मेगा नगरन खातिर हर मनई खातिर 150 लीटर पानी क जरूरत महसूस कइल गइल हउए, ई जरूरत आबादी के घनत्व के बढ़ले के कारन साफ-सफाई माँग में बढ़ोत्तरी के ध्यान में रख के आंकलन कइल गइल ह। मनई के उपभोग खातिर निश्चित रूप से स्वच्छ जल चाही न कि कउनो पानी। एहसे वैज्ञानिक लोग मनई के जिनगी खातिर उपयोगी पानी में

www.bhojpurisahityangan.com

घुल जाये वाली घुलनशील रासायनिक तत्वन क निर्धारण कइले हउअन। जदि ई कुल्हि तत्व निर्धारित सीमा से जियादा पानी में होइहें भा कम होइहें त देहिं खातिर नुकसानदेह होलन अउर शारीरिक, मानसिक सन्तुलन बिगड़ले क कारन बन के कइ तरह क रोग पैदा कइ देलन। मानक के अनुसार पीये वाले पानी में तत्वन क सीमा एह मतिन होखे के चाही —

क्र० स०	तत्व / रसायन	अधिकतम स्वीकृत मात्रा (मिलीग्राम/ली.)	अधिकता से होखे वाली बिमारी अउर लक्षण
1	2	3	4
1-	फ्लोराइड (F)	1·0	उल्टी, मल के साथ रक्त, दाँत प धब्बा, सरदर्द, आर्थ्राइटिस, बाँझपन, पेट दर्द, गर्भपात, एनीमिया।
2-	लेड (Pb)	0·05	जी मिचलाइल और उल्टी, एनोरक्सिया, पेट दर्द, एनीमिया, गर्भपात।
3-	आर्सेनिक (As)	0·01	त्वचा सम्बन्धित, एनोरक्सिया, उल्टी पेट दर्द, एनीमिया, कैंसर

www.bhojpurisahityangan.com

1	2	3	4
4.	क्रोमियम (Cr)	0.05	कारसिनोजेनिसिस, त्वचा सम्बन्धी बिमारी, खून का दबाव (कम)
5.	जिंक (Zn)	5.00	एनीमिया, जी मिचलाइल अउर उल्टी
6-	क्लोरीन (Cl)	1.00	सिर दर्द, जी मिचलाइल, उल्टी, हड्डी में खराबी
7-	कापर (Cu)	0.05	एनीमिया, घाव भरने में देरी, जी मिचलाइल अउर उल्टी, खून क अधिक दबाव
8-	आयरन (Fe)	1.0	त्वचा सम्बन्धी रोग, पेट विकार
9-	नाइट्रेट (NO_2)	45.00	बचपन में ब्लू बेबी बीमारी
10-	पारा (Hg)	0.001	त्वचा सम्बन्धी, दस्त, जी मिचलाइल, उल्टी

एकरे अलावा पानी क पी.एच. वैल्यू (PH) 7.0 से 8.5 के बीच चाही। घुलनसील ठोस (Total dissolved solids) 500 से कम, कठोरता (Hardness) 200 मि.ग्रा. प्रति लीटर से कम,

www.bhojpurisahityangan.com

मैगनीसियम (Mg) 530 मि॰ग्रा॰ प्रति लीटर से अधिक, मैगनीज (Mn) 0·1 मिलीग्राम प्रति ली॰ से कम, अलुमीनियम (Al) 0·03 मि॰ग्रा॰ प्रति लीटर से कम, फिनोलिक कम्पाउन्ड फिनाइल के रूप में 0·001 मि॰ग्रा॰ प्रति ली॰, मिनरल आयल 0·01 मि॰ग्राम प्रति ली॰ से कम होखे के चाही वरना स्वास्थ्य खराब होयी, कउनो न कउनो बिमारी क असर लउके लागी।

रासायनिक तत्वन के मात्रा क सन्तुलन पीये वाली पानी में भइल त जरूरी हइहे ह, एकरे साथ ही साथ जैविक प्रदूषण से मुक्त भी होखे के चाही। ई जैविक प्रदूषण कीटाणु, फफूदी, शैवाल विषाणु (वायरस) भा जीवाणु वैक्टिरिया से होलन। एह सबन से बहुत तरह के संक्रामक रोग हो सकेलन।

जीवाणु (Bacteria)	: हैजा, टाइफाइड, दस्त
विषाणु (Virus)	: हिपेटाइटिस, पोलियो, खसरा
प्रोटोजोआ (Protozoa)	: पेचिस, आर्डिहासिस
कृमि (Helminthic)	: गोलकृमि, फीता कृमि
साइक्लोपस (Cyclops)	: म्यूनियावर्म
घोघा (Snail)	: सिचिसटोसोमिआसिस
मच्छर (Mosquito)	: मलेरिया, फाइलेरिया, डेंगू

www.bhojpurisahityangan.com

हमनी के पीये लायक अउर दूसर काजन में उपयोग लायक पानी क संसाधन बहुत कम हउए। बढ़त आबादी के कारन इनकर बचावल अउर बढ़ावल बहुत जरुरी हउए। दूसर ओर निरेखले प मालूम होला कि बढ़त प्रदूषण के कारन बचल-खोचल साधन भी प्रदूषण से पैदा होवे वाली कमियन से नष्ट हो रहल बा, एहसे सरकार के साथ ही साथ हर एक समाज, हर परिवार और हर एक मनई क ई कर्तव्य बनेला कि अपने पेयजल स्रोतन के सुरक्षित अउर स्वच्छ रखें नाहीं त ऊ दिन दूर नाहीं बा कि पीये वाला पानी क संकट पैदा हो जायी अउर एगो बड़हन समस्या के रूप में सामने आइ जाई।

सामान्य तौर पर जल संसाधन के स्वच्छ बनल रहे खातिर नीचे कदम उठावल जा सकेला –

(क) सामुदायिक स्तर पर :

नगर, बस्ती, गाँव आदि के आस पास नदी, तालाब अउर दूसर जल स्रोतन में दूषित सामान ना डाले के चाही। विषैला द्रव यानी जहरीला पानी बहावे वाली औद्योगिक इकाइन प नजर रखे के चाही, ई सब नदी-नाला चाहे कउनो तालाब में गन्दा व जहरीला पानी बहा देलन।

www.bhojpurisahityangan.com

रोक-टोक खातिर सरकारी तन्त्र क मदद लेवे के चाही। सामूहिक जल स्रोत जैसे-कुआँ, तालाब, पाइप लाइन, पानी क टंकी, इण्डिया मार्क-हैण्डपम्प आदि क जिम्मेदारी सामूहिक रूप से जल-प्रबन्धन समिति बना के करावे के चाही। पानी क उपयोगिता, संसाधन क सुरक्षा अउर कीटनाशकन के बुरा प्रभाव क चर्चा बइठकिन क आयोजन कइ के सबके बीच करे के चाही ताकि समाज में जन-जागरण हो सके।

(ख) पारिवारिक व निजी स्तर पर :

(1) पीये वाली पानी के हरदम ढँक के राखे के चाही अउर पानी क टंकी आदि क बराबर ब्लीचिंग पावडर से सफाई करत रहे के चाही। पानी के बैक्टीरिया रहित बनवले खातिर सीमित मात्रा (०.५ पी पी एम) में ब्लीचिंश पावडर क उपयोग भी करे के चाही।

(2) हैण्ड भा पानी क बोरिंग के शौचालय, सोख्ता गड्ढा, गन्दा पानी क गड्ढा से दूर लगावे के चाही। अइसन कइले से धरती के अन्दर क पानी प्रदूषित ना हो पायी।

(3) शौचालय, रसोई घर आदि क नाली के सामुदायिक जल स्रोतन जइसे तालाब, पोखरा आदि में

www.bhojpurisahityangan.com

ना मिलावे के चाही।

(4) घर क कूड़ा-करकट, पालीथीन आदि नाला-नाली, कुआँ, तालाब, पोखरा आदि में ना डाले के चाही।

(5) खेतन में रासायनिक खाद अउर कीटनाशक दवाइन क उपयोग कम करे के चाही अउर जदि इनके जगहीं कुछ अउर उपाय कइल जा सकेत ओके करे चाही।

एह सुझावन के ध्यान में रखि के समाज के लोगन के खुद-ब-खुद चिन्तन करे के चाही अउर कारगर उपायन के अपनावे के चाही।

पानी मिलेले क सबसे बड़ हन स्रोत ह बरखा। बरसात क पानी स्वच्छ भइले के साथे-साथे बहुतायत में होला। एके इकट्ठा कइले के उपायन पर गम्भीरता से चिन्तन कइके सरकारी तौर प अउर निजी तौर प योजना बना के संरक्षित अउर सुरक्षित करे के चाही। केहू कहले बा—

जल त जीवन के लिए, होता है अनमोल।
पर वर्षा के रूप में, मिलता है बेमोल॥

रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गये न उबरे, मोती मानुष चून॥

—×—

www.bhojpurisahityangan.com

बियाहे के बाद दुअरा प दुलहा-दुलहिन के
आइ गइले के बाद घर में घुसले से पहिले

परिछन गीत

परिछन करहि चलेली तीनो मइया
फूल-माला लोढ़ा सब साज रे।
चारो लला संग सुन्नर दुलहिन
देखि देखि बढ़त उछाह रे॥
सुन्नर जोड़िन निरेखत कौसिला मइया
आँखि मूनि होत निहाल रे।
परिछन करे आगे बढ़ें माई कैकयी
गदगद मन अपार रे॥
माई सुमित्रा लुटावें हीरा-मोती
सब जन हर्सित अगाध रे।
धनि धनि भइली अयोध्या नगरी
पाई के बहुरि चारु रे॥

www.bhojpurisahityangan.com

आँवला क उपयोगिता

-इं. राजेश्वर सिंह

आँवला क उपयोगिता

बड़ गुड़कारी, विटामिन सी भरपूर।
चटनी बने मोरब्बा, लड्डू बने जरूर॥

प्रतिरोधक क्षमता -

रस निकाल के आँवला, मधु संग सेवन होय।
प्रतिरोधक छमता बढ़े, जानि लेव सब कोय॥

सर्दी, खाँसी -

मोरजे सेवन करे, ओके लाभ बुझाय।
ई अजमावल गइल बा, सर्दी खाँसी जाय॥

चटनी बनावल -

सौ ग्राम जीरा भूनल, ले ल पहिले भाय।
सौ ग्राम काला नमक, ले ल केरु जुटाय॥
एक चीज अउरी चाही, मन में कइल सेट।
रचक पावडर कहउ, सोडियम बेन्जुएट॥
कीलो पीछे दू ग्राम, ओमे दिह मिलाय।
चटनी उसिनल आँवला कउ, टंग कउ लिहउ बनाय

पेट गैस -

ए चटनी के सेवन से, गैस कउ होवे अंत।
नर- नारी लइका सयान, गिरहस्त खाय भा संत॥

अचार बनावल -

उसिनउ पहिले आँवला, बीआ लेहू निकाल।

www.bhojpurisahityangan.com

कड़ू तेल हरदी नमक, आमे मरिचा डाल।
ई कुल सगरी मिलले, हो अचार तैयार।
एकरे साथे खइले, रबे का हो चटकार॥

आँवला अचार (मात्रा) -

आँवला-एक किलो में, कड़ू तेल दस प्रतिशत (१०० मि॰ली॰), लाल मिर्चे पावडर दू प्रतिशत (२० ग्राम), हल्दी-तीन प्रतिशत (३० ग्राम), नमक - बीस प्रतिशत (२०० ग्राम) मात्रा राखे के चाही। नमक कम भइला प अचार खराब हो जाई।

त्रिफला चूर्ण बनावल -

चार भाग ले आँवला, दू भाग बहेड़ा जो।
एक भाग चाहीं हरण, चूर्ण त्रिफला हो॥
चम्मच भर नित सेवन से, ग्यानी मुँहे सुनाव।
सत्तर रोगन से करत, चूरन इहे बचाव॥

जल सेवन कऽ तरीका -

रोज सबेरे गुनगुना जल, पीं एक दू गिलास।
दस्त खुलासा होत ह ई, अउरी कब्ज खलास॥
भोजन करत न जल पीयऽ, एखे मरसक दूरी।
एकाध घूँट पियल जा, होय बहुत जरूरी॥
घंटा पहिले भा बाद में, घूँट घूँट जे पी।
पेट गैस से बचल करे, सुख से जीवन जी॥

www.bhojpurisahityangan.com

३९

मोबाइल और बन्दर

-इं. राजेश्वर सिंह

(कहानी)

मोबाइल और बन्दर

एक ही जनपद के न्यायालय में तैनात, पड़ोस में प्रवास कर रहे, दो न्यायाधीश उंड ऋतु में आवास से बाहर बने लघु उद्यान में, कुर्सी डाले धूप की मधुर उष्मा का आनन्द ले रहे थे। कुछ हास-परिहास के साथ, गप्पें मार रहे थे। एक न्यायाधीश मिश्रा साहब के पास मोबाइल दूरभाष था जिसे वार्ता के समय बीच-बीच में उपयोग कर दूरस्थ व्यक्तियों से वार्ता भी करते जा रहे थे। वार्ता के बाद मोबाइल बगल में रखे एक छोटे साइड टेबुल पर रख दिया करते थे। उसके पीछे एक बड़ा गुलमोहर का पेड़ था। पेड़ पर एक बड़ा लंगूर बैठा था जो न्यायाधीश महोदय द्वारा मोबाइल को बार-बार उठा कर, स्विच आन कर कान पर लगा कर कुछ सुनने और बोलने की गतिविधियों पर नज़र गड़ाये हुए था।

अचानक उसे क्या सूझी? कि पेड़ से चुपके से उतरा और मोबाइल साइड टेबुल से उठाते हुए हाथ में लेकर दूसरी तरफ आम के पेड़ पर भाग कर चढ़ गया। बन्दर के पास

www.bhojpurisahityangan.com

से गुजरते ही दोनो न्यायाधीश महोदय चौंक कर, कुर्सी छोड़ कर, उठ कर खड़े हो गये। सामने बैठे पाण्डे साहब ने कहा कि भाई साहब! आप की मोबाइल तो गयी। मिश्रा साहब ने साइड टेबुल पर नजर डाली तो मोबाइल गायब, टेबुल खाली। बोल पड़े, "अब क्या होगा?" अब दोनो लोग बन्दर के तरफ मुखातिब हो उसकी गतिविधियाँ देखने लगे और इन्तिजार करने लगे कि शायद नीचे गिरा दे। इसी बीच नौकर चाय लेकर आ गया। मिश्राजी नौकर की तरफ मुखातिब हो कर बोले, "अरे! चाय-वाय छोड़ो। देखो! बन्दर मोबाइल लेकर भाग गया। कुछ उपाय करो।" चपरासी ईट-पत्थर के टुकड़े, ढेला आदि फेंक कर मारने हेतु लाने दौड़ा। पाण्डेय साहब ने कहा, "नहीं, मारो नहीं। कहीं मोबाइल लेकर दूर भाग गया तो?" उधर बन्दर मोबाइल को हाथ में लेकर, ध्यान से कभी उसके स्क्रीन पर बने हनुमान जी की तस्वीर को देखता तो कभी कान पर लगाता तो कभी नाक पर लगाता तो कभी उलट-पलट देखने लगता, लेकिन हाथ से छोड़े, न अलग करे। देखते ही देखते भीड़ एकत्र हो गयी। कोई कहे रोटी दिखाओ,

www.bhojpurisahityangan.com

कोई कहे सेव दिखाओ, कोई कहे केला फेंको। भिन्न प्रकार के प्रलोभन की सामग्री लाकर उसकी तरफ फेंकी तो गयी परन्तु बन्दर टस से मस नहीं हुआ और न ही मोबाइल यंत्र हाथ से छोड़े।

तब तक एक वकील साहब न्यायाधीश महोदय से मिलने आ गये। उन्होंने भी भीड़ देखकर जिज्ञासा भरी नज़रों से सब को देखा और सब के चिन्ता के कारणों की जानकारी प्राप्त की। वकील साहब के पास भी मोबाइल दूरभाष था। उन्हें तरकीब सूझी। वे झट अपनी जेब से मोबाइल निकाले और न्यायाधीश मिश्रा साहब की तरफ मुखातिब हो कर बोले, "श्रीमान जी! आप अपने मोबाइल का नम्बर बतायेंगे?" मिश्रा साहब के मुख से नम्बर निकलते ही वकील साहब की उंगलियाँ अपनी मोबाइल के बटन पर दौड़ गयीं और जैसे ही नम्बर मिला कर बटन दबाकर, बन्दर के हाथ में पड़े मोबाइल से सम्बन्ध साधा कि बन्दर के हाथ की मोबाइल की घंटी बज गयी और साथ ही साथ मोबाइल में कम्पन तेजी से शुरू हो गया। बन्दर घबराया और हाथ से मोबाइल फेंक दिया। मोबाइल उद्यान की सीमा पर लगी झाड़ी पर होते हुए जमीन पर आ गयी।

—×—

www.bhojpurisahityangan.com

रोड जाम से पत्नी-विछोह

-इं. राजेश्वर सिंह

(कहानी)

रोड जाम से पत्नी-विछोह

नगरों में आये दिन चौराहों के समीप रोड क्रॉसिंग हेतु वाहनों का जमावड़ा सड़कों पर चलने वाले मार्ग के तंगी के कारण वाहनों का गतिरोध जनित जमाव कभी-कभी साथ की सवारी एवं सामग्री के गायब होने के कारण बन जाता है। इसके भुक्त भोगी एक इंजीनियर साहब को एक बार अपनी पत्नी के पलायित होने की आशंका ने, काफी समय तक मानसिक वेदना देने का कारण बना।

इंजीनियर वल्लभ सीधे सादे किन्तु अपने जिम्मेदारियों के प्रति चैतन्य और लगनशील रहने वाले सुदर्शन व्यक्तित्व वाले नवयुवक थे। उच्चाधिकारियों द्वारा सुपुर्द किये गये कार्य को तन्मयता से करना उनकी आदत थी। वे विभागीय कार्यों के आगे, घर-परिवार को पर्याप्त समय नहीं दे पाते थे जिससे पत्नी से प्रायः आये दिन नोक-झोंक हो जाया करती थी। लगातार तीन दिन से कार्यालय से देर रात नौ-दस बजे घर आने पर पत्नी का मिजाज गर्म था। पत्नी ने खाना-पीना देना तो दूर दरवाजा खोल कर सीधे बच्चों के

www.bhojpurisahityangan.com

जा कर सो गयीं। थके-हारे बेचारे बल्लभ साहब को कुछ सूझ नहीं रहा था कि करें तो क्या करें? वस्त्रों को बदला और शान्त हो कर पाँच मिनट बैठे रहे। भूख भी लगी थी। कुछ सोच-समझ कर उठे और पत्नी के पास मनुहार करने पहुँच गये। पत्नी के मिजाज की गर्मी का अन्दाजा नहीं लगा पाये थे। बदन छूते वह उठीं दूर हटने का इशारा करती हुई बरसने लगीं। कहने लगीं कार्यालय में मेज-तरतत नहीं है क्या? कहीं होटल में दो रोटी खाकर कार्यालय में सो गये होते घर आने की जरूरत ही क्या थी? आदि-आदि कहते हुए अपने गर्म मिजाजी का भरपूर उन्होंने एहसास कराया। बल्लभ साहब को उस दिन घर के प्रति अपनी जिम्मेदारियों की कमी का कुछ एहसास हुआ और वे चुपचाप एक अपराधी की भाँति सुनते रहे। कुछ देर-बाद जब पत्नी का दिमाग कुछ शान्त हुआ तो वे उठीं और भोजनादि सेवा में जुट गयीं। खा-पी कर बल्लभ साहब जब बिस्तर पर गये सोचे कि कई दिन से मन्दिर जाने को वो कह रहीं थीं, कल रविवार छुट्टी का दिन है, चलो हनुमान गढ़ी घुमा लायें। पता नहीं अगले मंगलवार को क्या व्यस्तता हो जाये। अगले दिन की योजना बनाते-बनाते वे

www.bhojpurisahityangan.com

गहन निद्रा में लीन हो गये। प्रातः उठकर मंजन कर बल्लभ साहब स्वयं चाय बना लाये और पत्नी के पास अपनी मन्दिर जाने की योजना बताकर चलने हेतु मनुहार करने लगे। कुछ देर बाद बल्लभ साहब को सफलता मिली और मन्दिर जाने की सहमति मिल गयी।

नहा-धोकर बल्लभ साहब मियाँ-बीवी मन्दिर जाने को तैयार हो गये। माँ के पास बच्चों को छोड़-कर स्कूटर पर दोनो लोग सवार हो कर हनुमानगढ़ी की ओर चल दिये। कुछ चलने के बाद एक चौराहे के पास भीड़ के कारण यातायात स्थिर हो गया था। बल्लभ साहब को भी स्कूटर रोकना पड़ा। स्कूटर रुकते-रुकते आगे के वाहन चल पड़े। बल्लभ साहब भी आगे के वाहनों पर नज़र लगाये हुए, उनसे सुर-ताल मिलाये चल पड़े। स्कूटर रुकते ही उनकी पत्नी स्कूटर से झट से उतर कर पास खड़े ठेले की तरफ कोई ज़रूरत की चीज लेने चली गयीं। पत्नी का ध्यान ठेले की तरफ और बल्लभ साहब का ध्यान आगे के वाहनों की रफ्तार पर था। बल्लभ साहब जब कुछ दूर निकल गये तो उनकी नजर स्कूटर और स्कूटर की सवारी की सड़क पर पड़ने वाली छाया

www.bhojpurisahityangan.com

पर गयी। उन्होंने देखा कि पीछे आती गाड़ी सवारी विहीन है। तत्काल पुष्टि करने हेतु पीछे मुड़ कर देखा तो गद्दी खाली थी। तुरन्त स्कूटर रोक कर खड़ी किये और सोचने लगे कि हे राम! क्या हो गया? कहाँ गायब हो गयी? पिछली रात गुस्सा के समय उनके द्वारा कही गयी एक-एक बात मानस-पटल पर अंकित होने लगी। पत्नी ने कहा था कि मैं बाल-बच्चों को छोड़ कर कहीं और चली जाऊँगी? कहीं मस्तिष्क में कुछ इस प्रकार के कु-विचार तो नहीं आ गये? परन्तु रात को बोलने के बाद गुस्सा ठण्डा हो गया था और सबेरे तो खुश-खुश घर से चली थी, फिर रास्ते में क्या हो गया? तिरिया चरित्तर ने कहीं नया मोड़ तो नहीं न ले लिया और बगैर बताये भीड़ में उतर कर चल दी हों? आदि-आदि अभी सोच ही रहे थे कि एक रिक्शे पर बैठी उसी दिशा से आती दिखायी पड़ीं।

स्वभावतः आते ही वह बरस पड़ीं कि इस तरह छोड़ कर भागने से जान छूटेगी क्या? नौकरों की हो कर रह गये हैं तो गनीमत है, परन्तु किसी पर नारी की होने नहीं दूँगी। बेचारे बल्लभ साहब सब कुछ सुनने के बाद शान्त होने पर पूछे- यह बताओ कि चलती गाड़ी से उतरी कैसे? मुझे पता

www.bhojpurisahityangan.com

भी नहीं चला ? तब उनकी पत्नी ने बताया कि चौराहे के पास जब स्कूटर खड़ा हुआ तो ढेले से एक सामान लेने उतरी थी। मुझे क्या पता था कि आप मुझे छोड़ कर चल देंगे। दोनों लोग फिर साथ-साथ मन्दिर गये और पूजा-अर्चना करके घर लौटे। घर आकर उन लोगों ने आप बीती लोगों को सुनाई, सुनने वाले सुन-सुन कर हँसते-हँसते लोट-पोट थे। परन्तु बेचारे इंजीनियर बल्लभ साहब को कुछ देर तक रोड-जाम के कारण पत्नी वियोग की मानसिक वेदना झेलनी पड़ी और खरी-खोटी सुननी पड़ी।

—x—x—

पतझड़ बोला—"इतना भी प्रसन्न होने की आवश्यकता क्या है वसंत। जानते नहीं, मैं तुम्हारे पीछे ही खड़ा हूँ।"

वसंत बोला—"जानता हूँ पतझड़। तुम मेरा नाश कर दोगे, पर तुम नहीं जानते कि मैं दोबारा फिर आऊँगा। तब मेरी स्वागत नई कोपलें, नए पल्लव नये पुष्प कर रहे होंगे और तब मैं और भी मनोवेग से संसार का सौन्दर्य बढ़ा रहा होऊँगा।"

www.bhojpurisahityangan.com

UNEMPLOYMENT

Meaning of Unemployment :

Unemplyment problem is one of the most serious problems facing people to day. It is a situation when there are some able-bodied persons who are willing to work at the prevailing wage rate, but are not able to find work which may yield them some regular income.

Types of Unemployment :

Cyclical unemployment and frictional unemployment are the main forms of unemployment in advanced contries. Structural unemployment are the main types of unemployment facing the Indian economy. Educated unemployment and technological employment are special types of unemployment prevailing the Indian economy.

Magnitude of Unemployment :

NSSO has developed three standardised consepts of unemployment, Viz. usual principal status, current

www.bhojpurisahityangan.com

weekly status and current daily status. It has estimated the magnitude of usual principal status unemployment at 10·8 million in the year 2011-12.

Consequences of Unemployment:

Unemployment has serious economic, moral, social and political consequences: 1. It results in wast of productive resources; 2. It leads to loss of resource eficiency; 3. It has adverse effects on saving and investment; 4. It is a source of exploitation; 5. It leads to inequalities of income; 6. It causes a change in work attitude; 7. It puts a burden on the government; 8. It has adverse effect on an individual's personality; 9. It causes moral degeneration; 10. It has adverse social and polical effects.

Causes of Unemployment:

Unemployment in India has resulted from — 1. Low rate of economic growth, 2. Low growth rate of agriculture, 3. Low rate of capital formation, 4. Inadequate

www.bhojpurisahityangan.com

employment planing planning, 5. Rapid population growth, 6. Use of capital-Intensive techiques, 7. Defective education system, 8. Weak manpower planning, 9. Failure to develop projects providing large employment, 10. Decline of cottage and small industries, 11. Migration from rural area, 12. Labour Laws.

Measures to Remove Unemployment:

Unemployment problem can be solved by taking long-run and short-run measures. Long-run measures to reduce unemployment include: 1. High rate of economic growth. 2. Development of Agriculture sector, 3. Rural industrialisation, 4. Development of Industrial sector with emphasis on labour absorbing small-scale Industries, 5. Creation of self-employment apportunities, 6. Employment for the educated unemployed; 7. Manpower planning, 8. Educational reforms, 9. Increasing investment by greater emphasis on skill formation, 10. controlling

www.bhojpurisahityangan.com

population growth.

Short-term remedies comprise special measures taken by the Government to provide immediate employment opportunities to people with low income.

—x—x—

www.bhojpurisahityangan.com

मैं तो गिरधर रे घर जाऊँ।
गिरधर म्हारो साँचो प्रीतम देखत रूप लुभाऊँ।
रैण पड़े तब ही उठ जाऊँ भोर हुयो उठ जाऊँ।
रैण बिना बारे संग रेवत ज्यूँ ज्यूँ ताहि रिझाऊँ।
जो पहिरावे सोई पहिरूँ जो देवे सोई खाऊँ।
जिस बेंचावे तीत ही बेचूँ बेचे तो बिक जाऊँ।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बलि जाऊँ॥

०००००००

सूरबी म्हारो कानूड़ो कलेजे री कोर।
मोर मुकट पीताम्बर सोहे, कुण्डल री झकजोर।
वृन्दावन री कुंज गली में नाचत नन्द किशोर।
मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित चोर॥

— मीराँ बाई

www.bhojpurisahityangan.com

अग्रज स्व० डॉ० टी०पी० चन्द के पुस्तक पर
एक विद्वान द्वारा दी गयी टिप्पणी का अंश

हमारे ज्येष्ठ भ्राता स्व० डॉ० टी०पी० चन्द जो गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में 'मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग' में अस्सी के दशक में 'रीडर' पद पर सेवारत थे, द्वारा लिखि गयी पुस्तक 'THE ADMINISTRATION OF AVADH [1858-1877]' जो विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक-वाराणसी से वर्ष 1971 में प्रकाशित हुई थी पर ख्याति प्राप्त बी.एच.यू.-वाराणसी के इतिहास विद प्रो० डॉ० होरलाल सिंह द्वारा दी गयी टिप्पणी का एक अंश प्रस्तुत है।(पुस्तक में कुल पृष्ठ 283)—

"

Dr. T. P. Chand's book provides a full-length account of the administration of Avadh from 1858 to 1877. He has dealt with all important aspects of administration and the changes that took place under British rule. The study is based on primary sources and affords ample evidence of the author's industry and maturity of

www.bhojpurisahityangan.com

contribution to our knowledge of the subject by producing a well-documented, balanced and competent study of British administration in Avadh.

Banaras Hindu University, H.L.SINGH
October 30, 1971

❖

www.bhojpurisahityangan.com

६

भूमिका-खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

४२

कचरस की मिठास वाली कथा-कृति 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल'

-डॉ० मधुर नज्मी

''.....इंजीनियर राजेश्वर की औपन्यासिक कृतियों 'एक कहानी की आत्मकथा', 'एक कहानी बीच में है' 'जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ?' 'गाँव से शहर जब आ गये' 'सुख जागे दुःख भागे' 'जिस्म से रूह तक रौशनी रौशनी', सरकार 'शाह गोला दीवान' दरगाह शरीफ निज़ामाबाद, आज़मगढ़ की ऐतिहासिक संबद्धता से भरपूर, शोध-परक पाण्डुलिपियों तथा 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल' को पढ़कर, मैंने यह बराबर महसूस किया है कि राजेश्वर जी अपने तरीके के नायाब, साधक कथाकार हैं। संकोची कुछ इतने कि इतना सारा कुछ सार्थक लिखने के बावजूद किसी से यह ज़ाहिर नहीं होने दिया कि वे भी कुछ लिखते हैं। दर हक़ीकत साहित्य में इनकी उम्र 20 से 25 वर्षों की है। इन कहानियों की संरचना में एक उम्र, एक अवस्था की रंगिमा, भँगिमा और मधुरिमा है जिसे रूमानी कहा जा सकता है। यह अपने समय के साथ इन्साफ है। अवस्था के साथ ईमानदारी, रूहानी सृजना-कृति ढँकने में नहीं खोलने में है। दरगाहों-शक्ति पीठों से जुड़े हुए व्यक्ति के पास, छुपाने के नाम पर कुछ भी नहीं होता। इंजीनियर राजेश्वर सत्यप्रिय, न्यायप्रिय, फ़क़ीर मिजाज़, कुशल प्रशासनिक अधिकारी हैं। सादगी इनके शालीन व्यक्ति का गहना है। राजेश्वर की कहानियों में 'कचरस की मिठास' है। कहानी कहने की शैली, शब्दों को अपने तरीक़े से नचाकर-घुमाकर पाठकों को अपनी संवेदना तक पहुँचाकर प्रभावशाली अन्दाज़ में अपनी जादूबयानी से बाँध लेने में राजेश्वर को महारत हासिल है। किसी भी वैचारिक मुद्दा को कहानी की शक्ल में ढाल देना, इनकी अपनी अलहदा कला है। इनकी कहानी का लहजा, अदबी, गुफ़्तगू का अन्दाज़ अनोखा है। यही कारण है कि इनके समकालीन कथाकार इनकी अभिव्यक्ति-शैली को छूकर भी नहीं छू पाते हैं। कहानी की अन्तः संरचना में और कथाकार की अपनी ज़िन्दगी की पर्तों में झाँकने पर एहसास होता है कि इनके तार रूहानी रूमानियत से गहरे जुड़े हुए हैं....''

❖

www.bhojpurisahityangan.com

४३

जिनिगिये कहनी हऽ

-प्रो० प्रभुनाथ सिंह 'मयंक'

जिनगी कऽ दूबि हरियाइल नावैं कऽ एगो किताबि बा। एकर लेखानिहार हउवन राजेश्वर बाबू। पढ़ल-लिखल मनई उनके "राजेश्वर इंजीनियर" कहे लैं। ऊ जल निगम विभाग में "अधिशासी इंजीनियर" हउवन। उनके मन में गाँव-जवार, बिना छल-कपट वाला मनई कऽ जिनिगी, गाँवे के लोगन कऽ साफ-सुथरा बेवहार, सीधा-साधा मन, उहाँ समय-समय पर पैदा होखे वाली समस्या, ओकरे समाधान कऽ उपाय बरोबर उमड़ल-घुमड़ल करेला। रजेसर बाबू गाँव-देहात क मनई हउवन। एही नाते ऊ समाज के जेवन-जेवन रूप देखले हउवन, ओके जथारथ में कहनी बनाइके लिखले हउवन। उनके मन में ई पीर बरोबर उठेले की गाँव कऽ पहिचान मरजाद, परम्परा धीरे-धीरे ओझल होत जात ह। ओकरी जगह पर नगर-महानगर कऽ पेंच भरल बिचार, बेवहार भोगी आचरन, बुद्धी क ढकोसला, देखावा, असान्ती, उदबेग, इरखा, डाह, घमण्ड आ जड़ता जगह पावत चलि जाति ह। पुरनकी मरजादा धीरे-धीरे मिटत जाति ह। एही कुल के लेके रजेसर बाबू कइगो उपन्यास लिखलन, जेवने से उनकर बड़ी बड़ाई भइल। उनके नावैं कऽ चारो ओर डंका पिटाइल आ बिचार करे वाला लोग ई कहै लगलन, चरचा करै लगलन की प्रेमचन्द के बाद कथा-कहानी के मामिला में रजेसर बाबू सही वारिस हउवन।

'जिगिगी कऽ दूबि हरियाइल' नावैं से जेवन उनकर किताब बा, ओके हम बाँचि भइलीं। ए किताब में ऊ किसिम-किसिम कऽ कहनी लिखले हउअन। 'सुरता पहलवानी कऽ, सठ सुधरहिं सत संगति पाई, सगरो जिनगी गइल बिलाय, मदद अकारथ ना जाला, जो जस करै सो तस फल चाखा, नारी के मन नारि न भावै, छोटहर मनई कऽ लमहर बाति, बियाहे कऽ सिलसिला, सेवा कऽ फल, टेलीफोन बतवलस राज, उनकर लिक्खल ए किताब क कहनी हईं। लइका-लइकी क बियाह उनकर पढ़ाई-लिखाई, उनकर बढ़ियाँ बेवस्था कऽ होसिला सबके मन में होला लेकिन दहेज क परथा आ आपन गरीबी कऽ कठिनाई जिनिगी के सम्हने पहाड़ होइ के खड़ी होइ जाले। समाज में बुजुरूग लोग ए कुल मामिला में मददगार होइके मनके तीहा देलैं, आ समाधानों करैलें। केहू-केहू के मन में इच्छा होले कि हमरे बेटा होत त ओहि से हमार बुढ़ापा कटी, आ निस्तारो होई। एकरे बदे मनई का-का ना करेला तियाग तपेस्सा से अगर मन कऽ चाहत हो गयल त अदमी खुस हो जाला। इकुल बात रजेसर बाबू कऽ लिक्खल 'जिनगी कऽ दुबि हरियाइल', बियाहे कऽ सिलसिला, सेवा कऽ फल, सगरो जिनिगी गइल बिलाय, नावें वाली कहनी में बिना कउनो परपंच के जस के तस उतर गइल ह। गाँव जवार में पहलवानी कइले कऽ बहुत

www.bhojpurisahityangan.com

सउख होले। एकरे बदे मनई कब्बो-कब्बो गाँव छोड़िके बहरे चलि जाता, जहाँ जाड़के दांव-पेंच सिखेला आ नावो कमाला। इहो गाँव क एगो चलन ह। ए बात के कहनिहार सुरता पहलवानी कऽ नावैं वाली कहनी में उतारि देहले हउवन।

साँच-साँच पूछा त असली लोकतन्तर आ परजातन्तर गउवैं में देखाला। धोबी आ ओकरे गदहाकऽ चरचा कइले के बहन्ना रजेसर बाबू ई बात समाज के सम्हने ले आयल हउवन कि जेके बड़मनई लोग छोट समझै लैं उहो अदमी, भले धोबी होखो, बाकिर आपन काम कइके रमचरचा करेला, आ समाज में अपने गुन के नाते बड़ाइयो पावेला। छोटहर मनई कऽ लमहर बाति नावें वाली कहनी में मदन के गदहा क चरचा ह। ओ गदहा कऽ जथारथ खाका कहानिकार खिचले बाड़न। बड़मनई खातिर हाथी-घोड़ा होई, बाकिर मदन धोबी खातिर त उनकर गदहवे खेवनहार बा। ए कहनी के साथे-साथ कहनिकार सधारन मनई के जीवन की जड़ तक ओकर भाव-बिचार, बेवहार आ मन क विज्ञान पकड़े खातिर बहुत गहराई तक उतर गइल हउवन। 'सेवा कऽ फल' में उर्मिला नाम क लइकनी जवन मेहमानन क सेवा कइले रहल ओकर पकल आ मीठ फल ओकरे बियाह के रूप में सहजै में मिल गयल। कब्बो-कब्बो बरतिहा खाये बइठै लँ त केहू-केहू के पत्तल पर ठीक से समान पहुँचेला, कहिं नहिओ पहुँचेला, बाकिर जे नदान होला देखावा करेला उ मीन-मेख निकारि के, लइकपन कइके, नीचता पर उतारू होइके निन्दा कइले पर तूलि जाला, आ तिल कऽ ताड़ बना देला। आ सोर कइ देला कि बिटिया वाला ठीक से खियउलस ना, भूखि ना मिटाइल, एकरे पास कुछ हइयै ना ह। ए तरह क लइकपन आ नदानी बरतिहन में से केहू-केहू कइ देला। बाद में बुजुरूग लोग बिगड़ल बाति बनाय लेलैं आ इज्जत सम्हारि लेलैं। ए बाति क कहानिकार 'लइकपन' नावें वाली कहनी में लिखले हउवन। कहनी क चेहरा माथा कइसन ह, ओम्मे जिनिगी कऽ रस कउने तरह से भरल ह, सुख-दुख, जीवन कऽ अनुभव, समाज कऽ चलन, सवाल आ ओकर समाधान सही तरह से उतरल ह की ना, ए बात क भी मोल कयल जाला। जउने चरित्तर से कउनो बेकत आ चाहे कउनो समाज क तसबीर उतारल जाले, ओकरे कयास क भी विचार होला। परकिरित के रूप-रंग, वातावरण, परम्परा, खान-पान, रहन-सहन, बात-बेवहार, कपड़ा-लत्ता भी परखल जाला। आपस में जवन बात-चीत होले, ओहू के ढंग कऽ चरचा होले। कहनिकार थोरिकै समय में जीवन कऽ जवन सनेस देला, ओकरे परभाव के भी आँकल जाला। ए कुल कसौटी पर रजेसर बाबू कऽ ई कहनी संगरह एकदम खरा उतरल ह। भासा, सबद क परयोग, मुहाबरा, कहनी कहे कऽ ढंग पढ़निहार के मन के बरबस खींच लेला।

हमके ए बात क पूरा भरोसा ह की जब भोजपुरी कहनी क इतिहास लिखल-पढ़ल जाई, त ओमे कहनिहार रजेसर बाबू जरूर पहिलियै कतार में पहिलवैं आपन जगह पाइ जइह।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

४४

अपने माटी से जुड़ाव कऽ रोचक गाथा हऽ ई संकलन

-डॉ० वशिष्ठ अनूप

भोजपुरी आपन बोली-बानी हऽ ई एक बहुत बड़े क्षेत्र के लोगन क मातृभाषा ह। एके अबहिन भाषा क दर्जा भले ही न मिलल हो, लेकिन एक बोले वाले लोगन क संख्या तमाम भाषा-भाषिन से ज्यादा बा। एके बोले वाले भारत सहित दुनिया के कई देसन में फइलल बाटें। ए सबके बावजूद विडम्बना ईहऽ कि भोजपुरी में लिखित साहित्य ओहू में गद्य साहित्य क काफी अभाव ह। एकर बड़ा कारण ई हवे कि भोजपुरी भाषी साहित्यकार आपन सगरो रचनाकार्य खड़ी बोली हिन्दी में करे लें। मजेदार बाति ई ह कि ई सगरो साहित्यार अपने घर-परिवार में भोजपुरी में बतियावेलं अउरी घर से बाहर निकलते खड़ी बोली बोले लगेलं। एहसे कहीं न कहीं हीनता-बोध, क भावना झलकेले। ई भावना देश के दूसरे भाषा-भाषिन में नाहीं दिखाई पड़े ले।

इंजी. राजेश्वर क रचनाशीलता ए बाति के खातिर विशेष रूप से सराहे लायक ह कि खड़ी बोली में कई बढ़िया कहानी-उपन्यासन के रचना के बाद ऊ अपने मातृभाषा भोजपुरी में रचनारत हो गइलँऽ। राजेश्वर जी क भोजपुरी से ई जुड़ाव अपने धरती, जड़ परम्परा, संस्कृति अउर ओकरे रस, गन्ध, रूप-रंग, उर्वरता अउर जीवनी शक्ति से जुड़ाव ह, अपने से जुड़िके कवनो रचना या रचनाकार कालजयी हो जाला।

ए कहानी संग्रह में कुल्हि बारह कहानी संकलित बाटीं। ए कहानिन क विशेषता सरलता आ विश्वसनीयता ह। एमें कहीं से चउँकवले, चमत्कृत कइले या बहुत दूरक कौड़ी ले अइले के कसरत नाहीं भरल बा। सब कुछ बहुत आसान आ आपन जान पहिचान लगेला। अपने गाँव जवार, रीति-रीवाज अऊरी घर समाज में रोज-रोज होखे वाली घटना, शादी-बियाह, ईर्खा-द्वेष, प्रेम-लगाव, अच्छाई-बुराई आदि क बड़े आत्मीय आ रोचक ढंग से वर्णन भइल बा। ए कहानिन के पढ़िले अपने परम्परा के अच्छाई के प्रति ललक पैदा होले आ आजुके समाज से धीरे-धीरे आदर्श रीति-रिवाजन के गायब भइले प मन में दुख भी उत्पन्न हो जाला।

संकलन के पहिली कहानी "सुरता पहलवानी क में इ बतावल गइलबा कि कवनो लक्ष्य तक पहुँचै खातिर जुनून के हद तक लगन, निष्ठा, समर्पण आ प्रयत्न क होखल जरूरी होला।"

www.bhojpurisahityangan.com

'लइकपन' कहानी परम्परागत शादी-विवाह के अच्चाई-बुराई क रोचक वर्णन भइल बा। 'सठ सुधरहिं सत्संगत पाई' सत्संग आ कन्यादन क महत्व बतावल गइल बा जवने के परिणामस्वरूप सौतेली बेटी ब्यूटी के अपने पास से हमेशा दूर रक्खे वाली विमला के मनोभाव में परिवर्तन हो जाला अउर ऊ ब्यूटी के प्यार-दुलार करे लगेली। 'सगरो जिनगी गइल बिलाय' बुरी संगत का बुरी आदत उत्पन्न होखे वाली दुर्गति का सुन्दर वर्णन भइल बा। 'मदद अकारथ ना जाला' में चिड़िया आ चींटी तथा राजा द्वारा नया मंत्री के तलाश के कहानी के उदाहरण से ई बतावल गइल बा कि दूसरे क मदद करे वाले प्राणी क जीवन सदा सुखी रहेला। 'सेवा क फल' कहानी भी एही भावभूमि क हऽ। सेवा आ परोपकार करे वाले के ओकर बेहतर फल जरूर मिलेला। ई कहानी मनोरंजन के दृष्टि से भी बहुत नींक बाटी। 'जो जस करहिं सो तस फल चाखा' में शिव पार्वती अउर पुनर्जन्म के कथा के माध्यम से ई कहल गइल बा कि अच्छा करम करे वाले के अगले जनम में बेहतर जीवन मिलेला।

'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल' आजु के समाज के हिसाब से ए संकलन क सबसे प्रासंगिक कहानी हऽ। विधवा बहू क अपने छोटे बेटा के साथे फिर से बियाह करावे वाले छोटक सिंह जइसे लोगन क आजु के समाज में बहुत आवश्यकता बा। ई कहानी अउरी प्रेरणा दे सकेले। 'छोटहन मनई कऽ लमहर बाति' कऽ कथा-नायक मदन धोबी हवँ। मदन धोबी जइसन छोट जाति में पैदा भइले के बावजूद अपने परिश्रम, आचार-विचार, अध्ययनीलता, आध्यात्मिक अभिरुचि आदि के कारण पूरे गाँव-जवार में सबकऽ प्रिय आ आदरणीय हवँऽ। मदन क अपने गदहा से लगाव भी मजेदार हऽ। ई कहानी ए तथ्य के भी उजागर करेले कि गाँव के ऊँच जाति के लोग भी छोट जाति के बड़े-बुर्जुगन के चाचा, काका, बाबा कहिके सम्मानपूर्वक बोलवलें। ए दृष्टि से गाँव के संस्कृति के ई कहानी खूबसूरत ढंग से प्रस्तुत करे ले। 'बियाहे क सिलसिला' बियाह खोजले आ तब कइले के सुन्दर रोचक विवरण से परिपूर्ण कहानी ह। 'नारी के मन नारी नहिं भावे' एक विचार प्रधान निबन्ध है, जवने में अनेक उदाहरण देके ई बतावल गइल बा कि नारी ही नारी का दुश्मन होले।

राजेश्वर जी क ई किताबि अपने माटी के मिठास आ सुगन्ध से जोड़ले क एक बेहतरीन अउरी प्रशंसनीय परिणति हवे। एम्में कहानी कहले के ढंग भी रोचक आ मजेदार बा। अपने बोली अधिकाधिक समझ आ प्रयोग ए संकलन के विशिष्ट बनावेला। ए साहसिक आ उल्लेखनीय लेखन के खातिर हम रचनाकार के बधाई आ शुभकामना देत हईं, आ ई उम्मीद करत हईं कि ए संकलन क भोजपुरी समाज में हृदय से स्वागत होई।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

४५

मूल्यों के आधार पर कालजयी हैं ये कहानियाँ

-वेद प्रकाश उपाध्याय

साहित्य सृजनशीलता का पर्याय माना जाता है। सद्-साहित्य ही काल-खण्ड के धरातल पर कालजयी सिद्ध होता है। सम्प्रति साहित्य के नाम पर आज जो सृजन हो रहा है, उसमें वैचारिक मूल्यों की वह सघनता नहीं है जो अतीत काल में लिखे गये भारतीय बाङ्मय में दिखलाई देती है। इस अर्थ में हम कह सकते हैं कि आज का साहित्य सृजन यथार्थ और आदर्श के सामन्जस्य से भटक रहा है। यद्यपि आज साहित्य की विभिन्न विधाओं में विपुल कवि-कर्म हो रहा है, किन्तु अर्थवत्ता की दृष्टि से ये रचनाएँ दीर्घजीवी नहीं हो पा रही हैं। विधा तो मात्र अभिव्यक्ति के लिए एक साधन है। इस दृष्टि से गद्य और पद्य पृथक हो सकते हैं किन्तु सामाजिक जीवन का वास्तविक अनुगूँज जिस भी विधा के माध्यम से पाठकों के समक्ष आती है, वही सृजन श्लाघनीय माना जाता है। उपन्यासों में उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता प्रखर रूप से मुखरित हुई है। भोजपुरी कहानी का यह पहला संकलन अपनी पूर्णता के साथ प्रकाशित हो रहा है। पुस्तक में संग्रहीत इन भोजपुरी कहानियों में अपनी माटी की गन्ध, सुगन्ध बनकर पाठकों को आकर्षित करेगी, ऐसा मेरा आत्मिक विश्वास है।

संग्रहीत कहानियों में जीवन-मूल्यों की एक झलक स्पष्ट दिखाई देती है। अतः यह स्वीकार्य सत्य है कि प्रत्येक कहानी में लेखक की एक अपनी वैचारिक ऊर्जा है, जिसने कहानी का रूप ग्रहण किया है। इनमें मात्र मनोरंजन की भावना नहीं है, प्रत्युत ये कहानियाँ सामाजिक सरोकारों से सम्बद्ध हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कहानीकार ने कहानी कहने के लिए कहानी नहीं लिखी है बल्कि जीवन के उतार-चढ़ाव के साथ घटित अनुभूतियों को सरस ढंग से अपनी शैली में प्रस्तुत कर दिया है। यही कारण है कि कहानी पाठक के मन में एक गहरी पैठ के साथ प्रवेश करती है। उनके पात्र अपने परिवेश के मूल्यों के प्रति सतर्क दिखाई देते हैं। इन भोजपुरी कहानियों में ग्रामीण संस्कृति के साथ पात्रों का आत्मीय लगाव उनकी जीवन्तता को बनाये रखता है। सधी हुई भाषा का प्रयोग पूर्णतः पात्रों के मनोवैज्ञानिक स्तर को स्पर्श करता है। सपाट शैली में पात्रों द्वारा प्रस्तुत वक्तव्य स्वयं उनके व्यक्तित्व को परिभाषित करते हैं। अभिजात्य वर्ग के पात्रों की तरह उनमें छल-छद्म नहीं है। यही कारण है कि पात्रों के प्रति पाठक के मन में एक सहज आस्था जन्म लेती है। यही आस्था ही राजेश्वर सिंह की कहानियों की सफलता का मूल उपजीव्य है।

www.bhojpurisahityangan.com

बेबाक कथन और सपाट बयानी ही कहानी को गम्भीरता प्रदान करती है। इससे पाठक को अनावश्यक कृत्रिमता का बोझिल दबाव नहीं सहना पड़ता है। सहजता के लिए लेखक को सामाजिक जीवन की परख होनी चाहिए। इस अर्थ में सजग लेखक अपने समय के सामाजिक सच्चाइयों से केवल साक्षात्कार ही नहीं करता, प्रत्युत कुरीतियों से जूझने का प्रयास भी करता है। सजग कहानीकार खुली दृष्टि से अपने समाज को जाँचता-परखता है। उसकी परख ही उसकी लेखकीय पूँजी होती है। पुस्तक की संग्रहीत कहानियों में लेखक का जुझारूपन प्रतिफलित हुआ है। 'सगरो जिनगी गइल विलाय', 'मदद अकारथ ना जाला', 'सेवा कऽ फल,' आदि कहानियाँ उदाहरण के रूप में ली जा सकती हैं।

इधर मानव जीवन की मनोवृत्ति को आधार बनाकर कहानी लेखन की परम्परा बढ़ती जा रही है। त्रास, कुण्ठा एवं हताशा, विवाह विच्छेद दाम्पत्य जीवन की विफलता आदि को केन्द्र में रखकर कहानी लेखन की परम्परा चल पड़ी है। यह भारतीय साहित्य एवं परम्परा के प्रति एक अशुभ संकेत है। आज लिखी जा रही बहुसंख्य कहानियों में जीवन के प्रति संघर्ष एवं आत्मविश्वास की भावना निर्बल होती जा रही है। ऐसे संक्रमण के समय में राजेश्वर की लेखनी अपने धरातल पर टिकी हुई है। समय के लम्बे काल खण्ड में ये कहानियाँ निश्चित रूप से मूल्यों के आधार पर कालजयी बनी रहेंगी। ऐसा इस लिए कि वही सृजन कालजयी होता है जो यथार्थ अथवा केवल यथार्थ युग के परिवर्तित मूल्यों के साथ बहुधा अर्थहीन हो जाता है। जीवन के खुरदुरे यथार्थ को वाणी देना ही लेखकीय ईमानदारी मानी जाती है। राजेश्वर की भोजपुरी कहानियों में यह ईमानदारी कूट-कूट कर भरी है।

राजेश्वर की इन भोजपुरी कहानियों में अपनी मातृ भाषा के प्रति अतिशय व्यामोह एवं अपनी मिट्टी के प्रति सहज अनुरक्ति नैसर्गिक रूप से विद्यमान है। अपनी बोली में लिखा हुआ साहित्य अंचल विशेष के पाठकों को सरसता एवं आत्मीयता का बोध कराता है। अपनी बोली में जियादः कुछ कह लेने की संभावना एवं प्राकृतिक जिंजीविषा आद्यन्त बनी रहती है। ऐसे लेखन के प्रति पाठकीय संचेतना प्रायः लेखक के साथ जुड़कर एकाकार हो जाती है। इस प्रकार की भावना को जाग्रत कर देना ही लेखक की सफलता का श्रेय होता है। इस निकर्ष पर संग्रहीत कहानियों को भाषा भाव एवं शिल्प की दृष्टि से सफल कहा जा सकता है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

४६

दो कृतियाँ-जमीन से जुड़ी कथा

-डॉ० जयनाथ मणि त्रिपाठी

दो कृतियाँ "जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिंदगी ?" और "एक कहानी बीच में है" से गुजरते हुए या पूरी तरह से गुजर जाने पर कई सवाल उठ खड़े हुए हैं। इन कृतियों के कथा-कृति होने में तो कोई संदेह नहीं है। संकट यह जरूर है कि इन्हें लघुउपन्यास माने या फिर लम्बी कहानी। यह इसलिए नहीं कि ये कलेवर में छोटी हैं-सौ-पचास-पन्नों में फैली मोटी-पतली होना तो सर्वथा दूसरी बात है। दोनों ही कृतियों में उकेरी गई सामाजिक विसंगतियाँ, संवाद, सम्भोग और उनकी स्थितियाँ इकहरी, सपाट तथा खुरदरी है। जिंदगानी की प्रेमा और "एक कहानी बीच में है" की चन्द्रा दो नारी चरित्र हैं। दोनों का कथ्य, संवाद और परिणति लगभग एक-सी है, प्रेमा चरित्र-च्युत है। चन्द्रा भी आचरणहीन है। दोनों नारी चरित्र ग्रामीण परिवेश से सीधे उठाये गये हैं। बहुत साफ और सहज ढंग से लेखक ने कहानी को पकड़ा है। पकड़ा ही नहीं इसे आगे बढ़ाया है। ऐसा करते हुए घटना बहुरूप, जटिल संवाद और अनावश्यक नाटकीय मोड़ देने की बजाय इसे सीधा, सहज रखा है। इस सीधी चाल से यहाँ कथा-रस उत्पन्न किया है, एकरसता तोड़ी है। कथन-कौशल को बरकरार रखते हुए संप्रेणषीय बनाया है। यहीं कृति की सार्थकता सामने आती है। उलझे कथ्य, अनगढ़ शिल्प, बोझिल संवाद और अन्तहीनता, कथा-वस्तु का लोप अनावश्यक लम्बी ब्योरेबाजी इस दौर की कहानियों और उपन्यासों की विशेषता बन गये हैं और इन सबके बीच पाठक मारा जाता है। "जिन्दगानी ये कैसी तेरी जिन्दगी ?" या फिर "एक कहानी बीच में है" शुद्ध रूप से आम जन की कहानी है, आम जन के लिए लिखी गई है। इसीलिए कहानीपन की शर्त बखूबी पूरी की गई है। कथ्य-शिल्प-संवेदना और संप्रेषणीयता को लेखक ने बखूबी बरकरार रखा है। प्रेमा और चन्दा के जरिये जिस नारी चरित्र को उभारा गया है। दरअसल इसे नंगे और भोड़े रूप में इसका सामाजिक स्वरूप है। उस पर गहरी चोट की गई है और एक लेखक अगर सही स्थान पर सटीक वार करता है तो गतिरोध टूटता है। विसंगति मिटती है। एक नवोन्मेष होता है। बेशक लेखक ने एक उपन्यासकार का दायित्व कथा-वस्तु, कथ्य, शिल्प, संवेदना और संप्रेषणीयता के स्तर पर ही नहीं, भाषा के स्तर पर भी सहजता का परिचय दिया है।

www.bhojpurisahityangan.com

कोई अन्तर नहीं आता यदि इसे लघु उपन्यास या लम्बी कहानी माना जाय। शिकायत भी हो सकती है, कथ्य के दुहराव अनगढ़ शिल्प, सपाट शैली और लंगड़ी संवेदना तथा संप्रेषणीयता को लेकर। लेकिन एक बात बहुत साफ है कि लेखक ने समस्या को जिस सफाई, सशक्तता से उठाया, कथा का ढाँचा खड़ा किया है, बात को बेबाक ढंग से कहा है-ये सब आज कथा-कृति की सहजता और सही संप्रेषणीयता के लिए जरूरी बन चुके हैं।

❖

नथनी

एक बार सन्त कबीरदास जी हरि भजन करते हुए एक गली से निकल रहे थे। उनके आगे कुछ स्त्रियाँ जा रहीं थीं। उनमें से एक स्त्री की शादी कहीं तय हुई होगी तो उसके ससुरालवालों ने शगुन में एक नथनी भेजी थी। वह लड़की अपनी सहेलियों को बार-बार नथनी के बारे में बता रही थी कि नथनी ऐसी है वैसी है। ये विशेष उन्होने मेरे लिए भेजी है। बार-बार बस नथनी की ही बात।

उनके पीछे चल रहे कबीर जी के कान में सारी बातें पड़ रहीं थीं। तेजी से कदम बढ़ते कबीर उनके पास से निकले और कहा-

नथनी दीनी यार ने, तो चिंतन बारम्बार ।
नाक दिनी करतार ने, उनको दिया बिसार ।।

सोचो यदि नाक ही ना होती तो नथनी कहाँ पहनती। यही जीवन में हम भी करते हैं। भौतिक वस्तुओं का तो हमें ज्ञान रहता है, परन्तु जिस परमात्मा ने यह मनुष्य देह दी है और इस देह से सम्बन्धित सारी वस्तुऐं, सभी रिश्ते-नाते दिए, उसी को याद करने के लिए हमारे पास समय नहीं होता।

www.bhojpurisahityangan.com

४७

ये कहानियाँ, साहित्यिक कहानियों के परिष्कार के पूर्व की कहानियाँ हैं

-सुरेन्द्र कुमार सिंह 'चांस'

इंजीनियर राजेश्वर की भोजपुरी कहानियों से गुरजते हुए ऐसा लगता है कि कहानी सुनी जा रही है। बात पठनीयता से अलग रोचकता की है जो एक अल्हड़ सहेली की तरह उघड़ती चली जाती है। एक संदेश मिला है एक जानकारी मिलती है, एक जागरूकता मिलती है एक सुख मिलता है। इन्हीं परिवेशों से भरा पड़ा है, उनका कथा इतिहास। जरूर इसमें कुछ भिन्नता है साहित्यिक कहानियों से। यह भिन्नता ही इंजीनियर राजेश्वर की विशिष्टता है और अधिक सार्थकता है। उनकी रचना प्रक्रिया बहुत धीमी गति से नहीं चलती है-बस सीधे विषय वस्तु को प्रत्यक्ष करा देती है। ऐसा होते समय उसकी रोचकता खत्म नहीं होती है-और तब तक आ जाता है कहानी का अन्त-''तब भी यह कुछ कहती रहती है।'' ''बियाहे क सिलसिला''। पढ़िये-तो आज के दहेज दानव की छलछाप के बीच एक सुखद अनुभूति करती है, पर दहेज नामक दानव छू भी नहीं पाता है बियाहे के सिलसिले को। सुरता पहलवानी का चरित्र अपनी धुनि में इतना रम जाता है कि सामाजिक एक पारिवारिक बन्धनों से अलग हो जाता है-और यह चरित्र है। मात्र कथा का पाठ नहीं होता उनका चरित्र-उनका चरित्र हमारे समाज के विकास को करता हुआ पाया जा सकता है।

संग्रह में प्रकाशित प्रत्येक कहानी अपनी-अपनी विशिष्टता के साथ पाठक से रूबरू होती है-कितना मुश्किल है आज के दौर में विश्वास का एक बिन्दु तलाश पाना। कितना मुश्किल है आज के दौर में आशा को बचाये रखना पर ये मुश्किल आसान बनाती हैं इंजीनियर राजेश्वर की कहानियाँ-'मदद अकारथ ना जाला' जहाँ आज के कपरदूब महौल में सदा रखवाला का संदेश देती है-वहीं जो जस करहिं सो तस फल चाखा हमें अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का बोध कराती हैं।

जहाँ तक कहानियों की परम्परा की बात है-तो ये कहानियाँ साहित्यिक कहानियों के परिष्कार के पूर्व की कहानियाँ हैं-कहानी को यहाँ तक लौटना पड़ेगा-क्योंकि यह आज के मनुष्य को जरूरत है। कुछ सोचने को विवश करती हैं, कुछ परिणाम दे जाती हैं। राजेश्वर की कहानियाँ पाठक को कहानी के नतीजे की मुश्किलों से मुक्त करते हुये अपना स्थान बनायेंगी ऐसा मेरा विश्वास है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

४८

जिनिगी में सुधार बदे ई कहानी रचल बा।

-जनमेजय पाठक

इं. राजेश्वर कऽ लिखल भोजपुरी कहानी-संग्रह पढ़ि के मन बड़ा गदगद भइल। बहुत दिन बाद भोजपुरी माटी में रचल-बसल अउरी कसल भाषा जउने में लेखक के मन कऽ उहै भावना देखाइल जवन कबौ भगवान राम के मन में वनवास से लौटले पर उपजल रहल। बहुत दिन के बाद लवटले पे ऊ अपने साथ में रहै वाले लोगन से कहलैं कि इहै हमरे जनम कऽ माटी बा जहाँ हमार माई हमके जनम दिहलीं। इहवैं खाइ-खेलि के हम बड़ा भइलीं और हम एही माटी के गन्ध में बनल रूख से अधर्मिन के मारै में सफल भइलीं। ई माटी हमरे बदे सरगौ से बढ़ि के हौ। एकरी रक्षा खातिन हम जान दै सकीला बाकि एह पर दूसरे कै रंग ना चढ़ै देब। कहानी कऽ भाषा अउर ओकर भाव पढ़ि के ठीक वही तरह हमके लागै लागल कि सचमुच इं. राजेश्वर कऽ कौनो पुरूखा इहाँ जरूर रहल हँउऐं। वोह पुरुषन के ऊ जानत हवैं की नाय ई हम नाय बताय सकित। बाकिर एतना जरूर हौ कि इनकर पुरूखा इहाँ सही में रहल होइहैं। तबै त उनके मन में सुतल सात जनम कै गियान येहि माटी के गन्ध से जागल।

जहाँ तक एह कहानिन कै भाव-सीख बा ऊ बड़ी व्यवहारिक और एह माटी में रहै वाले लोगन के जीवन कऽ स्वाभाविक चित्रण बा। एहि कहानिन के पढ़ले पर इहौं के आबोहवा में रहै वाले लोगन के जिनिगी औ बहे जिनिगी के अरमान कै गियान होला। अपने जिनिगी के बढ़िया बनावै खातिर जवन-जवन मन में भाव बनावै ले ओ ओके जैसे-जैसे कइले ओकरे से मिलै वाले फल कै जवन हाल होलै ओ सब कै खुलासा कहानी में कइल बा। हमार आपन बिसवास एह कहानिन के पढ़िके ई भयल कि हमरे गाँव-गिराँव, जिला जवार में रहै वाले लोगन एकै जरूर पढ़िहैं आ एहमन अपने जिनगी कै कौनों गलती होई तऽ झाँकि के देखिलीहैं अउर सुधार कै राह धइ लिहें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

४९

सुनने और सुनाये जाने वाली कहानियों का नियमन

-बृजेश कुमार सिंह

हमारे समय की कहानियाँ कही न कहीं वैश्वीकरण की शिकार हैं। आज कहानियों के माध्यम से जहाँ लोग सम्बन्धित विषयों पात्रों को दूर रखकर महानगरीय संस्कृति पर आधारित माहौल पर कहानियाँ लिखी जा रही हैं। यही कारण है कि कहानी का विशेष पाठक वर्ग इससे दूर होता जा रहा है। भारत वर्ष में जहां २४० भाषाएं और ९०० से अधिक उपभाषायें हैं जो अस्तित्व के संकट से भी जूझ रही हैं। ऐसे समय में वरिष्ठ कथाकार इं. राजेश्वर द्वारा लोकभाषा भोजपुरी में कहानियाँ लिखकर कहीं न कहीं भविष्य में विदेशों के म्यूजियम में देखने मात्र की स्थिति से निपटने की कवायत में एक अहम कड़ी साबित होगी। कथाकार की भाषा शैली लोक दृष्टि से ऑचलिक एवं सामान्य रूप में प्रयोग होने वाले शब्दों द्वारा अत्यन्त प्रभावशालीनी है क्योंकि इससे कहीं भी छेडछाड़ न करते हुए कथाकार ने सुनने और सुनाये जाने वाली प्रचलित विधा के रूप में ही कहानियों का नियमन किया है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

'कल्यान कऽ जुगुति'-मूल्यांकन आवे वाला समय करबे करी

-डॉ0 विवेकी राय

'काव्यमुखी साहित्य अकादमी' से प्रकाशित इंजीनियर राजेश्वर कऽ अइसन महत्त्वपूर्ण कृति बा, जवना कऽ केतनो प्रसंसा कइल जाव ऊ कम्मो होई। एहमें रचनाकार का पारखी दृष्टि कऽ दाद देवही के पड़ेला। येह संकलन में संकलित कुल्हि निबंध एक से बढ़ि के एक बाड़न स, जवना के अगर अदिमी अपना जिनिगी में उतार लेव तऽ ओकर जिनिगी धन्य हो जाई।

वइसे तऽ भोजपुरी में लिखल हमरा सामने अनेक रचना पढ़े-देखे, समझे आ समीक्षा लिखे खातिर अइली स, आ उनहन पर हम खूबे जम के लिखबो कइलीं बाकिर आज येह बात के कहला में हमके कवनो संकोच नइखे बुझात कि अब तक कउनो कृति पढ़ि के ओतना संतोष ना मिलल या खुसी ना भइल जेतना कि येह कृति के पढ़ि के भइल। भोजपुरी-साहित्य का क्षेत्र में ई कृति एगो मील कऽ पत्थर बा।

येह निबन्ध-संग्रह में निबंधकार का अपना जिनिगी के कटु अनुभव से मिलल ज्ञान का दर्शन होला। वइसे त एहमें क कुल्हि बाइसो रचना एक से बढ़ि के एक प्रभावशाली बाड़िन स आ कउनो काटे-बरावे लायक नइखिन स बाकिर कुछ अइसन बाड़ी स जवन हमरा के बहुते प्रभावित कइले बाड़िन स, जइसे-'भगवान के पूजऽ हिरिदय से,' 'कल्यान कऽ जुगुति', 'सफल भइले कऽ जुगुति,' 'सुख कइसे मिली,' 'तनी इहो करीं,' 'साधु-संगत कऽ फल,' 'मनई के जिनिगि कऽ तनी-मनी दोष,' 'चाहीं जइसन व्यवहार अपना साधे, वइसन करीं दूसरा के साथे' आ दस तरह कऽ नौ-नौ बाति। हम समझत बानी कि इ रचना अउरियो लोगनि के निश्चिते नींक लागी। कारण, एहमें रचनाकार कऽ जीवन भर क अनुभव आ ओह अनुभव से मिलल निष्कर्ष येह रचनन में परगट भइल बा। येह कृति के महत्व के हम समझत बाड़ी कि केहू सहृदय पाठक नकार ना पाई आ एकर मूल्यांकन आवे वाला समय करबे करी।

www.bhojpurisahityangan.com

लिखला-पढ़ला से काफी दूर रहे वाला पेशा से जुड़ला कऽ बावजूद राजेश्वर एह प्रकार कऽ रचना कइके इ सिद्ध कइ देले बाड़न कि पेशा कउनो होखो अगर अदिमी लिखल-पढ़ल चाही त ऊ कहीं कुछ्छो क सकत बा। ओकरा खातिर कउनो काम मुश्किल नइखे। एगो कहावत बा कि 'जहाँ चाह उहाँ राह' जवन उनकरा पर बिल्कुल सटीक बइठत बा। येह संकलन का माध्यम से राजेश्वर भोजपुरी-साहित्य कऽ अवदान में आपन जवन अमूल्य आ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभवले बाड़न आ येह तरह क महत्त्वपूर्ण कृतिन कऽ रचना कइ के भोजपुरी साहित्य कोश के अक्षुण्ण भण्डार के नित्य समृद्ध कइ रहल बाड़न ओकरा चलते भोजपुरी-समाज उनकर ऋणि बा। आ उनकरा से येही तरह का कुछ्छो अउरी रचनात्मक अवदान पावे खातिर लालायित बा। ईश्वर उनकरा के स्वस्थ आ सक्रिय रखें इहे हमार कामना बा।

❖

मत भटकीं अपनी डगर से

मनई के चाही की भगवान के लगे पहुँचले कऽ डगर तय कइले अउ वोकरा मजबूती से पकड़ि के आगे बढ़े। एहर-वोहर बउड़िआये यानी भटके न। जवना मतिन छोट-छोट नाला अउर नदी से बहत-बहत बारिस क पानी समुन्दर में जाइके मिल जाला वोही मतिन सगरो मत-मतान्तर कऽ बतावल डगर अपना-अपना ढंग से घुमा फिराके भगवान तक पहुँचा देलन।

www.bhojpurisahityangan.com

५१

कुछ हमरियो ओर से

-गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश'

पिछिला चार दसकन से भोजपुरी साहित्य का सृजन में जवन तेजी आइल ओहि के परिणाम ह कि आजु भोजपुरी कवनो भाषा के साहित्य से बराबरी करेके बात करत बा। आज भोजपुरी का लगभग हर विधन में साहित्य रचा रहल बा। भोजपुरी के साहित्यकार अपना भाषा के शीर्ष पर पहुचाँवे में लागल बाड़न। कठिन श्रम तऽ भोजपुरियन के धरोहर ह, पहिचान ह। जब परिश्रम क के दूसरा भाषा के आगे बढ़ा सकेले, त आपन भाषा में काहे पीछे रहिहन। भोजपुरी आँठवीं सूची में शामिल होखे जात बा अउर भारतीय भाषा में स्थान मिल जाई। एह स्थान लायक ऊ अपना के सिद्ध क सके। एह खातिर जरूरी बा कि साहित्य-सृजन तेजी से हो। हर क्षेत्र में काम होखे ताकि विश्वविद्यालय में पढ़ावत का बेर इ सवाल ना आ सके कि भोजपुरी में हइ चीज भा एह विषय पर कवनो सामग्री नइखे। ई खुशी के बात बा कि भोजपुरी साहित्यकार एह दिशा में पहिले से जागरूक बाड़न। एह साहित्यकारन में इंजीनियर राजेश्वर जी के नामो शामिल बा।

इंजीनियर राजेश्वर जी साहित्य में भी 'इंजीनियर' शब्द के नाँव क आगे लगावे में कबों गफलत ना करेंलें। साहित्य में इंजीनियर शब्द के ढोवल पहिले तऽ हमरा नीक ना लागल बाकिर बाद में एह पर मनन भईल तऽ बुझाइल कि 'इंजीनियर' शब्द सार्थक बा, 'इंजीनियर' शब्द निर्माण के द्योतक ह। जहाँ भवन निर्माण होला, जहाँ सड़क निर्माण होला, जहाँ सेतु निर्माण होला, जहाँ मशीन निर्माण होला, जहाँ ट्रेन, वायुयान, ट्रक निर्माण होला, सब जगह तऽ इंजीनियर रहेला। लोग इंजीनियर एक तरह से शिल्पी के भूमिका निभावेला लोग। साहित्यकारो तऽ शब्द-शिल्पी होलन त एकतरह से ओहू लोग के भूमिका इंजीनियरे के बा। कवन शब्द कहाँ फिट होखी, साहित्यकार के काम आ कवन पुर्जा कहां फिट होखी इंजीनियर के काम दोनों के काम में अद्भुत समानता बा। भोजपुरी एह घरी निर्माण का दौर में बा। एहमें इंजीनियरे लोग के तऽ जरूरत बा। जवन साहित्य तैयार होखे ऊ ठोक बजा के कवनो खामी केहू ना निकाल सके जइसे इंजीनियर के सड़के के बनावल या कवनो भवन क या कवनों मशीन में केहू कमी ना निकाल पावे। बिना इंजीनियर के मार्गदर्शन में बनल चीज टेढ़ सोझ तऽ होइये जाले ऊ उपहासो के केन्द्र बन जाले। एह माने में 'इंजीनियर' शब्द राजेश्वर जी के सार्थक

www.bhojpurisahityangan.com

बा। ऊ भोजपुरियो में साहित्य निर्माण में लागल बाड़े। ओइसे उहां का जल निगम में बानी जवना में 'नलकूप' निर्माण भी शामिल ह। धरती का छाती में जाके मीठ जल के पता लगा ओकरे बाहर कइ के जनसाधारण के समने परोसल ओह विभाग के काम ह। अपना से एही प्रवृत्ति से प्रेरित हो चिंतन का गहरा तल में गोता लगाके राजेश्वर जी कुछ आध्यात्मिक निबंधन के रचना भोजपुरी में करले बानी जवना के संकलन के नाम बा 'कल्यान कऽ जुगुति'।

'कल्यान कऽ जुगुति' निबंध संकलन में पन्द्रह गो ललित आध्यात्मिक आलेख बाड़न सं। एह निबंधन में गीता आ रामचरित मानस का साथे साथ कबीर के गहन चिन्तनों के प्रभाव स्पष्ट झलकत बा। बड़ा सरल भाषा में गम्भीर बात कह देवे के कला राजेश्वर जी में बा। भोजपुरी में संभवतः जहाँ तक हमरा इयाद बा एह तरे के ई पहिली पुस्तक बा। पढ़ला के बाद यदि एह में लिखल बातिन में कुछो जीवन में उतर जाई त जनम सार्थक हो जाई। आलेखन में संत आ भगवंत का महिमा के दर्शन होत बा। एह आलेखन में से कइगो भोजपुरी पत्रिकन में छप चुकल बाड़न स। नाम महिमा, साधु-संगत कऽ फल, कुसंग के त्याग आदि क बड़ा अच्छा चित्रण भइल बा। ई पुस्तक भोजपुरी में आध्यात्मिक साहित्य के रचना के शुरूआत बा। पौराणिक कथा कहानी त बाड़ी स, निबंध नइखन स। एह तरह के आलेख लिखाये के चाही। राजेश्वर जी एकर शुरूआत कइके रास्ता दिखा देहले बाड़न।

लेखक के रचना पर बधाई, उम्मीद बा कि आगे अउरी अच्छा-अच्छा रचना उहां के देइब। हमरा उम्मीद बा भोजपुरी पाठकगण एहके पसंद करिहन। बाकिर पढ़ला में दृष्टि प्रभु के खोजे कऽ रहे के चाही। छिद्रान्वेषण से कुछो ना मिली। तथास्तु।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

५२

'कल्यान कऽ जुगुति' से ई बिसवास जागत बा

-डॉ० मधुर नज्मी

कहनी कइसे-कइसे गढ़ल-बुनल जाले, कइसे-कइसे ऊ रसगर-दमगर होके पठनिहार पर कवने गँवें आपन परभाव कऽ जलवा बिखेरी-देखाई। पढ़निहारन के मन के कइसे बान्हि लेई। एह अन्दाज अउरी शैली कऽ एगो निम्मन लिखनहार इंजीनियर राजेश्वर जी, आपन लिखल कइगो हिन्दी कहानिन कऽ संग्रह लेके माई सुरसती के सेवा-विनती में लगल बाड़न। 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल' उनकर भोजपुरी कहानी-संग्रह के बाद, ई कृति आध्यात्मिक निबन्धन कऽ एगो पढ़निहारन के सोचले-बिचरले कऽ एसे रस्ता खुली अउरी कहानी कऽ बादल उठि उठि के लिखनहारनों के कुछु आगे बढ़ि के लिखले कऽ हौसिला देई। भोजपुरी, बोली से उठि के भासा बनले की दिसा में जाति बा। भोजपुरी भासा के रस्ता में ई निबन्धन कऽ कृति आपन अलगै पहिचान बनाई। ई बिसवास 'कल्यान कऽ जुगुति' पढ़िके मन में जागत बा।

इंजीनियर राजेश्वर अपने संस्कारी बुनियाद में, आध्यात्मिक बाड़न। उनकर जुड़ाव 'सरकार' शाह अब्दुला शाह 'शाह गोला दीवान' सरकार कऽ अस्ताना कसबा निजामाबाद, आजमगढ़ में बा। उनकर एगो सूफी विचार-धारा कऽ किताबि 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' 'सरकार' के अस्ताना कऽ ऐतिहासिक आकलन मूल्यांकन करत छपल बा। ई किताबि अपने ढंग कऽ 'रेयर किताबि' बा। हमरे कहले कऽ अउरी लिखले कऽ ई मंसा बा कि राजेश्वर कऽ जमीन अध्यात्म से जुड़ल, साधना कऽ जमीन बा। 'कल्यान कऽ जुगुति' आध्यात्मिक चेतना से जुड़ल लोगन के दिसा देई। लिखनहारनो के अइसन कुछ लिखले कऽ प्रेरना मिली। एह 'प्रेरना' से हमार-भोजपुरी भासा अउरी समिरिद्ध होई।

भोजपुरी पुरहर भासा कइसे बनी ? ई सवाल कवनियो ओर से हल्लुक नइखे। हम ई कइसे कहीं कि हिन्दी कहानी अउरी भोजपुरी कहानी कऽ आज जवन इस्थिति बा ऊ बहुते मजबूत बा। भासा के डिटॉल में कीड़ा भइले कऽ अनुभूति एह समय कऽ भोजपुरी फिलिम देति हई। ओहमा लिखल कुछ गीत तऽ नीक बाटें बाकिर सड़ौंध आवति बा। दुअरथी असलील गीतन कऽ तऽ आजु भरमार बा। 'फोक जलवा' के नाँव पर, ई टीवियो जहर कऽ परसाद बाँटति बा। भोजपुरी फिलिम भोजपुरी भासा के विकास में एगो निम्मन आधार हो सकत रहल लेकिन ओकरा से उमेद कइल एगो सुत्तर धोखा महसूस होत बा।

www.bhojpurisahityangan.com

आजु के पत्र-पत्रिकन पर जब नजर जाले तऽ एह धोखा में इजाफा होत नजर आवेला। कविता, कहानी उपन्यासकार, निबन्धन में ऊ धार कऽ कमी देखाति बा। आजु कऽ लिखनहार के अलावा धन्धाबाज ज्यादे देखात बाड़ें। जवन साधक जइसन रचनाकार बाड़े ऊ तऽ भासा की दिसाई समर्पित-संकल्पित मन से लगल बाड़ें लेकिन एकर प्रतिसत काफी कम बा। ई इस्थिति खाली भोजपुरी कहानिये में नइखे, हिन्दी कहानी, कविता, उपन्यास, नौटंकी में हमरे ई कहले कऽ ताइत होई। एहके महसूस सभे करत बा, लेकिन केहू खुलि के ना कहि पावत बा। पठनीयता कऽ संकट बा आज ई कहला कऽ फैसन बा। अजुवो पढ़े वालन कऽ कमी नइखे। अजुओ अच्छी किताबि खोजि के पढ़वइया लोग पढ़ें लें अउरी अच्छी किताबिन कऽ चर्चा-परिचर्चा करेलें। इहो सच बा कि उनकर प्रतिसत कम बा लेकिन जवनो बा ऊ अपने आप में 'लीजेण्ड' जइसन बा। समीक्षक लोग तऽ पहिलहूँ हवा में तीर मारत रहलन, अजुओ ऊहे काम साहित्य में करत बाड़ें। समीक्षक के करतूति पर लिखनहारन अऊरी पढ़निहारन के सोचै के पड़ी। सही दिसा में सोचल जाई तऽ भासा समिरिद्ध होई। अबहिन तऽ कुहासा का इस्थिती बा। कुहासा अउरी समीक्षकन के आँखि कऽ मोतियाबिन्द कब कटी ? एहके समइये बताई।

हमके तऽ ई समय 'फेंका-फेंकी' कऽ लगत बा। लिखनहार लोग पढ़वइयन पर अउरी पढ़वइया लोग लिखनहारन पर एकरी पतनसीलता कऽ आरोप लगावत बाड़ें बाकिर लिखनहारन कऽ जिम्मेदारी जियादा बा। भोजपुरी के विकास में परयास कऽ दिसा का होई ? इहो सवाल कवनियो ओर से कमजोर नइखे। हमके ई बरोबर महसूस होला कि लिखनहारन के लिखला कऽ कद छोट होत जात बा। ई संताप हिन्दी अउरी भोजपुरी से कइसे कटी? एहके रामै जानें। इंजीनियर राजेश्वर कऽ परयास तऽ 'भगीरथ प्रयास' जइसन बा। राजेश्वर तऽ एगो उदाहरन बाड़ें। 'कल्यान कऽ जुगुति' एगो आध्यात्मिक परयास बा अउरी एह परयोग कऽ सूत्रधार-सूत्रकार (अगर इ सब्द बनि सके तऽ) इंजीनियर राजेश्वर बाड़न। परयोग तऽ परयोग होला। बुनियादी सच कइसे होई, एहू के समइये बताई। एतना तऽ जरूर हऽ कि एह दिसा में उहे कामयाब होई जेकरा लिखला में आध्यात्मिक साधना होई। बिना आध्यात्मिक दर्शन के कवनो साहित्य बड़ियार साहित्य हो सकी एहमा सन्देह बा। 'कल्यान कऽ जुगुति' पढ़ला से हमके ई बिसवास जागत बा कि फकीर मिजाज राजेश्वर से अगहूँ कुछ अउरी सुघ्घर-निम्मन लिखाई। काहे से की उनके लिखला कऽ जमीन रूहानी (आध्यात्मिक) बा।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

५३

जिनगी के सही राह देखावे के एगो नीक प्रयास

-सूर्यदेव पाठक 'पराग'

इंजीनियर राजेश्वर सिंह एगो अइसन मनई के नाव ह जे पढ़ाई-लिखाई आ पेशा से इंजीनियरिंग से जुड़ला का बादो अपना मातृभाषा भोजपुरी का विकास में जिउ-जान से समर्पित हो के नाँव के अपेक्षा काम में विश्वास करेलें। भोजपुरी गद्य-विधा पर लगातार कलम चलावे वाला राजेश्वर जी के लिखल एगो किताब 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल' (कहानी संग्रह) आ 'कल्याण कऽ जुगुति' (निबन्ध संग्रह) प्रकाशित हो गइला का बाद से ऊ भोजपुरी के एगो सफल कहानीकार आ निबन्धकार का रूप में स्थापित हो चुकल बाड़े।

इं. राजेश्वर जी का लेखन के साथे भोजपुरी का बढन्ती में दिहल योगदान पर तनी नजर दउरावल जाय त पाँच बरिस पहिले से गोरखपुर में लगातार चलेवाली आ हर महीना का दोसरका एतवार के आयोजित बइठकियन का माध्यम से भोजपुरी भाषा आ साहित्य के आगे बढ़ावे वाली एकमात्र संस्था 'भोजपुरी संगम' के संरक्षक के रूप में आपन अमूल्य सेवा दे रहल बाड़ें। एकरा अलावा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना के मुखपत्र 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' का संपादन मण्डल में सदस्य के रूप में ओह पत्रिका के संपादन, प्रकाशन में इनका सहयोग मिल रहल बा। इं. राजेश्वर जी सात्विक भाव आ आध्यात्मिक चेतना संपन्न, उपनिषद्, पुराण, गीता, रामायण आदि धार्मिक ग्रन्थन के अध्येता भइला के साथे साधु-संत, मठ-मजार आदि पर पूरा आस्था रखेलें। मनई जइसन साहित्य पढ़ेला-गुनेला ओइसने ओकर संस्कार बनेला आ ओकरा कलम से ओही संस्कार वाली रचनो रचाले। इहे कारण बा इं. राजेश्वर जी के सुसंस्कार-संपन्न कलम से रचल निबन्धन में आचार-विचार पर ध्यान देवे का साथे आध्यात्मिक चेतना जगावे आ सात्विक जिनगी जीये के प्रेरणा मिलेला।

'पढ़ीं समझीं, मनन करीं' नाँव के एह पुस्तक में लेखक के चालीस गो भोजपुरी निबन्ध, बाड़े स, जवनन में ईश्वर का प्रति आस्था, भक्ति के स्वरूप, गृहस्थ-जीवन के सुखमय बनावे के उपाय अउर जीवन में सफलता खातिर प्रेरक सुमुख बा जेके पढ़ि के समाज का हर वर्ग के मनई अपना जिनगी में फइलल नाउमेदी का अन्हरिया में उमेद के अँजोर फइला सकेला।

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक के पहिलका निबन्ध 'अन्दरूनी ताकत' पढ़ के ओह सभे के आँख खुलि जाई जे अपना भीतर का ताकत के बिना जनले आ ओकर उचित उपयोग कइले बिना भाग्य आ भगवान का भरोसे रहके सभ कुछ पावे के उमेद रखेलें। इं. राजेश्वर जी 'रामचरित' 'भगवद्गीता' आ रवीन्द्रनाथ का उक्तियन से प्रेरणा लेवे पर बल देले बाड़ें। 'भगवान आ जीव', 'भगवान कऽ जान-पहचान', 'सब कुछ भगवान कऽ', 'मंत्र अउर जप : राम नाम कऽ', 'मिलीं भगवान से', 'राग-द्वेष कऽ पल में नास' आ 'मानस में सात सवाल' जइसन निबन्धन से भगवान का प्रति अटूट आस्था आ भारतीय संस्कृति के प्रति लेखक का रूचि के पता चलत बा। 'भलाई, संयम, सुख-दुःख' 'विनम्रता' 'क्रोध' 'इरिखा' 'निंदा कऽ आदति' जइसन मनोवैज्ञानिक निबन्धन में मनइन का मन में उठे वाले भाव-कुभाव के बढ़िया विवेचन भइल बा जवना के पढ़ला पर आज का समाज में तेजी से बढ़ रहल दूरदर्शनी आ पच्छिमी विकृतियन पर सोचे का साथे अपना संस्कृति का अच्छाइयन के अपनावे पर बल मिली। 'गाँधी जी एगो महात्मा' निबन्ध में गाँधीजी के बहाने 'महात्मा' शब्द पर विचार आ महान लोगन के सद्गुन पर चर्चा भइल बा। जिनगी के सफलता कऽ कुंजी : विद्यार्थी जीवन में छात्रन का मन में पढ़े-लिखे का प्रति जागरूक होखे के नींक आ उपयोगी सलाह दिहल गइल बा ताकि आज का छात्रन में पढ़े-लिखे का प्रति बढ़ रहल अरूचि आ उदंडता पर अंकुस लाग सके। इं. राजेश्वर जी 'श्रामद्भगवद्गीता' 'रामचरित मानस' का आलावे संस्कृत के सूक्तियन, दोहन आ कबीर का, रचनन के अपना निबन्धन में भरपूर उपयोग करत अपना कथ्य के पुष्ट करे में सफल बाड़ें।

अइसे त ई पुस्तक निबन्ध-संग्रह ह, बाकि एहमें 'तनी ध्यान देईं' मतेला देके जहाँ-तहाँ अनेक सूक्तियन के संग्रहीत कइल बा। एक जगह पर एही मथेला से एकही जगह सैकड़न सूक्तियन के पढ़े-गुने के मौका मिली जवन मनइन के जिनगी सजावे-सँवारे खातिर सही राह देखावे में काफी मददगार हो सकेले। हो सकेला कि निबन्ध पढ़वइयन में से कुछ लोगन के एह तरह के सूक्तियन से गुजरल नागवार लागे बाकिर आज का समाज में फइलल विकृतियन के जहरीली हवा के रोक के स्वस्थ आ सुसंस्कृत समाज बनावे में ई प्राणवायु नियर काम कर सकेले।

निबन्धकार एह पुस्तक के रुचिगर बनावे खातिर अनेक निबन्धन में छोट-छोट कथ के प्रयोग कइले बाड़े जवन अँगूठी में नगीना नियर चमक बिखेरत बाड़ी सं। इं. राजेश्वर जी अपना सीधा-साधा सरल भाषा में गूढ़, गहिर आ जिनगी खातिर उपयोगी बातन के सहज ढंग से कहे में पूरा सफल बाड़ें। हो सकेला कि निबन्ध के गद्य के कसौटी माने वाले विद्वानन चाहे आध्यात्मिक रुचि-विचार के भोजपुरी से अलग-थलग देखेवालन के एह में साहित्यिक झलक कम लउके बाकिर

www.bhojpurisahityangan.com

इकइसवीं सदी के नवकी पीढ़ी जवनाँ रफ्तार से विकृति का ओर बढ़ि रहलि बा, ओह पर लगाम कसे में अइसन रचनन के बहुत जरूरत बा। आध्यात्मिक सोच आ सत्साहित्य में रूचि रखे वाला इं. राजेश्वर जी अपना रचनन का माध्यम से आज के भौतिक चकाचौंध में भटकत एह पीढ़ी के सही राह देखावे खातिर उतजोग कर रहल बाड़े जवना के सराहना, होखे के चाहीं। इं. राजेश्वर जी के सन् २००७ में प्रकाशित एगो भोजपुरी निबन्ध संग्रह 'कल्यान कऽ जुगुति' डॉ० विवेकी राय आ स्व० गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' जइसन विद्वानन आ भोजपुरी पाठकन से काफी सराहल गइल। हमरा पूरा भरोसा बा कि लेखक के इहो पुस्तक विद्वानन आ पाठकन का आदर अपनापन के अधिकारी बनी।

इत्यलम्।

❖

नाम-कीर्तन

अपने आराध्य के पवित्र नाम, रूप, गुण एवं लीलाओं का एकाकी अथवा सामूहिक रूप से भावपूर्वक उच्च व मधुर स्वर में बारम्बार लय-तालयुक्त गान कीर्तन कहलाता है। ईश्वर के गुण, चरित्र, नाम, पराक्रम आदि का प्रेम एवं उत्साह के साथ उच्चारण करते हुये शरीर में रोमाञ्च हृदय में प्रफुल्लता, आनन्द मुग्धता आदि का होना, कीर्तन-भक्ति का स्वरूप है। सद्गुरु भगवान् की महिमा के संकीर्तन से जीवों के सभी पाप धुल जाते हैं।

www.bhojpurisahityangan.com

५४

भोजपुरी भागवत कथा-सार

-प्रो० रामदेव शुक्ल

भोजपुरी कहे खातिर हिन्दी भाषा के एक ठो उपभाषा हवे, बाकिर जवन बाति रहले पर कवनो बोली भाषा के ऊँचाई तक ले पहुँचले, ऊ सब भोजपुरी में एतना बा कि दुनिया के बहुत देसन के भाषा में नाहीं पावल जाला। बोले वालन के संख्या, आपन लिपि, आपन व्याकरण, आपन शब्द कोश आ लोक साहित्य भोजपुरी में बहुत बा। दुनिया में प्रचार-प्रसार के एगो एइसन अवसर भोजपुरी के उनइसवीं सदीं में मिलल जवन अउरी कवनो बोली के नाहीं मिलल। भइल ई कि जब इंगलैण्ड के ईस्ट इण्डिया कम्पनी मारीशस, सूरीनाम, हालैण्ड, ट्रिनीडाड, ब्रिटिश गुयाना,फीजी आदि में गन्ना के खेती करावे के विचार कइलिस त भारत के सबसे गरीब इलाका से ओह देसन में मजूर के रूप में हजारन लोगन के ले गइल। पूरबी उत्तर प्रदेश और पच्छिमी बिहार में सबसे घनी आबादी रहल। एह इलाका के लोग रोजी-रोटी कमाए खातिर कलकत्ता-रंगून ले जात रहलें। कम्पनी की ओर से एक फारम अंग्रेजी भाषा में छपाइल। ओह में ई लिखल रहे कि हम अपनी मर्जी से रोजी-रोटी कमाए खातिर विदेश जा रहल बानी। अब उहाँ बसि के जिनगी बिताइबि। कंपनी के दलाल लोग भोजपुरी इलाका के गरीबन से बतावे कि एह फारम में ई लिखल बा कि हम जब चाहब तब अपने देश लवटि आईबि। ओह फारम के गिरमिट (एग्रीमेन्ट) कहल जाला। एह से लोगन के गिरमिट मजूर नाम धरा गइल। बस्ती, पटना आ बनारस से एह मजूरन के कोलकत्ता ले आके उहाँ से पानी के जहाज पर चढ़ाके ओह देसन में ले जाके बसा दीहल गइल। ओइजा के भूमि पर आपन खून-पसीना बहा के भोजपुरिया लोग कमाए खाए लगलें। ई लोग अपने साथे हनुमान चालीसा, रामचरित मानस, दुर्गासप्तशती, कुरान, हदीस, आल्हा, बिरहा-कजरी बारह मासा ले गइल रहलें। सबके में आपन गीत गवनई बसल रहल। एह लेखा ओह देसन में भोजपुरी भाषा में, साहित्य अउर संस्कृति पहुंचल। लगभग, दू सौ बरिस पहिले एह लोगन के साथे भोजपुरी गइल। ओइजा कुछ देसी-विदेशी शब्द मिलि के नई भाषा बने लगली। मारीशस में अफ्रीका से आइल कियोल मजूर, फ्रांस के लोग और भोजपुरी के लोग फ्रियोली मिला के बोलें लें बाकिर आधा से अधिक लोग भोजपुरी बोलेल। इहे हाल ओह कुल्ही देसन में भोजपुरी के बा।

आजाद हिन्दुस्तान में सब भाषा, उपभाषा बोली रचना के बल पर आगे बढ़त रहली। भोजपुरी में साहित्य रचना बहुत भइल आ हो रहल बा। गद्य के सगरी विधा में एइसन रचना हो रहल बाड़ी कि दुनिया के कवनो भाषा के साहित्य के सामने राखल जा सकेला। तब्बो एक कसरि रहि गइल

www.bhojpurisahityangan.com

बा कि गद्य कम लिखात बा। कवनो बोली भाषा में गद्य के रचना जेतना जियादा होई ओकर विकास ओतने तेजी से होई। स्कूल, कचहरी, अस्पताल अउर सरकारी कामकाज के भाषा एह क्षेत्र में हिन्दी बा, एसे गद्य के लिखाई कम हो रहल बा।

कुछ लोग एइसन बाड़ें जे गद्य में बहुत कुछ लिखि रहल बा। राजेश्वर सिंह पेशा से इंजिनीयर हईं। इहाँ का कहानी, उपन्यास के लगभग एक दर्जन किताब लिखले बानी। धरती के भित्तर पानी के प्रदूषण आ ओसे बचले के उपाय बतावे खातिर इहाँ का 'जिनगी के जरूरत पानी' नाव क एगो छोट किताब लिखले बानीं। ओह के पढ़िके पानी से होखे वाला रोग क जानकारी होला आ ओइसन रोगन से बचेके उपाय कइल जा सकेला।

एहर राजेश्वर जी भागवत-कथा सुनले, पढ़ले से एतना प्रभावित भइनीं कि एहाँका 'भोजपुरी भागवत कथा-सार' लिख दिहलीं। एह किताब में भागवत के सम्पूरन कथा संक्षेप में लिखाइल बा। भावगत महात्म्य से लेके भागवत महिमा, आरती अउर परिशिष्ट में प्रमुख ऋषि, महर्षि सबके परिचय दीहल गइल बा।

एह किताब के एक विशेषता ई बा कि भागवत-कथा के जेतना सबसे बढ़िया अंश बा ओकर कथा कहले के साथे मूल श्लोक भी दे दीहल गइल बा। ओकरे साथ-साथ कबीर दास अउर तुलसीदास के रचना से कुछ उद्धरण दीहल गइल बा। उदाहरण के रुप में भागवत में रामराज्य के वर्णन में 9.10.53 वाँ श्लोक दीहल बा। ओकर अर्थ बतावल बा-'रामराज्य में प्रकृति मनइन क सगरो कामना पूरा करति रहल।'

एकरे बाद गोस्वामी तुलसीदास के महाकाव्य 'रामचरित मानस' के उत्तर काण्ड में 'रामराज्य वर्णन' के दोहा चउपाई दीहल गइल बा-

दोहा- **बिधु महि पूर मयूखन्हि रवि तप जेतनेहि काज।**
मांगे वारिद देहि जल रामचन्द्र के राज॥

इंजीनियर के वैज्ञानिक दृष्टि अउर भागवत कथा के प्रति श्रद्धा-भक्ति के रचनात्मक मेल से 'भोजपुरी भागवत कथा-सार' के रचना भइल बा। एह रचना से भोजपुरी गद्य के एगो अभाव दूर हो गइल। राजेश्वर जी के अगली किताब 'रामपियारा साधु संत' भोजपुरी में आ रहल बा। आशा आ भरोसा कइल जा सकेला कि भोजपुरी गद्य के क्षेत्र में राजेश्वर सिंह के योगदान सराहल जाई।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी में भागवत कथा

-सूर्यदेव पाठक 'पराग'

महर्षि वेदव्यास विरचित अठ्ठारह पुराणन में श्रीमद्भागवत महापुराण का महत्त्व के बारे में ईश्वर के प्रति आस्था आ लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण का रूप माधुरी में अनुराग राखे सवाले मनइन से ज्यादा बतावल जरूरी नइखे, तबो एह प्रसंग पर कुछ चर्चा कइल जरूरी लागत बा, काहे कि एह पर जेतने चर्चा होई ओतने भक्ति रस से लबालब भरल एह रस सागर में डुबकी लगावे के इच्छा बढ़त जाई।

ई एकलौता अइसन ग्रन्थ रत्न बा, जवना के प्रशंसा वेदव्यासजी स्कन्दपुराण आ पद्मपुराण में क के एकरा महत्व के रेधियवले बानी।

श्रीमद्भागवत के ई एगो श्लोक एह-ग्रन्थ रत्न के मान-मोल बतावे खातिर जानल जरूरी बा-

निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रव संयुतम् ।
पिबतभागवतं रसमालयं मुहरहो रसिका भुवि भावुकाः ।।

अर्थात् ई श्रीमद्भागवत वेद रूप कल्पवृक्ष के पाकल फल ह, जवन शुकदेव रूपी तोता का मुँह के पास से आनन्दमय अमृत से भरपूर हो गइल बा। एह में छिलका आ गुठली आदि नइखे। ई मूर्तिमान रस हऽ। एह से जबले देह में चेतना रहे तबले धरती पर सुलभ एह भगवद् भक्तिरस के बार-बार पान करत रहे के चाही। पद्मपुराण में 'श्रीमद्भागवत पुराणतिलकं, यद वैष्णवानां धनम्' में कह के एह ग्रन्थ के श्रेष्ठता आ वैष्णव लोगन खातिर धनस्वरूप बतावल बा। एकरा अलावा श्रीमद्भागवत में हमनी के ऋषि मुनियन आ महापुराणन के अइसन जीवन गाथा बा जवना के पढ़ के हमनी उनका जइसन बन के उन्नति का राह पर आगे बढ़े के प्रेरणा ले सकीलें। मनई की जिनगी में कबो-कबो अइसनो मौका आवेला जब ऊ कठिनाई आ विपत्ति के अन्हरिया में फँस के निराश आ अवसाद से ग्रसित हो जाला। ओह समय एही महापुरुषन के जीवन-चरित्र ओकरा में नया ओज आ जोश जगा के आगे राह देखावेला। भागवत में आइल भगवान श्रीकृष्ण के जीवन-गाथा अकेले अइसन उदाहरण का रूप में देखल जा सकेला। क्रूर कंस के कारागृह में कैद माता का गर्भ से जन्म, जनमें से माई-बाप से बिछोह, लइकइये से जान

www.bhojpurisahityangan.com

के खतरा आ उनका के मारे के कंस के कुचक्र ! अपना सूझ-बूझ आ बल व उत्साह से सभ विपत्तियन पर विजय पाके नटनागर नटखट कन्हैया भगवान् श्रीकृष्ण का रूप में वन्दनीय बनलें।

संक्षेप में इहे कहल जा सकेला कि श्रीमद्भागवत में वेदतत्त्व के सरल निचोड़, भक्ति, ज्ञान-वैराग्य के सरस अभिव्यक्ति, जीवन-मरण के विश्लेषण आ भगवान कृष्ण के मनोरम बाल-लीला आउर उनकर अलौकिक कल्याणकारी कार्यन क पाण्डित्यपूर्ण काव्यमय सरस विवेचन भइल बा। एही से रसिक भक्ति आ बीतराग संन्यासी से लेके अपने पण्डिताई पर गर्व करे वाले विद्वानन तक में, एह ग्रन्थ के महत्त्व एक बराबर रहल बाटे। 'विद्यावतां भागवते परीक्षा' (विद्वान लोग के परीक्षा भागवत में होला।) एह उक्ति से साफ बुझाला कि एह अर्थगर्भित ग्रन्थ के मनन, चिन्तन करे खातिर गहिर अध्ययन के जरूरत बा। एही से एह में आइल दार्शनिक आचार्य संस्कृत में एकर टीका आ व्याख्या लिख के एह के सरल, सहज बनावे के पुरहर प्रयास कइले बाड़े।

अब एह ग्रन्थ के हिन्दी में अनुवाद हो चुकल बा आ 'भागवत नवनीत' जीवन-संजीवनी, 'श्रीमद्भागवत कथा-सार', 'श्रीमद्भागवत' सरल एवं संक्षिप्त संस्करण आदि नावन से भी ग्रन्थन के प्रकाशन हिन्दी में हो चुकल बा। गीता प्रेस, गोरखपुर से एकर अनुवाद हिन्दी का अलावा गुजराती, मराठी, बंगला, ओडिया, अंग्रेजी, तमिल आ तेलगू तक में होके प्रकाशित हो चुकल बा। बाकिर भारत का अलावा मारीशस, सूरीनाम, टुबैगो, गुयाना आदि दुनिया क अनेक देशन में फइलल आ लगभग पच्चीस करोड़ मनइन के महतारी भाषा भोजपुरी में एह ग्रन्थ पर अभीले कुछुओ ना लिखाइल खटकत रहल ह। श्रीमद्भगवत गीता पर त भोजपुरी में काम भइल बा, बाकिर भक्तिरस के सागर श्रीमद्भागवत के भोजपुरी में कथा सार, तइयार करे के साहस अभी ले केहू ना कइले रहल ह। आज हमरा एह बात के चर्चा करत में आनन्द के अनुभव हो रहल बा कि ईश्वरीय प्रेरणा से ई काम धार्मिक आस्था आ भोजपुरी प्रेम के प्रतीक इं. राजेश्वर सिंह जी का कलम से हो रहल बा।

भाई राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी का विकास में तन-मन-धन का साथे जुटल बानीं। इहाँ का गोरखपुर के एकलौती भोजपुरी सेवा संस्था 'भोजपुरी संगम' के संरक्षक भइला का साथे साथे अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना के मुख पत्रिका 'भोजपुरी सम्मेलन' पत्रिका का सम्पादक मण्डल के सदस्य बानी। भोजपुरी के सफल कहानीकार आ निबन्ध लेखक राजेश्वर जी के अबले भोजपुरी में तीन पुस्तक, 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल' (२००४), 'कल्यान क जुगति' (२००९) आ पढ़ीं समझीं मनन करीं (२०१६) प्रकाशित हो के चर्चा में रहल बा।

श्रीमद्भागवत का बारहो स्कन्ध के कथा सार भोजपुरी में लिख के राजेश्वर जी अपना धार्मिक निष्ठा, सात्विक श्रम, भोजपुरी प्रेम आ आर्थिक उदारता के एक साथे परिचय देले बानी।

बहुत लोग ई सवाल करेलें कि जब हिन्दी में एह तरह के ग्रन्थ प्रकाशित बाड़े सन त

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी में एकर का जरूरत बा-? इहे हम एह तर्क से असहमत होत रहे कहे के चाहत बानी कि अइसन बहुत मनई होइहें जेकरा संस्कृत भा हिन्दी का माध्यम से एह ग्रन्थ का कथानक से परिचित होखे के मौका ना मिलल होई। ऊ एह ग्रन्थ से लाभान्वित होइहें। अइसन ग्रन्थ से भोजपुरी के भण्डार त भरबे करी, मारिशस, सूरीनाम जइसन देशन में रहे वाला ओजपुरिया भाई एके माथे चढ़इहें अइसन भरोसा बा।

श्रीमद्भागवत के विभिन्न भाषा में अनुवाद करेके प्रेरणा देवे वाला भारत रत्न पंडित मदन मोदन मालवीय के ई उद्गार ध्यान देवे जोग बा-'जो भगवद् भक्त हैं और श्रीमद्भागवत के महत्व को जानते हैं, उनका यह कर्त्तव्य है कि मनुष्य के लोक और परलोक दोनों को बनाने वाले इस पवित्र ग्रन्थ का सब देशों की भाषाओं में अनुवाद कर प्रचार करें।'

भाई राजेश्वर जी महामना का एह उद्गार के आत्मसात् क के अपना बोली बानी में श्रीमद्भावत कथा-सार के प्रकाशन कराके बहुत महत्त्व के काम कइले बानी जवना के खुला मन से सराहना होखे के चाहीं। कथा के भाषा ठेठ भोजपुरी में बा, जवना में बनावटी पन ना बलुक सहजता, सरलता बाटे।

राजेश्वर जी उ०प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता का पद से अवकाश पा चुकल बानी बाकिर जल की शीतलता, तरलता आ निर्मलता अपना मन, बानी आ आचार-विचार में आजो सँजो के रखले बानी, जवन इहाँ के बात-विचार, व्यवहार में झलकत रहेला।

उमेद बा इं. राजेश्वर सिंह जी के एह सत्प्रयास से अनगिनत भोजपुरिया भाई लोग का मन में भागवत आ भगवान के प्रति अनुराग बढ़ी।

हमार कामना बा कि लेखक के ईश्वर के प्रति निष्ठा आ भोजपुरी के प्रति प्यार एही तरह बनल रहे, ताकि भविष्य में भी बहुत कुछ नींक काम होत रहे खातिर लगातार कलम चलत रहे।

श्री राजेश्वर सिंहेन सारभूता कृता कथा ।
पूर्णं करोतु सर्वेषां पाठकानां मनोरथम् ।।

इत्लयम् ॥

❖

www.bhojpurisahityangan.com

५६

निम्मन प्रयास

-डॉ० रघुनाथ चन्द

श्री मद्भागवत पुराण के नींक से पुरहर पढ़ले के बाद अइसन लगेला कि वर्तमान क हिन्दी भाषा ओह कथा क बाहक ना हउए। ऊ पुराण संस्कृत भाषा में लिखल ह, जवने क रूपान्तरण हिन्दी में भइल हउए। अपने क्षेत्र में बोले जाये वाली हिन्दी भी भारतेन्दुजी के जिनगी के बाद क भाषा बनल। ई क्षेत्र भोजपुरी अउर अवधी क क्षेत्र हउए। ई देखल जाय त पुरान गोरखपुर क आधा हिस्सा शुद्ध भोजपुरी क अउर पश्चिम हिस्सा अवधी में बोलेला। भोजपुरी-भाषा एक लम्बा क्षेत्र में बोले जाये वाली भाषा ह अउर एह भाषा में बड़हन-बड़हन काव्य लिखल हवन, जवन उच्च शिक्षा में आपन स्थान बनवले हउअन।

भोजपुरी में श्री मद्भागवत कथा क सार लेखन एह रूप में इं. राजेश्वर सिंह प्रस्तुत कइले हउअन कि भोजपुरी के जाने वाला केहू पाठक एकरे पृष्ठन के पलट के हर्षित हो जायी। भोजपुरी भाषा काव्य क भाषा बहुत दिनन से बनल हउए कारण एहकर रसयुक्त भइल ह। काहें से 'रसात्मकं वाक्यं काव्यम्' भोजपुरी में एह पुराण के लिख के जन-सामान्य तक श्रीमद्भागवत कथा के पहुँचवले क अनुकरणीय प्रयास कइल गइल ह, जवने खातिर लेखक के साधुवाद !

हमके ई कहले में तनिको संकोच ना ह कि जन सामान्य में बोले वाली भाषा में आपन पवित्र धर्मग्रन्थन के लिखले से हमनी क संस्कृत, हम लोगन क संस्कार, पूजा क तौर-तरीका आदि भारतीय संस्कृति क ऊ कुल्हि चिन्ह जवने से भारतीयता क पहचान होला जियत रही। एह लेखन अउर कइल निम्मन प्रयास के बहुत-बहुत धन्यवाद !

❖

www.bhojpurisahityangan.com

५७

श्रद्धालु क संतार्चन

-प्रो० रामदेव शुक्ल

इंजीनियर राजेश्वर सिंह अपने सरकारी कार्य-काल में कहानी और उपन्यास लिखि के रचना क पियासि बुझावत रहलें। बाद में भक्ति की ओर उनकर मन उमड़ल त भोजपुरी में रामायण, महाभारत, भागवत कथा-सार जइसन सद्ग्रन्थन के भोजपुरी में रचलें। ओकरे बाद साधु-संतन के जीवन लिखल शुरु कइलें। राम पियारा साधु-सन्त और श्याम पियारा साधु-सन्त लिखले के सुफल कहल जाई कि इनकर मन अपने गुरु की ओर बढ़ियाइल। इनके गुरू बंगाली बाबा रहलन, एसे बंगाल के साधु-सन्तन के जीवन पर 'दीक्षा-गुरु' नाम के पुस्तक लिखाइल। बंगाल के अध्यात्म साधना में बहुत उलट फेर के बाद रामकृष्ण परमहंस के अवतार से एगो नया युग आ गइल।

'दीक्षा गुरु' के पहिला अध्याय 'गुरु'। 'गुरु-गीता' ग्रन्थ के आधार पर गुरु शब्द के अर्थ ओकर महिमा बतावल गइल बा। महाकवि तुलसीदास आ कबीरदास दूनू के प्रभावित करे वाला स्वामी रामानन्द जी आ उनकर गुरु श्री रामानुजाचार्यजी से गुरु-परम्परा पर आगे लिखल गइल बा।

एकरे बाद बीसवीं सदी के हठयोगी देवरहा बाबा के कई चमत्कार लिखले के बाद सोझे मध्यकाल में गुरुनानक के जीवन-चरित क बखान करत बादशाह बाबर से उनके भेंट करा दिहले बाड़न। दादू दयाल के जीवन चरित आ उनके बेटा गरीब दास के वर्णन बा। काशी के केदारघाट पर नंग धड़ंग पड़ल रहे वाले तैलंग स्वामी के कथा बा। एकरे बाद परमहंस रामकृष्ण अउर उनके सबसे बड़हन चेला विवेकानन्द के कहानी कहल गइल बा। सबसे लमहर जगह एह किताब में परमहंस रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द के दीहल गइल बा।

गोरखपुर के गीता प्रेस के सेठ जयदयाल गोयन्दका के बखान संत के रूप में कइले के बाद हनुमान प्रसाद पोद्दार आ उनकी भक्ति के वर्णन कइल गइल बा।

बंगाल के हुगली नदी के किनारे डुमुरदह में सीतारामदास के जन्म भइल। सीतारामदास से

www.bhojpurisahityangan.com

बदलि के उनके नाम के साथ में ओंकारनाथ जुड़ि गइल। प्रणव क प्रचार-पुस्तक लिखाई और तीर्थाटन करत दिसम्बर १९८२ में कन्याकुमारी में ब्रह्मलीन भइलें। हनुमान प्रसाद पोद्दार के चमत्कारपूर्ण जीवन कथा, नारद अउर अंगिरा द्वारा दर्शन दिहले के कथा, बम्बई में श्री सीताराम लक्ष्मण के साक्षात् दर्शन के घटना के बाद भाई जी के सामाजिक काम अउर गो-रक्षा के साथ उनके कृष्ण-भक्ति में डूबल पद-रचना के विवरण बा।

'योगीकथा मृत' के लेखक के रूप में दुनिया भर में मशहूर योगानंद के जन्म ५ जनवरी १८९३ ई० के गोरखपुर में भइल रहल। लाहिड़ी महाशय के दर्शन, उनसे दीक्षा, सिद्ध के चाँदी क ताबीज, आगरा-वृन्दावन क चमत्कारी यात्रा, कलकत्ता में गुरु युक्तेश्वरगिरी से दीक्षा, कविता, राँची के विद्यालय-आश्रम के वर्णन, अमेरिका में आश्रम मुख्यालय स्थापना अउर १९५२ में उनके महासमाधि।

महन्थ दिग्विजयनाथ जी उदयपुर के राणावंश के नान्हू सिंह बालक के रूप में गोरखपुर के गोरखनाथ मन्दिर में पहुँचावल गइलें। जुबली स्कूल, महात्मा गान्धी विद्यालय अउर सेन्ट ऐन्ड्रयूज कालेज में पढ़ले के बाद १९३२ ई० में अपने गुरु महंन्थ ब्रह्मनाथ जी के ब्रह्मलीन भइले पर महन्थ दिग्विजयनाथ बनि गइलें। धीरे-धीरे धर्म से राजनीति में आके सांसद बनलें। गोरखपुर में विद्या के क्षेत्र में विद्यालय से लेके विश्वविद्यालय क स्थापना तक में आपन योगदान कइलें। श्री सच्चिदानन्द जी (बंगाली बाबा) बनारस में श्री ओंकारनाथदेव से दीक्षा ले के उनके आदेश से अयोध्या में 'गुरुधाम' स्थापित कइलन। उहवें लेखक के दीक्षा मिलल।

विश्व प्रसिद्ध स्वामी करपात्री जी महाराज उत्तर प्रदेश क जिला प्रतापगढ़ के भटनी गाँव में सन् १९०७ ई० में जनमल रहलन। लइकई में ई बालक हरनारायण नाम से पुकारल गइलें जवन आगे चलि के करपात्री जी महाराज भइलें। गृह-त्याग के बाद घोर तपस्या और तीर्थाटन के बाद १९३१-३२ बनारस के दुर्गाकुण्ड के पास 'धर्म-संघ' स्थापित कइलें। मन्दिर, पुस्तकालय, गो-शाला आदि के स्थापना के साथ संस्कृत आ हिन्दी में बहुत ग्रन्थ लिखके धर्म कार्य आगे बढ़वलें। गायत्री परिवार के संस्थापक श्रीराम शर्मा 'आचार्य' के तपस्या और सामाजिक सेवा के बहुत बड़हन काम पर विस्तार से लिखाइल बा। बिहार के गया जिला के फखरपुर गाँव में १६ जनवरी १९१३ ई० में मिश्रकुल में जनमल लालमणि मिश्र आगे चक्रधर हो गइलन। भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार के अभिन्न हो के 'राधा बाबा' के नाम से प्रसिद्ध भइलें। गीता-वाटिका में भाई जी के देहावशेष के पास राधा बाबा के समाधि दर्शन से उनकर भक्त लोग तृप्त होलन। महर्षि ओंकारानन्द सरस्वती, बिहार के आरा नगर में कायस्थ परिवार में जनम लिहलें। गोरखपुर में मोहरीपुर में ओंकार आश्रम क स्थापना बहुत ग्रन्थन क रचना आ प्रणव प्रचार। १९८० तक रहि के ब्रह्मलीन स्वामी

www.bhojpurisahityangan.com

स्वतन्त्रतानन्द जी गोरखपुर जनपद के पुरान रिसायत गोपालपुर के गजहड़ा गाँव में सन् १९२८ ई० में जन्माष्टमी के दिन जनमलें। सीताराम नाँव धराइल लोग कहे लागल सुखारी। गन्ना विभाग में नौकरी करत भगवान के प्रेम में परि के तीर्थ व्रत करत गोपालपुर लवटि के बिसरा मन्दिर में रहे लगलन, क्षेत्र में जगह-जगह प्रवचन कइलें आ २६ जगह यज्ञ करवलन। गोरखनाथ मंदिर के महन्त अवेद्यनाथजी के देशव्यापी धर्म कार्य के पुरहर विवरण दिहल बा। चन्दौली जिला से यादव परिवार में जनमल सद्गुरु स्वामीशरणानन्दजी के तप, त्याग आ परमार्थ के वर्णन कइले के बाद उनकर स्थापित संस्था के परिचय दिहल गइल बा।

श्रद्धालु भक्त लोगन के श्रद्धा अपने इष्टदेव आ अपने पंथ तक सीमित रहेला। इंजीनियर राजेश्वर सिंह के श्रद्धा-एतना विकसित बा कि इतिहास-भूगोल में जहाँ-जहाँ जवन-जवन लोग भक्ति भावना आ लोक-सेवा में लागल रहल बा ओ सबके महत्व के उजागर करत रहेलें। एह किताब में उनके पूज्य-बुद्धि के उदाहरण देखल जा सकेला।

राजेश्वरजी अबहिन पुरहर स्वस्थ आ सक्रिय बानी। एक किताब पूरा भइले से पहिलहीं इहाँ के अगली किताब प्रेस में पहुँच जाली। भोजपुरी भाषा के गद्य क्षेत्र में इंजीनियर राजेश्वर सिंह के योगदान इतिहास में आपन जगह बनायीं।

इहाँ के स्वस्थ दीर्घजीवन खातिर परमात्मा से प्रार्थना।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

५८

दीक्षा गुरु क महातिम

-प्रो० चित्तरंजन मिश्र

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी सरकारी विभाग में इंजीनियर रहलीं हँ, उहाँ से अवकाश प्राप्त (रिटायर) भइले के बाद पूरा मन से तन से आ धनो से साहित्य के सेवा में लागल बानीं। उहाँ के लगे भगवान क दीहल प्रतिभा बा जवने के सदुपयोग हिन्दी आ भोजपुरी की सेवा खातिर हो रहल बा। एतना कम समय में एतना किताब छपवावल उहाँ की लगन क ही फल हऽ। रिटायर भइला के बादे उहाँ क प्रतिभा रचना में फूटल होखे एइसन बात नइखे। उत्तर प्रदेश, बिहार आ मध्य प्रदेश सरकार में बहुत ऊँच-ऊँच पद पर रहतो उहाँ क तमाम किताब छपलिस। शुरूआत त उहाँ क राजभाषा हिन्दी में ही कइनी जवने में खास बा-एक कहानी क आत्मकथा (वर्ष २००३), एक कहानी बीच में है, जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ?, सुख जागे-दु:ख भागे अउर श्रीराम महायज्ञ की कथात्मक झलकियाँ (सभी वर्ष २००४), गाँव से शहर जब आ गये (वर्ष २००५), जिस्म से रूह तक रोशनी-रोशनी (वर्ष २००६), नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७)। ओही ऊँच पद की अफसरी व्यस्तता में भोजपुरियो लिखाइल-जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), कल्यान क जुगुति (वर्ष २००५) आ सेवा से छुट्टी पौला पर उहाँ के पूरा समय भोजपुरी के मिले लागल ई बहुत भागि कऽ बात बा। वर्ष २०१६ में 'पढ़ीं समझीं मनन करीं', वर्ष २०१८ में भारतीय वाङ्मय के महान् ग्रन्थ श्रीमद्भागवत के ठीक से पढ़ी आ गुनि के इंजीनियर साहेब 'श्री मद्भागवत कथा-सार' नाँव क किताब भोजपुरी में लिखि के भोजपुरी भाषा में एक महान् काम कइलीं। भारतीय वाङ्मय के महान् ग्रन्थन के भोजपुरी में उपलब्ध करावे क अपनी संकल्प के आगे बढ़ावत उहाँ क भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०) में छपि के आ गइल बा।

भारत की सभ्यता आ संस्कृति के ऊँच आदर्श से जोड़िके उदात्त बनवले में जेतना भूमिका महान् ग्रन्थन क बा ओसे तनिको कम भारत के देव लेखा साधु-महात्मा क नइखे। ई सोचि-बूझि के इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी 'राम पियारा साधु-सन्त' वर्ष (२०१९) आ 'श्याम पियारा साधु-सन्त' (वर्ष २०२०) में दूगो अलग-अलग किताब तइयार कइलीं, जवने के नउवे से बुझा जाता कि पहिलकी किताब में मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के भगत लोगन क वर्णन आ दूसरकी किताब में लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण के भगत लोगन क वर्णन बा।

www.bhojpurisahityangan.com

ई किताब 'दीक्षा गुरु' शीर्षक से बा। एहू किताब में भारत की ओह महान् साधु, संत-फकीर, तपस्वी, ज्ञानी, महापुरुषन क वर्णन कइल बा जे लोगन की साधना आ उपदेश क असर भारत के लोगन पर परल आ ओसे लोग अपनी जियला की तरीका में साधुता, सादगी, निस्पृहता, सर्वधर्म समभाव अपनावल। राजेश्वर सिंह जी पंथ आ सम्प्रदाय भा समुदाय के बीच में बिना कउनो भेद-भाव के जन-मन में आदर आ विश्वास से बसल आध्यात्मिक-विभूतियन क परिचय लोगन में प्रचलित बातिन के आधार पर, आ जहाँ कौनो भी प्रकार क एतिहासिक भा पंथ की अनुयायी लोगन क विश्वास के अनुसार वोह विशेष समुदाय के ग्रन्थन में उल्लेख मिलता ओकरी अनुसार परिचय दिहला क सफल कोशिश कइले बानी। दीक्षा गुरु में इंजीनियर साहब कुल इक्कीस गुरु महाराज लोगन के परिचय, ओह लोगन के उपदेश की खास-खास बातिन की ओर में, ओह बातिन की विशेषता की बारे में बहुत ठेकाने से आपन बाति रखले बानी।

पुस्तक के शुरुआत में इंजीनियर साहब 'गुरु' तत्व क मीमांसा बहुत तर्कपूर्ण ढंग से कइले बानी। तंत्रशास्त्र से लेके वैष्णव परम्परा, निर्गुण काव्य परम्परा, श्रीमद्भागवत गीता, श्रीमद्भागवत आदि पोथिन में गुरु की महिमा क जवन बखान भइल बा ओकर बहुत सुन्दर विवेचन कइले बानीं। भारत क सब साधना पद्धतियन में आ कला के परम्परा में भी हालांकि उहो एक तरह क साधना ही ह, गुरु की अखण्ड महिमा क गान कइल बा। राजेश्वर सिंह जी संक्षेप में सबके समेटले क कोशिश कइले बानी। कबीरदास के कहनाम क भी हवाला बा, नाथ-पंथ में भी गुरु गोरखनाथ जी भी कहले बानी कि 'सगुरा होइ त भरि भरि पीवै निगुरा जाइ पियासा' आ 'बिन गुर गुदड़ी नाहि बेसास' माने कि जेकरी गुरु क पता न होखे ओकरी खाली भेस से ओपर भरोसा ना करे के चाहीं। गुरु क महिमा अपने जगही पर सभे मनले बा राजेश्वर जी भी मानते बानीं, बाकिर चेला के भीतर भी कुछ जरूरी गुन भाव देखे के चाही। एकलव्य के चेलाही क चर्चा भी बहुत जरूरी रहल अउर चेलन क भी, जे गुरु से त ओतना ना जुड़ि पावल जेतना चेला बने खातिर जरूरी होला बाकिर अपनी भाव आ भगति के बल पर गुरु की जानकारी के बिना भी गुरु क मूर्ति सामने राखि के अपनी कठोर तपस्या से गुरु के गुन के आत्मसात करे वाला चेलन क भी संसार में कमी ना रहल बा। गुरु चर्चा पूरा करत राजेश्वर जी बहुत अच्छा बाति चेतवले बानी जौन के उहें की भाषा में देखल ठीक रही। उहाँ के लिखले बानी-

'मतलब ई कि गुरु बनवले से ही कल्याण होयी-ई बात ना ह। अगर अइसन बात होत त जे लोग गुरु बनवले बाड़न का ओह कूल्हि लोगन क कल्याण हो गइल ? का ओह सब लोग के भगवान मिल गइलन ? जेकरे उपदेश से भा राह देखवले से, हमनी क कल्याण हो जाय, उहे सचमुच में हमार गुरु ह, चाहे हम ओके गुरु मानी भा ना मानी, चाहे ऊ हमके चेला माने भा ना माने अउर गुरु के हमार पता हो भा न हो। दत्तात्रेय जी अपने चौबीस गुरु के नाम

www.bhojpurisahityangan.com

बदलन का केहू आ के उनसे कहलस कि तूँ हमार चेला हव अउर हम तुहार गुरु हयीं ? गुरु के पता भी ना चलल अउर चेला आपन कल्याण कइ लिहलस। चेला में कल्याण क भूख अउर लगन ओके मंजिल तक पहुँचा देले।'

राजेश्वर सिंह की एक बाति के इहाँ दोहरावले क मतलब इ कहे के खातिर बा कि चेला में भी भूख आ लगन होखे के चाही नाहीं त ओकर दसा 'अंधे अंधेई ठेलिया दून्यू कूप परंत' वाली हो सकेले। आ एकर मतलब इहो बा कि भाव, लगन आ भूख चेला के भीतर ही बहे के चाही, ना होई त कइसनो गुरु कुछ ना क सकेला। राजेश्वर जी क ई गुरु-चेला तत्व मीमांसा बहुत उपयोगी आ तार्किक बा। एके पढ़ला से अनेक ग्रन्थन क सार भी मिली आ इंजीनियर साहेब के मौलिक तार्किक सोच भी।

जइसन कि मथेला से ही साफ बा एह पुस्तक में जेतना गुरु लोगन (इक्कीस) के बारे में लिखल बा ऊ सब आध्यात्मिक ज्योति वाला गुरु ह लोग, सबकी चेलन क संख्या अपरम्पार बा, पर ओह में से केतना लोग सचहूँ भाव, भूखि आ लगन से भरल बा एके आजु के समाज में देखल जा सकेला। हमरे लोक समुदाय में एक उक्ति बहुत चलेले कि 'चेला चलती क होलें सं' माने जेकर चलल रहेला ओकर अनुयायी बहुत हो जालेस। ई बात आजु काल हमनी का अपनी आँखिन से साक्षात् देखतानी। 'दीक्षा गुरु' में मध्यकाल से ले के आधुनिक काल तक क चर्चा बा। हमरे खातिर आ बहुतन खातिर भी एह में कुछ नया जरूर बा। जौन चौंकावे वाला भी बा आ रिझावे वाला भी। जइसे कि देवरहा बाबा नाथ-नदौली ग्राम में जन्म लिहलें रहलीं। हमार परिवार बाबा के निकटता क थोर-बहुत आनन्द उठवले बा आ कष्टो बहुत उठवले बा-तब्बो हम ई बात दावा के साथे ना कहि सकेलीं कि उहाँ का नदौली क नाथ घराना से रहलीं। नदौली के नाथ घराना में निकट रिश्तेदारी भइला के बावजूद ई बाति हम एकरे पहिले कहीं ना सुनलीं। इं. राजेश्वर के ई तथ्य कहाँ से मिलल ओकर उल्लेख नइखे-होइत त बहुत अच्छा रहित।

कुल मिला के इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी क नया ग्रन्थ 'दीक्षा गुरु' भारतीय गुरु-परम्परा क महातिम बतवते बा ओसे तमाम निष्ठावान पढ़वैया लोगन में चेला क सही गुन ढंग बनी, इहो उमेद कहल जा सकेला। राजेश्वर सिंह जी निःस्पृह भाव से बिना कुछ पवले की आशा के भोजपुरी की समृद्धि में लगल बानीं, ई एगो सराहनीय बाति बा। आजुकाल त 'जेही ध्याई उहे पाई एही क बाजार बा' के जानत समुझत भी इंजीनियर साहब भाषा साहित्य आ संस्कृति की मोर्चा पर तरुणाई के उत्साह से लगल बानी।

उहाँ क उत्साह बनल रहे, बढ़त रहे जौने से नया-नया रचना समाज के सामने आ के शेष लोगन क प्रेरणास्रोत बनल करे। एही शुभकामना के साथे इंजीनियर राजेश्वर सिंह के एह प्रयास क सराहना क रहल बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

५९

'दीक्षा-गुरु' : भोजपुरी जीवनी-साहित्य कऽ ज्ञानग्रन्थ

-प्रो० रामदरश राय

गोपालपुर रियासत (गोला बाजार) गोरखपुर क रहवइया इंजीनियर बाबू राजेश्वर सिंह आजु लगभग डेढ़ दरजन गद्य-पद्य रचना के मालिक हवें। २००३ में 'एक कहानी की आत्मकथा' पहिलका रचना बनिके छपल। तबसे आजु ले कुलि सोरह-सत्रह मोट-पातर ग्रन्थ पढ़वइयन के हाथे लगि चुकल बा। खड़ी बोली आ भोजपुरी दूनो भाषा में लिखले क उनकर आपन पहुँच आ तौर-तरीका बा। येहर उनकर कई किताबि भोजपुरी-गद्य में उपराइल बा। सगरो किताबि पढ़े-बूझे लायक बा। विचार करे आ सहेजे लायक भी। धरम-करम, लोक-परलोक, सुख-दुःख, जीवन-जगत्, साधु-संन्यासि, महापुरुष-पुराणपुरुष आ योगी-संत के विषय बनाके राजेश्वर जी एक बड़वर साहित्यिक जज्ञ ठनले बाटें। भोजपुरी-गद्य में उतरल उनकर कलम भोजपुरी-प्रेमी लोगन के तसल्ली देत बा। समीक्षक आ आलोचक भाई लोगन के कुछ लिखे बदे पक्का माल परोसत बा येहर छपल उनकर कुछ भोजपुरी-गद्य कऽ किताबि ढेर चरचा कऽ विषय बनलि बाटी, जइसे की 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (२००७)', 'कल्यान कऽ जुगुति (२००९)', 'पढ़ीं समझीं मनन करीं (२०१६)', 'भोजपुरी भागवत-कथा सार (२०१८)', 'राम पियारा साधु-सन्त (२०१९)' आ अब २०२० में छपि के श्याम पियारा साधु-सन्त आ भोजपुरी-महाभारत के बाद ई किताब झलकति बा 'दीक्षा-गुरु'।

'दीक्षा-गुरु' महापुरुषन पे लिखल 'भोजपुरी कऽ जीवनी साहित्य' बा। उत्तर-दक्खिन, पूरब-पश्चिम चारों ओर पैदा-पसरल योगी-यती, साधु-संन्यासी, संत-बैरागी आ विचारक-मनीषी के विषय बनाके इंजीनियर राजेश्वर सिंह भोजपुरी-भाषा में एक बड़वर काम लेके सामने आवत बाटें। येह किताबि के छपि गइले के बाद एक ओर भोजपुरी-गद्य क पाट चौड़ा होई त दुसरका ओर लोक समाज आ सिच्छित समाज में भी बराबर चरचा में रहे वाले पुरुखन कऽ करनी-धरनी आ की सगरो जीवनी एक बार फिर से ताजा होके सबके जबान-जेहन में उतरि बइठी। येह किताबि कऽ

www.bhojpurisahityangan.com

तमाम महापुरुष अइसन बाटें की उनकर जनम-करम आ आध्यात्मिक चमत्कार ठीक-ठीक से भारत के येह पूरबी आँचल में परचार-परसार में नइखे। तमाम आम आदमी येहमें से कुछ के नाव से जानत बाटें। लेखक राजेश्वर सिंह सगरो महापुरुष आ साधु-संन्यासी के बारे में विस्तार आ प्रमान के साथ कलम चलवले बाटें। किताबि कऽ सगरो जीवनी पढ़िके हम चकित-चमत्कृत बाटीं की लेखक ढेर मेहनत आ समझ के साथ आपन लेखन-यात्रा पूरा, कइले बा।

'दीक्षा-गुरु' भोजपुरी में लिखल एगो ज्ञानग्रन्थ बा। महापुरुषन के जीवनी के बहाने येह में निम्मन-निम्मन ज्ञान आ लोक-कल्यान करे वाला विचार-उपदेश भी लिखा उठल बा। लागत बा की वेद, शास्त्र, उपनिषद्, गीता आ सगरो पुराण-ग्रन्थ पढ़ि-पचा के लेखक जगह-जगह ज्ञान आ उपदेस क बाति उठवले बा। जदि अपने पुरनका साहित्य के खोजल-मथल जा त छनि के लउके वाली बाति इहे मिली कि "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" अथवा "सा विद्या या विमुक्तये" आ "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" आदि। यानी ज्ञान आ विद्या से बड़वर-बरियार कुछऊ नाहीं होला।

येह लेहाज से पहिले के समय में झाँकि के देखल जा त आपन देस भारतवर्ष सगरो दिसा-इलाका में ज्ञान आ सिच्छा- दिच्छा क कमाल कइले बा। एक निगाह दौड़ा के देखीं त साफ-साफ लउकि जाई की वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत कला, गीतकला, नृत्यकला, वाद्यकला, काव्यकला अउर तरह-तरह के सगरो कला में आपन देस नामी रहल बा। चौंसठ कला में सबसे आगे रहल बा। भरहुत आ साँची कऽ स्तूप, एलोरा कऽ गुफा-चित्र, सैन्धव सभ्यता कऽ संगीत कला, गीत कऽ सातों स्वर, दुन्दुभि-तम्बूरा, वीणा आदि वाद्य, रामायण-महाभारत अउर गीता-मानस जइसन काव्यग्रन्थ, पंचतन्त्र-हितोपदेश-जातक जइसन कथाग्रन्थ भारत देस कऽ निजी विरासत-पहिचान-ज्ञानकोष रहल बा। आयुर्वेद के इलाका में चरक कऽ 'चरकसंहिता' आ 'सुश्रूत क' 'सुश्रूत संहिता' राजनीति आ कूटनीति कऽ मानक-ग्रन्थ कौटिल्य कऽ 'अर्थशास्त्र', रस-रसायन-धातुविज्ञान कऽ मनीषी नागार्जुन, शल्यचिकित्सा का प्रवर्तक धन्वन्तरि, खगोल विज्ञान (ज्योतिष शास्त्र अथवा नक्षत्र विज्ञान) के क्षेत्र में आर्यभट्ट और वाराहमिहिर जइसन मनीषी। गणित के श्लाका में शून्य कऽ पहिला खोज आदि अउर भी बहुत कुछ ज्ञान-विज्ञान कऽ खजाना अपने भारत देस कऽ निजी मिल्कियत रहल बा। सगरो कऽ इतिहास आ साहित्य लमहर बा। येह इतिहास-भूगोल के अलावे देखले पे तमाम सिद्ध-प्रसिद्ध ऋषि-मुनि-योगी-संन्यासी-साधु-सन्त लउकत बाड़ें जेकरा ज्ञान-गरिमा आ तप-महिमा से ई भारतभूमि विश्वगुरु कहाइल बा। वशिष्ठ, विश्वामित्र, अत्रि, जनक, अष्टावक्र, गार्गी, मैत्रेयी, राम, कृष्ण, बुद्ध, महाबीर, वेदव्यास, बाल्मीकि, कालिदास, शंकराचार्य, गोरखनाथ, रामानन्द, कबीर, तुलसी, मीराबाई, महात्मा गान्धी, विवेकानन्द आदि तमाम महान् विभूति लोक-समाज, राष्ट्र आ विश्व बदे ज्ञान आ शिक्षा कऽ बड़वर विरासत दे गइल बाटें। येह परम्परा में कुछ अउरो साधक-तपसी-मनस्वी-ज्ञानी लेखक राजेश्वर सिंह के दिखाई पड़लें, जवन

www.bhojpurisahityangan.com

लोगन के विषय बना के उनकर दीहल दिच्छा विस्तार से सहेजले कऽ ऊ एगो बड़वर इतजोग कइले बाटें।

'दीक्षा-गुरु' किताबि में कुल बाईस चरित कथा जीवनी बना के टाँकल बा। सगरो जीवनी से जुड़ल महापुरुषन कऽ आपन-आपन बड़वर योगदान आ इतिहास बा। एक लेखे ई चरितनायक लोग महापुरुष के साथ-साथ इतिहास पुरुष भी बा। सिद्धि-प्रसिद्धि आ अकूत अवदान में ई लोग येतना आगे रहल बा की अपने जीवनकाल में ही अमर होके मिथक पुरुष हो रहल बा। येह लोगन क सगरो करब-धरब कवनो चमत्कार आ अचरज सरीखा उनके लउके लागल।

येह किताबि के सगरो जीवनी आ पाठ कऽ अलग-अलग समीक्षा उठावल जा तऽ बाति लमहर हो जाई। साहित्य आ इतिहास के पन्ना पलटि के देखल जा तऽ कई महापुरुषन कऽ विस्तार से चरचा-परिचरचा मिलि जाई। जइसे-रामानन्द, रामानुज, नानक, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द आदि। लेकिन भोजपुरी के ये किताबि में कुछ महापुरुषन के नयी जगह दे के लेखक राजेश्वर सिंह एक नया खोज कइले बाटें। जइसे-देवरहा बाबा, बंगाली बाबा, जयदयाल गोयन्दका, हनुमान प्रसाद पोद्दार, महन्त दिग्विजयनाथ, महन्त अवेद्यनाथ, स्वामी करपात्री जी, आचार्य श्री राम शर्मा, राधा बाबा, स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी लगायत अउरो कुछ महापुरुष।

ओइसे तऽ सगरो योगी-महन्त, साधु-सन्त, साहित्य-चिन्तक 'दीक्षा-गुरु' में चिराग बनिके चमकत बाटें। लेकिन योगिराज देवरहा बाबा, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, महन्त अवेद्यनाथ, स्वामी करपात्री जी, आचार्य श्रीराम शर्मा, श्री राधा बाबा आ स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी जइसन सन्त-शख्सियत येह किताबि कऽ खास अध्याय बनल बाटें। कारन की अउरन कऽ जनम-करम कऽ कुण्डली ज्यादे देखे-पढ़े में आइल बा। लेकिन, ई सातों महत्त्वपूर्ण हो के भी हासिया पे पड़ल लउकेलें। सच ई बा की सातों महापुरुष पिछलका 'शताब्दी क सप्तर्षि' रहलन।

देवरहा बाबा एक तपल सन्त आ सिद्ध साधु रहलन। देवरिया के मईल गाँव में सरयू नदी कऽ देवारा में मचान बना के रहले के कारन उनकर नाम देवरहा (देवरहवा) बाबा धरा गइल। उनकर लमहर उमरि कऽ अनुमान १५०, २५०, ३०० आ ५०० बरिस तक भगत लोग लगवलें बाटें। लेखक राजेश्वर सिंह येह किताबि में लिखले बाटें की, "देवरहा बाबा जन-सेवा अउर गो-सेवा के सबसे बड़वर धरम मानत रहलन।....भक्तन के कष्ट से मुक्ति बदे कृष्ण-मन्त्र देत रहलन"-

"ॐ कृष्णाय बासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणत क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमोनमः ।।"

देवरहा बाबा कऽ लोक-चमत्कार बहुश्रुत रहल। बाबा साँझे क मईल-देवरिया में, सबेरे बनारस आ की प्रयागराज में। उनकर सिद्धि कऽ गहराई हजार किंवन्दी से पटल पड़ल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाई जी' पैदा भइल रहलन शिलांग में। राजस्थान, मुम्बई आ कलकत्ता में व्यवसाय आ समाज सेवा के सिलसिले में आवाजाही रहल। हनुमान जी के कृपा से जनम पउले के कारन उनके नाम परल 'हनुमान प्रसाद'। मुम्बई में आजादी कऽ शंखनाद करे वाले गाँधी, पटेल, कालेलकर, विनोबा, शौकतअली, मालवीय आदि से बनल परिचय-सम्बन्ध उनके काम आइल। ईहे लोग प्रेम से इनके 'भाई जी' कहे लगल। आगे चलिके इनकर उपनाम पड़ि गइल 'भाई'। येहर-ओहर के चुनौती भरल परिक्रमा के बाद गोरखपुर अइले के बाद 'भाई जी' गोरखपुर कऽ होके रहि गइलें। 'गीता प्रेस' से जुड़ि के 'कल्याण' पत्रिका क सम्पादन अपने कान्हे पे उठा के प्रेस-पत्रिका-जगत्, साहित्य-जगत्, धर्म-अध्यात्म-जगत् कऽ बरियार उपकार कइलन। गुरु गोरखनाथ के अलावे 'गीता प्रेस' आ 'कल्याण' पत्रिका आ हनुमान प्रसाद पोद्दार के नाम से आज गोरखपुर जानल जाला।

महन्त अवेद्यनाथ गोरखपुर क शान-मान रहल हवें। गोरक्षपीठ कऽ पीठाधीश्वर आ योगी आदित्यनाथ (मुख्यमंत्री) कऽ गुरु अवेद्यनाथजी क व्यक्तित्व लोकप्रहरी आ धर्मप्रहरी कऽ रहल बा। समाज-सेवा, गो-सेवा आ राष्ट्र-सेवा कऽ उनकर सुभाव उनके 'राष्ट्र-सन्त' कऽ लोक मान्यता दिहलस। गोरखपुर में सिच्छा आ चिकित्सा के क्षेत्र में ऊ बड़वर काम कइलन। रामजन्म-भूमि-आन्दोलन कऽ ऊ अगुआ रहल बाड़न। शिक्षक-आचार्य-विद्वान् लोगन के ऊ ढेर इज्जत देत रहलन। उनके नाम के अउर काम से गोरखपुर कऽ मान देस-दुनिया में बढ़ल बा।

स्वामी करपात्री जी कऽ जनम सम्बन्ध (उत्तर प्रदेश) के प्रतापगढ़ जिला से रहल बा। गृहस्थ जीवन में आ के भी करपात्री जी घर-कुटुम्ब छोड़ि के अध्यात्म कऽ राहि पकरि लिहलें। सनातन परम्परा आ भारतीय धर्म-अध्यात्म उनके भीतर बइठि के उनसे बड़वर चिन्तन-मनन करउलस। घर छोड़ला के बाद ऊ विन्ध्याचल, प्रयागराज, हिमालय के तलहटी में, काशी में घूमि-घूमि के साधना कइलन। हिमालय से लवटि के अइले के बाद गुरु विश्वेश्वरानन्दजी के आश्रम में इनके 'परमहंसजी' कहल गइल। गो-वध बन्द करावे वालन में अगुवाई करे वाला करपात्री जी एक दरजन ग्रन्थ लिखले बाड़ें। उनकर सुभाव आ जीवन-शैली कऽ परीक्षण करत लेखक राजेश्वर सिंह लिखले बाटें की, "उनकर जिनगी साधारण तपस्वी क रहे। ऊ खाली एगो कोपीन पहिनत रहलन। भीख माँगि के माटी कऽ एगो हाड़ी में पका के हाथ पे रखि के पा लेत रहलन। हाथ में भोजन कइले के कारन उनकर उपनाम 'करपात्री जी' परल।"

आचार्य श्रीराम शर्मा कऽ जनम आगरा के आँवल खेड़ा में भइल रहल। विद्वान् कथावाचक आ राजपुरोहिती कर्म से जुड़ल पिता पंडित रूपकिशोर शर्मा क सगरो गुन-संस्कार पा के श्री राम शर्मा श्री मद्भागवत् कथा आ संस्कृत-व्याकरण कऽ जानकार कम उमिरि में हो गइलें। 'गायत्री-मंत्र' कऽ विधिवत् दीक्षा ले के आचार्य जी रोज-रोज नियमित सन्ध्या-बंदन में लीन हो उठलें।

www.bhojpurisahityangan.com

मथुरा, काशी, हिमालय कऽ यात्रा और आत्मसाधना कऽ बड़वर संकल्प। देखत-देखत 'गायत्री महाशक्ति' कऽ चौबीस साल में 'चौबीस महापुरश्चरण' पूरा कइलन। आचार्य श्रीराम शर्मा शताधिक ग्रन्थ कऽ रचना कइले बाटें। विज्ञान, समाज विज्ञान, अध्यात्म, दर्शन, धर्म आ लोकमनोविज्ञान कऽ येतना बड़वर चिन्तक बीसवीं शताब्दी में कम लउकत बाड़ें। धर्म-अध्यात्म-समाजविज्ञान पे उनकर लिखल कहल सगरो बाति सूक्ति-सुभाषित बनि के शिक्षित-अशिक्षित सबके जिह्वा पर चढ़ि उठल। मथुरा अउर हरद्वार के केन्द्र बना के आचार्य जी 'अखण्ड-ज्योति' पत्रिका आ 'शांतिकुञ्ज गायत्री तीर्थ' कऽ निर्माण कइलें। लाख-लाख अनुयायी भक्त उनके विचारनिधि क स्वागत करत बाटें।

श्री राधा बाबा गया-बिहार कऽ रहवइया रहलें। उनकर घरऊ अउर स्कूली नाम लालमणि अउर बाद में चक्रधर रहल। शुरू से ही आध्यात्मिक मन वाला बालक चक्रधर लिखाई-पढ़ाई में तेज रहलें। आरम्भ में शिवभक्ति-दुर्गाभक्ति में लीन भी। प्रतिभा-परिश्रम के बल पे चक्रधर हिन्दी, बँगला, संस्कृत, अंग्रेजी भाषा पर अचूक अधिकार रखत रहलें। स्कूल-कॉलेज में अव्वल स्थान पावे वाला चक्रधर कवनों बड़हन सरकारी ओहदा पा सकत रहलें। लेकिन राधा-कृष्ण के प्रति लगाव-अनुराग-भक्ति उनके आध्यात्मिक संन्यासी बना दिहलस। चारो ओर घूम-घाम के अन्त में गोरखपुर आ गइलें। हनुमान प्रसाद पोद्दार के सत्संग आ प्रभाव में आ के 'गीता वाटिका' से जुड़ि के महान् मनीषी-चिन्तक हो उठलें। आराध्य श्रीकृष्ण के आनन्दित करे बदे आपन नाम 'राधा' (राधा कृष्ण) रखि लिहलें। राम-कथा, कृष्ण-कथा आ सृष्टिकथा पर केन्द्रित उनकर किताबि पढ़ल आ सराहल जाले। गोरखपुर कऽ एक बड़वर पहचान रखलन 'राधा बाबा'।

स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी गोरखपुर जनपद के गोला तहसील के एक प्रसिद्ध गाँव गजहड़ा में सन् १९१८ ई० में पैदा भइल रहलें। कौशिक वंश में पैदा भइल स्वामीजी विश्वामित्र के वंशवृक्ष से जुड़ल रहल बाड़ें। घर-गृहस्थी छोड़ि के विरक्त हो के स्वामीजी ऋषिकेश, मथुरा, अयोध्या, काशी, हरद्वार और दक्षिण भारत कऽ पुरहर तीर्थयात्रा कइलन, सत्संग कइलन। बाद में कुछ साहित्य आ अध्यात्म कऽ किताबि भी लिखलें। गोरखपुर, आजमगढ़, गाजीपुर, देवरिया, बस्ती में श्री विष्णु महायज्ञ कइके पूर्वांचल क धर्मनरेश कहा उठलें। स्वतन्त्रता संग्राम में भी उनकर योगदान क्षेत्र में याद कइल जाला।

शुरू से अन्त तक सगरो अध्याय आ जीवनी पढ़ले के बाद हमके बुझाइल की 'दीक्षा-गुरु' एगो पढ़े आ सहेजे लायक किताबि बा। आजु पड़ताल कइके देखल जा तऽ साहित्य के पन्ना से जीवनी कऽ पाठ गायब होत जात बा। इं. राजेश्वर सिंह कऽ ई किताबि येह अभाव के पूरा करति बा। छपि के आ गइले प सेरात भोजपुरी-गद्य एक बार फिर गरमा के अंगड़ाई लेई। संस्कृत-हिन्दी कऽ दुरुह डगर जनभाषा-भोजपुरी कऽ सोहबत पा के निहाल हो उठी। ई भोजपुरी-गद्यग्रन्थ

www.bhojpurisahityangan.com

जदि मॉरिशस, गुयाना, ट्रिनीडाड आ फिजी उपमहाद्वीप में पहुँचले कऽ जोगाड़ निकारि पाई तऽ येके भोजपुरी कऽ विश्व साहित्य बनले में देर नइखे लागी। हिन्दी, अंग्रेजी आ उर्दू भाषा में जदि येह ग्रन्थ कऽ अनुवाद हो गइल तऽ ई एक्कीसवीं शताब्दी कऽ भोजपुरी-गद्य कऽ कालजयी किताबि बनि उठी। लेखक इं० राजेश्वर सिंह के रचनात्मक कीर्ति में इजाफा करी।

मैक्समूलर, ग्रियर्सन आ सुनीति कुमार चटर्जी न तऽ संस्कृत भाषाभाषी रहलन अउर न हिन्दी भाषाभाषी। लेकिन संस्कृत आ हिन्दी भाषा-साहित्य के क्षेत्र में उतरि के नामचीन काम कइलें। ओइसहीं राजेश्वर सिंह कऽ अध्ययन क्षेत्र विज्ञान-अभियांत्रिकी आ अंग्रेजी रहल बा। कार्यालयीय संवाद क माध्यम हिन्दी रहल बा। लेकिन एगो बड़वर अचम्भा ई बा की ऊ अपने साहित्यिक लेखन-खातिर भोजपुरी कऽ काया-छाया पकरले बाटें। येह अद्भुत सुभाव के लेखक पे इहे टिप्पणी ठीक बइठत बा की उनके भीतर अपने मातृभाषा खातिर अपार-अथाह प्रेम-उछाह बा जइसन की संस्कृत कऽ जानकार काव्य-पण्डित हो के भी तुलसीदास आपन मातृभाषा-प्रेम अवधी में देखउले बाटें।

अन्त में लेखक ई. राजेश्वर सिंह जी के अँजुरी भर हमार बधाई आ बड़ाई बा। भोजपुरी-गद्य में ऊ एक ठों बड़वर-निम्मन ज्ञानयज्ञ शुरू कइले बाटें। उनकर ई लेखन लगाार चलत रहे। देखि-सुनि पढ़ि के हमरे जइसन भाषा लोभी के आनन्द मिली।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

साधना से मिलल संत सुभाव

-प्रो० रामदेव शुक्ल

सफल गृहस्थ जीवन के चरम परिणति क्रमशः वैराग्य आ ओकरे आगे भक्ति में मानल जाला। भक्ति की ओर बढ़ले पर भगवान के कवनो रूप इष्टदेव के भक्ति के साथ-साथ भक्त लोगन के प्रति श्रद्धा बढ़ले पर भगवान अउर प्रसन्न होलें।

एह मामला में जल निगम विभाग के बहुत सफल इंजीनियर राजेश्वर सिंह एगो उदाहरण बनिके आपन जगह बनवले बानें। इंजीनियरिंग के काम में कुशल राजेश्वर सिंह कहानी आ उपन्यास में हाथ अजमवलें। जइसन जवानी के जोश में स्वाभाविक होला स्त्री-पुरुष के प्रेम आ श्रृंगार में खूब मन लगवले की बाद तिसरकापन में वैराग्य भाव प्रबल भइल। राम-कथा आ कृष्ण-कथा में इनकर मन लागल। भोजपुरी में भागवत-कथा लिखले के बाद **'राम पियारा साधु-सन्त'** लिखि के एगो नया कीर्ति उपरजलें।

एह किताब में 'साधु-सन्त अउर उनकर महिमा' शीर्षक से साधु-सन्त के लक्षण बतवले बाड़न। साधु आ सन्त में बड़ा नीमन फरक देखें लायक बा-'जे लोग अध्यात्म के ओर आपन रुख कर लेला अउर साधना शुरू कइ देला ओह लोगन के कहल जाला साधु। साधना करत-करत जेकर साधना पूर हो जाला ओहके कहल जाला संत।'

संत क लक्षण ४० बिन्दु में गिनावल गइल बा। एह चालीस में स्मृति, पुराण, गीता, महाभारत, रामायण आ योग-दर्शन में गिनावल सब लक्षण आ गइल बा। 'ई सगरो गुण सिद्ध सन्त में मौजूद होला, अउर साधक लोग पवले खातिर कोशिश कइल करेलन।' एतना भूमिका के बाद राजेश्वर सिंह जी ५१ राम-भक्तन क संक्षेप में परिचय करववले बानें। महर्षि बाल्मीकि से ले के शबरी तक के महिमा वर्णन संक्षेप में बखानल गइल बा। महर्षि वेद व्यास, भरद्वाज मुनि, महर्षि अगस्त्य, आरण्यक मुनि, महर्षि शरभङ्ग, महर्षि अत्रि अउर सती अनसूया, आद्यशंकराचार्य, यामुनाचार्य, गोस्वामी तुलसीदासजी, श्री क्षेम गोसाईं जी, श्री राघवदास, महर्षि

www.bhojpurisahityangan.com

लोमश जी, समर्थ गुरु रामदास स्वामी, श्री रामदासजी महाराज, बाबा कीनाराम अघोरी, परमहंस मामा श्री प्रयागदास जी, सन्त श्री कच्चा बाबा जी, श्री जानकीवर शरण जी से ले के भीलनी शबरी तक जेकरे जीवन में राम भक्ति कबहूँ कउनो रूप में जागल रहे, ओहके इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी 'राम पियारा' मान के संत क दर्जा दिहले बाड़ें। भक्ति साहित्य के इतिहास लिखे वाले विद्वान् राम भक्तन के दर्जनों भेद कइके एक दूसर के निन्दक, विरोधी अउर शत्रु तक मान लीहँ। राजेश्वर सिंह के साधु-दृष्टि में सगरो भेद निरस्त हो गइले। सभी सन्त, सभी रामप्यारे।

भोजपुरी साहित्य में इंजीनियर राजेश्वर सिंह के योगदान भोजपुरी के इतिहास लिखे वाला लोग के मोटका अक्षर में लिखे के परी। इनके साधना आगे बढ़त रहो, एही आशीष के साथ !

❖

दिहले कऽ आनन्द पवले के आनन्द से बरियार होला

स्वामी रामतीर्थ जी के जिनगी क एगो घटना बाड़े। स्वामीजी दिन भर घूमत-घामत प्रवचन देत थक के सांझी कऽ अपने डेरा पऽ पहुँचलन। ऊ अपना हाथ से अपना खाना पकावैं। खाना पका के धइते कुछ लइके आ गइलन अउर कहे लगलन कि स्वामी हमरा सबके भूखि लागल बाऽ कुछ परसादी दे देईं। स्वामी जी लइकन के चेहरा ओर ताकि के लइकन के भुखाइल जानि गइलन अउर सगरो रोटी लइकन में बाँटि दिहलन। पड़ोस क एगो मेहरारू ई कुल्हि देखति रहल। ऊ स्वामी जी से पूछि पड़लि कि ए महाराज ! सगरो रोटिया तऽ रउआँ बाँटि दिहलीं अपना का खाइल जाई। एह पर स्वामी जी कहलन-''माई ! रोटी पेटे क आगि बुझावे खातिर होला। चाहे एह पेटे कऽ बुझावै चाहे वोह लइकन के पेटे के। केहू के कुछ दिहले कऽ आनन्द खुद कुछ पवले के आनन्द से बरियार होला।''

-कल्यान कऽ जुगुति/पृ.सं. 43 से

www.bhojpurisahityangan.com

६१

रामपियारा साधु-सन्त

-प्रो० सदानन्द शाही

इंजीनियर राजेश्वर सिंह भोजपुरी क अइसन सेवक हउअन जे बिना कवनो हो हल्ला के आपन काम कइ रहल बाने। इंजीनियरिंग के पढ़ाई आ नोकरी के बीचे उनके भोजपुरी में लिखे के जवन धुन पैदा भइल ऊ भोजपुरी खातिर बहुत शुभ बा। भोजपुरी में सबसे ढेर गीत आ कविता लिखल जा रहल बा। गद्य के ओर लोग के धेयान नइखे जात। किस्सा, कहानी, उपन्यास आ कुछ साहित्य चर्चा भी होखे लागल बा। बाकिर कवनो भासा के समृद्धि खाती एतने से नाई हो सकेला। जबले तरह-तरह के गद्य हमरा सामने न आई तबले भोजपुरी के विकास एकांगी हो के रहि जाई।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह भोजपुरी में गद्य लिखले क बीड़ा उठवले बाने। सबसे पहिले हमरे हाथ में भोजपुरी में लिखल उनकर एगो पर्चा आइल (जिनगी क जरूरत पानी)। एह पर्चा में ऊ पानी के उपयोग, पानी के शुद्धता के बारे में बहुत उपयोगी जानकारी देले बाड़न। रोज के जीवन से जुड़ल अइसन वैज्ञानिक सोच वाला पर्चा भोजपुरी में देखि के मन खुश हो गइल। ओकरे बाद उनकर भोजपुरी में लिखल कइगो किताब देखे के मिलली सऽ। जिनगी क दूबि हरियाइल, कल्यान क जुगति, पढ़ीं, समझीं मनन करीं अउर भोजपुरी भागवत कथा-सार हमके देखे के मिलल। बड़ा खुशी भईल कि ईहां के किस्सा कहानी के साथे अलगे-अलगे तरह के विषयन प लिख के भोजपुरी गद्य के सम्पदा बढ़ा रहल बानी।

एही क्रम में उहाँ के किताब 'राम पियारा साधु-सन्त' के देखल जा सकेला। एह किताब में इंजीनियर राजेश्वर सिंह एकावन राम भक्तन के परिचय देले बानी। हमके ई देखि के बहुत नीक लागल की ऊंहा के सगुण-निर्गुण के बराव में नइखी पड़ल।

एह में जनक, अनसूया आ हनुमान जी से ले के नारद मुनि के भी परिचय बा, तऽ बाल्मीकि आ तुलसीदास अइसन कवि भी बाने। कबीर, भीखा आ गुलाल साहब अइसन निर्गुण कवि के अलावा संत कीनाराम जइसन अघोर पंथ के संत के भी जगह मिलल बा। संतई के बाना पहिरल आसान बा, बाकिर संत भइल बहुत कठिन बा। संतन के जीवन

www.bhojpurisahityangan.com

परिचय से ही ई बाति बहुत आसानी से बुझा जाला। असल में संतई के सवाल आचरण के सवाल हवे। जबले संतई आचरण में ना आई तबले केहू संत ना हो पाई।

एही से इं० राजेश्वर सिंह जी एह किताब में संत के चालीस ठो लक्षण लिखले बाने। ईंहा ओके दोहरावल बहुत जरूरी बुझाता। ऊहें के शब्दन में संतन के गुण देखीं जा-

१. कउनो जीव से दुश्मनी ना राखल।

२. सबके संग दोस्ताना रिश्ता राखल।

३. बिना कउनो भेद-भाव के दुखी जीव लोगन प दया कइल।

४. भगवान के अलावा केहू में 'मेरापन' मतलब अपनापन ना भइल।

५. शरीर-मन-वाणी में कबहूँ 'मैं पन' ना भइल।

६. सुख-दुःख में समान बुद्धि मतलब एक जइसन समझ बनल रहल।

७. आपना बुरा करे बाले के प्रति; ओहके दण्ड दिहले क ताकत होखलहू प दण्ड ना दिहल, क्रोध ना कइल, अउर ओकरे भलाई खातिर भगवान से निहोरा कइल।

८. अपने खातिर हित करे वाला अउर हित न करे वाला दूनो स्थिति के मिललो प सन्तुष्ट रहल।

९. चित्त हरदम भगवान से जोड़े राखल।

१०. मन-इन्द्रियन के जीत लिहल।

११. भगवान में पुरहर अखम्भ विश्वास राखल।

१२. मन अउर बुद्धि के हर तरह से भगवान में अर्पण कइ दिहल।

१३. अपने कउनो आचरन से केहू जीव के भी परेशान ना कइल।

१४. केहू से कउनो तरह क व्यवहार पइले प परेशान ना भइल।

१५. सांसारिक वस्तुवन के पवले प खुश ना भइल।

१६. दूसरे के तरक्की प डाह ना कइल।

१७. हमेशा निडर रहल।

१८. कउनो भी अवस्था में अशान्त ना भइल।

१९. कउनो चीज क उम्मीद ना कइल।

२०. मन-वाणी-देहि से पवित्र रहल।

२१. हित के लिहल अउर अहित के तजल।

www.bhojpurisahityangan.com

२२. सबसे उदासीन रहल अउर उम्मीद ना कइल।

२३. हर काम भगवान के लीला से शुरु होला अउर पूरा भी होला, सदा एह भाव से करे के चाही, अउर माने के चाही।

२४. दिल-दिमाग से हर दम दुखी रहले के आदत से बचल।

२५. मन के हिसाब से मिलल अउर मन के खिलाफ क अन्त भइले में खुशी के अनुभव ना कइल।

२६. मन के मुताबिक पावल अउर न पवले के स्थिति में द्वेष न भइल।

२७. कउनो भी स्थिति में दुख न होखे।

२८. शुभ अउर अशुभ काजन के फल के तजि दिहल।

२९. शत्रु-मित्र में एक जइसन भाव राखल।

३०. कउनो भी चीज क इच्छा ना राखल।

३१. मान मिलने अउर अपमान यानी बेइज्जती भइला पर भी एक तरह क भाव बना के राखल।

३२. सरदी-गर्मी में एक तरह बुद्धि बना के रखल।

३३. सुख-दु:ख के एक तरह क मानल।

३४. कउनो भी पदार्थ से विशेष जुड़ाव ना राखल।

३५. निन्दा-स्तुति के समान समझल।

३६. जबान से हमेशा सत्य क चर्चा कइल अउर कउनो बात से परहेज कइल, मन से भगवान के रूप क मनन करत रहल।

३७. देहि के पलले-पोसले खातिर जवन कुछ खाये के मिल जाय ओही में सन्तुष्ट रहल।

३८. घर-दुआर के आपन न मानल।

३९. हमेशा भगवान में स्थिर बुद्धि राखल।

४०. श्रद्धा के साथ भगवान क रचल धर्मरूपी अमृत क हरदम सेवन कइल।

ध्यान से देखल जा त संतन के जवन-जवन गुण राजेश्वर जी गिनवले बाड़न ऊ आदमी के आदमियत के उच्चतम स्थिति बा। संतन के जीवन के ई कुल गुण सच पूछल जा तऽ आदमी भइले के सबूत हवे। सबसे दोस्ताना रिश्ता राखल, भेदभाव ना राखल, केहू के परेशान ना कईल, ई कुल्हि आदमी के सद्गुण होखेला। संतन के चरित्र एही सद्गुणन के अपने भीतर उतरले क प्रेरणा देला। आजु के समय में देखल जा त धीरे-धीरे ई कुल्हि मानवीय सद्गुण हेराइल जाता। एसे संतन के चरित्र के ई किताब समय के जरूरत बा।

www.bhojpurisahityangan.com

हमके उम्मीद बा कि भोजपुरी के पाठक लोग के प्रेम ए किताब के मिली आ ऊ लोग एसे अपने भीतर के मानवीय भाव के अउर जगा सकी।

एगो बात ईंहा के भाषा के बारे में कहि के आपन बाति खतम करब। राजेश्वर सिंह के भोजपुरी गोरखपुर वाली भोजपुरी हवे। कुछ लोग भोजपुरी में मानकीकरण के सवाल उठावेला। बाकिर हमरे हिसाब से मानकीकरण के सवाल आगे क सवाल ह। पहिले भोजपुरी में लिखाई-पढ़ाई क काम त होखो। जब समय आई तऽ मानकीकरण के काम भी कऽ लीहल जाई।

हमार कहल ई बा कि पहिले भोजपुरी गद्य क रूप त सामने आवो। हमार कामना वा कि राजेश्वर जी अइसहीं लिखत रहीं आ भोजपुरी के खजाना भरत रहीं।

❖

नामसंकीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम् ।
प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम् ।।

'जिन भगवान् के नामों का संकीर्तन सारे पापों को सर्वथा नष्ट कर देता है और जिन भगवान् के श्रीचरणों में आत्मसमर्पण सर्वदा के लिये सब प्रकार के दुःखों को शान्त कर देता है, उन्हीं परमतत्त्व-स्वरूप श्रीहरि को मैं नमस्कार करता हूँ।'

www.bhojpurisahityangan.com

६२

रामपियारा साधु-सन्त : एक नजर में

-सूर्यदेव पाठक 'पराग'

मर्यादा पुरुषोत्तम राम आ लीला पुरुषोत्तम कृष्ण प अनगिनत पुस्तकन क रचना होत रहल बा। कवि-लेखक अपना रुचि क अनुरूप राम भा कृष्ण के नायक बना के उनका गुणन के बखान करत उनका के सेसर मनले बाड़े। बाकिर जे भक्त, कवि भा कवनो एगो देवता का प्रति समर्पित तपोनिष्ठ साधक बाड़े, ऊ अपना आराध्ये के सभ कुछ मान के आपन पूरा जीवन उनके गुणगान आ पूजा-आराधना में लगा देले बाड़े।

राम के कथा महर्षि बाल्मीकि के 'रामायण' आ कृष्ण के कथा महर्षि वेदव्यास रचित 'श्री मद्भागवत' में लिखाइल बा, जवना के आधार बना के बाद के कवि लोग आपन-आपन काव्य रचना करत आइल बाड़े आ साधु-संत राम-कृष्ण का प्रति आस्था प्रेम आ उपासना के राह अपनवले बाड़े।

भोजपुरी में कहानी संग्रह, निबन्ध संग्रह आ 'भोजपुरी भागवत कथा-सार' जइसन रुचिगर, प्रेरक आ भक्ति भरल पुस्कतन के लेखक इं. राजेश्वर सिंह भोजपुरी भाषा आ भारतीय संस्कृति का प्रति भरपूर आस्था रखे वाला सहज, सरल, श्रमशील व्यक्तित्व वाला मनई हईं।

पिछिला साल (२०१८) 'भोजपुरी भागवत कथा-सार' का प्रकाशन से राजेश्वर जी क एह प्रयास के खूब सराहना मिलल। लीला पुरुषोत्तम श्री कृष्ण क चर्चा के बाद अब मर्यादापुरुषोत्तम भगवान राम के आराधना करे वाला साधु-सन्तन के केन्द्र में रखि के 'रामपियारा साधु-सन्त' नाँव से प्रकाशित होखे वाली पुस्तक के पाण्डुलिपि सामने पा के हमरा अपार खुशी हो रहल बा।

पुस्तक के नाँव में आइल 'रामपियारा' शब्द दूगो अर्थ वाला बा-राम जेकर प्रिय होखस अइसन साधु-संत चाहे राम के प्रिय साधु-सन्त। भक्ति आराधना प्राय: उहे करेला जेकरा आपन इष्टदेव (राम, कृष्ण, शिव आदि) प्रिय होले आ ओ़करा में 'जनम जनम रति राम-पद' वाली

www.bhojpurisahityangan.com

भावना काम करेले। जब भक्त अपना आराध्य में एकनिष्ठ हो के रम जाला त ऊ अपना इष्टदेव के प्रिय होइए जाला। भगवान राम के भक्ति भाव में आपन पूरा जीवन-न्यौछावर करे वाले राम के प्रिय साधु-सन्तन पर केन्द्रित पुस्तक 'रामपियारा साधु-सन्त' में अधिकतर अइसने साधक बाड़े जे अपना आराध्य के दास्य भाव, सख्य भाव चाहे माधुर्य भाव से उपासना कइल आ उनका के रिझावे खातिर अपना भाव का अनुकूल रचनो करत रहले, जवना से उनका भक्ति भाव का साथे कवित्व-विवेको के परिचय मिलेला, बाकिर कुछ साधक अइसनो रहले, जे रचनाकार ना भइलो पर भगवान राम के परम भक्त रहले आ उनकर ईश्वरीय निष्ठा उच्च शिखर पर रहे।

आदि कवि बाल्मीकि, संत कबीर, गोस्वामी तुलसीदास आदि से लेके वर्तमान काल के साधु-सन्त भगवान राम का आराधना के साथ उनकर गुण गान, अपना रचनन का माध्यम से करत रहल बाड़े, जवन भक्ति साहित्य का पुरहर थाती के रूप में पावल जाला। रामायण में चर्चित भरद्वाज, शरभङ्ग, शबरी, जनक आदि के रामभक्ति परक भाव से सभे परिचित बा।

'महाभारत'-'श्रीमद्भागवत' के रचयिता महर्षि वेदव्यास एह दूनो ग्रन्थन में लीलापुरुषोत्तम श्रीकृष्ण के चरित्र विस्तार से चित्रित कइले बाड़े, बाकिर उनके रचल अनेक पुराणन में रामकथा आ ओसे जुड़ल आध्यात्मिक-दार्शनिक तत्त्व के गहन विवेचन भइल बा। वेदव्यास के रचल 'अध्यात्म-रामायण' के बाल्मीकीय रामायण के बाद संस्कृत के रामायण ग्रन्थन में महत्त्वपूर्ण मानल जाला। गोस्वामी तुलसीदास के विश्वविश्रुत 'रामचरित मानस' का आध्यात्मिक आ दार्शनिक तत्व के विवेचन के आधार मुख्यरूप से अध्यात्मरामायणे रहल बा। कुछ प्रसंग में फेरबदल भी 'मानस' में एकरे अनुसार कइल गइल बा। जहाँ तक पुराणन में रामकथा क बात बा-'श्रीमद्भागवत' क नौंवा स्कन्ध क दसवाँ आ ग्यारहवाँ अध्याय में क्रमशः छप्पन आ छत्तीस श्लोकन में राम कथा के वर्णन मिलेला। एकरा अलावा 'योग वासिष्ठ' 'स्कन्द-पुराण' 'पद्म पुराण' आदि विभिन्न पुराणनों में रामकथा पावल जाला। एही आधार पर राजेश्वर जी वेद व्यास के रामभक्तन के साथ जोड़ले बानी जवन कुछ अटपटा लगला के बावजूद सही लागत बा कि अगर व्यास जी का मन में भगवान राम का प्रति भक्ति ना रहित त अनेक पुराणन में रामकथा के समावेश भा 'रामायण-माहात्म्य' के चर्चा ना रहित।

'राम पियारा साधु-संत' में कुछ रामभक्त राम के समकालीन आ प्रत्यक्षदर्शी रहल बाड़े, जइसे महर्षि बाल्मीकि, महर्षि वसिष्ठ, राजर्षि जनक आ भक्तराज हनुमान आदि, त कबीर, तुलसी जइसन संत कवि भगवान राम का भक्ति के साथे अपना रचनन में उनका के लोकमानस में प्रतिष्ठित करे में सफल भइले। एकरा बाद राम भक्तन के एगो लमहर परम्परा चलत रहल जे रामोपासना में पूरा जीवन लगा दिहलन। ई परम्परा आजो अबाधगति से चलि रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

अइसन रामपियारा साधु-सन्त के जीवन गाथा अनेक ग्रन्थन के मनन चिन्तन के आधार पर भोजपुरी में लिख के भगवान राम का प्रति श्रद्धा-प्रेम रखे वाले भोजपुरी भाषी लोगन तक पहुँचवले खातिर इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के प्रयास जरूर सराहल जाई, अइसन पूरा भरोसा बा, साथ ही पक्का विश्वास बा कि राजेश्वर जी के लगातार चले वाली कलम से फेर कवनो नया ग्रन्थ लिखा के भोजपुरी का पाठकन के सोझा जल्दी जाई।

हमार इहे कामना बा।

श्री राजेश्वरसिंहस्य पुस्तकं मोददायकम् ।
पठन्तु प्रेमसहितं रामभक्तिरसोत्सुकाः ।।
चरितं रामभक्तानां भक्तिभावसमन्वितम् ।
शुभंकरोतु सततं राघवेन्द्रानुकम्पया ।।

❖

राम भरोसे बैठ के, सबका मुजरा लेय ।
जैसी जिसकी चाकरी, वैसा ही फल देय ।।

www.bhojpurisahityangan.com

६३

भोजपुरी गद्य में संत-चरित

-प्रो० रामदेव शुक्ल

'रामपियारा साधु संत' के प्रकाशित भइले के तुरंते बाद इंजीनियर राजेश्वर सिंह 'श्याम-पियारा साधु-संत' लिखले में जुटि गइनीं। एह संतमाला में अबहिन तकले अड़तीस मनका गुहाइल बा। एमें निर्गुन, सगुन, भगत-आचर्य, अष्टछाप के कवि अउर आचार्य, के साथे-साथे श्रीकृष्ण के लरिकई के मीत सुदामा भी आइल बानें। ब्रजभाषा के कवि नरोत्तम दास के सुदामाचरित काव्य के रचनाकार अउर कथा-नामक एकाकार हो गइल बा लोग। साथ में श्रीमद्भागवत में आइल सुदामा-कथा भी आइल बा। भागवत में गोकर्ण आ धुन्धकारी के कथा आइल बा। ओहू लोगन के श्याम-पियारा बतावल बा। भगत माधवदास अउर हितहरिबंश के जीवन-चरित बड़े प्रेम आ भगति भाव से बखानल गइल बा। केशव भट्ट अउर महाप्रभु चैतन्यदेव के मिलाप के सुन्नर वर्णन भइल बा। अकबर के विश्वासपात्र पृथ्वीराज कृष्ण-भक्त और मातृभूमि प्रेमी योद्धा रहलें। इनके डिंगल भाषा के प्रबन्धकाव्य 'बेलि क्रिसन रुक्मिणीरी' राजस्थान के भक्त लोगन के कंठ में बसल बा। राजेश्वर सिंह जी के कविता के उदाहरण दे के समुझवले बानीं।

साधु-सन्तन के एह माला में आधुनिक काल के स्वामी रामतीर्थ के गिनती से किताब के महत्त्व बढ़ि गइल बा। रामतीर्थ गृहस्थ आश्रम में तीर्थराम रहलें। लाहौर के कालेज में गणित के प्रोफेसर के रूप में इनकर बहुत नाम-यश रहल। १८९७ ई० में लाहौर के कांग्रेस अधिवेशन में देशभक्त नेता लोग के भाषण सुनले के बाद कालेज के नौकरी छोड़ि के हिमालय चलि गइलें। उहाँ नारायण स्वामी के साथ साधना कइलें। १९०१ में मथुरा के धर्म-सम्मेलन में हिन्दू धर्म के निन्दा करे वाला पादरी स्कॉट के जबाव देके उनसे माफी मँगववले से स्वामी रामतीर्थ के कीर्ति फइले लागल। हिमालय में टिहरी के राजा इनके खातिर कुटी बनवा दिहलें। जापान में स्वामी के भाषण से इनके नाम के डंका बाजि गइल। उहाँ से अमेरिका जाके सैकड़न भाषण दिहलें। लवटत में मिस्र देश में इस्लाम धर्म के व्याख्या कइलें। वेदान्त धर्म के ज्ञान और साधना में रामतीर्थ के स्थान बहुत ऊँचा बा।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी अगिली किताब दीक्षा देवे वाले गुरु लोगन पर लिखि रहल बानीं। जल्दिए भोजपुरी गद्य के भक्ति-साहित्य में एगो अऊर रचना जुड़े वाली बा। इहाँ के रचना-यात्रा अबहिन बहुत लमहरे ले चली। संतन के आशीष से इहाँ का स्वस्थ बनल रहीं आ लिखत रहीं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी गद्य में इं. राजेश्वर सिंह के बढ़त डेग-श्याम पियारा साधु-सन्त

—डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी

आज भोजपुरी भाषा के बढन्ती खातिर ढेर लिखनिहारन के छपल किताब देखे में आ रहल बा। लेकिन इन किताबन में ज्यादा संख्या कविता से ही जुड़ल तमाम-तमाम विधन से संबोधन बा जइसे गीत, गजल युक्त छंद, दोहा, सवैया, घनाक्षरी, हाइकू आदि। ये दिशा में भोजपुरी के गद्य-साहित्य कुछ हलुक नजर आवत बा। लेकिन हमके बड़ खुशी बा कि भोजपुरी गद्य के मान ऊँच उठवले में कुछ रचनाकार जुटल बाटें जवना से एक मजबूत आ नीम्मन नाँव बा इं. राजेश्वर सिंह के। इं. राजेश्वर सिंह पेशा त रहल हवे अभियांत्रिकी लेकिन उनके अन्दर साहित्य आ खासक के भोजपुरी साहित्य बदे कुछ अदम्य उछाह भरल रहल आ ये ही उछाह के पूरा करत उ एक से एक रसगर आ पनिगर कहानी आ उपन्यास रचि के भोजपुरी के भण्डार भरले के कोशिस कइले हवें। येहर इं. राजेश्वर सिंह जी क ध्यान संत साहित्य के भोजपुरी भाषा में लिखि के जनता के सामने परोसे बदे गइल हवे। ये ही क्रम में उनके एक किताब 'राम पियारा साधु-सन्त' छपि के आइल। ये किताब में पुरातन काल से ले के आजु तक के देस भर में पसरल सगरे साधु-सन्तन के विवरण विस्तार के साथ दिआइल बा। ये किताब के दुसरकी कड़ी के रूप में ई किताब जवना क मथेला बा 'श्याम पियारा साधु-सन्त' ह।

हिन्दी भाषा में आचार्य पं० परशुराम चतुर्वेदी के एक चर्चित किताब आजु से लगभग सत्तर बरिस पहिले आइल रहे जवना क नाँव हवे 'उत्तरी भारत क संत-परम्परा' ये किताब में उत्तर भारत में फइलल हर सम्प्रदाय के संतन के लेखा-जोखा दिहल गइल बा, लेकिन जवना सिलसिलेवार ढंग से इं. राजेश्वर सिंह जी ये किताब में कृष्ण भक्त साधु आ सन्त लोगन के जन्म कुण्डली के संगे-संगे उनके रचना आ रहनि के विवरण दिहले हवें, हमके अइसन और जगह नाहीं मिलल। कृष्ण भक्त साधु-सन्तन के संख्या उत्तर भारत के मथुरा-वृन्दावन से लगायत बंगाल के चैतन्य महाप्रभु से ले के उड़ीसा तक ले फइलल बाटे, येकरे अलावा दक्खिनी भारत में गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक से ले के आन्ध्र प्रदेश तक फइलल बा। ये सब क्षेत्र में कृष्ण भक्त साधु-संन्यासी लोगन के एक बड़वर कतार बा। हमके खुशी बा कि इं. राजेश्वर सिंह जी एह सब साधु-सन्तन के अपने माई के बोली

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी में बहुत सहज आ सरल ढंग से लिखि के न केवल भोजपुरी के गद्य साहित्य में संत-साहित्य पर लिखे बदे प्रेरणा जगवले हवें, बलुक ये क्षेत्र के साधारण जनता खातिर अइसन अनमोल कृति दे के उपकार भी कइले हवें।

कउनो भाषा के समृद्धि क कसौटी होला नीम्मन आ पोढ़गर साहित्य। भोजपुरी भाषा के साहित्य भण्डार दूसर कहे जाये वाली क्षेत्रीय भाषा से अधिका गुणवत्तापूर्ण आ समृद्ध बा। भोजपुरी साहित्य में लोरिकायन, आल्हा, सोरठी, विहुली, गोपीचन्द-भरथरी, घाघ के कहाउत, विरहा आ संत-साहित्य के एगो लमहर परम्परा रहल बा। ये में संत कवियन के कतार ढेर बड़वर बा। हमके खुशी बा कि इं. राजेश्वर सिंह जी केवल भोजपुरी क्षेत्र में ही नाहीं बलुक क्षेत्रभर के सगरे कृष्णभक्त साधु-सन्तन के फूल अपने में मनका में गूंथि के सजा दिहले बाँटे। हालाँकि उनके नजर से कुछ संत लोगन के नाँव ओझल हो गइल जवना में योगीराज देवरहवा बाबा के लगे जब भक्त लोग जायँ त ऊ सबसे **'ॐ वासुदेवाय नमः, ॐ कृष्णाय नमः'** के जय करावत रहें। ये ही कड़ी में लक्ष्मी सखी आ कामता सखी के नाँव भी बा।

ये सबका बावजूद इं. राजेश्वर सिंह के 'श्याम पियारा साधु-सन्त' फूलन से गुँथाइल एक महमहात माला बा जवना के एक-एक फूल पत्ती में लेखक के मन के आस्था, भक्ति सरधा आ तजुर्बा आपन सुगन्ध फइला रहल बा। इं. राजेश्वर सिंह जी अभियांत्रिकी सेवा से मुक्ति मिलला के बाद अपने जिनगी के गति-मति आ आपन अनुभव के पान फूल माफिक ये कृति के भाव-भूमि पर खड़ा क के निम्मन ढंग से अपने चित्त भूमि पर चढ़ा दिहले बानी।

अगर भोजपुरी क्षेत्र के पढ़निहार लोगन के मन में अपने पुरखा लोगन के बारे में जाने के सरधा होई त लोग ये कृति के स्वागत करी। ये कृति के पढ़ला के बाद लोगन के सोचे खातिर मजबूर होखे के परी कि कवना तरीके से साधारण आदमी भी अपने लगन आ ईश्वर के प्रति समरपन के भाव से ऊँच कोटि के संत-महात्मा बन सकाला।

आखिर में हम जुझारु आ अदम्य इच्छाशक्ति रखे वाले इं. राजेश्वर सिंह जी के बधाई देत एह रचना खातिर मंगल कामना करत बानी कि उहवाँ के अइसन सरधा के साथ नीम्मन कृति भोजपुरी गद्य साहित्य के खोइछा में एगो नया रंग नया अंदाज के साथ सौंपले बानी कि ओकरे महक से भोजपुरी के गद्य-साहित्य क खोइछा गमकत रही। हमार उनके खातिर ढेर सारा आसीस बा।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

६५

श्याम पियारा साधु-सन्त : एगो अनमोल आहार

-सूर्यदेव पाठक 'पराग'

पूर्वांचल में भोजपुरी भाषा-साहित्य का बढंती में जीव-जान से लागल एकलौती सजग-सक्रिय संस्था 'भोजपुरी संगम' के संरक्षक आ 'भोजपुरी भागवत कथा-सार' जइसन भक्ति ग्रंथ के भोजपुरी में लिख के चर्चा में रहे वाला इं. राजेश्वर सिंह के 'राम पियारा साधु-सन्त' के प्रकाशन के बाद 'श्याम पियारा साधु-सन्त' क प्रकाशन के जानकारी पाके अपार खुशी हो रहल बा।

भारतीय जनमानस से मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम आ लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण बहुत गहराई से जुड़ल बाड़े, जिनकर आराधना क के साधु-सन्त अपना जीवन के सफल माने लें। जन-साधारण राम के पावन चरित से प्रेरणा पा के आदर्श जीवन जीये के प्रेणा पावेला त कृष्ण अपना अद्भुत बहुमुखी प्रतिभा से अपने समय के सभ गतिविधियन से जुड़े के लोकमंगल खातिर जन-मानस के प्रेरित करत कर्मयोग के उपदेश दिहलें।

एह दूनू अवतारन के आराधना करे वाले साधु-सन्तन के जीवन-चरित के जानल आज का पीढ़ी खातिर जरूरी हो गइल बा काहें कि आज नैतिकता के क्षरण बहुत तेजी से हो रहल बा। नवकी पीढ़ी नैतिक शिक्षा के अभाव में सही राह से भटक गइल बा। साधारण मनई के के कहो, आज साधु-सन्त कहाये वाले तथाकथित सन्त गुरु लोग तपोनिष्ठ आ पवित्र आचरण वाले साधु-सन्तन के जीवन-चरित पढ़ के आम आदमी के बहुत कुछ सीखे-जाने आ अपनो आचरण में बदलाव ले आवे के प्रेरणा मिली।

एह पुस्तक में भगवान श्रीकृष्ण का भक्तिभाव में लीन बल्लभाचार्य से ले के स्वामी रामतीर्थ ले अड़तीस साधु-सन्तन के प्रेरक जीवनी के साथे-साथ सन्त कवियन का रचनन के सरस वानगी भी पढ़े-गुने आ गुनगुनाये के अवसर पा के पाठकवर्ग के आनन्द मिली।

इ. राजेश्वर सिंह जी के एह काम से एक तरफ भोजपुरी का गद्य साहित्य के भण्डार भर रहल बा त दोसरा ओर भोजपुरी का माध्यम से भक्ति विषयक पुरहर जानकारी पाठकन का मिल रहल बा, जिनका ना भागवत के कथा सुने के सुयोग मिलेला ना राम भा कृष्ण भक्तन के जीवनी आसानी से पढ़े के मिल पावेला।

www.bhojpurisahityangan.com

इं. राजेश्वर जी शुद्ध सात्विक विचार वाला गाँव गँवई वे वातावरण आ बोली-बानी में पलल हउअन। एहसे उनकर भोजपुरियो खाँटी भोजपुरी ह, जवन भोजपुरी बोले वाला हरेक मनई के रुचिकर लागी आ एह पुस्तक का प्रति लगाव बढ़ी।

आज का भौतिकवादी युग में भक्तिपरक ग्रंथन के अध्ययन क के ओकर सारतत्व ले के भोजपुरी में अनुवाद कइल चाहे साधु-सन्तन का जीवन चरित के अनुशीलन क के अपना बोली में लिखे के काम ईश्वरीय प्रेरणा के बिना संभव नइखे। खुशी के बात बा कि इं. राजेश्वर सिंह भोजपुरी साहित्य का एगो ओझल होत कोना के अपना कलम का अजोर से सामने ले आवे में लागल बाड़े, जवन कब्बो भोजपुरी क्षेत्र के निर्गुनिया सन्तन के भक्तिभाव से गुलजार रहल रहे।

अभियन्त्रण पेशा से अवकाश पवला के बाद अपना मेहनत लगन आ धार्मिक अभिरुचि का चलते इं. राजेश्वर सिंह अबले अनेकन पुस्तकन के प्रकाशित करा चुकला का बादो अभी एह काम में काफी सक्रिय बाड़ें।

हमरा पूरा भरोसा बा कि इं. राजेश्वर सिंह स्वस्थ आ सक्रिय रह के आपन कलम चलावत आ भोजपुरी के भण्डार भरत रहस।

श्री राजेश्वर सिंह के साहित्यिक अवदान ।
जन मन के निर्मल करी पाई यश सम्मान ॥

❖

www.bhojpurisahityangan.com

'भोजपुरी महाभारत' एक अनूदित कथाग्रन्थ

-प्रो० रामदरश राय

संस्कृत-भाषा में श्लोकबद्ध प्रसिद्ध महाकाव्य 'महाभारत' कऽ गद्य भाषा में अनूदित 'भोजपुरी-महाभारत' क एक पांडुलिपि जिल्द में पढ़िके पुरहर तसल्ली मिलल। एक त साहित्य कऽ भरपूर सुख मिलल आ दुसरका भोजपुरी गद्य-भाषा कऽ निथरल सहज-स्वाभाविक आनन्द।

जरिये इंर्जीनियर राजेश्वर सिंह क लिखल 'भोजपुरी-महाभारत' एगो अनूदित कथाग्रन्थ बा। येह ग्रन्थ के 'भाषानुवाद-ग्रन्थ' आ कि 'भावानुवाद-ग्रन्थ' कहल बाजिब होई। काहे से कि ई संस्कृत भाषा में रचल महर्षि वेदव्यास के 'महाभारत' कऽ भोजपुरी-भाषा अनुवादित कथाग्रन्थ बा। येह लेखे ई एगो पोंढ़-पठनीय गद्यानुवाद-ग्रन्थ कहल जा सकेला। ई एगो चुनौती-ग्रन्थ भी बा। काहे से कि गद्य के पद्य में बइठावल आसान होला, लेकिन पद्य के गद्य में सरियावल कठिन। लेखक कऽ बड़वर बड़ाई इहे बा कि ऊ पद्य के आकाश के गद्य के जमीन पे उतरले बा, आ संस्कृत के भोजपुरी में समझवले बा। सभे ई जानेला कि भोजपुरी बोलले-बतियवले में सरल हऽ, लेकिन लिखले-पढ़ले में जटिल-कठिन यानी लेखक राजेश्वर सिंह एक कठिन बोझ उठा के बड़वर काम पूरा कइले बाटें। ई काम उनके साहित्यिक जस देयी। एक लाख श्लोकबद्ध 'महाभारत' आजु के पढ़ि पाई?

२००३ में 'एक कहानी की आत्मकथा' से अपने लेखन क शुरुआत करे वाला इं. राजेश्वर सिंह डेढ़ दशक में आजु डेढ़ दरजन किताबि कऽ मालिक बाटें। आरम्भ खड़ी बोली में आ अन्त कऽ सगरो किताबि भोजपुरी में। खड़ी बोली में बहुत भीड़ बा। सबके जानल-पहिचानल आ पढ़ल-समझल कठिन बा। भोजपुरी में भी काव्य-रचना में भीड़ कम नइखे, लेकिन गद्य-लेखन में साहित्यकार-बटोर नाहीं बा। सगरो लेखक हिम्मत-साहस जुटवले में घबराहट महसूस करें लें। आचार्य दण्डी नाहक नइखे, कहि गइल बाटें कि-**'गद्यं कबीनां निकषं वदन्ति'।**

'महाभारत' भारतीय साहित्य कऽ आदर-ग्रन्थ हऽ। ई एक ओर सुललित पद्य ग्रन्थ हवे तऽ दुसरका ओर आचार-संहिता ग्रन्थ भी। 'जय' से 'भारत' फिर 'महाभारत' जइसन तीन पड़ाव पार होके ई महाकाव्य जेतना पसरल, असर छोड़लस, ओतना कवनो भारतीय काव्यग्रन्थ आपन प्रभाव-चमत्कार नइखे देखा पवलस।

www.bhojpurisahityangan.com

रामकथा वाला 'रामायण' आ 'श्रीरामचरित मानस' जरूर असर आ चमक में तनिको कमजोर नइखे, लेकिन ओकर आदर्श-पथ दूसर हऽ आ येकर कर्म-पथ दूसर। पुरुषार्थ-चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) कऽ जेतना सर्वांग निरूपण-विश्लेषण महाभारत में हऽ ओतना कतवों नइखे। येतने नाहीं, 'महाभारत' के 'आदिपर्व' में येह महाकाव्य कऽ सगरो कथ्य-निचोड़ छानि के दू बाति में कहि दिहल गइल बा कि-

''यदिहास्ति तदन्यत्र,
यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।''

अर्थात् जवन महाभारत में बा उहे अउरो जगह पे बा। जवन इहवाँ नाहीं बा ऊ कतहूँ नइखे लउकी।

मतलब ई कि महाभारत के एक लाख श्लोक में मानव-जीवन कऽ कुलि मनोविज्ञान सहेजि उठल बा। झूठ-साँच, पाप-पुण्य, अनीति-नीति, अधरम-धरम, लोकधरम-राजधरम, कूटनीति-राजनीति, छद्मनीति-दण्डनीति,नरक-सरग, कायरता-वीरता, युद्ध-शान्ति दर्प-विनम्रता, अहिंसा-हिंसा, रूपता-विरूपता, एकता-अनेकता, विभेद-समन्वय, आदर्श-दुर्धर्ष, प्रेय-श्रेय, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष जइसन जीवन कऽ अउरो सगरो भुलाइल-भटकल करतब-अकरतब महाभारत में मिलि जाई।। येही कारन से येके आकार-ग्रन्थ कहल गइल बा। ई मानवीय चिन्तन-संवेदना आ साहित्य-दर्शन कऽ समुद्र बा। येही ग्रन्थ से कथा-सन्दर्भ-प्रसंग लेके हजार-हजार पद्य-गद्य ग्रन्थ रचि उठल बाटें। येही आधार पे महाभारत के 'उपजीव्य काव्य' कहल गइल बा। येह महाकाव्य कऽ कथा सगरो भाषा-साहित्य-विधा में कहल गइल बा, लेकिन येकर कथा-सागर कबहूँ नाहीं झुराइल। कहाँ से, आ कइसे झुराई ! कथा में कथा, कथा में कथा, कथा में कथा, कथा-कथा-कथा, अनन्त कथा ! इहे हवे महाभारत ! हर आदमी के भीतर रोज-रोज कवनों न कवनों महाभारत (मनोयुद्ध) होत रहल बा, कथा कइसे ओराई !

अचरज बा कि 'भोजपुरी-महाभारत' कऽ लेखक मूल महाभारत के अठरहों पर्व कऽ सगरो कथा भोजपुरी-गद्य में कहि गइल बा। महाभारत कऽ कथा कहीं खण्डकाव्य के रूप में तऽ कहीं महाकाव्य के रूप में बहुत रचाइल बा। कहानी आ उपन्यास, नाटक-निबन्ध-जीवनी आ रेखाचित्र के विधा-विकास में भी बहुत लिखाइल बा। 'भीष्म पर्व' में अर्जुन के कृष्ण द्वारा दीहल उपदेश-दर्शन 'गीता' के नाम से लाख-लाख बार पढ़ल गइल बा। लेकिन, महाभारत कऽ सगरो कथा भोजपुरी-गद्य में पहिली बार लउकति बा। पढ़े-समझे लायक भोजपुरी बा, गद्य-भाषा व्यवहार और बोल-चाल में उतरल बा। जे कबहूँ महाभारत नइखे पढ़ले होई, ऊ ये के पढ़ल चाही। संस्कृत वाला महाभारत ओइसे भी कठिन आ अबूझ बा। हिन्दी भी शिक्षित-समूह कऽ भाषा बनिके अगरा के चलति बा। लेकिन, भोजपुरी कऽ न कवनो तान बा आ न कवनो अइठ-अकड़। शिक्षित-अर्धशिक्षित-अशिक्षित सबके खातिर भोजपुरी भाषादेवी के मन में सम्मान बा। आदरभाव आ विनय बा। एगो नरम सवाल भी ? कि अँगरेज भोजपुरी समझि लिहलें, मुल्लो-मौलवी

www.bhojpurisahityangan.com

भी येकर तरफदारी कइलें, मॉरिशस ले पहुँचि के ई फुलाइल-फलल। तऽ कइसे हिन्दुस्तान कऽ सनातनी भाई लोगन के समझ में ई नइखे समायी ! सबके फिर से भोजपुरी समझे-बुझे आ पढ़े के चाहीं। काहें से कि जेतना बड़वर येकर शब्दकोश बा, जेतना बड़वर येकर मुहावराकोश, बा, जेतना बड़वर येकर पर्यायकोश बा, ओतना बड़वर तऽ दुनिया में कवनो भाषा कऽ कोश नइखे। विश्वास-बदे लेखक राजेश्वर सिंह कऽ ई भोजपुरी-गद्यग्रन्थ एक आधार-ग्रन्थ बा। भोजपुरी सीखे आ समझे खातिर 'भोजपुरी-महाभारत' एक मानक-ग्रन्थ साबित होई।

एक ओर 'महाभारत' आकर-ग्रन्थ आ उपजीव्य काव्य होके सम्मानजनक जगहि पे बइठल बा, तऽ दुसरका ओर येह ग्रन्थ से दूर रहले कऽ अफवाह भी प्रचारित बा। ज्यादातर लोकमुख से इहे सुने के आवेला कि महाभारत नाहीं पढ़ेके चाही। येकर चरितकथा नाहीं सुनेके चाहीं। महाभारत पढ़ले-सुनले से मन बिगड़ि जाई। लड़े के, युद्ध करे के हौसला बढ़ी। बँटवारा होई, वनवास मिली, बदला लिहले कऽ दुरभावना बढ़ी, मार-काट होई आ सगरो विनाश होई। लेकिन, महाभारत के प्रति ई रूढ़ धारणा हऽ। सच तऽ ई हऽ कि जे महाभारत नइखे पढ़लस ऊ कुछऊ नाहीं पढ़लस। मानव-मनोविज्ञान के समझले कऽ ई महाकाव्य सबसे बड़वर आ सटीक जीवन-दर्शन हवे। धर्म-अधर्म, नीति-राजनीति, योग-मोक्ष के समझे बदे येह ग्रन्थ से काबिल कवनो भारतीय ग्रन्थ नइखे। युद्ध-शान्ति आ लोक-परलोक कऽ सगरो दर्शन व्यास के कलम में उतरि उठल बा। अहंकार-दर्प के समझे खातिर एहसे बड़वर किताबि कहाँ मिली ? महाभारत व्यंग्य-काव्य हवे। व्यंग्य (ताना) महाभारत कऽ कथा-केन्द्र हऽ। द्रौपदी कऽ ताना (अन्हरे कऽ अन्हरे होई) महाभारत-युद्ध कऽ नींव बनल आ ओकर चीर-हरण सर्वनाश कऽ कारन। मतलब कि व्यंग्य (ताना) श्रेष्ठ काव्यत्व कऽ अभिलक्षण निर्धारित भइल। 'भ्रमरगीत' भी श्रेष्ठ व्यंग्य-काव्य हऽ। ईहे सूरदास के कविश्रेष्ठ बनवलस।

व्यंग्य कड़ुआ होला। ठीक से बइठि गइले पे मार-काट-युद्ध सब कुछ। सगरो लोग कहेला कि बोली कऽ चोट गोली से गहिर होले। कौरव-पाण्डव कऽ युद्ध बोली-युद्ध रहल बा। केहू, केहू से कम नइखे। राजरानी द्रौपदी के दासी कहिके दुर्योधन अपने जाँघ पे बइठावल चाहत बा आ भीम ओकरे जङ्घा के तोड़ले क प्रतिज्ञा लेत बाड़ें। सिर्फ पाँच गाँव माँगि के श्रीकृष्ण समझौता करावल चाहत बाड़े लेकिन दुर्योधन कऽ बोली निकरत बा कि 'बिना लड़ाई के सुई के नोक के बरोबर जमीन नइखे देब।' अइसन-अइसन छोट-बड़ हजार व्यंग्य (बोली) महाभारत में पसरल बा। सबके मालूम बा कि कुरुक्षेत्र के महायुद्ध के बाद केहू नाहीं बचल। गिनती कऽ जे बचल ऊ हिमालय में जाके गलि गइल। जे के सरग मिले के चाहीं ऊ नरक पवलस आ जे के नरक में लोटे-रोवे के चाहत रहल ऊ सरग में चाँदी कटलस। येही नाते कहल जाला कि महाभारत जइसन अद्भुत, दार्शनिक ग्रन्थ-साहित्य दुनिया में कवनो नइखे। येही नाते 'जवन येहमा बा ऊ कतहूँ नइखे'-ई कहनाम सोरह आना सच बा।

www.bhojpurisahityangan.com

अब 'भोजपुरी-महाभारत' से तीन-चार छोट-छोट उदाहरन ताकि लेखक कऽ लेखन-दृष्टि कथाभाषा आ शैली-विन्दास से पाठक-बन्धु परचित हो सकें।

'स्वर्गारोहण पर्व' कऽ आरम्भ लेखक द्वारा बहुत बारीक कथाभाषा आ रोचक संवाद-शैली में भइल बा, "देवराज इन्द्र युधिष्ठिर के स्वर्ग ले गइलन। स्वर्ग पहुँचि के युधिष्ठिर देखत हउअन कि दुर्योधन, दुःशासन वगैरह खुश बइठल हउअन। ऊ लोग युधिष्ठिर के देखि के हँसे लगलन। ओह लोगन के हँसत देखि के युधिष्ठिर दुखी भइलन। देवराज से कहे लगलन, भगवन् ! हमार भाई भीम, अर्जुन, कर्ण आदि इहवाँ लउकत ना हउअन, एहकर का कारन ह ! इन्द्र कहलन, युधिष्ठिर ! स्वर्ग आइ के केहू से नफरत ना कइल जाला। दुर्योधन, दुःशासन वगैरह लड़ाई के मैदान में आमने-सामने लड़त मरल हउअन, एह से सीधे स्वर्ग पा गइल हउअन।"

येह संवाद में कथा तऽ पुरान हवे लेकिन कथा-मोड़ अइसने बारीक-सांकेतिक डगर पे उतारल बा कि केहू के अचम्भा-कौतूहल एक साथ गुदगुदायी।

अब 'विराट-पर्व' से कथा-संवाद कऽ एक नमूना, "कल्ले-कल्ले वनवास क समय पूरा होखे लागल। चलत-चलत पाण्डव विराट के राज्य में आ गइलन। घोर जंगल जइसन एकान्त जगही प एगो बड़हन समी क पेड़ लउकल, एही पेड़े के डारी प आपन सगरो हथियार बान्हि के लुकवा दिहलन। फिर वेश बदलि के फुट्टे-फुट्टे डगर धइले विराट नगर के ओर चल दिहलन।"

नायाब-रोचक कथा-भाषा में ई संवाद सजा के लेखक राजेश्वर सिंह भोजपुरी कऽ भाषिक निपुणता देखा गइल बाटें। कथा कऽ रोचक आस्वाद भी, आ ठेठ भोजपुरी-भाषा कऽ खाँटी ठसक भी। येह संवाद में बइठल कल्ले-कल्ले, चलत-चलत, पेड़, लउकल, लुकवा, बान्हि, फुट्टे-फुट्टे जइसन शब्द प्रयोग साबित करत बाड़ें कि लेखक के लग्गे भोजपुरी कऽ ठसक-भरल ठेठ शब्दकोश बा। बिलाइल-लुकाइल येह शब्दन के खोजि के एक ओर ऊ येह शब्द-राशि कऽ रक्षा करत बाटें अउर ओह आजु के भोजपुरी शब्दकोश के असली शब्द सौंपत बाटें।

रोचक कथा-शैली कवनो कथाकार के अलग कऽ विशिष्ट जगहि दिआवेले। ओइसे तऽ हर पर्व में शैली कऽ अनूठा निशान मिलि जाई, जवने के आधार पे 'भोजपुरी-महाभारत' के लेखक कऽ कथाशक्ति चमकत लउकि उठी। प्रसंगवश भूमिका के कुछ पन्ना में लेखक के सगरो कलम-शक्ति के उजागर नइखें कइल जा सकेला। लेकिन भगोना में पकल चावल कऽ एक दाना दबा के समझल जा सकेला कि कथाभाषा-कथाशैली और व्यंजक संवाद-शोभा में लेखक बेजोड़ बा। पढ़िके पाठक-समुदाय कऽ कौतूहल बढ़ी आ भोजपुरी भाषा-साहित्य में भीजि उठले कऽ शब्दानन्द भी। येह आशय कऽ एक ठो छोटवर उदाहरन 'भीष्म पर्व' के अनतिम पन्ना से, 'द्रौपदी के चीरहरण के समय : भीष्म मौजूद रहि के खामोश रहलन, का तूँ भुला गइलऽ ? ऊ अधर्म ना कइले रहलन ? ई सुनते अर्जुन के गुस्सा आ गइल अउर

www.bhojpurisahityangan.com

ऊ तीखे बाणन से प्रहार करे लगलन, जवन उनके बदन क चमड़ी भेद के देहि में घुसे लगलन। तमाम तीर बिधा गइले से शरीर जर्जर हो गइल। ऊ लुढ़क के रथ से धरती प गिर गइलन अउर चुभल तीरन प टंग गइलन। कौतुक कि पीठ प मिट्टी ना लागल..... भीष्म के गिरते दूनो दल में हाहाकार मच गइल। लड़ाई बन्द हो गइल। दूनो दल क बड़-बड़ सेनापति रथ छोड़ के भीष्म के देखे पैदल दौड़ पड़लन। चारों ओर से कौरव-पाण्डव अउर बड़-बड़ महाराज घेर के खड़ा हो गइलन। दुर्योधन के लागल कि कौरवन क अब अन्त आ गइल बा। युधिष्ठिर भी दुखी खड़ा रहलन।'

छोट-छोट वाक्य में, सधल संवाद आ प्रश्नोत्तर में, कसल-सटीक संवाद कथाभाषा के प्रौढ़-पठनीय बनावेंलें। येह भाषा-कला में कथाकार राजेश्वर सिंह सयान लउकत बाटें। परोसले कऽ तरीका भी सहूरदार बा। लागत बा कि पाठक-मनोविज्ञान कऽ पुरहर खयाल कइके लेखक आपन सगरो कथा-संवाद सजवले बा।

गद्य आ कि पद्य दुनहूँ इलाका में लेखन कऽ दुइ तरह कऽ इच्छा काम के आगे बढ़ावेले। एक तऽ जस-शोहरत, इनाम-पुरस्कार बदे, अउर दूसरका आत्मसुख-खातिर। इनाम आ शोहरत पावे बदे कइल लेखन- सृजन दू कौड़ी कऽ हो के रहि जाला। लेकिन स्वान्त:सुखाय भइल सर्जना सोना में सोहागा बनि उठे ला। लोक-वन्दना अइसने रचना कऽ होले। जन-जन से जयकार येही तरह के लेखन से बेसुलभ होले। तुलसी कऽ मानस प्रमाण बा। ऊ कवनो 'ज्ञानपीठ' आ 'साहित्य-अकादमी' से अलंकृत होखे बदे नाहीं रचाइल रहल। ओकर रचनात्मक उद्देश्य सिर्फ स्वान्त: सुखाय रहल बा। सगरो संसार देखत बा कि ऊ मानस आज सबसे बड़वर महाकाव्य बा, साहित्य बा। सगरो किताबिन से अधिक पढ़े वाली किताबि बा।

हमरे खयाल से इं. राजेश्वर सिंह कऽ सगरो भोजपुरी-लेखन तुलसी-नाईं स्वान्त:सुखाय बा। तर्क ई कि ऊ विज्ञान कऽ पढ़वइया, विद्यार्थी रहल हउवें। अधीक्षण अभियन्ता के रूप में तकनीकी सेवा कइले हउवें। साहित्य के घुमावदार सीढ़ी पे चढ़ले-उतरले कऽ उनकर कवन गरज ! ऊहो, भोजपुरी के पगडण्डी पे ढहले-ढिमिलइले कऽ कवन उछाह ? लेकिन, ईहे शब्दयात्रा उनके सुकून देत बा। येही के कहल जाला 'स्वान्त:सुखाय सृजन'।

'भोजपुरी-महाभारत' से पहिले राजेश्वर सिंह कऽ 'भोजपुरी-भागवत-कथासार', 'राम पियारा-साधु सन्त' छपि चुकल बा। 'श्याम पियारा-साधु सन्त', 'दीक्षा-गुरु' छपत बा। ई पाँचों भोजपुरी-गद्य ग्रन्थ लेखक के निजी ललक कऽ सुफल हउवे। आस्तिक-धार्मिक चेतना से भरल राजेश्वर बाबू जाने-अनजाने भोजपुरी कऽ बड़वर शब्दयज्ञ करत बाटें। परीक्षण-प्रतिक्रिया आ टिप्पणी के रूप में शब्दन कऽ दू-चार समिधा सौंपि के उनकर उछाह बढ़ावे के चाहीं। ऊ ई काम कइसे करत बाटें, केतना कइले बाटें, सब कुछ सहेजि के समय सामने ले आयी। कुलि एकट्ठा हो जायी तऽ ई लेखक शोध कऽ विषय बनि जाई। शोध

www.bhojpurisahityangan.com

कऽ विषय ईहे कि भोजपुरी-गद्य कऽ कठोर-बंजर जमीन खनि के लेखक राजेश्वर सिंह जोत-चिखुर के मुलायम आ उपजाऊ बनावत बाटें।

पूर्वी उत्तर प्रदेश आ पश्चिमी बिहार भोजपुरी कऽ असली इलाका हऽ। पहिले तऽ बोली के रूप में यानी अलिखित भाषा के रूप में भोजपुरी क़ऽ जवार सबसे बड़वर रहल बा। बाद में, आजादी के बाद लिखित भाषा के रूप में छोट-बड़ हजारन किताबि लिखइली। काव्य भी, कहानी भी, उपन्यास आ नाटक भी। गाथा-गीत भी, पत्र-पत्रिका भी। लेकिन गद्य कम लउकल। आजकल भोजपुरी गद्य में कुछ लेखकन कऽ ललक लऊकत बा। देखि-पढ़ि के सुख मिलत बा। गोरखपुर-इलाका से आचार्य रामदेव शुक्ल, रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी', आद्याप्रसाद द्विवेदी, फूलचन्द प्रसाद गुप्त, इं. राजेश्वर सिंह, सूर्यदेव पाठक 'पराग', रामदरश राय, सदानन्द शाही, प्रेमशीला शुक्ल, चित्तरंजन मिश्र, विमलेश मिश्र, उमाकान्त राय, राकेश राय 'नेही', नर्वदेश्वर सिंह 'मास्टर साहब', रामनरेश शर्मा 'शिक्षक', रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी, नरसिंह बहादुर चंद, अजय अनजान, कुमार अभिनीत, विनयमोहन त्रिपाठी, अंगद कुमार सिंह आ अउरो दरजन भर लोग भोजपुरी-गद्य में चिन्तन-लेखन आ बइठकी-बतकही करत बाटें। विश्वास बढ़त बा कि अब न भोजपुरी मरी आ न भोजपुरी-गद्य ठण्ढा पड़ी। 'भोजपुरी-संगम' नाम कऽ एगो बरियार साहित्यिक संस्था, गोरखपुर में जीयत बा, बल्कि जियतार संस्था बा। सत्तन मिसिर कऽ रोपल-बढ़ावल ई संस्था सैकड़न भोजपुरी प्रेमी लोगन के मंच देति बा। आजु येह संस्था कऽ करता-धरता कुमार अभिनीत बाटें आ संरक्षक इं. राजेश्वर सिंह।

'भोजपुरी-महाभारत' कऽ लिखवइया इं. राजेश्वर सिंह से आजु सगरो भोजपुरी-पाठक कऽ आशा-उम्मीद बढ़ि उठल बा कि सालि में एग्गो अइसने कवनो कथाग्रन्थ आ कि विचारग्रन्थ ले के उपरात रहीं। रउरे सुखी-सलामत रहे खातिर सीतापति-राधापति से हमार करजोर मनुहार बा।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

६७

'यत्र भारते तत्र भारते'

-प्रो० सदानन्द शाही

भोजपुरी धीरे-धीरे बोलचाल के भाषा से लिखत-पढ़त के भाषा में बदलि रहिल बाड़। एह बदलाव के बहुत जरूरी रूप बा कि एहमें गद्य लेखन खूब होखो। गद्य के जेतना भी रूप बा सब में भोजपुरी लेखकन के मेहनत करे के चाहीं। कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी से लेके आत्मकथा, जीवनी, डायरी संस्मरण रिपोर्ताज ले। भोजपुरी गद्य के कमी दूर करे खाती देस-विदेश के साहित्य से अनुवादो होखे के चाहीं। एकरे अलावा मिथक आ इतिहास के वृतांत के भोजपुरी में ले आवे के उपाय करे के चाहीं।

हमके ई देखि के बहुत खुशी हो रहल बा कि इंजीनियर राजेश्वर सिंह एह काम में एगो तपस्वी के तरे लगल बाने। सबसे पहिले हमार ध्यान भोजपुरी में लिखल इनकर एगो पर्ची प गइल जवने में ऊ पानी के बारे में जानकारी देले बाड़ें। पानी जीवन के अनिवार्य जरूरत हवे। गरीब हो खो भा अमीर सबके पानी चाहीं। आ साफ पानी चाही। भोजपुरी समाज में गरीबी ढेर बाऽ। पानी के साफ कइले के जवन तरह-तरह के मशीन चलल बाड़ी सऽ ऊ सबका के नसीब नइखे। बाकी ओह गरीब गुरबा के भी साफ पानी चाहीं। ई. राजेश्वर सिंह अपना परचा में पानी साफ रखले के देसी उपाय बतवले बाने। एह परचा के खूब प्रचार होखे के चाही। भोजपुरी भाषा के आगे जवन चुनौती बाऽ ओकर सम्बन्ध भोजपुरी समाज के गरीबी से बा। गरीबी आ भुखमरी के साथे बेमारी हारी त लगल रहेले। एसे जिनगी के जरूरत पानी जइसन अउर परचा आवे के चाहीं जे से लोग के आपन स्वास्थ्य ठीक रखले में मदद मिले।

एकरे अलावा राजेश्वर बाबू अनवरत साहित्य साधना में लगल बाने। इहाँ के 'जिनगी के दूब हरियाइल (कहानी संग्रह)', जिस्स से रूह तक रोशनी-रोशनी, 'कल्याण के जुगुति', 'पढ़ीं समझीं मनन करीं', 'राम पियारा साधु-सन्त', 'श्याम पियारा साधु-सन्त', 'दीक्षा-गुरु' जइसन कई गो किताब लिखले बानी।

भोजपुरिया समाज के धरम-करम के ध्यान में रखि के इहाँ के भोजपुरी में 'भागवत कथा-सार' लिखले बानी। भागवत अइसन लोकप्रिय धार्मिक ग्रन्थ के भोजपुरी में प्रस्तुति बहुत जरूरी रहल ह। एकरे आगे रामायण आ महाभारत बचि गइल रहल ह जवन कि भारत के दिल में बसल रहेला। एक बेर राजेश्वर बाबू से कहलीं कि रउआँ भागवत कथा-सार लिखि देहलीं अब

www.bhojpurisahityangan.com

महाभारत प हाथ लगाई।

एकरे ई देखि के बहुत आश्चर्य आ खुशी भईल कि राजेश्वर बाबू ओहू में हाथ लगा देलीं आ साल बीतत-बीतत भोजपुरी महाभारत तइयार कइ देहलीं।

महाभारत जइसन ग्रन्थ के पहले एगो बड़हन तप हवे। ओकरे पढ़ल समझल आ दूसरा भाषा में प्रस्तुत कइलो के बतिए अलगे बा। ऊहो भोजपुरी जइसन भाषा में जवना में गद्य के कहानी बहुत पुरान नइखे।

ई. राजेश्वर बाबू में निखालिस भोजपुरिया के तरे तत्व मौजूद बा कथा कहत के अद्भुत क्षमता बा। एकर अन्दाज उनके भोजपुरी महाभारत देखि के लगत बा।

महाभारत के आकर ग्रन्थ कहल जाला। आकर ग्रन्थ के मतलब जवने ग्रन्थ के आधार प आगे चलि के बहुत काव्य भा साहित्य रचना होखे। भारत के कवनो अइसन भाषा नइखे जवने में हर साल महाभारत के कवनो न कवनो प्रसंग भा पात्र के लेके रचना न होत होखे। ई परम्परा हजारन साल से चलि रहल बा। महाभारत के बारे में इहो कहल गइल बा कि 'यन्न भारते तन्न भारते' माने जवन महाभारत में नइखे तवन भारत में नइखे।

ओह महाभारत के ई. राजेश्वर सिंह भोजपुरी में लिखि के आम भोजपुरिया खातिर सरल सहज बना देले बाने। जवने अन्दाज में भोजपुरी लोककथा कहत सुनल जाले लगभग ओही अन्दाज में पूरा महाभारत सुना धरले बाने इंजीनियर साहब।

महाभारत सुनते जीव घबराये लागी कि एतना बड़हन ग्रन्थ कइसे पढ़ल जा। पढ़ल शुरु करऽ त कहानी में से एक कहानी। कहानिन के सिलसिला अइसन कि ओकर सोर पलई ना बुझाला। लेकिन एह महाग्रन्थ के सरल, सहज शैली में भोजपुरी में ए तरे लिखल गईल बा कि साधारण से साधारण आदमी एके बिना घबरइले आ परेसान भइले पढ़ि सकेला।

भोजपुरी महाभारत दू बात प भरोसा दे रहल बा। एक त भोजपुरी भाषा में बड़हन से बड़हन वृत्तान्त के कहले के क्षमता बाऽ। आ दूसरका ई कि आजु भा त काल्हु ए भाषा के गद्य रूप निखरि के आई-आ कवनो भाषा के सामने ठाढ़ हो सकी।

हमके एह बाति के पूरा विश्वास बा कि इं. राजेश्वर सिंह के एह भोजपुरी महाभारत के लोग प्रेम से पढ़ी आ महाभारत के कथा के साथे-साथे भोजपुरी के मिठास के भी अनुभव करीं।

जहाँ ले हमरा अन्दाज बा राजेश्वर बाबू चुप बइठे बाला जीव नाहीं हवें। जब ले ई भोजपुरी महाभारत छपि के पढ़े के खातिर तइयार होई तबले ऊ भोजपुरी रामायण में भी हाथ लगा देले होइहें आ ओके पूरा कइके भोजपुरी के खजाना में एगो अउर मोती भरि दिहें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

६८

भोजपुरी-रामायण

-प्रो० रामदेव शुक्ल

'राम कथा के न आदि हवे, न अंत'। एही से रामकथा हिन्दी प्रदेश आ देश-विदेश में सबसे जियादा पढ़े सुने, गावे, पाठ करे लायक रामचरित मानस में कवि तुलसीदास जी कहि गइल बानीं-

हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता ।
कहहि सुनहि गावहि स्तुति संता ।।

दुनिया भर में राम कथा कौनों न कौनों रूप में कहल, सुनल गावल जाला आ नाटक रूप में खेलल जाला। रामलीला के केतना रूप बा, एकर गिनती कइल आसान नइखे। भोजपुरी में कवितई बढ़ंती पर बा। रामकथा लिखवइन के कमी एहू में नाहीं बा। पेशा से इंजीनियर रहले के बाद राजेश्वर सिंह, भोजपुरी में रचना कइले के रेकार्ड बनवले पर तूलि गइल बानीं। साधु-संतन के जीवन चरित चार-पाँच किताब में वर्णन कइले के बाद भोजपुरी में रामायण लिखि के अगिली रचना के तैयारी मन ही मन में हो रहल बा।

सबसे पहिले राम-जन्म के वर्णन। तुलसीदासजी के सुन्दर छंद-**'भए प्रकट कृपाला - - -** के बाद भोजपुरी में रचल सोहर-**दुअरा प बाजेला बधइया, महलिया उठे सोहर हे।'** एह अवसर के अउर रसगर बना दिहले बा। एह अध्याय क समापन तुलसीदासजी के अति प्रसिद्ध छंद-**'ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनिया'** से भइल बा।

रावण के पैदाइश 'रामचरित मानस' में वर्णित प्रतापभानु-प्रसंग से शुरू भइल बा। लंका पर रावण के विजय आ ओही जा राजधानी बनवले के बाद रावण के वंश वर्णन के साथे दुसरा खण्ड पुरहर भइल बा।

ताड़का बध और अहिल्या-कथा अति संक्षेप में बखानल गइल बा। सीता स्वयंवर, धनुष-भंग, राम-बियाह अलग-अलग खण्ड में रचाइल बा। सब में भोजपुरी गीत रखाइल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

कजरी धुन में-

आरे रामा शंभु धनुष अति भारी,
राम तोरि डारी ए हरि - - -

१. परिछन गीत

परिछन करहि चलेली वर कामिनि लेके सिंहोरा हाथ रे -

२. परिछन गीत-

परिछन करहि चलेली तीनो मइया
फूल माला लोढ़ा सब साज रे - - -

३. कोहबर गीत-

कोहबर त बड़ा सुन्नर त नाहीं जाने काहे गुने हो - -

१. गारी (जेवनार गीत)

सहित समाज चले मिथिलापति
जनवासे पगधारी जी - - - -

२. गारी-

राम सहित सब सेवन बइठे का वरनौ जेवनार जी - -

३. गारी-

माँग सुहाग भरी अति सुन्नर जनक नृपति घर नारी जी - -

विदाई गीत-

कहवाँ के लाल सिन्होरवा, सिन्होरवा भरि सेनुर
अरि कहवाँ जनमलि बिटिया, बिटियवा जगरोपनि - -

एह गीतन में लेखन के एगो नया रूप पढ़वइयन के प्रभावित करी।

राज्याभिषेक खण्ड में मंथरा, केकइ क करतूति, राम-लछमन, सीता क वनगमन के कथा रामचरित मानस के अनुसार गद्य में कहल गइल बा।

महाराज दशरथ के देहिं तजल, भरत चललन वन भइया के मनावे, रामजी क खराऊँ,

www.bhojpurisahityangan.com

अलग-अलग खण्ड में मानस के अनुसारि कथा कहल गइल बा।

सीता हरण प्रसंग में अत्रि मुनि द्वारा राम-स्तुति पूरा दीहल बा। अगस्त्यजी द्वारा पतिव्रता उपदेश विस्तार से सुनावल गइल बा।

रावण-जटायु लड़ाई शीर्षक अलग प्रसंग में जटायु के अन्तिम संस्कार तक के कथा। श्रीराम-शबरी के मुँह से पंपासरोवर आ सुग्रीव के पता बतावल गइल बा। 'सुग्रीव अउर हनुमान जी से भेंट' में नारद मुनि से श्रीरामजी के भेंट क वर्णन बा। इहो बतावल गइल बा कि काहें रामजी नारद मुनि के बियाह कइले से रोकि दिहलें। 'बालि क बध' शीर्षक में सुग्रीव से मिताई बता के बालि-बध के कथा कहाइल बा। 'सीता क खोज में' अंगद क गीध सम्पाती से भेंट के बाद लंका में हनुमान जी, हनुमान जी क सीता से भेंट, 'लंका दहन', 'लंका प चढ़ाई', 'लंका काण्ड', 'राम-रावण लड़ाई', 'तजा गइली सीता जी', लक्ष्मण जी क तजाइल, 'श्रीरामचन्द्रजी क जल-समाधि' शीर्षक दे के राम कथा क समापन कइल गइल बा।

एह 'भोजपुरी-रामायण' के मौलिकता एह बात में देखल जा सकेला कि बाल्मीकि रामायण के विभाजन 'काण्ड' में भइल बा। तुलसीदास के रामचरित मानस के 'सोपान' में भइल बा। अउर कवि लोग अपने-अपने ढंग से बँटवारा कइले बाड़ें। राजेश्वर जी ओह लोगन के शीर्षक छोड़ि के जवने काण्ड में जवन घटना पसन्द कइले बानीं ओही के शीर्षक बना दिहले बानीं। एहतरे सात चाहे आठ की जगही पर एह रामायण में २९ खण्ड हो गइल बा।

ई 'भोजपुरी-रामायण' भोजपुरी-कविता परम्परा में आपन अलगे पहचान बनाई। भोजपुरी-प्रेमी लोगन के जल्दिए राजेश्वरजी क अगली रचना पढ़े के मिली।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

६९

भोजपुरी पंचतंत्र

-प्रो० रामदेव शुक्ल

आदमी अपना के सृष्टि के सबसे सुन्नर चतुर अउर ताकत वाला जीव माने ला। एकर प्रमाण एसे दीहल जाला कि हाथी आ बब्बरशेर जइसन महाशक्तिशाली जानवर के बुद्धिबल से पकड़ि के अपनी मरजी से नाच नचावत रहेला। कवनो सरकस में ई तमासा देखल जा सकेला। कुक्कुर आ घोड़ा आदमी के सबसे पुरान संघतिया हवें। जब पशुपालन शुरू भइल तब दूध देवे वाला पशु सबसे बढ़िया मीत बनि गइलें। खेती होखे लागल त बैल, हर आ बैलगाड़ी खीचें वाला सहायक भइलें। गाय के महिमा त एतना बढ़ि गइल कि माता क दर्जा पा गइली।

एह बात पर विचार कब्बो ना भइल कि जियत जानवर, कीरा, आ फतिंगा आदमी के विषय में का सोचेलें। पालतू चिरई चुरुंग तोता-मैना के आपन बोली बानी सिखा आदमी आपन सहायक आ मन बहलाव के साधन बना लिहल। तब्बो आदमी के बारे में ऊ लोग का सोचेला एह बात क पता नाहीं चलल। बानर सबसे नियरे के जानवर हउवें। वैज्ञानिक लोग कहेलें कि आदमी क पूर्वज बानरे हउवें। अँगरेजी राज में उज्जर-उज्जर हाकिम लोग मेमलोग के देखि के इलाहाबाद के डिप्टी कलट्टर साहब अकबर इलाहाबादी लिखलें कि रउवाँ सभके देखि के विश्वास नइखे होत कि राउर बाप दादा बानर रहल होइहें।

डारिविन साहब हकीकत से निहायत दूर थे,
हम न मानेगे कि मूरिस आप के लंगूर थे।

लंगूर लमहर पोंछिवाला बानर के कहल जाला। ओह लोग के मुँह करिया होला-ओतने करिया जेतना करिखही हाँड़ी। भला, लाल भभुक्का मुँहवाला करिया मुँहवाला के वारिस (संतान) कइसे हो सकेलें।

आदमी जल-थल-आकास में जवन कुछ बा ओकर भेद खोलि दिहले बा। ओइसने अजगुतई बा कि अपने अपने देश में अपनी अपनी बोली बानी में आदमी के जीवन में गिरह गाँठ जानवर की बोली बानी

www.bhojpurisahityangan.com

में कहत कहत बड़का पोथा रचि दिहले बा। अँगरेजी में एके फेवल कहल जाला-नीति-कथा, पुराण-कथा, गप्प-गपोड़ी, उपदेश-कथा, हितोपदेश आदि। एगो कहाउति हऽ कि एक जने राजा के लड़का इतना लंठ रहलें कि जवन जवन विद्वान पंडित ओकनी के पढ़ावे खातिर आवें, उनके अपने खरपेंच से भगा दें। एक जने पंडित के पता चलल कि राजा पंडित की खोज में बाड़ें त ऊ दरबार में हाजिर होके कहलें कि आपके राजकुमारन के हम पढ़ा देबि, बाकिर हमार परिचय ओह लोगन के नाहीं दियाई। जहाँ राजकुमार लोग खेले जात रहलें ओही जा एगो गँवार के भेस में पहुँचि के एह लोगन के देखे लगलें। ओह लोगन के गेना इनारे में गिर गइल। कवनो जुगति से निकारि नाहीं पावे लोग त ऊ गँवार ओह लोगन के मदद कइलें।

अगिले दिन से एह लोगन के कौआ, बिलार, कुक्कुर, सियार, बैल-गाय, सिंह-गदहा जइसन जानवर के किस्सा कहानी सुनावें लगलें। राजकुमार लोग उनकी काहिनन के रस में एतना बूड़ि गइलें कि खाइल पीयल छोड़ि के उनहीं से लपटायल रहें। राजा जब ई खबर पवलें त पंडित के बोलवलें। ऊ भेस बदलि के राजा से मिललें आ कहलें कि अबहिन के कागज आ पोथी पतरा नाहीं देखाइबि। एह लोगन के नीति कथा सुना के एतना चतुर बना देइबि कि आपके राज चलावे लायक हो जाई लोग।

नीति का हऽ, राजनीति का ह, मित्र के होला, शत्रु के होला, कइसे मित्र बनावल जाला, कइसे आपन कार निकालल जाला, कइसे दूसरे राजा पर चढ़ाई कइल जाला, कइसे सुलह सफाई कइल जाला-राजकुमारन के जवन कुछ सिखावे के चाहीं, ऊ सब राजकुमार के सिखा के पंडित राजा से कहलें-हे महाराज ! अब राजकुमार सबके कागज, कलम दुआइत के अच्छर ज्ञान के समय आ गइल बा। अब एह लोगन के हर तरह के शास्त्र, दर्शन, धर्म के शिक्षा देवे वाला पंडितन के बोलाईं। राजनीति आ कूटनीति के पंडित त ई लोग होइए गइल बा।

ओही कहानियन के संग्रह संस्कृत भाषा में 'पंचतंत्र' के नाम से भइल। ओकरेबाद अंगरेजी में भइलि। एह समय दुनिया के बहुत भाषा में 'पंचतंत्र' के अनुवाद हो गइल बा। भोजपुरी में एकर अनुवाद नाहीं भइल रहल हऽ। एह अभाव के मेटावे खातिर इंजीनियर राजेश्वर सिंह कमर कसि के तैयार भइलें आ एह अभाव के मेटा के 'भोजपुरी पंचतंत्र' लिखि डरलें।

इंजीनियरी के काम से रिटायर भइले के बाद इनके भोजपुरी गद्य में दर्जन भर किताब छपल बा। भोजपुरी पंचतंत्र पढ़ि के पाठक लोग इनके 'भोजपुरी बीर' कहे लागें त अचरज ना होई।

इनके अगिला किताब होई 'भोजपुरी योगी-कथामृत'। इनके प्रेमी पाठक लोग के अगिला साल में पढ़े के मिलि जाई।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

कहानिन से सीख भरल भोजपुरी पंचतंत्र

– डा० आद्या प्रसाद द्विवेदी

अपने लमहर भोजपुरी साधना में इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी जगत के कइगो नीम्मन-नीम्मन किताब लिखि के सौंप चुकल बाटीं। ये दिशा में उनके ढेर तारीफ करे वाला काम बा-संस्कृत के धार्मिक किताबन के भोजपुरी भाषा में अनुवाद। हलाँकि अनुवाद के काम कब्बो-कब्बो मूल रचना के निरमाण से ज्यादा मुश्किल हो जाला लेकिन राजेश्वर सिंह जी बिना थकले ए दिशा में रपटल आगे बढ़त जा रहल बानी। अनुबाद काम के ये दिशा में एक पड़ाव के रूप में हमरे सोझा आइल बा नवीं सदी के एक लेखक श्री विष्णु शर्मा रचल पंचतंत्र के भोजपुरी में अनुवाद। येकर मथेला बा 'भोजपुरी पंचतंत्र'। इन पाँचो तंत्रन में अड़सठ गो किस्सागोई के इ संग्रह अपने अन्दर जिनगी के सँवारे बदे नीम्मन-नीम्मन उपायन के भंडार सहेजले बा। ये में पेड़-पौधा आ मनइन के पात्र बना के अनेक सवाल खड़ा कइल गइल बा आ ओकर समाधान भी वही सब पात्रन के बल-बूता के बेंवत पऽ दीहल गइल बा। हम ये मौका प पाठक लोगन के ये बात के जानकारी दीहल चाहत बानी कि पं० विष्णुशर्मा जी के अपने पंचतंत्र में कथा लिखले के आधार कहाँ से मिलल जवना में जिनगी खातिर अनमोल बात सजा के दीहल गइल बा। पहिलकी बात त ई बा कि ये में कहल सगरी बात नीति आ उपदेश परक लोक कथा के जियतार उदाहरण बा। पंचतन्त्र के कहानियन के तह में गइला पर साफ मालूम पड़त बा कि विष्णुशर्मा जी अपने कथा के आधार पर महाभारत, वाल्मीकि रामायण, विदुर नीति, चाणक्य नीति आ शुक्र नीति में कहल महत्त्वपूर्ण बातन से लिहले हवें। ऊपर बतावल सब ग्रन्थन के निचोड़ लेके शर्माजी पशु-पक्षी के पात्र बना के ओमे अपने प्रतिभा के चाशनी मिला के एक सुन्नर रचना 'पंचतंत्र' के रूप में पाठकन के सोझा परोस दिहले हवें। आ हम ये दिशा में इंजीनियर राजेश्वर जी के साधुवाद दे रहल बानी कि ऊ विष्णुशर्मा के अनमोल कृति के भोजपुरी भाषा में अनुवाद क के भोजपुरी पढ़े-लिखे वाले लोगन खातिर कल्यान के जुगति दे दिहलीं।

पंचतन्त्र के रचना परम्परा से चलि आ रहल लोककथा भा लघुकथा के सोच से कुछ अलग हटि के आपन आवाज उठावत देखाई दे रहल बा। कई बार त अइसन अनुभव होला कि अनुभव

www.bhojpurisahityangan.com

के माटी के [illegible] विष्णु शर्मा जी विचारन के [illegible] किस्सा में [illegible] नीमन [illegible] के दीया बो लिहले होरो। विचारन के ई [illegible] कवनो किस्सा में अधुवा के [illegible] छितनार पेड़ के रूप में लिहले बा त कवनो लतर दाँने के छितरा के पढ़निहार के दिल अउर दिमाग प हरियाली के छाँह देत एक जिनगी खातिर एक जबर संदेश देत दिखाई देत बा। एह अद्भुत कहानियन में मनई खातिर, समाज खातिर, राजा-रानी खातिर, सगरो नारी जाति खातिर अउर लइकन, लइकिन खातिर लोक अउर शास्त्र क सहारा लेत अनेक संवेदना के जगावत भा छुअत बहुते सकारात्मक विचार, विडम्बना आ कौतूहल किताब के पढ़वाले आदमी के मन प टाँके रहल बा।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के ये भोजपुरी पंचतंत्र के पढ़त क ई महसूस हो रहल बा कि अनुवाद अरे भाई इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के मन प मूल कृति के कथ्य विचार अउर कथातत्व के संजीवनी रस पुरजोर ढंग से पकड़ में आ गइल बा तबे त अनुवाद मूल कृति के कथा के हुबहू भोजपुरी में उतारल भी गइल अउर जगह-जगह जहवाँ जरूरी समझल बा मूल कृति में दीहल नीति परक श्लोकन के भी अनुवाद में उतार दिहल बा। ये से अनुवाद पढ़े वाले पढ़निहार लोगन के कथा रस भी मिली आ नीति श्लोक के इयाद क के अपने जिनगी में उतार लिहले के भाव भी जगी। ये अनुवाद में हर किस्सा आपन एक संदेश दे रहल बा जवना के चरचा कइला से ढेर फइलाव हो जाई लेकिन हम इहवां में भोजपुरी पंचतंत्र के आखिरी किस्सा के उल्लेख कइले बिना आपन बाति खतम कइल चाहत ना हईं।

आखिरी किस्सा में मथेला बा 'एगो से भला दू' ए कथा में कवनो ब्रह्मदत्त गाँव के ब्राह्मण के उल्लेख आइल बा। ऊ ब्राह्मण जब कउनो काम से घर से बाहर जाये लगलें त उनकर महतारी कहली-'बेटा ! अकेल काहें जात बाड़ ? कवनो दूसर संघतिया खोज ल।' ऊ कहलन-'अरे ! डर मत, ई रास्ता बिना कवनो संकट क हउए। काम बदे अकेले चलि जाइब।' बेटवा के दृढ़ निश्चय के देखते महतारी पास के गड़हा से एगो केकड़ा लेके आ गइली आ कहली-'बेटा ! जदि जाते बाड़ त ई केकड़ा संग लिहले जा। ई राही क साथी रही। ऊ महतारी क बात मान के दूनो हाथन से ओके ले लिहलन आ कपूर के संग थैली में डारि के ले चललन।' कथा में बतावल गइल बा कि राह में थकि के कवनो पेड़ के छाँह में लेट गइलें। थोरके देर में उनके नींद लग गइल। ओही समय कउनो साँप पेड़ के कोटर से निकलि के राहगीर के नगीचे आ गइल आ ओके कपूर क महक मिलल। राहगीर के काटल छोड़ि के ऊ कपूर के पोटरी काट के कपूर खाइल चहले। ओह में केकड़ा लिपटाइल रहे। ऊ साँप के काटि मारि डरले। ब्राह्मण जगले पर देखलस कि ओकरे लग्गे एगो साँप मूअल पड़ल बा। ऊ समझ गइल कि इहे केकड़ा एक मुअवले बा। अनायासे ओकरे मुँह से निकरि पड़ल कि-'हमार माई साँच कहले रहली कि मनई के राही में साथी जरूर राखे के चाही। अकेले कतहूँ ना जाये के चाही। श्रद्धा से बात मान लिहले के नाते साँप के कटले से बच गइलीं।'

www.bhojpurisahityangan.com

ये पर अनुवादक पंचतंत्र के एक नीति परक श्लोक उधृत कइले बाटें-

अपि का पुरुषो मार्गे द्वितीय क्षेमकारकः ।
कर्कटेन द्वितीयेन सर्पात्यान्थः प्ररक्षितः ॥

ई कथा आज के नवहीं पीढ़ी बदे एक सनेश दे रहल बा कि आदमी के अपने जिनगी में महतारी-बाप के आज्ञा माने के चाही। उनके अनादर नाहीं करे के चाही। एक अउर संदेश में कहानी में बाकि राह-बाट में अगर केहू आपन आदमी संगे रहे त ज्यादा नीम्मन ढंग से राह कटि जाई।

भोजपुरी पंचतंत्र में टंकाइल नीति से भरल किस्सागोई विषय के विविधता से भरल रहला के नाते पढ़े लायक बन गइल हवे। पंचतंत्र में सहेजल पचास से अधिका किस्सा पाठकन के बाँधे रखले में य से समर्थ बा कि इन कहानिन में पात्र कउआ, खरहा, केकड़ा, बानर, सिंह, लोमड़ी आदि जंगल के जानवर सब बाटें जवना से मनई खातिर उपदेश मिलत बा। ई भोजपुरी पंचतंत्र आनंद आ उछाह से भरल तलाब बा जवना में कमल के फूल माफिक ढेर रसगर किस्सा-कहनी, लहलह करत बा। एक नीम्मन अनुवाद के रूप में ये भोजपुरी पंचतंत्र के तहियावल दस्तावेज के रूप में देखल जा सकी। सरल भाषा में लिखाइल बिना कउनो लाग-लपेट के जिनगी के निचोड़ देखल, पढ़ल, हंसल अउर कथारस के आनन्द लिहले खातिर ई 'भोजपुरी पंचतंत्र' पढ़े जोग रचना बा। भोजपुरी रचना संसार में ये संग्रह के स्वागत होई, ई हमरा के विश्वास बा। हम ये रचना रचले बदे इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के आशीर्वाद के साथे साधुवाद दे रहल बानी कि उनके सृजन-यात्रा अइसहीं डेग बढ़ावत आगे बढ़त चले। उनके हमार ढेर बधाई।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

७१

पुरोवाक्

-सूर्यदेव पाठक 'पराग'

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के बढंती का साथे ओकरा प्रचार-प्रसार में जीव-जान से लागल मनइन में इं० राजेश्वर सिंह के नाँव कवनो परिचय के मोहताज नइखे। पूर्वांचल के बाबा गोरखनाथ के तपोभूमि गोरखपुर में भोजपुरी के अलख जगावेवाली एक मात्र संस्था 'भोजपुरी संगम' के संरक्षक के रूप में ओकरा विकास खातिर समर्पित इं० राजेश्वर सिंह अबले भोजपुरी में दसगो पुस्तकन के लिख के प्रकाशित कर चुकल बाड़े जवना में आदमी के आचार-विचार-संस्कार के सुधारे का दिशा में ले जाये वाले अनेक निबन्ध संग्रहन आ साधु-संतन के जीवन चरित का अलावा संस्कृत के गौरवग्रन्थ 'भोजपुरी श्रीमद्भागवत कथा-सार', भोजपुरी महाभारत आ भोजपुरी रामायण शामिल बा।

भोजपुरी में कवियन के भरमार बा। जे गद्य में लिखतो बा ऊ भोजपुरी भाषा-साहित्य से जुड़ल निबंध भा काल्पनिक कथा-कहानी लिख रहल बा, बाकिर भारतीय संस्कृति के संरक्षक साधु-संतन के बारे में चाहे श्री मद् भागवत, महाभारत चाहे रामायण जइसन ग्रन्थन के भोजपुरी में अनुवाद कइ के नवकी पीढ़ी में भारतीय संस्कार भरे वाली रचनन के लेखन-प्रकाशन क काम प्रायः उदासीने रहल बा। एकर कईगो कारण बा। एगो त भोजपुरी के साहित्यकार लोग धरम-करम, साधु-संत भा रामायण-महाभारत पर कलम चलावे में आपन तौहीनी समझेले। दोसर बात इहो बा कि ओह बड़हन ग्रन्थ के भोजपुरी में लिखो पर दूसौ-तीन सौ पृष्ठन के पुस्तक छपावल आ मुफ्त में बांटल सभका बूता आ बेवत के बात नइखे। बाकिर हमरा ई कहे में गर्व के अनुभव होत बा कि एहू जुग में धार्मिक आध्यात्मिक विषयन पर लिखे वाला, नवकी पीढ़ी के संस्कारवान आ आस्थावान बनावे के चिन्ता करे वाला आ अपना मेहनत का कमाई से खर्च क के किताब छपवा के माई भाषा के प्रचार-प्रसार करे वाला इं० राजेश्वर सिंह जइसन मनई भोजपुरी माई का लाड़ला के रूप में मौजूद बा।

इं० राजेश्वर सिंह जी उत्तर प्रदेश जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से अवकाश पवला के बाद कई तरह के पारिवारिक झंझावातन के अँगेजत लगातार कलम चलावत साल में एगो दूगो

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तकन के प्रकाशित करा लेत बाड़ेय 2020 में एके साथ चार गो पुस्तकन के प्रकाशित करा लिहल राजेश्वर जी का बूता के बात बा। एही कड़ी में 'भोजपुरी पंचतंत्र' के भोजपुरी में प्रकाशन, लेखन के एगो सराहे जोग कदम बा।

पंचतन्त्र संस्कृत भाषा कथा साहित्य क एगो लोकप्रिय गौरव ग्रन्थ ह जवन संसार के अनेक भाषा में अनूदित हो के पढ़निहारन के मन मोहत रहल बा। अइसन मानल जाला की छठी सदीं में एकर प्रसिद्धि फारस तक पहुँच गइल रहे आ एकर पहिलका अनुवाद पहलवी (पुरनक फारसी) में भइल। ओकरा बाद सीरियन भाषा में अनुवाद भइल। नवीं सदी के अन्त में साह मिजान सेठ नाँव क विद्वान अरबी से यूनानी - अनुवाद कइले। एही यूनानी अनुवाद के आधार पर लाटिनी जर्मन आ स्लाव भाषा में अनुवाद भइल बा। भारतीय भाषा में सायदे कवनों सम्पन्न भाषा होई जवना में पंचतन्त्र के अनुवाद ना भइल होई। एह विवरण से पंचतन्त्र का लोकप्रियता के अंदाजा सहजे में लगावल जा सकत बा।

तन्त्र का मतलब भाग भा अध्याय होला। पंचतन्त्र के कथा पाँच भागन में बाँटल बा। 1. मित्र भेद, 2. मित्र सम्प्राप्ति, 3. काकोलूकीय, 4. लब्ध प्रणाश 5. अपरीक्षित कारक। मित्र भेद में दुश्मन के ओकरा मित्रन में फूट डाल के ओके कमजोर करे के उपायन पर जोर दिहल बा। मित्र सम्प्राप्ति में आपन ताकत बढ़ावे खातिर अपना सहयोग लायक मनइन के मित्र बनावे के वर्णन भइल बा। काकोलूकीय में जरूरत पड़ला पर शत्रु से मित्रता कइलो पर ओह से सावधान रहे के सीख दिहल बा। लब्ध प्रणाश में दुश्मन का जीत के हार में बदले के प्रयास के वर्णन बा आ आखिरी तन्त्र अपरीक्षित कारक में हानि लाभ के उचित जानकारी बिना कवनो काम में हाथ लगावे के पहिले ओकरा बारे में सोच विचार कइले पर जोर दिहल बा।

एही पाँच तरह का कहानियन के एगो शिक्षाप्रद लोकप्रिय संग्रह 'पंचतन्त्र' ह जवना के रचना आचार्य विष्णु शर्मा एगो राजा का लइकन के कथा कहानी का माध्यम से व्यवहार कुशल आ गुणवान बनावे खातिर लिखले बाड़े। संस्कृत साहित्य के इतिहासकार आचार्य बलदेव उपाध्याय एह पुस्तक के बारे में लिखले बानी-'सचमुच पंचतन्त्र विश्व साहित्य की एक दिव्य विभूति है। कथा के साथ में नीति की महनीय शिक्षा प्रदान करने की सुन्दर भारतीय योजना को स्वीकार कर विश्व के साहित्य ने अपने आपको उदात्त, लोकप्रिय तथा हृदयावर्जन बनाया है।'

पंचतन्त्र में जिनगी से जुड़ल हर समस्या का समाधान के उपाय कहानियन का माध्यम से नीति श्लोकन का प्रमाण के साथ बतावल गइल बा। पीछे क कहानी कड़ी का रूप में एगो दूसरा से जुड़त गइल बाड़ी सँ, जवन हर उमिर के मनइन के मनोरंजन का साथे व्यावहारिक ज्ञान दिहले में

www.bhojpurisahityangan.com

सक्षम बाड़ी सँ।

विश्व प्रसिद्ध अइसन लोकप्रिय पुस्तक के अनुवाद निश्चित रूप से अन्य भारतीय भाषा में भइल होई बाकिर बाईस करोड़ लोगन के भाषा भोजपुरी में एकर सांगोपांग अनुवाद अभी ले देखे में ना आइल रहल ह। सन् 2004 मे भोजपुरी साहित्य संस्थान पटना से श्रीमती रूपश्री के लिखल पंचतन्त्र के बारहगो कहानियन के संग्रह 'दरकतनींव' का नाँव से प्रकाशित भइल रहे। पंचतन्त्र के एगो कहानी पर आधारित एगो भोजपुरी एकांकी 'बानर के करेजा' नाँव से अँजोर पत्रिका में छपल रहे जेकर लेखक रहीं सीतारामचन्द्रशरण 'राम'।

भोजपुरी का बढ़ंती में तन-मन-धन से जुड़ल इं. राजेश्वर सिंह के पूरा पंचतन्त्र के भोजपुरी में कइल ई पुस्तक एगो लमहर कमी के पूरा करी आ संस्कृत कथा साहित्य का गरिमा से भोजपुरी प्रेमियन के परिचित करावत लोकप्रियता पाई, अइसन विश्वास बा।

इं. राजेश्वर सिंह अधीक्षण अभियन्ता का पद से सेवा निवृत्त भइला का बाद से भोजपुरी के भंडार भरे में पूरा तरह से जुटल बाड़े। अभी उनका में पूरा ऊर्जा आ उत्साह बनल बा। पूरा भरोसा बा कि आगहूँ उनकर लिखल एक पर एक पुस्तक प्रकाश में आई।

इत्यलम्

❖

www.bhojpurisahityangan.com

७२

भोजपुरी में योगी कथामृत

-प्रो० रामदेव शुक्ल

योगानन्द जी के जन्म गोरखपुर के एक ठो छोट मकान में रेती चौक कोतवाली के आस-पास मुफ्तीपुर सन् १८९३ ई० में ५ जनवरी के भइल रहल। उनके पिता वी. ए. डब्लू रेलवे के बड़का अफसर रहलें। बाद में रेलवे के डेयरी कालोनी में उनके सरकारी मकान मिल गइल।

योगानन्दजी बाघ से लड़ले और पराजित कइले के कथा में रस लेत रहलें। जब एगो साधु उनके असली बाघ-मन के भित्तर लुकाइल खूँखार जन्तु काम, क्रोध, मोह से लड़े के उपदेश दिहलें। योगानन्दजी हिमालय में तप करे चलि गइलें। उहाँ से लवटले पर असल गुरु श्रीयुक्तेश्वर गिरी जी कहलें-नादान बालक, तुहके जवन चीज चाही तवन हिमालय नाहीं दे पाई, बाकि तुहार लालसा जरूर पूरा होई। एतना कहि के गुरुजी योगानन्द के छाती पर जहाँ हिरदय रहेला, वही जगह थपथवलीं। ओके बाद का भईल ?

"हमार देहिं काठ एइसन अचल होके जमीन से चिपक गइल, साँस तेजी से फेफड़ा से बाहर खिंचा गइल। बुझाइल जैसे कौनो बहुत बड़हन चुम्बक से परान खींचि लिहल गइल। आत्मा और तुरंते देहि के बंधन से मुक्त हो गइल। बुझाइल जइसे बहुत तेजी से बहत कौनो जोति हमरी देह के रोंवा रोंवा से बहे लागल। स्थूल शरीर मुर्दा जइसन हो गइल। भीतरे ई बुझाइल कि हम कब्बो पुरहर जीवन जियलहीं नाहीं रहलीं। अपने भइले (अस्तित्व) के बाँध खाली अपने देहिं तक सीमित नाहीं रहि गइल, बलुक बुझाइल कि हमरी चारो ओर अणु-परमाणु में फइलि गइल बा।

दूर सड़की पर चलत लोग हमरा बुझाइल कि हमरिए अस्तित्व के बहरी अलंग में चलि रहलबा। बुझाइल कि धरती की भित्तर पेड़न के सोरि हमरा लउके लागल। ओकनी के भीतर जवन पेड़ के पोसे वाला रस बहत रहे, ऊहो हमरा लउके लागल। आस पास के सोगहग इलाका हमनी समने उघार हो गइल बा। जवन दीठि खाली सामने देखति रहलि और सब कुछ देखे वाली (सर्वदेशी) हो गइल रहे। एक ठो उज्जर गाय लउकल जवन धीरे-धीरे आश्रम के ओर आवति रहलि। जब आश्रम के दुआर खुलल त गैया भीतर ढुकि के अहाते के पिछआरे की

www.bhojpurisahityangan.com

ओर चलि गइलि। बुझाइल कि खुलल आँखि से हम गइया के तब्बो देखि रहल बानी। आस पास के सगरी चीज वस्तु सिनेमा की पर्दा पर चले वाला दृश्य की लेखा लउके लागल। जइसे गिलास में चीनी डारि के चम्मच से घोरि दीहल जाव, वइसहीं सब कुछ के अपने में घुला लिहले वाली रोशनी कब्बो सकार हो जाय, कब्बो निराकार हो जाय। सूक्ष्म अउर स्थूल सब एक दूसरे में बदलि के सृष्टि के कार्य-कारण सिद्धान्त के समुझावत रहलें। हमरा बुझाइल कि ईश्वर के सरूप कब्बो खतम नाहीं होखे वाला आनन्द हवे।''

एक तरह से सकल ब्रह्मान्ड के दर्शन के साथ अनुभव करा दिहले के बाद योगानन्द के गुरु उनके पुरहर शिक्षा दिहले में लगि गइलें। जब गुरु के सिखावल विद्या चेलन के जीवन में घुलि गइल तब परमहंस योगानन्द दुनिया भर में क्रियायोग सिखा के जगत् के कल्याण-यात्रा पूरा कइलें।

इंर्जानियर राजेश्वर सिंह ''योगी कथामृत'' के हिन्दी अनुवाद से भोजपुरी अनुवाद कइले में लगभग दस महीना के समय लगवलें। ४९ मथेला (शीर्षक) दे के सोगहक किताब के मरम समुझवले बाड़े। मथेला हवं-''हमार माई-बाप अउर लइकई, महतारी क मुअल अउर अलौकिक ताबीज, दू देह धरे वाला संत, हिमालय के ओर हमरे रवानगी में रुकावट, गंध बाबा क चमत्कारी कारनामा, बाघ स्वामी, प्लवनशील संत, भारत क महान वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र बोस, परमानन्द मग्न भक्त अउर उनकर ईश्वर के साथ प्रेमलीला, आपन गुरु श्रीयुक्तेश्वर जी से हमार भेंट, दू गरीब लइका वृन्दावन में, अपने गुरु के आश्रम में पड़ाव अवधि, उनींदा संत, समाधि लाभ, फूल गोभी क चोरी, ग्रह शान्ति, शशि अउर तीन गो नीलम, एगो मुस्लिम चमत्कारी, हमार गुरु कोलकाता में प्रकट होत हवं श्रीरामपुर में, कश्मीर-यात्रा में बाधा, हमार कश्मीर-यात्रा, पाथर मूर्ति क दिल, विश्वविद्यालय से उपाधि पावल, स्वामी-संस्थान के अन्तर्गत हमार संन्यास लिहल, भइया अनन्त अउर बहिन नलिनी, क्रियायोग विज्ञान, रांची में योग विद्यालय क स्थापना, काशी क पुनर्जन्म अउर वोकर पता लगावल, रवीन्द्रनाथ टैगोर अउर हमरे विद्यालय क तुलना, चमत्कार क नियम, पुण्यशीला महतारी से भेंट, मुअले राम के फिर से जियावल, आधुनिक भारत क महावतार बाबाजी, हिमालय में महल, लाहिड़ी महाशय क अवतार जइसन जिनगी, पश्चिम के प्रति बाबाजी क अभिरुचि, हमार अमेरिका गइल, लूथर बरबैंक-गुलावन के बीच एगो सन्त, ईसा-क्षतचिन्ह-धारिणी कैथोलिक संत टेरेसा नॉयमैन, हमार भारत लवटल, दक्षिण भारत में एगो कवितई जइसन नजारा, अपने गुरु के साथ कुछ आखिरी दिन, श्रीयुक्तेश्वर जी क पुनरुत्थान, महात्मा गान्धी के साथ वर्धा में, बंगाल क आनन्दमयी माँ, निराहारी योगिनी, हम पश्चिम लौटलीं, एन्सिनीटास (कैलिफोर्निया) में, १९४० से १९५१ क समय।''

www.bhojpurisahityangan.com

एकरे साथे-साथ दिहल गइल बा-"योगदा सत्संग सोसाइटी ऑफ इण्डिया क उद्देश्य अउर आदर्श।"

योगी कथामृत क विशेषता एह बात के बा कि एकरे पहिले भारत के संत-महात्मा आ योगी संन्यासी पर जेतना किताब लिखाइल रहली सं, ओकर लिखे वाला चेला लोग रहल। "योगी कथामृत" एक योगी द्वारा अपने कलम से लिखाइल बा, एसे पाठक लोग के चित्त में एकर प्रभाव अपने ढंग से परेला। खुद योगानन्दजी कई बात दुसरे लेखक लोग से अलग हटि के लिखले बानी जइसे महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज जिनके वर्णन विशुद्धानन्दजी के रूप में कइले बानी योगानन्द उनके "गन्ध बाबा" के मथेला से लिखले बानीं। दू देह धरे वाला संत में प्रणवानन्द जी के एक्के समय में दू जगह पर देखले रहले के कहानी बा। जब एह चमत्कार पर केदार नाथ बाबू अचरज परगट कइलें त उहाँ का कहनीं-

"तूँ एह सबसे एतना चकित काहें भइल बाड़ ? दृश्य जगत् मतलब लउके वाली दुनिया क सूक्ष्म एकता साँच योगिन से छिपल ना रहती। हम दूर कोलकाता में रहे वाले अपने चेलन के सामने क्षण भर में प्रकट होइ के उनसे बातचीत कइ सकेलीं। उहो लोग एही मतिन स्थूल जगत् के हर एक बाधा के अपने इच्छा के अनुसार पार कइ सकेलन।"

लाहिड़ी महाशय कहलन :"तुहें जियादा गहिर ध्यान करे के पड़ी।" हम फिर कहे लगलीं- "हम आपसे निहोरा करत हयीं, हे प्रभु, हमार मालिक ! हम आपके अपने सामने एह भौतिक देह में प्रकट देख रहल हयीं; हमरा के आशीर्वाद दिहल जाय कि आपके अनन्त स्वरूप में हम आपक दर्शन कइ सकीं !"

लाहिड़ी महाशय हाथ उठावत आशीर्वाद देत कहलन :"तूँ अब जाइ के ध्यान करऽ। हम तुहरे खातिर ब्रह्माजी से निहोरा कइ दिहलीं हँ।"

परमानन्द मग्न भक्त अउर उनकर ईश्वर के साथ प्रेमलीला मथेला में दिहल बा-"मास्टर महाशय आखिर हार मान के सहानुभूति के साथ मुस्कारात धीरे से कहलन-हम परमप्रिय माई तक तुहार निहोरा पहुँचा देब।" उनके शब्दन क ताकत हमरे कान में पहुँचते हमार सगरो विरह-आकुलता खतम कइ दिहलस। हम उनसे कहि पड़लीं : "महाशय, आप आपन बचन याद राखल जायी। हम जल्दिये माई क सनेस जाने बदे आपके सामने हाजिर होब। पल भर पहिले दुख अउर सिसकी जवन हमरे गटई से आवाज ना निकले देत रहलीं, अब ऊ गटई आनन्द के उम्मीद से आवाज बहरियात रहे।"

"समाधि-लाभ" मथेला के कुछ अंश पहिलहीं लिखाइल बा। "पाथर मूर्ति क दिल" मथेला

www.bhojpurisahityangan.com

में दिहल बा-

"हम भक्ति के गहिर भाव में डूब गइलीं। दुनिया क सुध-बुध खो गइल। हमार मन माँ काली पर एकाग्र हो गइल रहे। एही मन्दिर में उनकर इहे मूर्ति महान् सन्त श्रीरामकृष्ण परमहंस क आराध्य देवता बनल रहली। उनकर कातर पुकार पर इहे मूर्ति अक्सर जीवन्त रूप धारन कइ के उनसे बातचीत कइल करे।"

हम प्रार्थना करत रहलीं-"हे पाथररूपी महतारी ! अपने प्रिय भक्त रामकृष्ण के पुकार पर तूँ सजीव हो जात रहलू, अपने एह लइका के रोआई के काहें ना सुनत हऊ ?"

दिव्य शान्ति के चलते हमरा चाह अउरों अधिक से अधिक गहिर होत गइल। बाकिर जब एह नियर पाँच घण्टा बीत गइल अउर फिरो जब जवने देवी क हम अपने अन्दर में ध्यान करत रहलीं, उनके ओर से कउनो जवाब ना मिलल, त हमके तनिक निराशा भइल। कब्बो-कब्बो प्रार्थना के पूरा भइले में विलम्ब कइके भगवान भक्त क परीक्षा लेलन, बाकिर ऊ जिद्दी भक्त के वोकरे ईष्ट देवता के रूप में दर्शन जरूर देलन।- - -

"एकरे बाद हमरे चेतना क परमानन्दमय विस्तार भइल। हम गंगा नदी के ऊपर कई मील तक साफ-साफ देख सकत रहलीं। वोही नियर मन्दिर के बाहर दक्षिणेश्वर क पूरा इलाका भी हमके साफ लउके लागल। सगरो मकानन क दीवार पारदर्शी होइ के झिलमिलाये लगली अउर उनहन में से हमके दूर ले एहर-वोहर चलत लोग लउके लगलन।"

"क्रियायोग विज्ञान" मथेला में दिहल बा-

श्रीयुक्तेश्वर जी अपने चेलन के बतावल करे कि "क्रियायोग एगो अइसन साधन ह जवने के जरिये मनइन के क्रम विकास क गति बढावल जा सकेले। बहुत पुरान योगी लोग ई पता लगा लिहले रहलन कि ब्रह्मचैतन्य क रहस्य साँस नियन्त्रण के साथ गहराई से जुड़ल होला। दुनिया के ज्ञान कोष में ई भारत क अद्वितीय अउर अमर योगदान हउए। ऊँच काजन खातिर हृदय के क्रिया के चलवले में आमतौर से खर्च होखे वाली प्राणशक्ति के कउनो अइसन तकनीक के सहायता से साँस के लगातार जरूरत से दूर कइल जरूरी होला, जवन साँस के शान्त अउर गतिहीन कइ सके।"

"क्रिया योगी मन अपने प्राणशक्ति के मेरुदण्ड के छः चक्रन (आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान अउर मूलाधार) में ऊपर-नीचे घुमावेला। ई छः चक्र विराट् पुरुष के प्रतीक स्वरूप राशिचक्र क बारह राशियन के समान हयीं। मनइन के सूक्ष्मग्राही मेरूदण्ड में आधा मिनट के प्राण शक्ति के ऊपर-नीचे बहले से वोकरे क्रमिक विकास में सूक्ष्म प्रगति होले। आधा मिनट

www.bhojpurisahityangan.com

क ई क्रिया एक बरिस क स्वाभाविक तौर से होखे वाली आध्यात्मिक तरक्की के बरावर होले।''

"महात्मा गांधी के साथ वर्धा में'' मथेला में दिहल बा-

"हम छत से उतरि के उनके पढ़े लिखे वाले कमरा में जइसहीं पहुँचलीं, महात्माजी के मुँहें से निकलि पड़ल-'स्वागत ह, स्वामीजी !' कमरा में कउनो फर्नीचर ना रहल, उहवाँ खाली बइठले क आसन नुमा नान्ह-नान्ह चौकोर चटाई कुछ रहलीं, भुइयाँ बइठि के लिखले के काम आ सके एतने ऊँचाई क डेस्क, कागज अउर कुछ साधारण कलम (फाउन्टेन भा डाट पेन ना) रहलीं, कोने में एगो मामूली घड़ी टिक्-टिक् करति जात रहे।

वोह कमरा में शान्ति अउर भक्ति क वातावरण रहल। गान्धीजी अपने मोहक, लगभग बिनु दांत क मुस्कान बिखेरत रहलन।''

इंजीनियर राजेश्वर सिंह क्रियायोग के खोजे वाला योगी आ उनके किताब के भोजपुरी पढ़वइया लोग खातिर सहजे सुलभ करा दिहले बाड़ें। उनकर ई परिश्रम भोजपुरी बोले वालन खातिर एगो राहि देखावे वाला काम बा। एह उपलब्धि से राजेश्वरजी भोजपुरी मनई लोगन में विशेष प्रतिष्ठा के हकदार होखबि ई बिसवास बा।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

७३

एक आदिम भूख का आख्यान है यह कृति

-डा० वशिष्ठ अनूप

"एक कहानी की आत्मकथा" इंजीनियर राजेश्वर सिंह की एक ऐसी कथा-कृति है जिसे आकार से लघु उपन्यास कहना उचित होगा। इसमें गाँव में रहने वाले एक ठाकुर परिवार के सूरज नामक युवक की कहानी है जो बचपन में मंदबुद्धि का बालक समझा जाता था, किन्तु उम्र और शारीरिक विकास के साथ-साथ उसकी बुद्धि भी विकसित होती गयी और वह शरीर की भूख शान्त करने के लिए गाँव की औरतों व लड़कियों को पटाने एवं खुश करने की कला में पारंगत होता चला गया। इस सबके बावजूद गाँव के लोग उसे मंदबुद्धि वाला युवक समझकर उसके साथ वैसा ही सहज व्यवहार करते रहे और वह लोगों की इन्हीं धारणाओं एवं भावनाओं का दुरुपयोग करता रहा। उसके चरित्र की वास्तविकता से पर्दा अन्त तक नहीं उठ सका।

उपन्यास की कथा सूरज के व्यक्तित्व के साथ-साथ विकसित होती है। अनपढ़ और सीधा-सादा सूरज स्त्रियों के मामले में बहुत चतुर था। पहले भी वह कस्बे में रहने वाली भाभियों को नीम की दातून का उपहार दिया करता था। युवावस्था में पहुँचने पर उसके शारीरिक अवयवों में स्वाभाविक परिवर्तन आता है और स्त्री के प्रति आकर्षण का भाव उसके भीतर कुलबुलाने लगता है। वह काम-काज के बाद औरतों के बीच समय गुजारना जियादः पसन्द करता है। वे भी उसे मन्दबुद्धि का समझकर उससे निस्संकोच बातें करती हैं। आगे चलकर गाँव की कई अतृप्त औरतें और मनचलीं युवतियाँ उसकी वासना की सहभागी बनती हैं। इनमें हीरा की पत्नी गौरी, रामू की पत्नी, रामू की बहन शान्ती, एक अन्य विवाहिता और उसकी अविवाहित ननद, सीता और चम्पा नामक दो विवाहिता और ससुराल से लौटकर आयी सहेलिया। एक सजातीय विधवा इत्यादि शामिल हैं।

इस उपन्यास के केन्द्र में यौन वासनाओं का आख्यान है। वात्स्यायन और फ्रायड की स्थापनाएँ यहाँ सजीव पात्रों के माध्यम से साकार रूप में प्रस्तुत हुई हैं। सूरज जैसे नासमझ समझदार पुरुष और उपन्यास में वर्णित स्त्रियों जैसी स्त्रियाँ हर गाँव और शहर में आसानी से मिल जाएँगी, किन्तु कथाकार ऐसे विषयों पर कलम चलाने में हिचकते हैं या संकोच करते हैं, इस दृष्टि से राजेश्वर सिंह का लेखकीय साहस सराहनीय है।

www.bhojpurisahityangan.com

इस कथा को पढ़ते हुए यदि किसी को सुरेन्द्र वर्मा का बहुचर्चित उपन्यास 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' की याद आती है तो यह स्वाभाविक ही है, 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' का 'नील' और 'एक कहानी की आत्मकथा' के 'सूरज' में बहुत सारी समानताएं हैं। फर्क यह है कि 'सूरज' गाँव में रहने वाला अशिक्षित युवक है जो शरीर सुख के लिए औरतों से संबंध कायम करता है और 'नील' उच्चशिक्षा प्राप्त महानगर में रहने वाला महत्वाकांक्षी और व्यावसायिक बुद्धि-सम्पन्न युवक है जो सुविधा सम्पन्न बड़े घरों की अतृप्त स्त्रियों को सन्तुष्ट करने के लिए पुरुष-वेश्या बन जाता है। फर्क गाँव की ना समझी और शहर की आधुनिक या उत्तर आधुनिक समझदारी में है।

कथा को उकेरने में कथाकार को पूरी सफलता मिली है। घटनाओं और विविध प्रसंगों का वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक और खूबसूरत ढंग से हुआ है। उदाहरण के लिए सूरज की पहली शिकार रमरतिया का रूप-वर्णन-देखें-'रमरतिया एक साँवले रंग की युवती थी, नाक-नक्श तो साधारण ही था पर भरपूर गदराई यौवना और हँसमुख प्रकृति की थी। पानीदार चेहरा किसी को भी मोहित करने के लिए रसपूर था। उसकी खनकदार हँसी और हाजिर जवाबी देखते-देखते गाँव के कद्रदानों में फैल गयी।' इसी प्रकार हीरा की पत्नी गौरी के बारे में यह टिप्पणी भी द्रष्टव्य है-'उम्र के हिसाब से हीरा अभी छोटी उम्र का लगता था, जबकि उसकी दुल्हन लगभग उसी उम्र की होने के बावजूद अपनी उम्र से दो-तीन साल अधिक की लगती थी वह पूर्ण विकसित यौवना थी। गोरी-चिट्टी, तीखे नाक-नक्श वाली गदराये यौवन से भरपूर....'

कथा की भाषा आंचलिक और लोक-भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग, कथा-विन्दास को स्वाभाविक बनाता है। गवना, मूज, चुहुलगुल, खेली-खायी, बरदउल, बरक, सहेट, ठमक गया, हाली-हाली, खसम, देवारा, पिराना आदि शब्द आम जबान के हैं और अपनी जगह पर अच्छे लगते हैं। लोकोक्तियाँ भी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाती हैं।

'एक कहानी की आत्मकथा' एक आदिम भूख का आख्यान है। यह आख्यान किसी परिणति या निष्कर्ष तक नहीं पहुँचता। इसमें एक अन्तहीन निस्तरण है जो यह बताती है कि कामाग्नि भी जठराग्नि की भाँति एक अनवरत जलने वाली आग है जो तृप्ति के बाद कुछ देर के लिए शान्त हो जाती है, पर बुझती कभी नहीं। इस कहानी के देह-सम्बन्ध अनैतिक, अमर्यादित और समाज विरूद्ध अवश्य है, किन्तु अस्वस्थ और अप्राकृतिक नहीं। कथाकार को मेरी कोटिश: शुभकानाएँ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

७४

रूहानी सृजना-कृति ढँकने में नहीं खोलने में है

–डॉ० मधुर नज़्मी

अपने साहित्य वजूद की अदना सी भूमिका में मैं मूलत: हिन्दी, उर्दू और भोजपुरी का कवि हूँ। कहानी उपन्यास और नैबन्धिक रचनाओं में मेरी अपनी कभी भी रुचि नहीं रही है। शायद इसलिए भी कि हर कहानी अपनी आरंभिक स्थिति से शुरु होकर, बीच में या कभी-कभी आखिर तक पहुँचते-पहुँचते रेशा-रेशा टूट कर छितरा जाती है और बेचारा पाठक ठग लिए जाने की 'सदाशयी' मुद्रा ओढ़े एक अन्तहीन 'भटकाव' 'बिखराव' जीने के लिए दण्डित हो जाता है। उपन्यास और निबन्ध रचना की बुनियादी तात्त्विकता को देखकर और पढ़कर भी यह बात तल्ख किन्तु शहदीले शब्दों में अदब से कही जा सकती है। अपने अभिन्न इंजिनीयर राजेश्वर सिंह की औपन्यासिक कृति, 'एक कहानी की आत्मकथा', 'एक कहानी बीच में है', 'जिन्दगानी ये कैसी तेरी जिन्दगी ?' या 'सरकार' शाह गोला 'दीवान' दरगाह शरीफ निजामाबाद की ऐतिहासिक संबुद्ध से भरपूर शोध-परक पाण्डुलिपियों को पढ़कर, मैंने यह बराबर महसूस किया है कि ये अपने तरीके के नायाब साधक हैं। संकोची कुछ इतने कि इतना सारा कुछ लिख चुकने के बाद भी किसी से यह जाहिर नहीं होने दिया कि वे 'भी' कुछ लिखते हैं, कविता-साहित्य में इनकी रुचियाँ 'मन ही मन रस लेने की रही है'। अपने पैतृक गाँव गोपालपुर (गोरखपुर) में काव्य समारोह करके, आजमगढ़ में विभागीय सेमिनार करके, धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय भागीदार होकर, किसी की मदद करके, बराबर ये सामाजिक कार्यों के धार्मिक, कर्मनिष्ठ सहयोगी रहे हैं किन्तु इतनी बाँधने वाली कहानियों के सूत्रधार होंगे, यह बात मुझे क्या किसी को भी नहीं मालूम थी।

सच तो यह है कि राजेश्वर सिंह भी अपनी इन रचनाओं को निर्मित से गाफिल थे-क्यों कि इन्होंने आत्मने पद, आत्मकथा में यह लिखा है कि ये कहानियाँ तबादलों की विभागीय फाइल में बँध गयी थीं। दर हकीकत साहित्य में इनकी उम्र २० से २५ वर्षों की हैं। इस कहानियों की संरचना में एक उम्र एक अवस्था की रंगिमा है जिसे रूहानी कहा जा सकता है। यह अपने समय के साथ इन्साफ है अवस्था के साथ इमानदारी है। आज के

www.bhojpurisahityangan.com

दौर में सही तथ्यों को उजागर करने में साहित्यकार संभावित खतरों से टकराने में कतराता है, किन्तु राजेश्वर सिंह का यह मानना है कि उन संगोपित की कथार्सिस होगी। उनका अभिमत अपनी वैचारिक संरचना में गैर मुनासिब या गलत भी नहीं है। आज हम अपने बुनियादी मूल्यों को खूबसूरत अन्दाज में भाषाई कायिक कलेवर में सजा-सँवार कर प्रस्तुत करने की कला में निपुण हो गये है। आदर्श का गोलम्बा बढ़ाकर, विकृतियों को ढँक रहे हैं किन्तु ढँकने से एक विकृति ही आकारित होती है। रूहानी सृजना कृति ढँकने में नहीं खोलने में है। इंजीनियर राजेश्वर सिंह सरकार शाह गोला दीवान निजामाबाद आजमगढ़ के खास मुरीद और दरगाह शरीफ के निर्माणिक संकल्पक हैं और दरगाहों या शक्तिपीठों से जुड़े हुए व्यक्ति के पास छुपाने के नाम पर कुछ भी नहीं होता। राजेश्वर सिंह ने अपनी रूहानी रूमानियत में कुछ भी तो नहीं छुपाया है। अपने ही गाँव के किरदारों को अपने कथ्य का आधार बनाया है। उनकी कहानी के पात्र आज भी जिन्दा हैं, कुछ अब नहीं हैं। मैंने कभी अपनी गजल में एक शेर कहा था जो सम्भावत: यहाँ गैर मुनासिब नहीं होगा-

'वाकई गाँव की गलियाँ बड़ी रसीली होती हैं। काश ! सोचा ही नहीं दर्द को समझा जाये।'

राजेश्वर सिंह की कहानियों में 'कचरस' की मिठास है। रूमानी जमीन को पर दुनियावी जरूर है लेकिन कहानी की अन्त: संरचना और कथाकार को अपनी जिन्दगी की पर्तों में झाँकने पर एहसास होता है कि इसके तार रूहानी रूमानियत से जुड़े हुए हैं। रूमान हमारी, आपकी, सबकी जिन्दगी को संचालित करने वाला 'तत्त्व' है किन्तु आज अपनी व्याख्या में गलीज और बेमानी हो गया है। वैसे ही महब्बत और इश्क दोनों ही आज की बुनियादी व्याख्या में अपनी मूल्यवत्ता खोते नजर आ रहे हैं। जरूरत है इनके पुनर्मूल्यांकन की, रूमान, महब्बत और इश्क इनकी अर्थ-छबियों को गहराई से जानने-समझने की व्याख्यायित करने की जरूरत महसूस की जा रही है। राजेश्वर सिंह की कहानियाँ औपन्यासिक जमीन पर उगी हैं, जहाँ से कंछे-ही-कंछे, कल्ले ही कल्ले फूट रहे हैं। इन कहानियों के पेट में एक कहानी समाहित है। हर मादा कंगारू के पेट में जिस तरह से छुपा हुआ एक बच्चा होता है, उसी तरह से राजेश्वर की हर कहानी की पृष्ठ-भूमि में एक कहानी होती है। कहानी कहने और उसकी धार को वाजिब दिशा में मोड़ने की पारखी हैं-इंजीनियर राजेश्वर। अपनी 'कहानीपन' में लीपा-पोती नहीं करते। आईने की तरह साफ-साफ बगैर किसी लाग-लपेट के अपनी बात कहते हुए राजेश्वर सिंह अपनी कहानी को पाठकों से पढ़वा लेने के पण्डित हैं।

मैं हास-परिहास में कभी-कभार उनसे ट्रक के पीछे लिखे हुए सूत्र वाक्य 'सटला तऽ

www.bhojpurisahityangan.com

गइला' कहता हूँ। एक साथ तीन कृतियों के प्रकाशन पर उन्हें बधाई देते हुए पाठकों से वही बात 'सटला तऽ गइला' कहना चाहूँगा। कहानी को आँखों से छूटे ही पाठक कृति के उपसंहार तक स्वत: पहुँच जायेगा। किसी भी कथाकार, उन्यासकार, कवि, साहित्यकार के लेखन में पाठकीय नजरिया से इस खूबी का होना लाजिम है। यदि लेखक अपने लेखकीय अनुष्ठान से पाठक को प्रेरित उत्कंठित नहीं कर सकता तो क्या जरूरी है कि लिखा ही जाये। लेखक का धर्म पाठक को अपनी वैचारिकता से रचना समाप्ति तक निहाल कर देने में है। मुझे विश्वास है राजेश्वर सिंह अपनी कृतियों से पाठकों को 'निहाल' कर सकेंगे। सरकार शाह गोला दीवान दरगाह शरीफ निजामाबाद आजमगढ़ की ऐतिहासिकता जो अब तक किसी के भी जानकारी में नहीं थी, का अजीब तरीके से रूहानियत की करिश्माई खुवियों के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं, जो पाठकों के लिए, साहित्य के लिए सरोकारियों के लिए एक नायाब तोहफा और दस्तावेज है। वह दस्तावेज जो आज तक राजेश्वर जी ने अपने अन्त: पटल में छुपा रखा था, उसे पढ़कर पाठकों को उनके रूहानी रूप का सहजत: अन्दाजा मिल जायेगा। इन कहानियों के पढ़वाने के पीछे सम्भवत: कथाकार की गूढ़ रूहानी रहस्यात्मकता पोशीदा है। इसे मैं यकीन पूर्वक कह सकता हूँ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

समाज की पारदर्शी झलक है यह कृति

-सुरेन्द्र सिंह, सम्पादक चांस

भारतीय समाज स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्पर्कों को वासना की दृष्टि से देखता है इसलिये उसके स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्मिलन को तमाम वर्जनाओं से निरुद्ध कर दिया है, लेकिन ये निषेधात्मक वर्जनायें वर्तमान परिवेश में तार-तार हो चली हैं और यह इसलिये नहीं हुआ है कि निषेधात्मक वर्जनायें किसी ने बलात् तोड़ डाली। फलस्वरूप एक तथाकथित गैर मुनासिब परिवेश अस्तित्व में आ गया है। यह इसलिए हुआ है कि मानव-मन वर्जनाओं से मुक्ति चाहता है। वर्जनाओं को लाख सामाजिकता के रंग में रंद दिया जाय, धार्मिकता के रंग में रँग दिया जाय, इनका अस्वाभाविक होना ही इनके टूटने का मुख्य कारण है।

कभी-कभी स्वभाव पर निषेधात्मक बन्धन अत्यन्त सहजता से टूट जाते हैं। इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी की इस कृति का कथानक सहजता से टूटती हुई वर्जनाओं की अन्तहीन कहानी है। कथानक का मुख्य पात्र सूरज जिसके आस-पास एक दर्जन नारी चरित्र हैं, जो विवाहित हैं, विधवा हैं, कुआरी हैं। एक दूसरे की काम भावनाओं में अपनी-अपनी तृप्ति के लिए सहज सहयोग करते हुए दिखायी पड़ते हैं। ग्रामीण परिवेश का यह स्वभाव आज के आधुनिक समाज का प्रतिबिम्ब है। लोग इसे फैशन स्वीकृति और परम्परा मानकर 'बोल्ड दृश्य' कहते हैं-पर यह बोल्डनेस का फैशन है। मानव स्वभाव में जीने की एक चाह है।

कथानक की सबसे बड़ी विशिष्टता यह है कि भाषा बिल्कुल सहज और रवाँ-दवाँ है। जहाँ वो सामाजिक वर्जनाओं से आँखें बचाकर-एक गति पकड़ाते हैं और उनकी यह गति सूरज की आगोश में जाकर तृप्ति में विलीन हो जाती हैं। सूरज की आगोश उनकी तृप्ति का ठहराव बिन्दु बन जाती है। जबकि सूरज स्वयं अपने स्वभाव की वजह से अपने ही परिवार में उपेक्षित है। उसकी मन्द मतिता या बाउकपन ही उसके स्वभाव की मान्यता है। इसी दृष्टि से उसे देखा जाता है। फलत: अपने आस-पास के नारी चरित्रों के सम्पर्क में आने से कोई सामाजिक बन्धन उसके सामने नहीं आ पाता। उपेक्षित जीवन यहाँ आकर सन्तुष्ट हो जाता है और फिर इसी संतुष्टि की तलाश में उसका जीवन गुजरता है।

www.bhojpurisahityangan.com

अगर आप लेखक की कृति 'एक कहानी की आत्मकथा' पढ़ना शुरु करें तो उसे समाप्त होने तक आप उसे पढ़ते रह जायेंगे। यह कथाकार की सफलता है। विषय-वस्तु को लेकर जरूर आलोचक नाक-भौं सिकोड़ सकते हैं, किन्तु वास्तविकता के मद्दे-नजर ये कथाकार के इस प्रयास और साहस को प्रशंसित करेंगे।

लेखक बधाई का पात्र है, जिसने अपनी कृति के कथानक के पत्रों को मानव स्वभाव की सहज गतिविधियों के इर्द-गिर्द आकर्षक तरीके से बाँधे रहता है। वास्तव में यह कहानी नहीं है। समाज की एक पारदर्शी झलक है। एक यथार्थ है, हमारे मन की संगोपित बातों का, मानवीय संवेदनाओं से अलग रह लेने की वर्जना एक पाखण्ड है। हर मनुष्य के अन्दर एक औरत है। हर औरत के अन्दर एक पुरुष है और दोनों एक दूसरे को ढूंढते रहते हैं। पाते रहते हैं, विछड़ते रहते हैं-और एक कहानी की आत्मकथा इन्हीं लम्हों की उपज और तस्वीर है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

कलात्मक तकनीक से परे, परम्परा-मुक्त तकनीक का प्रयोग

-पंकज गौतम

कहानी की अनिवार्य शर्त है-'कहानीपन !' घटनाओं-परि-घटनाओं के यथावत् प्रतिफलन से बचाकर, वस्तु-तत्त्व का कथात्मक अंत:संयोजन एक कहानीकार के लिए साधना है।

कहानी की अनिवार्य शर्त है-'कहानीपन !' घटनाओं-परि-घटनाओं के यथावत् प्रतिफलन से बचाकर, वस्तु-तत्त्व का कथात्मक अंत:संयोजन एक कहानीकार के लिए साधना है। इस संचेतन को भाषा में व्यक्त करने के लिए, उस भाषा की समझ और उस पर पकड़ आवश्यक है। इंजीनियर राजेश्वर की कथा-संरचना की खासियत यह है कि वे वस्तु-तत्त्व को सामान्य जन-जीवन से उठाते हैं और उसे सामान्य भाषा में गहरी अर्थवत्ता के साथ व्यक्त करते हैं। प्रथम पाठ में इनका कथा-लेखन सहज और सरल प्रतीत होता है किन्तु जैसे-जैसे उसकी व्यंजना पकड़ में आती जाती है, वैसे-वैसे उसमें संदर्भ खुलते जाते हैं। इस प्रक्रिया में उनकी कथा कहने की अपनी शैली पाठक को बांधे रहती है। समकालीन कहानी की कलात्मक तकनीक से परे, वे परम्परा-मुक्त तकनीक का उपयोग पूरी कुशलता से करते हैं। इनके कथा-लेखन में अचल-रस और कथा-रस है। भूमि, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी-पहाड़ इनकी कथा-भूमि के अनुषंगी हैं। अपने अनुभव की सच्चाई को इंजीनियर राजेश्वर जन-जीवन की संवेदना को सम्बद्ध कर, पूरी आत्मीयता से व्यक्त करते हैं। ये अपनी कथा-वस्तु के द्रष्टा ही नहीं, भोक्ता भी हैं, शायद इसीलिये इन्हें 'कहानीपन' को बनाये रखने के लिए, उसे बिखराव से बचाने के लिए किसी अतिरिक्त प्रयास की जरूरत नहीं पड़ती। इन्होंने अपने कथा-लेखन में सामान्यत: न दिखाई देने वाली विसंगतियों पर उँगली रखी है जिससे इनकी अलग पहचान बनती है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

७७

अपने अन्तः कलेवर में कथा-कृति

-डॉ० वशिष्ठ अनूप

".....कथा की भाषा में आंचलिकता और लोक-भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग, कथा-विन्दास को स्वाभाविक बनाता है। गवना, मूज, चुहुलगुल, खेली-खायी, बरदउल, बाउक, आजी, सहेट, ठमक गये, हाली-हाली, खसम, देवारा, पिराना आदि शब्द आम जबान ही है और अपनी जगह पर अच्छे लगते हैं। लोकोक्तियाँ भी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाती है-'एक कहानी की आत्मकथा' एक आदिम भूख का आख्यान है। यह आख्यान किसी परिणति का निष्कर्ष तक नहीं पहुँचता। इसमें एक अन्तहीन निरन्तरता है जो बताती है कि कामाग्नि भी जठराग्नि की भाँति एक अनवरत जलने वाली आग है जो तृप्ति के बाद कुछ देर के लिए शान्त तो हो जाती है, पर बुझती कभी नहीं....."

".....इंजीनियर राजेश्वर सिंह की औपन्यासिक कृति 'एक कहानी की आत्मकथा' 'एक कहानी बीच में है' 'जिन्दगानी ये कैसी तेरी जिन्दगी ?' या सरकार शाह गोला दीवान दरगाह शरीफ, निजामाबाद की ऐतिहासिक संबुद्धता से भरपूर, शोध-परक पाण्डुलिपियों को पढ़कर, मैंने यह महसूस किया है कि ये अपने तरीके के नायाब, साधक कथाकार हैं। संकोची कुछ-कुछ इतने कि इतना सारा कुछ सार्थक लिखने के बाद भी किसी से यह जाहिर नहीं होने दिया कि वे भी कुछ लिखते हैं। दर हकीकत साहित्य में इनकी उम्र २० से २५ वर्षों की है। इन कहानियों की संरचना में एक उम्र, एक अवस्था की रंगिमा है जिसे रूमानी कहा जा सकता है। वह अपने समझ के साथ इन्साफ है। अवस्था के साथ ईमानदारी, रूहानी सृजना-कृति ढँकने में नहीं खोलने में है। दरगाहों-शक्ति पीठों से जुड़े हुए व्यक्ति के पास, छुपाने के नाम पर कुछ नहीं होता, राजेश्वर की कहानियों में 'कचरस की मिठास' है कहानी की अन्तः संरचना और कथाकार की अपनी जिन्दगी की पर्तों में झाँकने पर एहसास होता है कि इनके तार रूहानी रूमानियत से गहरे जुड़े हुए हैं....."

-डॉ० मधुर नज्मी

❖

www.bhojpurisahityangan.com

७८

प्रकाशित कथा-कृतियों पर समालोचक
किस्सागोई का आकर्षण भीतर से

डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक
(साहित्य-भूषण)

इंजीनियर राजेश्वर सिंह की दो प्रलम्बित कहानियाँ 'एक कहानी की आत्मकथा' तथा 'एक कहानी बीच मे है' ग्राम-जीवन के निम्न, मध्यम वर्ग और निम्मवर्ग के बीच की स्त्री-पुरुषों की दमित कामेच्छाओं के परितोष के इर्द-गिर्द घूमती है। इसे प्रकृतिवादी (नेचरलिज्म) कहानियाँ भी कह सकते हैं। समस्या के रूप में इसमें अविवाहित, विधुर-विधवा, स्वैराचार प्रेमी नर-नारियों के यौन-व्यवहारों का एक सीमा तक व्यापक चित्रण है। किस्सागोई की अनगढ़ता के भीतर से फूटता आकर्षण इन कृतियों का शिल्पगत आकर्षण है। केन्द्र और कथा-विधान की एकलता इसे कहानी के दायरे से बाहर नहीं जाने देती और ठीक ही कथाकार ने इसे कहानी की संज्ञा दी है। आशा है रचनाकार अपनी भावी कृतियों में समाज और व्यक्ति की दिनों-दिन कठिन होती जा रही जिन्दगी को चित्रित करेगा और सहृदय एवं मर्मज्ञ कथा-प्रेमियों की प्रशंसा का भाजन बनेगा।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी करने की शैली सर्वग्राही है

डॉ० उमाशंकर तिवारी

पूर्व प्राचार्य, हिन्दी-विभागाध्यक्ष

".....इंजीनियर राजेश्वर की दो कथा-कृतियों 'एक कहानी बीच में है' तथा 'एक कहानी की आत्मकथा' की पाण्डुलिपियों से होकर गुजरा कथाकार की ये 'मेडेन' कृतियाँ हैं। सामाजिक रूप से अभिशप्त नारियों की यौन समस्याओं को बड़ी संवेदनशीलता के साथ उकेरा गया है। कृतिकार में एक प्रतिभा-सम्पन्न कथाकार की 'किस्सागोई' है और दबी-छुपी समस्याओं को करीने से उभारने-उभाड़ने का असरदार साहस भी हिन्दी का पाठक-वर्ग एक अधिकारी के अस्तित्त्वगत बिडम्बना से जूझते हुए कलमकार के 'जोर' को महसूस करेगा। इंजीनियर राजेश्वर की कहानी कहने की शैली सर्वग्राही है और भरपूर सम्प्रेषणीय....."

❖

www.bhojpurisahityangan.com

८०

समाज के पर्दे में पोशीदा सच्चाई से इन्कार नहीं

-डॉ० वेद प्रकाश 'अमिताभ'

"इंजानियर राजेश्वर का लघु उपन्यास 'एक कहानी बीच मे है' काम-वासना के आगे नत-शिर एक प्रौढ़ा नारी के अद्यपतन पर आधारित है। एक आयाम विशेष नैतिक स्खलन और अनैतिक यौन-सम्बन्धों की वृद्धि पर केन्द्रित है। उपन्यासकार दिखाता है कि एक पथ-च्युत नारी किस तरह दूसरों को भी पतनोन्मुखी करती है 'हो जा मैना मो सी' पुजारिन का मीरा को शिव नन्दन की ओर ढकेल देना प्रमाण स्वरूप देख सकते हैं ..... उपन्यास में जिस तरह काम-पीड़िताएँ आखेट करती हैं यह विश्वसनीय भले ही न लगे, लेकिन समाज के दर्द में पोशीदा इस सच्चाई से इन्कार भी नहीं किया जा सकता है....."

❖

www.bhojpurisahityangan.com

८१

इस कथा का अनकहा पक्ष महत्त्वपूर्ण है

-डॉ० वशिष्ठ अनूप

'एक कहानी बीच में है' इंजीनियर राजेश्वर जी का लघु किन्तु महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में युवावस्था के आरम्भ से लेकर, ढलते यौवन तक मानव मन और तन को उद्वेलित व विचलित करने वाली काम-वासना का बहुत सशक्त और स्वाभाविक चित्रण हुआ है। कथाकार को इस विषय का विशद् और प्रामाणिक अनुभव है और इसके वर्णन में उसे महारथ हासिल है। कथा-प्रसंगों के उद्घाटन में कथाकार की कल्पना-शक्ति उसका भरपूर साथ देती है। यही वर्णन-प्रसंगों में अतिरंजना या दूर की कौड़ी लाकर पाठक को आश्चर्यचकित करने की कोशिश अथवा उछल-कूद नहीं है। इस कारण कथ्य की विश्वसनीयता बनी रहती है।

इस उपन्यास के केन्द्र में, लगभग चालीस वर्षीया चन्दा नामक स्त्री है, जो दो मृत सहित कुल पाँच बच्चों की माँ है और विधवा है। वह अपनी काम-वासना की शान्ति के लिए तरह-तरह के हथकण्डे अपनाती है। इस क्रम में वह पास के शिवमंदिर के विधुर युवक पुजारी, सुशील, रमेश, तीन-चार खेत-मजदूरों, गाँव के एक अनपढ़ बौड़म और रामू नामक विधुर को अपना शिकार बनाती है। रामू जो वेश्यागामी था, उससे चन्दा को उपहार में गुप्त रोग मिलता है और वह अन्त को प्राप्त होती है। उपन्यास की लगभग पैंतीस वर्षीया विधवा पुजारिन चन्दा की सहेली बन जाती है और इन दोनों में अप्राकृतिक सम्बन्ध भी कायम हो जाते हैं। ये सदैव यौवन, यौवनानन्द और कामजनित वासना के विषय में ही बातें करती हैं। यहाँ चढ़ती उम्र की नवयुवती 'मीरा' से लेकर ढलती उम्र तक के पात्र देह की भूख से ही संचालित हैं। पीछे उपन्यास की सीमा यह है कि इसमें जीवन की अन्य समस्याओं के लिए कोई स्थान नहीं है, लेकिन इस अभाव का सकारात्मक पक्ष यह है कि इससे कथा में किसी प्रकार का बिखराव नहीं आता।

इस उपन्यास का शिल्प स्वाभाविक और अनगढ़ है। यह अनगढ़ता ही इसकी सुन्दरता है। सादगी का सौन्दर्य इसके शिल्प की खासियत है। इसके शिल्प की एक विशेषता इसके 'कहानीपन' में भी है। आज के तमाम कथाकारों की कथाओं से 'कहानीपन' गायब हो रहा है और उसके

www.bhojpurisahityangan.com

स्थान पर फार्मूलाबद्धता एवं यांत्रिकता बढ़ रही है। राजेश्वर जी का वह 'कहानीपन' उन्हें गाँव की 'कहानी' और 'किस्सा' के करीब ले जाता है जो सुखद है। भाषा भी अनुकूल है।

इस भाषा का निहितार्थ या संदेश यह है कि अत्यधिक व असीम भोग एवं सुख की अभिलाषा वह चाहे आर्थिक हो या शारीरिक, मनुष्य को पतन की ओर ले जाती है, जिसकी परिणति मृत्यु तक पहुँचा सकती है। शरीर की भूख और उसकी तृप्ति वास्तविक है, पर उसकी अत्यधिक लालसा एवं उसके लिए अमर्यादित-अनैतिक आचरण अनुचित है और यह सामाजिक प्रतिष्ठा तथा तन-मन सबके लिए घातक है। इस कथा का वह पक्ष अधिक महत्वपूर्ण है जो अनकहा है। अर्थात् देश-काल, समाज, उम्र और परिस्थितियों के अनुसार इन्सान को स्वयं में परिवर्तन लाना चाहिए, इंद्रियों पर नियंत्रण करना चाहिए, मन को अन्य कार्यों में लगाना चाहिए अन्यथा विनाश अवश्यम्भावी है। इस चुनौतीपूर्ण विषय पर साहसिक लेखन के लिए श्री राजेश्वर सिंह बधाई के पात्र हैं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

८२

दमित-विकृत 'काम' की गवाही

-प्रो० प्रभुनाथ सिंह 'मयंक'

भारतीय मिथकों और पुराकथाओं में शिव और शक्ति का युग्म सृष्टि के प्रादुर्भाव, विकास और अनन्त प्रभाव की व्यंजना प्रदान करता है। शिव भारतीय दर्शन में अनादि, अनन्त देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। शैवागम दर्शन में 'काम' सृष्टि के आदिकाल से होता आ रहा है। उसी कामेश्वर शिव ने विष्णु और ब्रह्मा को प्रकट किया। उसी स्थाणु सत्ता ने अपने वामांग से विश्व सुन्दरी, त्रिपुरा भैरवी, ताराकली, मातंगी, बंगलामुखी, छिन्नमस्ता, कमला, बागेश्वरी, दुर्गा को प्रकट किया, ताकि काम का सहचरी शक्ति के साथ क्रीडा-कौतुक करके अविछिन्न सृष्टिप्रवाह संचालन किया जा सके। काम ही जीवन का आकर्षण और आनन्द है। आह्लाद की कर्म-प्रतिष्ठा है। काम ही नाग-शैया है। शशि शेखर भूषण है। रचना के लिए प्राथमिक तत्व के रूप में, काम क्रीडा की अनिवार्यता रचनाकार के लिए विधायी तत्व के रूप में अपेक्षित वस्तु है। परम पुरुष ने कामना की कि मैं एक हूँ। बहुत से रूपों में परिणत हो जाऊँ। उसके इस संकल्प मात्र से सृष्टि का समग्र प्रादुर्भाव हो गया :-

''सोऽहम् कामयत एकोऽम् बहुस्याम् प्रजायेय''

श्री कृष्ण ने विश्व श्रेष्ठ दर्शन-ग्रन्थ गीता में अर्जुन से कहा था-'धर्माविरूद्धों भूतेष कामोऽस्मि भरतर्षभ' विवाह की वेदी पर मंत्रोच्चार करते समय पुरुष और प्रकृति स्वरूपता नव परिणीता जोड़ी के लिए जो प्राथमिकता करता है उसमें वह कामोदाता, काम ही देने वाला है। काम के लिए ही पुरुष और प्रकृति दिये जा रहे हैं ताकि रचना करके, संतति-विस्तार करके विश्व की कार्य-प्रतिफलन-भूमिका में अपने को समर्पित कर सकें। भारतीयेतर संस्कृतियों के फलक पर काम की संप्रभुता सर्वोपरि रूप से प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी है। वात्स्यायन ने काम-सूत्र की रचना करके सामाजिक व्यवस्था को ऐन्द्रिक आवश्यकताओं की पूर्ति का क्रीडामय संज्ञान कराया ताकि काम के स्तर पर मन को तृप्त किया जा सके और मन को वासना-विकारों से मुक्त करके स्वस्थ रचना के लिए, प्रेरक आदर्शों के साथ जोड़ा जा सके।

भारतीय दर्शन में पुरुषार्थ चतुष्टय की महत्ता अनिवार्य रूप से ज्ञापित की गयी है। जहाँ,

www.bhojpurisahityangan.com

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जीवन के अनिवार्य तत्त्वों के रूप में स्वीकृति प्रदान करके ऋषियों ने काम और आनन्द के रूप में कल्पित किया। सिग्मण्ड, प्रायड मनोविश्लेषण शास्त्र की रचना की अपने साइको एनालिसिस चिंतन-ग्रंथ में उन्होंने यह प्रमुख रूप से माना कि समस्त कलाओं का जन्म काम-ग्रंथि (लिबिडो) के आधार पर होता है। काम विद्युत-तरंग की भाँति परम शक्तिमान अन्दर उद्वेग है जो अतृप्त रहने पर अनेक विकारों, विसंगतियों, अपराधों, असन्तुलनों, अशान्तियों को जन्म देता है। तृप्त होने पर काम व्यष्टि और समष्टि को ऐन्द्रिक संयम और नियंत्रण में रख कर जीवन की रचनात्मकता के साथ युक्त करके पूर्णता तक पहुँचा देता है। इसीलिए शिव, विष्णु, ब्रह्मा, श्रीराम, ऋषिगण तथा पीढ़ी के लिए विवाहित जीवन की वरेण्यता निर्दिष्ट की गयी है।

इंजीनियर राजेश्वर का कथा-साहित्य काम की जटिलताओं और अन्दर गुत्थियों को परिभाषित-व्याख्यायित करने के साथ ही दमित अतृप्त एवं काम-विकृति के दुष्परिणामों की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करता है 'मनो दुर्रनिग्रमचलम् अथवा चंचलम्' ही 'मन: कृष्ण प्रमाधि बलवदृढ़म' को सूत्र रूप में ग्रहण करके विभिन्न घटना प्रसंगों और पात्रों के क्रिया-व्यापारों की बेहिचक समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर देता है। इंजीनियर राजेश्वर शल्य-चिकित्सक की भाँति काम जन्य मनोरोगों की साध्य-असाध्य स्थितियों का खुला निरीक्षण करने के उपरान्त बिना कुछ छिपाये काम की विसंगतियों और विकृतियों को अभिव्यक्त करता चलता है, जिससे समाज का विकारग्रस्त इकाईयों का यथार्थ बोध हो सके और तदनुसार उचित समाधान ढूँढ़ा जा सके। चिकित्सा-विज्ञान के क्षेत्र में लज्जा और संकोच का कहीं कोई स्थान नहीं होता। सद्-साहित्यकार सामाजिक सुधार को दृष्टि में रखकर, समय की विकृतियों, समस्याओं और चुनौतियों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है और सर्वेक्षण के उपरान्त शोधे गये चुनौती-बिन्दुओं को समय के सम्मुख रख कर शमित करने का प्रयास करता है। इसी कसौटी पर 'गाँव से शहर जब आ गये' उपन्यास को कसकर देखना-परखना चाहिए और अपेक्षित समाधान हेतु चिन्तन करना चाहिए। गाँव और देहात में सादगी, मर्यादावादिता, पारंपरिकता, शालीनता और ऋजुता का प्राधान्य है। किन्तु आधुनिकता के विष में डूबे हुए शहर के दैनन्दिनी भोगी जीवन की कालग्रासी परम्पराओं से परिचित हो जाने के उपरान्त कुत्सित वृत्तियों, व्यभिचारी ऐन्द्रिक तृप्तियाँ और स्वैराचार का द्वार खुल जाने के बाद काम भोग की ज्वाला निर्लज्जता की सीमा तक भड़क उठती है। इस उपन्यास में बैंक के अधिकारी की आधुनिकता पत्नी जो भोग के छल-प्रपंचों और अभिचारों की सम्मोहन शक्तियों से पूर्ण परिचित हो जाने के साथ ही देहाती और गँवार विवाहिता को मुक्त, निर्लज्ज, अतिवादी प्रपंची इन्द्रीय सुख के अनेक द्वारें और वातायनों से परिचित करा कर, उसके भीतर काम-तृप्ति पिपासु अंकुरण करके पतन के चरम तक पहुँचा देती है। पहले ग्रामीण के देवर के साथ छिपे तौर पर ग्रामीण और बैंक अधिकारी की आधुनिक

www.bhojpurisahityangan.com

पत्नी का विचार और बाद में मेडिकल एजेन्ट तथा इसी प्रकार के अन्य समवयस्क पुरुषों के साथ निर्बाध कामाचार चारित्रिक पतन की अनेक स्थितियों का बोध कराता है। 'कामातुराणाम् न भयंन लज्जा/आहार निद्रा भयम् मैथुनंच / सामान्य मैतत् पशुभिः नरायाम्' आहार, निद्रा, भय और मैथुन-क्रिया, पशु तथा मनुष्यों में समान रूप से सम्पन्न होती है। संस्कारित होने के कारण मनुष्य उन क्रियायों को आवरण में सम्पन्न करता है और छुट्टा पशु बुद्धिहीन, संस्कारहीन तथा वर्जनाहीन होने के कारण, खुले तौर पर सभी स्थानों पर निर्लज्ज और असंयमित ढंग से आचरित करते हैं। काम पर मर्यादा का आवरण डालना सुसंकृत और सभ्य समाज के लिए अनिवार्य बनाया गया है। किन्तु पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आकर, भारतीय समाज में वर्जनाहीन कामाचार आधुनिकता का एक अंग बनता जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप एड्स, सिफलिस, गनौरिया जैसे असाध्य रोग धीरे-धीरे समाज को काल के मुख में झोंकते जा रहे हैं। जीवन के इसी मुक्त कामाचार को, एक असमाहित प्रश्न के रूप में इंजीनियर राजेश्वर ने एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया है और 'गाँव से शहर जब आ गये' उपन्यास में अनावृत्त और बेबाक ढंग से चित्रित करके समाज सुधारकों और सभ्य नागरिकों के सम्मुख समाधान का बिन्दु ढूँढ़ने के लिए प्रस्तुत कर दिया है।

इस उपन्यास में प्रवेश करने के लिए फ्रायड, जुग, एडलर, वात्सायन तथा अघोरतंत्र से सम्बद्ध भैरवी चक्र साधकों से शल्य-चिकित्सा के लिए उपयोग में आने वाले शास्त्रों की आवश्यकता पड़ेगी। इस उपन्यास में चित्रित असामान्य मनोविज्ञान के ज्वलंत प्रश्नों बजबजाती विद्रूपताओं, कामातिचारों, गोपनीय वासनापूर्तियों पर नाक-भौं सिकोड़ना सामाजिक पराजय का लक्षण ही सिद्ध होगा। समाधान तक पहुँचने के लिए त्यागमयी, ऋजु, आर्ष परम्परा की चरितार्थ ही इस उपन्यास में उठाये गये प्रश्नों और चित्रित काम विसंगतियों का एकमेव हल है।

भारत के गाँवों को शहरी विकृत और भोगी हवाओं से बचाना होगा। उपभोक्ता-संस्कृति के विष को छाँटने के लिए ऋषि-प्रणीत 'सादा जीवन उच्च विचार' जैसे आदर्शों को अपनाना होगा।

'गाँव से शहर जब आ गये' उपन्यास का कथानक आधुनिक जीवन सन्दर्भों को प्रवाह में समेटता है और आदि, मध्य, अन्त के बिन्दुओं को घटना के प्रसंगों के साथ व्यवस्थित क्रम के साथ जोड़ कर सफल परिणत तक पहुँचाता है। कथाकार ने जीवन के यथार्थ निर्लिप्त ढंग से उभरने दिया है। कथानक के आरम्भ, विकास-बिन्दु अपनी चरम सीमा पर पहुँच कर कथ्य अपनाया है। सह वस्तुवाद के आधार पर उपन्यासिका अपने लक्ष्य तक ऋजुता से मुक्त है। जिसके कारण प्रवाह निर्विघ्न ढंग से चरम सम्वाद, लघुता, नाटकीयता, सहजता और शब्द-विन्यास नितान्त सम्प्रेषित है। अनेक अवसरों पर उपन्यासकार ने सम्बन्धों में बोलचाल के शब्दों का प्रयोग भी

www.bhojpurisahityangan.com

सहज रीति से किया है। जिससे देहात का चलन और स्वभाव अकृत्रिम ढंग से व्यक्ति हो गया है। शीर्षक पढ़-सुन कर ही हम समूचे उपन्यास के कथ्य के सारांश का आभास पा जाते हैं। मनो-विश्लेषणवादी समीक्षा-दृष्टि से परखने पर ही हम उपन्यास के वास्तविक अभिप्राय के समझ कर अपेक्षित उपचार का चिन्तन कर सकते हैं। पशुत्व से मुक्ति पाने के लिए पशुता के स्वभाव को जानना, परखना आवश्यक है। विदेशी समाजशास्त्रियों ने `Man is socail animal' मनुष्य सामाजिक जानवर है। कहकर भोगी मनुष्य की कलई खोल दी है। यही काम इस उपन्यास में इंजीनियर राजेश्वर ने किया है। योगी रजनीश की पूरी साधना-पद्धति काम के पाश्विक प्रकटीकरण और उसके निरसन पर आधारित है। प्रश्न उठाना उपन्यासकार का काम है। समाधान ढूँढ़ना पाठकों के ऊपर छोड़ दिया गया है।

'काम मंगल से मंडित श्रेय सर्ग इच्छा का है परिणाम ।' ही इस के मूल्यांकन की कसौटी है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

८३

भगवत् प्रेमी पाठकों से नम्र निवेदन

-इंजीनियर राजेश्वर

जनपद गोरखपुर के ग्राम गोपालपुर में दिनांक १५-०६-२००३ से प्रारम्भ होकर दिनांक २३-०६-२००३ को समाप्त होने वाला 'श्रीराम महायज्ञ' की भव्यता व आश्चर्यजनक सफलता से प्रभावित होकर प्रेरणा श्रोत के रूप में धर-धर तक सन्देश पहुँचाने के लिए यह कथात्मक झलकियाँ लिखी गयी हैं। ताकि जन-जन में श्रीराम महाप्रभु की भक्ति का रस संचार हो और कृपा लाभ की प्राप्ति हो। पुस्तक में श्रीराम महायज्ञ की कथा के वर्णन के साथ ही साथ श्रीराम चरित मानस के सुन्दर काण्ड, श्रीराम चालीसा, श्री रामचन्द्र जी की आरती एवं महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग के साथ गाँव में मनायी जा रही होली का चित्रण तथा गाँव के एक बुजुर्ग स्व. मदन धोबी जी की जीवनी का वर्णन एक प्रेरक प्रसंग के रूप में किया गया है।

आशा है भगवान के भक्त इस पुस्तक से आशातीत लाभ प्राप्त करेंगें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

८४

एक आवाज आई इधर देखना

-डॉ० मधुर नज्मी

हमारी दरगाहें हमारे आस्तानें रूहानी शक्ति के केन्द्र हैं। बुजुर्गों की इबादत में सनातन धर्म से जुड़ी देवियाँ और देवताओं की आध्यात्मिक गति है, शर्त मुहब्बत से जुड़ना है। बगैर इश्क-महब्बत के कुछ भी नहीं होता है। मैं तो यहाँ तक मानता हूँ कि भरपूर मनोयोग और नियति से जुड़ चुकने के बाद, जागतिक दु:ख से निजात मिल जाती है। अपनी विचार-धारा को दूसरों पर 'थोपने' के नज़रिया से नहीं, शुभ-कामना भाव से। मैं यह बात अदब से लिख रहा हूँ। हमारी दरगाहों, उपासना स्थलों का अन्त: 'मिशन' नेकसीरत इन्सानों की तरह जन-कल्याण, विश्व-कल्याण करना है। मैं तो यह भी मानता हूँ कि अच्छी रूहानी शक्तियाँ सुपात्र इन्सानों के जेहन और दिल में काया-प्रवेश करके इबादत करती है और करवाती है और उनसे भलाई का काम करने के लिए प्रेरित-उत्कंठित करती है। यह जरूरी नहीं कि लोग मेरी इस बात से इत्तेफाक करें-अगर मैं अपनी जाती एहसास और खयालात को कागज पर रकम कर रहा हूँ तो मैं अपनी व्यक्तिगत पूँजी को 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' के हवाले से सामूहिकता की जमीन पर एक पौधे की मानिन्द रोपने का प्रयास कर रहा हूँ। कविता-शाइरी जिसे मैं अपनी जिन्दगी का आईना मानता हूँ, उनके तार, घनीभूत तरीके से 'सरकार शाह गोला दीवान' सरकार के आस्ताने से लगायत, देश-विदेश की दरगाहों और आस्तानों से जुड़े हैं। मेरी महब्बत के एहसास में, माँ विन्ध्यवासिनी, माँ लक्ष्मी, माँ सरस्वती, माँ जानकी, हनुमान जी, (खास तौर पर शक्तिपीठ नाँदी के हनुमान जी चित्रकूट धाम), श्री गणेश जी, भगवान शंकर, माँ पार्वत, योगिराज कृष्ण आदि सभी के सभी हैं। ये सारी शक्तियाँ हमारी दरगाहों और आस्तानों के दिलों में पैबस्त हैं। अपने लेखन में मैं माँ की कृपा का प्रवाह महसूस करता हूँ। हिन्दी, उर्दू, भोजपुरी के अपने लेखन में मैंने अब तक यह बराबर महसूस किया है-

क्या चश्मे-इनायत माँ की है-
की जिसे हिफाजत जाँ की है-
रौशन है जो दिल का आईना-
तासीर-दरे जाना की है।

www.bhojpurisahityangan.com

हाँ, मैं अपनी दीवानगी में, साहित्य की विधा गज़ल से मुखातिब हूँ। गज़ल की रूहानियत मेरे आस्था के केन्द्र दरगाह शरीफ निजामाबाद, आजमगढ़ के आस्ताने से रौशनी पाती है। गज़ल किन-किन रंगों में, कहाँ-कहाँ जलवा अफ़रोज है, कैसे तहरीर करूँ ? अपनी गज़लों, अपने शेरों, में मैंने गज़ल का सूत्र खोजा है। इसे 'खोजने', 'पिरोने' में मेरा जिस्म और जेहन सूइयों का हसीं पैरहन हो गया है, किन्तु अपनी संवेदना की कथरी अब तक अनसिली है। यह दीवानगी मेरी अपनी व्यक्तिगत जरूर है किन्तु सामूहिकता की जमीन पर खड़ी है-अदब की शादाबियत (हरापन) को बनाये रखने की नियति से दस्तबस्ता गुज़ारिश कर रही है। मेरी दीवानगी का दरवाज़ा 'सरकार' शाह गोला दीवान सरकार का आस्ताना है :-

'पर्दे में कोई जल्वाफ़िशाँ और है-
इस कहानी की इक दास्ताँ और है।
लहलहाये जहाँ गुलशने-शाइरी-
वो जमीं और है आसमाँ और है ।
यूँ तो है और भी आस्ताने और है
मैंने जब उनसे पूछा तो शर्मा गए-
आप पर क्या कोई मेहवाँ और है।'

दरगाह-शरीफ 'सरकार शाह अब्दुल्ला शाह', 'शाह गोला दीवान' की पुर-रौशन दरगाह से जुड़कर मैने 'सुकून' की साँस ली है। मैं अपनी सीमाओं में अपने पहरे पर जाग रहा हूँ। यह 'जागना' भी तो 'सरकार' की खिदमत में जानना है, माँ की सेवा में जागना है। मेरे जागने की आहट मेरी शाइरी में मिलेगी। जिसे मैं अदब से सँजो रहा हूँ। वर्तमान से लगायत आगामी नस्लों के लिए :-

''क्या बताऊँ कि पहुँची कहाँ शाइरी?
छू गयी सरहदें-आसमाँ शाइरी।
गौर से मुझको पढ़कर समझ लीजिए-
मेरे एहसास की है जबाँ शाइरी।''

अपनी यह 'साहित्यमुखता' 'गज़लमुखता' दरगाह शरीफ़ 'सरकार' शाह अब्दुल्ला शाह 'शाह गोला दीवान' निज़ामाबाद, आजमगढ़ से जुड़कर रूहानी रूप में दो बाला हुई है। अपनी रोजगारी जिन्दगी और अदबी जिन्दगी, इसी आस्ताने से प्राप्त रौशनी, का करम है, ऐसा एहसास-ऐतमाद मुझे हर लम्हा है। मेरे एहसास में आस्ताने का करम ही है कि मेरे जैसा 'अदनी आदमी' कुछ कर पा सकने का साहस जुटा पा रहा है। अपनी ही गज़ल का शेर मेरी अपनी कथन 'भंगिमा' को इन शब्दों में कलमायित करता है-

www.bhojpurisahityangan.com

''खूब लहलहाती है खेतियाँ मुरादों की-
खुल के जब. बरसते हैं मेघ महबानी के ।''

दुनियावी हूँ, दुनियावी दुश्वारियों के मद्दे-नज़र शंकायित भी हूँ कि अपनी यह 'दीवानगी' कहीं लोगों की नज़र में मुझे गिरा न दे, फिर एक आहट महसूस होती है, बेटा ! तूँ दुनिया का होते हुए भी दुनिया का कितना है? किसी से छुपा नहीं है। इस 'आहट' से एक स्थायी सुकून मिलता है। यही सुकून आपके मधुर नज्मी की पूँजी है।

मेरी अपनी दोनों ही 'जिन्दगियाँ' रूहानी खुशबू से शादाब है, जिन्दगी के हर मोड़ पर एक रूहानी आवाज प्रेरित करती है कुछ नया करने के लिए, नायाब रचने के लिए। मेरे इस 'रचाव' में 'भटकाव' जियादा है, 'कसाव' अपनी आर्थिक सीमा के चलते कितना है क्या कहूँ ? कहना भी होगा तो किसी दुनियावी आदमी से क्यों कहूँ ? 'जिस पर ऐतमाद है यक़ीन है, उससे भी नहीं कहूँ, हर लम्हा के इस 'एहसास' से मालामाल हूँ' :-

उनकी निस्बत का पौधा लगाया था जो-
आ गये हैं अब उस पर समर देखना।
पाँ मेरे 'मधुर' जब बहकने लगे-
एक आवाज आई इधर देखना।

या

'जिन्दगी की धूप में होता हूँ मैं जब भी निढ़ाल-
बख़्शता है हौसला साया मेरे सरकार का ।।'

वरिष्ठ कथाकार इंजीनियर राजेश्वर अपने तरीके के नायाब कथाकार हैं। इनकी अनेकश: कथा-कृतियाँ साहित्य के सरोकारियों की वैचारिक पूँजी है। 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' कृति 'सरकार' पर लिखी मेरी एक मन्कबत का एक मिसरा है। इक कृति का पूरा कथानक एक पराशक्ति की आमद पर आधारित है। दरअस्ल, सरकार से जुड़ा एक परिवार श्री रणधीर सिंह निवासी मझगाँवा का है जो निजामाबाद से पूर्व दिसा में है। श्री रणधीर सिंह की पुत्री श्रीमती रेखा सिंह उर्फ टुन्नी पर पराशक्ति की आमद हुई और 'ट्रान्स' की स्थिति में समूची कथा साकारित हुई। बेटी रेखा सिंह उर्फ टुन्नी ने बताया कि जैसे सरकार शाह गोला 'दीवान' सरकार के आस्ताना पर कोई बैठा हो और मुझे बार-बार लिखने के लिए कह रहा है। बेटी रेखा की शिक्षा बमुश्किल कक्षा ५वीं की है और आप जिन कहानियों-कथाओं को पढ़ रहे हैं अपने अन्दाज में पूर्णता लिए हुए है। सरकार से जुड़ी जितनी भी बातें कहीं-लिखी गयी हैं। इंजीनियर राजेश्वर और इन पंक्तियों का लेखक तथा रणधीर सिंह का पूरा परिवार इसका, इसकी सच्चाई का गवाह है। पहले रणधीर सिंह का

www.bhojpurisahityangan.com

परिवार जिलाधिकारी आजमगढ़ के आवास के पास हरबंशपुर में रहता था। अब आजमगढ़ ही में जिलाधिकारी आवास के सामने दक्षिण तरफ परानपुरा मुहल्ले में रहता है। बेटी रेखा सिंह उर्फ टुन्नी शादी शुदा हैं और उसके दो बच्चे हैं।

सरकार शाह अब्दुल्ला शाह 'शाह गोला दीवान' से जो ऐतिहासिकता शर्की काल से जोड़ी जाती है वह सत्यता से परे नजर आती है। जो कहानी या कथानक 'ट्रान्स' की स्थिति में समाहित है। इसकी सत्यता से आखिर इन्कार कैसे किया जाय ? इन पंक्तियों का लेखक इंजीनियर राजेश्वर, रणधीर सिंह, उनकी पत्नी, बच्चे, इस हकीकत के चश्मदीद गवाह हैं। दर हकीक़त हमारे बुजुर्ग अपने पीछे कुछ भी नहीं छोड़ गये हैं। अगर है, तो उनके नेक कार्य जो परदा हो चुकने के बाद भी अपनी रौशनी से समूचे समाज को रौशन करते हैं। 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' इस वैचारिकता को आगे ले जाने वाली रूहानी कड़ी साबित होगी, इस यक़ीन से पुर यक़ीन हूँ।

''यूँ तो हैं और भी आस्ताने मगर-
मेरे 'सरकार' का आस्ताँ और है।''

❖

www.bhojpurisahityangan.com

८५

सूफ़ी-दर्शन और विश्व-शान्ति

-सुरेन्द्र कुमार सिंह

एक तरफ से मुझे आदेश मिला कि मैं 'सूफी-दर्शन एवं विश्व-शान्ति' विषय पर एक लेख लिखूँ। आदेश देने वाले हैं। मेसे शुभचिन्तक-प्रेरक, विश्व-यात्री डॉ० मधुर नज़मी जी। उनके आदेश के अनुपालन-क्रम, में यह लेख लिखा गया है। जहाँ तक मैंने डॉ० मधुर नज़मी को समझा है वो एक आस्थावादी व्यक्तित्व और पराशक्ति के स्वामी हैं। यह एक लेखकी आयोजन है जिसे दर्शन की भाषा में उत्सव कहा जा सकता है। नि:संदेह डॉ० नज़मी की आस्था का केन्द्र-विन्दु है दरगाह शरीफ सरकार 'शाह' अब्दुल्ला शाह-'शाह गोला दीवान'-निजामाबाद आज़मगढ़ जिसकी रौशनी में यह 'पुस्तकीय उत्सव' ''जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी'' एक रूहानी दृष्टि है, इन्जीनियर राजेश्वर जी की। आस्था का वो बिन्दु सूफी-दर्शन के द्रष्टा की याद है और सूफी दर्शन विश्व-शान्ति में एक भूमिका अदा कर सकता है-जरूर यह लेखकी उत्सव उसी उम्मीद पर आधारित है।

आस्था, विश्वास, दर्शन में इस उम्मीद की प्रासंगिकता एक संवेदनशील प्रसंग है लेकिन फिर भी इनके बीच दो दृष्टि है-दृष्टि के संदर्भ अतीत से नहीं होता। जो चीज कल देखी गयी वो आज भी देखी जा सकती है लेकिन बहुत कुछ बदल चुका होता है। देखी जाने वाली वस्तु से पूरा परिवेश बदल चुका होता है। पर देखने वाले को लगता है, हाँ यह चीज बिल्कुल ही ऐसी थी। अनुभव की दृष्टि का परिवेश इतना संवेदनशील और परिवर्तनशील है। फिर भी दृष्टि का इतिहास देखी गयी वस्तु में विवरणात्मक अवशेष सुरक्षित रह जाता है-विचार-धारा के रूप में, दर्शन के रूप में।

आस्था कहती है दृष्टियाँ अपने आप को प्लांट करती हैं किसी जीवन में-यह आस्था भी दर्शन की संरक्षिका की तरह होती है। मनुष्य दृष्टि हासिल भी करता है अपने लिये। जीवन का दृष्टि से सरल रिश्ता है। लेकिन दृष्टि की याद (दर्शन) से जीवन का रिश्ता-या दृष्टि की याद की तलाश में भूमिका-एक अवसर तो है जब हम दर्शन में जीवन में शान्ति लायी है। यह एक स्थापित तत्त्व होता है-अब उसकी संभावनाओं को टटोलने की कोशिश होती है। इस कोशिश में आस्था के साथ-साथ विश्वास में रहता है। साथ-साथ उम्मीद की आहट भी रहती है। ऐसे में अगर जरूरत भी दस्तक देने लगे तो यह होता है एक प्रयोजक-जिसके अन्दर होती है असीम ऊर्जा। पर यह स्थिति कभी वापस नहीं होती-आशय यह है कि यह इतिहास की बात नहीं है। यह है

www.bhojpurisahityangan.com

वर्तमान और हम ऐसे ही किसी इतिहास में जाने की कोशिश करते हैं। मनुष्य का पूर्णता की ओर प्रयाण का एक-एक पद-चिन्ह अपने आप में एक दर्शन है-और दर्शन इसी यात्रा का विवरण होता है। कभी-कभी यह सूचीबद्ध हो जाता है। कभी-कभी सूचीबद्ध नहीं हो पाता है। तो दर्शन द्रष्टा की दृष्टि का वर्णन है-दृष्टि की यात्रा नहीं-और जो सूची में हमें उपलब्ध है-जिसमें किसी ने जीवन की शान्ति महसूस की है। किसी को विश्व-शान्ति दिखी है। आप कह सकते हैं कि हम एक दर्शन की सूची के अनुरूप जीवन में शान्ति के सूत्र तलाश रहे हैं। विश्व-शान्ति का सूत्र तलाश रहे हैं। सकारात्मक उत्तर मिल सकता है और इस सुन्दर सम्भावना की एक ही शर्त है, क्या आप इसे अपने जीवन की जरूरत मानते हैं ?

यहीं पर जो विचारणीय विषय है 'सूफी-दर्शन और विश्व-शान्ति'। अब अगर सूफी-दर्शन की प्रतिस्थापनाओं के अन्दर जाया जाय और 'इक्जैक्टली' उसके अनुसार अनुशासित हुआ जाय, फिर जीवन में अशान्ति के कारण को पढ़ लिया जाय। विश्व में अशान्ति के कारणों को समझ लिया जाय तो रिश्ते तय हो सकते हैं ? सूफी-दर्शन और विश्व-शान्ति की बीच एक गति मिल सकती है और जीवन को कि भई एक दिशा में चलिये क्यों ये वे कारक हैं जो जीवन में अशान्ति दे रहे हैं और यह दिशा उनसे भिन्न जीवन को शान्ति की दिशा में ले जा सकती है। इसे आप एक सक्रिय दृष्टि कह सकते हैं जिसके रास्ते में तमाम अशान्ति के कारक नेपथ्य में चले जाते हैं। जीवन की यात्रा निष्कंटक हो जाती है। एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात मैं स्पष्ट कर दूँ कि आज जीवन में अशान्ति के जितने भी कारक हैं-वे ही कारक विश्व में अशान्ति के हैं। शायद इतिहास में आपको यह दुर्लभ नजारा देखने को न मिले। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि मनुष्य अपने जीवन के इतिहास में कभी इतना अशान्त नहीं था। दुनिया में शायद कभी इतनी अशान्ति नहीं थी। यह एक अलग विषय है यहाँ पर हम 'सूफी-दर्शन एवं विश्व-शान्ति' के अर्न्तसम्बन्धों की उत्सवी परिचर्चा में कुछ लिख रहे हैं।

क्या है सूफी-दर्शन ? अनुभव की दृष्टि के दृश्यों का वर्णन है-सूफी-दर्शन। एक दरवेशी दहलीज है। इसलिए सूफी, व्यक्तियों को आप सूफी ग्रुप नहीं कह सकते-अधिक से अधिक उन्हें मित्र-मण्डली कहा जा सकता है। वह भी भाषा में समझने के लिए अन्यथा 'सूफी परिवेश में इतना घुला हुआ होता है कि आप उसे अलग से नहीं देख सकते। सूफी-दर्शन है, स्वयं को भीतर से खाली करना। यह है अपने हृदय के दर्पण को चमकाना। इसका कार्य है अपने भीतर स्थान प्राप्त करना। इस दृष्टि को पा लेने वाले ने, इस दृष्टि को दूसरे तक प्लांट करने के लिए कुछ तकनीकें विकसित की हैं और अगर आप को उस दृष्टि में जाना है अथवा वह दर्शन करना है जो सूफी का है तो आप को उन विधियों को, उन तकनीकों को आत्मसात करना होगा।' चूँकि उत्सवी विषय है सूफी-दर्शन और विश्व-शान्ति-तो दोनों के बीच सम्बन्ध निरूपित करने के लिए

www.bhojpurisahityangan.com

सूफी-दर्शन करना होगा-और यह जरूरी नहीं है कि आप उन तकनीकों के बीच से गुजरें ही-क्योंकि जो स्थापना का विस्तार है वह यही है कि पहले सूफी दर्शन हुआ फिर उस दर्शन को पाने की तकनीकें विकसित की गयीं। फिर यहाँ उन तकनीकों की चर्चा आवश्यक है-और जो शब्द उन तकनीकों को आधारित करते हैं-वे हैं मुख्य रूप से जिवरिश, दरवेश, नृत्य, जिंक। ये शब्द हैं। जिन सबका अर्थ है-पुर्नस्मरण। मतलब दर्शन करने की तकनीक और दर्शन तो हुआ है। जो दर्शन हुआ है उसे फिर देखने की तकनीक। यह ध्यान देने की एक शक्तिशाली तकनीक है जिससे हम अपनी अर्न्तदृष्टि के एक बिन्दु पर बार-बार ठहरते हैं क्योंकि वहाँ अद्‌भुत शान्ति का अनुभव होता है। दर्शन की दृष्टि से ये शब्द अर्थहीन हैं बस ध्वनि मात्र है, आवाज़ मात्र है। फिर भी हम एक अपनी ही आन्तरिक वास्तविकता की ओर जाते हैं। हमारी गन्दगी दूर होनी शुरु हो जाती है। एक कदम आगे बढ़ने पर ध्वनियों के अर्थ स्पष्ट होने लगते हैं।

सूफी-मार्ग हृदय का मार्ग है-कभी आप एक मिनट के लिए सोचिये कि यह जो संसार आपके सामने है उसमें हृदय का कितना 'रोल' है। इस सरल-सी कल्पना को भी करना आसान नहीं होता क्योंकि मनुष्य-हवा, पानी, पृथ्वी, रौशनी वनस्पतियों से अलग यह संसार खचाखच भरा पड़ा हुआ है, विचार है, धर्म है, साहित्य है, घर-मकान, जहाज, रेलगाड़ी, कपड़े मेरा आशय वह सब कुछ जो मनुष्य की रचना है-यह है मनुष्य के बुद्धि का संसार-मनुष्य अपनी रचना से अलग होकर अपने रचनाकार की रचना में रमना। इसलिए 'सूफी-दर्शन' में मनुष्यों को सारे अनुभवों को समाहित किया गया है (लेकिन उस दर्शन के बाद का अनुभव उसमें शामिल नहीं है) उदाहरण के लिए ९९ जिब है कहते हैं ये ९९ जिब परमात्मा के नाम हैं। पर ये ध्वनियाँ हैं। कुछ शारीरिक गतियों के साथ इन ध्वनियों का उच्चारण हमें मानवीय अनुभवों की ओर ले जाता है। हमें इन ध्वनियों में लुप्त हो जाना होता है-बहुत से आयाम खोजने होते हैं और उनके पार जाना होता है। एक और तकनीक है सूफी जन। आधारभूत रूप से दो मार्ग हैं-एक जागरण का मार्ग है-एक प्रेम का मार्ग है-दोनों का मिलन भी सम्भव है। दोनों एक सरल रेखा की तरह हैं-दरवेश नृत झाझेन मे बैठकर एवं स्वयं में चलकर चलते रहना। यह सूफी कविताओं पर ध्यान की विधि है। इनसे सुन्दर अर्न्तदृष्टि उजागर होने लगती है। दरवेश नृत्य झाझेन एवं हाइकू एक दूसरे को गहनता देते हैं। मौन गहराते हैं दोनों भिन्न प्रकार से कार्य करते हैं। प्रेम मन को समाप्त करता है और सूक्ष्म हृदय को खोलता है और आप एक परिवर्तन को उपलब्ध होते हैं, दरवेश नृत्य होता है-और इसका 'मिशन' होता है। मनुष्य की सम्पूर्ण मिलन की चाह-और यह कोई अन्य बात नहीं है-यह है बस लौट आना अपने में-लौटो स्वयं में- खोजे स्वयं में-क्योंकि वही सब कुछ है। किसी ने अपने अन्दर वो सब कुछ देखा-जिसकी उसे जरूरत थी। फिर उसी अर्न्तदृष्टि को दूसरे आदमी को इस आशय से दी वह उसी अर्न्तदृष्टि तक जाय-तकनीकें बनायीं-और उसे

www.bhojpurisahityangan.com

सूफी-दर्शन का नाम दिया। गहन शान्ति की एक दशा है सूफी-दर्शन। यहाँ शान्ति से भिन्न कुछ ढूँढ़ पाना मुनासिब नहीं है, मुमकिन भी नहीं है।

तो मैं नहीं समझता कि इन तकनीकों से वाकिफ होकर उसके अन्दर से गुजरते हुए सूफी बनते हुए सूफी-कार्य करते हुए सूफी दर्शन बन जाता शान्तिमय होकर-आज विश्व-शान्ति कायम की जा सकती है। जीवन में शान्ति तो आ सकती है-लेकिन अशान्ति के कारण आज सब भिन्न है। आज अशान्ति का परिवेश भिन्न है-यह भिन्नता भ्रम जनित भी है और स्वार्थ जनित भी है-सूफी-दृष्टि विश्व को भ्रम से बाहर निकाल सकती है-मनुष्य को स्वार्थ से अलग कर सकती है लेकिन आधुनिक विश्व का संकट-अशान्ति से अधिक आस्तित्व जनित है। खतरे उत्पन्न हो गये हैं पृथ्वी पर मनुष्य प्रजाति के समक्ष। ये खतरे भी मनुष्य ने स्वयं पैदा किये हैं- अगर मनुष्य की असमर्थता का जिक्र करें तो विश्व-व्यवस्था उसकी समस्याओं का समाधान करने में अपने आपको असफल पा रही है-इस विवशता में भी मनुष्य स्वयं है-और स्वयं की प्रतिस्पर्धा में मनुष्य ने इतनी ऊर्जा हासिल कर ली है-कि वह पूरी पृथ्वी को अपनी आणविक शक्ति के एक बार फिर आग के गोले में बदल सकता है। वह पृथ्वी को जीवन और वनस्पतियों से लुप्त कर सकता है-उसने अपने शरीर सुख की इतनी चिन्ता की-उसने प्रकृति को ही चुनौती दे डाली-गर्मी में वह ठण्डा रहना चाहता है, सर्दी में वह गर्म रहना चाहता है- इस सुख की कामना में उसकी बनायी गयी तकनीक से उत्सर्जित गैसेज ने पृथ्वी का परिवेश ही बदल डाला है। वैज्ञानिक कह रहे हैं कि हमारी पृथ्वी को जो स्वाभाविक सुरक्षा हासिल थी 'ओजोन परत' के रूप में उसके अन्दर छेद हो गया है-और यह छेद बढ़ता ही जा रहा है-और एक स्थिति ऐसी भी आ सकती है कि आदमी एक स्वाभाविक सुरक्षा विहीन पृथ्वी का बाशिन्दा बन जाय जहाँ कहीं भी वह रहस्यमयी आग में झुलस जाय। जहाँ वह अपनी ही चमड़ियों से हाथ धो बैठे-इतने प्रभाव है उसके शरीर पर-उन किरणों को-जिनको 'ओजोन परत' पृथ्वी पर आने ही नहीं देती थी-हमने इस स्थिति को भी असंतुलित कर दिया है।

तो आज विश्व में अशान्ति की मुख्य वजहें यही तीन हैं-कुव्यवस्था, आणविक हथियार और पृथ्वी की स्वाभाविक सुरक्षा ओजोन परत में छेद। कितनी भयावह परिस्थितियाँ हैं कि पृथ्वी पर मनुष्य प्रजाति ही हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो सकती है-तो इस भयावह परिस्थिति में-भी सूफी दर्शन जो अपना संदेश देता है वो तो यही है न कि मनुष्य अपने आप वापस आओ-क्योंकि प्रकृति अपने स्वभाव में असन्तुलन को दूर कर लेते हैं और दूर कर रही है इन्सान लौट रहा है अपने अन्दर-ऐसे में अगर अर्न्तदृष्टि उस क्रियाशील बिन्दु तक पहुँच जाय-जहाँ से मनुष्य को उसके अन्दर लौटने की ऊर्जा मिल रही है-जहाँ संतुलन के लिए प्रकृति स्वयं हस्तक्षेप कर रही है-तो यह होगा एक और जिक्र-वो बिन्दु होगा परमात्मा का एक और नाम-और नाम क्या

www.bhojpurisahityangan.com

एक ध्वनि क्योंकि आज को मनुष्य के और अनुभवों को शामिल करना पड़ेगा जो मानवता के निर्मित है। सम्भव है इस दृष्टि का दर्शन करने के लिए-कुछ और तकनीकी परिवर्तनों की दरकार हो। सम्भव है दरवेश-नृत्य कुछ और मोहक रूप में सामने आये। सम्भव है नयी ध्वनियों को अर्थ मिले-अभी तो आप दहलीज पर हैं दरवेशिता से-थोड़ी दूर-यहाँ तक जहाँ प्रकृति अपने में आज असंतुलन को सक्रिय रूप से ठीक-ठीक कर रही है। इसी स्थितजन्य बिन्दु को कुछ लोग अवतार मानते हैं कुछ लोग कहते हैं-ईश्वर संतुलन के लिए सक्रिय हस्तक्षेप कर रहा है कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर के अवतरित होने का सही समय आ गया है-कुछ लोग कहते हैं इस घोर कलियुग में नाम ही शान्ति का आधार है-पर ये सारी की सारी अवधारणायें उसी बिन्दु की तस्वीर है जहाँ से मनुष्य को घर वापसी का संदेश मिल रहा है। घर वापसी की शक्ति मिल रही है-यही जागरण का मार्ग-यही है मनुष्यता और यही है प्रेम का मार्ग-यहीं पर आप उस प्रकाश के आलोक में अपने संसार को देख सकते हैं-एक ही प्रकाश सबमें विद्यमान है-और विभाजन आदमी-आदमी के बीच प्रकाश के सामने अज्ञानता है-कुछ लोग इस प्रकृति के सामने चुनौती मानते हैं।

जाहिर है सूफी-दर्शन जीवन शान्ति का दर्शन है और जीवन की शान्ति विश्व-शान्ति की आधार-शिला है-परन्तु जैसा कि मैने पहले ही कहा है दृष्टियों का संसार बहुत ही संवेदनशील होता है-बहुत ही परिवर्तनशील होता है-फिर भी सूफी-दर्शन इस संवेदनशीलता और परिवर्तनशीलता के बीच भी शान्ति के प्रति एक पारदर्शी दृष्टि है जो अशान्ति की समस्त अवधारणाओं को 'पेनट्रेट' करते हुए शान्ति के प्रति आबद्ध है। हाँ, आज के परिवेश में उस दर्शन में दुबारा जाने के लिए अपने नये अनुभवों के साथ एक नयी सक्रिय दृष्टि की आवश्यकता सम्भव है-और इस सक्रियता-भरी दृष्टि में मनुष्य की 'लोकेशन' थोड़ी भिन्न हो सकती है-सक्रिय दृष्टि का आशय ही गति से है, ऐसी दृष्टि जिसमें कोई बाधा न आये-और अगर आये तो दृष्टि ही उसे अपने रास्ते से हटा दे या बाधाओं के पार चली जाये-ताकि बाधाओं का एहसास ही न हो सके-एक यात्रा पूरी हो-एक अर्न्तयात्रा पूरी हो जाय और जब लौटकर उद्गम-बिन्दु तक आया जाय-तब एक विस्मय-भरा हृदय हो कि अरे, मैने तो लगभग असम्भव से दुर्गम, मार्ग को तय कर लिया था-और तब फिर उस रास्ते को अन्य लोगों के लिए उपयोग में लाने के लिए कुछ तकनीक एक बार फिर से विकसित करनी पड़ सकती है। तो सूफी-दर्शन विश्व-शान्ति के निमित्त है-और विश्व-शान्ति सूफी-दृष्टि के अन्दर ही है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

८६

'सूफ़ी-दर्शन के हवाले से कुछ और'

-मधुकर अष्ठाना

सूफी-दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विश्व-शान्ति की परिचर्चा वर्तमान में आवश्यकता है जो दो भागों में विभक्त विश्व के एकीकरण में बांछित भूमिका निभा सकता है। वर्तमान समाज इस्लाम तथा इसाईयत दो धड़ों में बँटा हुआ है और इस्लाम की गलत व्याख्या के परिणाम स्वरूप आतंकवाद का जन्म हुआ है, जिससे हर मानव भयभीत एवं पीड़ित है। यह ध्रुवीकरण मानवता के विपरीत नरसंहार कर अपनी क्रूरतम प्रवृत्ति का परिचय देता और आस्था के उचित मार्ग से भटक गया है। विश्व के समक्ष इस्लाम की जो छवि इन क्रूर आतंकवादियों द्वारा प्रस्तुत की जा रही है वह वरेण्य नहीं रह गयी है। यही नहीं कि केवल हिन्दू या इसाई ही इस आतंकी कार्यकलापों के शिकार होते हों, इस संहार में तो हर धर्म के मानने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। भयंकर हथियार केवल विनाश जानता है, वह धर्म विशेष को नहीं पहचानता है और ऐसी स्थिति में केवल उस हथियार का प्रयोग करने वाले ही दोषी होते हैं। आतंकवाद एक विशेष वर्ग को न उचित विकास करने देता है और न ही उस दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाता है।

वर्तमान में आवश्यकता है इस्लाम के उज्ज्वल पक्ष को विश्व के समक्ष रखने का, उसका परिचय देने का और उसे कार्यरूप में परिणत कर समर्थन जुटाने का। इस संदर्भ में सूफी-दर्शन एक सशक्त माध्यम हो सकता है। सूफी-दर्शन भारत में ही उत्पन्न हुआ, पला तथा बढ़ा है, जिसमें सहिष्णुता, प्रेम, त्याग, सद्भावना तथा विश्व-स्तर पर एकीकरण की निष्ठाासन्निहित है। इस विशिष्ट दर्शन की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण मानव समाज में देखी जा सकती है। सूफी संतों के आस्ताने, दरगाहों पर हिन्दू, मुसलमान, इसाई तथा सिख सभी बिना भेदभाव के सहर्ष जाते हैं। इसमें संगीत, नृत्य तथा कलात्मक विधाओं के प्रति भी उचित एवं समसामयिक दृष्टिकोण की झलक मिलती है। इसमें सम्पूर्ण मानव-समाज के कल्याण एवं शान्ति की भावना निहित है। सूफी संतों ने, जो भी उनकी शरण में गया उसका हित करने में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया है। हिन्दी तथा उर्दू साहित्य में भी इसका प्रचुर वर्णन उपलब्ध है।

विश्व-शान्ति के हितार्थ सूफी-दर्शन सर्वथा उपयुक्त इसलिए भी है कि इसमें आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। इसकी साधना-पद्धति भी वर्तमान समय को मानवीय मूल्यों से जोड़ती है

www.bhojpurisahityangan.com

तथा ईश्वर के निकट ले जाती है। सूफी-दर्शन कहीं से भी किसी भेदभाव या कट्टरता का समर्थक नहीं है। पूर्वकाल में वो इस पर व्यापक परिचर्चा होती रही है तथा अनेक समर्थ रचनाकारों के सूफी-दर्शन का विशद् वर्णन किया है तथा इसके आधार पर अनेक महाकाव्य भी लिखे जा चुके हैं, किन्तु वर्तमान में उसका अभाव है। सूफी-दर्शन के अनेक सिद्ध साधकों के आस्तानें भारत में स्थित हैं, जहाँ पर पूरे विश्व से सभी धर्मों के मानने वाले आते हैं और श्रद्धा से अर्चना-वन्दना करते हैं। 'सरकार शाह गोला दीवान' 'सरकार' निजामाबाद, निजामुद्दीन औलिया की दरगाह-दिल्ली, अजमेर शरीफ़ तथा साईं बाबा-शिरडी आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जहाँ अपने धर्म का पालन करते हुए भी लोग इन महान् संतों में श्रद्धा रखते हैं। इन विशेष महत्तम तत्त्वों की उपस्थिति में सूफी-दर्शन को मानवता का पोषक, मानव-मूल्यों का रक्षक तथा समरसता का उद्घोषक बनाया है जो वैश्विक शांति की अवधारणा को पूर्ण करने में सक्षम है।

'सरकार शाह गोला दीवान' 'सरकार' के संदर्भ में आजमगढ़ जनपद के निजामाबाद क्षेत्र की अन्य जन कल्याणी आध्यात्मिक शक्ति की शोधपूर्ण प्रस्तुति भी इस कृति में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है जो विद्वानों में ज्ञानवर्धन कर, पुरातात्त्विक खनन का आमंत्रण देती है। चूंकि मैं ग्राम मझगाँवा का मूल निवासी हूँ और बचपन से इस क्षेत्र की कौतुहलीय स्थितियों के प्रति जिज्ञासु रहा हूँ, अत: वास्तविकता से परिचित होकर एक सुखद अनुभव से गुजर रहा हूँ। ग्राम गाढ़ा-मझगाँवाँ के सम्बन्ध में रचनाकार की खोज उस क्षेत्र की प्राचीनता एवं सांस्कृतिक सम्पदा के विषय में अद्भुत रूप से प्राप्त, जानकारी देती है। अनेक अर्थों में यह कृति आश्चर्यजनक तथ्यों का पता देती है जो किम्बदन्तियों में भी उपलब्ध नहीं है। यह एक सत्य है कि लेखक के प्रयास से धार्मिक सद्भाव में वृद्धि हुई है और इस कृति के उपरान्त सूफी सन्तों की समाधियों तथा उनकी आध्यात्मिक प्रेरणा से जन-जन में भेदभाव रहित समरसतापूर्ण परस्पर प्रेम एवं शांति अभिवृद्धि निश्चित है। लेखक इं० राजेश्वर ने ऐसे समसामयिक विषय डॉ० मधुर नज्मी के सहयोग से जो ज्ञान अर्जित किया और उसे प्रत्येक मानव तक पहुँचाने का प्रयास किया है, उसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। मेरा विश्वास है कि यह कृति अपने उद्देश्य में पूर्णरूपेण सफल होगी। मैं लेखक एवं 'काव्यमुखी साहित्य-अकादमी', गोहना मुहम्मदाबाद, मऊ जिसने इस पुस्तक के प्रकाशन का उत्तदायित्व स्वेच्छा से ओढ़ लिया है के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और लेखक को मुनासिब, वाजिब लेखन के लिए साधुवाद देता हूँ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

राजेश्वर की कहानियाँ औपन्यासिक ज़मीन पर उगी हैं

-डॉ० मधुर नज्मी

कथाकार इंजीनियर राजेश्वर की रचना-प्रक्रिया पर लिखते हुए, सोचते हुए सारस्वत पत्रिका हिन्दी 'आजकल' दिसम्बर २००६ में प्रकाशित, वरिष्ठ गीतकार, गज़लकार, उपन्यासकार, कहानीकार, संस्मरणकार, ऊर्जस्वल समीक्षक, डॉ० रामदरश मिश्र के संस्मरण का वह अंश मेरे जेहन् गुजर रहा है जिसमें डॉ० मिश्र जी ने बड़ी शालीनता से आज की कहानी से उपजने वाली पाठकीय वितृष्णा की स्थिति का मर्मी उल्लेख इन शब्दों में किया है- ".....और आज जो कहानियाँ लिखी जा रही हैं, उनमें से अधिकांश ऐसी होती हैं जो पकड़ती नहीं। अपनी आवश्यक स्फीति से, मकड़-जाल बुनने वाली शैली से और प्रभावहीन कथ्य से उबा देती है और मैं उनके पार नहीं जा पाता, फिर भी कितनी-कितनी कहानियों से गुज़रने के बाद भी, वे स्मृति में अंकित नहीं हो पाती, बार-बार हन्ट नहीं करतीं। हो सकता है इसके लिए मेरी रुचि ही दोषी हो जो बदलते हुए समय में होने वाले नये प्रयोगों के साथ तालमेल न बैठा पाती हो।"

दर-हक़ीक़त आज साहित्य की हर विधा के साथ सही और वाजिब स्थिति यही है जिसे आदरणीय मिश्र जी ने सादगी और पुरकारी के साथ, शालीनता और शाइराना तरीके से अपनी बात बगैर किसी लाग-लपेट के कह दी है। डॉ० रामदरश मिश्र बहु-पठित साहित्यकार हैं, उन्होंने कविता में, कहानी में, उपन्यास में, गज़ल-गीत में, नये से नये प्रयोग किये हैं, जिसके चलते साहित्य के आलोक-शिखर हैं। अत: ऊपर के अभिमत में उनका यह कहना ".....हो सकता है, इसके लिए मेरी रुचि ही दोषी हो जो बदलते हुए समय में होने वाले, नये प्रयोगों के साथ तालमेल न बैठा पाती हो" सिर्फ और सिर्फ उनकी अदबी विनम्रता और सदाशयता ही है जो वह ऐसा कहते हैं।

इंजीनियर राजेश्वर अपनी कथा-कृतियों 'एक कहानी की आत्मकथा', 'एक कहानी बीच

www.bhojpurisahityangan.com

में हैं', 'जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ?', 'सुख जागे दु:ख भागे', 'गाँव से जब शहर आ गये', 'श्रीराम महायज्ञ, गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ', 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल', 'कल्यान कऽ जुगति' (भोजपुरी कथाकृति), 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' दरगाह शर्राफ़ सरकार शाह-अब्दुल्लाह शाह 'शाह गोला दीवान', निजामबाद-आजमगढ़ पर नायाब ऐतिहासिक कृति, मैं अपनी कथन-भंगिमा को लेकर भरपूर चर्चित है। इस चर्चा में अनेकश: आरोपों-प्रत्यारोपों से मुखातिब इंजीनियर राजेश्वर की कहानियों के समक्ष, पठनीयता जैसे संकट का अभाव दिखता है। कथाकार इंजीनियर राजेश्वर की कथा-शैली और कथा-कृति 'एक कहानी बीच में है' को औपन्यासिक कृति मानते हुए प्रखर समालोचक और अभिनव 'प्रसंगवश' के संपादक डॉ० वेद प्रकाश अमिताभ कहते हैं-''इंजीनियर राजेश्वर का लघु उपन्यास 'एक कहानी बीच में है' काम-वासना के आगे नत-शिर एक प्रौढ़ा नारी के अध:पतन पर आधारित है। एक आयाम विशेष नैतिक स्खलन और अनैतिक यौन सम्बन्धों की वृद्धि पर केन्द्रित है। उपन्यासकार दिखाता है कि एक पथ-च्युत नारी किस तरह दूसरो को बी पतनोमुखी करती है। 'हो जा मैना मो-सी' पुजारिन का मीरा को शिवनन्दन की ओर ढकेल देना, प्रभाव स्वरूप देख सकते हैं....उपन्यास में जिस तरह काम पीड़िताएँ आखेट करती हैं, वह विश्वसनीय भले न हो लेकिन समय के पर्दे में पोशीदा इस सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता है.....''

इंजीनियर राजेश्वर की कथन-भंगिमा और कहानी कहने का अन्दाज नायाब है। उनके कहानी कहने के अन्दाज पर मैने हास-परिहास में कभी ट्रकों के पीछे लिखे जाने वाले सूत्र-वाक्य 'सटला तऽ गइला' का प्रयोग किया था। आज गौरो-फिक्र से विचार करने पर, मैं यह पाता हूँ कि एक बार आँखों से स्पर्श-भर राजेश्वर की कृतियों को करें यकीन है आप आख़िर तक उनकी कहानियों को पूरा पढ़े बगेर नहीं रह पायेंगे। राजेश्वर की कहानियों के नजदीक पठनीयता का तथाकथित संकट फुर्र हो जाता है। राजेश्वर की कहानियों में रुमान की समाहिति बेशक है। राजेश्वर खुले मन के संत साहित्यकार हैं। उनके पास छुपाने जैसा अभिनयी अन्दाज नहीं है। किसी भी हकीकत को साफ-साफ, बेलौस कह देना उनकी सदाशयी आदत का हिस्सा है। कारण, अकारण नहीं है। आप उनकी सद्य प्रकाशित सफियाना अन्दाज की ऐतिहासिक कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' पढ़ें या आप के हाथ में जो कथा-कृति 'नसीब अपना-अपना' है उसे पढ़ें या राजेश्वर की अन्य कथा-कृतियों को पढ़ें। एक नायाब जीवन-शैली से मुखातिब होंगे।

मैं ऐसे अनेकश: कथाकारों को करीब से जानता हूँ जो कहानी को पाँच-पाँच, छ:-छ: बार काट कर 'री-राइट' करते हैं और पाठक कभी आरम्भ में, कभी-कभी बीच में और कभी-कभी अन्त तक जाते-जाते मानसिर रूप से दम तोड़ देता है। किन्तु राजेश्वर अपने कलम के

www.bhojpurisahityangan.com

ईमान से, कथा-साहित्य में चुनौती की मानिन्द विनम्र-भाव से खड़े हैं। 'एक कहानी बीच में है' पर लिखते हुए मैंने लिखा भी है कि 'दर हकीकत' साहित्य में इनकी (राजेश्वर) उम्र २०-२५ वर्षों की है। इन कहानियों की संरचना में एक उम्र और समय के साथ इन्साफ है। आज के दौर में कथाकार-साहित्यकार संभावित खतरों से टकराने में कतराता है किन्तु राजेश्वर का मानना है कि उन संभावित क्षणों, मूल्यों और सरोकारों से आँख मिलाकर रचने से समाज की विसंगतियों की कथार्सिस होगी। राजेश्वर का अभिमत अपनी वैचारिक संरचना में गैर मुनासिब या गलत भी नहीं। आज हम अपने बुनियादी मूल्यों को खूबसूरत अन्दाज में भाषाई कायिक कलेवर में सजा-सँवार कर प्रस्तुत करने की कला में निपुण हो गये हैं। आदर्श का मुलम्मा चढ़ाकर दुनियावी विकृतियों को ढँके रहे हैं किन्तु ढँकने की प्रक्रिया से विकृति ही आकारित होगी। रूहानी सृजना-कृति ढँकने में नहीं खोलने में है।

इंजीनियर राजेश्वर अपनी व्यावहारिक और दुनियावी जिन्दगी में एक सामाजिक संत सरीखे हैं। उनकी रोजगारी जिन्दगी का जियाद: समय आजमगढ़ में गुजरा है। वैसे इनके पूर्वज आजमगढ़ के ही मूल निवासी रहे हैं। अब गोरखपुर जनपद के रियासती गाँव गोपालपुर के बाशिन्दा हैं। इनकी कहानियों के पात्र वहाँ-वहाँ के पड़ोंसी हैं, जहाँ-जहाँ अपनी प्रशासनिक सेवा के चलते राजेश्वर रहे हैं। राजेश्वर ने अपने पार्श्व के दृश्यों में अपनी आँखें खुली रखी हैं और कोई भी मर्मस्पर्शी घटना उनके कथाकार मन का किरदार बनी है। राजेश्वर की कहानियों में 'कचरस' की मिठास है। राजेश्वर की कहानियों की अन्त:संरचना में डूबने पर, एहसास होता है कि इनमें रूहानी जिन्दगी को संचालित करने वाला आत्मिक तत्त्व है, किन्तु आज 'महब्बत' और 'इश्क' अपनी पारिभाषिक शब्दावली में और व्याख्या में गलीज़ और बेमानी हो गये हैं। अनिवार्यता है, इनके पुनर्मूल्यांकन की, इनकी अर्थ-छवियों को गहराई से जानने-समझने और व्याख्यियत करने की। राजेश्वर की कहानियाँ औपन्यासिक जमीन पर उगी हैं, जहाँ से कंछे ही कंछे, कल्ले ही कल्ले फूट रहे हैं। 'नसीब अपना-अपना' की कहानियों में अन्य कथा-कृतियों की तरह ही कहानी में एक कहानी की सम्भावित एवम् प्रभावान्विति है, जैसे हर मादा कंगारू के पेट में जिस तरह एक बच्चा छुपा होता है। कहानी कहने और कथा-धार को बाजिब दिशा में मोड़ने के पारखी हैं। राजेश्वर अपनी किसी भी विधा का साहित्यकार अपने लेखकीय अनुष्ठान से पाठक को प्रेरित-उत्कंठित नहीं कर पाता है तो क्या जरूरी है कि लिखा ही जाये, लेखक का धर्म पाठक को अपनी वैचारिकता से रचना-समाप्ति तक पाठक को निहाल कर देने में है। इंजीनियर राजेश्वर की कलम-गति को देखते हुए यकीन है कि अपनी प्रकाशित और प्रकाश्य कृतियों से पाठकों को निहाल कर सकेंगे।

www.bhojpurisahityangan.com

सुख्यात गीतकार, गजलक़ार, समीक्षक डॉ० वशिष्ठ अनूप इंजीनियर राजेश्वर की रचना-प्रक्रिया पर तनने वाली भौंहों को एक वक्त की चुनौती मानते हैं और कहते हैं कि इस चुनौतीपूर्ण विषय पर साहसिक लेखकन के लिए श्री राजेश्वर सिंह को बधाई। गौर तलब है कि डॉ० वशिष्ठ अनूप की 'एक कहानी बीच में है' पर टिप्पणी 'एक कहानी बीच में है' इंजीनियर राजेश्वर का लघु किन्तु महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में युवावस्था के प्रारम्भ से लेकर, ढलते यौवन तक मानव-मन और तन को उद्वेलित और विचलित करने वाली काम-वासना का बहुत सशक्त और स्वाभाविक चित्रण हुआ है। कथाकार को इस विषय का विशुद्ध और प्रमाणिक अनुभव है और इसके वर्णन में उसे महारत है। कथा-प्रसंगों के उद्घाटन में कथाकार की कल्पना-शक्ति उसका भरपूर साथ देती है। यहाँ वर्णन प्रसंगों में अतिरंजना या दूर की कौड़ी लाकर पाठकों को आश्चर्यचकित करने की कोशिश अथवा उछल-कूद नहीं है। इस कारण कथा की विश्वसनीयता बनी रहती है। कथाकार इंजीनियर राजेश्वर ने ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि वो जिस कथा-कृति को रच रहे हैं औपन्यासिक कृति है। इसे डॉ० वेद प्रकाश 'अमिताभ' और डॉ० वशिष्ठ 'अनूप' ने स्वीकार किया है। अध्यात्मिक सर्जना और दुनिया की सजरना में बेहतरीन स्थिति अज्ञानता की होती है। दोनों ही मनीषी समीक्षकों की वैचारिकता से यह तय हो चुका है।

शीर्षस्थ नवगीतकार डॉ० उमाशंकर तिवारी कथाकार इंजीनियर राजेश्वर की रचना-प्रक्रिया पर कहते हैं। ''इंजीनियर राजेश्वर की दो कथा-कृतियों 'एक कहानी बीच में है' तथा 'एक कहानी की आत्मकथा' की पाण्डुलिपियों से होकर गुजरा। कथाकार की ये 'मेडेन-कृतियाँ' हैं।'' सामाजिक रूप से अभिशप्त नारियों की यौन समस्याओं को बड़ी संवेदनशीलता के साथ उकेरा गया है। कृतिकार में एक प्रतिभा-सम्पन्न कथाकार की 'किस्सा-गोई' है। दबी-छुपी समस्याओं को करीने से उभारने-उघाड़ने के अवसर का साहस हिन्दी का पाठक वर्ग एक अधिकारी के अस्तित्व की बिडम्बना से जूझते हुए कलमकार के 'जोर' को महसूस करेगा। इंजीनियर राजेश्वर की कहानी कहने की शैली सर्वग्राही है-और भरपूर उपयोगी....'जिन-जिन साहित्यकारों की नज़र से इंजीनियर राजेश्वर की कथा-कृतियाँ गुजरी हैं, लगभग हर किसी ने इनकी कहानी कहने की शैली की तारीफ की है। सुख्यात कवि, समीक्षक डॉ० जितेन्द्र नाथ पाठक इंजीनियर राजेश्वर की किस्सा-गोई के भीतरी आकर्षण पर कहते हैं-इंजीनियर राजेश्वर की दो प्रकाशित कहानियाँ 'एक कहानी बीच में है' ग्राम्य-जीवन के निम्न मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के बीच की स्त्री पुरुषों की दंभित कामेच्छाओं के परितोष के इर्द-गिर्द घूमती है। इसे प्रगतिवादी (नेचरलिज़्म) कहानियाँ भी कह सकते हैं। समस्या के रूप में इसमें अविवाहित, विधुर-विधवा, स्वैराचार, प्रेमी, नर-नारियों के यौन-व्यावहारों की एक सीमा तक व्यापक चित्रण है। 'किस्सा-गोई' अनगढ़ता के भीतर से फूटता

www.bhojpurisahityangan.com

आकर्षण इन कृतियों का शिल्पगत आकर्षण है। केन्द्र और कथा-विधान की एकलता इसे कहानी के दायरे से वाहर नहीं जाने देती और ठीक ही कथाकार ने इसे समाज की संज्ञा दी है। आशा है रचनाकार अपनी भावी कृतियों में समाज और व्यक्ति की दिनों दिन कठिन होती जा रही, जिन्दगी को चित्रित करेगा और सहृदय एवम् मर्मज्ञ कथा-प्रेमियों की प्रशंसा का भाजन बनेगा।''

सूफियाना लहजे के लेखक 'चांस' पत्रिका के दार्शनिक लेखक कविवर श्री सुरेन्द्र कुमार सिंह, इंर्जानियर राजेश्वर की कहानियों की 'बोल्डनेस' को अपनी स्वीकृति देते हुए मानते हैं कि 'भारतीय समाज स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्पर्कों को वासना की आँख से देखता है। इसलिए उसमें स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्मिलन को तमाम वर्जनाओं के विरूद्ध कर दिया है। लेकिन ये निषेधात्मक वर्जनाएँ वर्तमान परिवेश में तार-तार हो चली हैं और यह इसलिए नहीं हुआ है कि निषेधात्मक वर्जनाएँ किसी ने बलात् तोड़ डाली हैं। फलस्वरूप एक तथाकथित गैर मुनासिब परिवेश अस्तित्त्व में आ गये है। यह इसलिए हुआ है कि मानव-मन वर्जनाओं से मुक्ति चाहता है। वर्जनाओं को लाख सामाजिकता के रूप में रंग दिया जाय, धार्मिकता के रंग में रंग दिया जाय, इनका अस्वाभाविक होना ही, इनके टूटने का मुख्य कारण है।' इंजीनियर राजेश्वर की कथा-कृतियों का कथानक एहसास से टूटती हुई वर्जनाओं की एक अन्तहीन कहानी है। कथानक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भाषा बिल्कुल सहज और रवाँ-दवाँ है जहाँ वो सामाजिक वर्जनाओं से आँख बचाकर गति पकड़ते हैं। हर मनुष्य के अन्दर एक औरत है, हर औरत के अन्दर एक पुरुष है और दोनों एक दूसरे को ढूँढते रहते हैं, पाते रहते हैं, बिछुड़ते रहते हैं। 'नसीब अपना-अपना' की लगभग हर कहानी कमोवेश इन्हीं लम्हों की उपज और तस्वीर है।

'सबके दावेदार' पत्रिका के सम्पादक, कवि पंकज गौतम इंजीनियर राजेश्वर का कथा-कृतियों को लेखक की अनुभव की सच्चाई मानते हुए कहते हैं 'कहानी की अनिवार्य शर्त है-'कहानीपन' घटनाओं-परिघटनाओं के यथावत् प्रतिफलन से बचाकर, वस्तु-तत्त्व का कथात्मक अन्त: संयोजन एक कहानीकार के लिए साधन है। इस संचेतना को भाषा में व्यक्त करने के लिए उस भाषा की समझ और उस पर पकड़ आवश्यक है।' इंजीनियर राजेश्वर की कथा-संरचना की खासियत यह है कि वे वस्तु-तत्त्व को सामान्य जन-जीवन से उठाते हैं और उस सामान्य भाषा में गहरी अर्थवेत्ता के साथ करते हैं। प्रथम पाठ में राजेश्वर का कथा-लेखक सहज और सरल प्रतीत होता है, किन्तु जैसे-जैसे उनकी व्यंजना पकड़ में आती जाती है वैसे-वैसे उसमें संदर्भ जुड़ते जाते हैं। इस प्रक्रिया में उनकी कथा कहने की शैली पाठक को बाँधे रहती है। समकालीन कहानी की कलात्मक तकनीक से परे, वे परस्पर युक्त तकनीक का प्रयोग पूरे कौशल से करते हैं। इनके कथा कहने में अंचल-रस और कथा-रस है। भूमि, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी-पहाड़ इनकी

www.bhojpurisahityangan.com

कथा-भूमि के अनुषंगी हैं। अपने अनुभव की सच्चाई को इंजीनियर राजेश्वर जन-जीवन की संवेदना से सम्बद्ध कर पूरी आत्मीयता से व्यक्त करते हैं।

इंजीनियर राजेश्वर की प्रकाशित कथा-कृतियाँ, लोक-रस की सम्पृक्ति से लबालब लबरेज हैं। सरकार शाह-गोला दीवान, दरगाह शरीफ निजामाबाद, आज़मगढ़ की ऐतिहासिकता जो आज तक किसी की जानकारी में नहीं थी का अजीब तराके से रूहानियत की करिश्माई खूबियों के साथ निरूपण किया है वह पाठकों के लिए साहित्य के सरोकारियों के लिए एक नायाब तोहफा और दस्तावेज है। 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' संज्ञक जो रूहानी कृति सरकार 'शाह गोला दीवान' की हालाते-जिन्दगी पर केन्द्रित है, जिसे मैं जमीनी शहीफा कहना मुनासिब समझता हूँ, मुझे यकीन है कि राजेश्वर की यह कथा-कृति 'नसीब अपना-अपना' कहानी की दिशा में एक प्रमाणिक कृति साबित होगी।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

८८

विविध रंगों की सहज कहानियाँ हैं

-सुरेन्द्र कुमार सिंह

विविध-व्यवहारों के मनुष्यों से भरा हुआ है यह संसार और उन्हीं व्यवहारों के रंग में जीते-जागते मनुष्यों के जीवन में घटने वाली घटनाओं का एक सयुच्चय है यह कथा संग्रह **'नसीब अपना-अपना'**। वास्तव में कहानी का अर्थ होता है कहना-लेकिन जब आदमी कहने को कलात्मक दृष्टि से व्यक्त करता है तो कभी-कभी यही कहना या कहानी-कहना अथवा कहानी न होकर एक कलात्मक अभिव्यक्ति हो जाती है। कहना नेपथ्य में चला जाता है और कला शेष रह जाती है-कला जो कहने को रुचिकर अथवा कलात्मक बनाने की गरज से कहानी में आयी थी-कहने को उदरस्थ कर आयी। यह आज की लोकप्रिय विधा कहानी का तात्कालिक संकट है-और अब अगर ई. राजेश्वर से सिर्फ कहते हैं-तो यह है कहानी का मूल रूप-आदिम रूप। जिसमें किसी को साहित्यिक दृष्टि से कला नहीं दिख सकती है पर कहना है और यह इतना पठनीय है कि वह आपको उसे पढ़ना शुरू भर करना है और अगर आपने कहानियों को पढ़ना शुरू कर दिया तो आप उसे खत्म होने से पहले बन्द नहीं कर सकते। आखिर कहने में कला का अभाव है तो इतना आकर्षण जिसे साहित्यिक भाषा में पठनीयता कहते हैं-आ कहाँ से जाती है-ई. राजेश्वर सिंह की कहानियों में। इस प्रश्न का उत्तर उनकी कहानियों में ढूँढा जाना चाहिए। जब पाठक उनकी कहानियों को पढ़ने में विमग्न हों तो साहित्यकार एवं समीक्षकों को उनमें पाठक की दिलचस्पी अथवा आकर्षण के कारणों को ढूँढने की कोशिश करनी चाहिए।

एक दिन मैं कहानियों के विषय में साहित्यकारों के विचारों को पढ़ रहा था-(डॉ. महेशचन्द्र शर्मा का आलेख था-कहानी का स्वरूप तथा उद्देश्य) मैन वेल्स, एडगर एलेन एलरी सेजविच, प्रेमचन्द, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन अज्ञेय, श्याम सुन्दर दास, डॉ. श्रीकृष्ण पाल जैसे पश्चिम एवं भारत के साहित्यकारों ने कहानी के बारे में अपने विचार व्यक्त किये थे-पर सबका मूल तत्व था कहना-शब्द जितने भी दिये जायें कहानी को, जिस तरह से भी कोशिश की जाय, कहानी को परिभाषित करने की, जितनी भी विशिष्टतायें जोड़ी जाय कहानी में-जो भी स्वरूप बना दिया जाय कहानी का-जिस उद्देश्य से भी लिखी जाय, कहानी-किसी यथार्थ को शब्दों में आकारित कर

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी लिख दी जाय अथवा कल्पना के मूल में कहना ही रहना चाहिये-क्योंकि इसी बीज तत्व पर कहानियों का संसार खड़ा है-आज के दौर में जब मनुष्य अत्यधिक व्यस्त है। सरलता से उससे कुछ कह दिया जाय-यह आज की कहानी की जरूरत है-यह सरलता ही कहानी को एक बार फिर आम-आदमी से जोड़ सकती है। सम्भवतया ई. राजेश्वर सिंह यही कर रहे हैं।

'नसीब अपना-अपना' कथा संग्रह जो आपके हाथ में है उसमें आपको अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं की एक झलक मिल सकती है-ई. राजेश्वर सिंह उन घटनाओं को आप से कहते हैं और निर्मित होती है एक कहानी-कहानियों का एक गुलदस्ता। जीवन के आस-पास यह बिखरी विविधताओं को खोजने का एक प्रयास है।

यह विविधता विषय वस्तु की भी है और चरित्रों की भी है। वे अभिशप्त मान्यताओं को खंडित भी करते हैं। कितनी सहजता से यह काम करते हैं। इसका उदाहरण है-**'एक अनूठी माँ सौतेली'** जहाँ का ममत्व सौतेली माँ की अवधारणाओं को तोड़कर स्त्री को माँ बनाता है। माँ और सिर्फ माँ जो अपने बेटे ही नहीं किसी के भी बेटे पर अपना सब कुछ न्योछावर करने को तत्पर रहती है। इसी तरह **'त्याग की खुशबू'** में सौत की अवधारणा टूटती हुई देखी जा सकती है जहाँ एक विशेष परिस्थिति में दो शादियाँ रचाने वाले व्यक्ति का पूरा परिवार जितनी गहराई से आत्मिक बन्धन में बंधा हुआ दिखाई पड़ता है वह असामान्य सा है। अभिशप्त आधुनिकता की पहचान सामाजिक बुराइयों के आकर्षण से की जाती है-विकृत मानसिकता का लक्षण-समलैंगिग सम्बन्धों को प्राय: उच्च कुलीन परिवारों से जोड़ा जाता है यह भावना मध्यम वर्ग में भी है और इसका उदाहरण है **'तितलियां तेवर वाली लड़की'** पर राजेश्वर जी अपनी बात इतनी सहजता से कहते हैं कि लगता ही नहीं कि स्थापित धारणाओं को तोड़ रहे हैं।

मनुष्य के अस्वाभाविक स्वभाव पर मान्य परम्पराओं का कितना बड़ा दबाव होता है-इसका उदाहरण आपको **'लोक लाज'** में देखने को मिल जायेगा-तो **'एकान्तवास'** में अपनी दुनिया की परिपूर्ति करते हुए असाधारण स्थिति में जीता हुआ आदमी आपको मिल जायेगा। **'रोब की तल्खी'** में अपने अधिकार के घमण्ड में डूबा हुआ अधिकारी आप को मिल जायेगा तो **'रोड जाम से पत्नी विछोह'**-एक अपनी तरह की कहानी है-वास्तव में यह कहानी एक कहना है।

पठनीयता की दृष्टि से तो सारी कहानियाँ अपने-अपने रस में डूबी हुई हैं-सबका अपना-अपना आनन्द है, अपना स्वरूप है-अलग-अलग विषय वस्तु है-अलग-अलग रंग है अलग-अलग सरोकार है। पर सबके मूल में कहानी का मूल तत्व कहना ही है। आप कहानियों के पढ़ने में बाद निश्चित रूप से मुझसे सहमत होंगे।

अब आज के दौर में तो कहानियों का अपना संसार है-विषय वस्तु के धरातल पर भी और रचनात्मक कला के धरातल पर भी। कहानियों पर बहसें चल रही हैं और कहानियों के सामाजिक

www.bhojpurisahityangan.com

परिवर्तन का हथियार भी बताया जा रहा है। पर आज के जटिल दौर में जीवन को जो सरल बना दे वे तत्व कहानी में कहाँ दिखते हैं। आदमी को कुण्ठा से बाहर निकाल दे वे कहानियाँ कहाँ दिखती हैं। आदमी को आदमी से प्यार करने की प्रेरणा दे ऐसी कहानियाँ कहाँ मिलती हैं। आदमी को उसके जीवन में समस्याओं से लड़ने का उत्साह भरने वाली कहाँ मिलती हैं-मिलती हैं तो जीवन से दूर प्रतिबद्धताओं की सीमाओं में उठने वाली काल्पनिक समस्यायें और उनसे संघर्ष करने वाले काल्पनिक पास। बचपन में माँ से सुनने वाली दिलचस्प कहानियो का संसार हम साहित्यकारों के बौद्धिक विलास की कब्रगाह में दफन हो गया है। मैं यह नहीं करता कि ई. राजेश्वर सिंह की कहानियाँ इस कब्रगाह को खोद-खोदकर नयी-नयी कहानियाँ निकाल रहे हैं-हाँ, इतना जरूर है कि राजेश्वर की कहानियाँ कहानी के मौलिक रूप में हमारे सामने हैं। इसमें जरूरतों की परिपूर्ति का अभाव हो सकता है-किसी को इनमें कलात्मकता का अभाव दिख सकता है किसी को इनमें प्रतिबद्धता का अभाव हो सकता है किसी को इनमें दिशा का अभाव दिख सकता है, पर इनमें नयापन यह है कि ये अपने जीवन के आस-पास की घटनाओं को पाठक से कहते तो हैं और यही इनके लेखन की विशिष्टता है-और इसी कहानीपन की जिज्ञासा जब उनके साहित्यिक और सामाजिक सरोकारों के साथ सहभागिता करने लगेगी-कहानियों को एक नया विषय वस्तु मिलेगा। जिसकी बहुत जरूरत है।

उम्मीद है पाठक इनकी कहानियों को सराहेंगे और साहित्यकार बन्धु इनकी कहानियों में सम्भावनाओं का दर्शन करेंगे। अभी तो इतना ही.....

❖

www.bhojpurisahityangan.com

७

समालोचना-खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

८९

इंजीनियर राजेश्वर सिंह

(व्यक्तित्व व कृतित्व-एक विमर्श)

-चन्द्रगुप्त वर्मा 'अकिंचन'

मुझसे आयु में दो वर्ष छोटे ०४ अप्रैल १९५० में जन्में एवं उत्तर प्रदेश जल निगम में अधीक्षण अभियंता के पद पर सेवारत रहे, वर्ष २०१० में सेवानिवृत्त, सरल, सहज, सुहृदय एवं लोकरंजन व्यक्तित्व के धनी इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी जो मूलत: ग्राम व पोस्ट-गोपालपुर, तहसील गोला, जनपद-गोरखपुर के मूल निवासी हैं, के सम्प्रति स्नेहिल लेखनी उठाने का कारण उनके व्यक्तित्व व कृतित्व दोनों में ही सन्निहित है। पुरातन व ऐतिहासिक गोपालपुर (गोला) स्टेट मेरी माँ का ननिहाल रहा है, जहाँ मैं माँ के साथ स्कूल की छुट्टियाँ मनाने व बिताने के बहाने, एकाध महीने रह लेता था, मेरा अत्यन्त ही संवेदनात्मक सम्बन्ध रहा है। बचपन में मैं सरयू में चलती बड़ी-बड़ी व्यापारिक नावों को कौतुहलपूर्वक देखकर बहुत प्रफुल्लित होता था।

आज भी मुझे याद है कि कैसे राम लीला मैदान से सटे, बर्डघाट डिपो की बसें, राजघाट के चाह घाट पीपे के पुल को हिलते-डुलते पार करती थीं तथा कहीं-कहीं टूटी सड़क पर सर तोड़ू उछाले लेते हुए ग्राम गोपालपुर को पहुँचाती थीं। यह पीपे का पुल भी बाढ़ के दिनों में तोड़ दिया जाता था तथा पूरे तहसील बाँसगाँव का गोरखपुर शहर से सम्बन्ध बिच्छेद सा हो जाता था, न्यायालय में लम्बित मुकदमों में लम्बी तारीख पड़ जाती थी। चाइनावार के पश्चात् निर्मित हाई-वे की सड़क व आज का पक्का पुल उस समय निर्मित नहीं था। इस स्थान पर अमरुतानी (अमरूद की बगिया) व ताड़ के बहुतायत बृक्ष हुआ करते थे। बाढ़ का पानी शहर में हाँसूपुर मुहल्ले तक आता था। फिलहाल यह स्थल वर्ण्य विषय नहीं है। लेखनी के विमर्श तो हैं वह संत पुरुष, जिनके बारे में कहा जा सकता है कि-

कबिरा खड़ा बाजार में माँगत सबकी खैर,
ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर।

कुछ ऐसे ही व्यक्तित्व व प्रतिभा के धनी साहित्यकार, समाजसेवी एवं श्वेत बसनीय संत पुरुष

www.bhojpurisahityangan.com

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी हैं। यूँ तो एक साहित्यकार के रूप में सिंह साहब ने अपनी पहचान वर्ष २००४ में ही अपनी प्रकाशित कृतियों द्वारा स्थापित कर लिया था जो साहित्य लोक में अस्तित्वमान हो चुकी थी और यह प्रक्रिया अविकल रूप से अभी तक जारी है। भोजपुरी के प्रति समर्पित एवं अभिप्रेरक स्मृति शेष सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन' जी के प्रति कृतज्ञता भाव रखने वाले "भोजपुरी संगम" गोरखपुर के संरक्षक, संत कबीर के ही भाँति एक नि:स्पृह सद्गृहस्थ जीवन को जीवन्त कर रहे, किन्तु समाज के प्रति समपर्ति इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी आजीविका एवं आजीवन दोनों ही दृष्टियों से सामाजिक अभियन्ता (निर्माणक) हैं। इस प्रकृति प्रेमी द्वारा पुरातन स्थल शोध विषयक लघु पुस्तकों के साथ ही पर्यावरण सुधार एवं आरोग्य विषयक तमाम लघु पुस्तकें लिखी व वितरित की जा चुकी हैं।

भोजपुरी के सलाका पुरुष के रूप में स्थापित हो चुके धर्म प्राण सिंह साहब की अद्यावधिक पुस्तकें यथा-राम प्यारा साधु संत, श्याम प्यारा साधु संत, दीक्षा गुरु (साधु-संतों की विरुदावली व चरित्र चित्रण वर्णन) भागवत कथा-सार, भोजपुरी रामायण, भोजपुरी महाभारत (मूल ग्रन्थों के आधार पर भोजपुरी में छाया अनुवाद) आदि भरपूर लोक रंजन कर रही हैं। बच्चे बचपन से ही अपनी मातृ भाषा में रामायण व महाभारत की अच्छी बातों से पढ़, सुन के, सुसंस्कारित हो सकें, यह एक अनुपम प्रयास है। रामायण व सुखसागर ने जहाँ अवधी व ब्रज भाषा में प्राण संचयन किया है, वहीं भोजपुरी के नाम पर केवल कबीर दिखते हैं, किन्तु कबीर ने जो कुछ भी कहा वह दोहा छन्द में अपने रहस्यवाद को समेटे हुए स्थापित किया है। लोक-गीतों को यदि छोड़ दें तो, गद्य क्षेत्र बहुधा अछूता व वाचिक ही रहा है। गद्य क्षेत्र में किंचिंत लोगों ने ही काम किया है। इस दिशा में सिंह साहब का अग्रसर होना, सुस्थापित कार्य करना, निश्चय ही श्लाघनीय है।

अपने प्रकाशित पुस्तकों द्वारा, आप न केवल (लोक मानस में बहुधा वाचिक स्वरूप में ही पुष्पित व पल्लवित भोजपुरी की) अपने साहित्यिक प्रस्तुति द्वारा अविकल सेवा कर रहे हैं, अपितु एक नव प्रतिमान भी स्थापित कर रहे हैं, जिसके लिए भोजपुरी भाषी समाज आपका कृतज्ञ रहेगा। कवि वा लेखक जो कुछ भी समर्पित भाव से लिखता है, उसमें उसका अपना व्यक्तित्व भी छिपा हुआ होता है, जो कि झलकता है, क्योंकि उसमें उसके जीवन का पथ निहित होता है। कभी-कभी तो उसे खुद भी नहीं पता होता है कि वह क्या कर रहा है, जबकि वह समयश्रुवा से इतिहास यज्ञ में अपनी लेखनी से सारस्वत आहुति दे रहा होता है।

रचना में रचनाकार के व्यक्तित्व की प्रतिछबि निहित होती है, उसमें रचनाकार का छाया बिम्ब, प्रति बिम्बित होता है। रचनाओं में जब ईशतत्व समाविष्ट हो जाता है तो वह (ईश+रचा) ऋचा में जब सत्य व शिव भी समाविष्ट हो जाते हैं तो वह सूक्त/सूक्ति स्वरूप हो जाता है। यह

www.bhojpurisahityangan.com

कथन आत्म स्वरूप होकर सिंह साहब ने प्रस्तुति भक्तिपरक साहित्य में भरपूर झलकता है। साहित्य के माध्यम से हम समाज के स्तर का आकलन कर सकते हैं।

एक साहित्यकार अपने आसपास के परिवेश से जो कुछ भी देखता या महसूस करता है, वह अपनी लेखनी के माध्यम से अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति करता है। चिरकाल से लेकर आज तक साहित्य ने मानव जीवन को सदैव प्रभावित किया है। अच्छा व सत्साहित्य समाज के उत्थान व चारित्रिक विकास में हमेशा से सहायक रहा है। साहित्य के माध्यम से मानव की विचार धारा को बदला जा सकता है, इसीलिए कलम की ताकत को तलवार की ताकत से ज्यादा ताकतवर माना गया है। वर्तमान में सामाजिक स्तर पर, मानवीय मूल्यों का तेजी से क्षरण हो रहा है, लोग संस्कार विहीन होते जा रहे हैं, ऐसे में साहित्यकारों की भूमिका व दायित्व और भी बढ़ जाता है। आज साहित्य संक्रमण की स्थिति से गुजर रहा है। इस भाग दौड़ की जिन्दगी में साहित्यिक कृति कौन पढ़े ? जबकि वर्तमान के सामाजिक हालातों को देखते हुए आज भी उत्कृष्ट साहित्य की उतनी ही जरूरत है, आवश्यकता है जितनी की पहले थी, जिससे कि सामाजिक जागृति का दीप सदैव प्रज्जवलित होता रहे। इस विहंगम दृष्टि से भी इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी एक साहित्यकार के रूप में पुनि-पुनि सराहना योग्य होते हैं।

ध्यातव्य है कि सौम्य एवं कुशल कवि या लेखक एवं मंचीय वक्ता में एक धरातलीय अन्तर होता है। मंचीय वक्ता मंच का कितना बड़ा कुशल खिलाड़ी है, श्रोताओं को कितना मंत्र मुग्ध कर सकता है, उसकी योग्यता या अभिनयशीतला प्रत्यक्षत: प्रमाणित हो जाती है, किन्तु तूलिका वा लेखन धर्मिता के साथ ऐसा कदापि नही है। यह आवश्यक नहीं है कि एक मंचीय वक्ता या कवि, एक कुशल लेखक भी हो और एक कुशल लेखक, एक सफल मंचीय कवि वा वक्ता भी हो। मंचीयकवि अपनी अभिनयशीलता या प्रस्तुति द्वारा तालियों की गड़गड़ाहट में अपना झण्डा भले ही क्षणिक तौर पर गाड़ ले, वह प्रशंसनीय होते दिखे किन्तु वह स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ता। स्थायी प्रभाव तो उसकी श्रेष्ठ रचनायें ही छोड़ती हैं, चाहे उस समय उसकी प्रस्तुति या मंचीय प्रदर्शन का पक्ष दुर्बल ही क्यों ना हो। पुस्तकें व्यक्तिगत अनुष्ठान हैं, सार्वजनिक समागम नहीं। पुस्तकों के माध्यम से पाठक कृतिकार से प्रछन्न संवाद करते हैं, अत: पाठकों की प्रतिक्रिया या स्वीकार्यता से कृतिकार विलम्ब से अवगत हो पाता है। अभिव्यक्ति को बाँधने और पाठकों के समक्ष खुलकर खुलने ही सहजता एक लम्बा दुर्गम यात्रा पथ है।

साहित्य में वर्णनशैली, प्रस्तुति या यूँ कहें कि अंदाजे बयाँ का एक विशिष्ट स्थान होता है, जो साहित्यकार के व्यक्तित्व का दर्पण होता है। कृतिकार या लेखक को एक सफल लेखक के रूप में अपने को स्थापित रखने के लिए उसे सौम्य होना एवं दिखना होगा। जैसा कि हम अप्रक्षत्र व पारदर्शी रूप में इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के व्यक्तित्व में पाते हैं। आजकल जिस प्रकार

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तकों के लोकार्पण की बाढ़ आयी हुई है, उसे देखते हुए ही गत दिनों एक पुस्तक लोकार्पण के अवसर पर प्रोफेसर रामदेव शुक्ल (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर) ने वर्तमान के लेखन व छपाई व्यवस्था पर तंज करते हुए कहा था कि-"आजकल प्रत्येक लेखक को छपने की बिमारी हो गयी है। छपवाने के पूर्व उसे विचार करना चाहिये और यदि रचना साहित्य में कुछ नया नहीं जोड़ रहा है तो उसे नहीं छपवाना चाहिये। रचना ऐसी हो जो साहित्य को कुछ दे सके।" निश्चय ही इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी यहाँ मील के पत्थर सा दिखते हैं। मैं इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के सम्प्रति निम्न दो पंक्तियाँ कहना चाहूँगा-

राजेश्वर जी कर्षण करते हैं कविता,
छन्द बन्द में, रहके कविता के कुँज ।
दर्श कराते हैं वे जीवन-दर्शन नित,
ऋषि मुनि सा बन उर्जा के नवपुँज ।।

विमर्श का समापन मैं सिंह साहब की दीर्घायु की शुभकामना सहित आदरणीय सूर्यदेव पाठक "पराग" जी के निम्न पंक्तियों के साथ करना चाहूँगा-

श्रीराजेश्वरसिंह जी के साहित्यिक अवदान ।
जन मन के निर्मल करी पाई यश सम्मान ।।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

९०

भोजपुरी साहित्यकार इं. राजेश्वर सिंह

-डॉ० फूलचन्द प्रसाद गुप्त

कुछु लोग कहत बा कि भोजपुरी-भाषा में कविता तऽ बहुतै लिखाति बा बाकिर गद्य कऽ अकाल बा। अइसन लोगन कऽ जवाब बा इं० राजेश्वर सिंह कऽ सगरी साहित्यिक जतरा। सन् २००४ से भोजपुरी-भाषा के गद्य लेखन के जतरा में कई उपलब्धि हासिल भइलि। कहानी, निबन्ध, जीवन-चरित्र पर आधारित लगभग एक दर्जन पोथी भोजपुरिया समाज के मिललि अउर भोजपुरी भाषा-साहित्य कऽ खजाना समृद्ध भइल। जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (कहानी-संग्रह), कल्यान कऽ जुगुति (निबन्ध-संग्रह), पढ़ीं, समझीं मनन करीं (कहानी-संग्रह), भोजपुरी भागवत कथा-सार (भागवत कऽ संक्षेप), राम पियारा साधु-सन्त (५१ रामभक्त कऽ जीवनी), श्याम पियारा साधु-सन्त (३८ कृष्ण-भक्तन कऽ जीवनी), भोजपुरी महाभारत (महाकाव्य के अट्ठारह पर्वन कऽ कथा), दीक्षा गुरु (२१ सन्त गुरुअन क जीवन-चर्चा), भोजपुरी रामायण (भगवान् श्री राम के अवतार से ले के जल-समाधि क कथा), अउर परमहंस योगानन्द जी के जीवन पर आधारित ६२८ पृष्ठ कऽ भोजपुरी योगी कथामृत से ई सिद्ध हो जात बा कि इं० राजेश्वर सिंह लगातार भोजपुरी-गद्य लिखि रहल बाटें। धर्म अउर अध्यात्म उनकर प्रमुख विषय हवें। एह सन्दर्भ में लिखलि किताबि ई बतावति बाटीं कि उनकर गहन अध्ययन भी बा। कवनो भी ग्रन्थ के भीतर जाके निहितार्थ ले आके पाठकन तक पहुँचावल साहित्यकार कऽ विशेष गुन होला।

ओइसे गोरखपुर कऽ भोजपुरी-भाषा कऽ साहित्य-जगत भोजपुरी गद्य लेखकन से भरल बा। भोजपुरी गद्य में बहुत कुछ लिखल बा। आचार्य रामदेव शुक्ल (ग्रामदेवता उपन्यास), डॉ० रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी भाई' (अगली-बगली गद्य-संग्रह), डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी (नेह कऽ नाता-कहानी संग्रह), डॉ० फूलचन्द प्रसाद गुप्त (माई कहानी-संग्रह, भोजपुरी लोक (गद्य-संग्रह), बटोहिया का सोवै (गद्य-संग्रह), जागऽ बिहान भइल (निबन्ध-संग्रह), आँखिन देखी (निबन्ध-संग्रह), नवनाथ अउर नाथ जोगी (जीवन चरित), नर्वदेश्वर सिंह 'मास्टर साहब' कऽ (बगइचा-कहानी-संग्रह), रामनरेश शर्मा 'शिक्षक' कऽ (ढेवरी लघुकथा-संग्रह), रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी कऽ (पण्डिताइन-संस्करण मूलक उपन्यास), ई सब साहित्यकार भोजपुरी कऽ गद्य-साहित्य के समृद्ध करत बाँटे। चन्देश्वर शर्मा 'परवाना' कऽ भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश, भोजपुरी के वर्तमान अउर अगली पीढ़ी के भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

के सब्दन से जोरले में बड़वर भूमिका निभा रहल बा। प्रो० रामदेव शुक्ल कऽ भोजपुरी-भाषा में लिखलि कहानिन में भोजपुरी लोक कऽ व्यथा-दसा के समझल जा सकेला।

इं० राजेश्वर सिंह विग्यान कऽ विद्यार्थी हवें। उ० प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से अप्रैल २०१० में रिटायर भइलें। सेवाकाल में ही भोजपुरी-भाषा के प्रति प्रेम होखे लागल। इनकर पहिलकी गद्य कऽ किताबि २००४ में आइल। भोजपुरी में प्रकासन कऽ जतरा इहवें से शुरु भइल। इनकर भोजपुरी-प्रेम स्वाभाविक बा। महतारी कऽ भाषा हऽ। मातृभाषा, महतारी अउर महतारी कऽ भाषा कऽ हर मनई कर्जदार होला। इनकर सेवा कइके ही केहू उरिन हो सकेला। जे इनकर नाहीं भइल ऊ केहू कऽ नाहीं होई। इं० राजेश्वर सिंह जी पूरे मन से मातृभाषा भोजपुरी के सेवा में लागल बाटें।

कुछ लोग इहाँ के भाषा पर सवाल उठावेंलें। भोजपुरी भाषा में जब मानवीकरण होई तब एह सवाल कऽ जवाब मिली। अबहिन तऽ 'आठ कोस पर बानी बदले' के दृष्टि से इहाँ के भाषा कऽ देखल जा। पहिले भाषा आवेले तब ओकर अनुशासन (व्याकरण) बनेला। जे जवने जगही बा अपने-अपने बोली के हिसाब से भोजपुरी लिखत बा। एही आधार पर इहाँ के भाषा के देखले कऽ जरूरति बा।

इनके गद्य-साहित्य के जोगदान पर प्रसिद्ध कथाकार प्रो० रामदेव शुक्ल जी 'राम-पियारा साधु-सन्त' के भूमिका में लिखले बाटीं-'भोजपुरी साहित्य में राजेश्वर सिंह के जोगदान भोजपुरी कऽ इतिहास लिखे वाला लोग के मोटका अच्छर में लिखे के परी।' लोक-साहित्य भोजपुरी कऽ मर्मग्य डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेजी जी 'श्याम पियारा साधु-सन्त' के भूमिका में लिखले बानीं-'उहवाँ के अइसन सरधा के साथे निम्मन कृति भोजपुरी गद्य साहित्य के खोइँछा में एगो नवका रंग, नवका अंदाज के साथ सउँपत बाटीं कि ओकरे महक से भोजपुरी कऽ गद्य-साहित्य कऽ खोइँछा गमकि उठी।' ख्यातिलब्ध समीक्षक प्रसिद्ध महाकाव्य 'महाभारत' कऽ गद्य-भाषा में अनूदित 'भोजपुरी-महाभारत' कऽ पाण्डुलिपि के पढ़िके पुरहर तसल्ली मिलल। एक तऽ साहित्य कऽ भरपूर सुख मिलल आ दुसरका भोजपुरी गद्य-भाषा कऽ निथरल सहज-स्वाभाविक आनन्द। भोजपुरी गद्य-साहित्य के समृद्ध कइले में इं० राजेश्वर कऽ विशेष जोगदान बा अउर आगे भी कई ग्रन्थ पढ़े खातिर मिलिहें।

कोरोना क महामारी के प्रकोप से आम जनता भयभीत भइले के साथे-साथ डाक्टर-बैद्य लोग डेरा के आपन दुकान-क्लीनिक भा नर्सिंग होम बन्द कइके लुका गइलन। दवाई के अभाव के कारन कोरोना के अलावा रोग क मरीज भी परेशान हो के मौत क शिकार होखे लगलन त इन्जीनियर साहब एह समस्या के प्रति चिन्तित हो के कविता में 'घरेलू नुस्खे' नाम क किताब लिख के तुरन्त छपवा के बटवावे लगलन। घर के रसोई घर में रहे वाला मसाला, पास-पड़ोस के छोट-बड़ पेड़-पौधन कुल पचास चीजन क औषधीय गुड़न के उजागर करत उपयोग में ले

www.bhojpurisahityangan.com

अइले क तरीका कविता के रूप में किताब में दिहल बा। ई किताब उनके अन्दर के कवितई के उजागर कइ रहल बा।

राजेश्वर जी अपने संकल्प पे खरा उतरे वाला मनई हवें। एक बेर जवन संकल्प कर ले लेंऽ ओके पूरा कइके ही छोड़ेलें। अपने साहित्यिक जतरा में ऊ जवन मुकाम हासिल कइ लिहले बाटें ऊ उनके संकल्प कऽ ही परिनाम बा। मनई के मनई बनवले में हमरे धरम-ग्रन्थन कऽ बहुत जोगदान हऽ। रामायण, महाभारत, भागवत जइसन ग्रन्थ मनइन के नैतिक बल देलें। अगर इनकर अनुवाद भोजपुरी भाषा में कइल गइल बा तऽ भोजपुरी भाषा-भाषिन के ई अनुवाद रहि देखाई। अपने भाषा में कहल-सुनल बाति हिरदय के छू जाले। बहुत गहिरे तक उतरि जाले। एह नाते से जदि रमायन, महाभारत, भागवत भोजपुरी में कहल-सुनल जा अउर उहो किस्सागोई में तऽ सबके मन में इनकर कथा उतरि के आपन परभाव छोड़ी। एह दृष्टि से राजेश्वर जी कऽ ग्रन्थन कऽ महातिम समझ में आवत बा।

इं० राजेश्वर सिंह के भोजपुरी प्रेम के विषय में प्रो० रामदरश राय कऽ दीक्षा गुरु ग्रन्थ में लिखल भूमिका के एक अंश में निम्मन अउर सही बा-'राजेश्वर सिंह कऽ अध्ययन-क्षेत्र विग्यान-अभियान्त्रिकी आ अंग्रेजी रहल बा।' कार्यालयीय संवाद कऽ माध्यम हिन्दी रहल बा। लेकिन एगो बड़वर अचम्भा ई बा कि ऊ अपने साहित्यिक लेखन खातिर भोजपुरी कऽ काया-छाया पकरले बाटें। येह अद्भुत सुभाव के लेखक पै इहै टिप्पणी बइठल बा कि उनके भीतर अपने मातृभाषा खातिर अपार-अथाह प्रेम-उछाह बा जइसन की संस्कृत कऽ जानकार काव्य-पण्डित होके भी तुलसीदास अपने मातृभाषा-प्रेम अवधी में देखवले बाटें।

इं० राजेश्वर सिंह भोजपुरी-भाषा गद्य कऽ भण्डार भरत रहिहें। अपने अनुभव अउर ग्यान से भोजपुरी-भाषा-भाषी लोगन कऽ मार्गदर्शन करत रहिहें, अइसन बिसवास बा।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

९१

आदमी के चिन्हे कऽ जुगुति

-नथुनी प्रसाद कुशवाहा उर्फ राम पति रसिया

आदमी कऽ चिन्हले कऽ खाँची भर उपाय लोग बनवलेबा। केहू कपड़ा लाता से तऽ केहू बातचीत से तऽ केहू जाति-पाँति से तऽ केहू पढ़ाई-लिखाई से तऽ केहू रूप-रंग से। बाकिर हमरा दू गो उपाय सबसे सटीक बुझाइल बा। पहिलका वोकरा साथ रहे के आ ढ़ेर बतियावे के मौका मिले चाहे वोह आदमी के कवनो लिखल कविता चाहे लेख पढ़े क पूरा अवसर मिले।

१४ जुलाई सन् २०२४ ई० के गोरखपुर में भोजपुरी संगम के मंच पर तमाम विद्वत् जन का बीच पहिले पहिल माननीय इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के दर्शन भइल। हमरा उहाँ के रूप-रंग, बोली-भाषा आ उमिरि के हिसाब से अउर लोग से कुछ हटि के बुझइनी। हमरा मन में ई बार-बार उठे कि तनी बोले बतियावे के मौका मिलित। बाकिर समय क अभाव रहल वोह मंच के नियम रहे कि समय क दुरुपयोग न होखे। समय से कार्यवाही समाप्त भइल। सब केहू बिदा भइल। हमरो विदाई भइल आ कुछ किताब मिलली सन। घरे आ के देखनीं। पहिले बइठकी नाम के किताब के पढ़े लगनीं।

बइठकी में घुसले के बाद जइसे-जइसे आगे बढ़त गइनी तइसे-तइसे इन्जीनियर साहब के भीतर के अंजोर के अभास होखे लागल। हमरा भीतर उहाँ का बइठे लगनीं। जब आदमी के बिचार से बिचार मिलै लगेला तऽ सम्भवत: आदमी, आदमी में नजदीकी बढ़ि जाला, प्यार प्रगाढ़ होत जाला। हमरा मन में कुछ अउर तरह भाव उठे लागल। जइसे किताब 'बइठकी' ओराइल तइसे नजर 'कल्यान कऽ जुगुति' पर परि गइल। लगनी वोकरा के पढ़े।

कल्यान कऽ जोगुति के पढ़ला पर बुझाइल कि इन्जीनियर साहेब के भीतर अँजोरे ही अँजोर बा। जवना-जवना संत लोगन के सुविचार के उदाहरण दिहले बानी, वोतना विरले लोग दे पाई। समाज के भलाई के प्रति इहाँ का केतना जागरूक बानीं। कल्यान क जुगुति जे पढ़ी खुद जानि जाई। हम परमपिता परमेश्वर से निहोरा करतानी कि प्रभु इहाँ के दीर्घायु बनाईं आ आगे अइसहीं विचार आ साहस के बनवले रहीं। ए बेरा ले त हमरा इहाँ के ऊँचाई के केहू नइखे लउकत। हो सकेला अउरो कहीं होखें। पूरा समाज इन्जीनियर साहबमय हो जाव, ई हमार इच्छा बा।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

९२

भोजपुरी के अनन्य साधक : इं० राजेश्वर सिंह

-डॉ० महामाया प्रसाद 'विनोद'

दूर देश बेल्जियम क एगो इंजीनियर रहनी। राम काव्य से उहाँ का बहुते प्रभावित भइनीं। राम काव्य के अध्ययन खातिर ऊ भारत अइनी आ पहिले संस्कृत फेर हिन्दी पढ़नी। कालान्तर में ऊ राम काव्य आ तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् का रूप में ख्याति अर्जित कइनी। उहाँ का कवनो साधारण इंजीनियर आ साहित्यकार ना रहनी। उहाँ का हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार रहनी फादर कामिल बुल्के।

अपनो देश में इंजीनियर लोगन के कलम जब साहित्य का ओरि मुड़ल ह त वोह लोगन के उपलब्धियन कम प्रशंसनीय आ लोकप्रिय ना रहल ह। भोजपुरी साहित्य में इंजीनियर जगन्नाथ रहलन ह। भोजपुरी साहित्य में इंजीनियर जगन्नाथ जी भोजपुरी गजल के एगो सशक्त हस्ताक्षर रहनी। गजल क गजल विधा से संबंधित भोजपुरी विकास यात्रा आ शास्त्रीय विवेचन करत गजल के शिल्प विधान उनकर महत्वपूर्ण पुस्तक बा। एगो आउर इंजीनियर कृष्णानंद कृष्ण भोजपुरी कहानी आ लघुकथा में खूब काम कइले रहनीं।

सांच कहल जाव त भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकसित आ प्रचार-प्रसार में इंजीनियर राजेश्वर सिंह के योगदान भुलावल ना जा सके। हिन्दी-भोजपुरी मिला के लगभग दू दर्जन पुस्तकन के रचना कवनो साधारण काम नइखे। प्रारम्भिक दौड़ के कृतियन के छोड़ दीं त बाद के इनकर रचनन में बहलोश आध्यात्मिक विषय पर आधारित बा, यथा-श्री मद्भागवत् कथा-सार, राम पियारा साधु-संत, श्याम पियारा साधु-संत, भोजपुरी रामायण, भोजपुरी पंचतन्त्र, भोजपुरी योगी कथामृत आदि।

अधीक्षण अभियन्ता के दायित्व के निर्वहन करत आ सेवानिवृत्ति के बादो अनेक हिन्दी भोजपुरी के साहित्य सांस्कृतिक संस्थान में इनकर प्रशंसनीय भूमिका बा। गोरखपुर में भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

संगम के संरक्षक आ 'बैठकी' के निरन्तर संचालन के अतिरिक्त अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से इहाँ का अभिन्न रूप से जुड़ल बानी। इनकर साहित्यिक कृतियन आ साहित्य सेवा खातिर पन्द्रह गो नामचीन संस्थन द्वारा इनका मिलल सम्मान आ पुरस्कार इनकर लेखन क्षमता आ कर्मठता के प्रमाण बा। विगत दिसम्बर में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के २७वाँ अधिवेशन में इनकर पुस्तक 'श्याम पियारा साधु-संत' पर हरिशंकर वर्मा सम्मान इनका प्रदान कइल गइल। एह पुस्तक में कृष्ण भक्त कवियन के जीवन चरित आ उनकर भक्तिपूर्वक रचना के वर्णन कइल बा।

गाँव का राग-द्वेष विहीन माटी के ऊपज इंजीनियर राजेश्वर सिंह के भोजपुरी भाषा में आध्यात्मिक साहित्य सृजन इनका जीवन के महत् आ स्तुत्य उपलब्धि कहल जाव त कवनो अतिसयोक्ति ना होखी। शुभकामना बा कि इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी साहित्य सृजन अनवरत चलत रहे आ उपलब्धियन के अंबार लगे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

९३

आधुनिक परिवेश में भोजपुरी रचना के जीवंत सन्त इं. राजेश्वर सिंह

-डा० राम अवतार चन्द

पश्चिमी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, झारखंड के उत्तरी क्षेत्र, छत्तीसगढ़ के पूर्वी भाग तथा नेपाल की तराई में बोली जाने वाली भोजपुरी भाषा की बहुत समृद्ध परम्परा रही है। मारीशस, फिजी तथा नेपाल में इसे संवैधानिक दर्जा प्राप्त है। भोजपुरी भाषा तथा साहित्य का लम्बा इतिहास रहा है। सिद्धों तथा नाथों ने अपनी रचनाएं भोजपुरी भाषा में ही की है। योगीराज गोरखनाथ भोजपुरी के पहले प्रमाणिक रचनाकार कहे जा सकते हैं। मध्यकाल के संत कवियों की भी भोजपुरी भाषा में रचनाएं मिलती हैं। आधुनिक काल में भिखारी ठाकुर, महेन्द्र मिसिर, मनोरंजन प्रसाद सिन्हा, राहुल सांकृत्यायन, रामेश्वर सिंह कश्यप का भोजपुरी भाषा तथा साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के मोती बी०ए०, धरीक्षण मिश्र, चन्द्रशेखर मिश्र, भोलानाथ गहमरी, तारकेश्वर राही, कुबेरनाथ मिश्र विचित्र आदि ने भोजपुरी साहित्य को अनेक प्रकार से समृद्ध किया है। सम्प्रति कमलेश राय, चन्देश्वर शर्मा 'परवाना', प्रेमशीला शुक्ल, डा० फूलचन्द गुप्त, भोजपुरी भाषा के सक्रिय रचनाकार हैं।

इसी क्रम में इंजीनियरिंग के विद्यार्थी रहे तथा उ०प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से सेवानिवृत्त श्री राजेश्वर सिंह भोजपुरी भाषा एवं साहित्य को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध करने वाले महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। यद्यपि इनका मस्तिष्क तकनीकी विद्या की ओर लगा पर इनकी हृदय भोजपुरी प्रेम से धड़कता रहा। थोड़ा जब हम भोजपुरी साहित्य की ओर दृष्टिपात करते हैं तो फिल्मी दुनियाँ में प्रचलित स्तरीय भोजपुरी रचनाओं की ओर ध्यान चला जाता है, जहाँ उसका विकृत रूप दिखायी देता है पर इसके विपरीत इन्जीनियर राजेश्वर सिंह ने उसे भारत को समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का प्रयास किया है।

आपकी बीस से अधिक रचनायें प्रकाशित हो चुकी हैं। खड़ी बोली तथा भोजपुरी दोनों

www.bhojpurisahityangan.com

भाषाओं में आपकी लेखनी गतिमान है, आपमें भोजपुरी रामायण, भोजपुरी श्री मद्भागवत कथा-सार में श्री राम और श्रीकृष्ण चरित्र को भोजपुरी भाषा में प्रस्तुत कर भोजपुरी समाज को संस्कारित करने का अद्भुत प्रयास किया है। आपने संस्कृत की प्रसिद्ध लोककथा पंचतन्त्र को भी भोजपुरी भाषा में प्रस्तुत करने का सराहनीय कार्य किया है।

आपकी नवीनतम कृति भोजपुरी योगी कथामृत गोरखपुर के ही विश्व प्रसिद्ध संत परमहंस योगानन्द की आत्मकथा (Autobiography of a Yogi) के हिन्दी अनुवाद 'योगी कथामृत' का भोजपुरी रूपान्तरण है। इंजीनियर राजेश्वर सिंह के कृतित्व के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन्होंने भोजपुरी साहित्य को लोक और शास्त्र दोनों से जोड़ा है उसे संस्कृति और दार्शनिकता से पुष्ट किया है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश के इस अंचल को इन्जीनियर राजेश्वर सिंह पर गर्व है। समाज उनके उत्कृष्ट लेखन के लिए इनका अभिनन्दन करता है तथा ईशावस्योपनिषद् के मन्त्र के आधार पर ईश्वर से प्रार्थना करता है कि श्री राजेश्वर सिंह सर्जनारत रहते हुए **'जीवेम् शरदः शतम्'** को चरितार्थ करें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

भाव भाषा के सहज साधक : इंजीनियर राजेश्वर सिंह

प्रो० (डॉ.) जयकान्त सिंह 'जय'

केहू विचारी त महसूस होई कि वस्तु के पाले अस्तित्व भर होला। बाकिर, व्यक्ति के लगे अस्तित्व का सङ्गे-सङ्गे अस्मितोबोध होला। जवना के अपना बानी आ बेवहार से व्यक्त करेके व्यग्रता ओकरा में बक्ता, लेखक भा कर्ता बने के प्रवृत्ति पैदा कर देले। ओकरा एही प्रवृत्ति के साकार भइला पर ओकर व्यक्तित्व उजागर होला। कवनो व्यक्ति के व्यक्तित्व गिनावल बा-धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष। मनई जब अपना प्रतिभा आ प्रतिबद्धता के बदौलत धर्म (दायित्व) के पथ पर चलत अर्थ अरजल अपना कामना के पूर्ति के बाद सहजे मुक्त भावी होके जिनगी जीये लागेला त ओकर बानी, बिचार आ बेवहार दोसरो ला आदर्श आ अनुकरणीय हो जाला। एकरा सङ्गहीं जब ऊ मनई अपना भाव-विचार के लिपिबद्ध करत समाज का सोझा होला त ओकर व्यक्तित्व मोल-महातम लिहले देखनउक आ सोभनउक बन जाला। इंजीनियर राजेश्वर सिंह से जब-जब हमार आम-दरफ भइल बा तब-तब एही तरह के भाव हमरा भीतर पनपे लागल बा।

हमरा ई मन नइखे पड़त कि इंजीनियर राजेश्वर सिंह से हमार पहिला भेंट कब के ह। बाकिर ई बात तय बा कि भेंट जभ भी भइल त बात-बतकही के बाद इनका के लेके जवन सुबिचार मन में पैदा भइल, ऊ आजो ओइसहीं स्थाई रूप से बनल बा। इनकर सिरजल भोजपुरी साहित्य जबे छपल तबे मिलल। मिलला पर चाहे डाक से। अच्छा, हर किताब का पीठ पर इनकर जीवन-परिचय पढ़े के मिल जाला। जवना से हर पाठक का इनका बारे में सहजता से कुल्ह जानकारी मिल जाला।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जेकर जनम ०४ अप्रैल, सन् १९५० ई० में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिलान्तर्गत गोला तहसील के गोपालपुर गाँव में भइल रहे। पिताजी स्वर्गीय समर बहादुर सिंह आ माता स्व० परमजोता देवी के सम्पन्न-सम्भ्रांत परिवार में जनमल राजेश्वर सिंह बचपन से ही सुशील, शांत आ उदात्त सुभाव के कुशाग्र बुद्धि वाला विद्यार्थी रहलें। सन् १९७३ ई० में बी०ई० (सिविल) के परीक्षा उत्तीर्ण भइला के बाद उत्तर प्रदेश जल निगम में अभियन्ता के पद पर योगदान देके प्रदेश आ देश के ईमानदारी पूवर्क सेवा में लाग गइलें। इनका सहज, सरल आ सहयोगी सुभाव

www.bhojpurisahityangan.com

के हर विभागीय सहकर्मी आ आला अधिकारी प्रशंसक रहलें आ सभे इनका ईमानदारी आ कर्मठता के सराहना कइल। उ० प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से अप्रैल, २०१० में अवकाश लिहला के बाद इनका के बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार के पद पर बिहार सरकार नियुक्त कर लिहल। एह पद पर काम करत ई कई गो महत्वपूर्ण कार्य कइलें, जवनो के लाभ सरकार आ समाज के प्राप्त भइल। एकरा अलावे ई मध्य प्रदेश जल निगम मर्यादित में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में आपन अहम् योगदान दिहलें।

अभियन्ता के पद पर कार्यरत रहे के सङ्गे-सङ्गे राजेश्वर सिंह अपना सृजनात्मक प्रतिभाके साहित्यिक स्वरूप से समाज के परिचित करावे के दिसाईं भी कबो पीछे ना रहलें। इनकर कई गो साहित्यिक कृति प्रकाशित होके सुधि साहित्यानुरागी लोग तक पहुँच चुकल रहे; जइसे-

एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४) , जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ? (वर्ष २००४), सुख जागे दु:ख भागे (वर्ष २००४), गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६), श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७)।

एह पुस्तकन के नामें इनका सद्-व्यवहार आ सद्ज्ञान के परिचायक बा। ई एगो चिंतनशील आध्यात्मिक व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति हउवें। इनका पर संत-महात्मा लोग के किरपा बरसत रहल बा। ई इनका खातिर दैवी वरदान बा। एक बार ई अपना एगो संघतिया के सङ्गे अयोध्या गइलें। इनकर संघतिया बरमहल अयोध्या आवस-जास, एह से उहां के संत-महात्मा से उनकर पुरान सम्बन्ध रहे। उहाँ के संत से इनका पहिले से परिचय ना रहे। बाकिर जब ई ओह संत के पास पहुँचलें त ऊ संत महाराज इनका पहिले से परिचय ना रहे। बाकिर जब ई ओह संत के पास पहुँचलें त ऊ संत महाराज इनका पे अपना पास बोला के सहजे बइठा लिहलें आ अपना गरदन से एगो माला निकाल के इनका गरदन में डाल दिहलें। ई घटना इनके आ इनका संघतिया के अचंभा में डाल दिहलस। संत महाराज इनके ओर मुखातिब होके कहलें-आवत-जात रहिहऽ। ईश्वर के किरपा तोहरा पर बनल रही। तूँ भारतीय सद्ग्रन्थ के विषय बनाके अपना भाषा में लिख-छपवाके सामान्य-जन तक पहुँचावऽ। तोहार मंगल होई आ समाजो के सात्विक चरित्र निर्माण होई। एकरा बाद इनका भीतर ई बिचार घर कर गइल कि अब हम अपना मातृभाषा भोजपुरी में अपना तमाम भारतीय सद्-ग्रंथन के आधार लेके मौलिक साहित्य रचब। तब से अब तक भोजपुरी में अनेक भारतीय सद्-ग्रंथन के अनुवाद आ आपन मौलिक लेखन इनका कलम से हो चुकल बा।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह के भोजपुरी साहित्य संसार बहुत बिस्तार लेले बा। सन् २००४ ई०

www.bhojpurisahityangan.com

से लेके सन् २०२३ तक इनकर दू दर्जन पुस्तक प्रकाशित होके सुधि पाठक लोग तक पहुँचले भर नइखे, बल्कि ओकर अनवरत समीक्षा-समालोचना भी विविध पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित होत रहल बा। भोजपुरी भाषा में लिखित, अनूदित आ प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रन्थन के सूची प्रस्तुत करत हमरो अनघा आनंद आ रहल बा- जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७), पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६), भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८), राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९), श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०), भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०), दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०), घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०, भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१), भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२), भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३)।

भोजपुरी में लिखित आ अनुदित साहित्यन के सूची राजेश्वर सिंह के व्यक्तित्व आ कृतित्व के हस्तामलक कहानी कह रहल बा। लागऽता कि सन् २००३ ई० के बाद इनका जिनगी जीए आ सोचे-विचारे में आमूलचूल बदलाव आ गइल। संभव बा इनका ऊपर ओह संत आ ईश्वर के स्नेहाशीष के प्रभाव होखे। बर्ना एक ब एक केहू लगातार साले साल एह तरह के गुरु गम्भीर काम कइसे कर सकऽता। एह सद्ग्रन्थन के पढ़ला के बाद इनकर प्रतिभा आ प्रतिबद्धता सहजे जन मानस का सोझा प्रस्तुत हो जाला। जवना के फलस्वरूप अबहीं तक विविध सामाजिक, सांस्कृति आ साहित्यिक संस्थन के द्वारा इनकर लगातार सम्मान होत रहल बा। इनका प्राप्त होखे वाला प्रमुख सम्मान बा-

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली से प्राप्त 'महात्मा ज्योतिबा फुले फेलोशिप सम्मान', राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ से प्राप्त पुरस्कार आ प्रेमचंद सम्मान, सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश से प्राप्त 'मेलोडी सम्मान-२००६', हिन्दी सेवा संस्थान कुशीनगर से प्राप्त 'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान', जिस्म से रूह तक रौशनी रौशनी खातिर खानकाह सूफी दीदार ठाणे मुम्बई से प्राप्त 'आध्यात्मिक रत्न सम्मान', विक्रमशिला विद्यापीठ भागलपुर बिहार से 'विद्या वाचस्पति, विद्या सागर, भारतीय भाषा रत्न, आ भारत गौरव सम्मान', अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन, भागलपुर बिहार से 'साहित्य कला शिरोमणि सारस्वत सम्मान', मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कॉलेज, गोरखपुर उत्तर प्रदेश के एल्यूमनाई एसोसिएशन से सन् २०११ में सामाजिक कार्यन में योगदान खातिर मिलल सम्मान, संगम सांस्कृतिक साहित्यिक आ सामाजिक संस्था गोरखपुर से मिलल 'संगम साहित्य समुगन सम्मान-२०२०', नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर से भोजपुरी सेवा खातिर मिलल नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान-२०२१, भोजपुरी में महाभारत लिखे खातिर सरयू अमृत महोत्सव-२०२१ में मिलल 'सरयू रत्न सम्मान', भोजपुरी विकास मंडल, सीवान बिहार से मिलल 'संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान' आदि।

www.bhojpurisahityangan.com

सन् २०२३ में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के जमशेदपुर (झारखंड) अधिवेशन में 'श्याम पियारा साधु-संत' पुस्तक खातिर हरिशंकर शर्मा सम्मान से सम्मानित इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी महत्वपूर्ण ग्रंथ 'भोजपुरी योगी कथामृत' के लोकार्पण एही अधिवेशन में भइल त भोजपुरी में योगी कथामृत के प्रति पाके भोजपुरी साहित्यकार समाज इनका के अनघा बधाई आ शुभकामना दिहल।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सम्माननीय सदस्य के रूप में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास में भी आपन योगदान दे रहल बाड़ें। इनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व सदैव अनुकरणीय आ अभिनंदनीय बा। हम समस्त भोजपुरी सेवी साहित्यिक संस्थन आ साहित्यकार लोग के ओर से इनका भावी उज्जवल जीवन खातिर मंगलकामना करत बानीं।

❖

संत मिलन को जाइए तजि माया अभिमान ।
ज्यों-ज्यों पग आगे बढ़े कोटिस यज्ञ समान ।।

माया अउर अभिमान तजि के सन्त से मिले, चाहे दर्शन कइले के नियत से जब मनई आपन गोड़ आगे बढ़ावेला त जइसे-जइसे एकहक पग आगे बढ़े लगेला करोड़न यज्ञ के बराबर फल मिले लगेला। एह तरह क बात हमनी क पूर्वज कहि गइल बाड़ैं, अउर ग्रन्थन में लिखल बा। संत महिमा क गुणगान जेतने कइल जाय थोड़ ह। चिर काल से साधु-संत समाज में रहल बाड़न। अपने-अपने इष्टदेव (राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा आदि), क बराबर आराधना कइ के साधक लोग एक न एक दिन संत स्वरूप हो जालन।

-श्याम पियारा साधु-संत से

www.bhojpurisahityangan.com

९५

भारतीयता के भाव से भरल भोजपुरी साहित्य सेवक : इंजीनियर राजेश्वर सिंह

-डॉ० ब्रज भूषण मिश्र

भाषा-साहित्य के अध्येता चाहे ऊ शिक्षक होखे चाहे छात्र, ऊ अगर साहित्य सेवा में लागल बा, त ई सामान्य स्थिति बा, काहें से कि ओकरा उहे कामे बा। ऊ ओकरे में जीअत बा, ओकरे से जिअत बा। ओइसहीं कोई विरक्त भाव में बा, आध्यात्मिक चिंतन-मनन करे वाला बा, ओकरे के आपन जीवन पद्धति बनवले बा, ऊ अगर ओह तरह के आध्यात्मिक-दार्शनिक साहित्य लिख रहल बा, त ओकरो खातिर ई सामान्य बात बा, काहे से कि ऊ ओही में बा, ओही खातिर बा। बाकिर, ऊ व्यक्ति जे ना साहित्य शिक्षा लेले बा, ना आध्यात्म आ दर्शन के अध्येता रहल बा, जेकर शिक्षा आ व्यवसाय अलग रहल बा; अगर ऊ साहित्य लिख रहल बा आ आध्यात्म-दर्शन के सामग्री अपना भाव-भाषा में परोस रहल बा, त सामान्य आ साधारण बात नइखे। ई विशेष आ उल्लेख करे लायक बात बा। अइसन लोग प्रणम्य बा।

एगो अउर बात कहे के चाहत बानी कि अइसन जे लोग बा ओकर काम जेतने भर होखे, ठोस बा। अइसने एगो मनई बान-इंजीनियर राजेश्वर सिंह।

राजेश्वर सिंह जी १९५० ई० में गोरखपुर के एक गांव में जनम लेके १९७३ ई० में सिविल इंजीनियरिंग में बी०ई० के डिग्री लिहनी आ आगे चलके एम०आई०ई० करके आपन योग्यता बढ़वनी। सोभाविक बा कि जइसन शिक्षो होखी, ओइसने पेशा अपनावल जाई। उ० प्र० जल निगम में इंजीनियर के पद पर बहाल भइनी आ २०१० ई० में अधीक्षण अभियन्ता का पद के दायित्व निर्वाह करत सेवानिवृत्त भइनी। बाकिर कर्मयोगी भइठे ना। बिहार के लोक स्वास्थ्य विभाग का पद के दायित्व निर्वाह करत सेवानिवृत्त भइनी। बिहार के लोक स्वास्थ्य विभाग आ मध्य प्रदेश के जल निगम में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में सेवा दे के एके राज्य ना, तीन-तीन राज्यन के आपन सेवा दिहनी आ समाज के लाभ पहुँचवनी।

प्राय: होला कि अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई करके बहुत लोग पर अंग्रेजियत सवार हो जाला। ऊ लोग लोकाचार, भारतीय संस्कृति, अध्यात्म, दर्शन से लजाए लागेला। ओकरा में ओइसन लोग

www.bhojpurisahityangan.com

का गँवारुपन आ पोंगापंथ देखा पड़े लागेला। काहे से कि ऊ अंग्रेजियत के दुष्प्रभाव में होला। बाकिर राजेश्वर सिंह जी जइसन कुछ अइसनों लोगो होला जेकरा परम्परा में विश्वास होला। इहे विश्वास लोक परम्परा आ शास्त्रीय परम्परा ओकरा के अपना जड़ से जोड़ले रहेला आ समाज के लाभ पहुचावे के उदेसे ऊ सक्रिय रहेला। ई परिवार-समाज से मिलल संस्कार के चलते होला। राजेश्वर सिंह जी के संस्कारे बा कि उहाँ के मन भारतीय उपनिषद, पुराण, शास्त्र आ संस्कृति में रमत रहल। सेवाकाल के उत्तरार्द्ध में राजेश्वर सिंह जी मनई के मनई बनवले राखे के उदेसे, शास्त्र-पुराण के बात हिन्दी भोजपुरी में परोसे लगनी।

२००३ ई० से २००७ ई० के दौरान हिन्दी के इहाँ के आठ किताब छपल। सब किताब कथात्मक, प्रेरणादायक, जीवन के सात्विक बनावे के उदेसे लिखल गइल बा। २००४ ई० से २०२३ के बीचे बारह गो किताब भोजपुरी के लिखनी। हिन्दी में हर तरह के साहित्यकार लिखनिहार के कमी नइखे। हिन्दी के लेखन पर विश्वविद्यालय के विद्वान आ साहित्यकार लोग आधिपत्य जमवले बा आ ओहू में वामपंथी विचार धारा हावी बा, जे भारतीय-शास्त्र-पुराण में खोट निकालत रहेला। बाकिर भोजपुरी साहित्य में एक त गद्य साहित्य पद्य के तुलना में बहुत कम बा आ लिखनिहारों कम बाड़ें। एने भोजपुरी गद्य लेखन में जे लोग सक्रिय बा, ओह में राजेश्वर बाबू के नाम महत्वपूर्ण बा, जे लगातार शास्त्र-पूर्ण में बात भोजपुरी में रोचक ढंग से लिख रहल बानी। जे संस्कृत आ हिन्दी के मोटहन ग्रन्थ सब के ना पढ़-समझ सके, ओकरा खातिर ऊ सब सामग्री भोजपुरी में सुगम हो जात बा। बीस बरिस के कालावधि में हिन्दी-भोजपुरी के बीस किताब लिखल-छपवावल कम बात नइखे।

राजेश्वर सिंह जी के निबंधन के बात छोड़ दीं त प्राय: पुस्तक कथात्मक शैली के बा। 'कल्याण कऽ जुगुति' अट्ठाईस निबंध आ 'पढ़ीं, समझी आ मनन करीं' में कुछ कहानी के संगे निवंध बा। 'भोजपुरी पंचतंत्र' आ 'जिनगी क दूब हरिआइल' शिक्षाप्रद कथा संग्रह ह। महाभारत कथा के सारांश 'भोजपुरी भागवत कथा-सार' आ राम कथा से जुड़ल २९ घटनन के कथात्मक प्रस्तुति 'भोजपुरी रामायण' में बा। राम भक्त ऋषि-मुनि, साधु-संत; कृष्ण भक्त, ऋषि-मुनि, साधु-संत आ २१ संत दीक्षा गुरु लोग के ऊपर, तीन पुस्तकन में परिचयात्मक कथा रूप में तीन पुस्तकन-'राम पियारा साधु-संत'; 'श्याम पियारा साधु-संत' और 'दीक्षा गुरु' प्रस्तुत कइले बानी। 'भोजपुरी महाभारत' में 'महाभारत' महाकाव्य के अठारहो पर्व के कथा संक्षेप में राजेश्वर जी प्रस्तुत कइले बानी। प्राकृतिक प्रदत्त सामग्रियन से स्वास्थ्य संबंधी उपाय के बारे में 'घरेलू नुस्खा' में चर्चा बा। राजेश्वर जी परमहंस योगानन्द जी के आत्मकथा के उन्चासों प्रकरण में भोजपुरी में परोसले बानी। क्रियायोगी परमहंस योगानंद जी के स्वलिखित आत्मकथा में संस्मरण बा आ क्रियायोग का ह, ई बतवले बानी आ ओकरा के भोजपुरी में राजेश्वर जी अउर सहज प्रस्तुत कइले बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

'घरेलू नुस्खा' में आस-पास आ घर में पावल जाए वाला गाछ-बिरिछ-फल-फूल-पत्ता-तना-जड़-छाल-फलहारी-मसाला आदि से का का लाभ होला ? कवना महिना में का खाईं, का ना खाईं, कवना बेमारी के का इलाज बा; ई बतवले बानी।

भोजपुरी रामायण के विशेषता बा कि पूरे राम कथा के उनतीस घटनन के अलग-अलग शीर्षक से प्रस्तुत करके एगो सिलसिला दिहल गइल बा। एह घटनन के पहिला बा रामजी के अवतार कथा आ आखिरी बा रामजी के जल-समाधि। राजेश्वर सिंह जी राम के आरती गा के पूर्णाहुति कइले बानी। राम-जन्म-प्रसंग, धनुष भंग आ सीता विवाह प्रसंगनन के सोहर, कजरी, परीछन, जेवनार, विदाई आदि गीतन से सजवले बानी। गोस्वामी जी के रामचरित मानस के दोहा-चौपाई त बड़ले बा। एह से व्यासगद्दी से कहल जाए वाला कथा अस रोचकता बन पड़ल बा।

'पंचतंत्र' पाँच खंड में लिखाइल शिक्षाप्रद कहानियन के संग्रह ह, जवना में बाल मनोविज्ञान के पुरहर ख्याल राखल गइल बा आ एह कहानियन के जलचर, थलचर, नभचर जीव जन्तु जनावर के जरिए बालक लोग के शिक्षित करके दुनियावी ज्ञान दिहल गइल बा, जवना से जीवन में कवनो कठिन समस्या से निकले के राह भेंटा जात बा। पं० विष्णु शर्मा लिखित संस्कृत के एह कथा सब के सहजे भोजपुरी में राजेश्वर सिंह जी परोसले बानी।

योग जइसन कठिन विषय के समझल आ समझावल दुनों कठिन काम बा। बाकिर, भोजपुरी में ओह के सफल बनावे के प्रयास राजेश्वर सिंह जी कइले बानी। एगो उदाहरण देखल जा सकत बा-

"क्रिया योगी मन अपने प्राणशक्ति के मेरुदंड के छः चक्रन (आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान अउर मूलाधार) में ऊपर-नीचे घुमावेला। ई छः चक्र विराट पुरुष के प्रतीक स्वरूप राशि चक्र के बारह राशियन के समान हयीं। मनइन के सूक्ष्म ग्राही मेरुदंड में आधा मिनट के प्राण शक्ति के ऊपर-नीचे बहले से वोकरे क्रमिक विकास में सूक्ष्म प्रगति होले। आधा मिनट क ई क्रिया एक बरिस के स्वाभाविक तौर से होखे वाली आध्यात्मिक तरक्की के बराबर होले।"

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के हिन्दी आ भोजपुरी में सारस्वत कार्य खातिर देश भर के साहित्यिक, शैक्षिक, सामाजिक संस्था सब पुरहर मान-सम्मान-पुरस्कार दिहले बा। एगो लेख के सीमा छोट रहला से बीसहन किताबन के समेटल कठिन बा। नमूना के रूप में कुछ किताबन के विषय वस्तु आ ओकरा प्रस्तुति पर बात करके, राजेश्वर सिंह जी के पूरा साहित्यिक अवदान के जानल समझल जा सकत बा। थोड़ा लिखना, बहुत समझना।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी-रामायण : एक विहंगावलोकन

-डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी

प्राचीन काल से ही रामकथा का व्यापक प्रभाव (यूटोपिया) प्रभावित विद्वान लोग राम को एक काल्पनिक पात्र मानकर उन्हें अपनी दृष्टि से प्रस्तुत करने का यत्न किये हैं, लेकिन केवल कल्पना के आधार पर कोई कथा इतनी यशस्वी और विस्तारित नहीं हो सकती, यह मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ। राम कथा न केवल परम्परा बल्कि परम्परा से बाहर अन्य भाषाई समाजों में भी अपने-अपने स्तर पर रूपान्तरित भाषांतरित होती रही है। अगर हम साहित्य की बात करें तो संस्कृत साहित्य से प्रारम्भ हुई यह कथा विश्व साहित्य में उपलब्ध है-कारण यही कि सदियों से यह कथा मानवीय सत्य, सौन्दर्य, शील और शक्ति संघर्ष तथा पराक्रम का प्रतीक बनकर मानव चेतना को जागृत करती रही है।

वाल्मीकि रामायण के बाद रामकथा ने विस्तार ग्रहण किया और लोगों ने यह स्वीकार किया कि वह काव्य ही नहीं जिसमें रामकथा नहीं। इस भाव भूमि पर संस्कृत में अनेक रामकाव्य-नाटक रचे गये। प्रचलित नामों में आध्यात्म रामायण, आनन्द रामायण, अद्‌भुत रामायण, भुशुंडी रामायण की रचना हुई। महाकवि भास ने प्रतिभा और अभिषेक नाटकों की रचना की। कालिदास ने रघुवंशम्, जयदेव ने प्रसन्न राघव, भवभूति ने उत्तर रामचरितम्, राजशेखर ने 'वाल रामायण', इनके अलावा माघ, भारवि, सोमदेव, क्षेमेन्त्र आदि ने भी रामकथा पर आधारित नाटक और काव्य लिखे। इसके अतिरिक्त प्राकृत और अपभ्रंश ग्रन्थों में भी रामकथा उपलब्ध है। अन्य भारतीय भाषाओं में कृतिवास कृत बंगला रामायण, माधव कन्दली की असमिया रामायण, बलराम दास की 'उड़िया रामायण' कंवन की 'तमिल रामायण' तेलगू की 'रंगनाथ रामायण' और चम्पू शैली में लिखी 'गोपीनाथ रामायण' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

मराठी के संत एकनाथ ने भावार्थ रामायण लिखा है। इसके अलावा राजस्थानी, सिंधी, गुरुमुखी, कश्मीरी, हरियाणवी आदि लगभग सभी भारतीय भाषाओं में राम कथा को काव्य और अन्य रूपों में लिखा गया है। उर्दू में मुंशी जगन्नाथ खुश्ता लिखित रामायण 'खुश्ता' है। इसके अलावा इसी भाषा में 'रामायण बहार' और 'रामायण मंन्जूम' ग्रन्थ भी हैं। फारसी में अल बदायूनी

www.bhojpurisahityangan.com

ने वाल्मीकि रामायण का पद्यानुवाद किया। मुल्ला मसीह ने 'रामायण पैजी' लिखी। हिन्दी में रामचरित मानस के अलावा केशवदास की 'रामचन्द्रिका' और मैथिलीशरण गुप्त का 'साकेत' लोकप्रिय कृतियाँ हैं। हिन्दी और अवधी मिश्रित लोकभाषा में बाबा झामदास रचित 'रामार्णव' भी एक कृति है।

रामकथा से संबंधित इन तमाम कृतियों की कतार में मुझे पहली बार लोकगीतों की छौंक से बारी गई 'भोजपुरी रामायण' इंजीनियर राजेश्वर सिंह द्वारा पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत एक अनमोल कृति है। ऐसी कृतियाँ अकस्मात नहीं तैयार होती हैं। इनके लिए स्वानुभूतियों का संसार चाहिए। राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी भाषा के मर्मज्ञ हैं। उनके पास भोजपुरी लोकगीतों का अच्छा संग्रह है। उनके इस 'भोजपुरी रामायण' को पढ़कर ऐसा लगा जैसे मधुमक्खी पुष्पों का रस लेकर अपनी पाचनक्रिया से उसे मधु में परिणति कर देती है, ठीक उसी प्रकार इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी को अपनी भोजपुरी के रसगर गीतों में समाहित कर राम की विराट चेतना को अपनी 'भोजपुरी रामायण' में सम्पृक्त कर दिया है। मुझे अतीव प्रसन्नता है कि राजेश्वर सिंह जी की यह कृति भोजपुरी के पाठकों की दृष्टि से रामकथा के रस को प्राप्त करने के लिए सुगम है। प्राचीन संस्कृत साहित्य की जटिलता को ध्यान में रखकर गोस्वामी तुलसीदासजी ने अवधी भाषा में रामकथा को 'रामचरित मानस' जैसी स्वनाम धन्य कृति के रूप में विश्व के सामने रखा, उसी प्रकार राजेश्वर सिंह जी अपनी मातृ भाषा भोजपुरी में रामकथा रूपान्तरित करते हुए 'भोजपुरी रामायण' की रचना की है।

'भोजपुरी रामायण' कृति में रचयिता की मौलिकता इस बात से भी रेखांकित होती है कि उन्होंने इसके घटनाओं का विभाग 'बाल्मीकि रामायण', 'रामचरित मानस', 'राम चंद्रिका' और मैथिली शरण गुप्त रचित 'साकेत' की लीक से हट कर नये ढंग के की है। बाल्मीकि रामायण का विभाजन 'काण्ड' के अन्तर्गत हुआ है, गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरित मानस' का वर्गीकरण 'सोपान' के अन्तर्गत हुआ है, आचार्य केशवदास के रामचंद्रिका का वर्गीकरण 'प्रकाश' के अन्तर्गत हुआ है और गुप्त जी के 'साकेत' काव्य का वर्गीकरण सर्ग के अन्तर्गत हुआ है, वहीं राजेश्वर सिंह जी ने पहले के रामायण लिखने वाले कवियों की लीक से हट कर अपने ढंग से इसके शीर्षकों का नामकरण किया है। इसकी विशेषता इस बात में है कि जिस काण्ड में जो घटना प्रमुख रही और वह रचयिता को रूचिकर लगी उसी को उस काण्ड का शीर्षक बना दिया गया है। इसलिए इस 'भोजपुरी रामायण' में सात-आठ के स्थान पर उनतीस खण्ड हो गये हैं। फिर भी वह संख्या केशवदास की राम चंद्रिका से कम ही है। राम चंद्रिका में पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध को मिलाकर कुल उनतालीस प्रकाश हैं। वैसे 'भोजपुरी रामायण' में गूथे गये रामकथा के सम्पूर्ण प्रसंगों को समाहार रूप में आदि, मध्य और उत्तर इन तीन खण्डों में वर्गीकृत किया जा सकता है। 'श्रीराम अवतार' से लेकर 'रामजी क खराऊँ', तक के भाग को आदि खण्ड में, 'सीता हरण' से लेकर 'अंगद क गीध सम्पाती से भेंट' तक के भाग मध्य खण्ड में और 'लंका में हनुमानजी'

www.bhojpurisahityangan.com

से लेकर 'श्रीराम जी क जल समाधि' तक का प्रसंग उत्तर काण्ड में रखा जा सकता है।

इस रामायण को राजेश्वर सिंह ने इतने रोचक शैली में पूरी कथा को सिल सिलेवार रूप में इस तरह पिरोया है कि पढ़ने वाले को ऐसा प्रतीत होगा कि राम कथा केवल एक मिथक या आख्यान ही नहीं है बल्कि यह लोकोत्तर पुरुष राम की नरलीला है, इसमें रचयिता ने अपने ढंग से राम के सर्वकालिक, सार्वभौमिक ईश्वरता के प्रभाव को दर्शाया है। इसलिए पाठकों से इस रसमय कृति को मनोयोग से पढ़ना चाहिए। राम केवल भारतीय संस्कृति के अवतारी पुरुष ही नहीं हैं, बल्कि वे जननायक, लोकनायक भी हैं। मानवीय सांस्कृतिक अभ्युत्थान में राम की भूमिका अद्वितीय है। सनातन राष्ट्रवादी यह चिन्तन प्रत्येक पाठक के मन में अवस्थित होना चाहिए।

इस पुस्तक के रचयिता का मानना है कि निर्गुण और सगुण धारा में सर्व व्यापक हैं। ईश्वर अपनी अव्यक्त निर्गुण अवस्था से सगुण अवस्था में भी सर्वथा सर्वशक्तिमान होता है। अवतार लेने पर उसके कार्य यद्यपि मनुष्यों के समान होते हैं, परन्तु उसके प्रभाव से करोड़ों के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन होता है। उसका स्वरूप और विस्तार बहुत गम्भीर होता है जिसको यथावत जानना सम्भव नहीं है, किन्तु यह भी तथ्य है कि अवतारी पुरुषों ने अपनी परमोच्चता में जो जागतिक व्यवहार किया है वह सर्वग्राह्य और अनुकरणीय है, वे ईश्वर के रूप में पूजनीय और अवलंबनीय तो है ही।

मैं इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी को साधुवाद देता हूँ कि अपनी कृति 'भोजपुरी रामायण' के माध्यम से भोजपुरी प्रेमियों के बीच में भारतीय संस्कारों की सुगंध फैलाने का जो रोचक और स्तुत्य प्रयास किया है, वह अद्भुत है। लोकगीतों की चासनी में पिरोकर इस पुस्तक की 'भोजपुरी भाषा' इतनी भावानुसारिणी है कि पुस्तक पढ़ने में मन लगता है। इसमें हर भोजपुरी प्रेमी का मन लगेगा, इसे मैं विश्वास के साथ कह रहा हूँ। उनकी सृजन यात्रा ऐसी ही चलती रहे यही मेरी मनोकामना है और ईश्वर से विनती भी।



रामहि केवल प्रेम पियारा, जान लेहु जे जाननिहारा ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

बहुरंगी इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी

-डॉ० रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी'

कउनो एक आदमी के भीतर कई कई आदमी जो देखे के हो त गोला-गोपालपुर, गोरखपुर के अवकाश प्राप्त इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के देखल जा सकेला। उत्तर प्रदेश के जल निगम में कई पदन पर कार्य कइले के बाद लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में लोक स्वास्थ्य सेवा विभाग, बिहार में फेर मध्य प्रदेश क जमीनी जानकारी ई कुल मिलि-जुलि के एक अइसन राजेश्वर के गढ़ि दिहले बा जेकरे भीतर उ०प्र०, बिहार आ मध्य प्रदेश का लोक भीतर में घुसि गइल हो उहो अइसन खूबसूरती से जइसे कवनो टानिक वाली सुई हो।

राजेश्वर सिंह एगो जानल-मानल साहित्यकार हवें। मानवतावाद आ यथार्थ दृष्टि से घोरल आ अपने समाज के चासनी में बोरल लोक संस्कृति के बहुत गम्भीरता से बिनु डेरइले लिखले चलि आवत हवें। इनकर साहित्य संसार बहुत लमहर ह। पढ़ल लिखल अदमी जब कलम उठावेला त ओकर सामने तुलनात्मक ज्ञान क एगो बड़वर ए०टी०एम० मसीन सामने आ जाला जहाँ ओके खाली आपन कार्ड भर डारि के पासवर्ड आ एमाउन्ट भरे के होला, नतीजा सामने आ जाला। बाकिर एहू में कईठो सावधानी कइल जरूरी होला। ई खाली मशीनी न रहि जा एकरे खातिर ऊ तनी एहू से ऊपर उठला चाहेला एहकर धियान इंजीनियर साहब के हवे। ऊ जवन हवें ओके अउर बेहतर होखले क कोसिस करत चलि आवत हवें। इहे ऊ समाज से भी चाहत हवें। अउर-अउर बेहतर समाज बनावे खातिर उठत बेचैनी कलमि उठा देले। एकरे खातिर ऊ खूब बढ़ियाँ सपना देखत रहेलन। ओकरे सामने महाभारत जइसन महाकाव्य क सहारा लेवे के परिजाला जवने क एकठो सबसे बड़हन संदेस रहल की जवने देस क राजा आँखि आ अकिल से आन्हर होई ओह देस में हमेसा महाभारत होत रही, ओह देस में लाखन मेहरारून के विधवा बनि जाये के परेला। नवनिर्माण क कल्पना के सहारे सृजन क रूपरेखा तइयार करत रही।

आजमगढ़ के 'मधुर नज्मी' के ऊ अपने रचनाकर्म के आगे बढ़वले क श्रेय देलंऽ। उनके हिसाबे आजमगढ़ में एक दिन मधुर नज्मी अइलंऽ आ उनके खटिया पर कुछ छितराइल कागज देखलंऽ जवने के राजेश्वर सिंह जी मारे संकोच के कहीं केहू के पढ़वले नाई रहलन। नज्मी जी के बहुत कहले आ सुनले पर ई आपन कुल पाण्डुलिपि उनके थमा दिहलें जवने के नज्मी

www.bhojpurisahityangan.com

व्यवस्थित कइ के छपवावल शुरु कइलें। इहे संकोच मिटावे खातिर इनके मंचे पर भी ले जाये लगलें। पहिलें ई कहलें कि रउआँ के खाली मंचे पर बइठे के बा। बाद में कार्यक्रम क अध्यक्ष बनावल शुरु कइलें। धीरे-धीरे राजेश्वर सिंह क झेंप आ संकोच खतम होखे लागल। अवकाश पवले के बाद अब सरकारी बंधन खतम हो गइल आ खुलि के लिखे लगलंऽ। हिन्दी आ भोजपुरी के साथे कई विसय अइसन हवें जवने ओर केहू क धियान नाई गइल ओहू पर लिखलें। अपने गाँव गोपालपुर के बड़ा निम्मन ढंग से देखले आ देखवले क कोसिस कइलेऽ- र्डाह बाबा, बारानगर क काली चउरा जइसन अनछुवल विसय लेखक विसय रहल। इनके हिसाब से अपने खेत-खरिहान, घर-परिवार से जे नाई जुड़ि पावेला ऊ कवनो बड़वर परिवेस क नाई हो सकेला।

ऊ हिन्दी क आठ अउर भोजपुरी क तेरह किताब लिखलें। इनकर सबसे बढ़ियाँ किताब हमके जवन लागल ऊ भोजपुरी में लिखल 'भोजपुरी योगी कथामृत' ह। जे योग क नीक से जानकारी जुटा पवले होई तेही एह किताबी के गहराई से समझ पाई। योग क कई ठो प्रकार होलें, बाकिर खास-खास दूगो होलें- हठ योग आ अष्टांग योग। अष्टांग योग में योग क आठ अलग-अलग स्तर होला जवना के योगी के पार करे के परेला। यम, नियम, आसन, प्रत्याहार, प्रणायाम, धारना, ध्यान आ समाधि। अब यम का हऽ-

अहिंसा, सत्य, यास्तेयं, ब्रह्मचर्य, क्षमा, धृतिः,
दयाजौ मित्राहार, साँचं चैव यमा दशः ।

अहिंसा-जीव क हत्या न कइल, सत्य-साँच बोलल, यास्तेयं-चोरी क तियाग, ब्रह्मचर्य, क्षमाशील, धैर्यवान रहल,

चतुर्थांश विवर्जितः भूज्यते शिव संपृक्ते मिताहारः स उत्यते । भोजन सुस्निग्ध रहे, सुपाच्य रहे आ पेट क चउथा हिस्सा खाली रखे, ई मिताहार ह।

यम के ओह आठ सर्त के पालन कइले के बाद नियम आवेला-

तप संतोष मास्तैक्यं दान मीश्वर पूजनं
सिद्धान्त वाक्य श्रवणं च ह्रीमती च तपो हुतं
नियमा वस संप्रोक्ता योगशास्त्र बिसार दवी ।

ई दसही नियम ह। माने दस ठो यम आ दस ठो नियम कुल्हि बीस सीढ़ी चढ़ले के बाद अष्टांग माने राजयोग क योगी आगे आसन पर बइठे लायक होला।

बाकिर कईठो अलग-अलग राहि हवं जवना से भीतर क चेतना जगावल जा सकेला। हठ योग क षडांग योग कहल जाला। ओ में यम नियम के जगहीं देंह सुद्धि के नेवली क सहारा

www.bhojpurisahityangan.com

लिहल जाला। ओही तरह से देहीं के भीतर के चेतना जागरण क कई-कई राह होलें, बाकिर कुलि आगे जाइ के एक जगहीं जुटि जालें, मिलि जालें। ई त सभे जानत होई कि जोगी के काल खा नाई सकेला, ऊ अपने से आपन देहि जब चाही तब्बे छोड़ी।

''खादन्ते नत रावे न बाध्यते नच कर्मणा लाध्यते नच केनापि योगी युक्तः समाधिना निरातंके निरालंबे निराहारे निराश्रयी योगी योग विधाने च पराब्रह्मणलीयते ।।''

काहें की ओकरे लगे ई सिद्धि होला-

महामुद्रा महाबंद, महाबेधश्च षेचरी उड्यानं मूलबंधश्च बंधो जालंधरा वृदं कर्णी विपरीताख्या, बज्रौली शक्ति चालनं इदं हि मुद्वा दशकं जरा मरण नाशनं ।।

ई सब योग क अइसन दस गो मुद्रा हउन जवन जरा आ मरण के मारि के कालजयी बना देलंऽ। बाकिर ओकर सिद्धि कठिन हऽ। एह कठिनाई के कुछ महात्मा समझि के कुछ आसान राहि निकरलें ओही लोगन क आसान खोज रहल अष्टचक्र क जागरण। उहे दिव्य दृष्टि कहल जाला। इहे तिसरकी आँखि ह आ भगवान भोलेनाथ क तिसरकी आँखि इहे हऽ।

प्रकाश क गुन जे जानत होई तेही एके समझि पाई की जवन एगो छोट बिन्दु में बा उहे ओकरे विस्तार में भी बा। ओइसे एके अउर ऊपर जा के एटम के सिद्धान्त हो त अउर सूक्ष्म आ अउर अउर सूक्ष्मतर ले जाइब तब्बो कहीं न कहीं उहे कवनो न कवनो रूप में मिली। भारतीय चिन्तन क धारा कवनो मेड़बन्दी चाहे चकबन्दी नाई मनलस। भारतीय चिन्तन क धारा विरोध के बीच समन्वय क धारा रहल। शिव शक्ति क उदाहरण सामने रखि के बढ़े वाली धारणा रहल। कवनो बाति त रहल न जवने से गोरखनाथ जी एही योग क राहि अपनवलें आ ओही राही पर स्वामी योगानन्दजी चलि के देखवलें।

खोज क विषय खोजत-खोजत खोजे वाले जब अपनहीं हेरा जा तब फिर ओके उहे खोजि पावेला जेके ऊ खोजेले क राहि देखवलें-

''जागि मछंदर गोरख आया.....।'' इहाँ गुरु खोजत-खोजत अपनहीं हेरा गइल ई परम सिद्धावस्था रहल फेर से ओह परम सिद्धावस्था से वापस ले अइले क कार खाली ओकर शिष्य कइ सकेला। मच्छेन्दर के भीतर क मच्छेन्दर केहू दूसर ना, ई उनकर शिष्य गोरखनाथ करत हवें। एह में गुरु क महिमा अउर बढ़ जात बा। योग क ई बड़ा जटिल रहस्य हवे जवन खाली कवनो योगी समझि पाई आ खाली कवने योग मार्ग पर चले वाले के समुझा पाई।

एक बाति अउर साधु आ संत में बड़ा अन्तर होला। साधु जहवां ईश्वर खातिर परेशान

www.bhojpurisahityangan.com

रहेलन। ओहीं ईश्वर संत खातिर परेसान होलें। अरे ऊ कई दिन से कुछ नाई खइलस-

संत सोई जो काया साधै तज आलस अरु बाद बिवादे
गहे धारना सब गति भारी तजे विकलता स्तुति गारी
क्षमावंत धीरज को धारें पाचों बस्तर मन के मारें ।
त्यागें झूठ साँच मुख बोले चित स्थिर ई इतउत नहिं डोलें
तन जग में मन हरि के पासा लोग भोग सो सदा उदासा
जब सोचें जब सून्य में जब बोले हरिनाम जब बोलें तब हरिकथा संत करे निष्काम ।।

ई कुलि गुन जब हो जा तब ओके संत कहल जाई। ओहीं जवन योगी होई ऊ एह सबसे अलग होई। ओकरे खातिर देहीं के भीतर के सक्ती क संसार में नाचत इलेक्ट्रोमैगनेटिक फोर्स के साथे जोड़ि दीहल पहिलका डेरा होला। फेर आगे खातिर सज्जो आसान हो जाला।

हमके लागेला कि राजेश्वर जी के भीतर कवनो यात्रीमन हवे जवन ज्ञानलोक क यात्रा सबसे बड़वर बूझत चलि आवत हवें। जे के सज्जो बाहरी चीज में भी सज्जो आपन देखा जाला। ऊ सांस्कृतिक धरातल पर आ खुद अपने पहचान के धरातल पर कहीं अभियन्ता त कहीं कवि हो जालें। अभियन्ता राजेश्वर जी योग खातिर परमहंस योगानन्द जी के चुनत हवें। उनके अभियन्ताई के ढेर नगिच्चे योगानन्द जी मिलत हवें बाकिर राजेश्वर सिंह सांस्कृतिक धरातल पर ढ़ेर नगिच्चे बान, आपन खेत-खरिहान, आपन बोली-भासा, आपन डीह बाबा, गाँव हेरा गइले क दुख, ओही श्रीराम महायज्ञ में कइसन कथा जुड़त चलि जात हवें। ई अपने राजेश्वर सिंह क आपन अलग पहचान हवे। कवि भी हवें बाकिर संकोची, बड़वर भूतपूर्व अधिकारी क गरिमा कइसे बचावत समाज में रहल जाला ओहू क धियान रखत हवें। भगवान उनके बड़वर उमिरि दे, उनसे भोजपुरी भासा आ समाज के ढेर उम्मीद बा। सबसे

आखीर में गोपालपुर एकठो स्टेट रहल आ ऊ ओही राजघराना के सबसे नजदीकी परिवार क सदस्य हवं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

९८

भोजपुरी के अनन्य साधक : इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी

-प्रो० चितरंजन मिश्र

इंजीनियर राजेश्वर सिंह एक सहज मान, निस्पृह, कार्यनिष्ठ और भोजपुरी के विकास के लिए संकल्प पूर्वक समर्पित शालीन व्यक्तित्व के रचनाकार, अनुवादक, आयोजक, संयोजक और मिलनसार आदमी हैं। इतना सब कुछ करने के बाद भी उनके मन में कर्ता-भाव का अहंकार कभी दिखाई नहीं पड़ता है। इंजीनियरिंग की पढ़ाई और उसके बाद उत्तर प्रदेश सरकार के जल निगम के अधीक्षण अभियन्ता जैसे ऊंचे पद से अवकाश ग्रहण कर लेने का बाद वे तमाम धनी-मनी लोगों की तरह अपना और अपने परिजनों का पालन-पोषण भी करते हुए जिसे आज की भाषा में सुख या आराम कहा जाता है, संतोषपूर्वक जीवन यापन करते हुए भी सम्मान का जीवन जी सकते थे, पर उनके मन में एक सजग रचनाकार का उदय भी अफसरी करते हुए ही हो गया था, जिसने उन्हें अवकाश ग्रहण करने के बाद भी चैन नहीं लेने दिय और उन्हें कापी, किताब, कलम, कविता व कहानी की दुनिया में सक्रिय कर दिया। अपनी इसी रचनात्मक बेचैनी के कारण वह अपनी सेवा अवधि में लगातार लिखते, रचते, सोचते, बुनते, गुनते, गुनगुनाते रहे और उनके अनेक कहानी संकलन और कविता संकलन भोजपुरी और हिन्दी में प्रकाशित होते रहे। अपनी इसी रचनात्मकता के कारण श्री राजेश्वर सिंह जी को उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाओं के द्वारा पुरस्कृत और सम्मानित होकर अपनी जन्मभूमि और कर्मभूमि का मान बढ़ाया है।

ऐसा लगता है कि राजकीय सेवा से रिटायरमेन्ट के बाद इंजीनियर राजेश्वर सिंह की रचनात्मक प्रतिभा की भेंट भोजपुरी के यशस्वी योद्धा और कवि, गीतकार, स्वर्गीय सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन जी' से हो गई और उनकी विशेष जिद्द या कि प्रेरणा के कारण इंजीनियर साहब ने भोजपुरी की रचनात्मक दुनिया को समृद्ध करने का संकल्प कर लिया। उनकी अपनी रचनाओं में तो भोजपुरी अंचल के जीवन के सुख-दुख का, कतर ब्योंत का नाप-जोख का जीवंत और मार्मिक चित्रण है ही पर उन्होंने संस्कृत के महत्वपूर्ण ग्रन्थों को भोजपुरी भाषी जनता के लिए उसकी भाषा में अनुदित करके उपलब्ध कराने का जो अपार उद्यम किया है, वह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। श्रीमद्भागवत कथा समूचे भारतीय चिन्तन और संवेदना का अमृत ग्रन्थ है।

www.bhojpurisahityangan.com

उसे भोजपुरी में अनुदित करना यदि एक ओर भोजपुरी की महान सेवा है तो दूसरी ओर भारतीय संस्कृति, साधना, वैष्णव परम्परा का अथाह आवाहन भी है। श्रीमद्भागवत ऐसा महान् ग्रन्थ है जिसके बारे में कहा गया है कि वैष्णव साधना और संवेदना का यह आधार ग्रन्थ है। इसी से प्रभावित होकर कदाचित इंजीनियर साहब ने राम भक्तों, कृष्ण भक्तों और इस इलाके के सभी साधकों, साधु पुरुषों की संक्षिप्त जीवनचर्या और उनकी साधना भूमियों का भी बहुत विश्वसनीय वर्णन किया है और उसे विषयानुसार विभाजित करके अलग-अलग ग्रन्थों में प्रकाशित किया है। भोजपुरी में महाभारत की पूरी कथा और पंचतन्त्र की कथाओं को सामने लाना उनके महत्वपूर्ण प्रयास हैं।

परमहंस योगानन्दजी की आत्मकथा का भी भोजपुरी में अनुवाद कर चुके हैं। परमहंस योगानन्दजी गोरखपुर में जन्म लेने के वाले उन महान व्यक्तियों में भी श्रेष्ठ हैं जिन्होंने अपनी साधना से दुनिया भर में अपने शिष्य बनाए। उनकी आत्मकथा का हिन्दी अनुवाद, योगी कथामृत अपने समय में ज्यादा से ज्यादा पाठको द्वारा पढ़ी जाने वाली, सराही जाने वाली और उनकी चेतना को प्रभावित करने वाली किताब रही है। उसे भी भोजपुरी में उपलब्ध कराने का महनीय कार्य इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी ने किया है। इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी के भण्डार की श्री वृद्धि के अपने संरचनात्मक संकल्प को पूरा करने के लिए अपने निजी संसाधनों के साथ जुटे रहते हैं, यह एक वायरस बात है। इतना कुछ करते रहने के बाद भी उनकी निराभिमानिता, उनकी सहजता और उनका सौम्य विनम्र व्यक्तित्व लगातार लोगों को प्रभावित करता रहता है।

'भोजपुरी संगम' के अध्यक्ष के रूप में भी वे स्वर्गीय सत्तन जी के सपनों को मूर्त रूप देने में, करने में तन-मन-धन से समर्पित हैं। उनके भावों का, उनकी रचनात्मकता का, उनके संकल्प का और उनके समर्पण का सम्मान करते हुए मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी को वह और शक्ति तथा भरपूर आयु प्रदान करें, जिससे वो भोजपुरी समाज की अधिक से अधिक सेवा कर सकें। साथ ही इस अंचल की युवा पीढ़ी को संस्कृत के और भी महान् ग्रन्थों से भोजपुरी के माध्यम से प्रभावित कर सकें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

९९

साहित्यिक अभियंत्रण के विलक्षण शब्द पुरुष : इंजीनियर साहब

-डॉ० सुधीर श्रीवास्तव 'नीरज'

अगर तनिक पाछे पहुंचि के सवाचल जा कि भोजपुरी संगम अपने जिला जवार से लांघि के अपने सूबा भा बिहार ले भोजपुरी के बढ़वले खातिर केतना पुरहर प्रयास कइले बा त ऊ एक नजर में समेटल कठिन बा, ओहकर जेतने बड़ाई कइल जा कम्मे बा। लेकिन इंजीनियर साहब के जीवन वृत्त पर ई जवन संग्रह छपले के बीरा उठावल बा ऊ बहुते प्रणम्य बा।

इंजीनियर साहब के हम करीबन दस-बारे बरीस से जानऽ तानी, देखत सुनत आ गुनतं चलि अइनी बाकिर अइसन लगेला कि अबहिन बहुत कुछ जानल बाकी बा।

ई जानि के बहुते खुशी होता कि प्रतिष्ठित साहित्यकार, भाषा विज्ञान के मर्मज्ञ इंजीनियर साहब के व्यक्तित्व अउर कृतित्व के केन्द्र में राखि के एगो अभिनन्दन ग्रन्थ 'भोजपुरीभूषण' प्रकाशित होखे जा रहल बा। इंजीनियर साहब एगो बहुआयामी अउर प्रख्यात साहित्यचेता व्यक्तित्व हईं। उहां के हिन्दी अउर भोजपुरी साहित्य के अपनी अविरल साधना से संवारत बानी। दर्जन भर से ढेर ग्रन्थ एहकर गवाह बा। दर्जन भरि से ढेर संस्था से जुड़ल आ आपन सहयोग, योगदान आ संरक्षण दे रहल बानी। जवने में भोजपुरी संगम सबसे बड़हन साक्षी बा। जवने के आप संरक्षक बानी आ संगम आपके संरक्षण में फलि फूलि रहल बा।

जइसन कि उजागिर बा कि राजेश्वर सिंह जी इंजीनियर रहल बानी उहो मण्डल स्तर के दायित्व संभलले रहलीं ओकरे बादो रउरे साहित्य में जेतना गहिरे उतरल बानी ऊ एगो नजीर बा।

आप ओह दुर्लभ लोगन में हईं जेकर सहृदयता, आत्मीयता अउरी ईमानदारी हर परिस्थिति आ हर पहलू में आर पार झलकत रहेला। केहू के सहायता कइल आपके स्वभाव के अंग ह, एतने नाहीं आप केहू अउरी के समस्या के आपन समस्या मानि के हरदम ओकरे

www.bhojpurisahityangan.com

निस्तारण खातिर तइयार रहेलीं। हमके पूरा यकीन बा कि इंजीनियर साहब के साथे रहे वाले लोग एह बाति के महसूस कइले होइहें।

इंजीनियर साहब साहित्य में जहां एक ओर गद्य आ काव्य से साहित्य के समृद्ध क रहल बानी ओही जा आध्यात्मिक लेखन आ स्वास्थ्य लाभ के सचेत करे खातिर भी आपके कलम ओतने गति से चलि रहल बा।

राम पियारा साधु-संत, भोजपुरी महाभारत, योगी कथामृत, दीक्षा गुरु, घरेलू नुस्खा, भोजपुरी पंचतंत्र जइसन अनेकानेक ग्रन्थ आप रचलीं आ अबहिन न जाने केतने पुस्तक आइल बाकी बा। वास्तव में आप हिन्दी के साथे साथ भोजपुरी के समर्थ सिपाही बानी।

आपके ऊपर आवे वाला अभिनन्दन ग्रन्थ 'भोजपुरीभूषण' भोजपुरी साहित्य के अउर बरियार करी, हम्मन के मार्गदर्शन देई आ प्रेरणास्रोत बनी ईहे कामना बा।

ईश्वर आपके निम्मन स्वास्थ्य के साथ शतायु करें आ भोजपुरी संगम आ समाज के राउर आशीष मिलत रहे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१००

भोजपुरी योगी कथामृत : एक आनुवादिक दार्शनिक प्रत्याख्यान

-डॉ० अंगद कुमार सिंह

जन्मना गोरखपुर के और कर्मणा अमेरिका के विद्वान्, सन्त-दार्शनिक योगानन्दजी महाराज द्वारा प्रणीत 'योगी कथामृत' का भोजपुरी में प्रशस्त गद्यानुवाद कर उपनगर गोला बाजार के पार्श्वभाग में बहने वाली सदानीरा सरयू के किनारे अवस्थित गोपालपुर इस्टेट के अधिवासी इं० राजेश्वर सिंह ने एक ऐतिहासिक शब्दयज्ञ पूर्ण किया है। भोजपुरी योगी कथामृत अभिसंज्ञक आनुवादिक भोजपुरी कृति का सर्वेक्षण और समीक्षण कर मुझे प्रचुर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। साथ ही विस्मयकारी सन्तोष की भी। अभियान्त्रिकी के एक वैज्ञानिक स्कॉलर ने साहित्य की दरिया में उतरकर भोजपुरी-अनुवाद का जो नौकायन किया है वह उन्हें भोजपुरी-साहित्येतिहास में एक स्वतन्त्र अध्याय बनाने की लिए पर्याप्त है।

यह किसे पता था कि एक दिन समरबहादुर सिंह तथा परमजोता देवी का इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वाला सुपुत्र आगे चलकर अनेक भोजपुरी व हिन्दी ग्रन्थों की रचना कर सूर्य समान साहित्याकाश को प्रकाशित करेगा। बाबू राजेश्वर सिंह जी अप्रैल २०१० को उ० प्र० जल निगम के अधीक्षण अभियन्ता पद से कृतकार्य हुए, परन्तु इनकी साहित्यिक यात्रा का आगाज २००३ में ही हो गया था और वर्तमान समय में इनकी यह यात्रा अविछिन्न रूप से चल रही है। आपका अंग्रेजी, हिन्दी, भोजपुरी भाषा पर समान अधिकार है, पर अंग्रेजी को रोटी-रोटी तक ही सीमित रखते हुए, आपने अपनी माटी की भाषा को रचनाओं द्वारा पोषित और पल्लवित करने का उद्यम किया। आपकी हिन्दी कृतियाँ हैं-

१- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), २- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४, ३-जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी (वर्ष २००४), ४- सुख जागे दुःख भागे (वर्ष २००४), ५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), ६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष

www.bhojpurisahityangan.com

२००६), ७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), ८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७) तो भोजपुरी रचनायें हैं -

१- जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), २- कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७), ३- पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६), ४- भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८), ५- राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९), ६- श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०), ७- भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०), ८- दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०), ९- घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०, १०- भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१), ११- भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२), १२- भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३)।

आपकी रचनाओं का समय-समय पर संस्थाओं द्वारा मूल्यांकन किया जाता रहा और अनेक सम्मान और उपाधियाँ भी मिलती रहीं। आपने 'महात्मा जेतिबा फुले फेलोशिप सम्मान', 'प्रेमचन्द सम्मान', 'मेलाडी सम्मान-२००८', 'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान', 'आध्यात्मिक रत्न सम्मान', 'साहित्य कला शिरोमणि सारस्वत सम्मान', 'संगम साहित्य सुमन सम्मान', 'नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान', 'सरयू रत्न सम्मान', 'सन्त कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-२०२१' प्राप्त किया तो विक्रमशिला विद्यापीठ, भागलपुर द्वारा 'विद्यावाचस्पति', 'विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न' एवं 'भारत गौरव' सम्मानोपाधियाँ भी।

राजेश्वर सिंह सरयू की पावनता है तो इंजनियरिंग का विवेक भी। साहित्य की समझ है तो संस्कार की नजाकत भी। इसीलिए वे पूज्यपाद परमहंस योगानन्द जी महाराज की कथाओं का भोजपुरी भाषा में 'भोजपुरी योगी कथामृत' नाम से अनुवाद करने में सफल भी हुए। यह पुस्तक ४९ प्रकरणों (अध्यायों) तथा ६३४ पृष्ठों में संकलित है तथा योगानन्दजी के जीवनानेक पक्षों को उजागर करती है, इसके प्रकरण हैं, हमार माई-बाप अउर लइकई, महतारी क मुअल अउर अलौकिक ताबीज, दू देह धरे वाला संत, हिमालय के ओर हमरे रवानगी में रुकावट, गंधबाबा के चमत्कारी कारनामा, बाघ स्वामी, प्लवनशील सन्त, भारत क महान वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र बोस, परमानन्दमग्न भक्त अउर उनकर ईश्वर के साथ प्रेमलीला, आपन गुरु श्रीयुक्तेश्वरजी से हमार भेंट, दू गरीब लइका वृन्दावन में, अपने गुरु के आश्रम में पड़ाव अवधि, उनींदा संत, समाधि लाभ, फूल गोभी क चोरी, ग्रह शान्ति, शशि अउर तीन गो नीलम, एगो मुस्लिम चमत्कारी, हमार गुरु कोलकाता में, प्रकट होत हवं श्रीरामपुर में, कश्मीर-यात्रा में बाधा, हमार कश्मीर-यात्रा, पाथर मूर्ति क दिल, विश्वविद्यालय से उपाधि पावल, स्वामी-संस्थान के अन्तर्गत हमार संन्यास लिहल, भइया अनन्त अउर बहिन नलिनी, क्रियायोग विज्ञान, रांची में योग-विद्यालय क स्थापना, काशी क पुनर्जन्म अउर वोकर पता लगावल, रवीन्द्रनाथ टैगोर अउर हमरे विद्यालय क तुलना, चमत्कार क नियम, पुण्यशीला महतारी से भेंट, मुअले राम के फिर से जियावल,

www.bhojpurisahityangan.com

आधुनिक भारत क महावतार बाबाजी, हिमालय में महल, लाहिड़ी महाशय क अवतार जइसन जिनगी, पश्चिम के प्रति बाबाजी क अभिरुचि, हमार अमेरिका गइल, लूथर बरबैंक-गुलाबन के बीच एगो सन्त, ईसा-क्षतचिन्ह-धारिणी कैथोलिक संत टेरेसा नॉयमैन, हमार भारत लवटल, दक्षिण भारत में एगो कवितई जइसन नजारा, अपने गुरु के साथ कुछ आखिरी दिन, श्रीयुक्तेश्वर जी क पुनरुत्थान, महात्मा गांधी के साथ वर्धा में, बंगाल का आनन्दमयी माँ, निराहारी योगिनी, हम पश्चिम लौटलीं, एन्सिनीटास (कैलिफोर्निया) में, १९४० से १९५९ क समय।

प्रकरण-१ में योगानन्द जी के बचपन का वर्णन है जिसमें वे खुद अपने बारे में स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि, 'हमार जन्म पूर्वोत्तर भारत में हिमालय पर्वत के निकट बसल गोरखपुर (उ०प्र०) में ५ जनवरी सन् १८९३ ई० के भइल रहल।' (भोजपुरी योगी कथामृत, इं० राजेश्वर सिंह, लोकायत प्रकाशन, लंका, वाराणसी, प्रथम संस्करण २०२३, पृष्ठ २) योगानन्द के पिता धनलोलुप न होकर विरक्त स्वभाव के थे, जिसका एक उदाहरण-'***धन संचय कइले में बाऊ के कउनो रुचि ना रहे। कोलकाता अर्बन बैंक क गठन कइले के बाद खुद अपने लाभ खातिर वोकर शेयर रखले से इन्कार कइ दिहलन। उनकर इच्छा रहल अपने खाली समय में खाली आपन नागरिक कर्त्तव्य क पालन कइले क।*** (प्रकरण-१, पृष्ठ ५)

योगानन्द जी जब अपनी माँ की मृत्यु पर घर पहुँचे और पसरे हुए सन्नाटे को देखकर बेहोश हो गये और होश आने पर हम '***माई ! माई ! कहिके चिल्लाये लगलीं। दुखी मन के पुकार सुनके जगज्जननी से ना रहल गइल, ऊ प्रकट हो गइली।*** (प्रकरण-२, पृ० १५-१६) बचपन में ही मुकुन्द (योगानन्द जी) के बारे में संकेत मिलने लगा था कि यह बालक आगे चलकर योगी होगा। एक बार गुरु जी ने बताया था कि, 'छोटी माँ ! तुहार बेटवा एगो योगी होयी। एक आध्यात्मिक इंजन बन के ऊ बहुतेरे आत्मा के ईश्वर के साम्राज्य में ले जायी।' (प्रकरण-२, पृ० १८) भारतीय अवधारणा भी यही है कि 'पूत के पाँव पालने में ही दिखायी देने लगता है।' प्रणवानन्दजी के पास जब मुकुन्द पहुँचे तो वे मौन साधना कर रहे थे इसलिए उन्होंने उनका पैर छूकर जाने की आज्ञा माँगी तो गुरुदेव के मुख से आशीर्वाद स्वरूप निकल पड़ा-'***तुहार जिनगी संन्यास अउर योगमार्ग खातिर हउए। तुहरे बाऊ अउर तुहरे संग फिर एक बार भेंट होयी। कइ बरिस बाद उनकर दूनो भविष्यवाणी साँच साबित भइल।*** (प्रकरण-३, पृ० २९) बचपन से ही मुकुन्द आध्यात्मिक ज्ञान की ओर अपने चरण बढ़ाना शुरु कर दिये थे, इसलिए हिमालय की ओर घर छोड़कर भाग गये, परन्तु पकड़ लिये गये तथा घर पहुँचने पर पिता जी ने भावुक होकर कहा कि, 'कम से कम ऊँचे दर्जा क पढ़ाई पूरा कइ लेत तब येने-वोने जहाँ जी चाहत घूमत-फिरत' (प्रकरण-४, पृ० ४०) उनके पिता को यह लग रहा था कि आध्यात्मिक ललक किसी विद्वान् दार्शनिक से शिक्षा दिलाने से शान्त हो जायेगी, पर शिक्षा मिलने पर सब

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ उलट गया। गुरुदेव ने कहा कि, 'चेला क समस्या चाहे जवन भी हो, वोकरे समाधान खातिर गुरुदेव क्रियायोग क ही सलाह दिहल करें।' (प्रकरण-४, पृ० ४२)।

वाल मुकुन्द गन्ध बाबा के बारे में सुन रखा था कि कोई साधु ऐसे हैं जो यौगिक क्रिया में अनुभव सिद्ध हैं। वे अपनी योगक्रिया द्वारा मनचाहा फल प्राप्त करने में सफल हुए हैं। इसलिए ज्ञान प्राप्ति के लिए वे बाघ स्वामी के पास गये तो वहाँ की प्रकृति को देखकर उनको नया एहसास हुआ और उसका वर्णन करते हुए कहते हैं-'प्राकृतिक सुन्नरई से भरल ई प्रदेश हमरे खातिर नया रहल। हम सुख के बदलाव क आस लगावे लगलीं। (प्रकरण-४, पृ० ६२-६३)। जगदीश चन्द्र बोस ने एक जगह कवि के बारे में स्पष्ट शब्दों में कहा है कि-'कवि सत्य से अन्तरंग होला, जबकि वैज्ञानिक अजीबो गरीब ढंग से वोह ले पहुँचले क कोसिस करेला। कउनो दिन हमरे प्रयोगसाला में आइके क्रेस्कोग्राफ के साँच सबूतन के निरेखि ल।' (प्रकरण-८, पृ० ७८) बोस जी ने आगे भी विज्ञान पर बातचीत के सिलसिले में कह गये- *'विज्ञान न त पूरब क ह न पश्चिम क, बलुक आपन सबकर जरूरत के कारन ऊ सब देशन क ह, बाकिर एहमें भारत महान योगदान दिहले के कारन विशेष रूप से योग्य ह।* (प्रकरण-८, पृष्ठ ८०)।

घर से बाहर जाने के लिये मुकुन्द अपने पिता से आशीर्वाद लेने गये तो उन्होंने पीड़ादायक शब्दों में कहा कि, *"मुकुन्द ! हम तुहसे आखिरी बार निहोरा कइ रहल हयीं कि हमके अउर अपने शोक में डूबल भाई-बहिनिन के जिन तज।"* (प्रकरण-१०, पृष्ठ १००) तब जवाब देते हुए मुकुन्द ने स्पष्ट शब्दों में उनके आगाह करते हुए कहा कि, *"पूज्य पिताजी ! हम आपके प्रति आपन प्रेम कउने शब्दन में जाहिर कइ सकेलीं ? बाकिर वोह परमपिता खातिर हमार प्रेम वोहू से बढ़के हउए, जे हमके एह लोक में आप जइसन आदर्श बाऊ दिहलस। हमके जाये देयीं ताकि हम कउनो दिन जियादा दिव्य ज्ञान के साथ आपके लग्गे लवटि सकीं।"* (प्रकरण-१०, पृष्ठ १००)।

मुकुन्द अपने गुरु श्रीयुक्तेश्वर जी के आश्रम में दीक्षा लेने गया तो उन्होंने स्पष्टत संकेत देते हुए कहा-"अब हमार निहोरा ह कि तूँ अपने परिवार में लवटि जा। हम चाहत हयीं कि तूँ कोलकाता जाइ के कालेज में दाखिला ले ल। तुहार आगे क पढ़ाई चलत रहे के चाही। आगे कब्बो तुहें पश्चिम के दुनिया में जाये के पड़ी। उहवाँ क लोग भारत क पुरान ज्ञान के सीखे के लालाइत होहिहें जदि कउनो अपरिचित हिन्दू गुरु के लग्गे विश्वविद्यालय क डिग्री होई।" (प्रकरण-१२, पृष्ठ १२३)।

इसलिए कहा जाता है कि सच्चा गुरु वही है जो अपने शिष्य के भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में जानकर अपना निर्णय बहुत सोच-विचार कर देता है। गुरु की बात मानकर वे विद्याध्ययन करने लौट आये और विचारमग्न होकर सोचने लगे कि, *" ईश्वरत्व में मनुष्यत्व के*

www.bhojpurisahityangan.com

विलय भइले में गुरुदेव कउनो बड़हन बाधा ना पवलन। बाद में हमरे समझ में आइल कि खाली मनईन के आध्यात्मिक प्रयास क कमी के अलावा अइसन कउनो बाधा ना होत।'' (प्रकरण-१२, पृष्ठ१४०)। संसार में जीवन जीते हुए प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्त्तव्य का भली-भाँति पालन करना चाहिए, क्योंकि इसके बिना किसी का जीना मरने के समान है। गुरु जी उपदेश देते हुए बताया कि, *''जे लोग एह जगत खातिर उपयोगी होलन, ऊ कउनो दूसर जगत् क भी शोभा बनेलन. जब तक तूँ एह धरती के मुक्त हवा क साँस ले रहल हव तब तक बदले में कृतज्ञता के साथ सेवा दिहल तुहार कर्तव्य हउए। खाली जे समाधि में बिना साँस के अवस्था में रहे जान गइल, उहे भर जगत् में कर्तव्यन से मुक्त ह।''* (प्रकरण-१२, पृष्ठ-१४४)।

गुरु और शिष्य का प्रेम अटूट होता है जिसे व्याख्यायित करना दूसरे किसी के वश की बात नहीं। कोलकाता में जब मुकुन्द अपने गुरु के आश्रम में गये और कहे कि गुरुदेव मैं आ गया। दोनों एक-दूसरे से आँखें चार हुई तो भावधारा आँसू के रूप में प्रकट हुई-''आनन्द क एगो लहर हमके मग्न कइ दिहलसि। हमके ई बोध होत रहल कि हमरे गुरु रूप में साक्षात् भगवान हमरे हृदय क प्रेम के सीमा के विराट प्रेम में फइला रहल हवं।'' (प्रकरण-१४, पृष्ठ १७४)। भारतीय संगीत अनुभूति पर निर्भ आध्यात्म को उजागर करने का काम करती है। इशका एक खण्डांश-''हिन्दू संगीत अपने अनुभूति पर आधारित आध्यात्मिक अउर व्यक्ति पर आधारित कला ह जवने क लक्ष्य बाजा बजाने वालन के प्रतिभा देखावल ना ह, बलुक परम-आत्मा के साथ आपन मेल बइठावल ह।'' (प्रकरण-१५, पृष्ठ १९५)।

ग्रह-नक्षत्र का वर्णन बहुत ही वैज्ञानिक पद्धति पर करते हुए गुरुदेव ने बताया कि ये किसी का हित-अहित करना नहीं चाहते बल्कि- ''ऊ त खाली धनात्मक (Positive) अउर ऋणात्मक (Negative) किरणन के निःसारित करेलन। अपने आप में ई मनइन के कउनो लाभ भा हानि ना पहुँचवतन, बाकिर मनई द्वारा पहिले कइल कार्यकारण के सन्तुलन के बरकरार रखे बदे बाहरी स्तर पर कार्यप्रणाली क एगो विधिवत माध्यम पेश करेलन।'' (प्रकरण-१६, पृष्ठ २०१)। श्रीयुक्तेश्वर जी की कृपा से शशि को रोग से निजात मिला, तब उसने कहा कि गुरुदेव क्या मैं दवा का सेवन कर सकता हूँ तो गुरु ने उत्तर दिया कि, ''जइसन तूँ चाहऽ, ल चाहे फेंक द, एहसे कउनो फर्क ना पड़ी। अब तुहार क्षय रोग से मुअल वोतने असम्भव ह जेतना सूरज अउर चन्द्रमा क आपस में आपन स्थान बदलल।'' (प्रकरण-१७, पृष्ठ २२२)।

अफजल एक चमत्कारी व्यक्ति था। वह जिस सामान को छू देता वह गायब हो जाता। इतना ही नहीं वह सोने की थाली भी मँगा सकता था फिर बी उसे दूसरे की सम्पत्ति की लालसा रहती। इस बात को बताते हुए श्रीयुक्तेश्वर जी ने कहा कि, ''अफजल आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत उन्नत ना रहल। योग क एगो विशेष प्रक्रिया पर प्रभुत्व पा लिहले से वोकर पहुँच एगो अइसन

www.bhojpurisahityangan.com

सूक्ष्म लोक तक हो गइल रहे जहवाँ कउनो भी इच्छा के पूरा कइल जा सकेला।'' (प्रकरण-१८, पृष्ठ २३१)। योग-पद्धति के बारे में जैसा वर्णन इस पुस्तक में किया गया है वैसा बहुत ही कम देखने को मिलता है। एक नमूना-''एगो गुप्त योग पद्धति के जरिये संत अपने मन अउर सूक्ष्म देह के पीड़ित व्यक्ति के मन अउर सूक्ष्म देह के साथ जोड़ देला अउर एह प्रक्रिया में रोग पूरा भा आंशिक रूप से योगी के शरीर में चलि जाला।'' (प्रकरण-२१, पृष्ठ ५६)। योग की साधना के लिए ज्ञान का होना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि, ''जवने धारणाअन पर योग आधारित ह, वोह धारणाअन के ज्ञान के बिना योग-साधना विशेष असरदार ना होयी। ई साधना शारीरिक अउर आध्यात्मिक पहलुअन में जइसे-तइसे सामंजस्य पैदा कइ देले।'' (प्रकरण-२४, पृष्ठ २८८)।

क्रियायोग का वर्णन भी इस पुस्तक में सरल शब्दों में किया गया है-''क्रिया योग एगो सरल मन:कायिक प्रणाली ह जवने से मनई के खून से कार्बन निकल जाला अउर ऊ आक्सीजन से भरि जाला।'' (प्रकरण-२६, पृष्ठ ३००) क्योंकि क्रियायोगी लोग ''मन से अपने प्राणशक्ति के मेरुदण्ड के छ: चक्रन (आज्ञा, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, स्वाधिष्ठान अउर मूलाधार) में ऊपर-नीचे घुमावेला। ई छ: चक्र विराट पुरुष के प्रतीक स्वरूप राशिचक्र क बारह राशियन के समान हयीं।'' (प्रकरण-२६, पृष्ठ ३०४) नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के विकास के लिए योगानन्द जी ने एक विद्यालय की स्थापना राँची में की। जिसमें-''छात्रन क यौगिक ध्यान, स्वास्थ्य अउर शारीरिक विकास क खास 'योगदा' पद्धति क, जवने के सिद्धान्तन के हम १९१६ में खोज कइले रहलीं, शिक्षा दिआये जाये लागल।'' (प्रकरण-२७, पृष्ठ ३१५)।

एक बार मुकुन्द जी लाहिड़ी महाशय की धर्मपत्नी श्रीमती काशीमणिजी से मिलने गये तो वे उनको एक कमरे में ले गयीं, जहाँ वह रहती थीं। उन्होंने एक रहस्य की चर्चा करते हुए योगानन्दजी से बताया कि ''कई सालन बादे हमके अपने पति क दैवी महानता क पहिचान हो पवलस। एक रात एही कमरा में एगो साफ-साफ सपना लउकल। तेजस्वी देवता लोग अकल्पनीय मोहकता लिहले हमरे माथे के ऊपर हवा में तैरत रहलन। ऊ दृश्य एतना साँच लागत रहे कि हम तुरन्ते जाग गइलीं, बहुते अचरज क बात रहे कि ई कमरा प्रकाश से भर गइल रहे। पद्मासन में बइठल हमरे पतिदेव कमरा के बीचोबीच देवता लोग दुनो हाथ जोड़ले हमरे पति के पूजत रहलन। हम एतना चकित भइलीं कि हमके लागत रहे कि अबहिनों हम सपनवें में हयीं।'' (प्रकरण-३१, पृष्ठ ३५६) लाहिड़ी महाशय ऐसे सन्त थे जो सभी धर्म के लोगों को क्रियायोग की शिक्षा देते, उनके हिन्दू के साथ-साथ और भी सम्प्रदाय के लोग शिष्य थे। एक दृष्टान्त-''हर धर्म के लोगन के क्रियायोग दीक्षा क दान लाहिड़ी महाशय के जिनगी क एगो खास बात रहल। खाली हिन्दुए ना, बलुक खास चेलन में मुसलमान अउर ईसाई भी रहलन।'' (प्रकरण-३५, पृष्ठ ४१५)।

www.bhojpurisahityangan.com

कुम्भ मेला का बहुत ही सटीक और सजीव वर्णन इस पुस्तकम में हुआ है-"बहुते पुराने समय से भारत में कुम्भ मेला लगत हवं। एह मेलन के जरिये आध्यात्मिक लक्ष्यन के सामान्य जनता लगातार बरकरार रखले ह। हर बारह वर्षन के बाद लाखों श्रद्धालु हिन्दु हजारन साधु, योगि, स्वामि अउर सब तरह के तपस्वीन से मिले खातिर इकट्ठा होलन। एहमन बहुतेरे तपस्वी अइसन-अइसन होलन जे खाली कुम्भ मेलन में ही आइके सांसारिक नर-नारियन पर अपने आशीर्वादन क वर्षा करेलन।" (प्रकरण-३६, पृष्ठ ४२७) लूथर जब राँची के विद्यालय में आये तो वहाँ के वातावरण को देखकर आनन्द से भर गये और "हमार शब्द उनके हृदय क सबसे नाजुक तार के छेड़ दिहलस। लइकन क शिक्षा उनकर सबसे प्रिय विषय रहल। ऊ हमरे ऊपर सवालन क झड़ी बरसावे लगलन। उनके गहिर, शान्त आँखिन में उत्सुकता चमक उठल।" (प्रकरण-३८, पृष्ठ ४५५) इतना ही नहीं, मैंने "प्रकृति कोसिस कइ के सम्हाल के राखल आपन बहुते रहस्य बरबैंक के सामने प्रकट कइ दिहलसि। प्रकृति के साथ घनिष्ठ एकरूपता बरबैंक में असीम आध्यात्मिक श्रद्धा पैदा कइ दिहलसि।" (प्रकरण-३८, पृष्ठ ४५८) टेरेसा के बारे में मुकुन्द ने कहा कि, "मनई के देह क बैटरी खाली जड़ अन्न से ही ना, बलुक सगरो ब्रह्माण्ड में मौजूद स्पन्दशील महाप्राण (ओम, नादब्रह्म भा शब्द) से जिन्दा रहेले। ई न दिखाई देवे वाली ताकत मेरुशीर्ष (Medulla Oblongata) के दुआर से शरीर में घुसेले। शरीर में ई छठवां केन्द्र गर्दन के ऊपर पिछले हिस्सा में मेरुदण्ड के पाँच चक्रन के ऊपर स्थित होला।" (प्रकरण-३९, पृष्ठ ४६७-४६८) जब योगानन्दजी अमेरिका से भारत लौटकर आये तो उनके पिता *"प्रगाढ़ आलिंगन में बान्ह लिहलन मानो हम मरि के जी गइल होईं। काफी समय ले हम दूनो जनी एक-दूसरे के निहारलीं, आनन्द जियादा हो गइले से दूनो जनी के मुँहे कुछऊ ना निकलत रहे।"* (प्रकरण-४०, पृष्ठ ४७८) राँची-विद्यालय में देने वाले ज्ञान की खासियत का वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि, *"राँची के विद्यालय क खासियत ई ह कि इहवाँ क्रियायोग क दीक्षा दीहल जाले। लइका रोज आध्यात्मिक साधना अउर गीता पाठ करेलन। उनके उपदेश अउर प्रत्यक्ष उदाहरन के जरिये सादगी, त्याग, आत्मसम्मान अउर सच्चाई के पालन क शिक्षा दीहल जाले।"* (प्रकरण-३९, ४८२) महान योगी वही है जो कम बोले, इसलिए मुकुन्द जी ने केशवानन्द जी से विनम्रतापूर्वक निवेदन किया कि आप अपने जीवन के बारे में कुछ प्रकाश डालिए। तो उन्होंने बताया कि, *"बाहरी नजरिया से हमरे जिनगी में कुछ खास ना ह। हमार सगरो जिनगी हिमालय में ही बीतल, जहवाँ एक गुफा से दूसर गुफा तक हम पैदल ही जात रहलीं। कुछ समय खातिर हरिद्वार के बाहर एगो छोटहन आश्रम बना के हम रहत रहलीं।"* (प्रकरण-४२, पृष्ठ ५१५)।

सूक्ष्म संसार के बारे में श्रीयुक्तेश्वर जी ने बताया कि *"सूक्ष्म जगत् बहुत जियादा सुन्दर, स्वच्छ, शुद्ध अउर सुव्यवस्थित ह। उहवाँ कउनो निर्जीव ग्रह भा बंजर भूमि ना ह। खरपतवार,*

www.bhojpurisahityangan.com

वैक्टेरिया, कीड़ा-मकोड़ा, साँप वगैरह पृथ्वी क श्राप उहवाँ ना हवं। सूक्ष्म जगत् में पृथ्वी के नियर बदले वाली अउर अनिश्चित जलवायु अउर ऋतु ना हयीं। उहवाँ सदैव बसंत ऋतु जइसन ठंड-गरम मिलल जलवायु रहेले अउर कब्बो-कब्बो ज्योतिर्मय बर्फ गिरेले अउर बहुरंगी प्रकाश क बारिस भी होले। सूक्ष्म जगत् के ग्रहन पर स्फटिक जल क झील, सफेद झील अउर इन्द्रधनुषी नदी बहुतायत में हयीं।'' (प्रकरण-४३, पृष्ठ ५२७) इतना ही नहीं यह भी उन्होंने समझाया कि सूक्ष्म जगत में *''केहू नारी-गर्भ से जन्म ना लेत। सूक्ष्म जगतवासी अपने विराट् इच्छाशक्ति के मदद से खास रचना के अनुसार लघु रूप दिहले सूक्ष्म शरीर के अस्तित्व में ले आइ के संतान के प्रकट करेलन।''* (प्रकरण-४३, पृष्ठ ५२९)।

महात्मा गांधी ऐसे व्यक्ति थे जो अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लिये थे। उसका एक उदाहरण-*''कुछ साल पहिले उनकर अपेन्डिक्स क कइल ऑपरेशन क याद हमके आ गइल, जवने के वोह समय बहुत प्रसिद्धि भी दियाइल रहल। बेहोशी क दवा लिहले से इन्कार कइ के आपरेशन के दरम्यान पूरे समय ऊ खुशी मन से ऊ अपने अनुयायियन से बतियावत रहलन, उनके चेहरा पर शान्त मुस्कान साफ बतावत रहल कि उनके दर्द क कउनो अहसास ना होत रहल।''* (प्रकरण-४४, पृष्ठ ५५१)। गान्धी जी ने भारत देश के लिए अनेक त्याग किये, जिसका एक नमूना-*''गाँधी जी अपने वियाहे क जिनगी के काफी शुरुआती दौर में ही अपरिग्रह व्रत ले लिहले रहलन। सालाना ६०,००० रूपया से जियादा आमदनी देवे वाली वकालत तजि के ऊ आपन सगरो सम्पत्ति गरीबन में बाँट दिहले रहलन।''* (प्रकरण-४४, पृष्ठ ५५६) ध्यान ऐसी साधना है जो मानव-मन को स्थिर करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इस ग्रन्थ में ध्यानावस्था का वर्णन बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है-*''आनन्दमयी माँ गहिर ध्यानावस्था में डूब गइलीं। उनकर शरीर कउनो मूर्ति के नियर स्थिर हो गइल। ऊ आपन लगातार बुलावे वाले राज्य में पहुँच गइलीं। उनकर करिया-करिया आँख निर्जीव अउर पथराइल जइसन हो गइलि।''* (प्रकरण-४५, पृष्ठ ५७७)।

कैलिफोर्निया के मकान का वर्णन करते हुए योगानन्दजी ने बताया कि वहाँ-*''छत तक ऊँच बड़-बड़ जंगला से भरल विसाल बीच में बनल हाल से हरियाली, समुद्र अउर आकाश क सुन्दर नजारा मिलल मानो पन्ना, क्षीर स्फटिक अउर नीलम क इस्तेमाल कइ के बहुते सुन्दर चित्र बनावल गइल हो।''* (प्रकरण-४८, पृष्ठ ६०३) अन्त में सभी धर्मों के सार को बताते हुए वे कहते हैं-''काल के कसौटी पर खरा उतरल विश्व क सगरो धर्मशास्त्रन क सार मतलब निचोड़ एके हउए अउर ऊ सगरो मनइन के अधिकाधिक ऊपर उठले क प्रेरना देलन।'' (प्रकरण-४९, पृष्ठ ६१६) जो सच्चा ज्ञान प्राप्त करना चाहता है वह ''ईश्वरीय जोजना के सुरुआती तथ्यन के ज्ञान के नींक से आत्मसात् कइले के जरिये आपन खोज शुरु कइले से सन्तुष्ट होला।'' (प्रकरण-४९, पृष्ठ ६२४)।

www.bhojpurisahityangan.com

कुल मिलाकर इं० राजेश्वर सिंह द्वारा भोजपुरी भाषा में अनुदित "योगी कथामृत" पुस्तक के अध्ययन, मनन और चिन्तन द्वारा कोई भी सहृदय पाठक मुकुन्दर (योगानन्द जी) के जीवन से भली-भाँति परिचित हो सकता है तो उस समय के समाज, शिक्षा और धर्म से भी। इसमें नागरिक के कर्त्तव्य का वर्णन है तो गुरु-शिष्य प्रेम का भी, ग्रह-नक्षत्र का उल्लेख है तो हिन्दू संगीत का भी, कैलिफोर्निया (अमेरिका) का जिक्र है तो भारत के अनेक राज्य का भी। अन्ततः यह कहना समीचीन प्रतीत हो रहा है कि यह पुस्तक योगानन्दजी के सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक जीवन का समेकित प्रमाणिक दस्तावेज है।

❖

कवने महीना में का खाये के चाहीं अउर केथुआ से परहेज करे के चाही

महीना		अंग्रेजी तारीख अवधि	खायीं	तजीं (न खायी)
१	चइत	१५ मार्च से १४ अप्रैल	सबेरे नीम क दूगो पतई	गुड़
२	बइसाख	१५ अप्रैल से १४ मई	बेल के शर्बत	तेलीय चीज
३	जेठ	१५ मई से १४ जून	दिन में थोड़ा सूतीं	जातरा से बचीं
४	असाढ़	१५ जून से १४ जुलाई	कसरत करीं	बेल
५	सावन	१५ जुलाई से १४ अग०	हरणे क दू मुरब्बा	पत्तेदार सब्जी
६	भादों	१५ अग० से १४ सित०	खीर	दही
७	कुवार	१५ सित० से १४ अक्टू०	गुड़	करैला
८	कातिक	१५ अक्टू० से १४ नव०	मूली	माठा
९	अगहन	१५ नव० से १४ दिस०	बादाम व मूंगफली	जीरा
१०	पूष	१५ दिस० से १४ जन०	दूध	धनिया
११	माघ	१५ जन० से १४ फर०	खिचड़ी	मिसरी
१२	फागुन	१५ फर० से १४ मार्च	सबेरे नहाईं	चना

www.bhojpurisahityangan.com

१०१

अभियन्त्रिकी संग भोजपुरिया साहित्य सृजन

-डॉ० रामजनम सिंह

मैं बात कर रहा हूँ गोपालपुर गाँव (गोला) के माटी के लाल इंजीनियर श्री राजेश्वर सिंह जी की। स्व० श्रीमती परमजोता देवी और स्व० श्री समर बहादुर सिंह के पुत्र रूप में श्री राजेश्वर सिंह ने चार अप्रैल १९५० को जन्म लिया। १९७३ में सिविल इन्जीनियरिंग में डिग्री लेने के पश्चात् आप उ०प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद पर लम्बी अवधि तक कार्यरत रहे। अभियन्त्रण सेवा की व्यस्तता के बावजूद भी हिन्दी व भोजपुरी साहित्य सृजन में आप की अभिरुचि को तनिक भी मलिन नहीं कर पायी और सेवा काल में ही अपने मन-मस्तिष्क में स्थापित विषयगत भावनाओं को शाब्दिक कलेवर देना प्रारम्भ कर दिया। आपकी पहली हिन्दी रचना सन् २००३ में 'एक कहानी की आत्मकथा' शीर्षक से प्रकाशित हुई। पुस्तक का शीर्षक ही समूची पुस्तक को एक साँस में बाँचने की उत्सुकता से भर देता है। इं. राजेश्वर सिंह की प्रत्येक रचना उनकी सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक सोच को सटीक शाब्दिक जामा पहनाने में उनकी सफलता की गवाही देती है। पाठक को अपनी ओर प्रारम्भ से अन्त तक बाँधने और आकर्षित रखने की क्षमता रखती है।

श्री राजेश्वर सिंह का लेखन अनवरत जारी है। सन् २००३ से अब तक उन्होंने हिन्दी व भोजपुरी की लगभग दो दर्जन रचनायें समाज को प्रस्तुत किया। इनमें 'जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी' ?, 'सुख जागे दु:ख भागे', 'गाँव से जब शहर आ गये', 'नसीब अपना-अपना' 'पढ़ीं, समझीं, मनन करीं', 'भोजपुरी भागवत कथा-सार', 'भोजपुरी महाभारत' और 'भोजपुरी रामायण' तथा भोजपुरी योगी कथामृत महत्वपूर्ण हैं।

बात मार्च २०२२ की है। मैं पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ (माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश) महाराज के विधान सभा निर्वाचन-२०२२ में उनके निर्वाचन क्षेत्र का कार्य देख रहा था। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर के 'हिन्दू सेवाश्रम' भवन के अपने कार्यालय में था। इसी बीच मेरे मित्र और गाँधी इण्टर कालेज, महुआपार-गोरखपुर के प्रधानाचार्य श्री सुवाष शाही जी मिलने आये। उनके हाथ में 'भोजपुरी रामायण' नाम की एक पुस्तक थी। श्री शाही जी

www.bhojpurisahityangan.com

ने बताया कि यह पुस्तक इं. श्री राजेश्वर सिंह द्वारा लिखी गयी है आपको सादर समर्पित करते हुए उन्होंने निवेदन किया है कि 'आप इसको पढ़ने के पश्चात् इस पर अपनी राय लिख कर देने की कृपा करें।'

'भोजपुरी रामायण' अपने हाथों में पाकर मुझे अति प्रसन्नता का अनुभव हुआ। क्योंकि ६ सितम्बर २०२० को इसी विषय पर लिखी गयी मेरी पहली रचना 'श्री राम कथा' का विमोचन पूज्य महाराज श्री योगी आदित्यनाथ जी के कर-कमलों से हो चुका था। मैंने आगे समय-समय पर इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ा। 'भोजपुरी रामायण' पर महाकवि तुलसीदास की पूरी-पूरी छाप परिलक्षित होती है। लेखक ने श्री रामायण को भोजपुरी-भाषा में लिखने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। कथा के बीच-बीच में भोजपुरी क्षेत्र के लोकगीतों का मनोहारी पुट दिया गया है। चारो राजकुमारों के प्रकटोत्सव के समय अवध-नारियों द्वारा गाया जाने वाला सोहर-गीत पठनीय है-

दुअरा प बाजेला बधइया महलिया उठे सोहर हे ।
ए ललना लिहले जनम श्रीराम त नर नारी खुश भइले हे ।।

इसी प्रकार धनुष-भंग प्रसंग को कजरी गीत के माध्यम से मनोहारी चित्रण किया गया है-

अरे रामा शम्भु धनुष अतिभारी, राम तोरि डारी ए हरी ।

लेखक ने इस अवसर पर श्री लक्ष्मण-परशुराम संवाद एवं राम की विनयशीलता का भोजपुरी शब्दों के माध्यम से प्रभावशाली वर्णन किया है। श्री राम वन-गमन प्रसंग, श्री भरत का चित्रकूट जाना और श्री राम से अयोध्या लौटने की प्रार्थना करना श्री रामजी के खड़ाऊँ के आशीर्वाद से अयोध्या के राज-काज करना, सीता हरण, जटायु एवं सबरी के प्रसंग का इं. राजेश्वर सिंह ने जीवन्त वर्णन किया है।

अन्त में मैं यह लिखते अति संतोष एवं प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ कि इं. राजेश्वर सिंह भोजपुरी साहित्य के सशक्त रचनाकार हैं। किसी रचनाकार के सृजन में उसके आस-पास के स्मरणीय ऐतिहासिक और लोकहित के प्रसंगों का जितना अधिक वर्णन होता है, उसका साहित्य उतना ही उपयोगी, पठनीय और टिकाऊ होता है। महायोगी गोरखनाथ की तपस्थली गोरखपुर की पावन धरती पर अवतरित होने वाले महान व विश्वविश्रुत योगी पूज्यपाद परमहंस योगानन्द जी महाराज के जीवन वृत्त एवं कृतित्व पर आधारित प्रसिद्ध पुस्तक 'योगी कथामृत' का भोजपुरी में अनुवाद कर 'भोजपुरी योगी कथामृत' नाम से वर्ष २०२३ में निकाल कर आप ने इतिहास रच दिया।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

'कल्याण कऽ जुगुति' में रचा-बसा है भारतीयता का सोंधापन

समीक्षक : डॉ. श्रीनिवास सहाय

'काव्यमुखी साहित्य-अकादमी' की ओर से इंजीनियर राजेश्वर की भोजपुरी निबंध की एक किताब 'कल्यान कऽ जुगुति' शीर्षक से आयी है। जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है कि इसमें कल्याण के रास्तों पर बड़ी सहजता के साथ प्रकाश डाला गया है। भोजपुरी भाषा में निबंधों का यह संग्रह अमूल्य निधि जैसा आस्वाद उपलब्ध कराता है। इंजीनियर राजेश्वर सिंह मूलत: आत्मिक रुझान की शख़्सियत हैं। इस पुस्तक में उनके इस मिज़ाज की गहराई का पता साफ चल जाता है। तभी तो लेखक ने इस पुस्तक को प्रज्ञा-चक्षु कविसंत कबीरदास जी को समर्पित किया है। डॉ० विवेकीराय की भी प्रतिक्रिया इस पुस्तक में समाहित की गयी है। डॉ० राय के शब्दों में कहें तो, 'यह निबंध-संग्रह में निबंधकार का अपनी जिन्दगी के कटु अनुभव से मिलल ज्ञान का दर्शन होला।' कुछ इसी तरह के विचार अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना का उपाध्यक्ष गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश' के भी हैं, कहते हैं-'कल्यान कऽ जुगुति निबंध संकलन में पन्द्रह गो ललित आध्यात्मिक आलेख बाड़न सो एह निबंधन में गीता आ रामचरित मानस का साथे साथ कबीर दास के गहन चिन्तनों के प्रभाव स्पष्ट लागत बा।' डॉ० मधुर नज्मी को फकीर मिज़ाज राजेश्वर से आगे भी कुछ इसी तरह की रचनाओं की उम्मीद है।

इस पुस्तक में कुल २८ निबंध हैं। ७९ पृष्ठों में समाहित यह पुस्तक आध्यात्मिक ज्ञान के वैविध्यपूर्ण जगत का पूरी तन्मयता के साथ दिग्दर्शन कराती है। 'भगवान के पूजऽ हिरिदय से जहाँ लेखक ने छन्द के महत्व पर बड़ी सुबोधता के साथ प्रकाश डाला है।' वहीं आडम्बर की कबीर शैली में तीखी आलोचना की है। 'काम करत होइहैं प्रभु नियरे' में लेखक ने कर्म भाव की श्रेष्ठता को स्थापित किया है। वाणी कैसी हो, इस पर 'बोली मीठी लागे नींक' निबंध में ताकीद की गयी है। 'सुख कइसे मिली' और 'खुसी लावे वाला दिमागी सोच' काफी

www.bhojpurisahityangan.com

प्रासंगित बन पड़ा है। उस लिहाज से उपर्युक्त निबंध मन की गांठों को खोलने में समर्थ प्रतीत होता है। 'रमायन से सीख के बहाने' लेखक के विस्तृत अध्ययन संसार का भी पता चलता है। 'आपन बुराई पहिले दूर करीं' निबंध संग्रह की शीर्ष आलेख है जिसको पढ़कर गायत्री परिवार वालों का यह नारा 'हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा' स्वयं जेहन में काँपने लगता है।

इस निबंध संग्रह के बहाने भोजपुरी भाषा का सामर्थ्य भी समझ में आने लगता है। वाकई भोजपुरी में वही दम है जो किसी भी अन्य समर्थ भाषा में होना चाहिए। इस पुस्तक की खास बात ये है कि जिन्हें भोजपुरी नहीं आती लेकिन हिन्दी भाषा का ज्ञान है, उन्हें कहीं से भी यह भाषा अपरिचित नहीं प्रतीत होती है। निबंध संग्रह का हर आलेख विचार मोती के सदृश है जिसे बड़ी सादगी के साथ लेखक ने पिरोया है। यह पुस्तक एक सिटिंग में पढ़कर समाप्त किये जाने योग्य है। भोजपुरी साहित्य को समृद्ध करेगी, यह पुस्तक, इसमें कत्तई दो राय नहीं है।

(पत्रिका माया अवध के सितम्बर-अक्टूबर २००९ में प्रकाशित)

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१०३

जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी

समीक्षक : डॉ० श्रीनाथ सहाय

इंर्जीनियर राजेश्वर की पुस्तक 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' को काव्यमुखी साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है। ७९ पृष्ठों में समाहित यह पुस्तक सूफी दर्शन पर सारगर्भित जानकारी मुहैया कराती है। उन लोगों के लिए तो खासतौर पर यह पुस्तक काफी संग्रहणीय होगी जिन्हें पराशक्तियों के प्रति स्वाभाविक अनुराग है। लेखक राजेश्वर सिंह ने श्रीमती रेखा सिंह उर्फ टुन्नी सिंह द्वारा ट्रांस (हलूल) की हालत में लिपिबद्ध किये गये वाकयों को इस कृति में जगह देकर आजमगढ़ जनपद में स्थित आस्ताना 'सरकार' शाह अब्दुल्ला शाह 'शाह गोला दीवान' निज़ामाबाद के करिश्मायी शख़्सियत को सामने लाने का प्रशंसनीय कार्य किया है।

इस पुस्तक का प्रारम्भ देश के जाने-माने शायर और आस्ताने से दिल की गहराईयों के साथ जुड़े डॉ० मधुर नज्मी के लेख से होता है। बकौल नज़्मी 'मैं तो यहाँ तक मानता हूँ कि भरपूर मनोयोग और नियति से जुड़ चुकने के बाद जागतिक दु:ख से निजात मिल जाती है। मैं तो यह भी मानता हूँ कि अच्छी रूहानी शक्तियाँ सुपात्र इंसानों के जेहन और दिल में काया प्रवेश करके इबादत करती हैं और करवाती हैं।' नज़्मी मानते हैं कि उनके एहसास में आस्ताने 'गोला शाह दीवान' का करम हासिल है। बकौल नज़्मी के कि 'ख़ूब लहलहाती है खेतियाँ मुरादों की, खुल के जब बरसते हैं मेघ मेहरबानी के।'

इस पुस्तक का पूरा कथानक एक पराशक्ति की आमद पर आधारित है। इस पर आने से पहले सुरेन्द्र कुमार सिंह के लेख 'सूफी-दर्शन और विश्व शान्ति' पर नज़र डालते हैं।

बकौल सिंह साहब सूफी मार्ग हृदय का मार्ग है। इसमें मनुष्यों के सारे अनुभवों को समाहित किया गया है। लेखक मानता है कि मौजूदा वैश्विक संकट से जूझने में सूफी दर्शन काफी मददगार साबित हो सकता है। कम से कम मरती हुई मनुष्यता को तो बचाया ही जा सकता है। यह लेख सूफी मत से जुड़ी जानकारियों से संतृप्त है। जिज्ञासुओं के लिए यह रोड मैप की तरह साबित होगा।

इसमें तीसरा लेख प्रसिद्ध कवि मधुकर अस्थाना का है। आपने भी 'सूफी दर्शन' के हवाले से कुछ और लेख शीर्षक की तरह महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की है। अब आते हैं पुस्तक

www.bhojpurisahityangan.com

के मूल स्लॉट पर जिसे इंजीनियर साहब ने सजाया है। 'सरकार' से जुड़ी सत्रह यादगार और प्रेरणास्पद घटनाएं हैं जो ट्रांस हालत में श्रीमती रेखा सिंह द्वारा उपलब्ध हुए हैं। इसके अलावा आज़मगढ़ जनपद की दूसरी ऐतिहासिक और आस्थापरक स्थलों पर भरपूर सामग्री परोसी गयी है। मसलन, दुर्वासा धाम, दत्तात्रेय जी का मंदिर, उनसे जुड़ी कथाएं, चन्द्रमा ऋषि का आश्रम, दबे हुए राजमहल की कथा, बाधाम्बर बाबा का समाधि स्थल, शिवाला घाट का ज्योतिर्लिंग, शाही जामा मस्जिद, हज़रत निजामुद्दीन साहब का मजार, मां शीतला धाम उल्लेखनीय है। इसके अलावा पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' पर भी संक्षेप में लेखनी चली है। सूफी मत के शास्त्रीय स्वरूप की भी सारगर्भित ढंग से चर्चा की गयी है। कुल मिलाकर यह पुस्तक आज़मगढ़ जनपद के ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों का पूरा विवरण उपलब्ध कराती है। सूफी मत का एक बड़ा केन्द्र आज़मगढ़ भी रहा है, इसका पता इस पुस्तक से चलता है। जिज्ञासुओं और मनुष्यता के प्रति समर्पित सोच रखने वाले पाठकों को यह किताब बतौर रहबर भी नज़र आएगी। इस पुस्तक के लेखक को संयोजन और प्रस्तुति के ढेरों शुभकामाएं।

प्रकाशन संस्था भी बधाई की पात्र है जिसने बहुत ही सुंदर ढंग से पुस्तक की सामग्री एवं छाया चित्रों को छापा है। बस कहीं-कहीं प्रूफ की गलती अखरती है। यदि यह न होता तो बात कुछ और ही होती। फिर भी पुस्तक पठनीयता के योग्य है।

(पत्रिका 'माया' अवध के अंक अगस्त २००९ में प्रकाशित)

❖

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी महाभारत : एगो स्तुत्य प्रयास

समीक्षक: डॉ. महामाया प्रसाद 'विनोद'

महाभारत संस्कृत के एगो प्राचीन ग्रन्थ बा। वेदव्यास लिखित महाभारत के बारे में एकरा आदि पर्व में साफ-साफ कहल गइल बा कि महाभारत महाकाव्य में जवन बा, ऊ अन्यत्र कतहूँ ना मिली। महाभारत संस्कृत भाषा में बा, जवना के पढ़ल आ समझल सभका बूता से बाहर बा। भोजपुरी महाभारत के रचना निरन्तर साहित्य सृजनि में संलग्न ई. राजेश्वर के अइसन कृति बा जे महाभारत के भोजपुरी भाषा-भाषी जन-जन तक पहुँचावे के काम करी। लगभग बीसन किताबन के रचनाकार के 'भोजपुरी महाभारत' सबसे महत्वपूर्ण आ प्रशंसनीय किताब बा। पूरा किताब सरल भोजपुरी भाषा में आदि पर्व से स्वर्गारोहण पर्व तक अठारह अध्याय में बंटल बा। कुल्हि अध्याय में महाभारत के एक-से-एक कथा के रोचक शैली में सुन्दर वर्णन बा। पुस्तक के रोचक शैली एकरा उपादेयता में चार चाँद लगा रहल बा।

भोजपुरी महाभारत के रचना भोजपुरी भाषा के साहित्य में एगो अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम बा। ई किताब संस्कृत महाकाव्य महाभारत के भोजपुरी अनुवाद बा। यद्यपि महाभारत संस्कृत में श्लोक-रूप में लिखल गइल बा, बाकिर भोजपुरी महाभारत ओकर गद्यानुवाद बा। आदिपर्व में जनमेजय के नागयज्ञ के कथा से पुस्तक के शुरुआत बा आ देवराज इन्द्र द्वारा युधिष्ठिर के स्वर्गारोहण के कथा से अंत बा।

भोजपुरी में श्रीमद्भागवत कथा-सार पर लेखक के दृष्टि के परिचायक बा। इहे कारण बा कि लेखक अन्य साहित्यिक कृतियन के अलावे लगातार पौराणिक आ नैतिक उत्थान के विषयन पर आपन कलम दउरावत चल आ रहल बानी। भोजपुरी में 'कल्याण के जुगुति', 'पढ़ी समझीं मनन करीं', 'राम पियारा साधु-सन्त', 'श्याम पियारा साधु-सन्त', 'दीक्षा गुरु' आ 'भोजपुरी श्रीमद्भागवत कथा-सार' जइसन पुस्तकन के रचना के बाद 'भोजपुरी महाभारत' उनकर एगो अनुपम कृति बा। महाभारत के विविध प्रसंग पर अनेक पुस्तकन के सृजन भइल बा, बाकिर महाभारत जइसन संस्कृत महाकाव्य के सरल आ सहज भोजपुरी भाषा में प्रस्तुति एगो अतुलनीय प्रयास बा।

www.bhojpurisahityangan.com

कवनों भाषा के मूल रूप में पुस्तक के प्रणयन आसान होला, बाकिर कवनो रचना के दोसर भाषा में अनुवाद कइल बहुत कठिन होला। लेखक द्वारा महाभारत जइसन कठिन संस्कृत के महाग्रन्थ के भोजपुरी जइसन सरल भाषा में अनुवाद कइल एगो बहुत कठिन कार्य रहे जवना के राजेश्वर जी बखूबी कइले बानीं।

पुस्तक में यत्र-तत्र संस्कृत के मूल श्लोको उद्धित बा आदि पर्व के बासुकि असित, आर्तिमान अउर सुनीथ नॉव के तीन गो मंत्र मूल रूप में अंकित बा जवना के बारे में कहल गइल बा कि एह में से एको गो मंत्र के जे सुबह-शाम पाठ करीं, ओकरा साँप से डर ना लागी।

१. **यो जरत्कारुणा जातो जरत्कारौ महायशाः ।**
आस्तीकः सर्पसत्रे वः पन्नगान् योऽभ्यरक्षतः ।
तं स्मरन्तं महाभागा न मां हिंसितुर्महथ ।।

-५८/२४

२. **सर्पापसर्प भद्रं ते गच्छ सर्प महाविष ।**
जनमेजस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर ।।

-५८/२५

३. **आस्तीकस्य वचः श्रुत्वा यःसर्पो न निवर्तते ।**
शतधा भिद्यते मूर्धिन शिशवृक्षफलं यथा ।।

-५८/२६

अइसहीं सभा पर्व के श्लोक मूल रूप में अंकित बा जवना में धृतराष्ट्र दूत-क्रीड़ा के समाचार बार-बार व्याकुलता से पूछत बाड़े-

धृतराष्ट्रस्तु संहृष्टः पर्यपृच्छत् पुनः पुनः ।
किञ्चितं किञ्चितमिति आकारं नाम्यरक्षत ।।

-सभापर्व, ५८/४१

द्रौपदी चीर-हरण के समय द्रौपदी के करुण पुकार पर कृष्ण के द्वारिका से पैदल चल के लाज बचावे के प्रसंग में भी मूल रूप से एगो श्लोक उद्धृत बा-

याज्ञसैत्या वचः श्रुत्वा कृष्णो गह्वरितोऽभवत् ।
त्यक्त्वा शय्याऽऽसनं पद्भ्यांकृपालुः कृपयाभ्मगात् ।।४५।।

महाभारत कथा के अउरी रोचक बनावे खातिर लेखक कवि चन्द्रशेखर मिश्र के पुस्तक 'भीषम

www.bhojpurisahityangan.com

बाबा' के कविता के जगह-जगह उद्धृत कइले बाड़ें-द्रौपदी चीरहरण प्रसंग में द्रौपदी के विलाप के काव्यात्मक प्रस्तुति बा-

भूलत ना हमइँ ऊ दिनवा, द्रौपदी कहलीं तनी हाली से अइहऽ ।
घाती बड़ा मुदई कुलियइँ, बिचवाँ ओन्हने के बचाइ के जइहऽ ।
दूत युधिष्ठिर कै बनला, दुरयोधन से भले सन्धि करइहऽ ।
लेकिन ई विथुरी केसिया मोर, याद रहइ हरि भूलि न जइहऽ ।।

-भीष्म बाबा, पृष्ठ २३

युद्ध के मैदान जब भीष्म आ अर्जुन आमने-सामने रहले आ रणभेरी बज गइल तब अर्जुन आपन बाण से पितामह के चरण स्पर्श कइलें-

पूज्य बाण मारि पार्थ तात के प्रणाम कइलें,
पावन चरण नख छुअत लहरि गैल ।
भीषम के ओर से असीस के चलल बान,
पारथ के सीस से असीसत निकरि गैल ।।

यत्र-तत्र पुस्तक में प्रसंगानुकुल चित्रो अंकित बा। कुल मिला के पुस्तक पठनीय आ प्रशंसनीय बा। इं. राजेश्वर एह कार्य खातिर धन्यवाद के पात्र बानी।

पुस्तक : **भोजपुरी महाभारत**
लेखक : इं. राजेश्वर सिंह
प्रकाशक : लोकायत प्रकाशन
बी-२, सत्येन्द्र कुमार गुप्ता नगर,
लंका, वाराणसी २२१००५
मूल्य : ३५०/-रुपया मात्र

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१०५

भोजपुरी भाषा के प्रति अनुराग

-वृजभूषण राय 'वृज'

मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि इं० राजेश्वर सिंह के सम्बन्ध में क्या लिखू ? मेरी उनसे मुलाकात कुछ वर्ष पहले हुई, वह भी किसी पुस्तक के लोकार्पण या किसी विषय पर विचारगोष्ठी में अचानक कुछ क्षणों के लिए। बस प्रणाम बंदगी हो सकी, ऐसा सुयोग नहीं बन सका कि मैं उनसे किसी विषय पर विचार-विमर्श कर सकूँ, सुख-दुख बाँट सकूँ। हाँ, मोबाइल के माध्यम से संक्षिप्त बातों का आदान-प्रदान होता रहा। उन्होंने मेरे पास तीन पुस्तकें भेजी थीं, पहले भोजपुरी रामायण, दूसरी पंचतंत्र (भोजपुरी में अनुदित) एवं तीसरी भोजपुरी योगी कथामृत। इन तीन पुस्तकों के माध्यम से मैं इं० राजेश्वर सिंह के बारे में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व, स्वभाव एवं उनकी रुचियों के बारे में अपनी बात रखना चाहता हूँ। जैसा मैने महसूस किया कि अभियन्ता के पद पर रहते हुए राजेश्वर सिंह के भीतर साहित्य लेखन के प्रति इतना अनुराग चकित कर देने वाला है। ऐसी दीवानगी प्रणम्य है क्योंकि उन्होंने संस्कृत साहित्य की धार्मिक पुस्तकों एवं नीतिपरक पुस्तकों का भोजपुरी गद्यभाषा में अत्यन्त सरल अनुवाद किया है।

इन तीन पुस्तकों को मैने पढ़ा, परन्तु आचार्य विष्णु शर्मा द्वारा संस्कृत में रचित जो पंचतन्त्र का भोजपुरी भाषा में अनुवाद किया है, मैने बार-बार पढ़ा। मुझे यह जानकर अच्छा लगा कि इं० राजेश्वर सिंह ने अपनी माटी की बोली भोजपुरी में पंचतन्त्र जैसी संस्कृत की पुस्तक से परिचित कराया वह भी अत्यन्त सरल, सुबोध, व्यावहारिक शैली में। पंचतन्त्र के पाँच भेद हैं, पहला मित्र भेद, दूसरा मित्र संप्राप्ति, तीसरा काकोलूकीय, चौथा लब्ध प्रणाश एवं पांचवाँ परीक्षित कारक। इं० राजेश्वर सिंह ने पंचतन्त्र जैसी पुस्तक जिसमें पशु-पक्षियों के माध्यम से व्यवहारिक ज्ञान नीतिपरक ज्ञान एवं सामाजिक जीवन से जीवन के लिए उपयोगी कथाओं का सृजन किया गया है। अपनी माटी की बोली में उपलब्ध कराकर समाज का बहुत ही उपकार किया है। मैं कृतज्ञ हूँ इं० राजेश्वर सिंह जी के प्रति उनका यह योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

हिन्दी एवं संस्कृत का शिक्षक होने के कारण मैं पंचतन्त्र की कहानियों से पूर्व परिचित रहा हूँ, संस्कृत की पाठ्य पुस्तकों एवं हिन्दी दिग्दर्शिका जैसी पुस्तकों में पंचतन्त्र की कहानियाँ पाठ्यक्रम

www.bhojpurisahityangan.com

में आई है। बच्चों को पढ़ाने का मुझे अवसर मिला था इसलिए पंचतन्त्र मुझे अधिक प्रिय लगा। राजेश्वर सिंह की भाषा शैली अत्यन्त सरल एवं सुबोध है, सुक्ति कथन लिखते हुए उन्होंने अपने भोजपुरी भाषा ज्ञान का परिचय दिया। पाठक पुस्तक पढ़ते हुए कथा क्रम से एवं विषय से अपना तादात्म्य आसानी से बना लेते हैं। इं० राजेश्वर सिंह की सहजता, सरलता एवं निरभिमानिता इनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देता है। यही किसी लेखक एवं रचनाकार का धर्म भी होता है कि वह निश्छल, सरल, सहज एवं इमानदार हो।

इं० राजेश्वर सिंह ने बीस से अधिक पुस्तकों की रचना की है, एक कहानी की आत्मकथा (२००३) से लेकर भोजपुरी योगी कथामृत (२०२३) तक। इन पुस्तकों में इनकी कुछ मौलिक कृतियां हैं तो कुछ भोजपुरी भाषा में अनुदित हैं। मुझे लगता है कि ये महोदय सतत् लेखन में लगे हुए हैं, इसीलिए इन्हें विभिन्न साहित्यिक संस्थानों विद्यालयों, विद्यापीठों से अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आगे भी ये सतत् सृजन में प्रयत्नशील रहें। मैं ईश्वर से इन्हें स्वस्थ एवं दीर्घायु होने की कामना करता हूँ।

शुभं भूयात्,

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१०६

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व

-प्रेमलता 'रस विन्दु'

हिन्दी साहित्य में एक नवदीप्त का उदय हुआ। उनका नाम इंजीनियर राजेश्वर सिंह है। इंजीनियर राजेश्वर सिंह का जन्म ४ अप्रैल १९५० को ग्राम व पोस्ट गोपालपुर ब्लाक व तहसील-गोला, जिला-गोरखपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम स्व० समर बहादुर सिंह और माताजी का नाम स्व० परमजोता था। इनकी शिक्षा बी.ई. (सिविल) वर्ष १९७३, मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज (अब मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय) गोरखपुर में हुई। वे उ० प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से अप्रैल २०१० में सेवानिवृत्त हुए तथा बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभिन्यता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार भी रहे।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह से मेरी मुलाकात कवि गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में हुई। उनकी रचनायें अद्भुत और अद्वितीय है। इन्होंने भोजपुरी भाषा एवं हिन्दी भाषा में लेखन किया है। इनके व्यक्तित्व में मिलनसार होने की अद्भुत गुण पाये जाते हैं। इन्होंने भोजपुरी भाषा के जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७), पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६), भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८), राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९), श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०), भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०), दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०), घरेलू नुस्खा (पद्य में) (वर्ष २०२०), भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१), भोजपुरी पंचतंत्र (वर्ष २०२२) और भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३) में प्रकाशित कराई जा चुकी है।

भोजपुरी में सशक्त रचनाकार होते हुए भी हिन्दी भाषा में कई पुस्तकों का प्रकाशन कराया है। जैसे एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४), जिन्दगानी! ये कैसी तेरी जिन्दगी ? (वर्ष २००४), सुख जागे दु:ख भागे (वर्ष २००४),

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६), श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७) में प्रकाशित करवाई।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह विभिन्न सम्मानों से भी सम्मानित हुए।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली, द्वारा 'महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।'। राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत। राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा 'प्रेमचन्द सम्मान।,' सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा 'मेलोडी सम्मान' २००६। हिन्दी सेवा संस्थान कुर्शीनगर द्वारा 'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान'। 'आध्यात्मिक रत्न सम्मान' सूफी साहित्य कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा। विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ 'विद्यावाचस्पति' 'विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न' एवं 'भारत गौरव'। 'साहित्य कला शिरोमणि' सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष २०११, भागलपुर (बिहार)। मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर (उ०प्र०) के एल्युमनाई एसोसिएशन द्वारा वर्ष २०११ में सामाजिक कार्यों में योगदान हेतु सम्मानित। 'संगम सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था' गोरखपुर द्वारा 'संगम साहित्य सुमन' सम्मान-२०२०। नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर द्वारा भोजपुरी साहित्य सेवा के लिए 'नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान'-२०२१। सरयू अमृत महोत्सव-२०२१ द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखने पर 'सरयू रत्न सम्मान।'। भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार) 'संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-२०२१'। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा किताब 'श्याम पियारा साधु-सन्त' पर 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' वर्ष २०२३। विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा 'डा० विवेकीराय स्मृति सम्मान वर्ष २०२४' से सम्मानित हुए।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह के उपरोक्त कृतियों द्वारा यह पता चलता है कि वे एक कर्मठ अच्छे रचनाकार और साहित्य जगत के अमूल्य धरोहर हैं।

मेरी सारी शुभकामनाएँ उनके साथ हैं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य सेवक इं. राजेश्वर सिंह

-डा0 अमिताभ पाण्डेय

हिन्दी साहित्य जगत में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल (वर्तमान समय) तक अनेकानेक साहित्यकारों ने अपनी रचना धर्मिता के बल पर अपनी लेखनी का परचम लहराया। साहित्याकाश में अनेकों साहित्य सृजनकर्ता नक्षत्रों के समान अपने प्रकाश से साहित्य प्रेमियों को आलोकित कर रहे हैं। उसी परम्परा में इंजीनियर राजेश्वर सिंह भी साहित्य सेवक के रूप में अपनी अलग छाप छोड़ने में सफल रहे हैं। उ० प्र० के गोरखपुर जनपद के दक्षिणांचल में स्थित ग्राम गोपालपुर में स्व० परमजोता एवं स्व० समरबहादुर सिंह के आंगन में ०४ अप्रैल सन् १९५० को जन्मे इं. राजेश्वर सिंह ने इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर जीविकोपार्जन हेतु अभियंता पद पर नौकरी प्रारम्भ कर वर्ष २०१० में अवकाश ग्रहण किया। सामाजिक विसंगतियों से दो-चार होते हुए राजेश्वर सिंह का हृदय पक्ष लेखन की ओर आकृष्ट हुआ और उन्होंने वर्ष २००३ से २००७ तक हिन्दी में ८ कृतियां रच डाली जिनका विवरण निम्नवत है-

१- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३),

२- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४) ,

३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ? (वर्ष २००४),

४- सुख जागे दु:ख भागे (वर्ष २००४),

५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५),

६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६),

७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४),

८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७)

सेवाकाल में अपने दायित्वोंका निर्वहन करते हुए मात्र चार एवं पांच वर्षों में उनके द्वारा प्रकाशित कृतियाँ उनके साहित्यानुराग को परिलक्षित करती हैं।

भोजपुरी परिवेश में पले-बढ़े इन्जीनीयर राजेश्वर सिंह ने वर्ष २००४ से २०२३ के मध्य

www.bhojpurisahityangan.com

१२ कृतियों का लेखन व प्रकाशन किया। वर्ष २०२३ में उनके द्वारा क्रियायोग के अन्वेषक परमहंस योगानन्द द्वारा लिखित पुस्तक "योगी कथामृत" का हिन्दी अनुवाद सें भोजपुरी में अनुवाद कर भोजपुरी पट्टी के लोगों को उनकी भाषा में उपलब्ध कराया।

योगी कथामृत ने इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के साहित्य सृजन को स्थापित करने में महती भूमिका का निर्वहन किया। भोजपुरी योगी कथामृत की भूमिका लिखते हुए प्रख्यात साहित्यकार आचार्य रामदेव शुक्ल, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर का कथन-"इन्जीनियर राजेश्वर सिंह क्रियायोग के खोजे वाला योगी आ उनके किताब के भोजपुरी पढ़वइया लोग खातिर सहजे सुलभ करा दिहले बाड़े। उनकर ई परिश्रम भोजपुरी बोले बालन खातिर एगो राहि देखावे वाला काम बा। एह उपलब्धि से राजेश्वर जी भोजपुरी मनई लोगन में विशेष प्रतिष्ठा के हकदार होखबि ई बिसवास बा।"

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह की साहित्यिक रचनात्मकता को प्रमाणित करती है। साहित्य सृजन करने वाला व्यक्ति कभी भी किसी सम्मान या अलंकरण की प्रत्याशा नहीं करता लेकिन समाज उनका मूल्यांकन करते हुए उनका सम्मान व अलंकरण करता है। इसी क्रम में इन्जीनियर राजेश्वर सिंह को लगभग दर्जन भर राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए जिनका विवरण निम्नवत है-

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा 'महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।'।

राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत।

राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा 'प्रेमचन्द सम्मान।,'

सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा 'मेलोडी सम्मान' २००६।

हिन्दी सेवा संस्थान कुशीनगर द्वारा 'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान'।

'आध्यात्मिक रत्न सम्मान' सूफी साहित्य कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा।

विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ 'विद्यावाचस्पति' 'विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न' एवं 'भारत गौरव'।

'साहित्य कला शिरोमणि' सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष २०११, भागलपुर (बिहार)।

मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर (उ०प्र०) के एल्युमनाई एसोसिएशन द्वारा वर्ष २०११ में सामाजिक कार्यों में योगदान हेतु सम्मानित।

'संगम सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था' गोरखपुर द्वारा 'संगम साहित्य सुमन' सम्मान-२०२०।

www.bhojpurisahityangan.com

- नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर द्वारा भोजपुरी साहित्य सेवा के लिए 'नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान'-२०२१।
- सरयू अमृत महोत्सव-२०२१ द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखने पर 'सरयू रत्न सम्मान।'।
- भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार) 'संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-२०२१'।
- अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा किताब 'श्याम पियारा साधु-सन्त' पर 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' वर्ष २०२३।
- विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा 'डा० विवेकीराय स्मृति सम्मान वर्ष २०२४'।

देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा इन्जीनियर राजेश्वर सिंह को प्राप्त सम्मान उनकी रचना धर्मिता को पुष्ट करते हैं।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह से मेरी पहली मुलाकात सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था "संगम" के संयोजक/अध्यक्ष स्व० नरसिंह बहादुर चंद दादा के साथ हुई। मैं आदरणीय इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के व्यक्तित्व उनके सद् व्यवहार, सरलता व सहजता से प्रभावित हुआ।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह साहित्य सृजन में नित नूतन आयाम स्थापित करने में सफल हों। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ अपनी लेखनी को विराम देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१०८

सरल अउर सहज विचार कऽ मनई

इं. राजेश्वर सिंह

-वृजेश राय

इंजीनियर बाबू राजेश्वर सिंह विज्ञान के आदमी हईं। आप कऽ पढ़ाई-लिखाई विज्ञान के हऽ। आप दुनिया के विषय में निम्मन जानकारी राखीलें। आप से हमार भेंट "संगम भोजपुरी" के गोष्टी में भइल। आपके विचार सुन के हमरो मन लोभाइल। आपमें लोगन के अपनी ओर खींच लेवे वाला आकर्षण भरपूर भरल बा। आप भोजपुरी के साहित्यकार हयीं। भोजपुरी भाषा में राउर कई गो किताब छपाइल बा। आपके भोजपुरी समाज खूब सम्मानित कइले बा। आप जबसे रिटायर भइलीं तबसे कई गो किताब भोजपुरी भाषा में लिखलीं। जवनें में महाभारत, रामायण पर राउर किताब के बहुच चर्चा भइल।

साहित्य जगत् में इ देखल जाला कि जे भगवान के विषय में रचना रचत बा ओकर सम्मान अधिक बा। एकर कारण इ हऽ कि हमार देश आस्था वाला देश हऽ। इहाँ लोगन के मन में भगवान के प्रति बहुते आदर सम्मान बा। भगवान के विषय में अधिक से अधिक जनला के भाव भी भरल बा। दुसरका कारन इ बा कि जनता देश से खूब परेम करे वाली बा। सिंह साहब के रचना में भगवान के भक्ती अउर देश से परेम वाली भावना भरल बा। एही कारन रउरे भोजपुरी समाज के आदर योग्य भइल बानी।

साहित्यकार उहे निम्मन होला जे मन के मनी निकरले के सोचे तन के भी कनई निकरले कऽ कार करे। आप भक्ती के किताबिन के साथे साथ एगो दवाइयो के किताब लिखले बानी। जेकरे घरे ऊ किताब बाटे ऊ आपन रोग-बियाध भी किताबिन के सहारे मेटावत बा। कवने समय में का खाये के चाही अउर का ना खाये के चाही ऊ दवाई के किताब में बहुत विस्तार से बतावल गइल बा। आप अपने किताबन से मनई के मन के साफ तऽ कइले बानी तन के भी साफ कइले कऽ बानि बतवले बानी।

www.bhojpurisahityangan.com

आपकऽ जीवन एगो संत कऽ जीवन जइसे बा। जे तरे एगो संत अपने उपदेश से जीवन कऽ सही राह बतावेलें ओही तारे आपो अपने किताबिन से जीवन कऽ सही राह बतवले बानी। आपके करनी और कथनी में कवनो अन्तर ना बा। आप जवन लिखले बानी ओके अपने जीवन में उतार के चलीं लें। आपके देखले से सज्जनता लउकेला। इहे आपके महानता बा।

आपके अभिनन्दन ग्रंथ छपाये जात बा एकर बहुते खुशी हऽ। अभिनन्दन ग्रंथ एक तरह से अपने आपके तउलले कऽ साधन भी बा। जेहमें आप बिल्कुल खरा बानी। आपकऽ परला भारी बा। आप जेह तरे पूरनिमा के राति चटकार होले ओह तरे चटकार बानी। इ संसार समझीं अन्हरिया हऽ जे अन्हरिया में उजाला फइलवले कऽ काम करत बा ऊ सही में धरम के काज करत बा। सिंह साहब धरम के काज करत बानी। एह नाते आपकऽ सम्मान भरपूर होखे के चाहीं।

हमार मनसा इहे बा कि आप अउर निम्मन किताब लिखीं। विज्ञान छोड़ि के आप अध्यात्म में खूब रमल बानी। अध्यात्म समुन्दर हऽ केतना मोती भरल हऽ इ बतवले मान कऽ ना बा। आप अइसन मोती निकारी की संसार अउर अजोरा से भर जा। आपके बहुत साधुवाद बा।

हम बहुत आदर भाव से आपके प्रणाम कई रहल बानी।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१०९

मन, वचन, कर्म से समर्पित साहित्यकार इं० राजेश्वर सिंह जी

-डा० बहार गोरखपुरी

हम बहार गोरखपुरी हिन्दी आ उर्दू में गज़ल विधा के एगो लिखवइया हईं। हिन्दी आ उर्दू में उप्पर वाले के मेहरबानी से अच्छा मोकाम मिलल, नाँव मिलल, सम्मानो मिलल आ सबसे अहम चीज अपने दोस्तन के प्यार दुलार मिलल। हमरे मित्र लोग जे हिन्दी आ भोजपुरी में लिखे पढ़े वाला बा उनहन लोगन के प्रेरणा से भोजपुरी में गीत आ गजल में कुछ हाथ पाँव मरले के इच्छा जागल। हम अपना दोस्तन के शुक्रगुजार हईं कि ऊ लोग हमार भोजपुरी के लोगन से परिचय 'भोजपुरी संगम' में होखे वाली हर महीना के दुसरकी अतवार के गोष्ठी मे ले जाके करवलस।

'भोजपुरी संगम' के गोष्ठिन में हम गइलीं त देखलीं सभै आपन समीक्षा, आलेख आ कविता पढ़े, लेकिन हमके अचम्भा ई भइल कि एगो अइसनो शख्शियत् के मालिक रहे जे सबके बड़े ध्यान से सुने आ बाद में चाहे बहरा निकरि के आपन सुझाव दे। हमके आश्चर्य होखे कि आखिर ई के हवै जे आपन तेल, पानी, पइसा खरचि के एह आवे ला। तीन-तीन घंटा चुपचाप बइठे ला आ चलि जाला। एही आदमी के साहित्य समर्पण सही माने में तारीफे काबिल बा ! दुआ बन्दगी चलति रहे एही बिच्चे में एक दिन एक गो पर्चा 'जल ही जीवन है' जवन पानी के साफ रखले के रस्ता आ देशी तरीका अउर ओसे होखे वाला रोग आ समाप्ति के सटीक तरीका दिहल रहे, ओही साथे एक गो लघु पत्रिका भी रहे 'घरेलू नुस्खा' जवन घरेलू आर्वेदिक पद्धति से खरबिरइया दवाइन से सम्बन्धित रहे भा कविता रूप में रहे। हम होमियोपैथी के चिकित्सक हयीं। आदरणीय के सेहत से सम्बन्धित ऊ ज्ञान हमरा के अधिक प्रभावित कइलस अउर पता कइले परि पता चलल कि ऊ सज्जन ''आदरणीय इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी'' हईं। अउर पता कइले पर पता चलल कि आप जल निरम में अधीक्षण अभियन्ता पद से रिटायर्ड बानी। इहाँ के साहित्यिक अवदान हिन्दी भा भोजपुरी के तमाम छपल ग्रन्थ में बा। रामायण, महाभारत, साधु सन्तन के परिचय, दीक्षा गुरु, पंचतंत्र के कहानी के भोजपुरी में सहज में पहुंचावल, कहानी की आत्मकथा, एक कहानी बीच में हवै, सुख जागे दुख

www.bhojpurisahityangan.com

भागे, पढ़ीं समझीं मनन करीं, गाँव से शहर जब आ गये, एक कहानी बीच में से आत्मकथा कहत जिस्म से रूह तक पहुँचावल एकगो दिव्य दृष्टि के काम हवे। रूह के रोशनी के जगवले में एकगो महत्वपूर्ण योगी योगानन्दजी के आत्मकथा सहज भाव में पहुंचावल राउर साहित्य के सेवा ह।

सब बड़वर साहित्यकारन के बीच में हमरहू मन में कुछ इच्छा जागल बा रमायन भा महाभारत के बात प्रमुख ग्रन्थ शिवपुरान भी हवे जवने के बारे में शायद रउरे मन में विचार जरूर भइल होई लेकिन उहो भोजपुरी में आवे के चाही साथे-साथे भारत का राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से आज तक के राष्ट्रीय पुरुषन पर रामपियारा साधु सन्त आ श्याम पियारा साधु सन्त के लेखा कवनो किताब आवे।

सबसे महत्वपूर्ण चीज जवन हमके पता चलल कि रउरे जहाँ ड्यूटी पीरियड में गइलीं वहं के साहित्य कारन के जइसे आजमगढ़, बलिया, बनारस, मऊ क्षेत्र वे नाहीं बलुक पूर्वांचल के साहित्यकारन के जरूरत पड़ले पर मदद भी कइलीं। आदरणीय रामअधार व्याकुल, श्रीनन्द कुमार त्रिपाठी, श्री वीरेन्द्र मिश्र ''दीपक'', श्री अकिंचन जी जइसन मित्रन के माध्यम से रउरे सदाशयता आ दानशीलता के जानकारी मिलल।

कहले के मतलब ई हवे कि दहिना हाथे से दान बावां हाथ न जाने ई राउर विशेषता हवे। रउरे जीवन के ''अमृत वर्ष'' में प्रवेश करे जात बाटीं अउर हमरो शुभकामना बा कि राउरे बेटा, पोता, धन, धान्य, ज्ञान परिवार सहित सुखी समृद्ध होखीं अउर ईश्वर राउर छूटल अधूरा काम जरूर पूरा करावें।

रउरे के हमार दिल से नमन आ मुबारकबाद बा !

❖

www.bhojpurisahityangan.com

११०

भोजपुरी के राजर्षि राजेश्वर सिंह

-नन्द कुमार त्रिपाठी

जब जब भोजपुरी के विकास आ गद्य पर कवनो भी विद्वान आपन बिहंगम दृष्टि डारी तब राजेश्वर सिंह जी के नावें चर्चा आ कृतित्व के अवलोकन बिना ना रही। साहित्यिक पटल पर जीवन, धर्म, संस्कृति, राष्ट्रीयन के अगुआई करत राजेश्वर सिंह जी के साहित्यिक सफर कइसे आ कब से शुरु भइल। आईं एकर चर्चा कइल जा।

एक कहानी की आत्मकथा २००३ में अपने साहित्यिक जीवन के शुरुआत कई के आजु ले तकरीबन डेढ़ दर्जन अपने किताबिन के मालिक बाटें। लेखक, कवि, साहित्यकारन के दुई श्रेणी होले पहिलका जस शोहरति इनाम पुरस्कार के कामना वाले कबि आ लेखक जे बाद में दुई कउड़ी के हो जाला आ दुसरका तुलसी बाबा के नीयर **''स्वान्तः सुखाय''** के सर्जना जवन श्रेणी आदरणीय राजेश्वर सिंह के बाऽ। ऊ सोने में सोहागा बनि के चमकि जाले। बाबा तुलसी एकर प्रमाण बाटें। स्वान्तः सुखाय वाली रचनन के लोक वन्दना होले। विज्ञान के विद्यार्थी अधीक्षण अभियन्ता के रूप में तकनीकी सेवा से जुड़ल इंसान के साहित्य के घुमावदार सीढ़ियन से चढ़ले उतरले आ उहो भोजपुरी क टेढ़ आ कठिन राहि पर ढहले आ ठिमिलइले क कवन गरजि बा लेकिन इहे स्वान्तः सुखाय के प्रवृत्ति आ शब्द यात्रा उनके प्रेरित कइले होइ। आस्तिक आ धार्मिक चेतना से भरल राजेश्वर सिंह के जीवन में बहेलिया आ क्रौंच के जइसन कवनो न कवनो अइसन घटना जरूर घटल होइ जवन राजेश्वर सिंह जी बाबा बालमीकि के राहि पकरवले होई। आ जाने अनजाने भोजपुरी रामायण, भोजपुरी महाभारत, भोजपुरी भागवत कथा सार, राम पियारा साधु संत, श्याम पियारा साधु संत, दीक्षा गुरु, योगी कथामृत जइसन आदर्श ग्रन्थन के रचना कइले।

श्रद्धालु भक्त लोगन के श्रद्धा अपने इष्टदेव आ अपने पथे तक सीमित रहेला लेकिन राजेश्वर सिंह जी के श्रद्धा एतना विकसित आ विशाल बा कि इतिहास भूगोल आ धार्मिक संकीर्णता से ऊपर जाके ऊ जहां-जहां जे भी संत-महात्मा मिलल ओकरे सेवा में साहित्यिक श्रद्धा के फूल समर्पित कइले बाड़े जवन उनके हृदय के निश्छल श्रद्धा के पुरहर प्रमाण बा। एक किताबि पूरा नाहिं भइल कि दुसरकी प्रेस में पहुँचि जाले ई उहां के साहित्यिक सक्रियता के उदाहरण हऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी एक सफल कहानीकार हवें पहिलकी पुस्तक एक कहानी की आत्मकथा (२००३) उनके स्थापित कइले में पहिलका मील के पत्थर के काम कै रहलि बा। गद्य साहित्य के घुमावदार राहि आ पढ़वइयन के कमी के कारन गद्य लेखन के राहि पकड़े वाले साहित्यकार कम होले शब्द भाव घटना कथ्य एह सब के संयोजन आ उहो गद्य विधा में बड़ी टेढ़ खीरि ह। आ इन्जीनियर साहब के कुशल साहित्यिक समझ आ समर्पण उनके साहित्य के लोक साहित्य बनावे के कार कइले बाऽ।

१- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), २- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४) , ३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी (वर्ष २००४), ४- सुख जागे दुःख भागे (वर्ष २००४), ५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), ६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६), ७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), ८- नर्सीव अपना-अपना (वर्ष २००४) , ९- प्राचीन शिव मन्दिर जीर्णोद्धार (वर्ष २०२२), इहाँ के हिन्दी में लिखलि किताबि हईं।

साहित्यकार खोजी प्रवृत्ति के जिज्ञासु प्राणी ह, जिज्ञासा जागेले पियासि बढ़ति जाले आ जब तक तृप्त होखे के मोकाम न मिले साहित्यकार चलत जाला। जेठ के दुपहरिया के पियासल मिरगा नियर इन्जीनियर राजेश्वर सिंह साहब के पियासि बढ़त जाय आ उहां के खोजी प्रवृत्ति में जवन पवलीं ऊ बटलीं आ खूबे बटलीं। जल निगम के जिम्मेदार अफसर के रूप में उहां के पानी के कमी भविष्य में एगो विश्व युद्ध तक पहुंच सकेला। पर्यावरण विदन के चिन्ता रउरो के मन में कचोटे लगल जवने के प्रमाण पानी पर आधारित राउर एगो पर्चा रहे। जवने रउरे पानी के साफ रखले के देसी आ सस्ता तरीकन से लेके जल जनित रोगन के बचाव के तरीका बतावले बाड़ीं।

देसी बैदकी पर भी राउर ध्यान गइल काहे से मनई पढ़ी कब जब सेहत सही रही आ सेहत कब सही रही जब नियम संजम से रहल जाई, आ हम इहो कहब कि रउरे अन्दर एगो गद्यकार के साथे एगो कवि भी छिपल बा जवन २०२० में छपल किताबि "घरेलू नुस्खे" में पूरा-पूरा जागि उठल बा।

हमें कुछ अउर होश परत बा दू के दुई, दू दूनी चार से लेकर 'का को पहिले काटिए ता पीछे दो भाग। गुणा करो धन जोड़ लो ऋण को देहु घटाय BODMAS FACTOR के बतावे ले होश परल होई आ रउरे जन साधारण के याददाश्त के ध्यान में रखि के पद्य रूप में लिखले होबे।

रउरे भोजपुरी के शब्द यात्रा १- जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), २- कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७), ३- पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६), ४- भोजपुरी भागवत

www.bhojpurisahityangan.com

कथा-सार (वर्ष २०१८), ५- राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९), ६- श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०), ७- भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०), ८- दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०), ९- घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०, १०- भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१), ११- भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२), १२- भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३), १३- रहनी करनी युगाचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी (वर्ष २०२४) राउर साहित्यिक अवदान बा।

सबसे बड़ी विशेषता काल खण्ड के हिसाब से अलग-अलग विद्वान् के तबसे लेके आजु तक के विद्वानन् के शामिल कै के बात बढ़वले के परम्परा रउरे कृतियन के धारदार बनवले में कवनो कसर ना छोड़ले बा। सबसे बड़ी बात इहे देखीं कि अउर भोजपुरी साहित्यकारन के लोक प्रचारित पारम्परिक शैली से हटि के आपन अलग शैली में लिखलीं।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह साहब के अमृत महोत्सव के तरफ बढ़त बाड़ीं राउर जिनगी के दूबि नोकियात फरत फुलति छइलत रहे घर परिवार के साथ-साथ रउरे अइसहीं हसिबो खेलिबो धरिबो ध्यान के अनुसरण करत पढ़त समुझत मनन करत हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य के अपने अनुभव से सराबोर करीं।

इहे मंगल कामना बाऽ। एही सदभावना आ शुभकामना के साथे रउरे स्नेह आ दुलार के अनुरागी हम बानीं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१११

एक शान्त साहित्य सेवक

-रमेश राय

'भोजपुरी संगम' के तत्त्वावधान में भोजपुरी व हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार इं. राजेश्वर सिंह के सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन की योजना बनायी गयी है, सुनकर अपना हृदय प्रसन्नता से भर उठा। सिंह साहब आजमगढ़ में अधिशासी अभियन्ता के पद पर लगभग चार वर्ष और कुछ वर्ष बाद नौकरी के अखिरी दिनों में अधीक्षण अभियन्ता के पद पर भी कार्य करते हुए साहित्य सृजन करते रहे। फलत: आजमगढ़ और मऊ जनपद के साहित्यकारों से उनका सम्पर्क हमेशा बना रहा।

अब तक लगभग २० (बीस) साहित्यिक कृतियों का सृजन आप द्वारा हो चुका है। वैसे तो पढ़ायी के समय से ही इनका झुकाव साहित्य के तरफ रहा जबकि उनके पढ़ने का विषय विज्ञान रहा है। सृजन प्रक्रिया व पुस्तक प्रकाशन प्रक्रिया लगभग २००० ई० से ही प्रारम्भ हो गयी थी। तब से अब तक लगभग प्रतिवर्ष पुस्तक लेखन व प्रकाशन होता रहा है। लगभग बारह भोजपुरी कृतियाँ एवं आठ हिन्दी (खड़ी बोली) कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

निबन्ध, कविता, कहानी, उपन्यास, जीवन चरित्र आदि साहित्यिक विधाओं में उनकी रचनायें छप चुकी हैं। संस्कृत साहित्य की महाभारत जैसे महान ग्रन्थ की रचना करके संस्कृत साहित्य को विश्व में बेजोड़ बनाने का कार्य 'व्यास जी' द्वारा सम्पन्न किया गया, उसी प्रकार भोजपुरी में 'भोजपुरी महाभारत' की रचना करके इं० राजेश्वर सिंह जी द्वारा भोजपुरी भाषा का सम्मान पूरे भारत वर्ष में बढ़ाया गया है। सिंह साहब भोजपुरी के व्यास ही हैं। भोजपुरी रामायण की रचना करके महाकाव्यों के युग की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन भोजपुरी वालों को कराना एक अभूतपूर्व घटना है।

उनकी प्रारम्भिक रचनाओं में श्रृंगार रस का खुला प्रदर्शन किया गया है। बाद की रचनाओं में शान्त रस, परिपाक बड़े करीने के साथ किया गया है। कुछ रचनाएं उपदेश परक भी हैं। 'घरेलू नुस्खा' के रूप में खान-पान की वस्तुओं का गुण-दोष चर्चा कविता के माध्यम से किया

www.bhojpurisahityangan.com

गया है जो कि पठनीय है और पास-पड़ोस के पेड़-पौधों की औषधिय उपयोगिता का वर्णन किया गया है।

समुन्द्र तट पर सेतु निर्माण कार्य भालू-बन्दरों की सेना द्वारा सम्पन्न कराया जा रहा था। एक गिलहरी समुन्द्र-जल में स्नान कर निकलती है और किनारे की रेत पर लेट कर निर्माणाधीन सेतु पर जाकर अपने शरीर पर लिपटे बालू को झाड़ (गिरा) देती थी। इस प्रकार अपनी भूमिका अदा कर रही थी। श्री सिंह के अभिनन्दन ग्रन्थ के निर्माण में हमारी भूमिका गिलहरी के समान ही है। हमारा विचार और भाव आलेख के रूप में स्वीकार करें।

❖

दिहले कऽ आनन्द पवले के आनन्द से बरियार होला

स्वामी रामतीर्थ जी के जिनगी क एगो घटना बाड़े। स्वामीजी दिन भर घूमत-घामत प्रवचन देत थक के सांझी कऽ अपने डेरा पऽ पहुँचलन। ऊ अपना हाथ से अपना खाना पकावैं। खाना पका के धइते कुछ लइके आ गइलन अउर कहे लगलन कि स्वामी हमरा सबके भूखि लागल बाऽ कुछ परसादी दे देईं। स्वामी जी लइकन के चेहरा ओर ताकि के लइकन के भुखाइल जानि गइलन अउर सगरो रोटी लइकन में बाँटि दिहलन। पड़ोस क एगो मेहरारू ई कुल्हि देखति रहल। ऊ स्वामी जी से पूछि पड़लि कि ए महाराज ! सगरो रोटिया तऽ रउआँ बाँटि दिहलीं अपना का खाइल जाई। एह पर स्वामी जी कहलन-"माई ! रोटी पेटे क आगि बुझावे खातिर होला। चाहे एह पेटे कऽ बुझावै चाहे वोह लइकन के पेटे के। केहू के कुछ दिहले कऽ आनन्द खुद कुछ पवले के आनन्द से बरियार होला।"

-कल्यान कऽ जुगुति/पृ.सं. ४३ से

www.bhojpurisahityangan.com

११२

अध्यात्म के फरत फुलात जिनिगी के पोषक

-कनक किशोर

जिगिनी के एगो बड़ लक्ष्य होला अपना के जाने का। लोग जग के जाने में, छोट-छोट लक्ष्य में अझुरा भुला जाला आपन मूल लक्ष्य। मूल लक्ष्य भा अपना के जाने में गुरु के स्थान सर्वोपरि बा। कहलो गइल बा- **'गुरु बिनु भव निधि तरही न कोई, जो विरंची शंकर सम होई।'**

गुरु से जुड़ मनई बढ़ जाला साधना पथ पर, अध्यात्म पथ पर अपना के पावे खातिर। अपने के पा गइलका परमात्मा के पा गइल ह। साहित्य साधना पथ पर 'माया' के साधन ह, ओकरा के बाधको कहल गइल बा बाकिर आध्यात्मिक पथिक खातिर 'साहित्य' साधना बन जाला जब ऊ प्रमाणित होखे आ गुरु अउर परमात्मा के बखान करत होखे। भगवत प्रेम में डूबल प्रेमी के प्रेम दैहिक प्रेम ना होखे। देह के अपना से दूर भगावे खातिर त गुरु के आ शिव के शरण में जाला आ अपना में कृष्ण के बसा लेला। साधना-पथ पर साधक जब साहित्य के ओरि बढ़ जाला त ओकर साहित्यों साधना बन जाला। असहूं गुरु के आदेश रहेला कि साधक के जुड़ाव प्रमाणिक ग्रंथन से होखे के चाही। ई जुड़ाव माया के दूर करेला आ ज्ञान गागर भरे के, अपना के पहचाने के प्रमाणित सूत्र से अवगत करावेला। हम एह आलेख में अध्यात्म आ साहित्य के एगो समर्पित व्यक्तित्व, व्यक्तित्व से बेसी उचित होई योगी कहल, जेकर जिनिगी विज्ञान के आंगन में बितल, के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर कुछ कहे के हिम्मत उहाँ से क्षमा रहित कर रहल बानीं। ओहि विशाल व्यक्तित्व के स्वामी के नांव ह, इं. राजेश्वर सिंह।

हमनीं का भोजपुरिया समाज में घर आ दुआर त सभके रहत रहे, अधिक सम्पन्न लोगिन के घर-दुआर के अलावा बरघारा भा डीह घर से दूर रहत रहे। सिंह जी के घर अध्यात्म, दुआर समाज आ बरघारा गोरखपुर के भोजपुरी संग ह। इहां के जिनिगी से सब से बड़ सीख हमनी के इहे मिलेला की आजु के व्यस्त जीवन में कइसे घर, दुआर आ बरघारा, के बीच सही सामंजस्य स्थापित करे के चाही। आजु के समय में समाज, अध्यात्म आ साहित्य सही सामंजस्य के साथे ले चलल बहुत कठिन काम ह बाकिर असंभव ना ह ई बात सिंह जी ना उनुकर कृतित्व, साहित्यिक

www.bhojpurisahityangan.com

सिरिजिना आ सामाजिक सरोकार कह रहल बा। आगे उहां के साहित्यिक अवदान आ सामाजिक सरोकार पर कुछ बात कइल चाहब बाकिर ओकरा पहिले भोजपुरी के बढ़त डेग के ओरि ले जाइब एही बहाने कि जेकर कवनो अवदान भोजपुरी साहित्य में नइखे उहो सिंह साहब भा दूसर बड़ साहित्यकार पर अंगुरी उठा देता कमरा के भीतर। ई एगो सूंघ के, पलट के आपन सम्मति देत आजु के समय आपने जग हँसाई ह बाकिर नांव खातिर सभ मंजूर बा। बिना काम के नांव चाहे वाला लोग के कमी नइखे।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह साहब से पहिला मुलाकात उहां के राम कहानी, जे 'राम कहानी आपन-आपन' में आइल, के माध्यम से आ दूसरा बेर मुलाकात भइल पिछला बरिस (दिसम्बर २०२३), टाटा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन में। बाकिर उहाँ से असल मुलाकात भइल जब उहां के कुछ सिरिजना से गुजरनीं। कहल गइल बा कवनों व्यक्तित्व आ परिवेश जेह में पलल-बढ़ल बा ओकर छाप ओकर सिरिजिना पर पड़ेला आ सिरिजना के व्यापक आयाम देखि ओक व्यक्तित्व पर कुछ सार्थक बतकही कइल जा सकेला।

इं. राजेश्वर सिंह के रचना संसार :

इं. राजेश्वर सिंह के जन्म ४ अप्रैल सन् १९५० के गोपालपुर, तहसील-गोला, जिला-गोरखपुर के एगो किसान परिवार में, शिक्षा-सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक, उत्तर प्रदेश जल निगम में सेवारत, वर्तमान में गोरखपुर रहिके आत्म-कल्याण के संगे साहित्य सेवा से जुड़ समाज कल्याण दिसाई प्रयासरत बानीं। सरकारी सेवा में रहत आ पारिवारिक दायित्व के निर्वहन करत इहां के समान रूप से हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य के सेवा करत रहनीं। पहिले झुकाव हिन्दी के ओर रहे बाकिर माई भाषा के लगाव भोजपुरी के ओरि खींच ले आइल आ इहां के साहित्यिक अवदान में भोजपुरी के पलड़ा भारी बा। इहां के आजुले कुल आठ गो हिन्दी में त बारह गो भोजपुरी में पुस्तक आइल बा। भोजपुरी में बरिस २००४ से पुस्तक आइल शुरू भइल जे आजुले अनवरत चल रहल बा। एह आलेख में हम भोजपुरी के किताबन पर बात रखे के एगो छोट प्रयास कइले बानीं।

सिंह साहब के भोजपुरी के पहिला किताब आइल बरिस २००४ में 'जिनगी के दूबि हरिआइल'। ई संकलन शिक्षा प्रद कहानियन के रहे। बरिस २००७ में आइल 'कल्याण के जुगुति', ई निबंध संग्रह रहे। एकरा बाद बरिस २०१६ में 'पढ़ी समझीं मनन करीं-शिक्षाप्रद कहानी निबंध' के। एह तीनों किताब के शीर्षकन के नांव आ सामग्री कह रहल बा, रचनाकार के विषय में कुछ विशेष बात। विशेष बात ई बा कि शीर्षक आ सामग्री लेखक के समाज में जागरूकता लावे के परिचायक बा। सब संकलित कहानी आ निबंध लोगिन के मन करे खातिर बाध्य करता। एही से एहनी के सामाजिक सरोकार के कहनीं हँ हम। बाकिर एह सब कहानी आ आलेखन से रचनाकार

www.bhojpurisahityangan.com

के रचनात्मक दृष्टिकोण, सामाजिक फलक आ धर्मभीरु सोच के पता चलत बा, अध्यात्मिक लगाव के पता चलत बा। ओकरे फलाफल के रूप में आगे चलिके आइल राम आ श्याम पियारा साधु-संत, संत लोगिन के जिनिगी पर आधारित कहानी, 'भोजपुरी महाभारत', 'दीक्षा-गुरु', 'भोजपुरी रामायण', 'भोजपुरी योगी कथामृत' आदि उहां के भोजपुरी योगी कथामृत आ भोजपुरी पंच-तंत्र भोजपुरी अनुवाद के क्षेत्र में एगो विशेष उपलब्धि बा जेकरा खातिर भोजपुरी साहित्य उहां के हरदम ऋणी रही। ई जानल ह कि देहिये में परम सत्ता के बास होला आ देहिये स्वस्थ रही तबे आत्म-कल्याण आ जग अपना लायक बनेला। बरिस २०२० में ओहि के देखत 'घरेलू नुस्खा' के नांव से किताब ले अइनीं कि देहिया निरोग रहे। ई कदम लेखक के कल्याणकारी आ सामाजिक सरोकार के परिचायक बा। एह लोक कृतियन के कहानी से हमनी का परिचित बानीं जा बाकिर एके चीज का देखे के दू व्यक्ति के दूगो नजरिया होला। सिंह साहब के लोक नजरिया समझे खातिर किताब से गुजरल ठीक आ आत्मकल्याणकारी होखी।

अंत में अतने कहब :

जइसे बूंद जब समुद्र में लय हो जाला तब बूंद बन जाला वोइसहीं मनई जब परमात्मा से, गुरुता से जुड़ अभिभूत हो जाला तब ऊ गुरुता के प्राप्त करेला आ मनई के अभिव्यक्ति लोक के अभिव्यक्ति हो जाला। ओह में लोक-कल्याण के भावना छुपल रहेला। जे व्यष्टि के ना समष्टि के बात करेला। साहित्य के कसौटी इहे ह आ साहित्य के ओह कसौटी पर सिंह साहब के रचनन के परखला पर ई बात सामने आवत बा कि सिंह साहब समाज के सामने लोक-कलायण आ समष्टि के बात करत साहित्य के समृद्ध करत बढ़ रहल बानीं। डॉ० कमलेश राय जी के कहल ह-

जीवन के दो रंह हैं पतझड़ और बसंत,
मन है ऐसा बाबरा सुख चाहता अनंत ।

मनई के मन अनंत सुख के पीछे पागल बा, अनंत सुख के चाह राखेला जे एह जग में संभव नइखे। अनंत सुख खातिर अनंत से जुड़े के पड़ेला। सिंह साहब के साहित्य ओहि अनंत से जोड़े के एगो बरियार कड़ी के रूप में हमनी बीच उपस्थित बा। सिंह साहब के साहित्य के देखि चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'बशर' के गज़ल इयाद आ जात बा, जेकरा में उहां के कहले बानीं कि-

अंधे कुएं की कैद से बाहर तो आइए,
धरती को आसमान से ऊपर उठाइए ।
अंधे कुएं में सर्प है बिच्छू हजार हैं,
जैसे हो अपने आप को उनसे बचाइए ।।

www.bhojpurisahityangan.com

जगत अंधा कुपे नू ह, सांप- बिच्छू से भरल बा ओकरे से बाहर निकले के राह बतावत बढ़त रहे के सीख सिंह साहब के साहित्य हमनी का देत बा। आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' जी के शब्द उधार लेत राजेश्वर सिंह जी के साहित्य के बारे में कहब कि-

उबटन - धोवत देह के, सत हऽ कविता प्राण ।
मुहगर मुंह - मुस्कान के, चेतन - करऽ सयान ।।
आपन धे बा चेतना, आपन धे बा लोक ।
लोक कंठ खातिर सरस, कवि तें बनिजो श्लोक ।।

ई भाव रउवा सिंह साहब के लेखनी आ करनी दूनो में मिली। किसा आ विज्ञान के आंगन में पलल-बढ़ल, पोषित ईं. राजेश्वर सिंह के आत्मकल्याण पथ पर बढ़त आ लोक के बढ़ावे के प्रयास करत देखि के उहां के अध्यात्म के फलत-फुलात जिनगी के पोषक के संज्ञा देल उचित बुझात बा। साथे-साथ हम इहो कहब कि अध्यात्म के डगर पर हर दिशा से लोगिन के बढ़ावे में सिंह साहब के जिनिगि आ साहित्य सहायक बा एह में कवनो दू मत नइखे। उहां के जिनिगि के पचहत्तर बसंत देख लेले बानी। शतायु होखीं इहे कामना बा। साथे इहो कामना बा कि अइसहीं साहित्यांगन में अमृत के बारिश करत रहीं, भोजपुरी के भंडार भरत रहीं। अमृत महोत्सव के खूब-खूब बधाई आ मंगलकामना।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

११३

तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते

-योगेन्द्र नाथ शुक्ल

पवित्र पावनी मां सरयू नदी में जहाँ संत, गृहस्थ, मुनि, बालक, वृद्ध, नर, नारी अपने पाप-ताप का शमन करने के लिए समय-समय पर दरस, परस, मज्जन करने में अपना सौभाग्य समझते हैं। जहां भगवान राम मां सरयू के तट पर बसे अयोध्या नगरी में अवतार लेकर उनके गोद में पले बढ़े तथा जल समाधि लेकर माता सरयू को अत्यधिक महिमा मंडित कर दिया। यही कारण है कि मां सरयू नदी में स्नान, दान आदि के लिए लाखों भक्त, संत, गृहस्थ पर्वों पर भारी संख्या में उमड़ पड़ते हैं।

ऐसे ही गोरखपुर के बड़हलगंज से अयोध्या जाने वाली राम-पथ पर बसे गोला नगर पंचायत के क्षेत्र में गोला से सटे गोपालपुर गांव में एक अतिशय संभ्रान्त एवं भगवत प्रेमी सामान्य परिवार में समर बहादुर सिंह का जन्म हुआ। बड़े होने पर इनका विवाह सुशीला तथा धर्मप्रिया परमजोता से हो गया। धार्मिक ग्रन्थों संत चरित्रों को सुनने तथा सुनाने में दोनों दंपत्ति अत्यन्त सुख एवं आनन्द का अनुभव करते थे। कालांतर में परमजोता के गर्भ में ईश्वर के अंश का अनुभव हुआ परंतु दोनों पति-पत्नी गृहस्थी का कार्य देखते हुए थोड़ा समय मिलता था तो हरि चर्चा में व्यस्त हो जाते थे। जिसका असर गर्भस्थ शिशु पर भी पड़ने लगा। ९ माह बीतने पर वीर प्रसूता परमजोता के गर्भ से एक तेजस्वी पुत्र का जन्म ४ अप्रैल सन् १९५० को हुआ। पैदा हुए शिशु में तेज झलक रहा था। धीरे-धीरे बच्चा द्वितीया की चांद की तरह बढ़ने लगा, ५ साल की उम्र में होने पर समर बहादुर सिंह एवं परमजोता ने नाम-संस्करण में बालक का नाम राजेश्वर रखा। प्रारम्भिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय गोपालपुर तथा हाईस्कूल की शिक्षा वी०एस०ए०वी० इंटर कालेज, गोला में हुई। ज्योतिषियों ने उनके जन्मकाल की गणना करके उनके माता-पिता को बताया था कि बालक तेजस्वी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करके तकनीकी शिक्षा में रुचि लेगा। ज्योतिषियों ने यह भी बताया कि यह जातक धन से अधिक धर्म को प्रमुखता देगा, क्योंकि भोजपुरी में कहा गय। है कि-"होनहर विरवा कऽ चिक्कन पात।" १९७३ ई० में बी०ई० (सिविल) उत्तीर्ण करके उत्तर प्रदेश जल निगम में अधीक्षण अभियंता के रूप में उत्कृष्ट सेवा प्रदान करते हुए अप्रैल २०१० में सेवानिवृत्त हो गए। सेवानिवृत्ति के बाद मध्य प्रदेश में जल निगम में वरिष्ठ सलाहकार अभियंता, बिहार नगरीय

www.bhojpurisahityangan.com

विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियंता के पद पर वरिष्ठ सलाहकार के रूप में अपनी सेवायें प्रदान किया।

व्यक्तित्व : इंर्जानियर राजेश्वर सिंह का व्यक्तित्व बहुत ही उच्चकोटि का था। सरल, मृदुभासी तथा सहनसीलता जैसे गुण उनके व्यक्तित्व में चार चांद लगा देते हैं। यही कारण है कि बचपन में अपने साथियों में प्रिय थे साथ ही नौकरी करते समय भी अपने बड़ों तथा छोटे लोगों का पूरी तरह सम्मान करते थे। लंबा एवं स्वस्थ शरीर के धनी थे। ०९-०२-२०२० रविवार को "भोजपुरी संगम परिवार" के तत्वावधान में गोलघर-गोरखपुर के एक होटल में "राम पियारा साधु संत" पुस्तक के विमोचन के अवसर पर मेरी पहली मुलाकात हुई, ऐसा व्यक्तित्व देखकर मैं प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। इसके बाद और भी अवसरों पर मुलाकात होती रहती है।

कृतित्व : राजेश्वर सिंह जी, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी के जानकार होते हुए भी इनको हिंदी एवं संस्कृत की भी अच्छी जानकारी थी। शुरू में इनकी रूझान खड़ी बोली में साहित्य सृजन का रहा। परंतु कालान्तर में गुरु दीक्षा के प्रभाव के कारण धर्म एवं धार्मिक ग्रन्थों की तरफ आकर्षण बढ़ता गया। अपनी सोंधी माटी की महक से सुगंधित भोजपुरी क्षेत्र में पले बढ़े होने के कारण भोजपुरी भाषा के प्रति इनका झुकाव बढ़ता गया। यही कारण है कि इनके रचित ग्रंथों में भोजपुरी रामायण, भोजपुरी महाभारत, राम पियारा साधु संत, दीक्षा गुरु, श्याम पियारा साधु संत, कल्याण क जुगति, पढ़ीं समझीं मनन करीं जैसे ग्रंथों में हिंदी के दुरूह शब्दों को भोजपुरी में अनुवाद करके साहित्य को बोधगम्य तथा सरल बना दिया। भोजपुरी भाषा में प्रगाढ़ प्रेम के कारण इन्होने अपने ग्रंथों को भोजपुरी में लिखकर इस भाषा की उन्नति एवं विकास करने में अपनी अमूल्य योगदान दिया।

नागरिकों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता : इंजीनियर राजेश्वर सिंह भारत के नागरिकों के स्वास्थ्य के बारे में भी जागरूक रहे हैं। इन्होंने अंग्रेजी दवाइयों की तुलना में भारतीय आयुर्वेद पद्धति के प्रचार-प्रसार में "घरेलू नुस्खा" पुस्तक की रचना करके भोजपुरी भाषा के साथ-साथ वनस्पतियों तथा जड़ी बूटियों के बारे में भी जानकारी देने का प्रयास किया जो कि यह एक सराहनीय कार्य है। "तंदुरुस्ती लाख नियामत" को चरितार्थ करते हुए अपने एक नुस्खे में केले के फल के बारे में बताया है-

"अल्सर हो जब पेट में, कच्चा लेई उबालीं।
बिना मसाला मिर्च नित एक महीना खा लीं।"

बहुज्ञता : राजेश्वर बाबू बहु आयामी प्रकृति के व्यक्ति हैं हर क्षेत्रों में आर्थिक, धार्मिक, कृषि, स्वास्थ्य तथा अनेक किस्से कहानियों एवं पंचतंत्र का सहारा लेकर लोगों को जागरूक करने में सफल प्रयास किया है। सदाचार तथा शिष्टाचार से संबंधित अनेक नियम अपने घरेलू नुस्खे

www.bhojpurisahityangan.com

में बताया है। इन नियमों पर चलकर बूढ़े, बच्चे, स्त्री, युवक, युवती संस्कारित तथा चरित्रवान बन सकते हैं। कृषि वैज्ञानिक घाघ के कुछ कहावतों को अपने लेख में शामिल किया है-

''चैत में गुड़, बैशाख में तेल
जेठ में पथ, आषाढ़ में बेल।
सावन साग न भादो दही,
कवार करेला कातिक मही।''

उपरोक्त पंक्तियों में यह बताया है कि किस-किस महीने में क्या नहीं खाना चाहिए।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आदरणीय राजेश्वर सिंह जी सरल सहृदय आस्तिक तथा धर्म परायणता के साथ-साथ स्वास्थ्य संबंधी कहानियों, गुरु प्रति निष्ठा, आयुर्वेद तथा घाघ की कहावतों द्वारा सरल नुस्खे का प्रयोग कर अपनी बहुग्यता को स्पष्ट किया है। मैं (लेखक) उनके दीर्घायु तथा उत्तम स्वास्थ्य के लिए ईश्वर से कामना करता हूँ।

''इति शुभम्''

❖

www.bhojpurisahityangan.com

एगो मौन साधक के बहुमूल्य उपलब्धि

-सूर्यदेव पाठक "पराग"

इंजीनियर राजेश्वर सिंह से हमार परिचय पिछला चउदह बरिस से बा। एह से उनका व्यक्तित्व आ कृतित्व का विविध आयामन के जाने आ परखे के मौका लगातार मिलत रहलबा। उनका से संपर्क के सूत्र भोजपुरी के बढ़ंती खातिर प्रतिबद्ध गोरखपुर के एकमात्र संस्था "भोजपुरी संगम" के स्थापना काल से जुड़ल बा आ ओही माध्यम से भोजपुरी का साहित्यिक गतिविधियन का साथी के रूप में काम करे के अवसर मिलत रहल बा।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह क जन्म ४ अप्रैल, १९५० के ब्लाक, तहसील-गोला, जिला-गोरखपुर के गोपालपुर गाँव में भइल। ऊ उत्तर प्रदेश जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से, अप्रैल २०१० में सेवानिवृत्त भइलका के बाद बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार आ मध्य प्रदेश जल निगम में वरिष्ठ सलाहकार के पद पर काम क के अपना योग्यता आ काबलियत के परिचय दे चुकल बाड़े।

कवनो भाषा-साहित्य का विद्यार्थी के लिखे-पढ़े में रुचि त स्वाभाविक रूप से होइवे करेला, बाकिर कुछ व्यक्ति विशेष के रुचि साहित्य का प्रति जन्मजात होला, चाहे ऊ कवनो विषय के अध्येता रहल होखे। भोजपुरी साहित्यकारन में अइसन बहुत कवि-लेखक बाड़े जे विज्ञान भा अभियंत्रणके विद्यार्थी रहला के बादो साहित्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठा अर्जित कइले बाड़े। इंजीनियर राजेश्वर सिंह एह कोटि में बानी।

इंजीनियर राजेश्वर साहित्यकार होखे का पहिले एगो सुसंस्कृत आ धार्मिक आचार-विचार संपन्न परम सात्विक मनई हईं। एकर उदाहरन उनका रहन-सहन, बात-विचार आ उनकर लिखल पोथियनके पढ़के पावल जा सकेला।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह के साहित्य-यात्रा पहिले हिन्दी लेखन से शुरु भइल। ओह क्रम में सन् २००३ से २००७ तक आठगो पुस्तकन के प्रकाशन भइल, जवना में सातगो कथा-कहानी आ एगो श्रीराम महायज्ञ से जुड़लि बा। ओह पुस्तकन के नाँव बा-१. एक कहानी की

www.bhojpurisahityangan.com

आत्मकथा (२००३), २. एक कहानी बीच में है (२००४), ३. जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ? (२००४), ४. सुख जागे दुःख भागे (२००४), ५. श्रीराम महायज्ञ की कथात्मक झलकियाँ (२००४), ६. गाँव से जब शहर आ गये (२००५), ७. जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (२००६) और ८. नसीब अपना-अपना (२००७)।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह के अपना सेवा-काल में हिन्दी के कवि आ प्रसिद्ध गज़लकार डॉ० मधुर नज्मी से संपर्क भइल, जिनका प्रेरणा, प्रोत्साहन आ सहयोग से शुरुआती अनेक हिन्दी पुस्तकन के प्रकाशन संभव भइल।

सन् २००४ में इंजीनियर राजेश्वर सिंह के भोजपुरी के प्रति अनुराग पैदा हो चुकल रहे। परिणाम स्वरूप ओही बारहगो भोजपुरी कहानियन के संग्रह "जिनगी कऽ दूबि हरियाइल" प्रकाशित भइल। तबे से अपना माई भाषा में लिखे-पढ़े के शुरुआत हो गइल।

सन् २०१० में भोजपुरी भाषाआ साहित्य का विकास के प्रति समर्पित दैनिक आज अखवार आ भोजपुरी कहानियन के पूर्व संपादक कथाकार गिरिजा शंकर राय "गिरिजेश" का अध्यक्षता में गोरखपुर में एगो बइठकी भइल, जवना में "भोजपुरी संगम" नाँवके एगो संस्था के गठन कइल गइल। ओह बइठकी में सर्वश्री जोगानी भाई, सूर्यदेव पाठक 'पराग', सत्यनारायण मिश्र, रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी, चन्देश्वर शर्मा 'परवाना', केशव पाठक 'सृजन' आदि ३१ लोगन के भागीदारी रहल। इंजीनियर राजेश्वर जी शायद कवनो कारन से उपस्थित ना हो सकलीं। बाकिर बाद में हर महीना के दुसरका एतवार के आयोजित होखे वाली तिसरी आ पाँचवीं बइठकी के अध्यक्षो होखे के गौरव पवलीं। इंजीनियर राजेश्वर जी के भोजपुरी का प्रति समर्पण आ उदार प्रवृत्ति के देखत "भोजपुरी संगम" के संरक्षक बना दिल गइल। ओह पद के खुशी-खुशी स्वीकार करत इंजीनियर राजेश्वर जी आपन जिम्मेदारी निभावे में कवनों कोर-कसर ना छोड़लीं।

१३-०२-२०११ के बारहगो बइठकी पूरा भइला पर बिचार बनल कि बारहो बइठकी में पढ़ल कविता, कहानी आ ओहन पर प्रस्तुत समीक्षन के सिल-सिलेवार पुस्तकरूप में प्रकाशित करा दीहल जाय, ताकि बारहो के लोगन के गोरखपुर में होखे वाली भोजपुरी से जुड़ल गतिबिधियन के जानकारी हो सके।

कवनो साहित्यिक संस्था में कविता आ कहानी पाठ करे वाले बहुत मिल जाले जे आपन सुनावें भर के आपन जिम्मेदारी मान के अपना के किनारा कर लेले, बाकिर आपन पइसा खर्च क के सामूहिक काम करे वाले मनई बहुत कम मिलेले। "भोजपुरी संगम" के संरक्षक इंजीनियर राजेश्वर सिंह प्रकाशित होखे वाली "बइठकी" का प्रकाशन के बीड़ा उठा लिहलीं आ आँशिक

www.bhojpurisahityangan.com

आर्थिक सहयोग खातिर अपना समधी श्री ध्यानपाल सिंह आ उनका धर्मपत्नी ईसा सिंह जी के जोड़ के "बइठकी" भाग-एक २०११ का प्रकाशन के समस्या हल कइ दिहलीं।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह में भोजपुरी का प्रति अघोर प्रेम का साथे पुस्तकन के १००० प्रति तक छपवाई के दूर-दूर तक के भोजपुरी सेवकन तक पहुँचावे के ललक देखते बनेला। सन् २०११ में "बइठकी" भाग-एक का प्रकाशन के बाद ओही साल नवम्बर में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के २४वाँ अधिवेशन जमशेदपुर (झारखण्ड) में हमरा अध्यक्षता में आयोजित रहे। ओह में भाग लेवे खातिर इंजीनियर राजेश्वर जी शायद अपना काम में व्यस्त रहला से जाये के तइयार ना हो सकलीं, बाकिर हमरा साथे जाये आ "भोजपुरी संगम" के प्रतिनिधित्व करे खातिर सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन' आ धर्मदेव सिंह 'आतुर' तइयार भइलें। इंजीनियर राजेश्वर सिंह के हिदायत रहे कि अधिवेशन में बाँटे खातिर "बइठकी" के ज्यादा से ज्यादा प्रति जाये के चाही। "बइठकी" के लगभग ३०० प्रति दूगो बड़ा झोला में रख के 'सत्तन जी' 'आतुर जी' अधिवेशन में पहुँचवले, जवन बाहर से आइल प्रतिनिधि लोगन में खूब बँटाइल, साथ ही "भोजपुरी संगम" के चर्चा खूब भइल

"बइठकी, भाग-दू" के प्रकाशन में सात बरिस देर हो गइल। एहसे प्रकाशन सामग्रियां ज्यादा हो गइल। पहिला भाग महज १४४ पृष्ठ में छपल रहे, बाकिर दुसरका भाग ४०० से ज्यादा पृष्ठ को होत रहे। एह से छपाई के खर्चो ज्यादा भइल स्वाभाविक रहे। ओहू के छपवावे के भार इंजीनियर राजेश्वर जी अपना कान्हा पर ले लिहलीं, आ सन् २०१८ में "बइठकी, भाग-दू" ४३२ पृष्ठ में छप के आ गइल। इंजीनियर राजेश्वर जी के एह उदारता के देखत डॉ० रामदेव शुक्ल उनका के "भामा साह" कहले रहीं, जे हर तरह से उपयुक्त लागत बा।

इंजीनियर राजेश्वर जी का व्यक्तित्व में एगो सुनहुला पक्ष बा सहजता, सरलता, हर आदमी प्रति आत्मीय भाव आ सहयोग-भावना। एह प्रसंग में एगो घटना इयात आवत बा। पाँच-छव बरिस पहिले भोजपुरी के प्रसिद्ध साहित्यकार स्व० डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' का स्मृति में हमरा के सम्मानित करे खातिर निर्भीकजी के बेटा डॉ० अजय कुमार ओझा फोन क के बतवले कि एह साल के "निर्भीक सम्मान" रउरा के देवे के निर्णय भइल बा। एहसे आवे के आपन स्वीकृति दीहीं। अगर चाहीं त अपना साथे केहू के ले आ सकीलें। ओकरो यात्रा व्यय संस्था के ओर से दीहल जाई। डॉ० अजय जी हमरा स्वीकृति खातिर बहुत निहोरा कइले। जब हम जाये में असमर्थता बतवलीं त बहुत निराश भइले। बाद में जब हम एह बात के चर्चा इंज़ीनियर राजेश्वर जी से कइलीं त ऊ कहें-"रउआ संकार लेबे के चाहत रहल ह। हम रउरा साथ चलतीं। ई जान के हमरा बहुत अफसोस भइल कि अगर हम इंजीनियर राजेश्वर सिंह से बात कइले

www.bhojpurisahityangan.com

रहतीं त ऊ मौका हाथ से ना जाइत।''

पाँच साल पहिले हम गोरखपुर से लखनऊ आ गइलीं। जगह बदल गइल, समय बदल गइल आ साथ ही आदमी के व्यवहारो बदलत गइल, बाकिर इंजीनियर राजेश्वरजी के बात-व्यवहार आज ले ना बदलल। हमरा प्रति उनकर आत्मीयता आ आदर-भाव आजो ओइसने बा जइसे पहिले रहे। बलुक उनकर उपयोगिता हमरा खातिर पहिले से कहीं ज्यादा बढ़ गइल बा। कई बार अइसन मौका आवेला जब ऊ कवनो साहित्यिक आयोजन खास क के पुस्तक लोकार्पण समारोह में जालें जहाँ हमरो खातिर पुस्तक प्राप्ति के संभावना बनेला त थोड़ा इसारा क दिहला पर इंजीनियर राजेश्वर जी बिना हिचक के आयोजक से हमरो प्रति लेके डाक से हमरा तक पहुँचा देलें। हम जानीलें कि हमरा खातिर पुस्तक माँगल अउर ले के आपन पइसा आ समय खर्च क के डाक से भेजे के काम शायदे केहू कर सकेला, बाकिर इंजीनियर राजेश्वर जी हमरा खातिर अतना खर्च आ परेशानी उठा सकेले ई सोच के मन में बहुत ग्लानि होला, बाकिर हमार मजबूरी आ इंजीनियर राजेश्वर जी के सहृदयता ई करा लेला। हम भाग्यशाली बानी कि अइसन व्यक्ति हमनी के साथी-संगि आ शुभाकांक्षी बाटे। इंजीनियर राजेश्वर जी से जे भी जुड़ल बा, ऊ उनका मोहक व्यक्तित्व से परिचित बा।

जइसन कि पहिले चर्चा हो चुकल बा कि इंजीनियर राजेश्वर जी सेवा-काल में ''काव्यमुखी साहित्य अकादमी'', गोहना, मुहम्मदाबाद (मऊ) के महानिदेशक डॉ मधुर नज्मी से बहुत घनिष्ठता रहल। उनके प्रेरणा आ प्रयास से उनके साहित्यिक संस्था ''काव्यमुखी साहित्य अकादमी'' से इंजीनियर राजेश्वर जी के दूगो किताब ''जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (कहानी संग्रह)'' (२००४) में आ ''कल्याण कऽ जुगुति (निबन्ध संग्रह)'' (२००७) में प्रकाशित हो के खूब चर्चा में रहल। डॉ० मधुर नज्मी इंजीनियर राजेश्वर जी का व्यक्तित्व के चर्चा करत ''जिनगी कऽ दूबि हरियाइल'' के प्रकाशकीय नजरिया में लिखले बाड़े-''इंजीनियर राजेश्वर सत्यप्रिय, न्यायप्रिय, फकीर मिजाज, कुशल प्रशासनिक अधिकारी हैं, सादगी इनके शालीन व्यक्तित्व का गहना है।''

डॉ० नज्मी एके वाक्य में इंजीनियर राजेश्वर जी का व्यक्तित्व का विविधि पक्षन के उद्घाटित कर देले बाड़े।

कवनो आदमी का व्यक्तित्व के प्रभाव ओकरा कृतित्वों पर पड़ेला। आदमी का भीतर पलल संस्कार से व्यक्तित्व के निर्माण होला। जेकर जइसन व्यक्तित्व होला ओकरे अनुरूप ओकर संस्कार निर्मित होला। इंजीनियर राजेश्वर जी का व्यक्तित्व से उनका कृतित्व के अंदाजा लगावल जा सकत बा। लिखें में विधागत भिन्नता हो सकत बा, बाकिर कृतित्व के भाव-भूमि लेखक का व्यक्तित्व से बहुत भिन्न नइखे हो सकत।

www.bhojpurisahityangan.com

इंजीनियर राजेश्वर जी का कृतिकार के चार भाग में बाँटल जा सकत बा-कहानीकार, निबन्धकार, जीवनी संग्राहक आ अनुवादक के रूप में।

पहिलकी प्रकाशित भोजपुरी पुस्तक "जिनगी कऽ दूबि हरियाइल" बारहगो कहानियन के संग्रह ह। ई सभ कहानी आज लिखल जाये वाली कहानियन से थोड़ा हट के, आसपास घटत घटनन के कहानी के रूप देके प्रवचन आ दृष्टान्त का शैली में लिखाइल बाड़ी स।

एह कहानियन में कवनो ना कवनों तरह के नीति चाहे भिक्षा के भाव भरल बा। कुछ कहानियन के शीर्षक देखल जाय-'सठ सुधरहि सत्संगत पाई', मदद अकारथ ना जाले, 'जो जस करहिं सो तस फल चाखा, छोटहर मनई कऽ लमहर बाति' आदि।

सन् २००७ में प्रकाशित इंजीनियर राजेश्वरजी के दूसरकी पुस्तक "कल्यान कऽ जुगुति" एगो भोजपुरी निबन्ध संग्रह, जवना में २८ हो निबन्ध शामिल बाड़े स। सभ निबन्धन में ईश्वर का प्रति आस्था, पूजा-पाठ के महत्व, सत्संग से लाभ, सुख के आधार आदि के विषय बना के भोजपुरी-हिन्दी के कथाकार, समीक्षक डॉ० विवेकी राय के विचार जाने जोग बा-"येह संकलन में संकलित कुल्हि निबन्ध एक से बढ़िके एक बाड़नस, जवना के अगर आदमी अपना जिनगी में उतार लेव त ओकर जिनगी धन्य हो जाई।" डॉ० राय इहो मनले बानी-"यह बात के कहला में हमके कवनां संकोच नइखे बुझात कि अब तक कउनो कृति पढ़िके ओतना संतोष ना मिलल या खुशी ना भइल जेतना कि येह कृति के पढ़िके भइल। भोजपुरी-साहित्य का क्षेत्र में ई कृति एगो मील कऽ पत्थर बा।"

निबन्धन के रुचिगर आ प्रामाणिक बनावे खातिर संत तुकाराम, कबीर आ तुलसीदास का पदन के अनेक उदाहरन दिहल गइल बाड़े स।

इंजीनियर राजेश्वर जी तीसरकी पुस्तक "पढ़ीं समझीं मनन करीं" ४३ गो छोट-छोट निबन्धन के संग्रह ह, जवना के प्रकाशन सन् २०१६ में भइल। एह में जिनगी के धार्मिक संस्कार से सजावे-सँवारे का बारे में बतावल गइल बा। एह पुस्तक का नाँव में भी अध्ययन के तीन सोपान के संकेत बा-"पहिले कवनो सद्ग्रंथ के पढ़ल जरूरी बा, फेर ओकरा में निति भाव के समझीं आ मन में बइठावे खातिर मनन-चिन्तन करीं, तब ओकरा के आचरण में लावे के निरन्तर अभ्यास करीं। १२४ पन्ना के एह पुस्तक के मूल्य लिखल बा-'भोजपुरी सेवा।' एहसे साफ पता चलत बा कि इंजीनियर राजेश्वर जी के भोजपुरी माई-भाषा भोजपुरी के सेवा। मेहनत क के चरित्र-निर्माण करे वाला विषय पर भोजपुरी में लिखे आ अपना पइसा से अच्छा पुस्तक छपवा के मुफ्त में खुला हाथ से बाँटे वाले मनईं इंजीनियर राजेश्वर जी जइसन शायदे मिलिहें।

www.bhojpurisahityangan.com

इंजीनियर राजेश्वरजी के चउथकी पुस्तक "भोजपुरी भागवत कथा-सार" के प्रकाशन सन् २०१८ में लोकायत प्रकाशन, लंका, वाराणसी से भइल बा। भूमिका का साथ १८+२७० पन्ना के, भक्तिरस से सराबोर ई पुस्तक, भोजपुरी पण्डितन खातिर इंजीनियर राजेश्वर जी के ओर अनमोल उपहार बा। भोजपुरी इलाका के कम पढ़ल-लिखल भोजपुरिया लोग एह पुस्तक से भागवत कथा के आनन्द ले सकत बा। श्रीमद्भागवत कथा के बीच-बीच में भागवत के श्लोक का साथे श्रीमद्भगवद्गीता आ "श्रीरामचरित मानस" के उदाहरण से लेखक का अध्ययन के पता चलत बा।

इंजीनियर राजेश्वर जी के पाँचवीं पुस्तक "राम पियारा साधु संत" के प्रकाशन सन् २०१९ में भइल बा। एह पुस्तक में ५१गो राम भक्त साधु-सन्तन के चर्चा भइल बा। कुछ राम के समकालीन हो के रामकथा से जुड़ल रहले आ कुछ बाद में जन्म ले के रामभक्ति का साथे अपना लेखनी से रामभक्तिपरक पद लिख के समाज में रामभक्ति के धारा प्रवाहित क के अपना जिनगी के सार्थक कइलें। अइसन भक्तन में महर्षि बाल्मीकि, महर्षि वेद व्यास से लेके भीखा साहेब, संत श्री गुलाल साहेब, पलटू दास, रूपकला जी आदि भक्तन का भक्तिभाव के, उनके रचल भक्ति पदन का साथे दीहल गइल बा।

सन् २०२० में इंजीनियर राजेश्वर जी आपन छठवीं भोजपुरी पुस्तक "भोजपुरी महाभारत" भोजपुरिया पाठक-समाज के सउँपलीं। ३०० पन्ना के एह पुस्तक में पूरा महाभारत के कथासार, प्रत्येक पर्व के क्रम से सजा के तइयार कइल बा। इंजीनियर राजेश्वर जी महाभारत पर लिखल अनेक ग्रन्थन के मथ के कथा नवनीति निकाल के प्रयास कइले बानी। एह बहुमूल्य ग्रंथ में ना कहीं क्रम टूटल बा, ना कवनो मुख्य कथा छुटलि बा। इंजीनियर राजेश्वर जी द्रौपदी चीर-हरण के प्रसंग मार्मिक बनावे खातिर "बिन्दु" जी के एगो पद आ महाकवि चन्द्रशेखर मिश्र का "द्रौपदी काव्य" के अंश उद्धृत कइले बानी।

"श्याम पियारा साधु-संत" इंजीनियर राजेश्वर जी के सातवीं कृति ह, जवना के प्रकाशन २०२० में भइल बा। एह पुस्तक में लीलापुरुषोत्तम श्रीकृष्ण का भक्ति-भाव से जुड़ल ३८ गो साधु-सन्तन के जीवन-चरित उनकर रचल कुछ रचनन का साथे परोसल बा। पुस्तक में अष्टछाप के संत कवियन से लेके बाद तक के ज्ञात-अज्ञात साधु-संतन के जीवन-चरित शामिल बा, जवना से भगवान श्रीकृष्ण से प्रेम रखे वाले लोगन के लाभ होई।

इंजीनियर राजेश्वर का प्रकाशन क्रम के आठवीं कड़ी में एगो महत्वपूर्ण पुस्तक "दीक्षा गुरु" २०२० में पाठक वर्ग का समाने आइल, जवना में अइसन तपोनिष्ठ गुरुजन के जीवन-परिचय पाठकन का सोझा रखल गइल बा, जे सही अर्थ में गुरु के गरिमा वाले पद पर प्रतिष्ठित

www.bhojpurisahityangan.com

होके अपना अमृतवाणी आ पवित्र आचरण से समाज पर आपन अमिट छाप छोड़ले आ अपना अनुयायिन के अपना पंथ में दीक्षित क के उनका आध्यात्मिक जीवन के पथ प्रशस्त कइलें।

एह पुस्तक में जवना गुरु समुदाय के जीवन-परिचय दीहल बा, ऊ बाड़े-"श्री रामानन्दाचार्य, श्रीरामानुजाचार्य, योगिराज देवरहा बाबा, गुरु नानकदेव जी, सन्त प्रवर दादू दयाल, महात्मा तेलंग स्वामी, श्रीरामकृष्ण परमहंस, श्री विवेकानन्द, श्री जयदयाल जी गोयनका, श्री सीताराम दास ओंकारनाथ महाराज, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, श्री परमहंस योगानन्दजी, महन्त दिग्विजयनाथ जी, श्री सच्चिदानन्द दास 'बंगाली बाबा', स्वामी करपात्री जी महाराज, पं० श्रीराम शर्मा, श्री राधा बाबा, महर्षि ओंकारानन्द स्वामी, स्वामी स्वतंत्रतानन्दजी, महन्त अवैधनाथ आ सद्गुरु शरणानन्दजी महाराज।"

पुस्तक के आरम्भ में गुरु के तर्क सम्मत व्याख्या क के आध्यात्मिक राह पर बढ़े बाला खातिर गुरु के महत्व बतावल गइल बा। भूमिका का रूप में प्रो० रामदेव शुक्ल, प्रो० चित्तरंजन मिश्र आ प्रो० रामदरस राय के विद्वत्तापूर्ण वक्तव्य पुस्तक के गरिमा बढ़ा देले बा।

सन् २०२० में इंजीनियर राजेश्वर के लेखन आ प्रकाशन एगो नया कीर्तिमान बनावें में सफल भइल। मात्र एक साल में भोजपुरी महाभारत, श्याम पियारा साधु संत आ दीक्षा गुरु जइसन भारी भरकम तीन गो पुस्तकन का प्रकाशन के बाद एगो छोट बाकिर स्वास्थ्य का देसाई अत्यन्त उपयोगी पुस्तिका "घरेलू नुस्खे" प्रकाशित भइल।

धरम-करम का नियमन के ठीक से पालन करे खातिर देह के नीरोग रखे के जरूरत पर जोर देत हमनी के पुरनिया लोग लिखले बाड़े-"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" अर्थात् धर्म खातिर देह पहिलका साधन ह। इहै ध्यान में रख के धर्म का प्रति आस्थावान इंजीनियर राजेश्वर जी एह लघु पुस्तिका के भोजपुरी पाठकन खातिर लिख के एकर भरपूर प्रचार-प्रसार करे का मकसद से सन् २०२० आ २०२३ में दू संस्करण का माध्यम से चार हजार प्रति छाप के बाँट रहल बानी। ई छोट पुस्तिका उपयोगिता का हिसाब से सभ बड़ पुस्तकन से भारी पड़ति बा। एमें औषधीय गुण वाले मसाला, फल-फूल, जड़ी-बुटियन के गुण आ उन्हकी के उपयोग करे के विधि आदि पर हवे। एह में इंजीनियर राजेश्वर जी भोजपुरी कविता में बान्ह के एगो कवि का रूप में भी पाठकवर्ग का सामने आइल बानी। एह पुस्तिका में अजवाइन, अदरक, अमरूद, अनार, आम, आँवला, इलायची आदि के अनेक रोगन में उपचार विधि दीहल बा। जइसे-

अदरक के श्वाँस रोग आ खाँसी में प्रयोग-विधि-

स्वास रोग पाचन कमी, खांसी होय जुकाम ।

www.bhojpurisahityangan.com

सहद मिला अदरक चखीं, हो जाई आराम ।।

आँवला :

बड़ गुणकारी आँवला, विटामिन सी भरपूर ।
चटनी बने मोरब्बा, लड्डू बने जरूर ।।

पुस्तिका का अन्त में स्वास्थ्य से जुड़ल कुछ लोकोक्ति आ सदाचार-शिष्टाचार के कुछ नियम आदि से एह पुस्तिका के उपयोगिता बहुत बढ़ जाति बा।

इंजीनियर राजेश्वर जी का दसवीं पुस्तक "भोजपुरी रामायण" के प्रकाशन सन् २०२१ में भइल बा। एकर कथावस्तु 'श्रीरामचरित मानस' का कथानक में रामायण के पूरा कहानी पढ़के अलग आनन्द बा। श्री राम आ रावन का जन्म से लेके श्री राम के जल-समाधि तक का घटनन के जोड़ दिहला से श्रीराम के पूरा जीवन-वृत्त एह रामायण में समाहित हो जात बा। एह मानें में ई पुस्तक "श्री रामचरित मानस" से पूर्ण मानल जा सकति बा। एकर दोसर विशेषता ई बा कि एह में राम जन्म-प्रसंग में सोहर, फुलवारी प्रसंग के गीत, धनुष टूटला पर के गीत, परिछन-गीत, कोहबर गीत, जेवनार गीत आ विदाई गीत क शामिल क के इंजीनियर राजेश्वर जी एके रुचिगर बनावे में कवनो कोर-कसर नइखीं छोड़ले।

इंजीनियर राजेश्वर जी के एगारहवीं पुस्तक "भोजपुरी पंचतंत्र" ह, जवन सन् २०२२ में प्रकाशित भइल बा। पंचतंत्र में दिहल कहानी सब हर देश में लोकप्रिय रहल बा। जिनगी का हर समस्या आ घटना के कहानी के माध्यम से परोस के ओसे सावधान रहे आ बचे के उपायो एह पुस्तक में बहुत रुचिगर ढंग से बतावल गइल बा। अभी तक भोजपुरी में पंचतंत्र के पाँच-दस कहानियन के संग्रह प्रकाशित भइल बा, वाकिर पंचतंत्र का सभ कहानियन के भोजपुरी में अनुवाद क के एक साथ प्रकाशित करावे के साहसिक काम इंजीनियर राजेश्वर जी जइसन मनई से ही संभव हो सकल बा।

अब तक प्रकाशित धरम-करम आ साधु-सन्तन के जीवनी पढ़े से अलग रुचि रखे वाले पढ-निहारन खातिर ई पुस्तक काफी रुचिगर लागी एमें कवनों संदेह नइखे अइसन पुस्तकन से मनोरंजन के साथे सामाजिक आ व्यावहारिक ज्ञान का विकास में बहुत मदद मिलेला।

इंजीनियर राजेश्वर जी के बारहवीं पुस्तक "भोजपुरी योगी कथामृत" सन् २०२३ में प्रकाशित होके काफी चर्चित रहलि बा। एह पुस्तक के लेखन जतने श्रमसाध्य रहल ओतने प्रकाशन खातिर अर्थसाध्य रहल बा। पूज्यपाद परमहंस योगानन्दजी के ई आत्मकथा अंग्रेजी-हिन्दी आदि भाषा में प्रकाशित बा आ लोकप्रिय भी बहुत रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

धार्मिक पुस्तकन में रुचि रखे वाला इंजीनियर राजेश्वर जी के ईश्वरीय प्रेरणा से एह वृहत् आत्मकथा के अपना माई भाषा भोजपुरी में लिखे प्रति रुचि जागल आ लगभग एक साल तक मेहनत कइला पर एह अनुष्ठान के पूरा करे में सफलता मिलल। एह पुस्तक में परमहंस योगानन्दजी के बचपन आ साधना से सिद्धि तक के क्रमवार विवेचन भइल बा। कुछ अलौकिक चमत्कार के वर्णन भी कई स्थलन पर देखल गइल बा जवना पर समान्य आदमी शायद विश्वास ना कर पाई, बाकिर एगो सिद्ध पुरुष के लिखल आत्मकथा में विश्वास करे लायक तथ्यन के उल्लेख संभव नइखे।

प्रो० रामदेव शुक्ल जी पुस्तक के भूमिका में लिखले बानी-"योगी कथामृत" क विशेषता एह बात के बा कि एकरे पहिले भारत के संत-महात्मा आ योगी-संन्यासी पर जतना किताब लिखाइल रहलीस ओकर लिखेवाला चेला लोग रहल। "योगी कथामृत" एक भोगी द्वारा अपने कलम से लिखाइल बा, एसे पाठक लोग के चित्त में एकर प्रभाव अपने ढंग से परेला।

इंजीनियर राजेश्वर जी के एह महत्वपूर्ण काम खातिर भोजपुरी जगत हमेसा ऋणी रही, काहें कि अतना बड़ अनुवाद के काम भोजपुरी में अबले ना भइल रहल ह।

इंजीनियर राजेश्वर जी एगो आउर महत्वपूर्ण अनुदित पुस्तक "भोजपुरी रहनी-करनी" प्रकाशनाधीन बा, जवन योगिराज स्वामी प्रणवानन्दजी के जीवन पर आधारित बा। स्वामीजी के जन्म पूर्वी बंगाल (आज के बाग्लादेश) के फरीदपुर जिला का वाजितपुर गाँव में २९ जनवरी १८९६ में भइल रहे। दसवीं कक्षा तक जात-जात उनकी मन में वैराग्य भाव आ एकान्त में रहे के तौर-तरीका का देख के उनकर अध्यापक गोरखपुर के योगिराज गंभीरनाथ, जे महन्त दिग्विजयनाथ महाराज के गुरु रहलें, से उनके दीक्षा दिलवा दीहलें।

प्रणवानन्द का बचपन के नाम विनोद रहे, जे दीक्षा लिहला के बाद प्रणवानन्द हो गइल। ऊ कठोर सधना का उपरान्त सिद्धि पा के अपना शिष्यन के साथ समाज-सेवा में लग गइलें, आ समस्त दीन-दुखिया के सेवा करे लगले। सन् १९१७ में ऊ "भारत सेवाश्रम संघ" के स्थापना क के अपना अनुयायियन के लेके सेवा के काम बढ़ावे लगलन। धीरे-धीरे देश में घूमि-घूमि के "भारत सेवाश्रम संघ" के अनेक शाखा खोललन। एह समय देश में ४६ शाखा काम कर रहलि ह। एकर शाखा बंगला देश, शिकागो, नेपाल, लंदन, त्रिनिदाद, टोरन्टो, फिजी आदि देशन में कार्यरत बाड़ीस। स्वामीजी के देहान्त सन् १९४१ में हो गइल।

स्वामी जी के स्थापित "भारत सेवाश्रम संघ" द्वारा संचालित काम एह तरह के बाड़े स-

१. हिन्दू तीर्थ, स्थानन पर जाये वाला श्रद्धालु से स्थानीय पण्डन द्वारा मनमाना धन वसूलल

www.bhojpurisahityangan.com

आ ना दिहले पर बदसलूकी कइके विरोध कइल।

२. गरीब आ दुखी लोगन के धन के लालच देके धर्मान्तरण करावे पर विरोध कइल।

३. हिन्दू में सनातन धर्म का प्रति रुझान कम ना होखे पावे, एकरा खातिर प्रयास आदि अनेकानेक बाड़े स जवना से सनातन धर्म प्रतिष्ठा आ सामाजिक समरसता कायम रह सके।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह अब तक तेरहगो, किताबन के भोजपुरी में लिख के अपना माई भाषा के भंडार भरे में अबहूँ तन-मन-धन से लागल बानी। "भोजपुरी रामायण" का भूमिका में प्रो० रामदेव शुक्ल जी बहुत सोच-विचार के लिखले बानी-"पेशा से इंजीनियर रहले के बाद राजेश्वर सिंह भोजपुरी में रचना कइले के रेकार्ड बनवले पर तूलि गइल बानी।" आदरणीय शुक्ल जी ई बात तब लिखले रहीं, जब "भोजपुरी पंचतंत्र" आ "भोजपुरी योगी कथामृत" जइसन सर्वप्रिय पुस्तकन के लेखन-प्रकाशन ना भइल रहे। अब तक के उनकर लिखल समूचा भोजपुरी रचनन के देखला के बाद ई कुल्हि में कवनो संकोच ना होखे के चाही कि इंजीनियर राजेश्वर सिंह भोजपुरी में रचना कइले के रेकार्ड अब बना चुकल बानी।

समुन्दर के गहिराई किनारे खड़ा हो के लहर गिनला से ना होखे, ओमे गहिर डूबे के पड़ेला तब ओकर थाह लगेला। इंजीनियर राजेश्वर सिंह का समूचा रचनन के मनोयोग का साथे पढ़ला पर एहनी के मोल आ महत्त्व के पता चल सकेला।

एगो मौन साधक का बहुमूल्य उपलब्धियन के नमन करत उनका के शतायु होखे के मंगल कामना का साथे हृदय से अभिनन्दन करत बानी।

शुभानि सन्तु।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

११५

विचारों के खजाना-इं. राजेश्वर सिंह

-भीम प्रसाद प्रजापति

सरल, सहज एवं धार्मिक गुणों से परिपूर्ण इं. राजेश्वर सिंह का आकाशीय व्यक्तित्व गन्ने से निर्मित हर पदार्थ की तरह है। जहाँ से भी, जैसे भी चखें मीठा ही मीठा लगता है। विज्ञान का विद्यार्थी होते हुए भी साहित्य में इतनी गहरी रुचि विरले महामानव में मिलते हैं, जिसका जीता-जागता उदाहरण वर्तमान में इं. राजेश्वर सिंह जी हैं।

श्री सिंह जी से पहली मुलाकात भोजपुरी साहित्य विकास की संस्था 'भोजपुरी संगम' की बैठकी में हुई, जब अपनी किताब सभी कवियों एवं साहित्यकारों में बाँटने लगे। देखने से युवा लग रहे इं. राजेश्वर सिंह का जन्म तिथि जो किताब पर अंकित था को देखा तो दंग रह गया। चौहत्तर वर्षीय उम्र बाला, बिना रंग-रोगन का सिर पर काला बाल, पैंट-शर्ट पहने बेल्ट लगाये हुए एक चालीस वर्षीय युवा की तरह लग रहे थे। उन्हें बार-बार देख कर यही सोच रहा था कि जो लोग अपने आप से प्यार, मोहब्बत करते हैं वह इसी तरह युवा दिखते हैं साथ ही पूरी दुनिया को प्यार की नजर से देखते हैं और ऐसे लोगों के द्वारा जो भी साहित्य सर्जना होगी वह भी समाज के लिए सुन्दर होगी।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह का जन्म ४ अप्रैल सन् १९५० को गणतन्त्र भारत में हुआ। वह भी इस धरती पर स्थित गोपालपुर नामक ग्राम में। गोपालपुर का अर्थ ही होता है जहाँ गौ माता का आशीर्वाद प्राप्त हो, वही गोपालपुर हो सकता है। ऐसे स्थापन पर जन्में व्यक्ति के अन्दर मानव संवेदना की सभी आवश्यक तत्व भरपूर होगी ही। उसी का प्रभाव इंजीनियर राजेश्वर सिंह के जीवन पर पड़ा और आज तक विद्यमान है।

वर्तमान में इं. राजेश्वर सिंह जी विभागीय सेवा से निवृत्त होकर 'भोजपुरी संगम' संस्था के अध्यक्ष हैं। यह संस्था 'भोजपुरी संगम' भोजपुरी भाषा के उत्थान के लिए सदस्यों द्वारा गहन अध्ययन व तरह-तरह के लेख व रचनायें कराकर भाषा के सर्वांगीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान कर-करा रही है। श्री सिंह स्वयं भी तन, मन, धन से सहयोग के लिए तैयार रहते हैं।

एक लेखक/ कवि अपने जीवन में इस संसार में रह कर एक प्रति-संसार का निर्माण करता

www.bhojpurisahityangan.com

है जहाँ ईर्ष्या, द्वेष, पाप का कोई स्थान नहीं रहता। काश ! इं. राजेश्वर सिंह जैसा विचार-भाव अगर हर मानव का हो जाय तो-यूक्रेन-रूस, इजराइल-हमास जैसे भयानक नर संघारक युद्ध नहीं होते। सब लोग हाथ में बन्दूक की जगह 'कलम' लेकर प्रेम से मिलते।

इं. राजेश्वर सिंह जी को समाज से जो सम्मान प्राप्त हुए उनमें-भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा "महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।"। राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत। राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा "प्रेमचन्द सम्मान।," सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा "मेलोडी सम्मान" २००६।, हिन्दी सेवा संस्थान कुर्शीनगर द्वारा "हिन्दी साहित्य सागर सम्मान", "आध्यात्मिक रत्न सम्मान" सूफी साहित्य कृति "जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी" पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा।, विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ "विद्यावाचस्पति" "विद्यासागर", "भारतीय भाषा रत्न" एवं "भारत गौरव"। "साहित्य कला शिरोमणि" सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष २०११, भागलपुर (बिहार), मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर (उ०प्र०) के एल्युमनाई एसोसिएशन द्वारा वर्ष २०११ में सामाजिक कार्यों में योगदान हेतु सम्मानित। "संगम सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था" गोरखपुर द्वारा "संगम साहित्य सुमन" सम्मान-२०२०। नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर द्वारा भोजपुरी साहित्य सेवा के लिए "नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान"-२०२१, सरयू अमृत महोत्सव-२०२१ द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखने पर "सरयू रत्न सम्मान।", भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार) "संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-२०२१"। डा० विवेकी राय स्मृति सम्मान २०२४, हैं, जिनसे नवाजे जा चुके हैं, जो एक विराट व्यक्तित्व को दर्शाता है।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह दर्जन भर से अधिक भोजपुरी किताबों के रचयिता हैं। जिसमें - १-जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), २-कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७), ३-पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६), ४-भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८), ५-राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९), ६-श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०), ७-भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०), ८-दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०), ९-घरेलू नुस्खा (पद्य में) (वर्ष २०२०), १०-भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१), ११-भोजपुरी पंचतंत्र (वर्ष २०२२) और १२-भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३) आदि कृतियाँ समाज में प्रकाश फैला रही हैं। इनकी कृतियों को देखने के बाद मालूम पड़ा कि इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी कितने अध्ययन श्रेष्ठा हैं जो प्राचीन काल से लेकर मध्यकालीन तथा वर्तमान काल के सभी संतों, ऋषियों, कृष्ण भक्त संतों एवं राम भक्त संतों, लेखकों, विचारकों को एक जगह पिरोकर सबके सामने परोसने का काम किये हैं। इसमें आदि कवि बाल्मीकि से लेकर कच्चा बाबा जी तक तथा बल्लभाचार्य से लेकर स्वामी तीर्थराज तक को एक जगह बैठाने का कार्य किया है।

www.bhojpurisahityangan.com

इनके साहित्य गीता, रामायण, महाभारत आदि रचनाओं के माध्यम से अभिसिंचित हैं, साथ में घरेलू नुस्खा, योग पर भी आपन कलम चला कर सरलतम रूप से सभी के सामने परोसने का काम किए हैं। इं. राजेश्वर सिंह जी की एक भोजपुरी कविता :

भाव नेहिया कऽ लेइके मिलल करीं,
मुसकाई के जिनगी जियल करीं ।
केहू जाने ला ना, कब जाये के पड़ी,
पीरितिया के धागा से जोड़ल करीं ।
सेवा के डर से मत तजीं माई-बाप के,
आशीष क कमी खटकबे करी ।
देहीं के जंगरे पर मत करीं गुमान,
एक दिन जवानी ढलबे करी ।
हरि दिहलन जांगर सेवा बदे,
जेतना बने सेवा कइल करीं ।
एह जग में ना हउए केहू छोट-बड़,
भगवान क रूप जान निरेखल करीं ।
सब में भगवान अउर भगवान में सब,
मान लिहले से कल्याण होइबे करी ।।

एह छोट कबिला में इन्जीनियर साहब ने बड़ी से बड़ी बात कह द्री है। यही सार तो 'गीता' में श्रीकृष्ण जी ने भी कही है। जब व्यक्ति भगवान के भक्ति में डूबेगा तो उसका परिणाम अच्छा ही होगा। परिणाम अच्छा आयेगा तो मनुष्य अपने आप में भगवत्कृपा से धन्य हो जायेगा। इसीलिए तो मनुष्य धर्म-कर्म करता है कि उसे भगवान की प्राप्ति हो। इसे ही इं. साहब ने इंगित किया है।

कविताओं के अलावा भी कहानियाँ, उपन्यास, जीवन परिचय आदि विधाओं पर भी अच्छी पकड़ बनाई है। जिसमें १-'एक कहानी की आत्मकथा', २-'एक कहानी बीच में है', ३-'जिन्दगानी! ये कैसी तेरी जिन्दगी !' आदि हिन्दी की कृतियाँ सर्वमान्य हैं।

अत: हम कह सकते हैं कि इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी ने राष्ट्रधर्म, सामाजिक धर्म आदि का बखूबी निर्बहन किया है और कर भी रहे हैं। मैं ऐसे शब्द पुरुष, काब्य पुरुष और भोजपुरी पुरुष को लम्बे जीवन की कामना करता हूँ ताकि साहित्य जगत में और योगदान मिलता रहे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

११६

भोजपुरी के अनन्य सेवक इं. राजेश्वर सिंह

-सुभाष चन्द्र यादव

उद्यमः साहसं, धैर्य, बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षड़ेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकः ।।

जब हम बिहार के सीवान में दारोगा प्रसाद राय महाविद्यालय में प्राचार्य का पद पर कार्यरत रहलीं त ओहीजा स्वं पं० अक्षयवर जी दीक्षित भा भोजपुरी के महारथी रचनाकार आदरणीय पं० सूर्यदेव पाठक 'पराग' जी का सम्पर्क में अइनी। ओकरा पहिले बड़ भइया श्री रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी' भाई आ स्व० ब्रजभूषण शर्मा जी से आकाशवाणी के 'देश हमार' कार्यक्रम में भाग लिहला के चलते परिचय भइल। जिला सीवान में लगभग पैतीस बरिस के समय बीत गइल। सीवान में जब कवनो साहित्यिक कार्यक्रम होखे ओ में दीक्षित जी आ पाठक जी से जरूर भेंट होखे। जब कुछु नया लिखीं त दीक्षित जी से ओह पर राय मशविरा करीं। बाद में बहुत सारा कवि, लेखक, शायर लोग से परिचित भइलीं। दीक्षित जी सीवान छोड़ि के गोरखपुर में नन्दानगर में आके छोटका बेटा का लग रहे लगनी। कालेज का सेवा से जब अवकाश मिलल, तब हम सीवान में ना बसि के गोरखपुर में एगो छोटहन भू-खण्ड लेके रानीडीहा में आवास बनवलीं। सन् २०१७ से गोरखपुर में रहे लगलीं।

पहिले से परिचित प्रसिद्ध शायर डॉ० कलीम कैसर, भाई आचार्य मुकेष, श्री वीरेन्द्र मिश्र 'दीपक', स्व० परमहंस मिश्र 'प्रचण्ड' सबसे भेंट होखे लागल। सीवान में रहत घरी संगम साहित्यिक सामाजिक संस्था 'भोजपुरी संगम' के चर्चा स्व० दीक्षित जी, श्री पराग जी, स्व० प्रचण्ड जी से सुनले रहलीं बाकिर कबो शामिल होखे के मौका ना लागल। समयानुसार धीरे-धीरे संगम साहित्यिक सामाजिक संस्था, भोजपुरी संगम संस्था, भागीरथी संस्था आदि से जुड़ाव होखे लागल आ फेर साथ-संगत जान-पहिचान बढ़े लागल। श्रद्धेय स्व० नरसिंह बहादुर चंद दादा, आचार्य श्री रामदेव जी शुक्ल, आचार्य श्री अनन्त जी मिश्र, आचार्य श्री चित्तरंजन जी मिश्र, आचार्य श्री रामदरश जी राय, श्री आद्या प्रसाद द्विवेदी, बागीश जी, श्री हरिबंश शुक्ल जी एवम् दूनो संगम संस्था

www.bhojpurisahityangan.com

से जुड़ल तमाम विद्वान लेखक, रचनाकार, कवि, कवियित्री, शायर, शायरात सबसे परिचित भइलीं।

सन् २०१८ में भोजपुरी संगम संस्था का ओर से पहिलका स्व० कविवर सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन' सम्मान भोजपुरी के मूर्धन्य साहित्यकार स्व० अक्षयवर दीक्षित के दियाइल। ओह कार्यक्रम में हमहूँ शामिल रहलीं आ ओही जा हम इं. राजेश्वर सिंह जी से परिचित भइलीं। ओकरे बाद त प्राय हर महीने भोजपुरी संगम आ साहित्यिक संगम का गोष्ठी में हमहन क भेंट मुलाकात, बातचीत होखे लागल। लम्बा कद काठी, सांवर रंग, भरल-पूरल चेहरा, सजल-संवरल बाल, आँख पर चश्मा, पैंट-शर्ट पहिनावा गंभीर आ कम बोले वाला सबका हित का बारे में सोचे वाला, समय पर उपकार करे वाला, निरन्तर अध्यवसाय करे वाला, अपना लेखनी से हिन्दी आ भोजपुरी के भण्डार भरे वाला, अपना तरह के एगो अलग व्यक्तित्व के मालिक हईं राजेश्वर बाबू। करोना महामारी का चलते लगभग दू साल ले भेंट मुलाकात के संजोग ना बनि पावत रहे। सन् २०२२ में एगो संजोग बनल, बिहार का मोतीहारी में अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन में जाये के बाकिर कुछ असमर्थता का चलते आप ना जा सकलीं। डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी जी आ हम गइलींजा। धीरे-धीरे जब स्थिति सामान्य भइल त फेर से गोष्ठी में आवा जाही, भेंट, बातचीत होखे लागल।

एह सबका बाद सन् २०२३ में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के २७वाँ अधिवेशन १६-१७ दिसम्बर के जमशेदपुर (झारखण्ड) के तुलसी भवन में आयोजित भइल। राजेश्वर बाबू से हम राय कइलीं अधिवेशन में चले बदे। त उहां का तइयार हो गइलीं। डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी जी आपन असमर्थता बतवलीं। खैर गोरखपुर से मौर्य एक्सप्रेस से सीवान आ उहाँ से थावे-टाटा नगर में १४ तारीख के आरक्षण लियाइल। राजेश्वर बाबू अपना साथे अपना छपल पुस्तकन के दूगो बैग में सजवलीं आ साथ अपना गाँव ही के एगो जवान आद्या प्रसाद यादव के लेके चललीं। ट्रेन सीवान से समय से मिल गइल। रास्ता में खात-पियत देखत-सुनत, बोलत-बतियावत मुजफ्फरपुर पहुँचलीं। ओइजा डॉ० ब्रजभूषण मिश्र, डॉ० जयकान्त सिंह 'जय', अवरी लोग मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, हाजीपुर से जे अधिवेशन में जात रहे सभे मिलल। १५ तारीख के सबेरे टाटा नगर पहुँच के सामान सब ठेला पर लाद के टेम्पो लियाइल। उहाँ से चार गो टेम्पो में सब बइठल आ तुलसी भवन, विष्टपुर पहुँचली जा। उहाँ राजेश्वर बाबू के किताब के लोकापर्ण भइल आ इहाँ के सम्मानित कइल गइल। जहाँ देस-विदेश के तमाम लेखक, विद्वान, रचनाकार जुटल रहलें। मारीशस से श्रीमती डॉ सरिता बुद्धू, नेपाल से गोपाल अश्क जी, दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता से आ अउरी जगहन से तमाम लेग आइल रहे। १४ से १९ तारीख तक ले साथ रहे, घूमे-फिरे, खाये-पिये, सूते-जागे के अवसर मिलल।

एह बीच में बहुत नजदीक से देखे, जाने सुने के मौका लागल हमहन में काफी घनिष्ठता भइल। राजेश्वर जी के जन्म ४ अप्रैल १९५० में ग्राम व पोस्ट-गोपालपुर, ब्लाक व तहसील-

www.bhojpurisahityangan.com

गोला, जिला-गोरखपुर में भइल। पिता-स्व० समरबहादुर सिंह तीन भाई में सबसे बड़ रहनी। माता-स्व० परमजोता देवी एगो कुशल गृहलक्ष्मी रहनी। राजेश्वर बाबू के चार बहिन हई दूगो छोट आ दूगो बड़। स्व० श्रीमती लक्ष्मी सिंह, श्रीमती इन्दिरा सिंह, श्रीमती सुधा शाही आ श्रीमती सुनीता शाही। आपके बियाह हरिहरपुर निवासी स्व० भगवती सिंह जी के सुकन्या श्रीमती राजकुमारी सिंह जी का साथे सन् १९७१ में भइल रहे। बाबू राजेश्वर सिंह जी के कई पुस्तकन में अपनी श्रीमती जी के आभार व्यक्त कइले बानी की पाण्डुलिपि तइयार करे में कवनो बिघिन ना पैदा करिके बहुत बड़का सहयोग कइले बानी। एसे उहाँ का बधाई के आ सम्मान के पात्र बानीं। आपके परिवार में दू बेटा, एक बेटी बाड़ीं। बड़े बेटा श्री नवीन सिंह आर्मी में लेफ्टिनेन्ट कर्नल बानी जबकि छोट बेटा श्री प्रवीण सिंह जी जनसेवा काम में लागल बानी। बेटी तृप्ति सिंह जी बानीं।

राजेश्वर बाबू गाँव का प्राथमिक पाठशाला से पढ़ाई शुरु करिके एम.एम.एम. इंजीनियरिंग कॉलेज, गोरखपुर से इन्जीनियरिंग करिके दू माह ले शिक्षण काम कइला का बाद एल.एस.जी.ई.डी. जवन बाद में उ० प्र० जल निगम में सन् १९७३ में योगदान कइलीं। ३७ बरिस सेवा कइला का बाद अप्रैल २०१० में उ० प्र० जल निगम से अभियन्ता का पद से सेवानिवृत्त भइनीं। अवकाश प्राप्ति का बाद ४ साल ले बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता का रूप में वरिष्ठ सलाहकार अवरी म० प्र० में २ साल तक सलाहकार रहनी।

इंजीनियर राजेश्वर बाबू के प्रकाशित कुल ग्रंथन के देखला का बाद सुखद अचरज हो रहल बा कि सरकारी सेवा में अधिकारी पद पर रहि के परिवार के देखभाल के बाद विशद् अध्ययन, चिन्तन, मनन का बाद सांसारिकता में रहि के आध्यात्मिक साधना कइल बहुत दुरुह काम होला। बाकिर भगवत कृपा गुरुवर बंगाली बाबा के आशीर्वाद से एतना सब संभव भइल बा। बिना दैवी प्रेरणा के सबके सफल निबाह कइल संभव नइखे। लेखन के शुरुआत आप हिन्दी खड़ी बोली से कइनीं। बहुत कम समय में २१ गो ग्रन्थ के प्रकाशन में ले आइल आपके लगन, अध्ययन, क्रियाशीलता, कर्मठता आ सक्रियता के खुद गवाह बा। सन् २००३ में एगो पुस्तक-'एक कहानी की आत्मकथा', सन् २००४ में ४ गो पुस्तक, १-एक कहानी बीच में, २-सुख जागे दु:ख भागे, ३-श्री राम महायज्ञ, गोपालपुर की कथात्मक झाँकियाँ ४- जिनिगी क दूब हरियाइल। सन् २००५ में गाँव से शहर जब आ गए एक पुस्तक, सन् २००६ में १-जिन्दगानी ये कैसी तेरी जिन्दगी, २-नसीब अपना-अपना, ३- कल्यान कऽ जुगति ३ पुस्तक। एगो अन्तराल का बाद सन् २०१६ में पढ़ीं समझीं मनन करीं एक पुस्तक सन् २०१८ में भागवत कथा सार एक पुस्तक, सन् २०१९ में राम पियारा साधु-संत एक ग्रन्थ, सन् २०२० में १-श्याम पियारा साधु-संत, २-भोजपुरी महाभारत, ३-दीक्षा गुरु ४-घरेलू नुस्खे चार पुस्तक, सन् २०२१ में भोजपुरी रामायण एक पुस्तक, सन् २०२२ में भोजपुरी पंचतंत्र, सन् २०२३ में भोजपुरी योगी कथामृत एक पुस्तक आइल। भारत सेवाश्रम के संस्थापक योगाचार्य स्वामी प्रणवानन्दजी के जीवनी रहनी-करनी प्रकाशन में बा।

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी के पूर्वाद्ध में मन में जवन उछाह, उमंग, जोश रहल ऊ कुछ पुस्तकन का जरिये सामने आइल। बाकिर जिनिगि के उत्तरार्द्ध में मन आध्यात्मिकता का ओर अइसन लागल की ज्ञानाश्रर्या, प्रेमाश्रयी, निर्गुण, सगुण, रामभक्तिधारा, कृष्ण भक्ति धारा में बहि के भक्तिरस का सागर में डूबि के एक-एक मोती निकाल के जनमानस का समाने ले अइनी ताकी सबका खातिर सुलभ हो सके। एह कठिन साधना के सुगंध जब फइले लागल तब एह मनीषी के सम्मान देवे वदे वहुत कुल समीति, संस्था आगे आइल-

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा 'महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।'।

राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत।

राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा 'प्रेमचन्द सम्मान।'

सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा 'मेलोडी सम्मान' २००६।

हिन्दी सेवा संस्थान कुशीनगर द्वारा 'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान'।

'आध्यात्मिक रत्न सम्मान' सूफी साहित्य कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा।

विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ 'विद्यावाचस्पति' 'विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न' एवं 'भारत गौरव'।

'साहित्य कला शिरोमणि' सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष २०११, भागलपुर (बिहार)।

मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर (उ०प्र०) के एल्युमनाई एसोसिएशन द्वारा वर्ष २०११ में सामाजिक कार्यों में योगदान हेतु सम्मानित।

'संगम सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था' गोरखपुर द्वारा 'संगम साहित्य सुमन' सम्मान-२०२०।

नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर द्वारा भोजपुरी साहित्य सेवा के लिए 'नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान'-२०२१।

सरयू अमृत महोत्सव-२०२१ द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखने पर 'सरयू रत्न सम्मान।'।

भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार) 'संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-२०२१'।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा किताब 'श्याम पियारा साधु-सन्त' पर 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' वर्ष २०२३।

www.bhojpurisahityangan.com

१५- विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा 'डा० विवेकीराय स्मृति सम्मान वर्ष २०२४'।

आजो इंजीनियर राजेश्वर बाबू पूरा स्वस्थ आ लिखे पढ़े में सक्रिय बानी। अबही बहुत कुछ शेष बा जवन विशेष बा। आपके द्वारा भोजपुरी साहित्य का क्षेत्र में ऐतिहासिक काम हो रहल बा। आवे वाली पीढ़ी एकरा आलोक में बहुत सारा काम सुगमता से कर पाई।

अन्त में

परमपिता परमेश्वर से बिनती बा बार हजार ।
जुग-जुग जियसु राजेश्वरजी लेके पुत्र हमार ।।

'इति शुभम्'

❖

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य के राहि पर इंजीनियर

-चन्देश्वर 'परवाना'

लोग किसिम-किसिम के सवाल पूछेला। कुछ के जवाब दिहल जाला कुछ क बँहटिया दिहल जाला भा जवन समझ में आवेला कहा जाला। एगो सवाल तऽ हमहीं से लोग करेला। 'रउवाँ विज्ञान के छात्र/अध्यापक होके कविता कहां खोजेलीं।' जाहिर बा इहे सवाल इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी से भी पूछल जात होई। अरे भाई कविता भा कहानी बिसय भा वर्ग प्रधान थोर हऽ इ तऽ भाव प्रधान ह। ई सब संवेदना के देन हऽ चाहे केहू साइंस पढ़ो भा आर्ट बा निपढ़ काहे न होखे। भाव फूटी आ कागज पर उतर जाई।

एगो जिमवार आ बड़ पद के बखूबी सम्हारत सिंह साहब साहित्य के ओर एह तरे मुड़िअइलीं कि लोग इंजीनियर भुला गइल। बड़ साहित्यकार बूझे लागल भोजपुरी संगम के नेव डारे वाला स्व० सत्तन जी के सम्पर्क में इहाँ के अइलीं अ भोजपुरी के होके रहि गइलीं। सत्तन जी के देहावसान बाद उहाँ के जेठ बेटा कु० अभिनीत अब्बो ओही तरे भोजपुरी संगम के 'बइठकी' करा रहल बाने। महीना क दुसरका अतवार के एह 'बइठकी' में मंडल के साहित्यकार के अलावा अन्य जिले से भी नामी साहित्यकार सब आवेला। 'बइठकी' के दू अंक इंजीनियर साहब के विशेष सहयोग से प्रकाशित हो चुकल बा। भोजपुरी संगम परिवार इहां के संरक्षक मानेला आ हृदय से सम्मान देला। हँसमुख आ सहज भाव के सिंह साहब नियमित 'बइठकी' में आवेलें आ सुरु से आखिर ले रहेलीं।

सन् २०१९ के बात हऽ इहां के घरेलू नुस्खा पर एगो किताब के पाण्डुलिपी तइयार कइले रहलीं। रहे तऽ दोहा रूप में बाकिर इहाँ के मात्रा के लेके खतकट रहे। हमसे कहलीं-'परवाना जी तनि एक बेर देख के मात्रा में कऽ देतीं हमरे लग पाण्डलिपि आइल।' भाव तऽ नींक रहे बाकिर मात्रा घट-बढ़ रहे, ओके ठीक कइलीं आ २०२० में छपल तऽ लोग एतना सराहल की का कहल जा उहाँ के किताबन में ऊ पहिला पसंद हो गइल। ओ किताब के दिल खोल के बँटलीं।

इंजीनियर साहब के सामाजिक क्षेत्र में पैठ तऽ बटले बाऽ धार्मिक क्षेत्र में भी मजिगर पैठ आ लगाव बाऽ। राम पियारा साधु संत, श्याम पियारा साधु संत, भागवत गीता, रामचरित मानस, पंचतंत्र जइसन बिसयन से साफ पता लग रहल बा। मंदिर बनवावल भा पुरान के मरम्मत करावल।

www.bhojpurisahityangan.com

भजन कीर्तन भा कवि गोष्ठी में रुचि राखल। इ संकेत करऽ ता बड़ अभियंता के झुकाव आ लगाव ओतने ऐहर बाऽ किताबन के देखले-पढ़ले से लगऽता। जब इहाँ के आजमगढ़ में रहलीं तऽ साहित्य के ढेर बढंती भइल। स्व० मधुर नज्मी इहाँ के सृजन में मददगार रहलें। अधिकतर प्रकाशन वाराणसी से भइल बा।

एगो प्रसंग हमेसा याद आवेला। स्व० सत्तन जी के पुण्यतिथि (जुलाई २०२३) मनावल गइल। ओमे पं० हरेराम द्विवेजी जी के सम्मानित कइल गइल। ई सभे जने की भोजपुरी संगम के 'बइठकी' भा अउर कवनो कार्यक्रम में सुरु से आखिर ले भोजपुरिए में बोलल जाला। बीच में केहू भुला के बोल देला तऽ टोकाऊ जाला। एह सम्मान कार्यक्रम में आभार प्रकट करे बदे इंजीनियर साहब के बोलावल गइल तऽ इहाँ के हिंदी में बोले लगलीं; हमन के अटपट लागल। टोकाव तऽ बाउर लागी नाहीं टोकाव तऽ नियम भंग। बाकिर आभार में समइए केतना लागेला। सोचते-विचारत उहाँ के बाति खतम हो गइल। मंच से उतरते हम कहलीं-'का जी, संरक्षक होके रउवें हिंदी में बोले लगलीं।' इंजीनियर साहब के झट दे समझ में आ गइल। बाकिर करीं तऽ का। तानी झेंपलीं आ आसानी से आपन भूल सँकरलीं। ई हऽ सरलता आ सहजता जवन कूटि-कूटि के इहाँ में भरल बाऽ।

इंजीनियर साहब पोछिआवे के खूब जानेलीं। कवनों काम के प्रस्ताव जो हो गइल तऽ इहाँ के बुझाला कि केतना जल्दी हो जाव। मिलले पर तऽ कहबे करीं मोबाइलों पर पूछत रहीं। छुछिया नाहीं ओपर आवे वाला खरचो देबे के तइयार। इहाँ के भाव हऽ जवन विचार में आ गइल ऊ कार्य रूप में हो जाव एह सोच के मनई आज कल बिरले मिलिहें। भोजपुरी संगम परिवार के इहाँ पर पुरहर भरोसा रहेला आ इहाँ के एपर खरा उतरले के भरपूर कोसिस करीले।

इंजीनियर साहब के आवास (राप्तीनगर) पर गइले पर एकदम अपनापन लागेला। कहाँ बइठाईं, का खिआईं का पिआईं। इहां के भाव-विचार इहाँ के बेटा इं० प्रवीण सिंह के भी बाऽ कबो-कबो इंजीनियर साहब के अनुपस्थितिये में प्रवीण बाबू गोष्ठी के मान बढ़ावेलीं।

इंजीनियर साहब स्वस्थ रहीं, सानन्द रहीं। हमन के मनो भाव बढ़ावत रहीं। एही तरे अउरी देखावत रहीं, राहि बतावत रहीं आ हमने के ओपर लगातार आगे बढ़त रहीं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

एक साहित्यिक अभियन्ता इं. राजेश्वर सिंह

-डॉ० ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी

'खूशबू से जिसकी सारी कायनात महक जाय,
गुलशन में ऐसे फूल हैं खिलते कभी-कभी।'

उपरोक्त पंक्तियाँ इं० राजेश्वर सिंह पर खूब फबती हैं। जिन्होंने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व एवं लोकग्राही कृतित्व से स्वयं को स्थापित करने के साथ-साथ इतिहास के पन्नों में भी एक चुम्बकीय बेल-बूटा टाँक दिया। इं० राजेश्वर सिंह का जन्म ०४ अप्रैल सन् १९५० ई० में उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में गोला तहसील के गोपालपुर गाँव में हुआ है। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव से ही लेकर आपने इंजीनियरिंग में डिग्री हासिल कर आप एक लम्बी सेवा के उपरान्त अप्रैल २०१० में उ० प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवा का एक शानदार कालखण्ड जिसे आजमगढ़ के प्रबुद्धजन आज भी नहीं भूल पाते।

स्मृति के झरोखे में जहाँ तक मैं देख पाता हूँ आज से ढाई दशक पहले अन्तर्राष्ट्रीय शाइर आकर्षक व्यक्तित्व के धनी स्व० डॉ० मधुर नज्मी जी से काथ इन्जीनियर साहब से उनके भव्य कार्यालय में मुझे मिलने का अवसर मिला था। मैने देखा एक रौबदार प्रशासनिक अधिकारी का रूतबा जहाँ अपने रूपहले कलेवर में झलक रहा था वहीं एक विशाल हृदय अपनी साहित्यिक उर्मियों से बार-बार सिहर जा रहा था। 'एक इन्जीनियर में साहित्यकार या एक साहित्यकार में एक इन्जीनियर' मेरी पहली मुलाकात में यही यक्ष प्रश्न था।

इं० राजेश्वर सिंह बेहद सरल स्वभाव चतुर्गामी व्यक्तित्व के धनी हैं। आप लक्ष्मी और सरस्वती दोनों को एक साथ सम्यक रूप से धारण कर निर्लेप रूप से जीवन यापन करते हैं। आप कंचन कानन में मृगचर्य पर अवस्थित होकर ध्यानमग्न बीतरागी जीवन में विस्वास करते हैं। आपकी भौतिक उपलब्धि जितनी आदरणीय है आत्मिक या साहित्यिक यात्रा उतनी ही अभिनन्दनीय है। आप का लेखन बड़ी ही अनमोल एवं पूरा रचना संसार अत्यन्त मनोरम है। आप की कल्पना की उर्वरा ने लेखनी के माध्यम से साहित्य कोश में अनेकश: रत्न जड़े। क्या हिन्दी, क्या भोजपुरी दोनों

www.bhojpurisahityangan.com

ही भाषा/बोली में विविध विधाओं के साथ अपने विराट रचना संसार का सृजन किया।

हिन्दी में आपका प्रथम लघु-उपन्यास २००३ 'एक कहानी की आत्मकथा' शीर्षक से प्रकाशित हुई, जिसमें कथावस्तु आत्मअनुभव के चारो तरफ फेरे आते हुए प्रतीत होती है। वर्ष २००४ में दूसरा लघु उपन्यास 'एक कहानी बीच में है' आता है जिसमें लेखक स्वकेन्द्रित पात्र की पुष्टि करता है। कोई भी लेखक अपनी रचनाधर्मिता में जिन्दगी से दूर नहीं हो सकता। इं० राजेश्वर सिंह का २००४ में ही एक उपन्यास 'जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी?' लिखकर उस बात की पुष्टि कर देते हैं। आपने कहानी संग्रह 'सुख जागे-दुख भागे' में इं० साहब ने अपनी अद्भुत अभिव्यक्ति का परिचय दिया। ऐसी मान्यता है कि रचनाकार आपने देश काल और परिस्थिति का पहरेदार होता है। वह किसी भी परिवर्तन का साक्षी होता है। गाँव से शहर में आने की मजबूरी को खुशी में तब्दील करने की काथान्तर प्रक्रिया को २००५ में इं० साहब ने अपने चर्चित उपन्यास 'गाँव से शहर जब आ गये' को बखूबी व्यक्त किया है।

कहा जाता है कि जरूरी नहीं है कि कोई दार्शनिक कबि हो लेकिन एक साहित्यकार का दार्शनिक होना स्वाभाविक है। लेखक राजेश्वर सिंह ने २००७ में प्रकाशित अपनी कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' में उक्त कथन को चरितार्थ किया है। किसी व्यक्ति का रचनाकार होना ही शुभ है उसमें यदि वह धार्मिक है तो यह सुयोग्यतम् अलंकरण है। अपने गाँव गोपालपुर में 'श्री राम महायज्ञ' की अलौकिक झलकियों को आपने कथा के रूप में चमत्कारिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इसी शृंखला में २००७ में आपका एक बहुत ही लोकप्रिय कहानी संग्रह 'नसीब अपना-अपना' आता है जिसमें इन्जीनियर राजेश्वर सिंह को देश के प्रतिष्ठित लेखकों की श्रेणी में लाकर अवस्थित कर देता है।

इं० राजेश्वर सिंह से मैं कम से कम २० वर्ष छोटा हूँ, इसलिए जहाँ तक मैं उन्हें समझ पाया हूँ उसमें एक बात जो निश्चित रूप से चरितार्थ होती है, वह है उनकी 'मैराथन यात्रा में एकला चलो की प्रवृत्ति'। आपने जब भी, जो भी सोच लिया उसे नख-शिख पूरा करके ही छोड़ा है चाहे उसके लिए भगीरथ तपस्या क्यों न करनी पड़ जाय। अब भोजपुरी साहित्य को ही ले लिया जाय मीठी बोली की सौंधी सुगन्ध में आपने विविध विधाओं में विपुल साहित्य सृजित किया है। जिनका शीर्षक एक साँस में पढ़ पाना किसी योगाचार्य के वश की बात नहीं है।

१- जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (२००४), २- कल्यान कऽ जुगुति (२००७), ३- पढ़ीं समझीं मनन करीं (२०१६), ४- भोजपुरी भागवत कथा-सार (२०१८), ५- राम पियारा साधु-सन्त (२०१९), ६- श्याम पियारा साधु-सन्त (२०२०), ७- भोजपुरी महाभारत (२०२०), ८- दीक्षा गुरु (२०२०), ९- घरेलू नुस्खा (कविता में) (२०२०), १०-भोजपुरी रामायण (२०२१), ११- भोजपुरी पंचतंत्र (२०२२), १२- भोजपुरी योगी कथामृत (२०२३)।

www.bhojpurisahityangan.com

इन एक दर्जन भोजपुरी रचनाओं के अतिरिक्त पांडुलिपी जो अभी अप्रकाशित है। यही अनवरत साधना का प्रसाद है। कारोबारी दृष्टि से एक अभियन्ता के रूप में आप जितने बड़े साहित्यकार हैं उससे बड़े और भले आदमी हैं। आपके इसी चुम्बकीय व्यक्तित्व के कारण एक जनसमूह हमेशा आपका अनुगामी रहा है। आप जहाँ भी गये उस परिवेश को अनेक साहित्यिक आयोजनों से सराबोर कर दिया। जैसे-आजमगढ़, मऊ, सिद्धार्थनगर, बलिया आदि में महोत्सव आदि के साथ अनेक राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक कार्यक्रमों के कुशल आयोजक, उसमें बेबाक वक्ता आदि विभिन्न स्वरूपों में कार्यक्रम के केन्द्रबिन्दु रहे हैं।

संक्षेप में कहा जाय तो आपका सम्पूर्ण जीवन उत्सवधर्मी है। देश-विदेश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपकी रचनाओं का प्रकाशन, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों तथा चैनलों से प्रसारण आपकी अनवरत साहित्यिक साधना की गवाही है। आपके सहज, सरल, धीर-गम्भीर व्यक्तित्व, लोकग्राही साहित्य का मैं व्यक्तिगत रूप से प्रशंसक हूँ। भगवान आपको स्वस्थ एवं दीर्घायु रखें, जिससे भविष्य में आपसे अनेक कालजयी रचनाओं से भारतीय वाङ्मय पोषित होता रहे। ऐसे ही अनेकशः शुभकामनाओं के साथ प्रस्तुत।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

११९

कर्मयोगी भोजपुरी साधक : इंजीनियर राजेश्वर सिंह

-डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी से मेरा सम्पर्क आज से लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व भोजपुरी संगम की बइठकी में पहली बार हुआ। बातचीत के क्रम में जब उन्होंने यह बताया कि उनका जन्म स्थान ग्राम गोपालपुर में है तो मेरा उनके प्रति आकर्षण बढ़ गया। कारण यह था कि यद्यपि आज मेरा ग्राम चन्दौली है जो जनपद गोरखपुर के दक्षिणांचल में गोला तहसील मुख्यालय से सात किलोमीटर की दूरी पर गोला से धुरियापार चीनी मिल की तरफ जाने वाली सड़क के किनारे स्थित है। लेकिन मेरे पूर्वजों का मूल जन्मस्थान गोपालपुर में ही है जो किसी समय स्टेट कहाता था। हम लोगों के पुरखो के मकानों का भग्नावशेष आज भी राजा गोपालपुर के पोता द्वारा निर्मित नये भवन के सामने मार्ग के दूसरे किनारा पर दूर से ही दिखाई पड़ता है। हम लोगों के मकानों के जमीन पर अगल-बगल के लोगों ने काफी मात्रा में कब्जा जमा लिया है। फिर भी कुछ हिस्सा आज भी बचा है। सन् १९२० में जब गोपालपुर में प्लेग बीमारी का प्रकोप जोरों पर था, तब हमलोगों के पुरुखे वहाँ से चन्दौली ग्राम में आकर बस गये क्योंकि हम लोगों की छावनी यहाँ थी और जियादा कृषि का क्षेत्र यहीं पर अवस्थित था। इन्जीनियर साहब से तभी हमारी परिचय की प्रगाढ़ता बढ़ती गयी और अभियांत्रिकी के छात्र होने के बावजूद राजेश्वर सिंह जी की साहित्यिक रुझान ने मुझे उनके प्रति प्रीतिकर भाव से जोड़ दिया है।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी शरीर से हृष्ट-पुष्ट, भव्य एवं प्रभावकारी लगते हैं, वैसे ही उनका अन्त:करण निश्छल एवं सरल है। वे अपने आयु के पचहत्तर वर्ष पूरा कर रहे हैं, किन्तु अब भी उनका सरल, सात्विक जीवन एवं कार्य के प्रति समर्पित भाव किसी को भी अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है। इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के स्वस्थ शरीर को देखकर यही प्रतीत होता है कि दिनचर्या ध्यान-प्राणायाम आदि के साथ उसी प्रकार चलती होगी जैसी उन्होंने अपनी कृति 'कल्यान क जुगुति' और 'पढ़ीं, समझीं, मनन करीं' आदि में लोगों को उत्प्रेरित करने के लिए लिखा है।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी बड़े ही सरल, सहृदय एवं स्वाभिमानी व्यक्ति हैं। अपनी सहज

www.bhojpurisahityangan.com

सहृदयता एवं साहित्यानुरागी प्रवृत्ति के कारण गोरखपुर के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के बीच में उनकी प्रतिष्ठा तो है ही, साथ ही जब वे उ०प्र० के जल निगम विभाग से अधीक्षण अभियन्ता के पद से अप्रैल २०१० में सेवानिवृत्त हुए, बिहार नगरीय विकास विभाग, पटना में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में नियुक्त हो गये। पटना के भोजपुरी भाषा प्रेमी साहित्यकारों के बीच अपनी अच्छी पकड़ बना लिए। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली पत्रिका भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के वे आजीवन सदस्य तो बने ही हैं उस पत्रिका के लिए बराबर अपनी रचना भी देते रहे। इस तरह बिहार भोजपुरी प्रेमी साहित्यकारों में राजेश्वर जी का काफी मान-सम्मान बढ़ा।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी के मन में कपट-चातुरी नहीं, छद्म अवनम्रता भी नहीं। भोजपुरी भाषा के सुगन्ध में गुथी हुई उनकी वाणी व्यंग-वक्रता नहीं होती है। अतिशय विनीत, अहंता-रहित, अकृतमि, सीधी-सादी बानी बोलना। हौले से हँसना, मंद-मंद मुस्कराना, अट्टाहास कभी नहीं करना। संयत खुली-खिली, उत्फुल्ल-प्रसन्न हँसी। वे 'सरल सुभाव हुआ छल नाहीं' को प्रतिदर्श लगते हैं। भीतर-बाहर सब एक समाना। न किसी से ईर्ष्या, न किसी से अमर्ष, न किसी से होड़ा-होड़ी, न किसी से चढ़ा-ऊपरी। जितना मिला उतने में ही परितुष्ट। न लब्धि में उत्तरंग न अलब्धि में बदरंग। सादगी, निश्छलता, सरलता, उदारता, सौम्यता, संवेदनशीलता, आत्मीयता और न भी जाने कितने मानवीय गुणों से युक्त हैं, इन्जीनियर राजेश्वर जी का व्यक्तित्व दर्पण सा निर्मल और पारदर्शी। कोई भेदभाव नहीं, कुछ भी बनावटी नहीं, कुछ भी दिखावटी नहीं। न रहनी-सहनी में, न बोली-बानी में। पर सिद्धान्त और स्वाभिमान अपनी जगह। भोजपुरी तो इन्जीनियर साहब के रग-रग में बसी है। उनकी पहचान भी भोजपुरी क्षेत्र के निवासी की ही है। भोजपुरी में बात-चीत करने में वह स्वयं को अधिक सहज पाते हैं।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी विरज सुभाव वाले व्यक्ति हैं। इसलिए उनमें किसी के प्रति वैर तो विद्वेष भी नहीं है। उनकी प्रवृत्ति में किसी भी तरह की प्रखरता किवा प्रबलता नहीं है। न उनका राग ही प्रबल है, न उनका विराग ही प्रखर। मुझे तो लगता है जब वे अपने अभियांत्रिकी सेवा के दौरान शासकीय दायित्व का निर्वहन कर रहे होगें तब भी उनका कभी किसी से आक्रामक तेवर में वाद-विवाद नहीं हुआ होगा। 'भोजपुरी संगम' की सैकड़ों बैठकी के अवसर पर मैने उन्हें संरक्षक या अध्यक्ष के रूप में दायित्व का निर्वहन करते देखा है। इस बीच मैं उनके सरल, शान्त, सहृदय स्वभाव का साक्षी रहा हूँ।

वय क्रम में इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी मुझसे लगभग दस वर्ष कनीय हैं। तदनुरूप वे मेरे प्रति शिष्ट विनयाचार व्यक्त करते हैं। उन्होंने जब किसी भी कोई कड़ी बात नहीं कही, तब मुझसे ही भला क्यों कहते। इसमें एक कारण और भी है, वे मेरे पूर्वज के गाँव के सम्मानित

www.bhojpurisahityangan.com

परिवार के प्रतिष्ठित इंजीनियर हैं। इंजीनियर साहब बड़ी ही विनम्रता से मुझे अपना प्रणाम अर्पित करते हैं। वे मेरे सान्निध्य में विगत पन्द्रह वर्षों से हैं, किन्तु इस अवधि में कभी कोई खटास नहीं आयी।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी संस्कृत के कई ग्रन्थों का भोजपुरी की सरल भाषा में रूपान्तरण करके जो पूलाघनीय कार्य किया है, वह किसी सामान्य व्यक्ति के वश की बात नहीं थी। निश्चित ही किसी अदृश्य शक्ति ने ही इंजीनियर साहब के मस्तिष्क को इस कार्य हेतु नियोजित किया है। उनके ऐसे अनुदित कृतियों पर हिन्दी और भोजपुरी के प्रख्यात विद्वान् दी०द० उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डा० रामदेव शुक्ल ने अपनी सारगर्भित भूमिका लिखकर अनुदित कृतियों में चार चाँद लगा दिया है।

आज के समय में देववाणी संस्कृत को पढ़ने और उस पर मनन करने वाले लोगों की संख्या बहुत विरल हो गयी है। ऐसी परिस्थिति में संस्कृत के वे ग्रन्थ जो प्राचीन समय में खो गये, उस काल खण्ड के लोगों के लिए सरल रहे होगें लेकिन आज के समय के आधार पर उनको पढ़ना और समझना अतीव दुष्कर हो गया है, ऐसी स्थिति में संस्कृत के इन अनमोल कृतियों को अपनी माटी की बोली भोजपुरी में अनुदित करके इनको आसान ढंग से प्रस्तुत कर भोजपुरी जनमानस के सम्मुख परोस देने का स्तुत्य कार्य प्रियवर इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी ने किया है। भोजपुरी में अनुदित उनके कृतियों की श्रृंखला में कई अनमोल ग्रन्थ गुँथे हुए हैं। इंजीनियर साहब की अनवरत साधना के परिणाम स्वरूप सन् २०१८ में 'भोजपुरी श्रीमद्भागवत कथा-सार' प्रकाशित हुई। इस कृति के प्रकाशन के एक वर्ष बाद सन् २०२० में 'भोजपुरी महाभारत' छप कर आयी। महाभारत जैसे विशाल महापुराण को राजेश्वर सिंह जी ने भोजपुरी की सरल भाषा में इतने सुन्दर ढंग से अनुदित किया है कि पुस्तक प्रारम्भ करने के साथ समाप्त करने के बाद ही पुस्तक से हटने का मन करता है। इस कृति के एक वर्ष बीतते-बीतते उन्होंने सन् २०२१ में 'भोजपुरी रामायण' लिखी। तुलसी कृत 'रामचरित मानस' का भोजपुरी में छायानुवाद करते हुए इन्जीनियर साहब ने बहुत सारे लोकगीतों को बीच-बीच में पिरोकर पूरी कृति को इतना सरस और रोचक बना दिया है कि उसके लिए कृतिकार की जितनी प्रशंसा की जाय कम ही है। इस कृति के प्रकाशन के दो वर्ष बीतते-बीतते इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी की चौथी अनुदित कृति आई, जिसका नाम है-'भोजपुरी पंचतन्त्र'। यह कृति सन् २०२२ में प्रकाशित हुई। भारत और भारत वर्ष के बाहर विश्व के अनेक देशों में अपनी ख्याति् बिखेरने वाली संस्कृत साहित्य की अनमोल कृति पंचतंत्र अपनी उपदेशात्मक कथाओं के लिए प्रसिद्ध है। पं० विष्णु शर्मा की इस कृति में पशु-पक्षियों को अवलम्बन बना कर व्यवहारिक जीवन जीने तथा राजनीति में कुशल होने के लिए एक से एक रोचक कथायें भरी पड़ी हैं। इस ग्रन्थ

www.bhojpurisahityangan.com

का भी इन्जीनियर साहब ने भोजपुरी में सुन्दर ढंग से अनुवाद किया है। अनुवाद कार्य की इस कड़ी में इंजीनियर राजेश्वर जी का सबसे महनीय कार्य सन् २०२३ ई० में प्रकाशित उनके द्वारा ग्रन्थों की अन्तिम कृति 'भोजपुरी योगी कथामृत' है। अति सुन्दर ढंग से प्रकाशित इस मोटी कृति में राजेश्वर सिंह ने परमहंस योगानन्द जी की आत्मकथा के उन्चासों प्रकरण का इतने मनोरम ढंग से अनुवाद किया है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी जो भोजपुरी भाषा से परिचित है इस ग्रन्थ को पढ़कर आनंदित हो उठेगा। ध्यान देने की बात यह है कि परमहंस योगानन्द जी का जन्म भी आज के लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व सन् १८९३ ई० में गोरखपुर शहर के रेतीचौंक के निकट कोतवाली के बगल में एक मकान में हुआ था। उस समय योगानन्दजी के पिता जी यहाँ वी०एल०डब्ल्यू० रेलवे कार्यालय में एक बड़े अधिकारी के पद पर आसीन थे। यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि क्रियायोग की खोज करने वाले इतने बड़े दिव्यात्मा के बारे में यहाँ के लोगों को कोई विशेष जानकारी नहीं है। राजेश्वर सिंह जी यह अनमोल कृति इस अभाव की पूर्ति करेगी, यह मैं विश्वास के साथ कह रहा हूँ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी एक सफल इंजीनियर होने के साथ-साथ और भी बहुत कुछ हैं। उनके कुशल इंजीनियर होने का सबसे बड़ा प्रमाण इसी बात से सिद्ध होता है कि उ०प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से अप्रैल २०१० में सेवानिवृत्त होने के बाद पुन: बिहार सरकार के नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार के पद पर प्रतिष्ठित हुए। इंजीनियर राजेश्वर जी की आध्यात्मिक रुचि ने उनकी लेखनी से सूफी मत से प्रभावित एक ग्रन्थ 'जिस्म से रूब तक रौशनी-रौशनी' प्रकाशित होकर आयी। इस कृति पर ठाणे (मुम्बई) की एक धार्मिक संस्था खानकाह सूफी दीदार चिश्ती, ने उन्हें 'आध्यात्मिक रत्न सम्मान' से सम्मानित किया। उनकी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय तो इसी बात से चलता है कि इन्होंने हिन्दी में आठ रचनायें और इसी के साथ माँ भोजपुरी बोली में तेरह रचनायें कर डालीं, जिनमें से बारह प्रकाशित हो चुकी हैं और एक प्रकाशन हेतु प्रेस में है। अप्रकाशित रचना का नाम है-'भोजपुरी रहनी-करनी योगाचार्य प्रणवानन्द जी' जो योगाचार्य प्रणानन्द जी के जीवन चरित्र पर आधारित है। इनकी इसी साहित्यिक मेधा को सम्मान देने के लिए विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) ने राजेश्वर जी को चार उपाधियाँ-'विद्यावाचस्पति', 'विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न' और 'भारत गौरव' प्रदान किया है।

विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं से भी इंजीनियर साहब का गहरा जुड़ाव है। इन संस्थाओं के कार्यक्रमों में ये तन, मन और धन से जुड़े रहते है। तभी तो गोरखपुर के दक्षिणांचल की एक प्रसिद्ध संस्था जिसके नियामक पूर्व राज्यमंत्री और चिल्लूपार के वर्तमान

www.bhojpurisahityangan.com

विधायक श्री राजेश त्रिपाठी जी हैं के द्वारा 'सरयू अमृत महोत्सव' सन् २०२१ के अवसर पर इनको 'सरयू रत्न सम्मान' से विभूषित किय गया।

इसी तरह अनेकानेक छोटी-मोटी संस्थाओं एवं अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन तथा विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा भी इन्हें एक दर्जन से अधिक सम्मान एवं अलंकरण प्राप्त हो चुके हैं। इनके सामाजिक कार्यों में योगदान देने के उपलक्ष्य में सन् २०११ में मदन मोहन मालवीय प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय (जो २०११ में इन्जीनियरिंग कालेज के रूप में था) ने अपने एल्यूमनाई एसोसिएशन द्वारा सम्मानित किया था।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। उनके जीवन में ज्ञान, कर्म और भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित है। इस छोटे आलेख में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का सम्यक निरूपण नहीं हो सकता। यहाँ मैने उनकी विशिष्ठ प्रतिभा की कुछ झलकियों को परोसने का कार्य किया है। मैं राजेश्वर जी के बारे में परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ तथा मंगल कामना करता हूँ कि वे वैदिक भाषियों की आयऽ वाणी 'जीवेमः शरदः शतम्' की तर्ज पर शतायु हों तथा पूर्ण स्वस्थ, निरामय जीवन व्यतीत करते रहें एवं अपने कार्यों से समाज की सेवा करते हुए लेखनी से भोजपुरी माँ का खोईंछा भी भरते रहें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के सर्जक इं० राजेश्वर सिंह

-प्रो० (डॉ०) सविता कुमारी श्रीवास्तव

भोजपुरी हिन्दी की प्रमुख बोली के रूप में जानी-पहचानी जाती है। भारत के एक बहुत बड़े हिस्से का भाषायी रूप भोजपुरी का है। भोजपुरी उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में विस्तृत है। प्रमुखता की दृष्टि से बनारस, गोरखपुर, बलिया एवं बिहार की प्रमुख बोली के रूप में भोजपुरी का नाम है। भोजपुरी मातृभाषा के रूप में बहुत ही प्रतिष्ठित बोली है। भाषा के रूप में भी इस बोली का विकास बहुत ही तीव्र गति से हो रहा है। यह बोली बहुत ही मिठास एवं आत्मीय भाव से भरी है। जिसके वाचन करने वाले लोगों में भी प्रेम का गहरा भाव अन्तर्निहित है। भोजपुरी का साहित्य भी समृद्ध है। इसमें लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य प्रसिद्ध है। लोक नाटक में भिखारी ठाकुर का नाम साहित्यकारों में अविस्मरणीय है।

भोजपुरी साहित्य लेखन में भोजपुरी भाषा को समृद्ध करने, उसमें साहित्य लेखन की दृष्टि से साहित्यकार इंजीनियर राजेश्वर सिंह का नाम बहुत ही महत्वपूर्ण है। आपका जन्म गोपालपुर गाँव, जिला गोरखपुर में हुआ था। इनके माता-पिता का नाम श्रीमती परमजोता एवं श्री समर बहादुर सिंह था। इनकी शिक्षा-दीक्षा गोरखपुर से हुई। आपने बी.ई. (सिविल) वर्ष १९७३ में किया एवं एम.आई.ई. भी। ये बहुत ही मेधावी छात्र रहे हैं। इन्हें पढ़ने-लिखने का बहुत ही शौक था। नौकरी के साथ-साथ एवं सेवानिवृत्ति के बाद भी आज तक ये साहित्य सृजन में संलग्न हैं। आपने कई स्थानों पर अपनी सेवायें दी हैं। आप उ० प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से अप्रैल २०१० में सेवानिवृत्त हुए। तत्पश्चात् बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार रहे एवं म०प्र० जल निगम में मर्यादित में वरिष्ठ सलाहकार रहे।

साहित्य सेवा सबसे बड़ी सेवा है क्योंकि इसमें व्यक्ति की जीवन्तता बनी रहती है। ऐसे ही जीवन्त व्यक्तित्व के धनी, कर्मठ व प्रखर सर्जक लेखक के रूप में राजेश्वर सिंह जी का नाम महत्वपूर्ण है। साहित्य की अनेक विधाओं में आपका लेखन है। प्रमुखता की दृष्टि से कहा जा सकता है कि आपकी शैली आत्मकथात्मक एवं अनुवादपरक है। आपकी प्रकाशित कृतियों

www.bhojpurisahityangan.com

में-एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४), जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी (वर्ष २००४), सुख जागे दु:ख भागे (वर्ष २००४), गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६), श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७) तो भोजपुरी रचनायें हैं-जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७), पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६), भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८), राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९), श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०), भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०), दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०), घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०, भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१), भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२), भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३)। अनेक साहित्यिक संस्थाओं, पत्रिकाओं में आपकी सम्बद्धता है। इन कृतियों में भोजपुरी भाषा में लिखित आपकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

भोजपुरी भाषा में सशक्त रचना आपने प्रदान किया है। महाभारत, श्रीमद्भागवदगीता का कथासार, रामायण की कथाओं एवं सन्तों महात्माओं पर भोजपुरी भाषा में आपकी रचनाएं महत्वपूर्ण हैं। भोजपुरी की सरल सौन्दर्य युक्त शब्दों का संयोजन आपकी रचनाओं को विशेष बनाता है। भोजपुरी भाषा के साहित्य में एक नयी कड़ी जोड़ने का कार्य आपने किया है। साहित्य सृजन में उदात्त व्यक्तित्व के धनी राजेश्वर सिंह निश्चित रूप से एक उच्च कोटि के साहित्यकार हैं। भोजपुरी भाषा को जीवित रखने का आपने जो बीड़ा उठाया है, निश्चित रूप से सराहनीय कार्य है। कोई भाषा तभी जीवित रहती है जब उसमें साहित्य लिखा व पढ़ा जाता है।

भोजपुरी लेखन में उल्लेखनीय योगदान एवं अन्य साहित्यिक विधाओं में महत् योगदान के परिप्रेक्ष्य में आपको अनेक संस्थाओं से सम्मानित किया गया है। 'महात्मा ज्योतिबा फुले फेलोशिप सम्मान', 'प्रेमचन्द सम्मान', 'मेलोडी सम्मान २००६', 'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान', 'अध्यात्मिक रत्न सम्मान', 'साहित्य कला शिरोमणि सारस्वत सम्मान' आदि अनेक सम्मान आपको प्राप्त हुए।

भोजपुरी भाषा के लेखन में राजेश्वर जी की कृतियाँ बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इसकी महत्ता इस अर्थ में और भी बढ़ जाती हैं क्योंकि इन्होंने रामायण की कथा को, साधु-सन्तों की कथा को, पंचतन्त्र की कथा को, महाभारत की कथा को एवं परमहंस योगानन्द की आत्मकथा को भोजपुरी भाषा में सृजन कर अनुवादपरक शैली में मौलिक रचना समाज व साहित्य को प्रदान किया है, जिससे भोजपुरी भाषा के अध्येता को सुलभ ग्रन्थ प्राप्त हुआ है एवं ग्रन्थों की महत्ता

www.bhojpurisahityangan.com

भी द्विगणित हुई एवं भोजपुरी भाषा का ज्यादा से प्रचार-प्रसार हुआ। भाषा की सेवा से देश की अस्मिता जुड़ी होती है। अपने भोजपुरी की नवलेखन के लिए राजेश्वर जी सम्मान के अधिकारी हैं। यों तो आप काफी वर्षों से साहित्य सेवा में संलग्न हैं परन्तु २०१९ से २०२३ तक का लेखन भोजपुरी भाषा को समर्पित है।

वर्तमान में २०२३ में भोजपुरी भाषा में लिखी गयी उनकी पुस्तक 'भोजपुरी योगी कथामृत' परमहंस योगानन्द की आत्मकथा पर आधारित पुस्तक है। जो उन्चास प्रकरण के चर्चा के साथ लिखी गई है। इसमें राजेश्वर जी ने परमहंस योगानन्द सम्बन्धी अनेक घटनाओं को भोजपुरी की सरल, सरल भाषा में लिखा है जिसे कोई भी भोजपुरी भाषा का पाठक बड़ी ही सरलता से समझ सकता है एवं अनेक जानकारी प्राप्त कर सकता है।

राजेश्वर जी का भोजपुरी भाषा के प्रति योगदान अप्रतिम है। इनके इस तरह के लेखन से निश्चित रूप से विद्वतजन, पाठक, शोधार्थी लाभ प्राप्त करेंगे। भोजपुरी भाषा के विकास में एक नए अध्याय को जोड़ने का सम्पूर्ण श्रेय राजेश्वर जी को है। इसके लिए वे सम्मान व बधाई के हकदार हैं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१२१

सद्मानव

-रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी

द्वौ भूतसर्गो लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।
दैवे विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ।।

-श्रीमद्भगवद्गीता, १६/६

इस लोक में भूतों की सृष्टि यानी मनुष्य समुदाय दो ही प्रकार है । एक तो दैवी प्रकृति वाला और दूसरा आसुरी प्रकृति वाला और दूसरा दानव प्रकृति वाला। समा में दैवी प्रकृति वाले व्यक्ति कम होते जा रहे हैं, अभी समाप्ति से बहुत दूर हैं। इन्हीं गिनती के कुछ दैवी प्रकृति वाले मित्रो में बाबू राजेश्वर सिंह भी हैं। गठीला शरीर, मृदुभाषी, सहज, सादगी से पूर्ण। छल-प्रपंच से कोसों दूर। कम बोलते हैं, ज्यादा करते हैं। लाग-लपेट नहीं रखते हैं। लगभग बीस वर्ष पूर्व श्री मधुर नज्मी और बाबू गिरिजेश राय के सान्निध्य में रहने के कारण मेरी उनसे जान-पहचान हुई। मिले, बोले-'राजेश्वर सिंह, टूटी-फूटी कुछ लिख लेता हूँ।' यह मेरी पुस्तक-'एक कहानी की आत्मकथा' है। पुस्तक ले ली। घर आया। पन्ने पलटा। दो-चाप पेज पढ़ा। प्रकाशक-काव्यमुखी साहित्य अकादमी, हाफिज कालोनी, आदर्श नगर, गोहना मुहम्मदाबाद, मऊ। गुरुवर प्रोफेसर वशिष्ठ अनूप का आलेख-एक आदिम भूख का आख्यान है यह कृति। पूरा पढ़ा गया। श्री वशिष्ठ जी मेरे पसन्दीदा रचनाकार थे। मित्र भी थे। दूसरा आलेख मेरे मित्र और कवि-शायर डॉ० मधुर नज्मी का था। उसे भी पड़ गया। आगे के पृष्ठों में 'चांस' पत्रिका के सम्पादक श्री सुरेन्द्र सिंह, कवि मित्र पंकज गौतम (सम्पादक-सबके दावेदार) और अन्त में कृति के लेखक बाबू राजेश्वर सिंह की लिखने से प्रकाशन तक की अपनी कथा-व्यथा और अगले पृष्ठ पर पिता को समर्पण। आदे के पृष्ठ पर एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३) का प्रारम्भ। पुस्तक के दो-दो, चार-चार पृष्ठ पर बीच-बीच की पंक्तियाँ पढ़ रख दिया। कुछ मजा नहीं आया। सोचा, सिंह साहेब की यह पहली पुस्तक है। अधिकारी हैं। अच्छा वेतन है। परिवार के सुखी हैं। लेखक बनने की झोंक में लिख दिया और छपवा दिया।

बात आई-गई; खतम हो गयी। मैं भी सिंह साहेब को भूल चुका था कि अचानक एक

www.bhojpurisahityangan.com

दिन मित्र मधुर नज्मी का फोन आया-'कहाँ हउवा ?' मैने कहा-'घरही बाटीं।' बोले-'हम आवत हई। राजेश्वर सिंह के घरे रहब। वहीं भेंट करऽ। दूरदर्शन में रेकार्डिगं भी ह।' मैंने हामी भर दी।

निश्चित तिथि पर मैं बाबू राजेश्वर सिंह के राप्तीनगर के आवास पहुँचा। बाबू साहेब गर्मजोशी से मिले। नज्मी जी से मिला। दिल खोल कर लगभग एक घण्टे बात हुई। चलते समय बाबू साहेब ने हाल में ही छपी एक दूसरी पुस्तक पकड़ा दिया-'एक कबानी बीच में है।' घर आया। आलमारी में जहाँ उनकी पहली पुस्तक 'एक कहानी की आत्मकथा' रखा था, उसी के साथ उसे भी रख दिया। सोचा, पहली पुस्तक एक कहानी की आत्मकथा है, तो दूसरी कृति- एक कहानी बीच में है (२००४) है। एक-दो पन्ना पलट कर वह भी रख दिया। सोचा, एक कहानी बीच में क्या पढ़ूं, जब अन्त की कहानी आएगी, तब तीनों पुस्तकें एक साथ पढ़ लूंगा।

अब बाबू साहेब से कभी किसी गोष्ठी में, कभी किसी साहित्यिक समारोह में भेंट होने पर प्रणाम-आशीर्वाद होने लगा। दिन-माह-वर्ष बीतने के साथ मित्रता प्रगाढ़ होने की तरफ हो चली। कभी पत्रकार-कहानीकार बाबू गिरिजेश राय के घर, कभी सत्य नारायण मित्र 'सत्तन' के साथ और कवि सूर्यदेव पाठक 'पराग' के सान्निध्य में।

एक दिन एक समारोह में बाबू साहब कन्धे पर झोला लटकाए मुस्कराते हुए मिले। मुझे देख, झोले में हाथ डाल जिनिगी कऽ दूबि हरियाइल (१२ भोजपुरी कहानियों का संग्रह, २००४) देते हुए कहा-'पढ़ि के बतइबँऽ।' पढ़ा लेकिन बताने का मौका नहीं मिला। कारण था, मेरे अभिन्न मित्र डॉ० मधुर नज्मी का प्रथम समीक्षात्मक आलेख। मित्र मधुर नज्मी के आलेख को पढ़ने के बाद मेरे कुछ कहने का कोई मतलब नहीं था। उन्होंने अपनी समीक्षा में इतना लिख दिया था कि अब मेरे कुछ कहने-सुनने का कोई मतलब नहीं था। उनसे जो बचा उसे अन्य समीक्षकों- प्रो० प्रभुनाथ सिंह 'मयंक', डॉ० वशिष्ठ अनूप, श्री वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ० जयनाथ मणि त्रिपाठी, श्री सुरेन्द्र कुमार सिंह 'चांस', एवं श्री जनमेजय पाठक ने अपने आलेख में पूरा कर दिया। इस बीच बाबू साहेब की कई कृतियाँ पाठकों के समक्ष. आईं। कुछ मैने भी देखा और पढ़ा।

वर्ष २००७ में ठाकुर साहेक की दो पुस्तकें-'जिन्दगानी, ये कैसी तेरी जिन्दगी (हिन्दी) और वर्ष २०१० का ०७ मार्च भोजपुरी के इतिहास का ऐतिहासिक दिन है। गोरखपुर महानगर और आसपास के क्षेत्रों में भोजपुरी के लाल के लिए ऐसी कोई संस्था नहीं थी, जहाँ भोजपुरी लिखने-पढ़ने वाले कवि, कहानीकार एकजुट हों। इस कमी को पूरा करने के लिए इसी दिन भोजपुरी क्षेत्र की माटी के जुझारू पुत्र-बाबू गिरिजेश राय, सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन', नरसिंह बहादुर चन्द 'कौशिक', मुकेश आचार्य एवं सूर्यदेव पाठक 'पराग' ने भोजपुरी भाषा में अपना योगदान देने के साथ भोजपुरी भाइयों को एकजुट करने के लिए एक संस्था 'भोजपुरी संगम'

www.bhojpurisahityangan.com

स्थापित कर 'बइठकी' संस्था की स्थापना हुई। बाबू गिरिजेश राय की अध्यक्षता में प्रथम गोष्ठी का श्रीगणेश हुआ। संस्था निरन्तर अबाध गति से आज भी गतिमान है और निरन्तर माह के दूसरे रविवार को अपनी मासिक गोष्ठी संचालित करती रही है।

मैंने अपने जीवन में बाबू साहेब ऐसा कर्मठ और भोजपुरी भाषा-प्रेमी कम ही देखा है। बचपन में मैं देखता था कि इसाई मिशनरी के अनेक कार्यकर्ता देहात-शहर के मेले में बाइबिल के विभिन्न अंश के छपे पन्ने बाँटा करते थे। मैंने रूसी भाषा के साहित्य और पत्रिकाओं को भी अल्प मूल्य पर बिकते और बँटते देखा है किन्तु बाबू साहेब के भोजपुरी-प्रेम के आगे मैं नत-मस्तक हूँ। किसी भी कार्यक्रम में चाहे वह पुस्तकों का लोकार्पण हो, सभा हो, बाबू साहेब मंचासीन अतिथियों सहित अन्य श्रोताओं को मुक्त हस्त से अपनी पुस्तकें बाँटते हैं । कोई स्वार्थ नहीं, कोई लालच नहीं। मात्र भोजपुरी के उत्थान के लिए।

एक अच्छा बाग, जहाँ अनेक प्रकार के फल-फूल के वृक्ष और पौधे हों, उसकी सुगन्ध चहुँओर बिखरती है। भोजपुरी संगम की सुगन्ध फैलती जा रही थी। बाबू राजेश्वर सिंह जी की हिन्दी-भोजपुरी की अनेक कृतियाँ आ चुकी थीं। ऐसे ही एक दिन बाबू गिरिजेश राय, सत्य नारायण मिश्र 'सत्तन', नरसिंह बहादुर चन्द 'कौशिक', मुकेश आचार्य एवं सूर्यदेव पाठक 'पराग' से 'बइठकी' की चर्चा होने के बाद बाबू साहेब 'बइठकी' के लिए समर्पित हो भोजपुरी का बखार भरने के लिए अबाध गति से भोजपुरी में रचनाएँ करने लगे। भोजपुरी संगम से जुड़ने के बाद बाबू साहेब की लेखनी ने तीव्र गति पकड़ ली। भोजपुरी माटी के जन-जन की बोली जाने वाली बोली में दशाधिक पुस्तकों की रचना कर माँ भारती के आँचल में पढ़ीं, समझी, मन करीं (२०१६), भोजपुरी भागवत कथा-सार (२०१८), राम पियारा साधु-सन्त (२०१९), श्याम पियारा साधु-सन्त (२०२०), भोजपुरी महाभारत (२०२०), दीक्षा गुरु (२०२०), घरेलू नुस्खा (२०२०), भोजपुरी रामायण (२०२१), भोजपुरी पंचतन्त्र (२०२२), भोजपुरी योगी कथामृत (२०२३) कृतियाँ डाल चुके हैं। कुछ ही माह भोजपुरी माटी में जन्में युग पुरुष स्वामी योगानन्द के योग-साधना सहित उनके उन्चासों प्रकरण पर विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए भोजपुरी के सुधी पाठकों के समक्ष आ चुकी हैं और उनके मन मस्तिक में बस चुकी हैं।

बाबू राजेश्वर सिंह जी किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। उनकी कृतियाँ ही उनका परिचय देती हैं। वर्तमान में अनेक संस्थाओं से सम्मानित-पुरस्कृत श्री सिंह भोजपुरी संगम के संरक्षक हैं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१२२

भोजपुरी संगम कऽ रखवार : इं. राजेश्वर सिंह

-धर्मेन्द्र त्रिपाठी

भोजपुरी संगम गोरखपुर कऽ अइसन संस्था ह कि ओहमें भागीदार लोग भोजपुरिये में बतियावेला। वरिष्ठ कवि आ भोजपुरी संगम क संयोजक स्व० सत्यनारायण मिश्रा 'सत्तन' जी से भेंट 'अमृत कलश' आ 'संगम' होत रहल उहाँ के आग्रह पर 'भोजपुरी संगम' के एक 'बइठकी' में हमहूँ गइलीं। सत्तन जी कऽ इहै कहनाम रहे कि जेके जवन बाति कहेके बा ऊ भोजपुरिए में कहे आ उहाँ कऽ देन ह कि 'भोजपुरी संगम' क बइठकी दिन-रात आगे बढ़ि रहल बा।

वोह समय वरिष्ठ, कनिष्ठ रचनाकारन कऽ जुटान होखे जवना में यदा-कदा विश्वविद्यालय कऽ गुरुजी लोग आवत रहल आ वहीं भेंट भइल इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी से जे 'भोजपुरिया संगम' क रखवार (संरक्षक) रहल। ओकरा पहिले इंजीनियर राजेश्वर सिंह साहेब कऽ हिन्दी कहानी 'एक कहानी की आत्मकथा' जवन २००३ में प्रकाशित भइल रहल ओकरे बारे में कुछ-कुछ जनले-सुनले रहलीं। इंजीनियर साहेब कऽ सौम्यता आ बड़प्पन उनकर स्वभाव ह। इंजीनियर साहेब जब नौकरी से छुट्टी पाईं तऽ 'भोजपुरी संगम' के बइठकी में जरूर रहीं। उहाँ के 'भोजपुरी-संगम' आ भोजपुरी भासा से एतना लगाव बा कि हिन्दी में गद्य लिखे वाला आदमी भोजपुरी कऽ बखार भरि रहल बा।

इंजीनियर साहेब कऽ अब तक प्रकाशित किताबिन कऽ सूची देखला पर आश्चर्य होला कि नौकरी पेशा वाला अदिमी ई सगरो कार कवने समय करत होई ? बानगी के तौर पर उनकर आठ हिन्दी किताब प्रकाशित भइल बा- जवन एह प्रकार बा- १- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), २- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४), ३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी (वर्ष २००४), ४- सुख जागे दुःख भागे (वर्ष २००४), ५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), ६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६), ७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), ८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७)। हिन्दी में एतना किताबि लिखे वाला इंजीनियर जब भोजपुरी में डेग बढ़वलीं तऽ बढ़ावत-बढ़ावत एक दर्जन किताबिन कऽ प्रकाशन करा देइलीं।

इंजीनियर साहेब क स्वभाव सरल, सहज आ अपने काम-काज में रमे वाला ह। विश्वविद्यालय क गुरुजी लोग से जेतना सम्पर्क बा ओतना भोजपुरी में कार करे वालन से भी। अपने पेशा के अनुरूप इंजीनियर साहेब भोजपुरी संगम कऽ इंजीनियर हईं। भोजपुरी कऽ बड़वर कवि, समीक्षक

www.bhojpurisahityangan.com

आदरणीय सूर्यदेव पाठक 'पराग' जी के लखनऊ प्रवास कइला के बाद आप भोजपुरी संगम के अध्यक्ष भइलीं। भोजपुरी-संगम के बइठकी भाग-एक आ भाग दू के प्रकाशन में बड़वर योगदान बा। इंजीनियर साहेब क भोजपुरी संगम आ भासा के प्रति एतना प्रेम बा कि अपने किताबिन पर सहयोगी प्रकाशन में 'भोजपुरी संगम' जरूर जुड़ल रहेला।

सत्तन जी के प्रति समान भाव से जुड़ल इंजीनियर साहब के भोजपुरी में प्रकाशित किताबिन पर नज़र दउड़ाईं तऽ गद्य आ सार्थक गद्य प्रकाशित भइल बा-जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (२००४)-बारह शिक्षा-प्रद किहानियन कऽ संग्रह। कल्यान कऽ जुगति (२००७) में प्रकाशित भइल आ इ अट्ठाइस निबन्धन कऽ संग्रह ह। पढ़ीं, समझीं मन करी (२०१६) में प्रकाशित भइल। एह किताबि में शिक्षा खास-तौर पर नैतिक मूल्य बोध भरल परल बा। भोजपुरी भासा में धर्म-कर्म के बारे में भी आप कऽ किताबि महत्त्वपूर्ण बाटिन सब, जवना में 'भोजपुरी भागवत कथा-सार' (२०१८), 'राम पियारा साधु-सन्त' (२०१९), 'श्याम पियारा साधु-सन्त' (२०२०), 'भोजपुरी महाभारत' (२०२०), 'भोजपुरी रामायण' (२०२१) एकरे अलावा इंजीनियर साहेब के रचना-संसार में 'भोजपुरी पंचतन्त्र' जवन २०२२ में प्रकाशित भइल आ ओहमें ६८ कहानी क संग्रह में संस्कृत पंच-तन्त्र के कहानी क रूपान्तरण बखूबी भइल बा।

घरेलू नुस्खा (२०२०) में प्रकाशित भइल एह किताबि क विशेषता इ बा कि एहमा कवनो अइसन बीमारी न होई जवने क इलाज पद्य (कविता) में ना बतावल होई। इंजीनियर साहेब क 'भोजपुरी योगी कथामृत' वर्ष २०२३ में प्रकाशित भइल, जेहमें परमहंस योगानन्द कऽ आत्म-कथा क उन्चासों प्रकरण प्रकाश में आइल बा।

इंजीनियर साहेब क 'दीक्षा गुरु' एक अइसन किताबि प्रकाश में आइल जेहमें २१ सन्तन-रामानन्दाचार्य, रामानुजाचार्य, योगीराज देवरहवा बाबा, गुरु नानक देव, श्री दादूदयाल, महात्मा तैलंग स्वामी, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, जयदयाल जी गोयन्दका, सीतारामदास ओंकारनाथ महाराज, हनुमान प्रसाद पोद्दार, परमहंस योगानन्द, महंत दिग्विजय नाथ, सच्चिदानन्द दास 'बंगाली बाबा', स्वामी करपात्री जी, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, श्री राधा बाबा, महर्षि ओंकारानन्द सरस्वती, स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी, महन्त अवेद्यनाथ आ स्वामी शरणानन्दजी महाराज कऽ गाथा चरित लिखल गइल बा। २०२० में इ किताबि प्रकाशित भइल।

आप कल्पना आ विचार करीं तऽ भोजपुरी कऽ बखार भरे के निरन्तर उतजोग करे वाला बिरला लोग होई जे ऐकै वर्ष में ४ किताबि के प्रकाशित आ लोकार्पित करवले होखे।

प्रसन्नता इ बाति के बा कि इंजीनियर साहेब पर 'अभिनन्दन ग्रन्थ, भोजपुरी-भूषण' छपि रहल बा आ लोग अपने-अपने समझ आ कूबत के अनुसार मूल्यांकन करी। सचहूँ भोजपुरी संगम कऽ सौभाग्य बा कि आपकऽ नेह-छोह मिलल बा, आ मिलत रही। आ अइसने लिखत रहीं-खिलत रहीं। ईश्वर से इहे प्रार्थना बा। ❖

www.bhojpurisahityangan.com

१२३

व्यवहार में पटु, धीर, वीर, गम्भीर व्यक्तित्व के धनी इं. राजेश्वर सिंह

-महेश नारायण त्रिगुणायत

'भोजपुरी संगम', गोरखपुर के संयोजक कुमार अभिनीत जी (हमरे पत्रकार मित्र स्मृतिशेष सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन' भाई कऽ सुपुत्र) कऽ एगो निहोरा आज बुद्धपूर्णिमा के दिने सोशल मीडिया के ह्वाट्सऐप प्लेटफॉर्म पर मिलल हऽ। निहोरा पढ़िके मन में खुशी भइल कि संस्था के कार्यकारिणी के ओर से लिहल गइल निर्णय के आधार पर भोजपुरी साहित्यकार इं० राजेश्वर सिंह के सम्मान में 'अभिनन्दन-ग्रन्थ' कऽ प्रकाशन होखे जा रहल बा। आऽ एह बदे एगो आलेख लिखिके भा टाइप कराके भेजे के हमसे निहोरा कइल गइल बा। हालाँकि एह बारे में हमरा एक महीना पहिलीं भनक मिलल रहे कि अइसन बड़हर मनई के सम्मान में 'अभिनन्दन-ग्रन्थ' के तइयारी पर विचार कइल जाताऽ। इंजीनियर साहेब से हमार चार-पाँच हाली के मुलाकात हऽ। प्रख्यात् भाषाविद् प्रो० रामदरश राय जी के घरे भेंट भइल रहे।

इंजीनियर साहेब हमके दू-तीन गो किताबि पढ़े बदे दिहले रहनीं-भोजपुरी रामायण, भोजपुरी योगी कथामृत आ घरेलू नुस्खा। दू गो किताबि तऽ हमार मेहरारू भी पूरा पढ़ि लेले बाड़ी। 'भोजपुरी योगी कथामृत' अबही पढ़ते बानीं। एह किताबि में इंजीनियर साहेब स्वामी योगानन्द जी के जीवन से जुड़ल इहलोक आ परलोक, सगरो ब्रह्माण्ड के दर्शन के बारे में उनके अनुभव आ क्रियायोग विज्ञान के महत्व के उभारत एगो किताबि 'योगी कथामृत' के भोजपुरी में अनुवाद रूप में अपने साहित्यिक अनुभव के भरपूर प्रस्तुत कइले बानीं। एह किताबि में हिन्दी साहित्य के शीर्ष स्तम्भ प्रो० रामदेव शुक्ल जी अपने भूमिका में योगानन्द जी के बारे में अनुवादकर्त्ता इंजीनियर साहेब के लिखले के अनुसार आपन अभिमत बहुत गहराई से दिहले बानीं। इहो हमार सौभाग्य हऽ कि उहाँ के हमके पढ़वले भी बानीं। एह किताबि में हम ई खोजत रहि गइलीं कि अनुवाद करे वाले इंजीनियर साहब भी आपन कुछु बाति रखले होखब। बाकिर कहीं लउकल नाहीं। खैर, ई ओतना महत्त्व नाहीं राखऽता। सगरो बतिया तऽ गुरुजी लिखिये देले बानीं। अबहिन तऽ हम किताबि पढ़ले बानी। आगे एकरे में फेरू कब्बो लिखे के मौका मिलबे करी। अब ले जेतना पढ़ले बानीं

www.bhojpurisahityangan.com

ओहसे एतना तऽ आभास भइल हऽ कि योगानन्द जी अउर उनकर गुरु के जीवन से जुड़ल प्रसंग अपने आप में बड़ा दमदार आऽ योगक्रिया भा क्रियायोग के बारे में समूचा दर्शन छिपल बा। जरूरत बा तऽ गृहस्थी जीवन में रहत भी योग और क्रियायोग के बारे में अनुभव सिद्ध भइले कऽ।

लोकभाषा में लिखे वाले इंजीनियर साहेब पहिलहीं नजर में काफी प्रभावित कइलीं। इहाँ से हमसे पाँच बरिस बड़हन हईं। तकनीकी पढ़ाई से अपने जीवन के सँवारे बदे उ०प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता पद के जिम्मेदारी तक उठा के भरपूर ईमानदार, कर्मठ आऽ व्यवहार में पटु, धीर, वीर, गम्भीर व्यक्तित्व के धनी इंजीनियर साहेब के साहित्य से जुड़ाव समाज अउर देश के कल्याण के उद्देश्य से शुरू से रहल हऽ। इहाँ के भौतिकता के दौड़ में भी अपने के लोक से जुड़ाव रखले रहनीं जेकरे नतीजा हऽ आज इहाँ के परिचय के मोहताज नइखीं अउर आम जन के बीचे आपन भरपूर पैठ बनवलें बानीं। नौकरी से फुरसत पाके भी इहाँ के अपने आप के परिवार, समाज, देश के हित में आपन लिखल-पढ़ल बन्द नाहीं कइलीं। ई हमार सौभाग्य बाटे कि जीवन के सत्तरवें वर्ष में भी इहाँ के जइसन बड़वर मनई से सम्पर्क हो गइल। इहाँ के बारे में जाने-सुने के मौका मिलल हऽ। इहाँ के सगरो किताबिन के देखे के तऽ नाहीं मिलल हवे बाकिर जवन पढ़े के मिलल, ओही से बहुत कुछ हम इहाँ के बारे में जनलीं- समझलीं हईं।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के सम्मान में प्रकाशित होवे वाले 'अभिनन्दन ग्रन्थ-भोजपुरी भूषण' के सन्दर्भ में हम एतने कहब कि इहाँ के अपने जीवन के कम-से-कम एक शतक तऽ पूरा करिये लीं ताकि सगरो भोजपुरी समाज आ देश के लोगन के इहाँ से साहित्यिक योगदान से बहुत कुछ सीखे अउर भोजपुरी साहित्य के मजबूती देवे बदे आपन कर्तव्य निभावे खातिर बल मिल सके।

अभिनन्दन ग्रन्थ 'भोजपुरीभूषण' के सफल प्रकाशन अउर इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के दीर्घायुष्य एवं बेहतर स्वास्थ्य खातिर ईश्वर से हमार प्रार्थना बा। साथ ही पाठकन से भी ई निहोरा बा कि इं. राजेश्वर सिंह जी के सगरे किताबिन के समय-समय पर पढ़ि के भोजपुरी साहित्य के समृद्ध बनावल जाय।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी क बड़हन सेवक इन्जीनियर राजेश्वर सिंह

-रामसमुझ 'सांवरा'

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी भाषा क एगो बड़हन सेवक हँईं। नाँव के अनुसार जे इनके ना देखले होई ऊ ई समझी कि कवनो तड़क-भड़क वाला, तेज तर्रार पश्चिमी सभ्यता में रचल-बसल कवनो भारी आफिसर होइहें। बाकिर अइसन नइखे, उनसे मिलला पर सोच एकदम से बदल जाई। राजेश्वर सिंह जी एकदम से सीधा, सरल सूझबूझ से भरल एगो भोजपुरी लिखे आ बोले वाला शान्त मिजाज क भोजपुरिया हवं।

अपने पढ़ाई आ डिग्री क घमण्ड उनके बात-व्यवहार में कब्बो ना लउकेला। इनके रचना में मनई क दुख-दर्द क छटपटाहट आ अकुलाहट बराबर लउकेला। आप हरदम नरम आ प्यार से बोलेलीं आ अउर सबसे अइसने बदे चिरउरी करेंलीं। आप क लिखल कईगो किताब प्रकाशित भईल बाटी, वोके बतउला के जरूरत नइखे। आप क सगरो किताब सीख-नसीहत से भरल बाड़ी, पढ़वइया सराहे बिनु ना रहि पइहें। उनके किताब 'पढ़ीं, समझीं, मनन करीं' में लिखल हमरे दिमाग में एगो बात निम्हे बइठ गइल, ओके इहवाँ लिखले बिना जीउ ना मानत बा- 'अपना जुबान से कवनो गलत बात जदि निकरि गईल, त माफी माँगि लेवे के चाही, एहमें संकोच ना करे के चाही। अपने बात में बदलाव कइ देवे के चाही।'

इन्जीनियर साहब के बहुतेरा सम्मान मिल चुकल बा। वोके जदि लिखीं त कई पन्ना भरि जाई। आप भोजपुरी भाषा के आगे बढ़ावे में आपन बड़हन योगदान करेलीं। नवसिखुवन के उकसवले में जुटल रहेगीं। आप अइसहीं लेखनी के दम पर समाज क सेवा कइल करीं, सुझाव दिहल करीं। भगवान से निहोरा बा कि रउरे के स्वस्थ रखें अउर राउर उत्साह बराबर बनवलें रहें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१२५

राजेश्वर सिंह : मेरे बालमित्र

-डॉ० अवधेश कुमार सिंह

अपने बचपन के मित्र, इंजीनियर राजेश्वर सिंह के बारे में कुछ लिखने बैठा हूँ तो मानस पटल पर लगभग छः दशक पूर्व की स्मृतियों का मेला सा लगा हुआ है। राजेश्वर से मेरी पहली मुलाकात १९६० की जुलाई में हुई थी। राजेश्वर अपने गाँव गोपालपुर (तहसील-गोला, जनपद-गोरखपुर) से कक्षा ५ उत्तीर्ण करके आगे की पढ़ाई के लिए बनारस आये थे। १९६०-७० के दशक में ग्रामीण अंचलों में शिक्षा की सुविधायें बहुत कम थीं। गांवों में प्राथमिक विद्यालय तो खुल गये थे लेकिन जनसंख्या के हिसाब से माध्यमिक विद्यालयों की संख्या नगण्य सी थी। उच्च शिक्षा के लिये तो लोगों को महानगरों की शरण लेनी ही पड़ती थी। तत्कालीन ग्रामीण समाज में संयुक्त परिवार की जड़ें काफी गहरीं थीं। इन परिवारों से उच्च शिक्षा के लिये महानगरों में पहुँचने वाले विद्यार्थियों की संख्या उँगलियों पर गिनने लायक थीं। ग्रामीण परिवेश से आया हुआ कोई व्यक्ति इन कठिनाइयों के बावजूद अपनी शिक्षा पूरा करके अगर नौकरी पा जाता था तो परिवार के इच्छुक बच्चों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी उसकी होती थी और वह बड़ी निष्ठा से इस कर्तव्य का निर्वहन करता था।

राजेश्वर के चाचाजी बाबू धनवन्त सिंह वाराणसी स्थित रेलवे के मुख्य वाणिज्य अधीक्षक कार्यालय में निरीक्षक पद पर नियुक्त थे तथा उदय प्रताप कालेज के समीप भोजूबीर में सपरिवार रहते थे। राजेश्वर पढ़ाई के लिए चाचा के यहाँ आ गये और चाचाजी ने उदय प्रताप कालेज में छठीं कक्षा में उनका प्रवेश करा दिया। मेरे पिता जी उस समय उदय प्रताप डिग्री कालेज में प्राध्यापक थे और हमलोग भी सपरिवार भोजूबीर में ही रहते थे। धनवन्त सिंह चाचाजी पिताजी के अग्रज तुल्य मित्र थे और आवास नजदीक होने के कारण हम लोगों का एक-दूसरे के यहाँ आना-जाना लगा ही रहता था। एक दिन मैं चाचाजी के घर गया तो उनकी पुत्री उर्मिला दीदी ने राजेश्वर से मेरा परिचय कराया और बताया कि राजेश्वर गाँव पर रहने वाले उनके बड़े पिताजी के पुत्र हैं और गाँव से कक्षा ५ उत्तीर्ण कर आगे की पढ़ाई के लिए बनारस आ गए हैं। अगले दिन राजेश्वर से कक्षा में ही मेरी मुलाकात हुई और फिर विद्यालय आना-जाना, पढ़ना-लिखना, खेलना-कूदना हमारा हाथ ही होने लगा। थोड़े दिनों में हमारी मित्रता काफी प्रगाढ़ हो गई।

उदय प्रताप कालेज, वाराणसी के उत्तर पश्चिम भाग में स्थित है। इसका परिसर शैक्षणिक

www.bhojpurisahityangan.com

माहौल के साथ १०० एकड़ की हरी-भरी उपजाऊ भूमि पर फैला हुआ है। इस कालेज की परिकल्पना और निर्माण दार्शनिक एवं संत प्रकृति के राजर्षि उदय प्रताप सिंह जूदेव ने इस क्षेत्र के मूल्यों के साथ समाज को समृद्ध करने के लिए शिक्षा को बढ़ा देने के लिए किया था। राजर्षि उदय प्रताप सिंह तत्कालीन बहराइच जिसे में स्थित भिगना रियासत के राजा थे। एक राजा के रूप में जन्म लेने के बावजूद वे समाज के कल्याण के लिए संन्यासी बन गए। राजर्षि ने सन् १९०९ में वाराणसी में हेवेट क्षत्रिय हाईस्कूल की स्थापना की जिसे १९२१ में इण्टर कालेज की मान्यता मिली और इसका नाम बदल कर उदय प्रताप कालेज कर दिया गया। १९४९ में इस संस्थान में डिग्री कक्षायें प्रारम्भ हुईं तथा कालान्तर में कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं कृषि विज्ञान के अधिकतर विषयों में स्नातकोत्तर कक्षायें प्रारम्भ हो गईं। विगत तीस वर्षों से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कालेज को स्वायत्तशासी संस्थान का दर्जा दे दिया है।

उदय प्रताप कालेज जिसे क्षत्रिया कालेज या यू०पी० कालेज के नाम से ही लोग ज्यादा जानते थे, का अपना अलग मानक था। राजर्षि इसे पूर्ण आवासीय विद्यालय बनाना चाहते थे और उनकी इच्छा थी कि यहाँ के विद्यार्थी भारतीय संस्कारों से युक्त, शरीर और मन से पूर्ण स्वस्थ और सच्चे देशभक्त बनें। यहाँ घुड़सवारी का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। यहाँ सारी विशेषतायें इस संस्था को औरों से अलग करती थी। स्थापना के समय ही राजर्षि ने कालेज के विशाल परिसर में दस आवासीय छात्रावास बनवायें थे और सभी छात्रावासों के सम्मुख खेल के मैदान भी छोड़े गये थे। कालेज परिसर के मध्य विद्यालय के हॉकी, फुटबाल, क्रिकेट, बालीबाल एवं अन्य खेलों के लिये विस्तृत खेल के मैदान हैं। इनमें अक्सर विद्यालय खेलों के अतिरिक्त, जनपदीय, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय खेलों के आयोजन भी होते रहते हैं।

राजर्षि की इच्छानुसार एक सन्ध्या हाल बनाया गया था। जिसमें सन्ध्या के समय सभी छात्रावासों के छात्रावासी सन्ध्या वन्दन के लिए एकत्र होते थे।

कालेज में अच्छेखेल के मैदान और खेलों की सुविधा के कारण प्रात: ५.०० बजे से शाम के ७.०० बजे तक खेल का वातावरण रहता था। एक कालेज के अनेक पूर्व छात्रों को राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय एवं ओलम्पिक खेलों में भी देश का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त है। ऐसे वातावरण में राजेश्वर से मेरी मित्रता साथ-साथ पढ़ने एवं खेलने के कारण दिनोंदिन सुदृढ़ होती गई। हलाँकि यह ज्यादे दिनों तक जारी नहीं रह सका। मां की असामयिक मृत्यु के कारण कक्षा ७ के बाद ही राजेश्वर को गाँव लौटना पड़ा और फिर उनकी शिक्षा गाँव तथा गोरखपुर में सम्पन्न हुई। राजेश्वर के बनारस से जाने के बाद हमारे मिलने-जुलने के अवसर बहुत कम हो गये लेकिन पारिवारिक सम्पर्कों से हमें एक-दूसरे के बारे में जानकारी मिलती रही।

राजेश्वर ने इण्टर के बाद गोरखपुर स्थित मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज से बी०ई०

www.bhojpurisahityangan.com

डिग्री प्राप्त की। उन्हीं दिनों मैं भी गोरखपुर विश्वविद्यालय के रसायन विभाग में एम.एस.सी., पी०एच०डी एवं पोस्ट-डाक्टरल शोध कार्य में संलग्न था। पारिवारिक समारोहों में कभी-कभी हमारी मुलाकातें हो जाती थीं। कालान्तर में राजेश्वर उ० प्र० जल निगम में सहायक अभियन्ता पद पर नियुक्त हो गये और मेरी नियुक्ति वाराणसी स्थित हरिश्चन्द्र महाविद्यालय में हो गई और १०-१२ साल के लम्बे अन्तराल के बाद मैं पुन: बनारस लौट आया।

जहाँ तक मुझे याद है, १९९० के दशक में राजेश्वर का स्थानान्तरण वाराणसी हो गया और प्राय: तीन वर्षों तक हम एक-दूसरे के सम्पर्क में रहे। वाराणसी से राजेश्वर के स्थानान्तरण के बाद भी हमने टेलीफोन एवं अन्य माध्यमों से निरन्तर एक-दूसरे से सम्पर्क बनाये रखा। बच्चों के वैवाहिक एवं अन्य पारिवारिक समारोहों में मुलाकातें भी हो जाया करती थी। समय बीतता रहा और राजेश्वर जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने गोरखपुर में आवास बनवा लिये और स्थायी रूप से वहीं रहने लगे।

सेवानिवृत्ति के कुछ वर्षों पूर्व से ही उनका झुकाव आध्यात्म की तरफ हो गया और उनकी कुछ प्रकाशित कृतियाँ यथा: 'एक कहानी की आत्मकथा', 'एक कहानी बीच में है', 'जिन्दगानी! ये कैसी तेरी जिन्दगी', 'सुख जागे दुख भागे', 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी', 'नसीब अपना-अपना', 'जिनिगी कऽ दूबि हरियाइल', 'कल्यान क जुगति', 'पढ़ीं समझीं मनन करीं' इसी कालखण्ड में लिखी गईं।

२०१० में सेवा से अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् वे पूर्णरूपेण भोजपुरी लेखन की तरफ अभिमुख हुए और 'भोजपुरी श्रीमद्भागवत कथा-सार', 'राम पियारा साधु-सन्त', 'श्याम पियारा साधु-सन्त', 'दीक्षा गुरु', 'भोजपुरी रामायण', 'भोजपुरी पंचतन्त्र', 'भोजपुरी योगी कथामृत' जैसी रचनायें प्रकाश में आईं। इन कृतियों के प्रकाशन, वितरण एवं भोजपुरी के प्रचार-प्रसार में वे पूरी तरह से समर्पित रहे।

उत्तर प्रदेश एवं बिहार की अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं ने उन्हें भोजपुरी के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिये सम्मानित किया।

अपनी कतिपय पुस्तकों के मुद्रण हेतु वे वाराणसी आते-जाते रहे और उनसे मिलने के अवसर भी प्राप्त होते रहे। इस समय तन, मन, धन से उन्होंने पूरी तरह भोजपुरी भाषा के लेखन, प्रचार एवं प्रसार में अपने को समर्पित कर रखा है। निकट भविष्य में वे आयु के ७५ वर्ष पूरे कर रहे हैं। हम सभी मित्रों की कामना है कि अच्छे स्वास्थ्य के साथ वे शतायु हों और अपने मिशन में लगे रहें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१२६

मनइन में मनई इं. राजेश्वर सिंह

-डॉ० अजय राय 'अन्जान'

हर युग में लोग जनम लिहलऽ, ओही में कुछ लोग अमर हो गइलन। चाहे उ त्रेता होखे चाहे उ द्वापर होखे, चाहे सतयुग अउर चाहे कलयुग होखे। हर युग में अच्छा लोगन क जनम होला चाहे राम के नाम से, चाहे कृष्ण के नाम से। आपन पहचान बनवलऽ कबीर, सूरदास, तुलसी, जायसी, मीराबाई, नीराला, प्रसाद जी, प्रेमचन्द, मोहन राकेश, अज्ञेय, मुक्तिबोध, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि सबकर नाम भईल, काहें कि उनकर काम निम्मन रहल। राम आपन नाम अपने कइलें, सबकर मर्यादा रखलें, मर्यादा पुरुषोत्तम कहइलें, गीता क उपदेश देइ के कृष्ण ज्ञानी कहइलें, प्रेम के सागर में डूबि के प्रेम कइले, परेमभाव क आदर्श रचलें, सगरो रचनाकार लोगन कऽ खाली एक काम रहलऽ समाज के अच्छी चीज समझावल, सब लोग लिखि-लिखि के बड़हन रचनाकार भइलन। इहे कमवा तऽ इं. राजेश्वर सिंह जी भी करत बाड़ें। नाम इनकर भी लोग जनिहें। आवे वाली पीढ़ी खाती ई पूजनीय होइहें, ई हमार विश्वास बा। इन्जीनियर साहब क सरल स्वभाव इनके सोगहग मनई बनवलसि, वोमें चार चाँद लगवलसि। इन्जीनियर साहबपर बहुत कुछ लिखा जाई, हम का लिखि पाइब। हमसे जब कहाइल कि इन्जीनियर साहब पर आपो के कुछ लिखेके बाऽ, मन बहुते खुश भईल। कई महीना लग गइल ई सोचत कि एतना सोगहग सरल स्वभाव वाला मनई के बारे मे का कइसे लिखीं। आजु कलम उठा के कछु लिखे बइठि गइलीं, जेतना कछु जान-समझ पवले रहलीं, लिखे शुरू कइलीं ताकि बाद में पछिताये के ना पड़े।

हमके का मालूम की एक मनई कऽ केतना रूप होला। ई जाने समझे खातिर शहर में बिलाइल आदमी जब इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी से मुलाकात भईल तऽ पता चलल कि मनई भी कई प्रकार के रूप में अवतरित हो सकेलऽ। इं. राजेश्वर सिंह के जाने खातिर एक बड़हन करेजा होखे के चाही। देखले में जेतना सीधा-सादा, सरल अउर सोगहग मनई दिखाई देलन ओतना हवें नाहीं। उनकर व्यक्तित्व अउर कृतित्व ओतना ही बड़हन ह। ऊ बैद हवें कि कवि हवें, भोजपुरी समाज के गद्य लेखन में भी आपन ओतने अधिकार रखे वाले, अउर त अउर ऊ इन्जीनियर भी। केतना गुण हे भगवान, इनके अन्दर दिहलऽ। सबसे बड़हन जवन उनकर विशेषता बा ऊ हउए साँच

www.bhojpurisahityangan.com

मनई भइले कऽ। बहुत साधारण रहन-सहन, कउनो तरह क प्रदर्शन ना, दिखावा उनसे कोसो दूर बा। हमके नाही लगत बा कि केहू से कहत होइहन कि हम कउनो विभाग में इन्जीनियर रहलीं। जहाँ जेकर जइसन सहयोग क जरूरत रहेला ओइसन करेलन।

कबो मंच पर बोलत मनई के ई नाहीं समझे के चाही कि जे सभागार में चूप-चाप बइठल बा ऊ गँवार होई। हो सकेला गंवार लउके वाला बहुते होशियार होखे। हमके याद बा गोरखपुर के खरैया पोखरा के अभिनीत भाई के घरे भोजपुरी संगम क बइठकी कऽ दिन रहल। एगो साधारण सा लउके वाला मनई कुर्ता-पजामा पहिनले, गमछा कान्हे पर रखले आइल, सभा शुरू भइले से पहिले ऊ बड़का पद के आसन पर बइठावल गइल। सबके बड़ा ध्यान से सुनत रहल, सब जाने ला कि आखिर में बोले वाला व्यक्ति ही प्रमुख (अध्यक्ष) होला। बहुत कम शब्दन में बहुत कुछ बोलल अउर सबके आपन लिखल किताब भोजपुरी में 'घरेलू नुस्खा' सबके भेंट कइलस। किताब पर नजर डरते सबकर चेहरा खिल गइल, सब सराहे लागल। कई जनीं के मुँहे से निकल पड़ल, "बाह रे इन्जीनियर साहब बाह, आप क केतना रूप बाऽ!" हमहूँ जाने खातिर परेशान भइलीं। डेरा पर अवते किताब पूरा पढ़ि डरलीं। बड़ा मजा आइल किसिम-किसिम क जानकारी मिलल। मन में सवाल उठल एह तरह क जानकारी इन्जीनियर साहब कब पवले होइहें अउर एह मतिन सहेजले होइहें।

हम-आप ना जानीलें की ए धरती पर जेतना पेड़-पालो हवें सब औषधी हवें, सब दवाई हवे आ कवने रोग में कइसे प्रयोग कइल जाय। बहुत पहिले अंग्रेजी दवा त रहलिन ना। ऋषि-मुनी जंगल में एह मतिन पेड़-पौधन से दवा बना के राखत रहलन आ समाज क सेवा करते रहलन। ओही नियर इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी एगो वैद भी हउअन। किताब 'घरेलू नुस्खा' सबके दिहले के बाद मंच से बोले लगलन-"आप लोगन के घर में बहुत सामान अइसन होला जवन वोकरे उपयोगिता के जानकारी ना रहला से बहरे फेंका जाला, ऊ सब दवाई के काम क चीज होला। ऊ किताब खोल के दू-चार पढ़ के सुनावे लगलन।" सब जनि कान पारि के सुने लागल। सब अचरज में पड़ गइल कहे लागल कि अरे ई सब तऽ हमनी के जनते ना रहलीं, ई सब त सचहूँ बहरे फेका जाला।

घर के अन्दर क मसाला चाहे पास-पड़ोस क पेड़-पौधा जइसे-अजवाइन, अदरक, अर्जुन, अमरूद, अशोक, अमलास, आँवला, इमली, इलायची, करी पत्ता, ढेकुआरि (एलोवेरा), मंगरैल, काली मिर्च, केला, खरबूजा, गिलोय (गुरुचि), गुड़हल, चना, चुकन्दर, जामुन, जीरा, तुलसी, तेजपत्ता, तीसी, तिल, दूबा, दालचीनी, धनिया आदि पचास चीजन के औषधीय उपयोगिता अउर कवने रोग में कइसे प्रयोग करेके चाही कविता के रूप में सब किताब में दिहल बा। पेट में पथरी भइले पर डाक्टर के लग्गे जा के पेट चिरवले से पहिले घर क दवाई इन्जीनियर साहब बतवले

www.bhojpurisahityangan.com

बाड़न-

पथरी गुर्दा होय जो, दर्द भयंकर भाय ।
रस बथुआ के सेवन से, टूट निकल बहिराय ।।

ई इन्जीनियर हवें कि बैद ?

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी बहुत कुछ जानेलन। आज गोड़े के बिमारी से सगरो घर में केहू न केहू परेशान बा। ऊ बतवले बाड़न-

भर चम्मच गिलोय ले, दूधे संग लियाव ।
दुइ बेर नित सेवन से, गठिया लाभ बुझाय ।।

बहुत-बहुत लोगन के आमने सामने बा, ओके झूठ में ही दूगो पतई तूरि के मुहे में डारि के चबा डारी, फायदा करी। जइसे लोगन के जदि बुखार हो जाय भा ना भइल हो तबो हरसिंगार क दू पतई तूरि के मुँहे में डालि लेईं, फायदा करी। बुखार उतरले में हरसिंगार क कउनो तुलना ना ह। अक्सर लोग कहेलन कि देह में खून क कमी हो गइल बा, लोग परेशान हो जालन। इलाज घरवे में बा-

सूखल गुड़हल फूल के, चूरन लेहु बनाय ।
दूध संग दुइ बेर लें, कमी रक्त ना भाय ।।

इं. राजेश्वर सिंह खाली बैद नाहीं हउअन, किताब में भी सहज रूप से समझे खातिर बहुत छोट-छोट बात किताब में जवन आसानी से समझ में आ जाय लिख दिहले बाड़न। अब हम कहत बाटी, जे कविता लिखे ओके कवि, जे जड़ी-बूटी से दवा बतावे वोके वैद, जे योग सम्बन्धी शिक्षा देला ऊ योगी, अउर नमवा के आगवाँ (इन्जीनियर) लिखल बा जवने से सब केहू इन्जीनियर कहेला। ए नाम हवे राजेश्वर जवने क अर्थ होला राजाओं का राजा, फिर सिंह जवन जंगल क राजा। सगरो गुण त विराजमान बा। अब का काही ? राजेश्वर सिंह काम, क्रोध, मद, लोभ पर विजय प्राप्त कइ लिहले हवन, ई कहले में कवनो संकोच नाहीं होत बा, सगरो कला कऽ पारंगत उ राजा हवें।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह विभिन्न संस्थाअन से बहुत सारा सम्मान से सम्मानित भी बाटें। अबहिन आगे भी तमाम सम्मान उनके मिली ई हमके पुरहर विश्वास बा काहें से कि उनकर लेखनी बराबर चलि रहल बा। उनके लिखले के कोशिश में लगल रहेलन। हिन्दी-भोजपुरी क कुल बीस किताब प्रकाशित हो चुकल बाड़ी। छपे खातीं प्रेस में जरूर एक-दू पड़ल होइहन।

इन्जीनियर साहब क जेतना किताब बाड़ी ऊ शिक्षाप्रद आ पढ़ के ज्ञान बढ़ावे लायक हयीं। ओह किताबिन में से एगो किताब ह 'दीक्षा गुरु' जवने में गुरु क महातिम निम्मने बतावल व

www.bhojpurisahityangan.com

समझावल बा। 'गु' क मतलब होला अन्हार अउर 'रु' क मतलब होला अजोर। अन्हारे से अजोरे के ओर गइले क राह दिखावे वाले के 'गुरु' कहल जाला। इन्जीनियर साहब अपने किताबी में बहुत निम्मन बात लिखले बाड़न कि गुरु भगवान से भी बड़हन होलन। कबीर दास जी कहले बाड़न-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पायं ।
बलिहारी गुरु आपनो जिन गोविन्द दियो बताय ।।

इहो कहल गइल बा कि-

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परम ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

गुरु संसार में सब कछु हवं नाहीं तऽ एह संसार में अन्हरिया के सिवाय कछु ना होत।

भगवान से निहोरा बा कि इन्जीनियर साहब के निरोग, स्वस्थ सानन्द रखीं ताकि लगातार इनकर कलम चलत रहे अउर समाज के निम्मन कल्याणकारी साहित्य मिलत रहे। अबहिन नौकन लोगन के इनसे बहुत कुछ सीखे के बा।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१२७

भोजपुरी के यशस्वी नक्षत्र : इं. राजेश्वर सिंह

-डा० अशोक सिंह

दुनिया में मानव-जीवन पाना परम सौभाग्य का विषय है। मनुष्य होने के लिए जीवन के निर्धारित-विचार, आदर्श, सिद्धान्त, मूल्य, संवेदना आदि का पालन करना निहायत आवश्यक होता है। सत्य, अहिंसा, करुणा, प्रेम, क्षमा, सहिष्णुता जैसे सद्‌गुणों का अधिकारी ही सच्चा मनुष्य कहा जा सकता है। ऐसे प्रज्ञावान पुरुष नैतिकता, सच्चरित्रता और सज्जनता के प्रमाण कहे जाते हैं। इंजीनियर राजेश्वर सिंह ऐसे ही सद्‌भावी व्यक्तित्व के धनी पुरुष हैं जो भारतीय जन-जीवन में रचे-बचे है। भारतीय संस्कृति और साहित्य, अध्यात्म और दर्शन से जुड़े हुए हैं। पेशे से इंजीनियर होने के बाद हिन्दी, खासकर भोजपुरी साहित्य में उनकी अभिरुचि श्लाधनीय है। वह भोजपुरी साहित्य के गहन अध्येता, विचारक, कवि एवं लेखक हैं।

आज के प्रगतिशील समाज में अपसंस्कृति का बोलबाला है। फलत: चारो ओर नैतिकता का क्षरण हो रहा है। मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा है। हम अपने भारतीय चिंतन को नजर अंदाज कर रहे हैं। अपने देश के महान योगी, ऋषि, तपस्वियों, साधकों को भूलते जा रहे हैं। धर्म अधोगति को प्राप्त हो रहा है। धर्म के नाम पाखण्ड और व्यवसाय जोरों पर चल रहा है। ऐसे में संकटापन्न स्थिति विकराल होती जा रही है। अनाचार, व्यभिचार, अत्याचार आदि दुर्गुणों का बोलबाला बढ़ता ही जा रहा है।

इं. राजेश्वर सिंह ने समाज को जागृत करने का बीड़ा उठाया है। उनकी अभिलाषा है कि समाज, परिवार और देश में नव-जागरण का शंखनाद हो। मनुष्य अपनी मर्यादा और सद्‌विचारों के कारण जाना-पहचाना जाए। दीन-दुखी जनों का कल्याण हो और भारत विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठित हो। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भारतीय जन-जीवन के प्राण एवं प्रेरणास्रोत हैं जिन्होंने अपने सत्कर्मों से धर्म का आचरण करते हुए रामराज्य की स्थापना की और विश्व का कल्याण किया।

इं. राजेश्वर सिंह जी ने एक दर्जन से अधिक भोजपुरी पुस्तकों की रचना करके ख्याति अर्जित की है। भोजपुरी में रचित उनके साहित्य का अपना वैशिष्ट्य है। उन्होंने प्रकृति और पुरुष

www.bhojpurisahityangan.com

का सामंजस्य व्यवस्थित रखने के लिए श्रीमद्भागवत, महाभारत की ओर ध्यान आकर्षित किया है। आश्चर्य होता है कि तकनीकी पेशे से सम्बद्ध होने के बावजूद यह उनकी नैसर्गिक प्रतिभा है जो साहित्य-संवाद से परिपूरित है। उनकी कुछ पुस्तकें मैने देखी और पढ़ी हैं जिनमें उन्होंने उन तमाम सिद्ध सन्तों का जीवन-चरित्र उकेरा है, जो भारतीय संस्कृति के मेरूदण्ड रहे हैं। ऐसे सन्तों के प्रभाव को वह चतुर्दिक समाज में प्रसारित करते हुए लोगों में श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, आस्था आदि का संसाचर करना चाहते हैं। उनकी एक पुस्तक है-'राम पियारा साधु-सन्त'। इसमें उन्होंने महर्षि बाल्मीकि, वेदव्यास, भारद्वाज, वशिष्ठ, संत पलटू दास, भीखा साहब, साध्वी शबरी जैसी ५१ महाविभूतियों के बारे में मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। ऐसे महाज्ञानी संतों से ही भारतीयता हमेशा जीवित और जागृत होती रही है। इं. राजेश्वर जी बार-बार आगाह करते हैं। सावधान करते हैं और ध्यान आकर्षित करते हैं, महातपस्वियों की ओर जिन्होंने नि:स्वार्थ भाव से परमार्थ हेतु अपनी जीवन स्वाहा कर दिया और जाकर हजारों, लाखों साल बाद भी वे श्रद्धास्पद पूज्य संतगण हमारे आदर्श बने हुए हैं।

इं. राजेश्वर जी एक सुहृदयी व्यक्ति हैं, परोपकारी हैं, सद्व्यवहारी हैं। उनकी निश्छलता, साधुता और विनम्रता आत्ममुग्धता से परे हैं। वह कर्मयोगी हैं। तभी तो उन्होंने कर्म की उपयोगिता प्रतिपादित करते हुए अपनी पुस्तक 'श्याम पियारा साधु-सन्त' का प्रकाशन किया। इनमें उन तमाम अष्टछाप के संत कवियों के अलावा संत रैदास, मीराबाई, रसखान, नरसी मेहता, पीपा जी, स्वामी हरिदास जी, स्वामी रामतीर्थ जी जैसे अप्रतिम सिद्धभक्तों की भक्ति भावना से समाज को जानना ही चाहिए तभी जीवन उत्कर्ष को प्राप्त होगा और देश का विकास होगा। केवल भौतिकवादी प्रपंचों से देश कभी नहीं समृद्ध होगा, जब तक अन्तछ चेतना प्रकाशित नहीं होगी।

आज हम अपने उन मानवीय मूल्यों को भूलते जा रहे हैं, यह एक विचारणीय समस्या है। पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता का अंधानुकरण करते हुए चारित्रिक पतन की जो कहानी लिखी जा रही है, वह नि:सन्देह शर्मनाक है। लज्जास्पद है। हम अपने अहंकार, वैभव, ऐश्वर्य में इतना डूब चुके हैं कि सारा परिवेश तुच्छ समझने लगे हैं। इं. राजेश्वर सिंह ने सन्मार्गी बनने के लिए जीवन में सद्गुरु के महत्व को विशेष प्रधानता दी है। यह सर्वविदित है कि बिना गुरु के ज्ञान नहीं प्राप्त होता है। गुरु भी ऐसा चाहिए जो मोह माया रहित हो। नि:स्वार्थ हो, परमार्थी हो और सच्चा ईश्वर का भक्त हो। लेकिन अब तो ऐसे-ऐसे गुरुजन भी मिलते हैं जो अपनी दुकानें सजाकर बैठे हैं और लाखों-लाख चेलों से लाभान्वित हो रहे हैं। इं. राजेश्वर सिंह ने अपनी किताब 'दीक्षा गुरु' में उन सद्गुरुओं का विशद् वर्णन किया है जिन्होंने दुनिया को अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर किया है और 'तमसोमाज्योर्तिगमय' का सन्देश दिया है।

www.bhojpurisahityangan.com

वस्तुत: आध्यात्मिक शक्ति के ज्योति पुंज से प्रकाशित जगत का कल्याण तभी सम्भव हो सकेगा, जब हम सभी मनसा-वाचा-कर्मणा तत्पर हों। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी कहा है- "मनुष्य है वही जो मनुष्य के लिए मरे।" संत-महात्मा तो परोपकार के लिए ही जन्म लेते हैं और विश्व का कल्याण करत हुए महाप्रयाण करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-'परहित सरिस धर्म नहिं भाई।' सचमुच में धर्म वही है जिसमें समन्वयवादी दृष्टिकोण हो, समरसता हो, किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो, ऊँच-नीच का अन्तर न हो। इसी को मानव धर्म कहते हैं। सचमुच इं. राजेश्वर जी ने मानवीयता को समृद्ध और सुदृढ़ करने में अपनी लेखनी को जो विस्तार दिया है, वह विचारणीय और अनुकरणीय है।

आजकल पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भी विकराल है। जल-थल-नभ सभी प्रदूषण से ग्रसित हैं। ऐसे में मन-मस्तिष्क को स्वस्थ रखना भी बेहद जरूरी है, तभी परिवार और समाज सुदृढ़ होगा और देश भी मजबूत होगा। इं. राजेश्वर सिंह ने स्वास्थ्य से सम्बन्धित अपनी भोजपुरी किताब 'घरेलू नुस्खे' में दोहा रचकर कमाल कर दिया है। उन्होंने जीवनोपयोगी पेड़-पौधों, मसालों से जीवन स्वस्थ बनाने का अनूठा नुस्खा प्रस्तुत किया है। वस्तुत: मौसमी फल, सब्जी आदि स्वास्थ्य को सुचारू रूप प्रदान करने में अपनी विशेष भूमिका अदा करते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इं. राजेश्वर जी जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए अध्यात्म और प्रकृति को आवश्यक मानते हैं जो सर्वथा उचित है।

मैं भोजपुरी साहित्य के विकास में उनके अवदान की भूरि-भूरि सराहना करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि भोजपुरी लोक में उनके सहज, सौम्य और सरस व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समुचित सम्मान प्राप्त होगा। उनके द्वारा रचित कृतियों का महत्व उपादेय होगा, जनोपयोगी होगा और मनुष्यता को उत्कर्ष प्रदान करने में सहायक होगा। मैं उनके स्वस्थ, सुखी एवं समृद्ध जीवन की मंगल कामना करता हूँ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

८

संस्मरण : खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ यादगारें

-किरन शर्मा

मैं बी.ए. की पढ़ाई के लिए सिद्धार्थनगर में थी। एक दिन मेरे पिताजी के एक मित्र पाण्डे चाचा हमारे डेरा के पास से गुजर रहे थे। उन्होंने सोचा कि जरा रुक कर बच्चों का हाल-चाल लेते चलें। मैं और मेरा छोटा भाई दूनो लोग बड़े मकान में दो छोटे-छोटे कमरे लेकर रहा करते थे। डेरा भी पाण्डे चाचा ने अपने मकान के नजदीक में ही अपने एक मित्र के मकान में दिलवा दिया था। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि साम को पड़ोस में कवि-गोष्ठी होने वाली है, उसमें उनके मित्र ज्ञानेन्द्र द्विवेदी 'दीपक' जी भी आने वाले हैं। दीपक जी जो बाँसी के रहने वाले हैं, उस क्षेत्र के चर्चित कवियों में थे। मैने उनका नाम सुनते ही पाण्डे चाचा से कहा कि 'चाचा ! कबिता सुनने मैं भी आ जाऊँ ?' चाचा ने कहा-'आ जाओ, चाची से भी मिल लोगी, वो भी खुश होगीं।' एक दिन कह भी रही थी कि किरन का हाल-चाल लेने इधर आप गये नहीं, कई दिन हो गये। कविता लिखने का मुझे भी शौक जग गया था। कभी-कभार लिख लिया करती थी।

सायंकाल में कविगोष्ठी में एक श्रोता के रूप में पहुँची। पधारे कविगण का आपस में परिचय व बातचीत होने लगी। मेरा नाम दीपक जी ने पूछा। मैं अपना नाम बताने के साथ ही साथ यह भी बतायी कि थोड़ी बहुत कविता लिखने का मुझे भी शौक है। विद्यालय में दो-एक अवसर पर पाठ भी किया था। दीपक जी प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा-'बिटिया, आज तुम्हें यहाँ भी कुछ सुनानी होगी।' मन ही मन प्रसन्न होते हमने 'जी' कहकर स्वीकारोक्ति जाहिर कर दी। हमने अपनी दो रचनाएं सुनाई। मौजूद कवियों ने सराहा। यह रहा कवियों के बीच का पहला दिन।

शुरूआत में कार्यक्रम शुरू होने में जब थोड़ी देर होने लगी थी तो मैंने चाचा जी से पूछा था कि कवि लोग आ गये हैं फिर कार्यक्रम शुरू होने में देर क्यों हो रही है ? उन्होंने बताया था कि एक इन्जीनियर साहब हैं जो साहित्यिक मिजाज के हैं; उनको लोग अध्यक्षता करने के लिए बुलाये हैं। वे आते ही होंगे। उनके आते ही कायक्रम शुरू हो जायेगा। इन्जीनियर साहब को जानने के लिए मेरे मन में भी जिज्ञासा जग गई। कुछ ही देर में वे आ गये। देरी के लिए हाथ जोड़कर माफी मांगते हुए कवियों के बीच बैठ गये। लोगों के हाव-भाव व बात-चीत से लगा

www.bhojpurisahityangan.com

कि लोग उनके प्रति बहुत आदर व सम्मान रखते हैं। मेरे मन में भी आदर का भाव जग गया। यह घटना है वर्ष २००७ के शुरुआत की।

कविश्रेष्ठ दीपक जी एक बार सिद्धार्थनगर में ही एक जगह कवि सम्मेलन में अपने साथ कवियों और एक कवियत्री के रूप में मुझे लेकर जा रहे थे। इन्जीनियर साहब के कार्यालय के सामने से गुजरना था। सब लोग चार पहिया सवारी में बैठे थे। समय था सायं पाँच बजे का। दीपक जी ने अचानक गाड़ी रुकवा दी और कहा-इन्जीनियर साहब अभी कार्यालय में होंगे, चलो मिलते चलें। आज तो शायद कार्यक्रम में न चल पावें। लेकिन अगिला जो कार्यक्रम होने वाला है, उसके लिए जानकारी देकर पहुँचने के लिए निवेदन कर लेंगें।

चहार दीवारी पर बना लगभग तीन-साढ़े तीन मीटर चौड़ा लोहे का फाटक खोल कर हम लोग अन्दर प्रवेश किये, फाटक से लगभग पचीस मीटर अन्दर कार्यालय का भवन था। पहुँच मार्ग पर ईंट का खड़न्जा लगा था परन्तु मार्ग के दोनों तरफ फूलों के पेड़ करीने से लगे थे जो भवन परिसर की शोभा बढ़ा रहे थे। भवन के सामने और भी कइ किसिम के पेड़ लगे थे। कुछ फलदार के साथ ही साथ अच्छा छाया देने वाले भी थे। भवन के दीवाल पर और आसपास बैनर पर स्वच्छ जल सेवन का महातम बतलाने वाले लेख लिखे हुए थे। कुछ लेख अच्छे बात-व्यवहार का महत्व उजागर कर रहे थे। कविवर दीपक जी की रचना की पंक्तियाँ देखकर मैं चौक गयी और बोल पड़ी-'अरे सर ! आप तो यहाँ पहले से ही मौजूद हैं।'

पंक्तियाँ थीं-

१- **प्यार से हर किसी से मिला कीजिए,**
जिन्दगी मुस्कुरा कर जिया कीजिए ।।

-'दीपक'

२- **हक़ न दे आप को किसकी जुर्रत मगर,**
फर्ज पहले तो अपना अता कीजिए ।।

-'दीपक'

हम लोग कार्यालय में पहुँचे। इन्जीनियर साहब के कक्ष में जाते ही वे अपने हाथ का कलम किनारे रख कर हम लोगों का हाल-चाल पूछने लगे। आव-१.गत हुआ। इन्जीनियर साहब तुरन्त साथ कार्यक्रम में चलने की असमर्थता जाहिर किये परन्तु कुर्सी छोड़ कर हम लोगों के साथ बाहर तक आये। उनके सहजता व शालीनता से कोइ भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

बस्ती से लखनऊ जाने वाला राजमार्ग पर बस्ती से पन्द्रह किलोमीटर पर स्थित एक इन्टर

www.bhojpurisahityangan.com

कालेज, एकमा के प्रबन्धक साहब विद्यालय के स्थापना दिवस पर कवि सम्मेलन कराना चाहते थे। आयोजन के लिए उन्होंने बस्ती के कवि जगमग जी को पकड़ा। जगमग जी उन्हें लेकर कविवर 'दीपक' जी के पास आये। बातचीत के बाद कवियों की टोली तय हो गयी। परन्तु आयोजन की अध्यक्षता के लिए नाम तय होने को आयी। लोग नाम सुझाते कि दीपक जी ने कह दिया 'जल निगम के इन्जीनियर राजेश्वर सिंह साहब एक साहित्य प्रेमी व्यक्ति है। सज्जन व नेक स्वभाव के हैं, उनसे चल के कहा जाय। हमें विश्वास है कि वे अपने व्यस्त समय में से उस दिन कार्यक्रम हेतु जरूर समय निकालेंगें।' लोग इन्जीनियर साहब के पास गये, थोड़ी ना-नुकुर के बाद सहमति दे दिये और नियत समय से कार्यक्रम पहुँच कर कार्यक्रम में पूरे समय रह कर लोगों को सम्मान दिए और लिए।

सिद्धार्थनगर में प्राय: हर साल कपिलवस्तु महोत्सव मनाया जाता है। जिलाधिकारी महोदय की अध्यक्षता में जिलास्तरीय हर विभाग के अधिकारिकयों और जिले के कुछ सभ्रान्त नागरिकों के साथ बैठक हुई। एक आयोजन समिति बनाकर कुछ लोगों को विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने एवं देखा-भाली की जिम्मेदारी सौंपी गयी। स्मारिका निकालने का भी योजना बनी जिस हेतु विभिन्न विषयों पर लेख मांगे गये। सबसे पहिले लेख पहुँचा इन्जीनियर साहब का जिसका शीर्षक था "शुद्धोदन का संताप"। जिलाधिकारी महोदय के सामने रखा गया, वे घर ले जाकर पढ़े। अगिली बैठक में लेख की प्रशंसा किये बिना नहीं रह पाये। उन्होंने कहा कि जल निगम के एक्सइन तो सचमुच के साहित्यकार लगते हैं। उन्होंने आयोजित होने वाला कवि सम्मेलन की जिम्मेदारी भी इन्हें ही सौंप दी जो कि एक सराहनीय कार्यक्रम के रूप में जाना गया। पूरे कार्यक्रम के समापन के बाद जिलाधिकारी महोदय ने महोत्सव के आयोजन समिति के तरफ के एक प्रशस्ति पत्र भी दिया था।

एक बार एक कविगोष्ठी हेतु कविगण इकट्ठा हुए। इन्जीनियर साहब भी समय से पहिले ही आ गये। आते ही वे हाथ जोड़ कर निवेदन करने लगे कि कार्यक्रम शीघ्र शुरु कर शीघ्र खतम हो जाता तो अच्छा रहना बर्ना मुझे बीच में ही उठ कर जाना पड़ेगा, कारण कि कल लखनऊ में जल निगम मुख्यालय पर साढ़े ग्यारह बजे से उच्चाधिकारियों के साथ एक बैठक है। हमें ग्यारह बजे तक वहाँ पहुँचना होगा। इसलिए कल भोर में जल्दिए लखनऊ के लिए निकलना होगा। लखनऊ जाने का रास्ता बस्ती होकर है। उनकी बातें सुनकर मुझे अगले दिन बस्ती होते हुए किसी रिश्तेदारी में जरूरी काम से जाना और वापस लौटना भी था। मेरा डेरा सिद्धार्थनगर से बस्ती जाने वाले मार्ग के किनारे इन्जीनियर साहब के आवास से लगभग तीन कि० मी० की दूरी पर था। मेरे दिमाग में झट से आया कि इनकी गाड़ी में जो जगह मिल जाती तो मैं भी बस्ती तक आसानी से निकल जाती और मेरा लौटना भी समय से हो जाता। मैने 'दीपक' जी

www.bhojpurisahityangan.com

से धीरे से कहा कि मुझे भी कल बस्ती होकर एक जगह जाना है और शाम तक लौटना भी है, क्या इन्जीनियर साहब के गाड़ी में मुझे बस्ती तक जाने को मिल सकती है। दीपक जी ने हाथ से इशारा कर खामोश रहने को कहा। मौका मिलते ही वे इन्जीनियर साहब से बोल पड़े- 'सर ! आप के गाड़ी में कितने लोग रहेंगे ?' उन्होंने कहा-'मैं और मेरा ड्राइवर, क्यों ?' दीपक जी ने कहा कि-दरअसल इस बिटिया को भी कल बस्ती से आगे कहीं जाना है, यदि आप के गाड़ी से बस्ती तक चली जाती तो इसका काम आसान हो जाता। उन्होंने कहा कि हम जल्दी निकलेंगे, यदि हमारे समय पर तैयार हो जाय तो साथ चल सकती हैं। मैं ठीक पाँच बजे घर छोड़ दूंगा। दीपक जी ने हमारे तरफ देख कर कहा क्यों तैयार हो जाओगी ? हमने कहा-जी सर।

सर जी घर से निकलते समय हमें फोन कर दें, मैं सड़क पर तैयार खड़ी मिलूँगी।

अगिले दिन मैं उनके साथ गाड़ी से बस्ती चल पड़ी। रास्ते में उन्होंने पूछा कि कहाँ जाना है। मैंने बताया कि बस्ती से आगे रोडवेज की बस से रिश्तेदार के घर २० कि०मी० दूर जाना है और दो तीन घण्टे रूक के लौट पड़ना है। उन्होंने ड्राइवर को आदेश दिया कि सीधे बस्ती रोडवेज बस स्टेशन चलो। हम एकदम चुपचाप रही क्योंकि हमारा काम आसान हो रहा था। यदि सीधे मुख्य मार्ग पर उतार कर सीधे लखनऊ चले जाते तो वहाँ से लगभग चार कि० मी० किसी अन्य साधन का सहारा लेना पड़ता।

इन्जीनियर साहब की कार सीधे रोडवेज स्टेशन पर रुकी। मैं उतरने को हुई तो उन्होंने कहा रुको, चाय पी कर जाओ। सामने चाय की दुकान थी। ड्राइवर से बोले-'जल्दी से चाय हमलोग को पिलवाओ और अपने भी पी लो, फिर निकलते हैं।' चाय की आखिरी चुस्की पूरा होते ही मैं गाड़ी से बाहर निकल कर उन्हें धन्यवाद दी व आभार व्यक्त किया। इन्जीनियर साहब के समयबद्धता, कर्तव्य के प्रति लगन व उदारता का मैं मन ही मन सराहना करती रही। उनके उस दिन के कृत्य व व्यवहार को मैं आज तक नहीं भूल पायी। ईश्वर उनका सदा मंगल करे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१२९

साथ गुजरे कुछ दिनों की दास्तान

-इं. एम.आइ. अन्सारी

बस्ती जिला को विभक्त कर तीन जिलों में बाँटने के शासन के निर्णय के अनुसार गोरखपुर जिला से सटे भाग को परमसंत कबीरदास जी के नाम से 'संत कबीरनगर' नाम का जिला बनाया गया। कबीरदास जी का निर्वाण स्थली मगहर इसी भाग में पड़ता है। कहा जाता है कि कबीरदास ने अपने जीवन का अधिकांश समय वाराणसी में गुजारने के बाद आखिरी दिन नजदीक आते देख वे मगहर चले आये थे। उन्होंने आखिरी साँस मगहर में ही ली थी।

नये जनपद संत कबीर नगर के घोषणा के बाद उसको अस्तित्व में लाने व क्षेत्रीय विकास को गति देने के लिए सरकार के सभी जिला स्तरीय कार्यालय खुलना शुरु हो गये और जिला स्तरीय अधिकारियों व उनके सहायकों की तैनाती भी प्रारम्भ हो गयी। जो भी छोटे-बड़े भवन मिल सके उसमें कार्यालय खोलकर अधिकारी व सहयोगी कर्मचारीगण बैठकर काम करने लगे। उ० प्र० जल निगम को भी अपने अधिशासी अभियन्ता के स्तर के अधिकारी को तैनात करने की आवश्यकता महसूस हुई। खण्ड कार्यालय को खोलने हेतु भवन की जरूरत पड़ी। जिला संत कबीरनगर का मुख्यालय खलीलाबाद नगर में रखा गया था। खलीलाबाद के औद्योगिक क्षेत्र में विभाग द्वारा जल परीक्षण हेतु एक तीन कमरे का भवन संयोगवश कुछ समय पहले बनकर खड़ा ता। भवन के आस-पास कुछ खाली जमीन भी थी जो चहारदीवारी से घिरी ती। भवन जिस भू-क्षेत्र में बना था नीची थी। चहार दीवारी से बाहर सटा हुआ गड़ही भी थी। आस पास का क्षेत्र नीचे होने से बारिस का पानी पहले गड़ही में इकट्ठा होता था, गड़ही भर जाने पर आस-पास के क्षेत्र में फैलता था। जल निकासी की कोई व्यवस्था थी नहीं। फिर तो अधिक बारिस होने पर बर्षात् का पानी भवन परिसर के कुछ भाग में भी भर जाता था और काफी दिनों तक भरा रहता था, जो धीरे-धीरे सूख जाता था। हाँ, पानी का आनन्द लेने कुछ भैंसें परिसर में घुस आती थीं। कभी-कभी तो सुअरों की टोली आकर उछल-कूद मचाते रहते थे। पशु-पालक अपने पशुओं को परिसर में छोड़कर निश्चिन्त घर जाकर अपने अन्य कार्य निपटाते रहते थे। इन जानवरों के कारण वातावरण अच्छा नहीं था। रोक-टोक करने पर भी जल-जमाव के दिनों में पशु आ ही जाते थे। स्थानीय लोग उदण्ड भी थे। झगड़ा करने पर अमादा हो जाते थे। स्थानीय जन-प्रतिनिधि उनके साथ खड़े हो जाते थे।

www.bhojpurisahityangan.com

वर्ष २००३ से ही मैं भी उस खण्ड कार्यालय में सहायक अभियन्ता के रूप में था। उस समय गाँव-गाँव में इण्डिया मार्क-२ हैण्डपम्प जलापूर्ति की समस्या से निपटाने हेतु बहुतायत में शासन द्वारा लगवाने की योजना चल पड़ी थी। फलत: निर्धारित मापदण्ड के अनुसार हैण्डपम्प का लगवाना जारी था। स्थानीय जन प्रतिनिधि व उनके अनुयायी अपने चहेतों के घर के सामने नियम विरुद्ध हैण्डपम्प लगवाने हेतु अनावश्यक आये दिन दबाव बनाने कार्यालय में आ जाया करते थे। परिणामस्वरूप कार्य की प्रगति में व्यवधान उत्पन्न होता था। वे लोग इसलिए भी दबाव बनाते थे कि निर्माण कार्य उनके द्वारा नामित आदमियों से ही कराया जाय।

अचानक एक दिन खण्ड कार्यालय में तैनात अधिशासी अभियन्ता का स्थानान्तरण हो गया, बस्ती नगर में तैनात अधिशासी अभियन्ता को कार्यभार सौंप कर कार्यमुक्त होने का आदेश हो गया। अधिशासी अभियन्ता कार्यभार हस्तान्तरित कर चले गये। बस्ती की दूरी खलीलाबाद से लगभग ३५ किलोमीटर है। वे रोज खलीलाबाद आ नहीं सकते थे। अत: हफ्ते में एक दिन कभी-कभार दो दिन का समय दे कर काम निपटाने लगे। पूरे समय के लिए अधिशासी अधिकारी की तैनाती होने पर तो कार्यों की प्रगति समुचित नहीं हो पाती थी फिर अल्पकालीन समय के अधिकारी के समय में कार्य का सम्पादन समुचित कैसे हो पावे। जिला स्तरीय बैठकों में मुझे ही भाग लेना पड़ता था। उन बैठकों में जल गिनम के कार्यों के धीमी प्रगति के बारे में टीका-टिप्पणी व असन्तोष के बौझार की पीड़ा हमें ही बर्दाश्त करनी पड़ती थी।

अचानक एक दिन कार्यालय में एक फील्ड कर्मचारी दौड़े-दौड़े मेरे पास आया और बोल पड़ा-'साहब ! लगता है आजमगढ़ वाले बड़े साहब स्थानान्तरित होकर इहवाँ आ गये हैं। बड़े बाबू चपरासी को बड़े साहब का कमरा खोलने हेतु बोले हैं और उनसे खड़े-खड़े बतिया रहे हैं। मुझे भी थोड़ा अचरज हुआ, फिर यह सोचकर कि कहीं आने वाले वहीं न हो। मैं उठकर अपने कमरे से बाहर निकला और उधर को चल दिया। सामने पहुँचते ही नमस्ते-बन्दगी हुई।' इसी बीच बड़े बाबू ने विभाग द्वारा निर्धारित चार्ज ग्रहण करने हेतु रूप पत्र की दस प्रतियाँ उनके समक्ष भरने व हस्ताक्षर करने हेतु रख दी। नये अधिशासी अभियन्ता इं. राजेश्वर सिंह चार्ज सर्टिफिकेट भरने में लग गये। मैं सोचने लगा कि विभाग के बड़े ही कर्मठ व योग्य अधिकारियों में इनकी गिनती होती है, क्या ये कुछ दिन यहाँ रहना पसन्त करें या शीघ्र चले जायेंगे। आजमगढ़ जैसा २२ ब्लाक वाला बड़ा जिला का भारी भरकम निर्माण कार्यों से आच्छादित निर्माण खण्ड का सुचारु रूप से काम दखने वाला व्यक्ति कहाँ सन्त कबीरनगर मात्र नौ ब्लाक का छोटा जिला का कार्य इन्हें देकर उच्चाधिकारी खामोस रहेंगें ?

इतना ही नहीं आजमगढ़ में अधिशासी अभियन्ता के जिम्मेदारी के साथ ही साथ अधीक्षण अभियन्ता के उत्तरदायित्व का भी इन्होंने एक साल तक बखूबी निर्वहन किया था। खैर, यहाँ रहें

www.bhojpurisahityangan.com

चाहे जितने दिन हमें तो आराम रहेगा, इनका संरक्षण मिलता रहेगा। जिला स्तरीय बैठकों से फुर्सत मिलेगी।

चार्ज सर्टिफिकेट भरने के बाद हस्ताक्षर व मुहर लगने के बाद तीन प्रतियाँ लिफाफा में रखवा कर इन्होंने हाथ में ली और कार्यालय में घूम कर एक नजर डाली, बाहर निकल कर अलग नये बने टिन सेड युक्त दो कमरों को जो सहायक अभिन्ताओं और जूनियर इन्जीनियरों के बैठने हेतु बना था देखा, परिसर की स्थिति देखी और यह कर कर कि कल दस बजे मिलेंगे, अधीक्षण अभियन्ता महोदय जो गोरखपुर में बैठते है, से मिलने चल दिये। अगिले दिन कार्यालय में आकर अधीक्षण अभियन्ता से मुलाकात की चर्चा की जो बड़ा ही हास्यास्पद व रोचक था उन्होंने बताया कि-'मैं यहाँ से उठा तो एस.ई. साहब के कार्यालय सीधे गया और उनके कक्ष के सामने खड़ा होकर अकनने लगा कि वे अकेले में हैं या कोई और कक्ष में बैठा है। साहब पर्दे के पीछे से मेरी झलक पा चुके थे।' चपरासी दूर था, इसलिए उससे जानकारी अन्दर की नहीं ले सकता था। साहब, कमरे के बाहर मेरी उपस्थिति से सोच में पड़ गये कि इनके सन्त कबीरनगर स्थानान्तरण कराने में मेरी भूमिका है, इसकी जानकारी मिली तो नहीं ? कहीं कुछ नाराजगी जाहिर करने और सन्त कबीर नगर जाने से मना करने नहीं न आ गये। अभी उहापोह में पड़े ही थे कि चपरासी आ गया और मेरी आने की सूचना दी। उन्होंने इशारा किया कि बुलावो। मैं अन्दर घुसते ही उन्हें नमस्कार करते ही बोला कि सर ! मैं सन्त कबीर नगर ज्वाइन कर आया। हाथ में लिया हस्ताक्षरित प्रमाण-पत्र सामने रख दिया। हमारी ज्वाइन कर आने की आवाज सुनते ही उनके चेहरे की रौनक बदल गयी। गुड, गुड कहते वे कुर्सी से उछल पड़े। उनकी खुशी का ठिकाना न था। जैसे मानों वे कोई अमूल्य चीज हासिल कर लिए हों। हमने इतना प्रसन्न होते कभी उन्हें देखा ही नहीं। चाय, नमकीन आदि का उन्होंने ताबड़-तोड़ आदेश दिया। हम लोग आमने-सामने बैठकर सेवन करते-करते इस खण्ड की तमाम समस्याओं की चर्चा की। अन्त में उन्होंने सन्तोष जताते हुए कहा कि आप वहाँ पहुँच गये, मैं आश्वस्त हो गया कि अब सब कुछ सम्भल जायेगा, ठीक हो जायेगा।

थोड़ी देर बाद बड़े साहब बोले कि कोई जे०ई० है, तो बुलवाइये। जे०ई० के आते ही उठ खड़ा हुए और हम लोगों के साथ कार्यालय के बाहर परिसर में निकल पड़े। बाहर एक जगह खड़ा हो कर बोले-'अन्सारी साहब, हम नौकरी करने वालों की जिन्दगी का मूल्यवान समय कार्यालय में गुजरता है। विभागीय कार्यों के पीछे सारी जवानी गुजार देते हैं। इसलिए कार्यालय के आस-पास का माहौल स्वच्छ व स्वास्थ्य के लिए हितकारी होना चाहिए। अच्छे वातावरण में काम करने से मन भी लगता है। परिसर में पानी, कीचड़ व गन्दगी नहीं होनी चाहिये। हमने सोचा है कि परिसर का भूतल नीचा है, यदि मिट्टी डाल दी जाय तो भू-तल ऊँचा हो जायेगा और पानी अपने आप परिसर से बाहर हो जायेगा। अच्छी मिट्टी मतलब बिना कंकड़-पत्थर के डालने से

www.bhojpurisahityangan.com

फूल-पत्ती, पेड़-पौधे लगवाकर परिसर को सुन्दर बनाया जा सकता है।' कार्यालय भवन का थोड़ा बहुत मरम्मत कर रंगाई-पुताई भी करा दी जाय जिससे माहौल स्वस्थ हो सके। हमने हामी भरी और कहा-'अच्छा रहेगा साहब।'

जे०ई० तपाक से बोल पड़ा कि भुगतान कैसे होगा ? साहब ने कहा कि-'भुगतान की जिम्मेदारी हमारी होगी, आपलोग काम करवाइये।' आश्वस्त होकर हम लोग काम पर जुट गये। बीस-बाइस दिन बाद कार्यालय की छबि बदल गयी। रंगाई-पुताई के बाद बाहरी दीवालों पर स्वच्छ पेय जल का महातम बताने वाला स्लोगन, कुछ रेखाचित्र, कुछ विचारणीय व ज्ञानवर्धक दोहे लिखवा दिये गये। परिसर में फूल के पौधे व अशोक वृक्ष के पौधे लगा दिये गये। चहार दीवारी के मुख्य गेट के बगल में एक मीटर चौड़ा वीकेट गेट बनवा दिया गया। मुख्य गेट पर ताला पड़ गया। विभागीय अधिकारियों के आने पर ही ताला खुलने का निर्देश दे दिया गया।

एक माह के बाद जो कोई उधर से गुजरता भवन पर नजर डाल कर एक बार सोचने लगता कि कौन सा नया कार्यालय खुल गया। फिर आँखें कार्यालय के साइन बोर्ड पर गड़ा और ध्यान से पढ़कर आश्वस्त होता कि जल निगम का वही वाला कार्यालय है, नये कलेवर में।

लगभग डेढ़ माह बाद क्षेत्रीय माननीय सांसद श्री भालचन्द्र यादव अपने कुछ अनुनाइयों के साथ कार्यालय के सामने से गुजर रहे थे। दूर से ही उन्होंने भवन के तरफ नजर किया। कुछ बदला स्वरूप देख कर अपने संगी-साथियों से पूछ पड़े-'क्यौं भाई ! यहाँ कोई नया अधिकारी आ गया है क्या ?' किसी ने जवाब दिया-'जी, कोई सिंह साहब आये हैं।' उन्होंने उससे कहा कि-'उनसे कह देना कि हमारे घर, भगता में आकर मिलें।' उनके साथी ने यह सूचना उसी दिन पहुँचा दी।

साहब को क्षेत्रीय माननीयों से मुलाकात कर अपना परिचय बढ़ाने का काम करना ही था। सूचना मिलते ही अगले रविवार को हम और साहब ग्राम-भगता उनके घर पहुँचे। बाहर खड़े व्यक्ति के माध्यम से मिलने हेतु सूचना उन तक पहुँचाई गयी। वे मकान के प्रथम तल पर एक बड़े कमरे में कुछ क्षेत्रीय जन के साथ बात-चीत कर रहे थे। सूचना मिलते ही एक कुर्सी खाली कर सूचना देने वाले को बुला लाने का आदेश दिये। सन्देश वाहक साहब को संग लेकर उन तक पहुँचाया। नजर पड़ते ही उन्होंने कुर्सी के तरफ इशारा कर कहा-'आइए, एक्स.ई.एन. साहब बैठिये।' साहब नमस्कार करते हुए बैठ गये। सांसद महोदय ने उनसे पूछा कि 'आप कहाँ के रहने वाले हैं ?' उन्होंने जवाब दिया-'गोरखपुर जनपद के गोला के पास गाँव गोपालपुर के।' क्षेत्रीय जन जो बैठे थे उपरोक्त संवाद सुन रहे थे। एक वृद्ध व्यक्ति ने जैसे गाँव गोपालपुर का नाम सुने, वो बोल पड़े-'कौन गोपालपुर ? रियासती गोपालपुर ?' साहब ने कहा-'हाँ, वही गोपालपुर।' उस बूढ़े व्यक्ति ने अगिला सवाल किया-'क्या आप बदल दूबे को जानते हैं ?' साहब ने कहा-'अच्छी

www.bhojpurisahityangan.com

तरह जानते हैं ? पहले उनके लड़के घनश्याम दूबे, ग्राम-प्रधान थे, इस समय उनकी बहू यानी घनश्याम दूबे की पत्नी ग्राम प्रधान हैं।' उस व्यक्ति का ननिहाल बदल दूबे जी के परिवार में था और उसका बचपन के अधिकांश दिन गाँव गोपालपुर में गुजरा था। वह जमाना था रियासती का। वह आदमी सबके सामने रियासत की बखान करना शुरू किया-'अरे साहब ! गोपालपुर रिसायत के क्या कहने। लगभग पाँच-सात मिनट तक लगातार गुनगान करता रहा।' सांसद महोदय भी ध्यान से सुनते रहे। प्रभावित हुए बिना ना रह सके। उन्हें लगा कि एक्स.ई.एन. साहब एक खानदानी बड़े आदमी हैं, लोभी तो नहीं होंगे। कार्यालय का बदला रंग-रूप से पहले ही प्रभावित हो चुके थे। कर्मठ व परिश्रमी होने का भाव पैदा हो चुका था। नाश्ता-पानी के बाद वो उठ कर गाड़ी तक छोड़ने भी आये।

कहावत है कि-'अल्ला मेहरबान तो गदहा भी पहलवान।' साहब ईश्वर में आस्था रखने वाले एक फकीर मिजाज कर्मठ इन्सान ठहरे। सांसद जी सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों पर अनावश्यक दबाव बना कर अपने मन की कराने के लिए चर्चित थे। दबाव बनाने के लिए कभी-कभी उनकी जुबान फिसल भी जाती थी और बद्‌जुबानी मुँह से निकल जाती थी। परन्तु, ईश्वर ने साहब का मान बढ़ाने के लिए पहिले से ही एक बुर्जुग पंडित जी को वहाँ बैठा दिया था। जिसके जुबान से निकले शब्द माननीय के मस्तिष्क में अच्छे भाव भर दिये और विभाग के कार्य के बारे में कभी भी किसी प्रकार की उन्होंने दखलन्दाजी नहीं की बल्कि एक वाकया आया कि उनके मन के अच्छे भाव स्वत: जाहिर हुए।

सांसद जी को किसी से जानकारी मिली कि पुराने मन्दिर, मस्जिद, मजार आदि सार्वजनिक स्थलों के जीर्णोद्धार व स्थल विकास कार्य के लिए शासन पर्यटन विभाग के जरिये धन देता है, जिससे जरूरी काम होता है और स्थल विकास हो जाता है। सांसाद जी एक दिन संत कबीर नगर के जिलाधिकारी के पास जा पहुँचे और कहने लगे-'डी०एम० साहब, हमारे गाँव भगता में एक छोटे तालाब के किनारे बागीचा में एक मन्दिर है, जहाँ शिव जी स्थापित हैं, हर सोमवार को क्षेत्रीय जन जल चढ़ाने व पूजा-पाठ हेतु आते रहते हैं। सावन के महीने में तो महीना भर मेला जैसा वातावरण रहता है। हमको एक इस्टीमेट बनवा कर दीजिए जिससे शासन से पैरवी कर धन अवमुक्त कराया जा सके। इस्टीमेट मुझे एक सप्ताह में चाहिए।' जिलाधिकारी महोदय ने तुरन्त घण्टी बजा कर स्टेनो को बुलवाया और आदेश दिया कि ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग के अधिशासी अभियन्ता को तुरन्त बुलवायें। यह आदेश सांसद जी के सामने ही दिया जा रहा था। सांसद जी सुने। उन्होंने इस्टीमेट बनाने हेतु ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग का नाम सुनते ही बिफर पड़े और डी०एम० साहब की ओर मुखातिब हो कर कहने लगे-'डी०एम० साहब, आप अपने जिले के अधिकारियों को ठीक से जानते नहीं हैं क्या ? ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग से तो एक सप्ताह में क्या छ: महीना में भी इस्टीमेट नहीं मिल पायेगा और मैं आपके पास योंही

www.bhojpurisahityangan.com

परेड करता रहूँगा। एक हफ्ता में बनवाना है तो आप एक्स. ई. एन. जल निगम को बुलवाइये और उनसे कहिये। निश्चय ही वे बना कर दे देंगे। डी० एम० साहब जानते थे कि जल निगम विभाग तो पेय जल, सीवर व ड्रेनेज का काम करता है, वे लोग कैसे यह काम कर पायेंगे। फिलहाल सांसद जी के सामने खामोश रहे।'

सांसद महोदय अपनी बात कह कर चलते बने। डी० एम० साहब कुछ सोच कर डिप्टी डायरेक्टर पर्यटन जिनका कार्यालय गोरखपुर में था उनको दूरभाष से सम्पर्क कर बात किये और सांसद जी के मंशा को बताया। डिप्टी डायरेक्टर महोदय ने पूछा कि जल निगम का अधिशासी अभियन्ता वहाँ कौन है ? डी० एम० साहब ने बताया कि-इं. राजेश्वर सिंह हैं। डिप्टी डायरेक्टर ने कहा कि-'अरे साहब ! तब तो काम बन सकता है। मैं उनको जानता हूँ, वे कुछ साल पहिले जल निगम के सी० एण्ड डी०एस० विंग में काम करते थे, उस समय वे हमारे साथ स्थल विकास के कइ काम कराये थे। उनसे कहिये कि वे हमसे सम्पर्क करें।'

जिलाधिकारी के कैम्प कार्यालय से सूचना आयी कि अधिशासी अभियन्ता तुरन्त आकर साहब से मिलें। डी०एम० साहब से मिलने हमारे साहब गये। उन्होंने पूरी बात बता कर डिप्टी डायरेक्टर पर्यटन विभाग से गोरखपुर में सम्पर्क कर इस्टीमेट समयान्तर्गत बनाने को कहा।

साहब डिप्टी डायरेक्टर से मिलने गोरखपुर चल दिये और बात चीत कर आये। अगले दिन हमें और एक जे०ई० को साथ लेकर भगता स्थल पर निरीक्षण एवं आवश्यक माप-जोख कर इस्टीमेट बनवाने में जुट गये। समयान्तर्गत इस्टीमेट (लगभग १.६० करोड़) का बनाकर डिप्टी डायरेक्टर से प्रति हस्ताक्षरित कराकर डी० एम० साहब के सामने प्रस्तुत कर दिया गया। डी० एम० साहब प्रसन्न हुए क्योंकि वे सांसद महोदय के तेवर को भली-भाँति जानते थे। इस्टीमेट तैयार हो जाने की सूचना दूरभाष से सांसद जी को दिलवाये।

इस घटना से माननीय सांसद जी के मन में विभाग और विभागीय अधिकारियों के मेहनत व लगन के प्रति जो अच्छे भाव उत्पन्न हुए अपने आप उजागर हो गये। जिलाधिकारी के मन में भी विभाग की छबि निखरी।

अधिशासी अभियन्ता राजेश्वर सिंह साहब के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर हमारे साथ काम कर रहे जूनियर इन्जीनियर उदय प्रताप सिंह के जीवन में जो आश्चर्यजनक बदलाव आया उसकी चर्चा किये बिना नहीं रहा जा सकता। अधिशासी अभियन्ता महोदय के कार्यभार ग्रहण करते ही कार्यालय में अनुपस्थित कर्मचारियों के हितैषियों ने दूरभाष से जैसे-तैसे सूचना नये साहब के आने की दे दी। उदय प्रताप सिंह भी अपने घर देवरिया गये थे। अगले दिन खलीलाबाद आ गये। उन्हें रोज शराब पीने की आदत बन गयी थी। शराब पीकर कार्यालय आये। अधिशासी अभियन्ता महोदय को अकेले बैठे होने का इन्तजार करने लगे। जैसे ही अकेले देखे उनके कक्ष में नशे की हालत में हिलते-डुलते घुसे और घुसते ही बोल पड़े-'मैं यू० पी० सिंह, आपके कार्यालय

www.bhojpurisahityangan.com

का जे०ई० हूँ, आपको नमस्कार करता हूँ।' साहब उनके नमस्कार का जवाब देते हुए बोले-'लगता है, आप नशे की हालत में हैं। कल बिना नशा किये आइए तो बात करेंगे।' यू० पी० सिंह तपाक से बोल पड़े कि ठाकुर कैसा जो नशा न करे और गोश्त न खाये। यही तो ठाकुरों की पहचान है ? यह कहते हुए वे कक्ष से बाहर निकल गये।

अगले दिन यू०पी० सिंह सही-सलामत फिर साहब को अकेला देख कमरे में प्रवेश किये। नमस्कार कर चुप-चाप खड़े हो गये। पल भर की चुप्पी के बाद कहने लगे-'साहब, हमारे ए०ई० साहब हमारे साथ भेद-भाव करते हं। दूसरे जे०ई० को काम देते हैं, हमें नहीं देते हैं। मैं खाली बैठा हूँ, बोर होता रहता हूँ। पिछले दिन की मुलाकात की घटना साहब मुझसे बताकर उनके बारे में जानकारी पा चुके थे।' वे हमारे साथ ही सम्बद्ध थे, मै बता चुका था कि उन्हें पहले काम दिया था परन्तु पीने-खाने व नशा की हालात में बराबर बने रहने से ऊल-जलूल की बातें करते हैं और गैर जिम्मेदाराना हरकतें करते हैं। बात मानते नहीं। इसलिए काम देना बन्द करना पड़ा।

यू०पी० सिंह की बातें सुनने के बाद साहब ने कहा-'मिस्टर यू०पी० सिंह ! आप को काम उनके दिलवाने की जिम्मेदारी हमारी होगी। लेकिन आपको हमारी एक बात माननी होगी।' उन्होंने कहा-'क्या साहब ?'

साहब बोले-आप को आज से नशा करना छोड़नी होगी। क्षत्रिय कुल में पैदा हुए हैं, तो आप क्षत्रिय ही रहेंगे चाहे आप गोश्त खायें या न खायें और शराब पीये या न पीयें।

यू०पी० सिंह ने कसम खाया और उसी दिन से शराब पीना छोड़ दिया। फिर क्या था उनके जैसा जिम्मेदारी निभाने वाला कोई नहीं रहा। कार्यालय हो या फील्ड कार्य हर जगह पर्याप्त समय देना और हर काम में बढ़-चढ़ कर हाथ बटाना उनकी नियती बन गयी। सब लोग उनके कार्य व व्यवहार की तारीफ करने लगे। जो कोइ उनके अन्दर आये बदलाव के बारे में सुनता आश्चर्य करने लगता। लोग कह पड़ते कि अधिशासी अभियन्ता महोदय ने न जाने उन पर कौन सा जादू कर दिया, वे तो पूरे बदल गये हैं। जब तक साहब सन्त कबीरनगर में तैनात रहे यू०पी० सिंह ने शराब छूआ तक नहीं।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह साहब लगभग दो वर्ष संत कबीरनगर में सेवारत रहे। इस काल में वहाँ के कार्यालय का माहौल व जिला स्तरीय अधिकारियों से तालमेल इतना इच्छा कर गये कि उनके बाद भी काम करने में सुगमता बनी रही। उनके समय के कर्मचारी आज भी जब कभी आपस में मिलते हैं तो उनके नेक नियती और कर्मठता की चर्चा किये बिना नहीं रहते।

ईश्वर उनको स्वस्थ एवं सानन्द रखें यही हमारी कामना व प्रार्थना है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१३०

सरलता, सहजता क प्रतीक राजेश्वर जी

डॉ० गंगेश्वर प्रसाद द्विवेदी

अति पावनी सरयू नदी जिसके तट पर भगवान श्रीराम की जन्म स्थली तीर्थ शिरोमणि अयोध्यानगरी बसी है, से लगभग दो कि०मी० की दूरी पर स्थित उत्तर दिशा में अयोध्या को जनकपुर से जोड़ने वाला श्रीराम-जानकी मार्ग पर बसा रियासती गाँव गोपालपुर है। यह गाँव गोपालपुर, जनपद-गोरखपुर के तहसील मुख्यालय गोला से लगभग चार कि०मी० की दूरी पर पश्चिम दिशा में है। गाँव से सटी हुइ आबादी ग्राम देवकली की है। सुदूर के लोग इस गाँव को भी गोपालपुर के रूप में ही जानते और पुकारते रहे हैं। वर्तमान में ये दोनों गाँव नगर पंचायत क्षेत्र गोला से जुड़ गये हैं। नगर पंचायत क्षेत्र गोला ने अब इन दोनों गाँव को मिलाकर विभिन्न वार्ड में सीमांकन अपनी सुविधा के लिए कर दिया है। राजेश्वर जी और मेरे मकान के बीच में लगभग आठ सौ मीटर लम्बा बाजार है, जहाँ पर दैनिक आवश्यकता की हर जरूरी सामान मिल जाता है।

राजेश्वर जी और मेरा दोनों परिवार गाँव का मध्यमवर्गीय प्रतिष्ठित परिवार रहा है। मेरे पिताजी जूनियर हाईस्कूल के अध्यापक थे। विद्यालय गाँव से दस कि०मी० की दूरी पर था, फलत: साइकिल से जाने-आने में दो घण्टा का अतिरिक्त समय लगना स्वाभाविक था। पिताजी पढ़ाई शुरू होने से आधा घण्टा पहिले पहुँचने के लिए हमेशा जोर देते थे। फलत: सबेरे के समय हड़कम्प मचाये रहते थे।

उसी स्कूल में मेरा भी नाम लिखा दिये थे, फलत: साथ में हमें भी जाना-आना पड़ता ता। खेलने, कूदने, मटरगस्ती का समय बहुत कम मिलता था। उनकी नजर के सामने बराबर रहने से हर वक्त टोका-टोकी का सामना करना पड़ता था। हाँ, उसका फायदा जीवन में आगे चलकर भरपूर मिला। किशोरावस्था में कुसंगत से बच गया और अच्छी आदतें जीवन को संवारने में सहायक बनीं। राजेश्वर जी के पिता बाबू समर बहादुर सिंह की दिनचर्या भी बहुत संयमित थी। भोर में पाँच बजे बिस्तर छोड़ कर डेढ़ कि०मी० दूर अपनी छावनी जहाँ खेती-बारी थी और बैल, भैंस आदि पशु रहते थे, वहाँ पहुँच जाना। वहाँ पर हलवाहों को खेती के बारे में आवश्यक

www.bhojpurisahityangan.com

निर्देश देकर दूध लेकर आठ-साढ़े आठ बजे तक घर लौट जाना। फिर तीन-चार बजे दोपहर बाद छावनी पर जाना और संझा होते-होते घर लौट आना। उनकी इस दिनचर्या से राजेश्वर बाबू को भी इधर-उधर अनावश्यक घूमना और मटरगस्ती करने को नहीं मिलता था। वे भी कुसंगत से बच गये। गाँव के सयाने लोगों से हम दोनों यानी राजेश्वर जी और मेरे बारे में अच्छे संस्कारित बच्चा होने की चर्चा सुनकर दोनों के पिता खुश होते और सन्तोष जाहिर करते।

क्षेत्रीय गोला बाजार के विद्यालय में हाई स्कूल के बाद विज्ञान की पढ़ाई सुलभ न हो पाने के कारण गाँव छोड़ना आवश्यक हो गया। आगे की पढ़ाई जारी करने के लिए दूर शहरी क्षेत्र में जाना पड़ा। राजेश्वर जी इन्जीनियरिंग के पढ़ाई के लिए मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज, गोरखपुर गये। मैं भी एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई करने दूर निकल गया। फिर क्या था, भौगोलिक दूरियाँ और उच्च शिक्षा की व्यस्तता के कारण हम लोगों की मुकालात दूभर हो गयी। पढ़ाई के तुरन्त बाद ही दोनों को नौकरी भी मिल गयी। राजेश्वर जी तो नौकरी के समय गोरखपुर के आस-पास के जिलों में तैनाती पाते रहे तो उनका कभी-कभार गाँव आना-जाना लगा रहा। वे गाँव के लोगों के सम्पर्क में बने रहे। गाँव में एक बड़ा व सुन्दर मकान बनवा लिए। गाँव वालों के शादी-व्याह, सुख-दुख में हाथ बँटाते रहे और प्रतिष्ठा अर्जन करते रहे। गाँव के सामाजिक काम-काज में भी खुलकर सहभागिता करना उनकी नियती बन गयी।

नौकरी से सेवा निवृत्त होने के बाद लगभग पाँच वर्ष पूर्व में गाँव आया तो अपने पड़ोसियों के गाँव के लोगों की हाल-चाल पूछने लगा। उसी के दर्म्यान मालूम हुआ कि राजेश्वर जी तो गाँव आते रहते हैं, उन्होंने अभि हाल ही में भागवत कथा का आयोजन करवाया था। कथा बहुत ही सुन्दर ढंग से हुआ। काफी लोग सुनने आते थे। आज-कल गाँव में ही हैं। गाँव में उपस्थिति की जानकारी मिलते ही मिलने की उत्कट इच्छा हो चली। मैं तुरन्त मिलने चल दिया। रास्ते में सोच रहा था कि चार-पाँच दशक के बाद आज मिलूँगा, वे पहचानेगे कि नहीं ? शरीर की बनावट व रंग-रूप में समय के साथ परिवर्तन कहीं आड़े नहीं न आयेगी। कुछ सोच-विचार करते उनके मकान के नजदीक पहुँचा तो उस जगह को खाली मैदान रूप में पाया। मैं स्तब्ध हो गया, फिर नया मकान कहाँ होगा ? पास के बढ़ई के मकान वालों से पूछा कि राजेश्वर बाबू का मकान कहाँ ? वह सड़क के दूसरी तरफ एक बड़े सुन्दर मकान के तरफ इशारा कर कहा-'वही तो है।' मैं मकान के तरफ बढ़ चला। बरामदा में एक व्यक्ति कुर्सी पर बैठा था, कुछ कुर्सियाँ सामने रखी हुई थीं। मकान के चहारदीवारी पर लगे गेट के समीप जैसे ही पहुँचा। उस आदमी का सर जो पहले झुका था उठा और मेरे तरफ देखने लगा। उसके देखने के अन्दाज से लगा कि मुझे पहचानने की कोशिस कर रहा है। मैं गेट खोलकर अन्दर प्रवेश किया और समीप पहुँचते-पहुँचते बोल पड़ा-अरे आपने मुझे पहचाना ? वे कुर्सी से उठते हुए हाथ जोड़ते हुए बोल पड़े-'दूबे

www.bhojpurisahityangan.com

जी ! डाक्टर साहब ! यह कहते हुए उनका चेहरा चमक उठा। वे भली-भाँति पहचान चुके थे। हमको कुर्सी के तरफ इशारा करते हुए बैठिए, बैठिए बोलने लगे।' मेरे कुर्सी पर बैठने के बाद वे भी बैठे। फिर सत्कार और हाल-चाल का सिलसिला चल पड़ा। कई दशकों से विछुड़े दो मित्र की गुजरे समय की दास्तान की बात घण्टों चलती रही। मुझसे लगभग छः वर्ष पहले ही वे विभागीय सेवा से निवृत्त हो चुके थे। गाँव में अक्सर आना-जाना उनका बना रहता था। अधिकतर गोरखपुर में रहते हैं। इतने लम्बे अन्तराल के बाद मैने उनके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं पाया। वही सौम्य एवं शील से परिपूर्ण स्वभाव। इनके पिताजी की याद आ गयी जो सरल, सहज, मृदुभाषी एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति थे।

बातों-बातों में राजेश्वर जी अपने द्वारा किये गये साहित्यिक कृत्यों की चर्चा शुरु कर दिये और उठ कर अपने मकान के बैठक कक्ष जो एक बड़ा कमरा है में ले गये। दीवाल पर बने शीशायुक्त एक शो-केश दिखाकर बताने लगे कि इसमें प्रदर्शित सभी किताबें जो डेढ़ दर्जन हैं, उनके द्वारा लिखी गई हैं। मेरी आँखें चौड़ी होकर निहारने लगीं। आठ किताब हिन्दी और ग्यारह किताब भोजपुरी की लगी हुई थी। उन्होंने बताया कि इनके अलावा एक किताब छपने हेतु प्रेस में है और एक लिख रहा हूँ। मैं इनके कारनामें से चकित हो गया। बैठकर बातों का सिलसिला आगे बढ़ा। मैने उनसे कहा कि इधर काफी दिनों से मेरी पत्नी भागवत् कथा सुनने की इच्छा व्यक्त कर रही हैं। लेकिन हम लोग गाँव से काफी दिनों से दूर रहने के कारण यहाँ कैसे व्यवस्था होगा। चिन्ता में पड़ टाल जाते हैं। राजेश्वर जी ने तपाक से कहा कि यहाँ गाँव में बहुत आसान है, आवश्यकता की हर चीज सुलभ है, बस आपको कथा वाचक तय कर समय तय करनी है। मैने कहा-'मैं किसी कथा-वाचक को जानता नहीं हूँ।' उन्होंने कहा-'हमारे यहाँ गोरखपुर के निकट भटहट के रहने वाला आचार्य अयोध्या प्रसाद पाण्डेय जी कथा बाचने आये थे। इनके पास पूरी टीम है। इनका दक्षिणा भी जियादा नहीं है। विशेषता यह है कि कथा का व्याख्या भोजपुरी भाषा में करते हैं, जिससे ग्रामीण श्रोताओं को सहज ही सब समझ में आ जाता है और खूब आनन्दित होते हैं जब कहें आप से बात करवा दी जायेगी। हमारे छोटे पुत्र प्रवीण सिंह (मोनू) उनका घर जानते हैं; उनके घर भी पहुँचा सकते हैं। गाँव में कई टेन्ट हाउस वाले हैं। खाना बनाने वाले कई लोग हैं, जो अपने साथ जरूरत के लोगों को ले जाकर खाना बना देते हैं। आप के मकान और मेरे मकान के बीच जो बाजार है, हर सामान मिल जाने वाला है। काहें कि चिन्ता। सब हो जायेगा। बस मन बना लीजिए। मुझे जो कार्य पहाड़ जैसा बड़ा लग रहा था उसे राजेश्वर जी ने बहुत ही आसान बना दिया।'

भागवत् कथा का दिन तय हो गया, सारी तैयारियाँ कर ली गयी, कथा-वाचक महोदय अपनी टोली संग पधार गये। परन्तु अचानक कथा-प्रारम्भ होने के एक दिन पूर्व मेरी तबियत बहुत

www.bhojpurisahityangan.com

जियादा खराब हो गयी। मुझे गाँव से शहर की तरफ इलाज के लिए भागना पड़ा। सब व्यवस्था जहाँ की तहाँ स्थिर हो गयी। कथा वाचक महोदय स्थिति को देख लौट पड़े। कथा प्रारम्भ न हो सकी।

मन कथा को सुनने की लालसा को देख भगवान की कृपा हुई और कुछ माह बाद पुन: आयोजन हुआ। दूसरे कथा-वाचक बुलाये गये और कथा विधिवत् सम्पन्न हुआ। राजेश्वर जी भी कथा सुनने एक दिन गोरखपुर से गाँव आये।

राजेश्वर सिंह जी कुशाग्र बुद्धि के प्रतिभावान व्यक्ति हैं। इनका साहित्य में अभिरुचि विशेष कर भोजपुरी भाषा साहित्य में होना एक सुखद समाचार है। इनकी आध्यात्मिक पुस्तकों का लेखन भोजपुरी भाषी लोगों के लिए गौरव की बात है। अपने बीच का व्यक्ति भोजपुरी साहित्य के भण्डार को भरने में जुटा है, यह खास बात है। ईश्वर इनके जीवन को स्वस्थ और दीर्घायु बनाये यही मेरी प्रार्थना है ताकि इनकी लेखनी निरन्तर चलती रहे और इनकी श्रुति व कीर्ति उत्तरोत्तर बढ़ती रहे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१३१

माटी के लाल : इं. राजेश्वर सिंह

-जयनाथ यादव

बाबा गुरु गोरखनाथ की पावन धरती गोरखपुर जिला मुख्यालय से लगभग ५५ किमी० की दूरी पर बड़हलगंज से अयोध्या जाने वाली राम-जानकी पथ पर बसे गोला नगर पंचायत से सटे गोपालपुर गांव में एक सभ्रान्त एवं भगवत प्रेमी सामान्य परिवार के सज्जन पुरुष स्व० समर बहादुर सिंह जी का जन्म हुआ था। इनके रग-रग में धर्मपरायणता और लोगों के प्रति उदारता का भाव झलकता था। अच्छे कद-काठी के मालिक स्व० समर बहादुर सिंह जी को क्षेत्र के लोग बबुआजी के नाम से अधिक जानते थे। सज्जनता, उदारता अउर नेक नियति के कारण क्षेत्र के लोगों से मान-सम्मान ताउम्र मिलता रहा है। इनका विवाह धर्मनिष्ठ एवं परम सुशीला स्व० परमज्योता जी से हुआ था। जिनके परमतेजस्वी पुत्र राजेश्वर सिंह जी का जन्म ४ अप्रैल सन् १९५० को हुआ। समय के साथ इन्होंने अपनी शैशवावस्था को पार करते हुए ग्राम गोपालपुर के प्राइमरी पाठशाला से शिक्षा ग्रहण करते हुए अपनी शैक्षणिक मंजिल को मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज (जो अब मदन मोहन मालवीय प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय है), गोरखपुर से वर्ष १९७३ में प्राप्त किया।

इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी (भाई साहब) ने सिविल इन्जीनियरिंग की डिग्री लेने के बाद मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज जहाँ से अध्ययन किया था, में अध्यापन कार्य लगभग दो माह करने के बाद ही उत्तर प्रदेश सरकार की स्वायत्त शासन अभियन्त्रण विभाग में सहायक अभियन्ता के पद पर नौकरी कर ली थी। यही विभाग अक्टूबर १९७६ में "उ०प्र० जल निगम" में परिवर्तित हो गया तथा समस्त कर्मचारी व अधिकारी इस उ० प्र० जल निगम के हो गये। इंजीनियर राजेश्वर सिंह तब से लगातार इसी विभाग के जरिये समाज की सेवा करते रहे हैं। अन्ततः अधीक्षण अभियंता के रूप में उत्कृष्ट सेवा प्रदान करते हुए अप्रैल २०१० में सेवानिवृत्त हो गए।

अध्ययन काल के इन २३ वर्षों में राजेश्वर सिंह जी ने खेल-कूद, वाद-विवाद प्रतियोगिता के क्षेत्र में अपना योगदान देते हुए हमेशा अव्वल दर्जे के शालीन व श्रेष्ठ बालक के रूप में जाने जाते रहे हैं। मृदुल स्वभाव के होने के कारण अपने साथियों में अत्यधिक लोकप्रिय रहे हैं। मैं भी गोपालपुर गाँव के दक्षिण दिशा में मां सरयू के किनारे स्थित गाँव रकौली का निवासी होने के कारण भाई साहब का सान्निध्य बचपन से ही मिलता रहा है और आज भी आप मुझे छोटे भाई जैसा ही प्यार देते आ रहे हैं। गोरखपुर की मिट्टी में पले बढ़े भाई साहब ने गँवई संस्कृति में रहते हुए अभियान्त्रिकी क्षेत्र की सेवा करते हुए आज

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी व भोजपुरी भाषा में लेखन का कार्य करते हुए इन्होंने आसमान की बुलंदियों को छू लिया है। मेरे मन में इनके लिये एक ही शब्द निकलता है "माटी के लाल"।

सरकारी सेवा की जिम्मेदारी व अन्य व्यस्तताओं के बावजूद भोजपुरी भाषा के उत्थान के लिए साहित्य लेखन, महत्वपूर्ण एतिहासिक धार्मिक ग्रन्थों का भोजपुरी भाषा में अनुवाद एक क्रान्तिकारी प्रयास है, इसी सन्दर्भ में भाई साहब से एक बार चर्चा हुई तो इन्होंने बताया कि–

होली, दशहरा, दीवाली एवं ग्रीष्म ऋतु में विद्यालयों में अवकाश होने पर परिवार के बाहर रहने वाले सदस्य भी गाँव आकर छुट्टियाँ मनाते थे। मेरे भी बच्चे इन अवकाशों में गाँव आ जाया करते थे। नौकरी के सिलसिले में मेरी बहराइच जिला में तैनाती थी। हमारा विभाग पेयजल आपूर्ति के कार्य से जुड़ा हुआ होने के कारण प्राय: ग्रीष्म-ऋतु में छुट्टी नहीं मिल पाती थी। मुझे अपनी ड्यूटी पर अकेले ही रहना पड़ता था। वर्ष १९८० से १९८८ के मध्य जनपद बहराइच में मैं तैनात था। विद्यालयों के ग्रीष्मावकाश तथा दशहरा से दीपावली तक के अवकाश-काल में बच्चों के गाँव चले जाने के कारण, मुझे अकेले ही रहना पड़ता था। विभागीय कार्यों में पूर्व एवं बाद के समय में घर में अकेले रहने के कारण उपन्यास एवं कहानियाँ पढ़कर समय व्यतीत करता था। पुस्तकों के पठन-काल में ही मेरे मन में एक दिन प्रश्न उठा, क्या मैं ऐसी कहानियाँ नहीं लिख सकता ?"

विद्यार्थी जीवन में हिन्दी विषय की परीक्षाओं में सबसे कम प्राप्तांक पाना सोचकर मन में लेखन-क्षमता के प्रति शंका होती थी फिर सोचा कि कौन अपने लेख को किसी को दिखाना है, चलो ! कुछ लिखने का प्रयास किया जाय। फिर मैंने अपने पड़ोसी गाँव के दो-एक लोगों के जीवन की कुछ खास जिज्ञासा भरी घटनाएँ सुनी थी। मैंने अपनी टूटी-फूटी भाषा में उन्हें लिखना प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे तीन-चार छोटी-बड़ी कहानियाँ लिख डाली। परन्तु इन्हें किसी को दिखाया नहीं। कभी-कभी 'स्वान्त: सुखाय' उन्हें पढ़ लिया करता था। स्थानान्तरण के समय वह बण्डलों के बीच कहीं बधँ कर रख गयी। सरकारी नौकरी में प्रत्येक स्थानान्तरण के बाद कागजात का एक बण्डल और जुड़ना स्वाभाविक होता है। अत: लिखी हुई सामग्री बण्डल स्मरण से ओझल हो गयी। सत्तरह-अट्ठारह वर्ष बाद अचानक पुराने कागजात की हिफाजत के समय इन कागजों पर नजर पड़ी जो फटे और बर्बाद होते नजर आये। फिर मैंने उनकी हिफाजत करने के उद्देश्य से जेराक्स करा लिया।

आजमगढ़ जनपद में अधिशासी अभियन्ता के पद पर तैनाती के दौरान अचानक एक दिन पूर्वांचल के मशहूर साहित्यकार कवि-शाइर डा० मधुर नज़्मी साहब का आगमन मेरे आवास पर हुआ। बातचीत के दरम्यान उनकी नजर इन जेराक्स किये हुए कागजात पर पड़ी जो टेबल पर पड़े हुए थे और वे उन्हें उठाकर देखने लगे। कुछ अंश पढ़ कर उन्होंने पूछ लिया कि इसे किसने लिखा है ? सकुचाते हुए मैंने अपने लेखन की कहानी उन्हें बता डाली। सुनते ही वे हँस पड़े और कहने लगे कि आप बेकार समझकर घर के कोने में डाले पड़े हैं, वे बहुत उपयोगी चीजे हैं। इन्हें लोगों के बीच जाना चाहिए। समाज में पर्दे

www.bhojpurisahityangan.com

के पीछे क्या हो रहा है ? लोगों को जानना चाहिए। फिर डॉ० मधुर नज्मी जी अपने साथ सामग्री ले गये और पूरा पढ़कर पुस्तकीय स्वरूप देने में अपना योगदान प्रारम्भ कर दिया। इन्हीं के श्रम और सहयोग तथा हौसला बढ़ाने के परिणाम है पहली कृति "एक कहानी की आत्मकथा" की पाण्डुलिपी तैयार हुई, जिसके प्रकाशन के लिए भाई साहब ने हमारे द्वितीय पुत्र प्रमोद यादव (जो इस समय दैनिक जागरण वाराणसी में सिटी चीफ के पद पर कार्यरत हैं।) को दिया जो उस समय किसी कार्यवश आजमगढ़ गये हुए थे। फिर शुरू हुआ हिन्दी और भोजपुरी भाषा में लिखने, छपवाने और बाँटने का कार्य। भाई साहब द्वारा जो कि अनवरत आज तक चलता चला आ रहा है। प्रकाशन के कार्यों की मजबूत कड़ी में आज तक एक से एक नये आयाम स्थापित होते जा रहे हैं। भाई साहब की प्रकाशित हिन्दी व भोजपुरी कृतियों का ब्यौरा कुछ इस तरह है-

भोजपुरी भाषा की कृति : १- जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), २- कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७), ३- पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६), ४- भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८), ५- राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९), ६- श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०), ७- भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०), ८- दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०), ९- घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०, १०- भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१), ११- भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२), १२- भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३), १३- रहनी करनी युगाचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी (वर्ष २०२४)

हिन्दी भाषा में प्रकाशित कृतियाँ : १- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), २- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४) , ३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ? (वर्ष २००४), ४- सुख जागे दु:ख भागे (वर्ष २००४), ५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), ६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६), ७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), ८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७), ९- प्राचीन शिव मन्दिर जीर्णोद्धार (वर्ष २०२२)

उपरोक्त प्रकाशित कृतियों के अलावा भाई साहब कई पत्रिकाओं में अपने निबन्ध व लेख दिये तथा साहित्य जगत् में विशेषकर भोजपुरी साहित्य में चमकते हुए सितारे बन कर देदीप्यमान हैं। इन लेखन कार्य के क्रम में इन्हें तमाम पुरस्कार व सम्मानों की एक से एक कड़ियाँ जुड़कर एक माला की तरह बनती जा रही हैं। सम्मानों की श्रृंखला में तमाम नाम है जैसे-

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा 'महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।'।

राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत।

राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा 'प्रेमचन्द सम्मान।,'

सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा 'मेलोडी सम्मान' २००६।

www.bhojpurisahityangan.com

हिन्दी सेवा संस्थान कुशीनगर द्वारा 'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान'।

'आध्यात्मिक रत्न सम्मान' सूफी साहित्य कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा।

विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ 'विद्यावाचस्पति' 'विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न' एवं 'भारत गौरव'।

'साहित्य कला शिरोमणि' सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष २०११, भागलपुर (बिहार)।

मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर (उ०प्र०) के एल्युमनाई एसोसिएशन द्वारा वर्ष २०११ में सामाजिक कार्यों में योगदान हेतु सम्मानित।

'संगम सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था' गोरखपुर द्वारा 'संगम साहित्य सुमन' सम्मान-२०२०।

नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर द्वारा भोजपुरी साहित्य सेवा के लिए 'नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान'-२०२१।

सरयू अमृत महोत्सव-२०२१ द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखने पर 'सरयू रत्न सम्मान।'।

भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार) 'संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-२०२१'।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा किताब 'श्याम पियारा साधु-सन्त' पर 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' वर्ष २०२३।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा 'डा० विवेकीराय स्मृति सम्मान वर्ष २०२४'।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाई साहब ने सरल सहृदय आस्तिक तथा धर्म परायणता के साथ-साथ स्वास्थ्य संबंधी कहानियों, गुरु प्रति निष्ठा, आयुर्वेद तथा घाघ की कहावतों द्वारा सरल नुस्खे का प्रयोग कर अपनी बहुग्यता को स्पष्ट किया है। इनके मुखारबिन्द से हमेशा निकलने वाला एक शब्द 'बिनु खरचले रुपये तनी इहो करे के चाही' का कुछ अंश इन्हीं की जुबानी इन्हीं की भाषा में :

बिनु खरचले रुपया तनी इहो करे के चाही

१- रोज सबेरे भगवान के याद करे के चाही।

२- हर मामला में विनम्रता क व्यवहार करे के चाही।

३- अपना संग व्यवहार करे वाला हर मनई के साथ बिना गुस्सा के प्रेम से बोले के चाही।

४- अपने खिलाफ मामला में बिना घबरइले धैर्य राखे के चाही।

www.bhojpurisahityangan.com

५- अपने परिचितन के पुरहर आदर देवे के चाही।

६- अपने पत्नी के सम्मान के नजर से देखे के चाही।

७- केहू पुकारे त 'जी' कहले में देरी ना करे के चाही।

८- माता-पिता के आज्ञा क पालन बिना देरी के करे के चाही।

९- व्यावहारिक काम करत भी बराबर भगवान के याद करे के चाही।

१०- हर मामला में साँच बोले के चाही।

११- आपन चरित्र सुधार के आध्यात्मिक उन्नति क उपाय करे के चाही।

१२- विचार कइले के शक्ति में वृद्धि करे के चाही।

१३- अमुक काज हम कइ के रहब, अइसन निश्चय में दृढ़ता लावे के चाही।

१४- ज्ञानी जन क संगत कइके उनके उत्तम गुणन के अपनावे के चाही।

१५- रोज खुली हवा में घुमि के निरोग रहले के कोसिस करे के चाही।

१६- आत्मा में स्थित अखण्ड आनन्द क अनुभव करे के चाही।

१७- रोज एकाध घण्टा उत्तम पुस्तकन के पढ़े के चाही।

१८- हर समय, हर एक स्थिति में सन्तोष मान के सुख पावे के चाही।

१९- प्रारब्ध के दोष न दे के प्रयत्नशील बने के चाही।

२०- दुनियावी लालच पैदा करे वाले चीजन से सावधान रहे के चाही।

२१- हर जगह ईश्वर के देखल सीखे के चाही।

सियाराम मय सब जग जानी ।
करौं प्रनाम जोरि जुग पानी ।।

मैं तथा मेरा पूरा परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है कि भाई साहब स्वस्थ और दीर्घायु रहें तथा लेखन के क्षेत्र में सक्रियता बनाये रखें। इसी प्रकार भाई साहब का सानिध्य और आशीर्वाद हम लोगों पर बना रहे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१३२

भोजपुरी जगत क महान पुरोधा इन्जीनियर राजेश्वर सिंह से मिलन क एगो छोट कहानी

-हरिशरण दास

सन् २००३ क बात ह, हम अपने आश्रम परम्परा क पुरान ग्रन्थ (ज्ञान दीपक) पढ़त रहलीं। ओह में लिखल रहल कि श्री राम सुभज्ञ दासजी महाराज जेकर जन्म सम्वत् १८२९ में भइल रहल उहाँ के अष्टाँग योग साधन सिद्ध महापुरुष रहलीं। छ:-छ: महीना बारह जगह गुफा में समाधि लगवले रहलीं। एक सौ छत्तीसवें साल सम्बत् १९६४ में अन्तिम समाधि के साथ सनातन परमधाम चलि गइलीं। ग्रन्थ में समाधि स्थल के बारे में लिखल ह कि आजमगढ़ के भैरोनाथ स्थान से अग्निकोण में ब्रह्मणन के गाँव मिश्रपुर ह जवन जन्म भूमि ह, ओही जगहीं पहली समाधि, २-मोतीपुर, ३-कप्तानगंज, ४- सरयूतट चहोराघाट, ५-सिकरीगंज बड़गो, ६-बासगाँव, ७-आजमगढ़, ८-गोपालपुर, ९-अरुसा, १०-दुर्वासा, ११-चौबाहे, १२-बरोही, १३-जन्मभूमि में अन्तिम समाधि।

हम गोपालपुर गाँव में समाधि स्थल खोजत पहुँच गइलीं इन्जीनियर राजेश्वर सिंह साहब के घरे। उहाँ के परिवार में श्रद्धा-भक्ति देखि के हम दू महीना ले रुकि गइलीं। रोज साम के समय दू घंटा भगवान क कथा कहीं, गाँव क लोग बइठ के कथा सुनें। गाँव के लोगन क विचार बनल कि इहवाँ एगो यज्ञ होखे के चाहीं। इन्जीनियर साहब के घरे के सामने काफी जगह रहे, एसे जगह क चुनाव इहवें भइल। नौ दिन क एगो विशाल श्रीराम महायज्ञ क आयोजन हो गइल। बढ़िया ढंग से यज्ञ पुरा भइल। यज्ञ में आइल ब्राह्मण, साधु-संन्यासी लोग क खूब सत्कार भइल बाकिर विदाई के समय देवे खातिर पैसा घटे लागल त इन्जीनियर साहब के परिवार से तुरन्त दस हजार रुपया मिलल जवने से यज्ञ सुसम्पन्न हो गइल अउर पुरहर आनन्द क वातावरण छा गइल।

बहुत-बहुत साधुवाद !

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१३३

शालीन, सौम्य व्यक्तित्व

-इं० दर्शन प्रसाद

मुझे डॉ० फूलचन्द प्रसाद गुप्त से यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि हमारे वरिष्ठ इं० राजेश्वर सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केन्द्रित मानग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है। सम्मान्य का सम्मान किसी भी समाज के लिए महत्वपूर्ण होता है। जल निगम में कार्य करते हुए आजमगढ़ में आपका सान्निध्य प्राप्त हुआ। इं० राजेश्वर सिंह जी उत्तर प्रदेश जल निगम की एक महत्वपूर्ण इकाई-कांस्ट्रक्शन एवं डिजाइन सर्विसेज में परियोजना प्रबन्धक के पद पर आजमगढ़ में अपनी बेहतरीन सेवा से सभी को प्रभावित किये। आप विभिन्न जनपदों में अधिशासी अभियन्ता के पद पर कार्यरत रहे एवं अधीक्षण अभियन्ता के पद पर कार्य करते हुए सेवानिवृत्त हुए।

क्रियाशील मनुष्य कभी भी सेवानिवृत्त नहीं होता। मात्र उनका कार्यक्षेत्र बदल जाता है। सेवानिवृत्ति के बाद आप साहित्य के क्षेत्र में क्रियाशील रहे और लगातार आपकी कई पुस्तकें प्रकाश में आयीं। आप विभाग में कार्य करते हुए जिस भी जनपद में गये, उस कार्यालय का कायाकल्प हो गया। कार्यालय की सफाई, मरम्मत एवं रंग-रोशन से कार्यालयीय वातावरण ही बदल गया। स्वच्छता आपके स्वभाव में है। आप अपने अधीनस्थों के अत्यन्त प्रिय रहे। उसका कारण आपकी निरभिमानिता थी। अहंकार आपमें स्थान न पा सका था। छोटे कर्मचारियों की सहायता भी आपके स्वभाव में था। इसी स्वभाव के कारण आप कर्मचारियों के प्रिय रहे।

आप जनमानस को प्रेरित करने के उद्देश्य से आपने साहित्य लेखन किया। भोजपुरी एवं हिन्दी में आपके लिखे ग्रन्थ लोकमान में सम्मानित हुए। विभाग में रहते हुए भी आपके द्वारा अनेक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ, जिसमें 'पानीनामा' काफी चर्चित रहा जो विभागीय अभियन्ताओं के लिए और अन्य पाठकों के लिए अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक सिद्ध हुआ। इस पुस्तक की लोकप्रियता का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब कोई अधिकारी विशेष बैठकों में उपस्थित होते थे तो एक बार 'पानीनामा' का अवलोकन जरूर करते थे।

शालीन, सौम्य, सरल, सहज और मधुर-व्यवहार से सभी को अपनत्व प्रदान करने वाले इं० राजेश्वर सिंह जी के स्वस्थ, सुन्दर, सृजनशील जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थी हूँ और यह भी अपेक्षा करता हूँ कि उनका आशीर्वाद मुझे मिलता रहे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१३४

एक अभिन्न मित्र इं० राजेश्वर सिंह

-इं० के.के. सिंह

कहते हैं मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अर्थात् वह लोगों के बीच रहना पसन्द करता है। जन्म के बाद उसकी यह आवश्यकता माँ, भाई, बहन युक्त एक परिवार से पूरी होती है। धीरे-धीरे उम्र के साथ पसन्द बदलती है। फिर जीवन में मित्र और सहपाठी आते हैं, जिनमें से कुछ उसकी रुचि एवं विचार विशेष मिलते हैं, ऐसे लोगों में से भी कुछ के साथ वह अधिक समय तक रहता है, वह अभिन्न मित्र हो जाता है। ऐसे मित्र से ही वह अपने हर सुख-दुख बाँटता है और उस पर भरोसा कर पाता है।

मेरे ऐसे ही मित्र इं. राजेश्वर सिंह हैं। उनसे मेरी मुलाकात पहली बार वर्ष १९६८ में हुई थी। मैं डी०ए०वी० इण्टर मीडिएट कालेज, गोरखपुर से इन्टरमीडिएट की पढ़ाई कर रहा था और राजेश्वर सिंह डी०बी० इन्टरमीडिएट कालेज, गोरखपुर के इन्टरमीडिएट की पढ़ाई कर रहे थे। हम दोनों लोग एक ही अध्यापक के घर सायंकाल केमिस्ट्री एवं गणित का ट्यूशन पढ़ने जाया करते थे। फिर संयोग से गोरखपुर विश्वविद्यालय बी०एस०सी० की पढ़ाई हेतु गये। एक वर्ष की पढ़ाई के बाद ही दोनों को इन्जीनियरिंग की पढ़ाई हेतु मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज, गोरखपुर (वर्तमान में मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर) में दाखिला हो गया। दोनों को आपसी साथ मिलता गया। हम दोनों ने बी०ई० (सिविल) की परीक्षा एक साथ उत्तीर्ण किया। संयोगवश दोनों को तत्कालीन स्वायत्त शासन अभियन्त्रण विभाग जो अब उ०प्र० जल निगम है, में नौकरी मिल गयी कुछ समय के अन्तराल पर वर्ष १९७३ में ही दोनों सेवारत हो गये। शुरुआती दौर में हम लोगों की तैनाती भी आस-पास के जिलों में होती रही जिससे बराबर मिलने का अवसर मिलता रहा। एक दूसरे के पारिवारिक मांगलिक अवसरों पर निरन्तर आते-जाते रहने से पारिवारिक समन्वय निरन्तर प्रगाढ़ होता चला गया।

समय एवं जीवन के अनुभवों के साथ हमारे विचार भी बदलते रहे। श्री राजेश्वर सिंह का रुझान आध्यात्म की तरफ होने से इन्होंने श्री अयोध्याजी में सद्गुरु श्री श्री बंगाली बाबा जी को अपना आध्यात्मिक गुरु अंगीकृत कर लिया तथा उनसे गुरुदीक्षा प्राप्त की और उनके कृपा एवं परम सान्निध्य का सुख प्राप्त करते रहे। इसका वर्णन हमेशा मुझसे करते रहते थे। इस दिशा में अग्रसारित होने के लिए बराबर प्रेरित करते रहते थे।

www.bhojpurisahityangan.com

विगत वर्ष २५-२६ दिसम्बर २०२३ को हमारे विश्वविद्यालय में प्रौद्योगिकी में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के ५० वर्ष पूरे होने पर 'गोल्डेन जुवली सेलीबरेसन' (Golden Jublee Celebration) का आयोजन हुआ था जिसमें हम सभी मित्र सपरिवार मिले थे। उस उत्सव में हम लोगों को कई विषयों को पढ़ाने वाले प्रोफेसर अलक राय साहब भी सम्मिलित हुए थे। उनसे मिलकर अपार प्रसन्नता हुई थी। बातों-बातों में हम अपने पुराने दिनों में खो गये थे। प्रो० अलक राय, इं० राजेश्वर सिंह के आध्यात्मिक गुरु के गुरुभाई भी हैं। यह भी ज्ञात हुआ।

विभागीय सेवा से निवृत्त होने के पश्चात् भी इं० राजेश्वर सिंह छह वर्षों तक विभिन्न राज्यों में पेयजल एवं सीवर कार्यों के सम्बन्धित विभागों में सलाहकार के रूप में कार्यरत रहे। जिससे उन्हें इस क्षेत्र में काफी अनुभव एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

इं० राजेश्वर सिंह प्रारम्भ से ही लेखन क्षेत्र में काफी रुचि रखते रहे हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात् लेखन के माध्यम से इन्होंने भोजपुरी साहित्य के प्रचार-प्रसार का अपार कार्य किया तथा एक दर्जन से अधिक भोजपुरी की किताब लिखा जिनका प्रकाशन भी हुआ। इसके अलावा हिन्दी की आठ पुस्तकें प्रकाशित है। साहित्यिकि क्षेत्र की उपलब्धियों को दृष्टिगत कर अनेक महत्वपूर्ण सम्मान कई संस्थाओं से मिला है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी इं० राजेश्वर सिंह के बड़े पुत्र भारतीय सेवा में कर्नल के गौरवपूर्ण पद पर कार्यरत हैं। जो हम सभी मित्रों के अत्यन्त गौरव का विषय है। छोटे पुत्र राजनीति में सक्रिय हैं। अपनी सारी व्यस्तताओं के साथ-साथ श्री सिंह अपने पैतृक गाँव गोपालपुर से लगातार जुड़े रहे तथा बराबर अपने गाँव जाने के साथ-साथ वहाँ भागवत-कथा प्रवचन आदि कार्यक्रम कराते रहते हैं तथा सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में लगे रहते हैं। ऐसे मित्र को पाकर हम धन्य हैं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१३५

सरल, उदार अउर कर्मठ : इंजीनियर राजेश्वर सिंह

-अनिल कुमार यादव

परमसन्त बाबा गुरु गोरखनाथ क नगरी में गोला तलसील के लग्गे गोपालपुर गाँव क सभ्रान्त व सज्जन मनई बाबू समर बहादुर सिंह जी रहत रहलन। उनके धर्मपत्नी श्रीमती परमजोता देवी रहलिन। इनहीं के कोख से इंजीनियर राजेश्वर सिंह क जनम ०४ अप्रैल दिन गुरुवार, सन् १९५० ई० (चइत महीना के कृष्ण पक्ष क दशमी तिथि विक्रम संवत २०८०, शक संवत् १९४५) में भइल रहल। गुरुवार के दिन पइदा भइलन एकरे कारन या इनके अन्दर जवन विलक्षण प्रतिभा रहल ओकरा कारन से राजेश्वर सिंह जी के अन्दर धर्म अउर अध्यात्म क क्षेत्र में निम्मन रुचि बचपनऽ से समाइल बा। आपन स्कूली पढ़ाई गोपालपुर, बनारस अउर गोला बाजार में पूरा कइले के बाद गोरखपुर शहर में विज्ञान में स्नातक क डिग्री लिहले के बाद चाचाजी आगे क पढ़ाई गोरखपुर जिला अउर मदन मोहन मालवीय इन्जिनीयरिंग कालेज (जवन एह समय मदनमोहन मालवीय प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय के नाम से जानल जाला) से सिविल इन्जीनियरिंग क पढ़ाई सन् १९७३ ई० में पूरा कइलन। कुछ समय तक एही विश्वविद्यालय में पढवले के बाद एल.एस.जी.इ.डी. जवन अब उ०प्र० जल निगम हो गइल ह में सहायक अभियन्ता के रूप में जनपद आजमगढ़ में सन् १९७३ में आपन पहिला कार्यभार ग्रहण कइल गइल। उत्तर प्रदेश जल निगम में अभियंता के रूप में उत्कृष्ट सेवा प्रदान करत अप्रैल २०१० में अधीक्षण अभियन्ता का पद से सेवानिवृत्त हो गइलन। सेवानिवृत्ति के बाद मध्य प्रदेश में जल निगम में अभियंता अउर बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियंता के वरिष्ठ सलाहकार के रूप में आपन भरपूर सेवा दिहलन।

अपने आजमगढ़ में सेवाकाल के दौरान चाचाजी क मुलाकात हिन्दी के कवि आ प्रसिद्ध गज़लकार डॉ० मधुर नज्मी से संपर्क भइल, जिनका प्रेरणा, प्रोत्साहन आ सहयोग से हिन्दी उपन्यास 'एक कहानी की आत्मकथा' से पुस्तकन के प्रकाशन क कार्य क शुरुआत भइल। जवन कि हमरे प्रेस (पूर्वांचल प्रिंटर्स-वाराणसी) में किताब क कम्प्यूटर से कम्पोजिंग अउर छपाई क काम शुरु भइल। जवना के बाद से किताबिन क सिलिसिला चाचाजी क गति पकड़े लागल। अउर आज

www.bhojpurisahityangan.com

इ स्थिति बा कि हिन्दी अउर भोजपुरी भाषा में कुल २० किताबिन क प्रकाशन हो चुकल बा। जवना क नाम नीचे दिहल गइल बा-

भोजपुरी भाषा की कृति : १- जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४), २- कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७), ३- पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६), ४- भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८), ५- राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९), ६- श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०), ७- भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०), ८- दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०), ९- घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०, १०- भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१), ११- भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२), १२- भोजपुरी योगी कथामृत (वर्ष २०२३।

हिन्दी भाषा में प्रकाशित कृतियाँ : १- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), २- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४) , ३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ? (वर्ष २००४), ४- सुख जागे दु:ख भागे (वर्ष २००४), ५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), ६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६), ७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), ८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७)

हिन्दी अउर भोजपुरी भाषा क कृतियन क प्रकाशन भइला के साथे-साथे चाचा जी के बहुत सारा पुरस्कारन से भी सम्मानित कइल गइल ह। जबकि इनकर उद्देश्य पुरस्कारन से सम्मानित भइल ना रहल, चाचाजी सिर्फ हिन्दी अउर आपन माइभाषा में अपना अन्दर छिपल एक लेखक अउर साहित्यकार के जगावल चाहत रहलन जवन सबके सामने बा। पुरसकार अउर ***सम्मान क शृंखला में तमाम नाम ह-***

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा 'महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।'।

राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत।

राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा 'प्रेमचन्द सम्मान।,'

सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा 'मेलोडी सम्मान' २००६।

हिन्दी सेवा संस्थान कुशीनगर द्वारा 'हिन्दी साहित्य सागर सम्मान'।

'आध्यात्मिक रत्न सम्मान' सूफी साहित्य कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा।

विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ 'विद्यावाचस्पति' 'विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न' एवं 'भारत गौरव'।

'साहित्य कला शिरोमणि' सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष २०११, भागलपुर (बिहार)।

www.bhojpurisahityangan.com

मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर (उ0प्र0) के एल्युमनाई एसोसिएशन द्वारा वर्ष 2011 में सामाजिक कार्यों में योगदान हेतु सम्मानित।

'संगम सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था' गोरखपुर द्वारा 'संगम साहित्य सुमन' सम्मान-2020।

नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर द्वारा भोजपुरी साहित्य सेवा के लिए 'नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान'-2021।

सरयू अमृत महोत्सव-2021 द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखले पर 'सरयू रत्न सम्मान।'।

भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार) 'संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-2021'।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा किताब 'श्याम पियारा साधु-सन्त' पर 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' वर्ष 2023।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा 'डा0 विवेकीराय स्मृति सम्मान वर्ष 2024'।

चाचा जी क सेवा काल के दौरान खाली समय में पुस्तकन के पढ़ले के कारन जिज्ञासा जागल कि हमहूँ तनी लिखले के कोशिश करीं। डेरात-डेरात लिखले क अभ्यास शुरु भइल अउर आज कड़ी-दर-कड़ी लिखात जात बा।

जवना समय लाकडाउन लागल रहे सन् २०२० मार्च में मई के दौरान। वोह समय सबकर आइल-गइल बन्द रहल। अउर तमाम प्रकार क बंदिश रहलन। ओह समय भी चाचाजी किताबिन के लिखले क कार्य चालू रखले रहलन। अउर ओकरा के छपवले क चिन्ता भइल त मोबाइल के वाट्सअप के द्वारा लिखल सामग्री के भेज दिहलन। वोही समय के दौरान भोजपुरी 'श्याम पियारा साधु-सन्त', 'भोजपुरी महाभारत', 'दीक्षा-गुरु' अउर घरेलू नुस्खा (पद्य में) कम्प्यूटर से कम्पोजिंग क कार्य शुरू भइल। कुछ समय पश्चात् जब लाकडाउन खतम भइल तब जाके 'श्याम पियारा साधु-सन्त', 'भोजपुरी महाभारत', 'दीक्षा-गुरु' अउर घरेलू नुस्खा (पद्य में) किताबिन क छपाई क कार्य शुरु भइला के बाद प्रकाशन क काम शुरु हो गइल।

चाचाजी के बचपन क मित्र श्री जयनाथ यादव जी, जे गोपालपुर के दक्षिण दिशा में स्थित गाँव रकौली क निवासी हवं, उनकर हम लइका हईं। पिता जी बनारस में एक दैनिक हिन्दी अखबार में सेवारत रहलन। जवना वजह से हमार पालन-पोषन अउर पढ़ाई लिखाई क काम भी बनारस से ही भइल रहल। अउर एह समय कार्यक्षेत्र भी हमार बनारस में ही हव। बचपन से ही बनारस में रहले के कारण हमार मातृभाषा हिन्दी (खड़ी बोली) ही रहे, लेकिन जबसे चाचाजी के किताबिन के कम्पोजिंग व छपाई के कार्य हो रहल बा, हमहूँ के भोजपुरी बोली क मिठास अच्छा लागे

www.bhojpurisahityangan.com

लगल, अउर अपने संगी-साथिन के बीच में भी अपने जिला क भोजपुरी भाषा तनी-मनी बोले लागल हईं। अउर जेतना किताविन क छपाई बनारस में भइल ह, वोह कुल किताबिन क कम्प्यूटर से कम्पोजिंग (अक्षर संयोजन) क कार्य ईश्वर के दया अउर आप सब के आशीर्वाद से हमरे हाथ से ही भइल हव, जवना के हम आपन बहुत बड़ा सौभाग्य समझिलें।

चाचाजी क कार्य कइले क इ शैली हमके बहुत प्रभावित कइलस कि ऊ जवने काम के पीछे पड़ि जालन वोह कार्य के पूरा कइके ही छोड़ेलन, वोकरे लिए हर दूसरे-तीसरे दिन फोन के द्वारा ई पूछल कि काहो का भइल, का करत हवऽ। केतना भइल, अबहिन केतना दिन लागी, जल्दी कर नाही् त कवनो दूसर काम आ जाई नाहीं त कौनों दूसरे जगही अइले-गइले क कार्यक्रम बन जाई त इ काम रुकि जाई। फोन के द्वारा हमके आपन सलाह-मशविरा कइल करंऽ, फोन से बाति होखे लागे त देरी ले मजिगर होत रहि जाइल करे। ई सब बातन के सून के चाचीजी (श्रीमती राजकुमारी सिंह जी) एक दिन फोन लेके हाल-चाल पूछलिन। फिर कहें कि ए बाबू चाचा जी आपकऽ त आपके खूब परेशान कर देलन। हम कहे कि-नाहीं, चाचा जी क इ सब हमरे लिए सलाह, सीख अउर हमार मागदर्शन कइल ह। इ बाति सुनि के चाची जी के सन्तोष भइल कि सब ठीक हव, नाहीं त चाची जी इ सोचें कि हमके बुरा लगेला। अइसन सरल, उदार अउर सन्त स्वभाव के व्यक्तित्व क धनी चाचा जी अउर चाची जी दुनो लोग हवं।

चाचा जी क लिखल किताब 'राम पियारा साधु-सन्त' सन्त लोगन के चालीस ठो लक्षणन क व्याख्या कइले हईं, क कुछ अंश नीचे दिहल जात बा, जवन सबका करतिन बहुत लाभकारी बा-

१. कउनो जीव से दुश्मनी ना राखल।
२. सबके संग दोस्ताना रिश्ता राखल।
३. बिना कउनो भेद-भाव के दुखी जीव लोगन प दया कइल।
४. भगवान के अलावा केहू में 'मेरापन' मतलब अपनापन ना भइल।
५. शरीर-मन-वाणी में कबहूँ 'मैं पन' ना भइल।
६. सुख-दुःख में समान बुद्धि मतलब एक जइसन समझ बनल रहल।
७. आपना बुरा करे बाले के प्रति; ओहके दण्ड दिहले क ताकत होखलहू प दण्ड ना दिहल, क्रोध ना कइल, अउर ओकरे भलाई खातिर भगवान से निहोरा कइल।
८. अपने खातिर हित करे वाला अउर हित न करे वाला दूनो स्थिति के मिललो प सन्तुष्ट रहल।

www.bhojpurisahityangan.com

९. चित्त हरदम भगवान से जोड़े राखल।

१०. मन-इन्द्रियन के जीत लिहल।

११. भगवान में पुरहर अखम्भ विश्वास राखल।

१२. मन अउर बुद्धि के हर तरह से भगवान में अर्पण कइ दिहल।

१३. अपने कउनो आचरन से केहू जीव के भी परेशान ना कइल।

१४. केहू से कउनो तरह क व्यवहार पइले प परेशान ना भइल।

१५. सांसारिक वस्तुवन के पवले प खुश ना भइल।

१६. दूसरे के तरक्की प डाह ना कइल।

१७. हमेशा निडर रहल।

१८. कउनो भी अवस्था में अशान्त ना भइल।

१९. कउनो चीज क उम्मीद ना कइल।

२०. मन-वाणी-देहि से पवित्र रहल।

२१. हित के लिहल अउर अहित के तजल।

२२. सबसे उदासीन रहल अउर उम्मीद ना कइल।

२३. हर काम भगवान के लीला से शुरु होला अउर पूरा भी होला, सदा एह भाव से करे के चाही, अउर माने के चाही।

२४. दिल-दिमाग से हर दम दुखी रहले के आदत से बचल।

२५. मन के हिसाब से मिलल अउर मन के खिलाफ क अन्त भइले में खुशी के अनुभव ना कइल।

२६. मन के मुताबिक पावल अउर न पवले के स्थिति में द्वेष न भइल।

२७. कउनो भी स्थिति में दुख न होखे।

२८. शुभ अउर अशुभ काजन के फल के तजि दिहल।

२९. शत्रु-मित्र में एक जइसन भाव राखल।

३०. कउनो भी चीज क इच्छा ना राखल।

३१. मान मिलने अउर अपमान यानी बेइज्जती भइला पर भी एक तरह क भाव बना के राखल।

३२. सरदी-गर्मी में एक तरह बुद्धि बना के रखल।

३३. सुख-दुःख के एक तरह क मानल।

www.bhojpurisahityangan.com

३४. कउनो भी पदार्थ से विशेष जुड़ाव ना राखल।

३५. निन्दा-स्तुति के समान समझल।

३६. जवान से हमेशा सत्य क चर्चा कइल अउर कउनो बात से परहेज कइल, मन से भगवान के रूप क मनन करत रहल।

३७. देहि के पलले-पोसले खातिर जवन कुछ खाये के मिल जाय ओही में सन्तुष्ट रहल।

३८. घर-दुआर के आपन न मानल।

३९. हमेशा भगवान में स्थिर बुद्धि राखल।

४०. श्रद्धा के साथ भगवान क रचल धर्मरूपी अमृत क हरदम सेवन कइल।

• • •

४ अप्रैल सन् २०२५ के चाचाजी अपने जीवन क ७५वाँ बसन्त पूरा कइ रहल हईं। जवना के अवसर पर गोरखपुर क ख्यातिलब्ध संस्था 'भोजपुरी संगम' के तरफ से 'भोजपुरीभूषण' नामक अभिनन्दन ग्रन्थ क प्रकाशन क कार्य हो रहल बा। एकरा सफल प्रकाशन के लिए हमार शुभकामना बा। अउर (चाचाजी) इं. राजेश्वर सिंह के बेहतर स्वास्थ्य अउर शतायु जीवन के लिए ईश्वर से निहोरा बा।

अन्त में एक बार फिर आपके उत्तम स्वास्थ्य अउर दीर्घायु जीवन के कामना, आप स्वस्थ रहीं, प्रसन्न रहीं अउर आपके जीवन में हर खुसी मिलत रहे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१३६

भोजपुरी के समर्पित सेवक : इं. राजेश्वर सिंह

-कुमार अभिनीत

भोजपुरी में लीखल-पढ़ल, बोलल-बतियावल आ एकरे बढ़ंती खातिर काम करे वाली संस्था 'भोजपुरी संगम' के शुरुआत २०१० में भइल रहे। संस्था के संयोजक स्व० सत्य नारायण मिश्र 'सत्तन' (बाबूजी), स्व० गिरिजेश राय, स्व० नरसिंह बहादुर चन्द, रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी', मुकेश श्रीवास्तवस चन्देश्वर 'परवाना', आदि लोग मिलि के एकर शुरआत कइलें। हर महीना के दूसरे अतवार (शुरुआत में सनीचर बाद में अतवार) के सबके जुटा के 'बइठकी' होखे लागल। दुसरी-तिसरी बइठकी से इं. राजेश्वर सिंह जी के आइल-गइल होखे लागल। ओह समय हमार उमिरि कम रहे। इहां-उहां, जब-तब आये-जावे आ कुछ कइले-धइले ममें हमन के भागीदार होखे लागल। ओही समय से इंजीनियर साहब से मिलले आ जनले कऽ मौका मिलल। इहाँ के भोजपुरी से लगाव आ समर्पण के चलते धीरे-धीरे 'भोजपुरी संगम' के सगरी क्रिया-कलाप में गहिरे समात गइनी।

पहिला साल पूरा भइले पर बइठकिन में जुटल पाण्डलिपियन के प्रकाशन के बिचार बनल। २०११ में बइठकी के पहिला अंक छपि के आइल। एह किताब के प्रकाशन में इंजीनियर साहब के बड़हन सहजोग मिलल। अपने साथे इहाँ के छपाई में अपने रिश्तेदारनों से आर्थिक सहजोग दियवलीं आ किताब छपि के आ गइल। २०१५ में दू गो दुखद घटना हो गइल। सत्तन जी (बाबू जी) आ ओकर कुछ दिन पहिले गिरिजेश राय जी से स्वर्गवास हो गइल। बुझाइल कि अब भोजपुरी संगम के आगे के राहि कठिन हो जाई। बाकिर इंजीनियर साहब के उत्साह आ सोच में तनिकों कमी नाइ रहे। सबके मन बनल, बइठकी अपने समय से हर महीना होखे लागल। बाबूजी से रहलही में बइठकी के अगिला अंक पर काम होत रहल (१३ वी 'बइठकी' २०१२ से आगे.....) २०१७ में ओह समय के संस्था के अधयक्ष आ वरिष्ठ भोजपुरी साहित्यकार सूर्यदेव पाठक 'पराग जी' के सम्पादन आ चन्देश्वर 'परवाना', वीरेन्द्र मिश्र 'दीपक', धर्मेन्द्र त्रिपाठी आ कुमार अभिनीत के सह सम्पादन में बइठकी क दुसरका अंक आइल। एही अंक के छपवले में इंजीनियर साहब के बड़वर आर्थिक सहजोग मिलल। इहो अंक ओनही के बढ़वले उत्साह आ जागरूता कऽ देन रहे। ओकरे आगे के अंक पर काम ओही तरे चलि रहल बा। इंजीनियर साहब संस्था में कब्बो केहू के ढील नाइ परे देनी। सबके समय-

www.bhojpurisahityangan.com

समय पर टोकत आ सहेजत रहेनी। २०२१ में पराग जी शहर छोड़ि दिहले के बाद इहाँ के तब से ले के आज ले एगो मजवूत खम्हा बनि के संस्था के सगरी क्रिया-कलाप में ठाढ़ रहीलें। आजो इहाँ के अध्यक्ष/संरक्षक के रूप में संस्था के साथ मजबूती से चलत हईं।

भोजपुरी भा संस्था के प्रति समर्पित रहले के अलावा इंजीनियर साहब अपने लेखनियो से ढेर भोजपुरी आ कुछ हिन्दी में पुरहर सम्पदा जोरले बानी। अबले भोजपुरी आ हिन्दी दूनों मिला के लगभग २० किताबन के प्रकाशन हो गइल बा। जहां एक ओर २००४ में 'जिनगी कऽ दूवि हरियाइल' से शुरुआत भइल ओहीं २०२३ में आइल 'भोजपुरी योगी कथामृत' आज साहित्य के बढंती में समाइल बा। संत परम्परा में इहां के लिखल 'राम पियारा साधु-संत' आ 'श्याम पियारा साधु-संत' में सगरी साधु समाज के ढंग से चर्चा भइल बा।

रोग बियाधि के निवारण बदे आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी आ देसी खरबिरवा दवाइन पर इहाँ के रचल किताब 'घरेलू नुस्खा' आज ढेर घरन में निम्मन भूमिका निभा रहलि बा। गद्य साहित्य के कई विधा में इहाँ के पुरहर हाजिरी लागल बा।

अबहिनो इंजीनियर साहब के कलम चलायमान बा। ई साहित्य के बढ़ंती खातिर सोगहग बाति बा। अपने उमिरि के ७५वें साल में पहुंचल इंजीनियर साहब से अबहिन ढेर आस लागल बा। उमेद कइल जा सकत बा कि अबहिन साहित्य संसार के बहुत कुछ पढ़े देखे के मिली। इहाँ के अइसे अपने समर्पण के साथे चलत रहीं आ हमन के राहि देखावत, बतावत आ आशीर्वाद देत रहीं। इहाँ के देख-रेख में 'भोजपुरी संगम' आ भोजपुरी दूनों में पुरहर बढ़ंती होखे। इंजीनियर साहब क शताधिक बरिस से नेह-छोह मिलत रहे, एही उमेद के साथ मंगलकामना.....

❖

www.bhojpurisahityangan.com

इंजीनियर राजेश्वर सिंह : भोजपुरी भाषा के संवर्धन के सच्चे अग्रदूत

-ध्रुव चन्द

भोजपुरी भाषा भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे प्राचीन और समृद्ध भाषाओं में से एक है, जो अपनी विविधता और संस्कृति के साथ गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सम्बन्धों को व्यक्त करती है। भोजपुरी भाषा की जड़ें उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और नेपाल के तराई क्षेत्रों में गहरी हैं, लेकिन इसका महत्व समूचे भारती समाज और भारतीय डायस्पोरा में फैला हुआ है। ऐसी समृद्ध और विस्तृत भाषा को जब संकट का सामना करना पड़ता है, तब कुछ लोग उसे बचाने, उसका प्रचार-प्रसार करने और उसे भविष्य में जीवित रखने के लिए खुद को समर्पित कर देते हैं। इंजीनियर राजेश्वर सिंह ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने भोजपुरी भाषा को एक नया जीवन देने के लिए अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्षों को समर्पित कर दिया है।

भोजपुरी भाषा की पहचान और संरक्षण के लिए संघर्ष

इंजीनियर राजेश्वरसिंह इस बात का जीवंत उदाहरण हैं कि जब एक व्यक्ति का उद्देश्य न केवल व्यक्तिगत सम्मान प्राप्त करना होता है, बल्कि समाज और संस्कृति की रक्षा करना होता है, तो वह किसी भी कठिनाई से नहीं घबराता। उनका जीवन केवल एक लेखक के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक कार्यकर्ता, संस्कृति रक्षक और प्रेरणास्रोत के रूप में सामने आया है। भोजपुरी भाषा की समृद्धि और अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उन्होंने न केवल लेखन कार्य किया, बल्कि विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक मंचों पर भी अपने विचार व्यक्त किए।

राजेश्वर सिंह के अनुसार 'भोजपुरी केवल एक बोली नहीं, बल्कि यह हमारे अस्तित्व और पहचान का हिस्सा है। यदि हम अपनी मातृभाषा को छोड़ देंगें, तो हमारी सांस्कृतिक धरोहर भी नष्ट हो जायेगी।' इस विचार धारा ने उन्हें अपने लेखन कार्य में पूरी तरह से समर्पित कर दिया।

www.bhojpurisahityangan.com

उनका मानना है कि भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि यह हमारी सोच, हमारी भावनाओं और हमारी सांस्कृतिक पहचान को भी व्यक्त करती है। यही कारण है कि उन्होंने अपने लेखन में हमेशा भोजपुरी के महत्व और उसके संरक्षण की बात की है।

लेखन में गहरी सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक समझ

इंजीनियर राजेश्वर सिंह का लेखन केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि गहरी सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक समझ से भी सम्पन्न है। उन्होंने भोजपुरी भाषा को न केवल अपने लेखों के माध्यम से संवर्धित किया, बल्कि इसके सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को भी उजागर किया। उनका मानना है कि भाषा और साहित्य में समाज की वास्तविकता को दर्शाना चाहिये, ताकि समाज और संघर्षों को समझा जा सके।

राजेश्वर सिंह के लेखन में भोजपुरी के प्रति उनका गहरा प्रेम और समर्पण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन्होंने भोजपुरी की काव्यात्मकता, उसकी सुन्दरता और उसके अस्तित्व को बचाने के लिए कई किताबें, लेख और विचार साझा किए हैं। उनका उद्देश्य केवल भोजपुरी के प्रचार-प्रसार तक सीमित नहीं था, बल्कि वह चाहते हैं कि इस भाषा का साहित्यिक और सांस्कृतिक महत्व भी समूचे विश्व में मान्यता प्राप्त करे।

भोजपुरी के वैश्विक प्रचार के लिए प्रयास

इंजीनियर राजेश्वर सिंह का एक और महत्वपूर्ण योगदान यह रहा है कि उन्होंने भोजपुरी को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। वह मानते हैं कि अगर भोजपुरी को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाता है, तो यह ना केवल भोजपुरी बोलने वालों के लिए, बल्कि समग्र भारतीय समाज के लिए गर्व की बात होगी। इसके लिए उन्होंने कई मंचों पर भोजपुरी के महत्व और उसकी शक्ति को उजागर किया। वह इस भाषा के संरक्षण और संवर्धन को केवल एक क्षेत्रीय कार्य नहीं मानते, बल्कि यह उनके लिए एक राष्ट्रीय कर्तव्य है, जो समाज के हर वर्ग और समुदाय को जोड़ने का काम करता है।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह ने भोजपुरी साहित्य को आधुनिक सन्दर्भों में प्रस्तुत करने के लिए कई पहल की। उन्होंने इसके साहित्यिक विकास के लिए कई नए आयाम खोले और भोजपुरी भाषा को नई पीढ़ी से जोड़ने के लिए आधुनिक तरीकों का उपयोग किया। उनका लेखन केवल पुराने गीतों, कविताओं और कहानियों तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने इसमें समकालीन मुद्दों, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पहचान की बातें भी समाहित कीं। इस प्रकार उन्होंने भोजपुरी को न केवल एक पुरानी भाषा के रूप में, बल्कि एक जीवित और विकसित भाषा के रूप में प्रस्तुत किया।

www.bhojpurisahityangan.com

अभिनन्दन ग्रन्थ

इंजीनियर राजेश्वर सिंह के योगदान और समर्पण को एक विशेष सम्मान देने के लिए एक अभिनन्दन ग्रन्थ लिखा जा रहा है। यह ग्रन्थ उनके समर्पण, कृतित्व और भोजपुरी के प्रति उनकी निष्ठा का प्रतीक होगा। इस ग्रन्थ में उनके लेखन के सभी पहलुओं, उनके विचारों और उनके योगदान की गहरी चर्चा की जाएगी। यह ग्रन्थ न केवल उनके व्यक्तिगत योगदान को प्रदर्शित करेगा, बल्कि यह भोजपुरी भाषा के प्रति उनके समर्पण और उसकी वैश्विक पहचान के लिए उनके संघर्ष को भी सम्मानित करेगा।

समाज और संस्कृति के लिए प्रेरणा

इंजीनियर राजेश्वर सिंह का जीवन इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि जब किसी कार्य को केवल समाज और संस्कृति के उत्थान के लिए किया जाए, तो उसका प्रभाव आने वाले कई वर्षों तक महसूस किया जाता है। उनका लेखन समाज को जागरूक करने और उसके भीतर बदलाव लाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन चुका है। उनका यह सन्देश कि किसी भी समाज की असली पहचान उसकी भाषा और संस्कृति में निहित होती है, हम सभी के लिए एक प्रेरणा है।

राजेश्वर सिंह का योगदान केवल लेखन तक सीमित नहीं है, वह एक समाजसेवी, संस्कृति रक्षक और एक प्रेरक व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने भोजपुरी को न केवल बचाया, बल्कि उसे पुनः जीवित किया। उनके द्वारा किया गया कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक धरोहर के रूप में रहेगा और उनका हमेशा भोजपुरी भाषा और भारतीय साहित्य के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा।

भोजपुरी प्रहरी

भोजपुरी की मधुर वाणी, गूँजे दिलों के बीच
इंजीनियर राजेश्वर सिंह, समर्पण के सच्चे मीत ।
संस्कारों के वाहक, संस्कृति के दीपक,
भाषा के संरक्षण में उनका योगदान अद्वितीय एवं विशद।

जब समाज में छाई नीरवता की छाया,
उन्हें मिला एक उद्देश्य, उठाया भाषा का जयमाला ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी की पहचान बचाने की जो ठानी,
कभी न रुकी वह यात्रा, संघर्ष में बनी कहानी ।

न चाहा उन्होंने यश, न माँगा धन का मान,
भोजपुरी के अस्तित्व का था बस एक प्रण महान ।
हर लेख, हर शब्द मे झलकती है उनकी पीर,
'भोजपुरी है जीवन-धारा, संस्कृति का अमूल्य नीर।'

अभिनन्दन-ग्रन्थों में संजोई है उनकी तपस्या की गाथा,
भाषा के प्रति उनका समर्पण बनी अमर कथा।
इसी समर्पण ने उन्हें बनाया भोजपुरी का सच्चा नायक,
जाग्रत किया जन-जन को, बना दिया सांस्कृतिक दीपक ।

भविष्य में जब भी गूँजेगी भोजपुरी की सदा,
राजेश्वर सिंह का नाम रहेगा हृदयों में सदा ।
उनकी यथार्थता, उनका संघर्ष, उनका बलिदान,
हमारे लिए प्रेरणा बन, दे भाषा-रक्षा का ज्ञान।

भोजपुरी के इस सपूत को शत-शत प्रणाम,
उनकी विचार धारा को रखें हम सदा सम्मानित व संग्राम ।
हर कदम पर चलें उनके विचारों के पथ पर,
फैलाएँ भोजपुरी का गौरव, जग में अमर-अजर ।।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

९

बन्धु-बान्धव-खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्यिक रूझान

-तृप्ती सिंह 'तनु'

जून २००३ के मध्य हमारे गाँव गोपालपुर में हम लोग के आवास 'गुरुधाम' के समक्ष श्रीराम महायज्ञ का आयोजन हुआ था। यज्ञ में भाग लेने अयोध्या धाम से पधारे कुछ सन्त-महात्मा गुरुधाम में ठहरे हुए थे। यज्ञशाला गुरुधाम के सामने बना हुआ था। आस-पास पर्याप्त खाली जगह था जिससे सुगमता से आयोजन चल सकता था। कार्यक्रम में श्रीरामचरित मानस का नवान्ह परायण पाठ सबेरे सात बजे से दस बजे तक और सायं चार बजे से सात बजे तक का आयोजित था।

प्रतिदिन विद्वान् प्रवचन कर्ताओं द्वारा रामचरित मानस में वर्णित प्रसंगों का उद्धरण देकर उपस्थित जन-समुदाय के समक्ष प्रवचन कर उन्हें धन्य करने का कार्यक्रम भी बना था। कार्यक्रम में एक दिन संध्या के समय क्षेत्र में सुन्दर एवं प्रभावशाली प्रवचन के लिए चर्चित मानस कोकिला विजय लक्ष्मी शुक्ला का भी प्रवचन होना था। परन्तु नियत तिथि के एक दिन पूर्व उनकी सूचना आयी कि उनका आना सम्भव न हो पायेगा, कारण कि उनके सासू माँ की तबियत अचानक जियादा खराब हो गयी है और वे सासू माँ की सेवा व देख-रेख में व्यस्त हो गयी हैं।

गोपालपुर में श्रीराम महायज्ञ के आयोजकों में खलबली मच गयी। उन्हें कुछ सूझा तो वे लोग आनन-फानन में अन्तरिम व्यवस्था हेतु सत्तर कि० मी० दूर आजमगढ़ में तैनात अपने शुभचिन्तक इन्जीनियर साहब यानी मेरे डैडी को सूचित कर दिये। आजमगढ़ और आस-पास के क्षेत्र में डैडी ने कथा वाचक की तलाश शुरू की परन्तु किसी की भी जानकारी नहीं मिली। इस हेतु उन्होंने अपने मित्र कवि/शायर डॉ० मधुर नज़्मी साहब से भी कहा। मधुर नज्मी साहब ने तपाक से कह डाला कि-'सर, आप कथावाचक की चिन्ता छोड़िए। आखिर हम कवि लोग कब काम आयेगें। अभी हम तीन-चार कवियों से सम्पर्क साधता हूँ और साथ चलने हेतु तैयार करता हूँ। कथा-स्थल पर एक सुन्दर कवि गोष्ठी हो जायेगी।' ग्रामवासियों को एक नई चीज का रसास्वादन करने का मौका मिलेगा। डैडी ने गाँव वालों को सूचित कर दिया कि 'कुछ कवियों को साथ लेकर हम कल पाँच बजे तक गाँव पहुँच जायेंगे और कवि-गोष्ठी होगी, आपलोग चिन्ता न करें।'

www.bhojpurisahityangan.com

डा० मधुर नज्मी, बैभव वर्मा, राम अधार व्याकुल सहित कुल पाँच कवियों के साथ डैडी गोपालपुर आ गये और निश्चित समय पर कवि गोष्ठी बहुत ही सुन्दर ढंग से हुई। गाँववासी बहुत खुश हुए। गाँव में इस तरह का आयोजन पहिली बार हुआ था।

सन् २००५ में मेरे छोटे भइया प्रवीण सिंह (मोनू जी) की शादी तय हो गयी। डैडी आजमगढ़ में ही तैनात थे। समय आया तिथि तय कर निमन्त्रण-पत्र छपवाने-बँटवाने की। डैडी ने सोचा कि नात-हित व मित्रगण तमाम तरह के सवाल करेंगे-कहाँ शादी तय हुई, वे लोग किस गोत्र के हैं, उनका क्या धन्धा है, आदि-आदि। सभी शुभचिन्तकों का विनम्रता से जवाब भी देना जरूरी होगा। क्यों न ऐसा निमन्त्रण पत्र छपवाया जाय जिसमें सम्भावित सभी सवालों के जवाब मिल जायँ और लोग सन्तुष्ट हो जायँ। डैडी का भोजपुरी लेखन प्रेम जग चुका था। अत: उन्होंने शादी तय होने की सारी दास्तान भोजपुरी में लिख मारी और चौदह पृष्ठ की निमन्त्रण किताब छपवा डाली। कार्यक्रम का रूप-रेखा इस पुस्तक में वर्णित है। अपनी भोजपुरी की पहली किताब 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल' में 'वियाहे कऽ सिलसिला' नाम की कहानी में भी इसका मुख्य अंश दिया हुआ है। यह न्योता अपने किसिम का नया होने के कारण सबको रुचिकर लगी। बहुत से लोग इसे अब भी सम्भाल कर रखे हुए हैं। नये मेहमानों को दिखाते भी हैं।

डैडी के साहित्य और साहित्य प्रेमियों से संगत की झलक बड़े भइया कर्नल साहब के शादी के तय होने के बाद वर-रक्षा अउर कन्या के गोद-भराई के समारोह के समय भी देखने को मिल गयी थी। उक्त कार्यक्रम का आयोजन वर्ष २००० के गर्मी के शुरुआती दिनों में अप्रैल माह में गोलघर के होटल अम्बर में हुआ था। कार्यक्रम में डैडी के तीन कवि मित्र आजमगढ़ से आये थे। दो कवि गोरखपुर नगर के भी शामिल हुए थे। बातों-बातों में कवि गोष्ठी का आयोजन हो गया और उपस्थित लोगों ने कविता पाठ का आनन्द उठाया।

वर्ष २००९ में छोटे भइया को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। शिशु के बरही कार्यक्रम का आयोजन राप्ती नगर स्थित अपने मकान के सामने रखा गया था। आगन्तुक मेहमानों में स्थानीय कुछ साहित्यकार/कवि आये थे जिनमें, गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो० रामदेव शुक्ल, आज अखबार के स्थानीय सम्पादक श्री गिरिजेश राय, श्री नरसिंह बहादुर चन्द, श्रीमती सत्यम्बदा शर्मा के अलावा आजमगढ़ से डॉ० मधुर नज्मी, श्री सुरेन्द्र कुमार सिंह, श्रीमती आशा सिंह सहित छ: कवि थे। इतने कवि/साहित्यकार इकट्ठा होते ही कवि गोष्ठी आयोजित हो गयी। लगभग दो घण्टे का कार्यक्रम सुन्दर ढंग से चला। कवियों के सस्वर पाठ सुन के सभी मेहमान गदगद हो गये। बहुधा ऐसे कार्यक्रम में गाना-बजाना, संगीत का आयोजन लोग किया करते हैं, परन्तु यहाँ पर कवि गोष्ठी का आयोजन एक नया प्रयोग देखकर लोगों में चर्चा का विषय बन गया।

www.bhojpurisahityangan.com

अप्रैल २०१० में जल निगम की नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद बिहार सरकार, पटना में और मध्य प्रदेश में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में सेवा करने के बाद अन्ततः जुलाई २०१६ में लौट कर गोरखपुर अपने घर आ गये। बिहार और मध्य प्रदेश के सेवाकाल में साहित्यकारों से सम्पर्क व मेंल-जोल न हो पाने के कारण उनकी साहित्यिक अभिरुचि शिथिल हो गयी। लेकिन गोरखपुर आते ही पुराने साथियों से भेंट होते ही उनकी बाँछे खिल गयी और पूरे जोश-खरोश से साहित्यिक कार्य में जुट गये। भोजपुरी भाषा व साहित्य के विकास कार्य के लिए कमर कस लिए। भोजपुरी संगम की बइठकियों में नियमित भाग लेने और पुस्तक लेखन में जुट गये।

एक पर एक पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। दिसम्बर-२०२० में तो एक ही बार चार पुस्तकें लोकार्पित हुई। लोकार्पण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे डैडी के इन्जीनियरिंग कालेज में पढ़ाने वाले शिक्षक प्रोफेसर अलक राय साहब, जिनसे अभी भी डैडी कभी-कभार मिलकर आशीर्वाद लेते रहते हैं। डैडी ने अभी तक हिन्दी की नौ और भोजपुरी की कुल बारह किताबें लिख कर छपवाई हैं। फरवरी-२०२४ में भारत सेवाश्रम संघ की शाखा जो गोरखपुर के कैण्ट थाना के पीछे स्थित है के व्यवस्था को देख-रेख कर रहे स्वामी निःश्रेयसानन्द से मुलाकात कर 'भोजपुरी योगी कथामृत' पुस्तक भेंट करने गये। स्वामी जी पुस्तक पर एक सरसरी नजर डालते ही प्रभावित हो गये। उन्होंने भारत सेवाश्रम संघ के संस्थापक योगाचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी जीवनी भोजपुरी में लिख जाने की इच्छा जाहिर की। भोजपुरी में लिखा होने से क्षेत्रीय जनता और भोजपुरी भाषी लोगों को योगाचार्य के जीवन की उपलब्धियाँ एवं उनके उपदेशों की जानकारी लोगों को सहज ही हो सकती है, ऐसा उन्होंने कहा।

डैडी ने लिखने हेतु सहमति जता जी और दो महीना के अन्दर लिखकर पाण्डुलिपि की प्रति दिनांक ३०-०३-२०२४ को उनके हाथों में थमा दी। यह थी डैडी की भोजपुरी भाषा में लिखी हुयी तेरहवीं किताब। किताब का नाम रखा गया-'भोजपुरी रहनी करनी योगाचार्य प्रणवानन्द जी'।

छोटे भइया के शादी के 'निमन्त्रण-पत्र' की रूप रेखा की झलक अगले पृष्ठ से दी जा रही है-

www.bhojpurisahityangan.com

बियाहे कऽ सिलसिला

भोजपुरी कहानी



चि० प्रवीण – सौ० सीमा

के

माँगलिक वैवाहिक अवसर पर

एक वैचारिक तोहफा

एवम्

निमन्त्रण-पत्र

www.bhojpurisahityangan.com

वर-बधू का पारिवारिक परिचय

वर-पक्ष

बाबा- स्व० समर बहादुर सिंह
(कौशिक गोत्रीय)
दादी- स्वर्गीया परमजोता सिंह
पिता- राजेश्वर सिंह
माता- राजकुमारी सिंह
बड़े भइया, भाभी
डॉ० राजेन्द्र प्रताप चन्द
श्रीमती ज्योति प्रभा चन्द
अनिल प्रताप चन्द उषा चन्द
बब्बन सिंह-कमला सिंह
मनोज प्रताप चन्द-कुसुम चन्द
कैप्टन नवीन सिंह-पूजा सिंह
अतुल कुमार सिंह (मण्टू)
छोटे भाई
नितिन, रथिन, ऋषभ, ऋतिक
भतीजा
तुषार, त्वेष, शुभम-शिवम्, शौर्य
बहन
कुमारी तृप्ती सिंह

पैतृक स्थायी निवास,
ग्राम व पोस्ट-गोपालपुर
जनपद-गोरखपुर

कन्या-पक्ष

बाबा- श्री पमेश्वर सिंह
(वत्स गोत्रीय)
दादी- श्रीमती नेपाली सिंह
पिता- श्री शिवकरन सिंह
माता- श्रीमती बिन्दु सिंह
बड़े भइया, भाभी
देवेन्द्र प्रताप सिंह
श्रीमती मंजु सिंह
सत्येन्द्र प्रताप सिंह
श्रीमती सरिता सिंह
रवीन्द्र प्रताप सिंह
अरविन्द प्रताप सिंह

भतीजा
अभित्रजीत सिंह
सात्विक सिंह

पैतृक स्थायी निवास-

ग्राम-पिपरी
पो०-वृजमनगंज
जनपद-महराजगंज

सुख - समृद्धि वैभव बढ़े, हो मधुमय आकाश.
वर से बधू, बधू से वर का, फैले अमित प्रकाश...

www.bhojpurisahityangan.com

बियाहे कऽ सिलसिला

जिला महराजगंज के कस्बा वृजमनगंज के पँजरवे के गाँव कऽ रहवइया बाबू शिवकरन सिंह इंजीनियरिंग कऽ पढ़ाई पढ़ि के नौकरी तलासे लगलन। ऊ जमाना रहल सन् इकहत्तर-बहत्तर कऽ। ढेर मेहनत ना करे के पड़ल। पी.डब्ल्यू.डी. विभाग में नौकरी पा गइलन। बियाह तऽ उनकर माई-बाऊ पढ़ते कऽ एगो सुन्नर लइकनी देखि के कऽ दिहले रहलन। पढ़ाई पूर भइते नौकरी मिल गइला से बहुरिया कऽ भाव बढ़ि गइल रहे। बाति-बाति में अपने मरदे से कहि दीहल करे कि देखीं जी हमरे भागी से रउरा के एकहू दिन बेकार बइठे के ना पड़ल, पढ़ाई पूर होते नौकरी मिल गइल। के जानो जदि हमरा से राउर बियाह ना भइल होत तऽ कुछ दिन ले सड़की पऽ एहर-ओहर मँडराये के पड़ल होत। हमार भागि रउरा के साथे जुड़ला से एकहू दिन बेकार न रहेके पड़ल। अपने मेहरारू कऽ ई बाति सुनि के बाऊ साहब पहिले तनि मन ही मन मिसमिसाँय कि हमरे काबिलियत अउर भागी कऽ तारीफ ना करति हई अपनिये भागि भारी रखति हई, लेकिन इ सोचि के कि नौकरी नाहीं मिलत तब का होइत, अबहिन हमरे साथ कऽ कइ लइका लोग नौकरी ना पवले हउअन, हो सकेला मेहरारू कऽ भगियो साथ दिहले होखे, ऊ मुसकिया के हाँ-हाँ कहि कबो चुप रहि जायँ, तऽ कबो कहि उठें कि अरे भाई ! हमरो माई-बाऊ देखऽ केतना पारखी रहलन कि एतना जोरदार भागिशाली लइकनी खोजि के हमरे साथे जोड़लन। मनो-विनोद, गलचउर के समय एह तरह कऽ कबों-कबों बाति उठि जाय अउर दूनो परानी बतिया के हँसे लागें।

बाऊ साहब नौकरी करे लगलन। कबों एह जिला तऽ कबो ओह जिला में बदली भइल करे। ऊ आपन डेरा-डम्बर ले के भागि-भागि के जाये लगलन। भगवान के किरपा से एक के बाद एक पूत पैदा होखे लगलन। लइकन के पढ़ाई कऽ अक्सर बदली भइले

www.bhojpurisahityangan.com

से चिन्ता होखे लागल। देखत-देखत चारिगो पूत भगवान दे दिहलन। लइकनी खातिर बाऊ साहब अउर उनकर मेहरारू देवी-देवतन से मनोती माने शुरू कइ दिहलें। भगवान् उनकर ऊहो ख्वाहिस पूरा कऽ दिहलन। मन माफिक लइकनी पवले से लोग अउर खुश रहे लागल। लइकन के पढ़ाई सिलसिलेवार ठीक ढंग से भइला खातिर एक जगही पऽ थिर होके रहल बाऊ साहब जरूरी समझे लगलन। गोरखपुर शहरी में बशारतपुर मुहल्ला में थोड़ी जमीन खरीद लिहलन अउर मकान जइसे-तइसे बना के पलिवार रखि दिहलन। भगवान के किरपा से फिलिमी मेहरारू पवलही रहलन। ऊ लइकन के लेके बशारतपुर में रहि के लइकन के पाले-पोसे अउर पढ़ावे लगलीं। बाऊ साहब घूमि-घूमि के नौकरी करे लगलन। एक-के बाद एक दुइ लइकन के इंजीनियरिंग पढ़ावे बदे दूसरे प्रदेश में भेजि दिहलन। ऊहवाँ से दूनो जानी पढ़ि के आ गइलन। बड़े जानी दिल्ली में नौकरी पा के चलि गइलन। दुसरे जानी घर-परिवार खेती-बारी में लपटि गइलें। उनके नेतागिरी कऽ शौक रहे, तऽऊ ओहू में गोड़ डारि दिहलन। तीसर का जानी कऽ व्यवसाय में रूचि देखि के बाऊ साहब उनके बरफ कऽ फैक्ट्री खोलवा के अँझुरा दिहलन। चौथा जानी पढ़ाई आगे बढ़वले में जुटल रहलन। देखत-देखत पढ़ाई-लिखाई एम.ए. तक पूरा कइ के बिटिया सीमा सयान हो गइलीं। बाऊ साहब मीयाँ-बीबी के सीमा कऽ शादी कऽ चिन्ता होखे लागल। नात-हित, साथी-दोस्तन के बीच में शादी खातिर लइका ढूँढे लगलन। जहाँ जे बतावे ऊहवां दौरे लगलन। कहीं कुण्डली नाहीं बनत बा, त कहीं लइका कऽ पढ़ाई-लिखाई पूर ना भइल हा, तऽ कहीं लइका कऽ देहि-धजा पसन्द नाहीं बाऽ, कहीं लइका कऽ घर-दुआर पलिवारिक ढाँचा पसन्द नाहीं आवत बाऽ। कवनों-कवनों विधा शादी मनमें ना बइठत रहल। समय बीते लागल। दूनो बड़का लइकन कऽ शादी तऽ चार-पाँच साल पहिलवें कइ भइल रहलन। दुनहुन से पोतन के खेलावे खातिर भगवान दे दिहले रहलन। तीसरे लइका रवि के शादी बदे लोग आवे लगलन। दबाव देखिके बाबू साहब गोरखपुर जिले में एक जगह शादी तय कई दिहलन लेकिन बदान रखि दिहलन की लइकी सीमा कऽ शादी कइले के बाद लइका कऽ शादी करब। एही

www.bhojpurisahityangan.com

बीचे बाऊ साहब दिल कऽ रोगी हो गइलन। इलाज करावे खातिर लखनऊ जाये के पड़ि गइल। इलाज कराके ठीक-ठाक होके आ गइलन लेकिन डॉक्टर लोग दुनिया भर कऽ टिटिम्मा बता दिहलन। बाऊ साहब अब जियादे भाग दौड़ करे लायक ना रहि गइलन। बिटिया सीमा कऽ शादी खोजले कऽ जिम्मेदारी लइका लोगन पऽ आ गइल। लइका लोग भी अपने दोस्त-मित्रन अउर रिस्तेदारन के मदद से शादी खातिर लइका खोजे लगलन। तीसरे लइका रवि कऽ एगो दोस्त रिंकू के जरिये एक लइका कऽ जानकारी भइल। लइका कऽ नाम रहे मोनू।

गोरखपुर जिले कऽ रहवइया मोनू बुलेट मोटर साइकिल कऽ एजेन्सी ले के व्यवसाय कइले हउअन। मोटर साइकिल के शो-रूम पर जाइके मोनू से मिललन। उनके बात-व्यवहार से खुश होके रवि उनके पलिवार तक पहुँच बनवले कऽ जोगाड़ ढूँढ़े लगलन। एकके जानकारी मिलल कि उनही के परिचित आलोक रंजन जी से दुकान खरीद के मोनू आपन शो-रूम बनउले हउअन। रवि तुरन्ते आलोक रंजन जी के पास पहुँच गइलन अउर आपन अइले कऽ मकसद बतवलन। आलोक रंजन जी मोनू के पलिवार से अच्छी तरह से परिचित रहलन। उठलन अउर तुरन्ते मोनू के घरे रवि के ले के चलि पड़लन। मोनू अपने शो रूम पर रहलन। मकान में खाली मोनू कऽ महतारी रहलीं। आलोक रंजन जी के देखि के बाहर निकललीं अउर बइठका में बैठाइ के हाल-चाल पूछे लगलीं। चाय-पानी कइके अइले कऽ मकसद उजागिर कइलन। मोनू कऽ महतारी बतवली कि शादी कई जगह से आइल बाऽ। लइकी कऽ फोटो कुण्डली दे जाईं। कल-परसों में मोना कऽ डैडी आजमगढ़ से आवे वाला हउअन तऽ विचार कइ के कवनों फइसला कइल जाई। रवि इहाँ से उठलन अउर अपने घरे जाइ के फोटो-कुण्डली खोजवावे लगलन। जल्दी-जल्दी में कुण्डली तऽ ना मिलल। फोटो मिल गइल। महतारी कुण्डली खोजल जारी रखलीं। पालिवार में बिना अउर केहू से कुछ बतवले रवि फोटो ले के मोनू के घरे पहुँचि के उनके महतारी के समने रखि दिहलन। फोटू देखि के कुण्डली बदे मोनू कऽ महतारी जोर मारे लगलीं। रवि अबहिन लवटि के घरे पहुँचत हउअन कि उनकर महतारी कुण्डली

www.bhojpurisahityangan.com

खोजि के हाथ में ले के आगोरत रहलीं। पहुँचले मंतर रवि के पकड़ा दिहलीं। रवि खाना-वाना खाइके घण्टा भर बाद कुण्डली ले के फिरो पहुँचि गइलन। रवि के तत्परता अउर चतुराई भरल बाति से मोनू कऽ महतारी परभावित हो गइलीं अउर कहलीं कि बेटा बिहने आवऽ। आजु हम पंडित से कुण्डली देखा लेइ। हो सकेला बिहान आजमगढ़ से अंकल जी यानी मोनू कऽ डैडियो आ जाँय। गंगापुर में विष्णु जी के मंदिर के लगँवे रहत पंडित जी पास लइका अउरी लइकी कऽ कुण्डली ले के मोनू कऽ महतारी साँझि होत-होत पहुँचि गइलीं।

कुण्डली मिलान करत-करत पंडित जी कऽ चेहरा खुशी से खिल गइल, अउर बोलि पड़लन 'ए सरकार ! पहिले मुँह मीठा करावल जा अउर बभने कऽ दक्षिणा बतावल जा तऽ हम कुछ बोलीं।' पंडित जी कऽ भाव-मुद्रा देखि के मोनू कऽ महतारी बोललीं- 'कहीं-कहीं पंडित जी ! अरे मुँहओ मीठ होई अउरी दक्षिणो मिली। पंडित जी जजमान के आसवासन दिहला पऽ बोललन' रउरे बहुत कुण्डली देखवलीं लेकिन एतना निम्मन नाहीं बनत रहल। कुण्डली बत्तीस गुण से बनति बा। कुण्डली के हिसाब से लड़की कऽ नाक नकस भी ठीक होई अउर रँगवो साफ होई आगे बातचीत करीं। हमरी ओर से सब ठीक ठाक बाऽ। लड़की बहुतै किसमति कऽ बा। घर में आयी तऽ राउर अउर तरक्की होई। पंडित जी के दान-दक्षिणा दे के मोनू कऽ महतारी मन बना के घरे लौटली। रतिये में मोनू कऽ डैडियो आजमगढ़ से आ गइलन।

अगले दिन सबेरे आठ बजे से ही शादी तलासे वाले वरदेखुवा मोनू के घरे आवल शुरू कइ दिहलन। एक दल आइल चाय-पानी पी के कुछ बातचीत कइ के गइल तऽ दुसरका दल आ गइल। रवि भी अइलन तऽ दरवाजे पऽ कइ गो गाड़ी देखि के आगे बढ़ि गइलन अउर जाइके रंजन जी के वहाँ बइठि गइलन। कुछ देर बितले पऽ अइलन। संयोग से आइल दल वापस जात रहल। रुकि के थोड़ा इन्तिजार कइलन अउर दल वापिस होते बइठका में आ गइलन। नमस्ते बन्दगी कइलें अउरी बइठलन। चाय-पानी कऽ सिलसिला शुरू भइल।

www.bhojpurisahityangan.com

ऊपर वाले मंजिल पऽ मोनू कऽ बहिन तनू अउर उनकर सलेहरी प्रेक्षा अपने ट्रेनिंग सेन्टर पऽ जाये बदे तैयार रहलीं। ट्रेनिंग सेन्टर बशारतपुर मुहल्लवे में रवि के घर से थोड़िके दूर पऽ हऽ। मोनू कऽ महतारी लइकिन के जाये बदे तैयार देखि के वोह लोगन से बोललीं,-'ए बेटी ! तूहन लोगन जात हऊ। वोहरे रवि कऽ घर बा, कउनो सूरत से एह फोटू वाली लड़की सीमा के देखि लेतू तऽ बड़ा निक रहत। जदि देखलहू में ठीक-ठाक होत तऽ एही के तय कइ लिहल जात।' दूनो बिटिया लोग देखले कऽ बीड़ा उठा के चलि दिहलीं। जाये खातिर इ लोग जीप पऽ बइठि गइलीं। रवि कऽ मकान ई लोगन के घर से लगभग ढाई किलो मीटर हउए। अन्दाज से ई लोग रवि के घर के पास सड़की पऽ रोकि के इधर-उधर पूछल शुरु कइली। रवि कऽ मकान तनी गली में भइले से आसानी से नाहीं मिलल। कई जगह पूछे के पड़ल। पुछले के बाद मुख्य फाटक तक गइलीं। अन्दर ताक-झाँकि के देखलीं। केहू ना लौकल। तनु लौटे बदे प्रेक्षा से कहलीं। प्रेक्षा कहलीं कि अरे भाई इहाँ तक जदि हमनी आ गइल हँई तऽ बिना देखले लौटल कवन बुद्धिमानी हऽ। चलऽ घण्टी दबावल जा। कवनो बहाना से बुलावल जा अउर देखि-बतिया के चलल जाई। तनु घबराये लगलीं। कहलीं, 'अरे भाई का बतिअइबू ? लोग सोची ? ई कवन लड़की हऽ ? कहाँ से आइल हऽ ?' तनू कऽ घबड़ाहट देखि के प्रेक्षा तनी कड़ी होके कहलीं, 'तू चुपचाप रहऽ देखऽ हम कइसे बतिआवेलीं।' ई कहत-कहत प्रेक्षा घण्टी कऽ बटामि दबा दिहलीं। घण्टी कऽ अवाजि सुनते एक मनई बहरिआइल अउर पुछे लागल, का बाति हऽ। प्रेक्षा बोललीं-'सीमा से हमने मिले बदे आइल हईं।' ऊ मनई सीमा कऽ दुसरे नम्बर कऽ नेता भइया रहलन। अन्दर जाते आवाजि दिहलन, 'सीमा ! देख केहू तुहसे मिले आइल बा।' सीमा रसोई घर में कुछ साफ-सफाई करति रहलीं। भइया कऽ आवाजि सुनि के चट से बाहर निकल अइलीं। दुइ गो बिना जानल-सुनल लइकी देखि के बुझि ना पवलीं कि काहे बदे आइल होइहैं। सीमा बोललीं, 'आव लोगन बइठा।' सीमा के आग्रह पर लोग बहरवें रखल कुर्सी पर बइठि गइलीं। सीमा पूछि बइठलीं-'कहा तोहन लोगन कइसे आइल बाटू। हम पहिचानत

www.bhojpurisahityangan.com

नइखीं।' प्रेक्षा बोललीं, 'सीमा ! तूँ पहिचानत नइखू ? हम प्रेक्षा हईं तुहरे साथे ए.डी. कालेज में पढ़ले रहलीं। केहू बतवलस हऽ कि तूँ सिलाई-कढ़ाई सीखेलू। हम सोचलीं कि चलीं तुँहसे पूछि के वोही स्कूल में हमहूँ दाखिला लेके सीखे लागीं। एही बदे आइल हईं।' सीमा पहिले अपने दिमागे पर जोर देके प्रेक्षा के साथ पढ़ाई कऽ याद कइलीं, सुरता पर भेंटि ना चढ़ै। फिर सोचलीं छोड़ऽ जवना खातिर आइल बाटी उन कऽ मकसद पूर होखे बोललीं ऊ कवनो इसकूले में ना जालीं। तू लोग के इसकूल चाही तऽ हम बतावत हईं। थोड़िके दूरी पऽ एक निम्मन इसकूल सिलाई-कढ़ाई कऽ आगे गली में हऽ। पक्की सड़क से थोड़ा आगे जइके बाँये तरफ गली पड़ी वोहि में मुड़ि के लगभग पचास गज चलले पर इसकूल हऽ, केहू से पूछले पर पता चलि जाइ। अच्छा तू लोगन के केहू से पूछे-पाछे के ना पड़े हम अपने घर कऽ नौकर साथ में लगा देत हईं, ऊ देखले बा, पहुँचा देई। तूँ लोगन के कवनों परेशानी ना होई। प्रेक्षा सोचलीं कि सिलाई-कढ़ाई स्कूल तऽ हमने के जायेके ना बा। नौकर साथे लगा दिहें तऽ एगो समस्या होई। प्रेक्षा ई सोचि के बोललीं, 'सीमा कवनो बाति नाहीं हमने समझि गइलीं अब चलि जाइब जा। ठीक, अब जात हईं जा।' ई कहत-कहत उठि के चल पड़लीं। सीमा अउर कवनों स्वागत-सत्कार कऽ बाति ना कहि पवलीं। पहिले कऽ परिचय भइल रहल इ गुत्थी दीमागे में लेके सीमा सोचे लगलीं। एही बीचे सीमा कऽ भइया जवन मोनू के घरे गइल रहलन, लौटि पड़लन। अपने घरे के पास सड़की पर खड़ी जीप में दुइगो लड़की बइठत दुरहीं से देखत हवें। पास आवत-आवत जीप रवाना हो गइल। लइकी लोगन के तऽ ना चीन्हि पवलन लेकिन ड्राइवर अउर जीप चीन्हि गइलन। ई जीप मोनू के घर के पास खड़ी देखले रहलन। सोच में पड़ि गइलन कि ई जीप काहें बदे यहाँ आइल ? लइकी लोग काहे आइल रहलि होइहन ? अपने घर में पहुँचि के पूछे लगलन कि केहू आइल तऽ ना न रहल ? नेता भइया बतवलन कि दुइगो लइकी सीमा से मिले खातिर आइल रहलीं। आगे पूछलन कि ऊ लइकी कहाँ कऽ रहलीं। नेता भइया कहलन कि सीमा जाने। उनहीं से दुनो मिले आइल रहलीं। रवि तुरन्ते सीमा के आवाज दे के बोलवलन और

www.bhojpurisahityangan.com

उनहुँ से पूछि पड़लन। सीमा कहलीं हमहू ना जनतीं सिलाई-कढ़ाई कऽ इसकूल पूछति रहलीं। हम ऊ लोगन के बता दिहलीं, तुरन्ते चलि गइलीं। रवि कहलन कि अरे चाय-पानी ना पिअवलू हऽ। हमरे जानत में इ लोग वोही घर क हई जहाँ बियाह बदे हम गइल रहलीं। ई सुनते सीमा घबड़ा गइलीं उनके चक्कर आवे लागल ऊ गिरे-गिरे हो गइलीं। एही बीच उनकर महतरियो आ गइलीं। ऊ सीमा के पकड़ि के कुर्सी पऽ बैठवलीं झट से पंखा चला दिहलीं अउर दिलासा देवे लगलीं। सीमा तनी देर में हिम्मत कइ के बोले लगलीं। कहती हई कि हम तऽ रसोई घर में सफाई करत रहलीं। पूजा-पाठ होखे के हउए। सोचलीं ठीक से साफ-सफाई कऽ देईं। हम का जानी ऊ लोग के हऽ। हम तऽ अइसहीं चलि गइलीं। पता नाहीं ऊ लोग का सोचले होइहैं। रवि भइया कहलन- 'घबड़ा जिन कौनो बाति ना हऽ। ऊ लोग बहुत ठीक मनई लागत हवें कउनो उल्टा बाति ना होई, रूक ! हम तनी पूछि के पक्का करीं कि उहे लोग रहल कि केहू अउर रहल। रवि कऽ अंगुली तुरन्ते मोबाइल फोन के बटामि पर चले लागल।' फोन पर मोनू कऽ महतारी से बतिया के पक्का कइ लिहलन कि उहे लोग रहलीं। थोड़िके देर बाद रवि फिरो मोनू के घरे आ गइलन। अवते मोनू के महतारी के बुलवा के पूछे लगलन कि कवनो बाति नाहिन हऽ। दीदी लोग का कहीं ? मोनू क महतारी बोललीं, 'दीदी लोग तऽ अपने इसकूले उहें से चलि गइलीं। हाँ टेलीफोन से बाति कइलीं हँ।' ऊ लोग तऽ अच्छा 'रिपोट' दिहलीं। ऊ लोग तऽ तारीफे कइलीं। साम कऽ पिताजी के लियवा के आव तऽ कुछ बतकही हो। एही बीचे मोनू कऽ डैडी भी रवि के पास आ गइलन। रवि अपने चतुराई भरल अन्दाज से मोनू के डैडी से बोललन-'अंकल जी ! कहीं बाऊ हमके पूछे कि सादी में का खर्चा-वर्चा करेके पड़ी कुछ अन्दजलऽ तऽ हम का बताइब? बड़ा अच्छा रहत जदि आप कुछ संकेत कइ देतीं।' मोनू कऽ डैडी भी वोतने चतुराई से जवाब दिहलन, 'देख बेटा ! जदि तुहन लोगन कऽ पांच खर्चा कइले कऽ इरादा होखे अउर हम पन्दरह कऽ बाति कहि देईं तऽ तूहन लोगन बिचुकि जइबा अउर रिस्ता ना हो पाई। एहमें अच्छा इहे हऽ कि हमसे कुछ नऽ पूछऽ। जवन तुहन लोगन कऽ

www.bhojpurisahityangan.com

बेवत-विस्तार होखे वो हिसाब से खरच-बरच करिहा।' रवि ई सुनि के लौटि पड़लन। साँझी कऽ अपने नेता भइया अउर बाऊजी के लेके रवि फिरो आ गइलन। दुआ-सलाम के बाद, चाय-पान कऽ दौर शुरू भइल। रवि कऽ बाऊजी अपने नौकरी, स्वास्थ्य अउर दिन चरिया कऽ बाति बतिअवले के बाद कहत हऊअन कि रवि काल्ही से दौरत हउअन लेकिन हमके कुछु ना बतवलन। साँझी कऽ कहत हउअन कि बाउजी एक जगह अब्बे एक घण्टा के बाद सीमा के शादी खातिर चले के बा। तब हम पूछि पड़लीं कि कहँवाँ, कइसे ? तब कुलि बात बतिअवलन। हम कहलीं कि अरे भाई ! सादी बदे हम कहँवाँ-कहँवाँ दौरलिन ई जगहि तऽ पँजरवे बा। एहमे कवन बाति बा। चला तैयार होत हईं। रवि आगे कहलन कि ऊ लोग अजुए आप के बोलवले बा नाहीं तऽ लइका कऽ बाऊ बिहाने आजमगढ़ चलि जइहें। ई सुनि के तुरन्ते हम तैयार होखे बदे चलि दिहलीं। देखीं अब तऽ हमने आ गइल बानी जा। कहीं आगे का हुकुम बा। मोनू कऽ डैडी कहलन- 'देखीं, हुकुम कऽ कवनों बाति नइखें बा। सादी कुण्डली के हिसाब से बढ़िया बनत बा, हमरियो घरे झुकाव आप के तरफ हो गइल बा। लगत बाऽ कि ग्रह-नक्षत्तर कऽ आजु एऽ सादी कऽ तय करवले पर नजर हो गइल बाऽ काहे से कि सादी तऽ कई-कई अइली लेकिन एतना झुकाव कवनों पलिवार कऽ नाहीं भइल रहल हऽ। आप के हमहन के बारे में कुछ पूछा-पेख, छान-बीन करे के होखे तऽ कइ लेईं। जदि हमनी कऽ रिस्तेदार बनावे लायक समझति होईं तऽ सादी-बियाह कऽ दिन-तारिख शोधाई अउरी बात आगे बढ़ाई।' बाऊ साहब कहलन कि देखीं हमने कऽ रउरा बारे में कुल्हि जानि-सुनि के दुअरे पऽ आइल बाटीं। कुछ पूछे-जाँचे के नइखे अपना कहीं। मोनू कऽ डैडी बोललन तऽ निश्चिन्त रहीं, सादी तय मानीं। हाँ, आप कऽ अउर हमार दूनो पलिवार सहरिये में बाऽ तऽ बड़ा अच्छा रही कि दूनों पलिवार कऽ आपस में भेटि-मुलाकात हो जा। कवनों दिन-स्थान तय कइके बता दिहल जाइ अउर हमहन कऽ मिल लीहल जाई। देखीं हमरे मेहरारू कऽ एगो कमजोरी हउए, बहू लोगन से टेलीफोन पऽ दुसरे-तिसरे बतिअवले बिना रहि ना जाला। अब ऊ सीमा से भी बतिअवले बिना परेसान रहिहैं।

www.bhojpurisahityangan.com

एहसे समना करावल जरूरी बाऽ। बाऊ साहब तनी-मनी ससंकित भइलन लेकिन तुरन्ते हामी भरि के कहलन कि जब्बे कहीं तब्बे कवनों बाति नहीं बाऽ। ई तऽ बड़ा अच्छा रही। वोह दिन एतना बाति कई के विदा-विदाई ले के बाऊ साहब चलि गइलन दिन नियत कइ के होटल पार्क रेजिडेन्सी में मिलन कऽ समय तय हो गइल। बाऊ साहव अपने पूरे पलिवार अउर साले-सरहज के लेके होटल में पहिलवें से पहुँचि गइलन। एहर मोनू कऽ महतरियो अपने बहू-पूजा, पोता शौर्य, बिटिया-तनू, मोनू अउर मोनू के डैडी के साथ पहुँचि गइलीं। चाय-पान कऽ दौर चलल। चेहरा पऽ हँसी-मुस्कुराहट तऽ लइकनी पक्ष के लोगन में रहल त लेकिन अन्दर से पुरहर खुशी ना जान पड़त रहल। लइकनी सीमा भी घबड़ाइल रहलीं। लेकिन मोनू कऽ महतारी जइसहीं अपने बटुआ में से एक जवर सोने कऽ सिकड़ी निकालि के सीमा की तरफ बढ़वली सब कऽ विसवास बढ़े लागल। सिकड़ी पहिनवते सब लोग आस्वस्त हो गइल। फोटो कैमरा कऽ लाइट भक्क-भक्क जरे-बूते लागल। आन्तरिक खुशी के साथ सबकर चेहरा खिले लागल। सीमा के महतारी कऽ बटुआ भी हल्लुक ना रहे। उहो खोललीं अउर मोनू के गटइ में सिकड़ी पहिनइबे तऽ कइलीं। ताबड़-तोड़ सबके हाथे में एक-एक अंगुठियों पहिना दिहलीं, फिर हर केहू हँसी खुशी से अपने-अपने घरे गइल।

साथी-सँहतिया, भाई-पट्टिदार, गाँव-गिराव, टोला-महल्ला, नात-रिश्तेदार सब कऽ पुरहर आशीर्वाद लिहले खातिर सादी-बियाह के रसम रिवाज पुरा कइले कऽ दिन तारिख तय हो गइल जवने में सब हर के आशीर्वाद कऽ कामना दुलहा-दुलहिन कइले बाड़न।

-इंजीनियर राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com



ओ साँवरी-
ओ साँवरी !
गीत के वन मोगरे की-
गंध-पूरित पाँखुरी.
शब्द से, स्वर से, प्रणय-
अनुभूति से, सत्यम् शिवम्,
सुन्दरम् का श्लोक रचता मन-
मेरा शाकुन्तलम्,
कंचनी ग्रीवा से ढलके-
केश की कादम्बरी.
ओ साँवरी ! ओ साँवरी !!

"शबाब का है बहारे-रंगी-
बहार का है शबाब सेहरा,
अगर है इसका जवाब कोई-
तो खुद है अपना जवाब सेहरा,
ज़हे-मुकद्दर है जश्ने-शादी-
बरआई दूल्हे के दिल की हसरत,
है जिस कदर कामयाब दूल्हन,
है उतना ही
कामयाब सेहरा."

www.bhojpurisahityangan.com

१३९

ननिहाल की कुछ यादें

-प्रमोद कुमार सिंह
एडवोकेट

जब से ज्ञात हुआ कि भोजपुरी के विकास के लिए कार्य करने वाली संस्था "भोजपुरी संगम" (गोरखपुर) मामा जी (श्री राजेश्वर सिंह) के ७५वें जन्मदिवस पर एक अभिनंदन ग्रंथ भोजपुरीभूषण प्रकाशित कर मामाजी को सम्मानित करना चाहती है उक्त अभिनंदन ग्रंथ में हम सबको भी अपना संस्मरण प्रकाशित कराने का अवसर मिलेगा, हमें प्रसन्नता के साथ-साथ गर्व की अनुभूति हो रही है।

सरकारी सेवा की जिम्मेदारी व अन्य व्यस्तता के बावजूद भोजपुरी भाषा के उत्थान के लिए साहित्य लेखन, महत्वपूर्ण एतिहासिक धार्मिक ग्रन्थों का भोजपुरी भाषा में अनुवाद न एक क्रान्तिकारी प्रयास है, वरन भोजपुरी भाषा के प्रति मामाजी का विशेष लगाव एवं समर्पण को भी प्रदर्शित करता है। गोपालपुर परिवार में मामाजी पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने साहित्य, कहानी एवं पौराणिक ग्रंथों का भोजपुरी भाषा में सफलता पूर्वक लेखन का प्रयास किया। हालांकि परिवार में "ज्योतिषी नाना" ने भी कई पुस्तकें लिखी पर उनकी पुस्तकें हिन्दी एवं संस्कृत भाषा में थीं।

चूंकि ननिहाल में नातियों में मैं सबसे बड़ा हूं इसलिए मुझे लगता है कि अन्य सभी मौसेरे भाई-बहनों से अधिक प्यार, दुलार का लाभ मुझे मिला, मामाजी के साथ-साथ परिवार के अन्य सभी सदस्यों से भी मुझे अत्यधिक प्यार एवं मान मिलता रहा।

मेरे बचपन का काफी समय नानाजी के संरक्षण में ननिहाल में व्यतीत हुआ। इसलिए ननिहाल की यादें भी बहुत हैं, हालांकि बचपन में मामाजी को पढ़ाई के सिलसिलें में ज्यादातर समय गोरखपुर रहने एवं उसके बाद सहायक अभियन्ता जल निगम के रूप में सरकारी सेवा में रहने एवं अविभाजित उत्तर प्रदेश के उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्रों में तैनाती एवं मेरी भी पढ़ाई के लिए बाहर रहने के कारण कम ही मुलाकात हो पाती थी।

सम्भवत: १९७१-७२ में मामाजी के विवाह में बारात जाने और इन्द्रदेव की विशेष कृपा (अतिवृष्टि) के कारण बारात की याद जरूर है। मैं मंझले नाना (श्री छंगे सिंहजी) एवं गोपालपुर रियासत के आदरणीय कुंवर साहब (मैं उनके इसी नाम से परिचित हूँ) के साथ कुँवर साहब की

www.bhojpurisahityangan.com

एम्बेसडर कार से बारात गया था। जबरदस्त जलभराव के कारण गाँव के नजदीक जहाँ तक सड़क थी कार जा पायी उसके आगे की यात्रा हरिहरपुर गाँव तक लगभग पूरी बारात हाथी से ही दरवाजे तक जा पायी थी, मैं हाथी पर डरते-डरते बँधा रस्सा जोर से पकड़े बैठा रहा। जहां तक मुझे याद है तीन दिन की बारात में बाराती केवल द्वारपूजा के समय कुछ देर के लिए ही दरवाजे तक जा पाये थे, बाकी समय बाराती गांव में घर के आसपास उपलब्ध पड़ोसियों की बैठकों, बरामदों में व्यवस्था की गयी चारपाई पर ही नास्ता, भोजन कर आराम करते रहे। इन्द्रदेव ने अनावश्यक रूप से बारातियों को उछलने-कूदने का मौका ही नहीं दिया, विवाह के अन्य संस्कारों के लिए सिर्फ दुल्हा (मामाजी) डोली में जा पाते थे।

वर्ष १९८०-८१ में मामाजी का स्थानान्तरण मैदानी क्षेत्र बहराइच में होने के बाद से मैं लगातार सम्पर्क में रहा। अप्रैल १९८१ में हाई स्कूल परीक्षा के बाद मैं पहली बार अकेले अपने घर तुलसीपुर से बहराइच गया था। फोन आदि की सुविधा न होने के कारण बड़ी मुश्किल से अकेले जाने की अनुमति मिली थी। फिर तो मैं अकेले आने-जाने का विशेषज्ञ हो गया बहराइच से आने के कुछ दिन बाद ही नाना जी के निर्देश पर मैं माता जी को लेकर २०-२१ मई को पुनः बहराइच गया, २१ मई को ही तनु (मामाजी की बेटी) का जन्म हुआ।

संचार माध्यम, मोबाइल फोन आदि उपलब्ध होने के कारण अब तो लगभग नियमित ही सम्पर्क में रहता हूँ। हालांकि इसके श्रेय अकेले मामाजी को ही जाता है। मैं भले ही आलस कर जाऊँ पर मामीजी का सप्ताह में एक-दो बार फोन आ ही जाता है। पापा एवं माताजी के देहावसान के बाद मेरे अपनों में सबसे बड़े होने के कारण मैं कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले मामा जी एवं मामी जी से सलाह करने की अवश्य कोशिश करता हूँ। परिवार एवं रिश्तेदारी कैसे बनाए रखी जाती है सीखने के लिए मामाजी हम सबके लिए आदर्श हैं, हलांकि इसका श्रेय अकेले मामाजी को देना मामीजी के योगदान को अनदेखा करना होगा, मामीजी हमारे लिए सम्पूर्ण रिश्तेदारियों की सूचना प्राप्त करने की "इनसाइक्लोपीडिया" है।

मामा एवं मामीजी की सक्रियता एवं रिश्तों के प्रति आत्मीयता के कारण ननिहाल पक्ष की जिनती भी रिश्तेदारियां हैं, आज भी लगभग सभी एक दूसरे के सम्पर्क में रहते हैं एवं आयोजनों में अधिकांश लोग सम्मिलित होने का प्रयास करते हैं। इसी वर्ष १२ फरवरी २०२४ को मेरे बेटे के विवाह में अकेले गोपालपुर से सम्बद्ध ३४ लोग सम्मिलित हुए थे। मैं तथा मेरा पूरा परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मामा जी स्वस्थ एवं सानन्द रहें तथा इसी तरह मामाजी का संरक्षण और आशीर्वाद हम लोगों पर बना रहे।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

स्मृतियों के झरोखे से

-भोला नाथ सिंह

स्मृतियों के झरोखे से कुछ विशेष बातें साझा करने की उत्कट इच्छा हो गई मेरे स्मरण और संस्मरण की, भाई वैवाहिक बंधन में बंधे अपने तकनीकी शिक्षा के मध्य में, इस राजेश्वर को एक राजकुमारी (मेरी भाभी जी का मूल नाम) मिलीं और जीवन दाम्पत्य को ईश्वर के आशीर्वाद से कई खुशियां एक साथ मिली। नियुक्ति और दाम्पत्य सृजन में एक नवीनता नवीन (भाई के बड़े पुत्र) के रूप में प्राप्त हुई। अब यहाँ गौर करने वाली बात राजकुमारी जी ने भाई राजेश्वर जी को राजयोग (अपने पूर्वजों के आशीर्वाद से) अपने साहचर्य और अंगीकार कर दिया। मृदुभाषी, हँसमुख और कुछ कुछ चुलबुली भी मेरी भाभी जी का स्वभाव था। भाई को उत्कर्ष पर पहुँचाने में सबसे अहम रहा। परिवार, भाई, बहन, बेटी सबको अभिसिंचित किया अपने व्यवहार से जो मेरे भाई को बिना रोक-टोक हर आयाम पर आगे बढ़ने में सबसे अधिक योगदान रहा। इन्होंने उस लोकोक्ति को सही मायने में चरितार्थ किया कि एक सफल पुरुष के पीछे एक नारी का हाथ होता है।

भाई के अंदर एक इंसान जो इंसानियत से लबरेज था उसे पुष्पित पल्लवित करने का श्रेय मेरी भाभी जी को जाता है। भाई, अपनी नौकरी के दौरान बहुत सारे जगहों पर रहें और अपने मृदुभाषी हँसमुख स्वभाव की वजह से अपने मातहतों के बीच खासे लोकप्रिय रहे। आजमगढ़ में प्रथम नियुक्ति के उपरांत बागेश्वर, रानीखेत, बहराइच, बनारस आदि शहरों में ज्यादा प्रवास रहा। इन शहरों में इनके मातहत सहकर्मी आज भी इनके सदाशयता और उदारता की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं, इसी संदर्भ में आजमगढ़ की एक घटना जो मुझे प्रासंगिक लगा तो अपना मन हल्का करने के लिए ही सही पर कर दे रहा हूं। भाई का एकाएक स्थानांतरण बिना किसी गलती और बिना सूचना राजनीतिक विद्वेष के कारण हो गया। उस दौरान कल्याण सिंह जी की सत्ता थी जो मुख्यमंत्री के रूप में उस कालखंड में सबसे बेहतरीन प्रशासक और राजनयिक थे। किसी स्थानीय राजनेता ने अपने स्वार्थ में करा दिया पर नाम व गुण मेरे भाई का भारी पड़ा और स्थानान्तरण रद्द हुआ। भाई के चेहरे पर मुस्कान अभी स्थिर होने की प्रक्रिया

www.bhojpurisahityangan.com

में पहुँच पाती कि फिर कद्दावर नेताओं या यूं कहें पिपासु नेताओं ने एक सप्ताह के अंदर ही दूसरी बार करा दिया फिर भाई के छात्र जीवन (इंजीनियरिंग कॉलेज) के एक जूनियर जो उन दिनों एक सशक्त राजनेता और मंत्री भी रहे, अपने व्यक्तिगत सम्मान से जोड़कर पुन: रद्द करवाया, भाई का लगाव आजमगढ़ से कुछ विशेष रहा भी, कारण प्रथम नियुक्ति भी शायद रही हो, खैर हम सबने उस खुशी को सेलिब्रेट किया और माननीय मंत्री श्री यशवंत सिंह साहब का आभार प्रकट किया। पुन: तीसरी बार बीस एक दिनों के अंदर ट्रान्सफर हो गया जो शायद ट्रांसफर पोस्टिंग का एक इतिहास है, फिर मेरे भाई का कृतित्व आगे आया और इस बार विधान सभा के मुख्य सचेतक बाबू नरेन्द्र सिंह जी सामने आये और बात जल निगम के चेयरमैन भोलानाथ तिवारी तक गई, उन्होंने मातहतों से भाई के कार्य पर फीडबैक लिया और अपने कलम से त्वरित कार्रवाई करते हुए स्थानांतरण रद्द किया। समय-समय पर ट्रान्सफर होता रहा और घूम कर नौकरी करते रहे।

भाग्य ने चमत्कार किया और उच्च पदस्थ हो आजमगढ़ फिर आये और सेवानिवृत्त भी। भाग्य का खेल देखिए यहीं से नौकरी शुरू और यहीं से सेवानिवृत्त। आयुर्वेद और पाक-कला इसी जगह प्रस्फुटित हुआ था जो जीवन को सुगम बनाने में सहायक हुआ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१४१

भाई साहब ने सबको चकित कर दिया

-डॉ0 सरोज सिंह

सत्कर्म, निष्ठा एवं सहयोग के प्रेरणास्रोत श्रद्धेय भाई साहब (ज्येष्ठ जी) के सद्वृत्तियों का आकलन तथा सद्गुणों की गणना करने की भला मेरी क्षमता कहाँ और न ही मेरे पास शब्द ही हैं। अपितु माँ शारदे की वीणा के झंकार ने मेरे मन मयूर' के झंकृत कर दिया।

फलत: कुछ लिखने को कलम उठ गयी। संयोगवश परिवार के किसी कार्यक्रम में देवर भोलू बाबू (भोला नाथ सिंह) का आगमन कालेपुर (गौतमनगर), गोरखपुर स्थित मेरे आवास पर हुआ। अपनी पुत्री स्मृति (पिंकी) की शादी तलाशने की चर्चा हमने उनसे शुरू की। उनकी जानकारी में ग्राम-कैथी, वाराणसी के एक लड़के की थी। उन्होंने बताया कि रघुकुल वंशज बाबू अजीत सिंह, एडवोकेट के अनुज श्री अभय सिंह का बड़ा पुत्र शादी योग्य है। वह भारतीय सेना में सेवारत है। परिवार के लोगों का आचरण व व्यवहार अच्छा है। मैं विगत चार-पाँच वर्षों से उन लोगों के सम्पर्क में हूँ। परिवार में कोई दोष-दुर्गुण नहीं पाया हूँ। उनसे बातचीत की जा सकती है। मैंने उनसे कहा कि शीघ्र सम्पर्क कर बात चलाइये। उन्होंने कहा कि कुण्डली की प्रति दीजिये, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वे पहिले कुण्डली मिलान करेंगे, अनुकूलता होने पर ही बात आगे बढ़ायेंगे। भोलू बाबू कैथी जाकर कुण्डली की प्रति दे आये। संयोगवश कुण्डली के अनुकूलता पंडित लोग बता दिये। वकील साहब ने किसी के माध्यम से भोलू बाबू को आकर बात-चीत करने हेतु सूचना दी। भोलू बाबू के ध्यान से उनकी सूचना ओझल हो गयी वे मिलने नहीं गये।

छ: माह बाद बड़ी ननद जो बड़हलगंज-गोरखपुर में रहती हैं, उनके वहाँ कोई उत्सव था। हम लोगों के परिवारजन वहाँ पहुँचे हुए थे। अपनी जेठानी (इन्जीनियर साहब की पत्नी), से मैं बता चुकी थी कि किसी शादी के निमित्त भोलू बाबू बिटिया पिंकी के कुण्डली की प्रति छ: माह पहिले ले गये थे, परन्तु कुछ बताये नहीं। जेठानी जी की नजर जैसे ही भोलू बाबू पर पड़ी। देखते ही उनसे बोल पड़ीं-"देवर जी ! छ; माह से पिंकी के कुण्डली के नकल जेब में रख कर घूम रहे हैं। उसे लड़के के घर वालों तक पहुँचाने का भी समय आपको नहीं मिल रहा है क्या ?" भोलू झेंपा गये, कहने लगे-"भाभी ! कुण्डली हमने पहुँचा दी थी, लड़के वाले मिलान

www.bhojpurisahityangan.com

कर अनुकूलता पाने पर आ कर बात करने की सूचना भी दिये थे, परन्तु मैं भूल गया वहां गया नहीं।'' वह बोलीं-कभी आप भूल जायेंगे, कभी भइया लोगों को समय नहीं मिलेगा तो काम कैसे होगा? क्या यह जरूरी काम नहीं है ? आप के दूनो भइया लोग यहाँ आये हुए हैं। कल यहाँ के कार्यक्रम बाद आप लोग जाइए और मिलकर बात करिये। यह काम सबसे जरूरी है। भोलू को अपने भूल का एहसास हुआ और अपने दोनों भइया लोगों से मिलकर अगिले दिन कैथी जाने का कार्यक्रम बना लिए। संयोग से अगिले दिन अवकाश का दिन था, वकील साहब से घर पर ही मुलाकात हो जाने की सम्भावना थी।

घर के सामने पहुँच कर बाहर खड़े एक पड़ोसी बालक से भोलू बाबू ने कहा कि अन्दर जाकर कह दो भोलू अपने भइया लोगों के साथ आये हैं। बालक ने बरामदे में पड़ी कुर्सियों की तरफ बैठने का इशारा कर सूचना देने अन्दर चला गया। वकील साहब बाहर निकलते ही भोलू पर बरस पड़े। कहने लगे-''अरे भाई ! लड़की की शादी ऐसे खोजी जाती है कि कुण्डली देकर गायब हो जाइए। हमने कुण्डली मिलान कर तुरन्त आपको सूचना दी। छः माह से ऊपर हो गया, आपके कान में जैसे सूचना गयी ना हो। हमने आपके बहुत करीबी आदमी से सूचना भेजवायी थी, उसने देने की पुष्टि भी की थी। मेरा लड़का एक माह की छुट्टी में आया भी था। अब तक शादी-व्याह रचाये महीनों गुजर गये होते।'' वे काफी देर बोलते रहे। बोलने का सिलसिला थोड़ी देर के लिए रूका तब जब एक बाहरी आदमी कोई जरूरी सूचना देने के लिए आकर सामने खड़ा हुआ. जैसे ही वकील साहब का ध्यान बटा, हमारे पतिदेव वकील साहब जो जेष्ठजी के बगल में ही बैठे थे, कह उठे-''भइया ! ई तो बहुत जल्दियाये लग रहे हैं, शादी बहुत जल्द करना चाहते हैं। हम लोगों की तैयारी अभी है नहीं।'' इन्जीनियर साहब ने उन्हें हाथ का इशारा कर कहा कि 'उनकी बात अभी पूरी नहीं हुई है, उन्हें पूरा कह लेने दो, खामोश बैठो।' बाहरी आदमी से बात करने के बात वे फिर इन लोगों के तरफ मुखातिफ हुए और बोल पड़े-''हमारे लड़के को अब तो छः-सात माह के बाद ही छुट्टी मिल सकेगी। हाँ, उसके पहले कोई रस्म यानी कार्यक्रम बिना उसके उपस्थिति के हो सके तो किया जा सकता है।'' बात-चीत कर शादी पक्की मान कर वे लोग चले आए।

कुछ दिन बाद सगाई और गोद भराई का कार्यक्रम होने की चर्चा हुई। परन्तु कार्यक्रम स्थल को लेकर सहमति नहीं बन रही थी। लड़का पक्ष के लोग कार्यक्रम वाराणसी में चाह रहे थे और अपने परिवार के लोग गोरखपुर शहर में चाह रहे थे। दूरी के कारण समस्या उठ खड़ी हुई थी। संयोग से ज्येष्ठ जी (इन्जीनियर साहब) की तैनाती आजमगढ़ नगर में थी। जैसे ही समस्या उनके पास पहुँची उन्होंने कहा कि गोरखपुर के लोग न तो वाराणसी जायें और वाराणसी के लोग न ही गोरखपुर जायें दोनों पक्ष के लोग आजमगढ़ नगर में आ जायँ। यहाँ पर व्यवस्था कर दिया

www.bhojpurisahityangan.com

जायेगा। दोनो पक्ष के लोगों में जिन्हें जल्दबाजी होगी वापस जा सकते हैं और जो रात में रुक सकेगें, रुक कर आराम से अगिले दिन लौट लेगें। ठहरने की समुचित व्यवस्था कर दी जायेगी। इस प्रस्ताव पर दोनों पक्ष की सहमति बन गयी। नियत तिथि को समय से सारी व्यवस्था आजमगढ़ नगर के बंधा पर बने गरुड़ होटल में कर दी गयी। होटल में ठहरने के लिए बने कमरों के पीछे एक बड़ा सा हाल था जहाँ पर बड़े आयोजन हुआ करते थे। हाल तक पहुँचने के लिए मुख्य भवन के बगल से सीढ़ियाँ बनी हुई थीं और हाल के सामने खुला मैदान था जो पेड़-पौधों से सुसज्ति था।

कार्यक्रम को संजीदा बनाने के लिए इन्जीनियर साहब (ज्येष्ठ जी) ने एक गोपनीय प्रस्तुति की व्यूह रची थी। उनके बड़े लड़के नवीन की शादी भी तय हो चुकी थी। मंगेतर लड़की को केवल वे, उनकी पत्नी यानी जेठानी जी और नवीन देखे थे। परिवार का और कोई सदस्य नहीं देखा था, क्योंकि अभी तक कोई रस्म तो हुआ था नहीं। लड़की के माता-पिता गोरखपुर शहर में बेतियाहाता के रहने वाले थे। उन्होंने लड़की के पिताजी से बात कर कहा कि हमारे भाई के पुत्री की गोदभराई स्थल गरुड़ होटल से लगभग दो सौ मीटर की दूरी पर एक नया होटल बना है उसमें बिटिया पूजा अपने बड़े भाई के साथ दो-तीन घण्टे पहले आ कर ठहर जाये और गोदभराई के प्रारम्भ होने से पूर्व आ कर अचानक उपस्थित हो जाये। आजमगढ़ में ठहरने की व्यवस्था हम सब करा देंगे। कार्यक्रम में आने वालों के लिए एक सरप्राइज रहेगी। इसकी जानकारी किसी को नहीं होनी चाहिए बर्ना मजा किरकिरा हो जायेगा। पूजा के पिताजी ने खुशी-खुशी सहमति जाहिर की। ज्येष्ठ जी ने अपने इस योजना की जानकारी अपने परिवार के किसी भी सदस्य को नहीं दिया था, यहाँ तक कि जेठानी जी को भी नहीं।

नियत तिथि १२ मार्च सन् २००० को दोपहर बाद चार बजते-बजते सभी आगन्तुक कैथी और गोरखपुर से आ कर होटल में ठहर गये। सभी नाश्ता-पानी के बाद सज-धज के कार्यक्रम हाल में छः बजते-बजते आ गये। गोद भराई सम्बन्धित सामग्री जुटा कर नियत जगह रख दी गयी। बिटिया पिंकी को पूजा स्थल पर बैठने हेतु कहा गया। सभी महिलायें पिंकी को घेरे खड़ी थीं। अचानक प्रवीन बाबू (मोनू) आकर बोले कि डैडी ने कहा है कि थोड़ा रुक जाइए कोई आने वाला है। दो-चार मिनट में आ जायेगा, फिर शुरु करियेगा। सभी लोग हैरान हो गये, सवालिया निगाह से एक दूसरे को देखने लगे कि कौन आ रहा है ? किसके लिए कार्यक्रम रोका जा रहा है ? आने वाले सभी लोग तो आ चुके हैं।

अचानक होटल के बगल से सीढ़ी से एक लड़की सजी-धजी हाथ में एक बुके लिए उतरती दिखी उसके पीछे एक नौजवान भी था। हाल के बाहर खड़े सभी की नजर उधर गई, ज्येष्ठ जी उसके स्वागत के लिए दो-चार कदम आगे बढ़े और उसको हाल की तरफ जाने का इशारा

www.bhojpurisahityangan.com

किये। जैसे ही मंगेतर हाल के दरवाजे की तरफ पहुँची, जेठानी जी उसे देखते ही आश्चर्य से भरकर तेज आवाज में बोल पड़ीं, अरे पूजा ! तुम ? अकवारी में भरते हँसते बोली-"पिंकी देखो, तुम्हारी होने वाली नयी भाभी पूजा भी आ गयी।" उसे देखकर सभी लोग चकित हो गये। लड़कियाँ उसे पकड़ कर नाचने लगीं, सब लोग हर्षोल्लास से भर गये। फिर गोदभराई का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सबने आशीर्वाद दिया और भोज का भरपूर आनन्द उठाया।

ज्येष्ठ और जेठानी जी ने परिवार के मुखिया होने का भरपूर दायित्व का निर्वहन किया। पारिवारिक समस्याओं का निवारण करने की उनमें अद्‌भुत क्षमता एवं अदम्य साहस दिखा। साहित्य सृजन कला के साथ ही साथ आध्यात्मिक रूझान इनमें भरपूर परिलक्षित होता है।

सियाराम मय सब जग जानी ।
करहु प्रनाम जोरि जुग पानी ।।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

राजेश्वर भैया
छोटे भाई की निगाहों में

-रत्नाकर सिंह, एडवोकेट

इंजीनियर राजेश्वर सिंह, मेरे लिए सिर्फ राजेश्वर भैया। मेरी बुआ के लड़के। एक बेहतरीन व्यक्तित्व के स्वामी। हमें जब बताया गया कि इनके सम्मान में अभिनन्दन-ग्रन्थ 'भोजपुरीभूषण' प्रकाशित होने जा रही है तो हमसे भी रहा नहीं गया और चंद शब्द लिखने से मै स्वयं को रोक नहीं सका।

मैं ईश्वर में आस्था रखने वाला व्यक्ति हूँ और मानता हूँ कि ईश्वर ने हम सबको किसी न किसी निमित्त भेजा है और जिसने पूर्व में बेहतर कार्य किए हैं उन्हें इस जन्म में भी बेहतर और सार्थक जीवन जीने का अवसर मिलता है। इस कसौटी पर हमारे राजेश्वर भैया पूरी तरह खरे उतरते हैं। एक मध्यमवर्गीय सामान्य कृषक परिवार में जन्में राजेश्वर भैया को जितना मैं जान सका, उन्होंने अपना पूरा जीवन परमार्थ में ही व्यतीत किया। समय के साथ लोग बुजुर्ग होते हैं, क्षमताएं घटती हैं, पर राजेश्वर भैया समय के साथ और मानसिक सदृढ़ होते गये। जिसका प्रमाण जीवन के उत्तरार्ध में जटिल प्रशासनिक जिम्मेदारियों के मध्य साहित्य सृजन की अभिरुचि का जागृत होना है। अपनी भारतीयता, अपनी माटी, अपना देश, अपनी बानी, अपना भेष, इनको लेकर राजेश्वर भैया एकदम स्पष्ट हैं और कोई समझौता नहीं करते।

हमने तमाम बार बातचीत के क्रम में जितना उन्हें सुना, उन्हें इस बात की कशिश सदैव रही है कि उनकी अपनी बानी भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में जगह नहीं मिल सकी। इसका एक व्याकरण एक लिपि नहीं बन पाया। परिणामत: जगह-जगह की भोजपुरी बदली दिखती है। अपनी इस क्षेत्रीय मातृभाषा को लेकर उनका प्रेम उनके साहित्य में स्पष्ट झलकता है। राजेश्वर भैया एक बेहतरीन इंसान के रूप में हमेशा जाने जाते रहे हैं। एक स्निग्ध मुस्कान आपके चेहरे पर सदैव नृत्य करती है। आपको आवेश और आक्रोश में शायद ही किसी ने देखा हो। हर

www.bhojpurisahityangan.com

बात को समझने और तदनुरूप आचरण को अपनाने की प्रक्रिया ने आपको एक विराट व्यक्तित्व प्रदान किया है। इसी का परिणाम है कि आपकी चंद वर्षों की साहित्य साधना में आपको न केवल उत्तर प्रदेश, वरन बिहार, महाराष्ट्र और अन्य तमाम प्रांतों की अतिप्रतिष्ठित संस्थानों ने विविध सम्मानों से विभूषित किया।

राजेश्वर भैया एक इंजीनियर होने के साथ ही अपने आसपास के परिवेश में कितने रचे बसे रहे, यह उनकी कृति घरेलू नुस्खे से परिलक्षित होती है। सदैव प्रयोगधर्मी राजेश्वर भैया ने एक क्रान्तिकारी कदम उठाते हुए न केवल भोजपुरी में पंचतंत्र, भोजपुरी रामायण और भोजपुरी महाभारत का सृजन किया, बरन दीक्षा गुरु पुस्तक में गुरु की महिमा, राम प्यारा साधु संत में ५१ ऋषियों श्याम पियारा साधु संत में ३८ मुनियों संतों से सब का परिचय करना भी उनके सृजन की असीमित क्षमता का द्योतक है। कहने का मतलब यह की राजेश्वर भैया ने एक इंजीनियर के रूप में जहां देश को बहुमूल्य योगदान दिया वहीं उनके सृजन मन ने भोजपुरी की स्थापना की जिजीविषा को भी भरपूर जिया। आज भी ये साहित्य चिंतन, मनन और सृजन में संलिप्त हैं। माता सरस्वती के इस वरद् पुत्र का छोटा भाई होने में हमें गर्वानुभूति होती है। माता इनको स्वस्थ रखें इनके साहित्य सृजन यात्रा की निरन्तरता इसी प्रकार बनाये रखें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१४३

जैसी मेरी समझ

-डॉ० सुबास शाही

तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर अभियन्ता के पद पर कार्य करने वाले व्यक्ति का साहित्य सृजन में उन्मुख होना आश्चर्य की बात तो है ही और साहित्य सृजन भी अपनी मातृभाषा को जिसमें बात करना भी लोग अपना अपमान समझते हैं, लिखने के नाम पर अपनी नाक-भौ-सिकोड़ने लगते हैं, ऐसी भोजपुरी भाषा को अपनी लेखनी से समृद्ध करने वाले इन्जीनियर राजेश्वर सिंह किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। आज आप का परिचय अभियन्त्रण विभाग (जल निगम) में काम करने के कारण ही नहीं बल्कि एक साहित्यकार के रूप में अधिक हो गया है।

इनका जन्म ४ अप्रैल सन् १९५० को गोपालपुर जो कभी एक स्टेट रहा है और वर्तमान समय में नगर पंचायत गोला बाजार का एक अंग है, अप्रैल १९५० में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। इस परिवार में शिक्षा का माहौल रहा है और लोग सम्मानित पदों कर कार्यरत रहे हैं। मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज से बी०ई० की डिग्री प्राप्त करने के बाद एल.एस.जी.इ.डी. जो अब उ०प्र० जल निगम हो गया है में सहायक अभियन्ता के रूप में आजमगढ़ में सन् १९७३ में अपना कार्यभार ग्रहण किया। गोण्डा, बहराइच, वाराणसी, बलिया, संत कबीर नगर, सिद्धार्थ नगर, देवरिया और गोरखपुर जनपदों के अतिरिक्त वर्तमान के उत्तराखण्ड के बागेश्वर, रानीखेत, स्यालदे आदि स्थानों पर अपनी सेवायें दी हैं।

एक अधिकारी के रूप में अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं अधिकारियों के प्रति आप का व्यवहार सदैव आत्मीय रहा। सेवा काल के दौरान आप अधिकारियों एवं कर्मचारियों से समरसता बनाये रखे। यह आप के व्यक्तित्व की विशेषता ही थी जिससे आज भी लोगों के मन में आपके प्रति सम्मान है। उच्च पदों पर कार्य करते हुए भी कभी भी आप को अपने पद का घमण्ड नहीं था। अपरिचित लोगों से अपना परिचय बताते हुए कभी भी आप यह नहीं कहते कि मैं सहायक अभियन्ता, अधिशासी अभियन्ता या अधीक्षण अभियन्ता के पद पर कार्यरत हूँ, बल्कि अधिकांशतः यह कहते थे कि मैं जल निगम में कार्य करता हूँ। आपकी सरलता और सहजता का एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ।

www.bhojpurisahityangan.com

सेवाकाल के दौरान आपकी तैनाती जनपद बहराइच में थी, वहाँ से गोण्डा स्थानान्तरण हुआ। आप के एक शुभचिन्तक जो अधीक्षण अभियन्ता के पद पर कार्यरत थे, गोण्डा के अधिशासी अभियन्ता से इनकी प्रशंसा करते हुए कहा कि एक कुशल और कर्मठ अधिकारी को आप का सहयोग करने के लिए भेजा जा रहा है। इसका विपरीत प्रभाव पड़ा क्योंकि गोण्डा के अधिशासी अभियन्ता ने समझ लिया कि मेरे ऊपर अंकुश लगाने के लिए इं. राजेश्वर सिंह का स्थानान्तरण यहाँ किया गया है। अधिशासी अभियन्ता ने कई महीने तक इनको कोई कार्य नहीं दिया। इं. साहब ने भी इस पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न कर बड़े धैर्य से कार्यलय में उपस्थित रहते रहे। वे प्रतिदिन १० बजे अपने कार्यालय पहुँच जाते थे और शाम को ५ बजे तक कार्यालय में बैठकर एक पुस्तिका पर 'राम राम' लिखते रहते थे। लम्बे समय के बाद उनको वही काम दिया जाने लगा जो विवादित रहता था और कोई उसे करना नहीं चाहता था। उन कार्यों को भी इन्होंने अपने बुद्धि-विवेक से सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी इनके इस व्यवहार से आश्चर्य चकित थे। कई महीने के बाद अधिशासी अभियन्ता को अपने गलतफहमी का आभास हुआ और वे इनको अधिकांश कार्य देने लगे तथा इनके स्वभाव और कार्य कुशलता से बहुत प्रभावित हए।

इं. राजेश्वर सिंह मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुधा शाही के ज्येष्ठ भ्राता हैं। उनके परिवार से मेरी पुरानी रिश्तेदारी थी, इसलिए जून १९७१ में उनके तिलक समारोह में मुझे उनके घर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। पहली मुलाकात में उन्होंने अपने व्यवहार से मुझे काफी प्रभावित किया। इनके सानिध्य में रहकर अनेक घटनाओं का मैं साक्षी हूँ जो इनके सहज और सरल व्यक्तित्व को परिलक्षित करती है। यहाँ सबका उल्लेख करना सम्भव नहीं है। परन्तु एक घटना का उल्लेख करने के लिए मैं अपने आप को नहीं रोक पा रहा हूँ।

सन् १९८० में आप रानीखेत में सहायक अभियन्ता के पद पर कार्यरत थे। मैं एम०ए० का छात्र था और ग्रीष्मावकाश में भ्रमण हेतु रानीखेत गया था। कुछ दिनों के बाद आपका स्थानान्तरण स्यालदे के लिए हो गया। स्यालदे जाते समय सारा सामान एक ट्रक में लाद दिया गया। बच्चे एवं महिलायें ड्राइवर के सीट के बगल में बैठ गये। जगह न होने के कारण मैं और इनके एक भतीजे श्री बब्बन सिंह जो वहाँ घूमने के लिए गये थे, ट्रक के ऊपर चढ़ गये। यद्यपि आप के लिए केबिन में जगह थी लेकिन आप वहाँ न जाकर अपने पद की परवाह किये बिना हम लोगों के साथ ट्रक में ऊपर चढ़कर बैठ गये। एक रिश्तेदार को सम्मान देने के लिए आप के सरल व्यक्तित्व का इससे अच्छा दृष्टान्त और क्या हो सकता है ?

परिवार में एक पुत्र, भाई, पति, पिता, चाचा, बाबा आदि के दायित्व का आप ने बखूबी निर्वहन किया और किसी के असन्तुष्ट होने का कभी अवसर ही नहीं दिया। सामाजिक दायित्व

www.bhojpurisahityangan.com

का निर्वहन भी कोई आपसे सीखे। सगी और चचेरी नौ बहनें, छः पुत्री और भतीजियाँ दो चार पास पड़ोस की बहनें और भतीजियों, ननिहाल, भाईयों, पुत्रों और भतीजों के ससुराल तथा अन्य रिश्तेदारों के घर किसी भी प्रयोजन में आप का सपत्नीक या स्वयं का उपस्थित होना, ऐसा उदाहरण शायद ही मिले। किसी सम्बन्धी के घर किसी प्रयोजन में पहुँचकर उसके लिए भार बनना या उससे विशेष मान-सम्मान की अपेक्षा करना यह आप के स्वभाव के विपरीत रहा है। सम्बन्धियों के कार्यों में किसी प्रकार सहयोगी बना जाय इस चिन्तन में आप अवश्य रहते दिखे हैं। क्षेत्र या पास-पड़ोस के हर सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में आपकी भागीदारी बढ़-चढ़ कर रहती है।

इं. राजेश्वर सिंह बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं। इन्जीनियरिंग के साथ साहित्य के क्षेत्र में इनका योगदान किसी से छिपा नहीं है। बहुत कम ही लोग जानते होंगे कि आप पाक शास्त्र में भी निपुण हैं। एक अभियन्ता का पाक शास्त्र में निपुण होना आश्चर्य का विषय है। घर पर किसी आयोजन या किसी रिश्तेदार के आने पर आ रसोइये और नौकरों को आवश्यक निर्देश देते रहते हैं। पाकशाला पर आपकी पैनी दृष्टि सदैव बनी रहती है। अनेक प्रकार का अचार बनाने में भी आपको महारत हासिल है, जो किसी आश्चर्य से कम नहीं है। सेवा काल के दौरान प्रतिवर्ष अनेक प्रकार के अचार अधिक मात्रा में बनवाकर एक दो किलों के पच्चीसों डब्बों में रख लेते थे और अपने रिश्तेदारों और शुभचिन्तकों को उनके घरों में जाकर पहुँचा दिया करते थे। इसके अति'रिक्त च्यवनप्राश, कुछ आयुर्वेदिक औषधियों और अनेक प्रकार के मुरब्बे बनाने की तकनीक भी आप को ज्ञात है जिसका उपयोग आप समय-समय पर करते रहते हैं।

प्राचीन काल से ही विभिन्न प्रकार के औषधियो के निर्माण में वनस्पतियों का उपयोग किया जाता रहा है। आज भी आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। छोटे-मोटे रोगों के इलाज हेतु घरेलू औषधियों पर भी आप ने अध्ययन किया। इन औषधियों के प्रचार-प्रसार हेतु आपने अपनी पुस्तक 'घरेलू नुस्खे' में अनेक रोगों और उससे सम्बन्धित औषधियों का नुस्खा संकलित किया है, जो निश्चित रूप से जनमानस के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

सम्भवतः आजमगढ़ में अपने सेवाकाल के दौरान आप का झुकाव साहित्य सृजन की ओर हुआ। आपकी प्रारम्भिक रचनायें हिन्दी में लिखी गयी थीं। भोजपुरी के प्रति लगाव और उसके प्रचार-प्रसार हेतु आपका झुकाव एकाएक हुआ जिसके परिणामस्वरूप अनेक रचनायें हमारे सम्मुख हैं। आप द्वारा सृजित हिन्दी एवं भोजपुरी की पुस्तकों तथा उन पर आपको प्राप्त अनेक प्रकार से सम्मान का उल्लेख मैं यहाँ नहीं कर रहा हूँ क्योकि इसकी जानकारी पाठकों को आपकी रचनाओं के अन्तिम पृष्ठ पर उपलब्ध मिलेगी। आज कल भोजपुरी की बोल चाल की भाषा में

www.bhojpurisahityangan.com

हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का समावेश है। परन्तु इं. राजेश्वर सिंह ने अपनी रचनाओं में खाँटी भोजपुरी शब्दों का उपयोग किया है। बढ़ती उम्र के कारण आप के लेखन की विषय वस्तु आध्यात्म से ओत-प्रोत हो गयी है। आप द्वारा अनेक प्रीचन ग्रन्थों का भोजपुरी में अनुवाद कर, जनमानस को उपलब्ध कराकर, भोजपुरी के उत्थान के साथ-साथ हिन्दू धर्म के प्रति लोगों को उन्मुख करने का जो निरन्चर प्रयास किया जा रहा है वह निश्चित ही सराहनीय है। भोजपुरी भाषी लोग अनेक धार्मिक ग्रन्थों, जिनका भोजपुरी में अनुवाद करना शेष रह गया है, इनकी तरफ आशा भरी दृष्टि से देख रहे हैं और इसके लिए इनके स्वस्थ्य एं दीर्घायु जीवन के प्रति आकांधी हैं।

मैं श्री सिंह के स्वस्थ्य एवं दीर्घायु जीवन की कामना तथा परिवार के प्रति हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

❖

घाघ कवि के अनुसार कवने महीना में का खाये के चाही

खायीं	न खायीं
चैत नीम, बैसाख में बेल।	चैत में गुड़, बैसाख में तेल।
जेठ शयन, असाढ़ में खेल।	जेठ में पथ, असाढ़ में बेल।
सावन हरै, भादो खीर।	सावन साग न, भादो दही।
क्वार मास, गुड़ खायो नित।	क्वार करैला,
कातिक मूली, अगहन तेल।	कातिक मही। अगहन जीरा,
पूष में करो, दूध से मेल।	पूसे धना।
माघ मास, घिव खिचड़ खाय।	माघे मिसरी,
उठ फागुन में प्रात नहाय।	फागुन चना।

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य साधक अभियन्ता

-तृप्ति सिंह (सन्नो)

हम उस पीढ़ी के अन्तिम लोग हैं जिन्होंने समय को अनूठे तरीके से करवट लेते हुये देखा है, हमने ढेबरी और लालटेन से लेकर सोलर लाईट तक सब देखा है, सौ वाट के बल्ब से लेकर एल.ई.डी. तक लैंड लाईन और सेटेलाईट फोन से लेकर आज पारदर्शी फोन तक के गवाह हैं हम, हमने कश्मीर की त्रासदी, कारगिल युद्ध से लेकर कोरोना काल तक सब देखा है, हमने देखा है मातृभाषा के तिरस्कार के साथ अंग्रेजी भाषा के क्रूर वर्चस्व को और अब हिन्दी भाषा व साहित्य के उत्थान के साक्षी भी हम होंगे क्योंकि अब हम हिन्दी भाषी होने पर लज्जित नहीं होते बल्कि गौरव का अनुभव करते हैं क्योंकि आज हिन्दी साहित्य व भाषा के उत्थान आन्दोंलन में अनगिनत साहित्य साधक पूरे समर्पण भाव से सेवा में रत हैं, उन्हीं में एक नाम अभियन्ता श्री राजेश्वर सिंह जी का है जो अपनी विलक्षण साहित्य साधन के कारण हमारे लिये एक समृद्ध प्रेरणा के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

श्री राजेश्वर सिंह जी ने अनेक पुस्तकों की रचना की है ना सिर्फ खड़ी बोली में बल्कि भोजपुरी भाषा में भी अतुलनीय योगदान है आपका। सरल स्वभाव, शान्त प्रकृति, सबको साथ लेकर चलने की नियति रखने वाले अभियन्ता श्री सिंह जी की शिक्षा का माध्यम निश्चित रूप से अंग्रेजी भाषा रहा है किन्तु हिन्दी-भोजपुरी भाषा और साहित्य के लिये आपकी बीस वर्ष से चल रही सतत् साधना निश्चित रूप से चकित करती है।

आपको एक अभियन्ता लेखक के रूप में जाना जाता है, आपकी विविध और विविधता से परिपूर्ण पुस्तकें-दीक्षा-गुरु, नसीब अपना-अपना, भोजपुरी रामायण, भोजपुरी महाभारत, भोजपुरी पंचतन्त्र, एक कहानी की आत्मकथा और श्री रामयज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ जैसी अनेक पुस्तकें गौरवशाली इतिहास से लेकर समृद्ध परम्परा तक को उजागर करती हैं, तत्कालीन सामाजिक संरचना, रीति-नीति को भी प्रकट करती हैं, साथ ही साहित्य को भी समृद्ध करती हैं।

www.bhojpurisahityangan.com

मैंने आपको जितना जाना है उसके आधार पर यह कह सकती हूँ कि आप जैसी सोच और परोपकार की भावना वाला व्यक्ति होना अन्य के लिये कठिन है क्योंकि जहाँ लोग आज अपने परिवार को भी अलग-थलग छोड़ देने में संकोच नहीं करते हैं वहीं आप अपने पूरे कुटुम्ब को जोड़े रखने के प्रयास में लगे रहते हैं, मैंने देखा जहाँ रक्त सम्बन्ध भी साथ नहीं निभाते वहाँ आप पूरे मनोयोग एक दृढ़ सम्बल के रूप में सबसे पहले खड़े रहते हैं।

आपके स्वभाव और व्यक्तित्व की झलक आपकी कृतियों पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। एक उच्चस्तरीय जीवन से अलग साहित्य सेवक के रूप में बड़ी ही कुशलता से आपने स्वयं को ढाला है जो प्रेरणादायी है, मुझ जैसे तुच्छ साहित्य सेवक के लिए आप की कृतियाँ और आपका व्यक्तित्व पूरे पुस्तकालय के समान है, आपके कुटुम्ब का हिस्सा होना मेरे लिये सौभाग्य की बात है, ईश्वर से प्रार्थना है कि वो आप को लम्बी आयु और आरोग्य दें जिससे कि आप सतत् रचनाशील रहें, साहित्य साधना में लीन रहें।

अशेष शुभ कामनायें !

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१४५

भोजपुरी साहित्य के विद्वान लेखक

-रमा सिंह

इन्जीनियरिंग पृष्ठभूमि वाले और कई प्रमुख भोजपुरी किताबों के लेखक इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी ने अपने सेवाकाल से ही लेखन के क्षेत्र में कदम रखा। उनकी रचनायें भोजपुरी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इं. राजेश्वर सिंह जी की लेखनी ने न केवल पाठकों को प्रभावित किया, बल्कि भोजपुरी साहित्य को भी समृद्ध बनाया है।

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी की कहानियाँ और उपन्यास भोजपुरी समाज और संस्कृति की गहरी समझ को प्रस्तुत करते हैं, जिससे वे एक सफल लेखक के रूप में जाने जाते हैं। इनकी प्रकाशित कृतियाँ-

भोजपुरी-

१- जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४),
२- कल्यान कऽ जुगति (वर्ष २००७),
३- पढ़ी समझीं मनन करीं (वर्ष २०१६),
४- भोजपुरी भागवत कथा-सार (वर्ष २०१८),
५- राम-पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०१९),
६- श्याम पियारा साधु-सन्त (वर्ष २०२०),
७- भोजपुरी महाभारत (वर्ष २०२०),
८- दीक्षा-गुरु (वर्ष २०२०),
९- घरेलू नुस्खा (पद्य में) वर्ष २०२०,
१०- भोजपुरी रामायण (वर्ष २०२१),
११- भोजपुरी पंच-तंत्र (वर्ष २०२२),
१२- भोजपुरी योगा कथामृत (वर्ष २०२३)।

हिन्दी भाषा में प्रकाशित कृतियाँ :

१- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३),

www.bhojpurisahityangan.com

२- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४) ,

३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी (वर्ष २००४),

४- सुख जागे दु:ख भागे (वर्ष २००४),

५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५),

६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६),

७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४),

८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७) प्रकाशित हुई हैं।

इन्हें कई सम्मान से सम्मानित किया गया है, जैसे प्रेमचन्द सम्मान, मेलोडी सम्मान-२००६, हिन्दी साहित्य सागर, 'विद्यावाचस्पति' विद्यासागर', 'भारतीय भाषा रत्न' एवं 'भारत गौरव', 'साहित्य कला शिरोमणि', 'संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-२०२१', सरयू अमृत महोत्सव-२०२१ द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखने पर 'सरयू रत्न सम्मान।'जैसे कई सम्मानों से सम्मानित किया गया है।

सम्मानित इन्जीनियर राजेश्वर सिंह हमारे मौसा जी हैं। जिन्होंने मुझे निरन्तर प्रेरित और मार्गदर्शन किया है। इनका स्वभाव बहुत सरल और ईमानदार है और वे हर किसी की मदद करते हैं। जो उनकी लेखनी में भी झलकता है। उनकी सादगी और ईमानदारी उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जिससे पाठक उनके साथ गहराई से जुड़ जाते हैं।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

सरल भी सहज भी : इं. राजेश्वर सिंह जी

-नर्बदेश्वर सिंह, मास्टर साहब

हमरे खातिर बहुते खुसी आ संतोस क बाति बा कि हमके एगो अइसने आदमी के बिसय में कुछ लिखले क अवसर मिलल बा जे हमके एगो बंद कोठरी से भोजपुरी साहित्य जइसन बड़वर समुन्दर के किनारे ले आके खाड़ क दिहलसि आ कहलसि अब एमें डूबकी लगाव आ हीरा मोती खोज। ई मनई अउर केहू नाहीं, मनई इं. राजेश्वर सिंह जीए हईं।

अब हमरे सामने परेसानी क बाति इ बा की हम ठहरनी धरती पकड़ मनई, आ छूअल चाहत बानी चांद। अदमी केतनो कूदी, छटकी का चांद छू पाई। इं. साहब क व्यक्तित्व बा चांद जइसन उप्पर, भला हमरे जइसन साधारन अदिमी कइसे, का लिखि पाई। बाकिर जब पूनम क अजोरिया थिरके ले, आ सांत मन से अकेले में बइठल मनई चकोर जइसन एक टक देखे ला त वो के छिटकल अजोरिया ठंढ़ई क अजबे अनुभूति होला। हम उहे आपन अनुभूति लिखले क कोसिस कइले बानी। जवन इं. साहब के संगरी रहि के जनले सुनले बानी, लिखत बानी, हालांकि इहो सूरज के दिए देखावल होई।

लगभग १५० बरिस पहिले ग्राम-पोस्ट गोपालपुर, पुरनकी तहसील-बांसगांव, नवकी-गोला, जनपद-गोरखपुर में रहे वाला, गोलोक वासी शिवमंगल सिंह का इ सोचले होइहें कि हमरे तिसरकी पुस्त में एगो अइसन होनहार लइका जनमीं, जवन भोजपुरी साहित्य के माध्म से समाज में अइसन रंग भरी कि भोजपुरिया क बड़का बड़का पुरोधा लोग वोके पुरसकार, सनमान दिहले के साथे साथे माला पहिना के भोजपुरी के बड़का आसन पर बइठा के इनकर जस गइहें। आ ई भइल।

स्व० बाबू शिवमंगल सिंह तीन बेटन, स्व० समर बहादुर सिंह, स्व० छंगे सिंह, स्व० धनवंत सिंह में से दू जने के देही से जवन लइका लोग जनमलें, वोमें से केहू वकील, केहू विश्वविद्यालय गोरखपुर में प्रोफेसर होके कुल खानदान क नांव-गाँव बढ़वलसि बाकिर पिता स्व० समर बहादुर सिंह आ स्व० माता परमजोता सिंह से जवन कुलदीपक इं. राजेश्वर सिंह भइलें, ई अपनें सहज, सरल, सालीन आ सांत सोभाव से देस दुनियां में नांव त कइबे कइनें, कुल

www.bhojpurisahityangan.com

खानदान क जस बढ़इबे कइने, साहित्य जगत, वोहू में भोजपुरी साहित्य में एगो मजिगर मोकाम हासिल कइनें।

हमार परिचय इं. साहब से त बाद में बाकिर नांव जून सन १९६८ में पहिली बार सुनलीं। संजोग से हमरे चाचाजात बाबा क लइकी सुन्दरवास फुआ व बियाह रियांव गांव के डॉ० जी० के० शाही के भाई से भइल रहे आ ई० साहब के चचेजात बहिन उर्मिला फुआ क बियाह डॉ० जी०के० शाही से भइल रहे। डा० साहब बड़हलगंज डिग्री कालेज में पढ़ावत रहलें आ वोहीं कुलि परिवार सहित रहबों करें। वोहीं कबो कबो इहो जां आ हमहूं तीज तिउहारे में तिउहारी लेके जांई। जब सन् १९६९ में हम हाई स्कूल फर्स्ट डिवीजन गणित में डिकटिंशन के साथ पास भइलीं आ जून महीना के छुट्टी में बड़हलगंज गइनी त उर्मिला फुआ हमरे फुआ से कहली, कहो सुनरवास का बाति ह कि जउने लइकन के नाक के आगे एश्वर होला उ पढ़ले में तेज होने ? हमरे राजेश्वर भी फर्स्ट डिवीजन पास होलें, इ नर्बदेश्वर भी। फुआ कहली देखीं अइसन कउनो बाति नाहीं ह ! जे मेहनत करी उ पासे होई। वोहीं दुसरी बार इं० साहब क नांव सुने के मिलल। इहों के अपने पढ़ाई लिखाई, नौकरी चाकरी में, हमहूं वोही में अझुराइल रहनी, कबो-कबो साझे के नतइती के नेवता-हकारी में भेंट होखे, राम रहारी होखे, हालि चालि हो जा।

जब हम गोरखपुर में मकान बनवा के रहे लगनीं, वोही समय इं० साहब कउनो नेवता में हमरे गांव बैदवली आइल रहने, हमहूं दूवरवे पर रहीं, देखा देखी भइल, हाल चालि भइल, वोहीं इहां क आपन लिखल किताब 'पढ़ीं, समझीं, मनन करीं' दिहलीं आ हमहूँ, आपन लिखल 'श्रीमद्भागवत संक्षिप्त एवं सरल संस्करण' ग्रन्थ दिहलीं। वोहीं हमहन जानि पवलीं कि हमहन क गोरखपुर क मकान थोरिए दूरी पर अगलिए बगली बा। गोरखपुर अइले के बाद इं० साहब एक दिन पैदले हमरे घरे अइलीं आ मेजे पर रखल डायरी में लिखल भोजपुरी कबिता देखलीं आ हमरे मुंहे से सुनलीं त दबाव देके भोजपुरी बइठकी तक पहुँचा दिहनीं। हम आपन अहो भागि मानेनी कि भोजपुरी में जवन नीक बाउर लिखे लीं आजु सधत बा, आ हमहूं पिसान पोति के भंडारी बनल भोजपुरी साहित्यकारन के सबसे पिछली कतार में सीना तानि खाड़ बानीं।

इं० साहब क साहित्य सृजन क साधना अनवरत चलत रहेला। इं० साहब क लिखल साहित्य सगरो त नाहीं, बाकिर अधिकतर हम पढ़लहीं होइब। पढ़ले पर हमके लागल कि इं० साहब के साहित्य लेखन में पांडित्य जेतना अगाध बा बिचार भी वोतने उदात्त बा। लोक कल्याण के भावना से किताब त लिखइले बाड़ी सन, देखले में इहां के व्यक्तित्व में का, रोम-रोम में लोक कल्याण क भावना झलके ला। लेखनी पर त लागे ला साक्षात् सरस्वती क निवास बा। हमके लागत बा कि इहां के किताबिन के नांव लिखे लागब त वोही में कई पन्ना भरि जाई, बाकिर कुछ किताब जइसे 'श्रीमद्भागवत कथा-सार' इहां के लिखने बानी जउने में हमरो किताब

www.bhojpurisahityangan.com

के सहयोग क चरचा कके हमहूं के धन भागी बना दिहले बानीं। 'भोजपुरी रामायण, भोजपुरी योगी कथामृत, भोजपुरी पंचतन्त्र कहानियां, जिनगी कऽ दूबि हरियाइल, पढ़ीं, समझीं, मनन करीं, राम पियारा साधु-सन्त, श्याम पियारा साधु-सन्त' सन्तन क जीवन गाथा आदि आदि। सथवें महाभारत पुराण से भोजपुरी महाभारत लिखले बानीं जउने के मूल रचयिता बेद व्यासजी के खानि लगेला कि इहों के ऊपर परमातमा क असीम कृपा बा तबे न इ कुलि लिखा पवलसि ह। कुछ टुटपुंजिहा साहित्यकार कुछ रचना कइले के बाद एतना अहंकार पालि लेले कि हम त बहुत बड़वर चीज हो गइल बानीं, बाकिर एतना श्रम कइले के बादो इं० साहब कइसन, सहज, सरल रहेलन सबके सामने बा। इं० साहब क ग्रन्थ पढ़ले पर अगाध ज्ञान क परिचय होला। इं० साहब अपने घर के बाहर लिखवउले बान 'गुरुधाम' त हमके लागेला कि इनके पर इनके अवढ़र दानी गुरु क कृपा भइल होई, तबे इ सब रचा पउले होई। देस दुनियां में कवन अइसन आदमी होई जेकरे पर सांसारिक झंझावत न आइल होखे, बाकिर इं० साहब ऊ सब मुसकुरात निपटा देलें। देखल जाला दूबि हरदम हरिअरे रहेले, काहे से कि सगरो प्रहार के बादों नरमें बनल रहेले, इं० साहबो लागे ला एही मारग क अनुगामी हवें।

इं० साहब गांव गंवई कं पगडंडी से निकरि के सहर के चकाचौंध से अपने के बचावत, अपने श्रमनिष्ठा से अपने संकल्प के पूरा करत, समाज परिवार सबके लायक बनि के सबकर सेवा करत हवें।

इनके साहित्य क अमृत बूंद आध्यात्मिक, सहृदयी पाठक छकि के पियत बाने आ आपन जीवन के उन्नत बनावत बाने। एतने नाहीं इं० साहब क साहित्य जीवन पर स्थाई छाप छोड़त स्मृतिबद्ध हो उठेला।

इं० साहव अइसहीं हमहन क प्रेरणास्रोत बनल रहें भगवान से विनती बा।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१४७

सरल, सहज एवं धर्म परायण व्यक्तित्व के धनी इं. राजेश्वर सिंह

-सुरेश सिंह

भोजपुरी साहित्य के मूर्धन्य कवि/लेखक जिन्होंने जिन्दगी की दुश्वारियों एवं उन दुश्वारियों से संघर्ष करने का मर्म जो अपनी रचना के माध्यम से दिया, वाकई वह एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रतिस्थापित करने के लिए मील का पत्थर है। इन्होंने सामाजिक जीवन, आध्यात्मिक जीवन, भारत की सनातनी परम्परा, धार्मिकता को अपनी रचना में पिरो कर भोजपुरी पाठकों के लिए प्रेरणास्पद ही नहीं अपितु जीवन जीने की कला भी दी है।

'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल', 'कल्याण कऽ जुगति', 'दीक्षा गुरु', महाभारत पर रामायण पर अपनी काव्यात्मक विवेचना से सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है।

साहित्य की समस्त विधाओं में चाहे वह कहानी विधा हो या उपन्यास एवं पद्य की रचनाओं में भोजपुरी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसके फलस्वरू इं. राजेश्वर सिंह जी को सारी सम्मानों, उपाधिों से अलंकृत किया गया।

सरकारी उपक्रम में अपना शत-प्रतिशत देते हुए भोजपुरी साहित्य को अपनी रचना से अभिभूत किया। इनकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन हम लोगों को निरन्तर मिलता रहता है। ये बहुत सरल, सहज एवं मितव्ययी तथा व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के धनी ईमानदार छवि के व्यक्ति हैं। हमेशा समाज की भलाई के सम्बन्ध में कुछ न कुछ क्रिया-कलाप करते रहते हैं। आप इन्जीनियरिंग पृष्ठभूमि से रहते हुए भी भोजपुरी लेखन के क्षेत्र में अपनी जो अमिट छाप लेखनी के माध्यम से छोड़ी है, वह आने वाले समाज एवं नयी पीढ़ियों के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

आपकी लेखनी की सरलता एवं स्पष्टता के कारण पाठक बंधु आपके साथ गहराई से जुड़ जाते हैं और कुछ न कुछ सीखने व समझने का प्रयास करते हैं। मैं आप के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ एवं अपेक्षा करता हूँ कि नित प्रति आप और शीर्ष ऊँचाइयों पर पहुँच कर अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को सनातनी संस्कृति का बोध कराते रहें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१४८

मेरे भैया

-सुधा शाही

गोरखपुर जनपद के दक्षिणी छोर पर स्थित, पतित पावनी माँ सरयू के तीरे, अयोध्या से जनकपुर तक फैले रामजानकी पथ पर ग्राम गोपालपुर (वर्तमान में गोलाबाजार नगर पंचायत का एक वार्ड) में कौशिक परिवार में माता स्व० परमजोता देवी एवं पिता स्व० समर बहादुर सिंह की तीसरी संतान के रूप में मेरे बड़े भाई राजेश्वर सिंह का ४ अप्रैल १९५० को इस धरा पर आगमन हुआ। मेरा बड़े चाचा स्व० छंगे सिंह (गीता प्रेस, गोरखपुर) एवं छोटे चाचा स्व० धनवन्त सिंह (रेलवे, वाराणसी) के घर से बाहर रहने के कारण पिता जी को अपनी नैतिक जिम्मेदारी के कारण बम्बई में नौकरी छोड़कर घर आकर खेती बारी का काम सम्भालना पड़ा। गाँव के विद्यालय में प्राथमिक शिक्षा के बाद मेरे भाई का प्रवेश उदय प्रताप इण्टर कालेज, वाराणसी में हुआ और वे चाचा के साथ रहकर अपनी शिक्षा पूरी करने लगे। दुर्भाग्य से माँ के असमय आकस्मिक निधन के बाद चाचा को बनारस छोड़ कर वापस घर आना पड़ा। उनके साथ मेरे भैया भी वहाँ से घर आ गये और अपनी हाईस्कूल तक शिक्षा बी०एस०ए०बी० इण्टर कालेज गोला बाजार से पूरी की। डी०वी० इण्टर कालेज गोरखपुर में इण्टरमीडिएट की शिक्षा के दौरान बड़े भाई डॉ० टी०पी० चन्द (प्रोफेसर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर) के साथ अलहदादपुर में राजा गोपालपुर के मकान में रहते थे। पिता जी गृहस्थ थे लेकिन अपनी सज्जनता, ईमानदारी, परोपकारी प्रवृत्ति के कारण गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में उनका स्थान था। पिता जी के सद्गुणों का प्रभाव भैया पर पड़ा और आज भी उनका जीवन उसी से ओत-प्रोत है। कहा गया है-

बाढ़े पूत पिता के धर्मे, खेती बाढ़े अपने कर्मे।

इण्टरमीडिएट की शिक्षा के बाद भैया ने मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज, गोरखपुर से बी०ई० की शिक्षा प्राप्त करते समय चार वर्षों तक कालेज के छात्रावास में रहे। शिक्षा के मध्य ही ५ जुलाई सन् १९७१ को इनकी श्रीमती राजकुमारी सिंह के साथ पाणि ग्रहण संस्कार हुआ। सन् १९७३ में मेरे विवाह के बाद ही इनकी नियुक्ति उत्तर प्रदेश जल निगम में सहायक अभियन्ता के पद पर हुई और आजमगढ़ में इन्होंने अपना प्रथम कार्यभार ग्रहण किया। सेवा काल

www.bhojpurisahityangan.com

के मध्य आजमगढ़, बलिया, वाराणसी, गोण्डा और बहराइच आदि स्थानों पर भैया के साथ रहने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से इनकी समरसता सदैव बनी रही। विभाग के लोग इनकी सरलता और सज्जनता की सदैव प्रशंसा करते रहते थे। इन्होंने कभी भी लोगों को असन्तुष्ट होने का अवसर नहीं दिया बल्कि सभी लोगों को साथ लेकर एक टीम भावना की तरह कार्य किया। एक इन्जीनियर के रूप में शासन, प्रशासन, अधिकारियों, कर्मचारियों, नेताओं एवं जनमानस से सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित कर अपना कार्य कुशलता पूर्वक सम्पन्न करना इनके व्यक्तित्व की विशेषता है।

परिवार का सदस्य होने के नाते मैं बचपन से ही भैया के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित हूँ। सादा जीवन उच्च विचार, मिलनसार, आत्मनिर्भर, सहयोगी प्रवृत्ति, आडम्बरहीन व्यक्तित्व एवं घमण्ड से कोसों दूर आदि अनेक गुण इनके अन्दर बचपन से ही थे और आज भी ये गुण इनके स्वभाव से आत्मसात है। बचपन से ही गाँव, विद्यालय एवं क्षेत्र के लोगों से कभी भी इनका किसी प्रकार का विवाद नहीं रहा। इन्जीनियर के पद पर कार्य करते हुए बहनों, भाईयों, पुत्री एवं भतीजियों, पुत्र एवं भतीजों के ससुराल, पुराने सम्बन्धियों, मित्रों एवं शुभचिन्तकों के घर किसी भी आयोजन में सपत्निक उपस्थित होना सम्बन्धियों के प्रति इनके आत्मीय सम्बन्ध का परिचायक है। सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में लोगों के सुख-दुःख में सहयोगी बनना इनके स्वभाव में शामिल है। जरूरत मन्द व्यक्तियों की समय-समय पर ये आर्थिक मदद भी करते हैं। यद्यपि उन व्यक्तियों से किसी प्रकार का अपेक्षा नहीं रखते हैं। ऐसे कार्यों में मेरी भाभी श्रीमती राजकुमारी सिंह का सक्रिय योगदान रहता है। इनके इन्हीं गुणों एवं व्यवहार कुशलता के कारण गाँव, समाज एवं सम्बन्धियों द्वारा सदैव सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

भैया बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति हैं। यहाँ मैं इनके अन्य गुणों की चर्चा न करते हुए केवल एक साहित्यकार के रूप में हिन्दी साहित्य के विकास में इनके योगदान की चर्चा अवश्य करना चाहूंगी। लेखन का प्रारम्भ इन्होंने कहानियों एवं संस्मरणों से प्रारम्भ किया। इनकी अनेक प्रारम्भिक रचनायें हिन्दी में लिखी गयी हैं, परन्तु अपनी मातृभाषा भोजपुरी के प्रति अगाध प्रेम के कारण इन्होंने भोजपुरी में लिखना प्रारम्भ किया। इनके द्वारा भोजपुरी में लिखी गयी अनेक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। यह मानव का स्वभाव है, बढ़ती उम्र के साथ अध्यात्म की ओर उन्मुख होना और भैया जी भी इससे अछूते नहीं रहे। भोजपुरी भागवत कथा-सार, राम पियारा साधु-सन्त, श्याम पियारा साधु-सन्त, भोजपुरी महाभारत, दीक्षा गुरु, भोजपुरी रामायण, भोजपुरी पंचतंत्र, भोजपुरी योगी कथामृत आदि ग्रन्थों का प्रकाशन कराकर जनमानस को उपलब्ध कराकर, भोजपुरी के साहित्य संवर्धन में इनका यह योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। इस कार्य में इन्होंने श्रम, समय एवं धन की परवाह किये बिना ही भोजपुरी साहित्य एवं हिन्दू धर्म के प्रति जन मानस का

www.bhojpurisahityangan.com

ध्यान आकृष्ट करने का जो प्रयास किया है वह निश्चित रूप से सराहनीय है।

साहित्य सेवा के लिए भैया को अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया और अपने संस्थाओं और संगठनों द्वारा इनको प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कारों में विभूषित किया गया यद्यपि कभी भी भैया ने सम्मान एवं पुरस्कार की अपेक्षा से अपनी लेखनी नहीं चलायी।

भैया ३० अप्रैल २०१० को उ०प्र० जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से अवकाश ग्रहण करने के बाद बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार एवं मध्य प्रदेश जल निगम मर्यादित में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वहन किये हैं।

परिवार के प्रति हार्दिक शुभ कामना व्यक्त करते हुए भैया के स्वस्थ्य दीर्घ जीवन एवं सुखद दाम्पत्य जीवन के लिए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थी हूँ।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१४९

शालीनता के धनी बाबाजी

इं. त्वेश चन्द 'उत्कर्ष'

हमारी भाषा और हमारे मूल्य हमारे जीवन के सबसे व्यापक पहचान होते हैं, जब हम एक व्यक्ति के रूप में कहीं भी जाते हैं तो वह हमारी शक्ति बन के उभरती और निखरती है लेकिन ये हमें मिलती है कहाँ से?

ये मिलती है हमें परिवार से, समाज से उसकी व्यवस्था से, लेकिन सबसे पहले हमें इसका एहसास होता है हमें हमारे घर के बड़ों से।

एक पेड़ जब बृक्ष बनने की ओर अग्रसर होता है तो उसका प्रथम चरण उस बीज पर ही बस नहीं निर्भर करता है बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी देख-भाल हम किन हाथों से उसको सींचते और सँवारते हैं। ठीक उसी प्रकार एक व्यक्ति के विचारों को बनानें में उसके घर के बड़ों की छत्र-छाया होना अत्यन्त आवश्यक है। जब भी बात हमारे परिवार की होगी और हमारे व्यक्तित्व की होगी इनमें सबसे बड़ा योगदान हमारे बाबा आदरणीय राजेश्वर सिंह जी का होगा। विशाल व्यक्तित्व, विचारों का महासागर, शालीनता के धनी, जिससे प्रभावित होकर हमारी पीढ़ी उसको जिया करती है।

एक दिन परिवार के कुछ लोग बैठे घरेलू बातों की चर्चा कर रहे थे। हम भी वहाँ अचानक पहुँच गये और बातचीत सुनने बैठ गये। सन् २००९ के आस-पास की एक घटना की चर्चा चल पड़ी। उसका जिक्र यहाँ कर रहा हूँ।

मेरे पिताजी के फूआ का घर गोरखपुर से लगभग तीस किलोमीटर की दूरी पर ग्राम देवराड़ बाबू में है। उनके लड़की की शादी जिस तिथि पर सम्पन्न होना तय था ठीक उसी तिथि पर पिताजी की बहन पिंकी फूआ की ननद की शादी भी तय हो गयी। इनका घर वाराणसी जिले के ग्राम कैथी में है, परन्तु शादी वाराणसी नगर के बड़े मैरेज हाल में होना था। परिवार के सब लोग देवराड़ बाबू जाने का मन बना लिए। इसकी जानकारी जब बाबाजी को दी गयी तो पल भर सोच कर बोले-'ठीक है, सब लोग देवराड़ बाबू जायें परन्तु मैं तो वाराणसी जाऊँगा। यहाँ से किसी के न जाने से पिंकी व्यथित होगी, उसका मन उदास रहेगा।' बाबाजी अकेले पिंकी फुआ

www.bhojpurisahityangan.com

के घर के जश्न में पहुँच गये। देखते ही सबसे बोल पड़ीं- 'देखिये हमारे डैडी आ गये।' उनका प्रफुल्लित चेहरा देख सबकी नजर उधर उठ गयीं। पिंकी फूआ बाबाजी को डैडी कह कर ही पुकारती हैं।

अपने विचारों से अनेक पुस्तकों को अपनी मातृभाषा भोजपुरी में उतारने की जिज्ञासा और मेहनत को आज पूरा समाज महसूस कर सकता है। उनके इन्हीं विचारों की मदद से आज भोजपुरी भाषा में अपने इरादों को पूरा करने के लिए एक सफल प्रयास किया है। ऊर्जा, मेहनत, विचार और चरित्र उनकी व्यक्तित्व की परिभाषा है। यह उनके उन मूल्यों की पहचान है, जिनके हम बचपन से लेकर अभी तक साक्षी रहे हैं और उस पथ पर चलने का प्रयास निरंतर करते रहे हैं।

परिवार को बाँधे रखना और एक साथ लेकर सबको चलना हमारे आदरणीय बाबा का एक विराट व्यक्तित्व है। ऐसे हमारे आदर्श बाबाजी के लिए बस यही कामना है कि ईश्वर उनके में ऊर्जा रखें और वो हमें अपना मार्गदर्शन देते रहें।

''मत सहल हमे जानो फिरता है फलक बरसों
तब ख़ाक के पर्दे से ऐसे इंसान निकलते हैं।''

❖

www.bhojpurisahityangan.com

अतुलनीय, अद्‌भुत प्रेरक हमारे चाचा जी : इं. राजेश्वर सिंह

-अनिल प्रताप चन्द

गोला बाजार से हाई स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के पश्चात चाचाजी आगे की पढ़ाई के लिए गोरखपुर आये। मेरे पिता जी (स्व० डॉ० टी० पी० चन्द) गोरखपुर विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग में प्रवक्ता थे। मेरा परिवार संयुक्त परिवार का एक आदर्श परिवार का उदाहरण था। हम लोगों के साथ रहते हुए इन्टरमीडिएट की परीक्षा अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण किये। तत्पश्चात् मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज (वर्तमान में मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय) में आप का दाखिला हुआ। वह दिन याह दै कि प्रवेश के दिन मेरे बाबा, पिताजी, भइया तथा मैं सभी लोग इन्जीनियरिंग कालेज गये थे। प्रवेश के पश्चात् पढ़ाई की सुविधा के लिए चाचा जी महाविद्यालय के छात्रावासी हो गये। केवल दो वर्ष उनके साथ रहने का अवसर मिला। इन दो वर्षों में उनके द्वारा प्रदर्शित किये गये सज्जनता, कर्मठता एवं आज्ञाकारिता को ले कर परिवार में चर्चा होती थी। मेरी माता जी हम लोगों को 'राजेश्वर बाबू' की तरह होने के लिए प्रेरित करती थीं।

चाचा जी के स्वभाव एवं व्यक्तित्व में पिता जी के सद्‌गुणों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। पिता जी को जितना चाचाजी ने आत्मसात किया उसका दशांश भी हम तीनों भाई नहीं कर पाये। चाचा जी के माध्यम से अवश्य कुछ सीख पाये।

नौकरी में नियुक्ति मिलने पर चाचाजी जहाँ-जहाँ स्थानान्तरित होते हये, अधिकांश स्थानों पर मुझे भी जाने का अवर मिला। मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य होता था कि मैदानी क्षेत्र से पर्वतीय क्षेत्र (रानीखेत एवं बागेश्वर) में जाकर भी सज्जनता एवं कर्मठता को लेकर चर्चा हुआ करती थी। चाहे उनका वरिष्ठ अधिकारी हो या अधीनस्थ सभी प्रसंशक थे।

पिता जी के अकाल देहावसान के पश्चात् चाचा जी हम लीगों के लिए आशा के किरण थे।

www.bhojpurisahityangan.com

विभागीय सेवाकाल में ही उनकी धार्मिक भावना प्रबल हो गयी थी। वे विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करते रहते थे। श्रीमद्भागवत का पाठ, श्री राम यज्ञ एवं अखण्ड कीर्तन का आयोजन कराना उनके स्वभाव में है। उन्होंने गाँव में एक कीर्तन मण्डली संगठित कर दिया है। समय-समय पर यानी विशेष अवसरों पर सामूहिक भोज का भी आयोजन करते रहते हैं। इस तरह के आयोजन से उन्होंने गाँव में एक सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण करके गाँव के विकास में अपना सहयोग प्रदान किया है।

विज्ञान के विद्यार्थी होने के साथ-साथ उनकी साहित्य में भी रुचि है। उन्होंने हिन्दी में नौ एवं भोजपुरी में तेरह पुस्तकों का सृजन किया है। इनमें तो कुछ उच्चकोटि की एवं भाव प्रधान हैं तथा समाज का सतत् कल्याणकारी संदेश देने वाली हैं। उनके लेखन से प्रभावित होकर प्रदेश एवं प्रदेश से बाहर की अनेक संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित कर अपने को गौरवान्वित किया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके लेखन शक्ति को मजबूती प्रदान करें ताकि वे भोजपुरी साहित्य को और समृद्धि प्रदान कर सकें।

सरलता, सहजता, उदारता, दया, करुणा, प्रेम, संवेदना एवं सहृदयता के चाचा जी आगार हैं। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया' ही उनके जीवन का लक्ष्य है। वे अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के दुख को दूर करने के लिए किसी भी सीमा तक अपना सुख त्यागने को तत्पर रहते हैं।

चाचाजी के चेहरे पर निश्छल हँसी, शाश्वत मुस्कान, चेहरे पर स्थायी संतुष्टि एवं तृप्ति का भाव दिखायी देता है। अपने सुख को तिलांजलि देकर दूसरे को सुखी करने की तत्परता इनके व्यक्तित्व को निराला बना देता है।

मौजूदा समय में चाचाजी परिवार के वरिष्ठतम सदस्य हैं। वे चाहते हैं कि पूरे परिवार का सौन्दर्य शास्त्र विकसित हो। जब कभी परिवार के लोग भौतिकता की ओर उन्मुख होते हैं तो उन्हें अच्छा ही नहीं लगता है। वे पारिवारिक सदस्यों को सादगी में ही आनन्दित देखना चाहते हैं। मुझसे प्रायः कहते हैं कि धीरे-धीरे मजबूत कदमों से आगे बढ़ना चाहिए, वास्तव में एक बेहतर मानव हैं जो सबके हित में विश्वास करते हैं।

उनसे बातचीत करने में जो ऊर्जा प्रवाहित होती है, वही समझ सकता है जिन्हें उनका सान्निध्य मिलता है। चाचाजी किसी को छोटा नहीं मानते हैं। प्रत्येक आदमी चाहे वह कितना भी गरीब या छोटा हो उनके पास बैठकर अपने को बड़ा महसूस करने लगता है।

जब कभी हम निराश एवं दुखी होते हैं तो उनके सान्निध्य से अजीब सी शान्ति मिलती है तथा नया उत्साह, ऊर्जा एवं आत्मविश्वास का संचार होने लगता है।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रांसांद्ध एवं प्रशंसा प्राप्ति की उनकी कोई लालसा नहीं है, जितना कुछ जीवन में सहज रूप से उपलब्ध हो जाता है उतने से ही वे सन्तुष्ट रहते हैं।

चाचाजी के पास जो भी व्यक्ति आता है उनके व्यक्तित्व से निश्चित रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है। उनके घर रिश्तेदारों एवं मित्रों का आना-जाना हमेशा लगा रहता है। इसका बहुत बड़ा कारण है चाचाजी के स्नेहिल व्यक्तित्व के साथ-साथ चाची जी द्वारा भी आने-जाने वालों के प्रति स्नेह सना यथोचित ख्याल रखना।

चाचा एवं चाची जी ने हम लोगों के संयुक्त परिवार को जिस तरह से रखा है, ईश्वर से प्रार्थना है कि हम लोगों को इतनी सामर्थ प्रदान करें कि उनके आदर्शों एवं सुझावों का अनुसरण कर सकें।

मैं और मेरा परिवार भाग्यशाली है जो हम लोगों को चाचाजी जैसा बहुमुखी व्यक्तित्व वाला अभिभावक मिला है जिसकी छाया में हम सब दिन प्रतिदिन पुष्पित एवं पल्लवित हो रहे हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें शतायु करें जिससे हम सब एवं क्षेत्रवासी लाभान्वित होते रहें।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१५१

इन्जीनियर राजेश्वर सिंह के रचनात्मक व्यक्तित्व पर विद्वत टिप्पणियाँ

-इं. प्रवीण सिंह

सन् १९५० में चार अप्रैल को गोपालपुर, नगर पंचायत क्षेत्र गोल, जनपद-गोरखपुर में जन्में इं. राजेश्वर सिंह इन्जीनियरिंग के क्षेत्र म लगभग चालीस वर्ष सेवा करने के साथ ही साथ साहित्यिक क्षेत्र में भी अपना योगदान अनवरत करने वाले विलक्षण प्रतिक्षा के धनी व्यक्ति हैं। उ०प्र० जल निगम में विभिन्न पदों पर काम करते हुए अप्रैल २०१० में अधीक्षण अभियन्ता के पद से सेवा निवृत्त हुए। इसके बाद बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में तथा मध्य प्रदेश जल निगम मर्यादित में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में जून-२०१६ तक कार्य करते रहे।

वर्ष २००२ में आजमगढ़ में अधिशासी अभियन्ता के पद पर कार्य करते समय स्थानीय कुछ साहित्यकारों के सम्पर्क में आये इन लोगों के संगत में आने पर साहित्य क्षेत्र में अभिरुचि बढ़ी अउर कहानियाँ लिखना शुरु किये। साहित्यकारों के प्रोत्साहन से कहानियाँ अउर लघु-उपन्यास लिखने लगे। हिन्दी भाषा में कुछ कृतियाँ प्रकाशित हुई-१- एक कहानी की आत्मकथा (वर्ष २००३), २- एक कहानी बीच में है (वर्ष २००४) , ३- जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी (वर्ष २००४), ४- सुख जागे दुःख भागे (वर्ष २००४), ५- गाँव से जब शहर आ गये (वर्ष २००५), ६- जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी (वर्ष २००६), ७- श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्मक झलकियाँ (वर्ष २००४), ८- नसीब अपना-अपना (वर्ष २००७)।

मशहूर कवि-शायर डॉ० मधुर नज्मी ने इन्जीनियर राजेश्वर सिंह की पुस्तकों में लिखी गयी कहानियों एवं लघु-उपन्यास पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा है-

'...इंजीनियर राजेश्वर सिंह की कृतियों को पढ़कर मैं इस सच्चाई पर बेलौस कह सकता हूँ कि इं. सिंह अपने तरीके के नायाब साधक-कथाकार हैं, रूमानी जमीन से सीधे रूहानी आसमान तक यात्रित हो सकना सबके बूते की बात नहीं। इं. सिंह अपनी रोजगारी जिन्दगी से लगायत

www.bhojpurisahityangan.com

साधना की रूहानी जिन्दगी तक, भरपूर कामयाब, लाजबाब, नायाब कथाकार हैं, अपनी कहानियों में इं. सिंह ने अपने एहसास के साथ इन्साफ किया है, रूहानी सृजना-कृति ढँकने में नहीं खोलने में है। अपनी दुनियावी जिन्दगी में भी कथाकार अपनी वैचारिक अग्रिमा और रंगिमा की बदौलत बेजोड़ हैं। इं. सिंह की कहानियों में 'कचरस' की-सी

मिठास है, कथाकार की कथन-भंगिमा और अभिव्यक्ति की शैली अनुकरणीय और स्वागतेय है।'

प्रो० वशिष्ठ अनूप हिन्दी-विभाग, बी.एच.यू. ने कथाओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है-

'कथा की भाषा में आंचलिकता और लोक-भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग, कथा-विन्दास को स्वाभाविक बनाता है। गवना, मूज, चुहुलगुल, खेली-खायी, बरदउल, बाउक, आजी, सहेट, ठमक गये, हाली-हाली, खसम, देवारा, पिराना आदि शब्द आम जवान ही है और अपनी जगह पर अच्छे लगते हैं। लोकोक्तियाँ भी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाती है।'

इसी बीच श्री सिंह के मन में भाव, जागा कि मातृभाषा भोजपुरी में लिखी पुस्तकें देखने व पढ़ने को नहीं मिल रही हैं, इसके अभाव को दूर करने के लिए कुछ प्रयत्न की जानी चाहिए। फिर इन्होंने भोजपुरी में कुछ कहानियाँ लिखीं जिनका संग्रह जिनगी कऽ दूबि हरियाइल (वर्ष २००४) प्रकाशित हुई। इस पुस्तक के बारे में डा० अर्जुन तिवारी ने अपने 'समकालीन भोजपुरी साहित्य कऽ समीक्षात्मक अध्यय' नाम किताब में चर्चा करते हुए लिखा है-

'जिनगी कऽ दुबि हरियाइल' के कुल्हि कहानियन में भोजपुरी क्षेत्र के गाँव-गँवई में पसरल ईर्ष्या-द्वेष, प्रेम-भाव, अच्चाई-बुराई के अभिव्यक्ति बड़ा रोचक ढंग से कइल गइल बा। आज साहित्य के हर विधा में नारी-त्रासदी के बखान हो रहल बा। एहू संग्रह के कहानी-जिनगी कऽ दूबि हरियाइल में विधवा विवाह के समर्थक करत छोटक सिंह अपना छोट लइका से विधवा बहू के विवाह करके एगो कदम उठवले बाड़न। ई कदम समाज खातिर प्रेरणादायक बड़ुए। एह संग्रह के एगो अउर कहानी 'छोटहर मनई कऽ लमहर बाति', में गाँव के एगो धोबी आ ओकरा गदहा के माध्यम से लेखक कहानी कहे बा आ इहो बतावे केशिश कइले बा कि गाँव में बड़-छोट भइला के बादो आपस के आत्मीय रिश्ता कायम बा।'

दूसरी भोजपुरी किताब वर्ष २००७ में प्रकाशित हुई। यह भोजपुरी निबन्धन की पुस्तक है। इस पर टिप्पणी करते हुए भोजपुरी के महान लेखक डॉ० विवेकी राय ने लिखा है-

"वइसे तऽ भोजपुरी में लिखल हमरा सामने अनेक रचना पढ़े, देखे, समझे आ समीक्षा लिखे खातिर अइलीं स, आ उनहन पर हम खूबे जम के लिखबो कइलीं, वाकिर आज एह बात

www.bhojpurisahityangan.com

के कहला में हमके कवनों संकोच नइखे बुझात कि अब तक कउनो कृति पढ़ि के ओतना संतोष ना मिलल या खुशी भइल जेतना की 'कल्यान कऽ जुगुति' कृति पढ़ि के भइल। भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में ई कृति एगो मील क पत्थर बा।

एह निबन्ध संग्रह में निबन्धकार का आपन जिनगी के कटु अनुभव से मिलल ज्ञान का दर्शन होला। वइसे तऽ एहमें क कूल्हि बाइसो रचना एक से बढ़ि के एक प्रभावशाली बाड़िन स। आ कउनो काटे बराये लायक नइखिन स बाकिर कुछ अइसन बाड़ी स जवन हमरा के बहुते प्रभावित कइले बाड़िन स।''

तीसरी भोजपुरी की किताब 'पढ़ी समझीं मनन करीं' सन् २०१६ में प्रकाशित हुई। छोटे-छोटे प्रसंगों को लेकर उपदेशात्मक अउर शिक्षाप्रद बातें लिखी गयीं हैं जो नयी पीढ़ी के मार्गदर्शन का काम करती हैं।

चौथी भोजपुरी की किताब है 'भोजपुरी भागवत कथा-सार'। यह वर्ष २०१८ में प्रकाशित हुई। भोजपुरी भाषा में भागवत कथा लिखी हुई यह पहली पुस्तक है। गीता-प्रेस द्वारा 'भागवत कथा सार' हिन्दी के अलावा गुजराती, मराठी, बंगला, ओडिया, अंग्रेजी, तमिल और तेलगु तक में प्रकाशित हुइ है, परन्तु भोजपुरी में अभी तक नहीं प्रकाशित हो सकी है।

प्रोफेसर रामदेव शुक्ल, पूर्व अध्यक्ष-हिन्दी विभाग, पंडित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर अपने टिप्पणी में लिखे हैं-

'इंजीनियर के वैज्ञानि दृष्टि अउर भागवत कथा के प्रति श्रद्धा-भक्ति के रचनात्मक मेल से 'भागवत कथा-सार' के रचना भइल बा। एह रचना से भोजपुरी गद्य के एगो अभाव दूर हो गइल।'

पाँचवीं पुस्तक में इं. राजेश्वर सिंह की वर्ष २०१९ में प्रकाशित हुई। पुस्तक का नाम है- 'राम पियारा साधु-संत' जिसमें ५१ राम भक्तन की चर्चा है।

इं० राजेश्वर सिंह के भोजपुरी में साहित्य सृजन के बारे में प्रोफेसर सदानन्द शाही, विभागाध्यक्ष हिन्दी, बी.एच.यू. वाराणसी की टिप्पणी :-

''भोजपुरी में गद्य लिखले क इंजीनियर राजेश्वर सिंह भोजपुरी क अइसन सेवक हउअन जे बिना कवनो हो हल्ला के आपन काम कइ रहल बाने। इंजीनियरिंग के पढ़ाई आ नोकरी के बीचे उनके भोजपुरी में लिखे के जवन धुन पैदा भइल ऊ भोजपुरी खातिर बहुत शुभ बा। भोजपुरी में सबसे ढेर गीत आ कविता लिखल जा रहल बा। गद्य के ओर लोग के धेयान नइखे जात। किस्सा, कहानी, उपन्यास आ कुछ साहित्य चर्चा भी होखे लागल बा। बाकिर कवनो भासा के समृद्धि खाती एतने से नाई हो सकेला। जबले तरह-तरह के गद्य हमरा सामने न आई तबले भोजपुरी के विकास एकांगी हो के रहि जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

इंजीनियर राजेश्वर सिंह भोजपुरी में गद्य लिखले क बीड़ा उठवले बाने। सबसे पहिले हमरे हाथ में भोजपुरी में लिखल उनकर एगो पर्चा आइल (जिनगी क जरूरत पानी)। एह पर्चा में ऊ पानी के उपयोग, पानी के शुद्धता के बारे में बहुत उपयोगी जानकारी देले बाड़न। रोज के जीवन से जुड़ल अइसन वैज्ञानिक सोच वाला पर्चा भोजपुरी में देखि के मन खुश हो गइल। ओकरे बाद उनकर भोजपुरी में लिखल कइगो किताब देखे के मिलली सऽ। जिनगी क दूबि हरियाइल, कल्यान क जुगति, पढ़ीं, समझीं मनन करीं अउर भोजपुरी भागवत कथा-सार हमके देखे के मिलल। बड़ा खुशी भईल कि ईहां के किस्सा कहानी के साथे अलगे-अलगे तरह के विषयन प लिख के भोजपुरी गद्य के सम्पदा बढ़ा रहल बानी।

एही क्रम में उहाँ के किताब 'राम पियारा साधु-सन्त' के देखल जा सकेला। एह किताब में इंजीनियर राजेश्वर सिंह एकावन राम भक्तन के परिचय देले बानी। हमके ई देखि के बहुत नीक लागल की ऊंहा के सगुण-निर्गुण के बराव में नइखी पड़ल। संतन के जीवन के गुणन क बखान कइ के ई बतवले बाड़न कि सबसे दोस्ताना रिश्ता राखल, भेद-भाव ना राखल, केहू के परेशान ना कइल ई कुल्हि आदमी के सद्गुण होखेला जवने के सबके अपने भीतर उतारे के चाही। आजु के समय में देखल जा त धीरे-धीरे ई कुल्हि मानवीय सद्गुण हेराइल जाता। एसे संतन के चरित्र क ई किताब समय क जरूरत बा।''

'राम पियारा साधु-संत' पर टिप्पणी करते हुए वरिष्ठ साहित्य श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग' ने लिखा है-

''अइसन रामपियारा साधु-सन्त के जीवन गाथा अनेक ग्रन्थन के मनन चिन्तन के आधार पर भोजपुरी में लिख के भगवान राम का प्रति श्रद्धा-प्रेम रखेवाले भोजपुरी भाषी लोगन तक पहुँचवले खातिर इं. राजेश्वर सिंह के प्रयास जरूर सराहल जाई, अइसन पूरा भरोसा बा, साथ ही पक्का विश्वास बा कि राजेश्वर जी के लगातार चले वाली कलम से फेर कवनो नया ग्रन्थ लिखा के भोजपुरी का पाठकन के सोझा जल्दी जाई। हमार इहे कामना बा।

श्री राजेश्वरसिंहस्य पुस्तकं मोददायकम् ।
पठन्तु प्रेमसहितं रामभक्तिरसोत्सुकाः ।।
चरितं रामभक्तानां भक्तिभावसमन्वितम् ।
शुभंकरोतु सततं राघवेन्द्रानुकम्पया ।।''

प्रोफेसर रामदेव शुक्ल जी 'राम पियारा साध-संत' पुस्तक पर नजर डालनेके बाद टिप्पणी किये-

''इन्जीनियर राजेश्वर सिंह भोजपुरी में भागवत कथा लिखले के बाद 'राम पियारा साधु-सन्त'

www.bhojpurisahityangan.com

लिखि के एगो नया कीर्ति उपरजलें। भोजपुरी साहित्य में इनकर योगदान भोजपुरी के इतिहास लिखे वाला लोग के मोटका अक्षर में लिखे के परी।''

सर्वविदित है कि 'महाभारत' भारत वर्ष का सच्चा अउर बड़ा इतिहास है। इसके रचयिका महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास जी हैं, वे अपने मुखारविन्द से खुद कह गये हैं-

यन्नेहस्ति न कुत्रचित् ।

अर्थात् जिस विषय की चर्चा इसमें नहीं किया गया है उसकी चर्चा और कहीं भी नहीं है।

श्रीमद्भागवत्गीता जइसन बेसकीमती खजाना भी एही महासागर का देन है। इस ग्रन्थ का जितना भी प्रशंसा की जाय कम है। इसमें कुल मिला के एक लाख श्लोक हैं, जिससे इसे शतसाहस्री संहिता के नाम से भी पुकारा जाता है।

महाभारत के कथानक का सारांश सरल भोजपुरी भाषा में श्री सिंह 'भोजपुरी महाभारत' नामक छठवीं किताब में किये हैं। इस किताब पर प्रोफेसर रामदरस राय अपने टिप्पणी में लिखते हैं-

''अचरज बा कि 'भोजपुरी-महाभारत' कऽ लेखक मूल महाभारत के अठरहों पर्व कऽ सगरो कथा भोजपुरी-गद्य में कहि गइल बा। महाभारत कऽ कथा कहीं खण्डकाव्य के रूप में तऽ कहीं महाकाव्य के रूप में बहुत रचाइल बा। कहानी आ उपन्यास, नाटक-निबन्ध-जीवनी आ रेखाचित्र के विधा-विकास में भी बहुत लिखाइल बा। 'भीष्म पर्व' में अर्जुन के कृष्ण द्वारा दीहल उपदेश-दर्शन 'गीता' के नाम से लाख-लाख बार पढ़ल गइल बा। लेकिन, महाभारत कऽ सगरो कथा भोजपुरी-गद्य में पहिली बार लउकति बा। पढ़े-समझे लायक भोजपुरी बा, गद्य-भाषा व्यवहार और बोल-चाल में उतरल बा। जे कबहूँ महाभारत नइखे पढ़ले होई, ऊ ये के पढ़ल चाही। संस्कृत वाला महाभारत ओइसे भी कठिन आ अबूझ बा। हिन्दी भी शिक्षित-समूह कऽ भाषा बनिके अगरा के चलति बा। लेकिन, भोजपुरी कऽ न कवनो तान बा आ न कवनो अइठ-अकड़। सहजे समझ में आइ जाले।''

श्री सिंह के लेखन शैली पर आगे टिप्पणी करते हुए प्रोफेसर राय लिखते हैं-

''रोचक कथा-शैली कवनो कथाकार के अलग कऽ विशिष्ट जगहि दिआवेले। ओइसे तऽ हर पर्व में शैली कऽ अनूठा निशान मिलि जाई, जवने के आधार पे 'भोजपुरी-महाभारत' के लेखक कऽ कथाशक्ति चमकत लउकि उठी। प्रसंगवश भूमिका के कुछ पन्ना में लेखक के सगरो कलम-शक्ति के उजागर नइखें कइल जा सकेला। लेकिन भगोना में पकल चावल कऽ एक दाना दवा के समझल जा सकेला कि कथाभाषा-कथाशैली और व्यंजक संवाद-शोभा में लेखक बेजोड़ बा। पढ़िके पाठक-समुदाय कऽ कौतूहल बढ़ी आ भोजपुरी भाषा-साहित्य में भीजि उठले कऽ शब्दानन्द भी। येह आशय कऽ एक दो छोटका उदाहरन 'भीष्म पर्व' के अन्तिम पन्ना से, 'द्रौपदी के चीरहरण

www.bhojpurisahityangan.com

के समय : भीष्म मौजूद रहि के खामोश रहलन, का तूँ भुला गइलऽ ? ऊ अधर्म ना कइले रहलन ? ई सुनते अर्जुन के गुस्सा आ गइल अउर ऊ तीखे बाणन से प्रहार करे लगलन, जवन उनके बदन क चमड़ी भेद के देहि में घुसे लगलन। तमाम तीर बिधा गइले से शरीर जर्जर हो गइल। ऊ लुढ़क के रथ से धरती प गिर गइलन अउर चुभल तीरन प टंग गइलन। कौतुक कि पीठ प मिट्टी ना लागल..... भीष्म के गिरते दूनो दल में हाहाकार मच गइल। लड़ाई बन्द हो गइल। दूनो दल क बड़-बड़ सेनापति रथ छोड़ के भीष्म के देखे पैदल दौड़ पड़लन। चारों ओर से कौरव-पाण्डव अउर बड़-बड़ महाराज घेर के खड़ा हो गइलन। दुर्योधन के लागल कि कौरवन क अब अन्त आ गइल बा। युधिष्ठिर भी दुखी खड़ा रहलन।'

छोट-छोट वाक्य में, सधल संवाद आ प्रश्नोत्तर में, कसल-सटीक संवाद कथाभाषा के प्रौढ़-पठनीय बनावेंलें। येह भाषा-कला में कथाकार राजेश्वर सिंह सयान लउकत बाटें। परोसले कऽ तरीका भी सहूरदार बा। लागत बा कि पाठक-मनोविज्ञान कऽ पुरहर खयाल कइके लेखक आपन सगरो कथा-संवाद सजवले बा।''

.....''हमरे खयाल से इं. राजेश्वर सिंह कऽ सगरो भोजपुरी-लेखन तुलसी-नाईं स्वान्तःसुखाय बा। तर्क ई कि ऊ विज्ञान कऽ पढ़वइया, विद्यार्थी रहल हउवें। अधीक्षण अभियन्ता के रूप में तकनीकी सेवा कइले हउवें। साहित्य के घुमावदार सीढ़ी पे चढ़ले-उतरले कऽ उनकर कवन गरज! ऊहो, भोजपुरी के पगडण्डी पे ढहले-ढिमिलइले कऽ कवन उछाह ? लेकिन, ईहे शब्दयात्रा उनके सुकून देत बा। येही के कहल जाला 'स्वान्तःसुखाय सृजन'।''

'भोजपुरी महाभारत' किताब के लेखन के बारे में प्रोफेसर सदानन्द शाही, विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग बी. एच. यू. टिप्पणी करते लिखे हैं-

''ओह महाभारत के ई. राजेश्वर सिंह भोजपुरी में लिखि के आम भोजपुरिया खातिर सरल सहज बना देले बाने। जवने अन्दाज में भोजपुरी लोककथा कहत सुनल जाले लगभग ओही अन्दाज में पूरा महाभारत सुना धरले बाने इंजीनियर साहब।

महाभारत सुनते जीव घबराये लागी कि एतना बड़हन ग्रन्थ कइसे पढ़ल जा। पढ़ल शुरु करऽ त कहानी में से एक कहानी। कहानिन के सिलसिला अइसन कि ओकर सोर परई ना बुझाला। लेकिन एह महाग्रन्थ के सरल, सहज शैली में भोजपुरी में ए तरे लिखल गईल बा कि साधारण से साधारण आदमी एके बिना घबरइले आ परेसान भइले पढ़ि सकेला।

भोजपुरी महाभारत दू बात प भरोसा दे रहल बा। एक त भोजपुरी भाषा में बड़हन से बड़हन वृत्तान्त के कहले के क्षमता बाऽ। आ दूसरका ई कि आजु भा त काल्हु ए भाषा के गद्य रूप निखरि के आई-आ कवनो भाषा के सामने ठाढ़ हो सकी।''

www.bhojpurisahityangan.com

किताब 'भोजपुरी महाभारत' के लेखन पर इं. राजेश्वर सिंह को बड़हलगंज-गोरखपुर में मुक्तिधाम पर आयोजित भव्य समारोह दिनांक १९-१२-२०२१ में सरयूरत्न सम्मान वर्ष २०२१ से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान माननीय विधायक, (चिल्लूपार) श्री राजेश त्रिपाठी जी द्वारा, तमाम गणमान्यजन के मौजूदगी में प्रदान किया गया था।

अड़तीस श्रीकृष्ण भक्त के जीवन चर्चा पर आधारित भोजपुरी की सातवीं पुस्तक 'श्याम पियारा साधु-सन्त' वर्ष २०२० में तैयार हुआ। डा० आद्याप्रसाद द्विवेदी जी इस किताब पर अपने टिप्पणी में लिखे हैं-

"कउनो भाषा के समृद्धि क कसौटी होला नीम्मन आ पोढ़गर साहित्य। भोजपुरी भाषा के साहित्य भण्डार दूसर कहे जाये वाली क्षेत्रीय भाषा से अधिका गुणवत्तापूर्ण आ समृद्ध बा। भोजपुरी साहित्य में लोरिकायन, आल्हा, सोरठी, विहुली, गोपीचन्द-भरथरी, घाघ के कहाउत, विरहा आ संत-साहित्य के एगो लमहर परम्परा रहल बा। ये में संत कवियन के कतार ढेर बड़वर बा। हमके खुशी बा कि इं. राजेश्वर सिंह जी केवल भोजपुरी क्षेत्र में ही नाहीं बलुक क्षेत्रभर के सगरे कृष्णभक्त साधु-सन्तन के फूल अपने में मनका में गूंथि के सजा दिहले बाँटे। हालाँकि उनके नजर से कुछ संत लोगन के नाँव ओझल हो गइल जवना में योगीराज देवरहवा बाबा के लगे जब भक्त लोग जायँ त ऊ सबसे **'ॐ वासुदेवाय नमः, ॐ कृष्णाय नमः'** के जय करावत रहें। ये ही कड़ी में लक्ष्मी सखी आ कामता सखी के नाँव भी बा।

ये सबका बावजूद इं. राजेश्वर सिंह के 'श्याम पियारा साधु-सन्त' फूलन से गुँथाइल एक महमहात माला बा जवना के एक-एक फूल पत्ती में लेखक के मन के आस्था, भक्ति सरधा आ तजुर्बा आपन सुगन्ध फइला रहल बा। इं. राजेश्वर सिंह जी अभियांत्रिकी सेवा से मुक्ति मिलला के बाद अपने जिनगी के गति-मति आ आपन अनुभव के पान फूल माफिक ये कृति के भाव-भूमि पर खड़ा क के निम्मन ढंग से अपने चित्त भूमि पर चढ़ा दिहले बानी।

अगर भोजपुरी क्षेत्र के पढ़निहार लोगन के मन में अपने पुरखा लोगन के बारे में जाने के सरधा होई त लोग ये कृति के स्वागत करी। ये कृति के पढ़ला के बाद लोगन के सोचे खातिर मजबूर होखे के परी कि कवना तरीके से साधारण आदमी भी अपने लगन आ ईश्वर के प्रति समरपन के भाव से ऊँच कोटि के संत-महात्मा बन सकेला।"

श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग' जी इस किताब पर अपने टिप्पणी के रूप में लिखे हैं-

"आज का भौतिकवादी युग में भक्तिपरक ग्रंथन के अध्ययन क के ओकर सारतत्व ले के भोजपुरी में अनुवाद कइल चाहे साधु-सन्तन का जीवन चरित के अनुशीलन क के अपना बोली में लिखे के काम ईश्वरीय प्रेरणा के बिना संभव नइखे। खुशी के बात बा कि इं. राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी साहित्य का एगो ओझल होत कोना के अपना कलम का अजोर से सामने ले आवे में लागल बाड़े, जवन कब्बो भोजपुरी क्षेत्र के निर्गुनिया सन्तन के भक्तिभाव से गुलजार रहल रहे।

अभियन्त्रण पेशा से अवकाश पवला के बाद अपना मेहनत लगन आ धार्मिक अभिरुचि का चलते इं. राजेश्वर सिंह अबले अनेकन पुस्तकन के प्रकाशित करा चुकला का बादो अभी एह काम में काफी सक्रिय बाड़ें।

हमरा पूरा भरोसा बा कि इं. राजेश्वर सिंह स्वस्थ आ सक्रिय रह के आपन कलम चलावत आ भोजपुरी के भण्डार भरत रहस।

श्री राजेश्वर सिंह के साहित्यिक अवदान ।
जन मन के निर्मल करी पाई यश सम्मान ।।"

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का सत्ताइसवाँ अधिवेशन जो जमशेदपुर के तुलसी भवन (विष्टुपुर) में दिनांक १६-१७ दिसम्बर २०२३ को आयोजित हुआ था, में इसी पुस्तक 'श्याम पियारा साधु-सन्त' के लेखन पर इं. राजेश्वर सिंह को 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार' देकर सम्मानित किया गया।

गुरु महिमा के चर्चा के साथ इक्कीस सन्त गुरुअन क जीवन-चर्चा के संग आठवीं पुस्तक 'दीक्षा गुरु' सन् २०२० में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में ऐसे सन्त महात्माओं के जीवन की चर्चा है जो इं. राजेश्वर सिंह की पुस्तक 'राम पियारा साधु-सन्त' और 'श्याम पियारा साधु-सन्त' में चर्चित नहीं हैं।

इस पुस्तक में चर्चित इक्कीस सन्तों में से नौ सन्त गोरखपुर जिला और आस-पास के क्षेत्र के रहे हैं। इनके नाम हैं-योगीराज देवरहा बाबा, श्री जयदयाल जी गोयन्दका, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, श्री परमहंस योगानन्द, महन्त दिग्विजयनाथ, श्री राधा बाबा, महर्षि ओंकारानन्द सरस्वती, स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी और महन्त अवेद्यनाथ।

इं. राजेश्वर सिंह ने अपने श्रद्धेय गुरु श्री सच्चिदानन्द दास 'बंगाली बाबा' और अपने परम गुरु श्री श्री सीताराम ओंकारनाथ महाराज के जीवनी की भी पुस्तक में चर्चा किया है। श्री सिंह लोगों से बार-बार कहा करते हैं कि इन गुरुजन के कृपा से ही यह सब कार्य सम्पन्न हो रहा है।

पुस्तक 'दीक्षा गुरु' के लेखन पर टिप्पणी करते हुए प्रोफेसर रामदेवजी शुक्ल ने लिखा है-

"श्रद्धालु भक्त लोगन के श्रद्धा अपने इष्टदेव आ अपने पंथ तक सीमित रहेला। इंजीनियर राजेश्वर सिंह के श्रद्धा-एतना विकसित बा कि इतिहास-भूगोल में जहाँ-जहाँ जवन-जवन लोग भक्ति भावना आ लोक-सेवा में लागल रहल बा ओ सबके महत्व के उजागर करत रहेलें। एह किताब

www.bhojpurisahityangan.com

में उनके पूज्य-बुद्धि के उदाहरण देखल जा सकेला।''

प्रोफेसर चितरंजन मिश्र इस किताब पर टिप्पणी करते समय लिखे हैं-

''कुल मिला के इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी क नया ग्रन्थ 'दीक्षा गुरु' भारतीय गुरु-परम्परा क महातिम बतवते बा ओसे तमाम निष्ठावान पढ़वैया लोगन में चेला क सही गुन ढंग बनी, इहो उमेद कहल जा सकेला। राजेश्वर सिंह जी नि:स्पृह भाव से बिना कुछ पवले की आशा के भोजपुरी की समृद्धि में लगल बानीं, ई एगो सराहनीय बाति बा। आजुकाल त 'जेही ध्याई उहे पाई 'एही क बाजार बा' के जानत समुझत भी इंजीनियर साहब भाषा साहित्य आ संस्कृति की मोर्चा पर तरुणाई के उत्साह से लगल बानी।''

प्रोफेसर रामदरस राय इस किताब पर टिप्पणी करते समय लिखे हैं-

''शुरू से अन्त ले सगरो अध्याय आ जीवनी पढ़ले के बाद हमके बुझाइल की 'दीक्षा-गुरु' एगो पढ़े आ सहेजे लायक किताबि बा। आजु पड़ताल कइके देखल जा तऽ साहित्य के पत्रा से जीवनी कऽ पाठ गायब होत जात बा। इं. राजेश्वर सिंह कऽ ई किताबि येह अभाव के पूरा करति बा। छपि के आ गइले प सेरात भोजपुरी-गद्य एक बार फिर गरमा के अंगड़ाई लेई। संस्कृत-हिन्दी कऽ दुरुह डगर जनभाषा-भोजपुरी कऽ सोहबत पा के निहाल हो उठी। ई भोजपुरी-गद्यग्रन्थ जदि मॉरिशस, गुयाना, ट्रिनीडाड आ फिजी उपमहाद्वीप में पहुँचले कऽ जोगाड़ निकारि पाई तऽ येके भोजपुरी कऽ विश्व साहित्य बनले में देर नइखे लागी। हिन्दी, अंग्रेजी आ उर्दू भाषा में जदि येह ग्रन्थ कऽ अनुवाद हो गइल तऽ ई एक्कीसवीं शताब्दी कऽ भोजपुरी-गद्य कऽ कालजयी किताबि बनि उठी। लेखक इं० राजेश्वर सिंह के रचनात्मक कीर्ति में इजाफा करी।

मैक्समूलर, ग्रियर्सन आ सुनीति कुमार चटर्जी न तऽ संस्कृत भाषाभाषी रहलन अउर न हिन्दी भाषाभाषी। लेकिन संस्कृत आ हिन्दी भाषा-साहित्य के क्षेत्र में उतरि के नामचीन काम कइलें। ओइसहीं राजेश्वर सिंह कऽ अध्ययन क्षेत्र विज्ञान-अभियांत्रिकी आ अंग्रेजी रहल बा। कार्यालयीय संवाद क माध्यम हिन्दी रहल बा। लेकिन एगो बड़वर अचम्भा ई बा की ऊ अपने साहित्यिक लेखन-खातिर भोजपुरी कऽ काया-छाया पकरले बाटें। येह अद्भुत सुभाव के लेखक पे इहे टिप्पणी ठीक बइठत बा की उनके भीतर अपने मातृभाषा खातिर अपार-अथाह प्रेम-उछाह बा जइसन की संस्कृत कऽ जानकार काव्य-पण्डित हो के भी तुलसीदास आपन मातृभाषा-प्रेम अवधी में देखउले बाटें।''

इं. सिंह द्वारा भोजपुरी भाषा में नौवीं किताब 'भोजपुरी रामायण' गद्य शैली में सन् २०२१ में प्रकाशित कराया गया। इसमें श्रीरामचन्द्र जी के अभिर्भाव, धनुष भंग व श्रीराम वियाह प्रसंग में लोक गीतन कऽ समावेश किया हुआ है, जो पाठकन को मनोरम लगता है। पुस्तक के अन्त में आरती भी दिया हुआ है। इस पुस्तक पर टिप्पणी करते हुए प्रोफेसर रामदेव शुक्ल लिखते हैं-

www.bhojpurisahityangan.com

"दुनिया भर में राम कथा कौनों न कौनों रूप में कहल, सुनल गावल जाला आ नाटक रूप में खेलल जाला। रामलीला के केतना रूप बा, एकर गिनती कइल आसान नइखे। भोजपुरी में कवितई बढ़ंती पर बा। रामकथा लिखवइन के कमी एहू में नाहीं बा। पेशा से इंजीनियर रहले के बाद राजेश्वर सिंह, भोजपुरी में रचना कइले के रेकार्ड बनवले पर तूलि गइल बानीं। साधु-संतन के जीवन चरित चार-पाँच किताब में वर्णन कइले के बाद भोजपुरी में रामायण लिखि के अगिली रचना के तैयारी मन ही मन में हो रहल बा।"

".....एह 'भोजपुरी-रामायण' के मौलिकता एह बात में देखल जा सकेला कि बाल्मीकि रामायण के विभाजन 'काण्ड' में भइल बा। तुलसीदास के रामचरित मानस के 'सोपान' में भइल बा। अउर कवि लोग अपने-अपने ढंग से बँटवारा कइले बाड़ें। राजेश्वर जी ओह लोगन के शीर्षक छोड़ि के जवने काण्ड में जवन घटना पसन्द कइले बानीं ओही के शीर्षक बना दिहले बानीं। एहतरे सात चाहे आठ की जगही पर एह रामायण में उनत्तीस खण्ड हो गइल बा।"

वैश्विक बीमारी कोरोना से लोग जब ग्रसित होकर अत्यधिक परेशान हो गये, जनमानस में हा-हाकार मच गया। चिकित्सक लोग भयभीत हो अपने बचाव के लिए अपनी-अपनी दुकानें बन्द कर छिपने लगे। बीमार लोग दवा के अभाव में मौत के घाट उतरने लगे। ऐसी परिस्थिति में इं. राजेश्वर सिंह में जन-जन को राहत पहुँचाने का उपाय ढूँढ निकालने की चेतना जगी। उन्होंने घर के रसोई में खाने-पीने वाले सामान जैसे मिर्च-मसाला और घर के आस-पास के पेड़-पौधन के गुणों का अध्ययन किया। साथ ही ये किस रोग में किस प्रकार उपयोग कर बीमारी दूर करने में मदद कर सकते हैं, इसकी भी जानकारी अर्जित किये।

मतलब यह कि रसोई की सामग्रियों और आस-पास के पेड़-पौधों की औषधीय उपयोगिता की भरपूर जानकारी हासिल किये। फिर क्या था, उन्होंने पचासों सामग्रियों के उपयोगिता पर आधारित एक किताब लिख कर छपवा कर बाँटना शूरू कर दिया। किताब का नाम रखा 'घरेलू-नुस्खा'। यह उनकी भोजपुरी की दसवीं किताब है। इससे तमाम लोग लाभ उठाये और उठा रहे हैं। इस किताब का दूसरा संस्करण भी छप चुका है और वितरित हो रही है। शुद्ध पेय जल की गुणवत्ता के बारे में बहुत ही उपयोगी लेख 'जिनगी क जरूरत पानी' भी इसमें दिया हुआ है।

नवीं सदी के लेखक श्री विष्णु शर्मा रचित 'पंचतंत्र' के कहानियन पर आधारित श्री सिंह की ग्यारहवीं भोजपुरी भाषा की किताब 'भोजपुरी पंचतंत्र' है। इसमें कुल अड़सठ कहानियाँ हैं जो नीति परक उपदेशात्मक हैं। इस किताब पर डा० आद्या प्रसाद द्विवेदी जी टिप्पणी करते हुए लिखते हैं-

"भोजपुरी पंचतंत्र में टंकाइल नीति से भरल किस्सागोई विषय के विविधता से भरल रहला के नाते पढ़े लायक बन गइल हवे। पंचतंत्र में सहेजल पचास से अधिका किस्सा पाठकन के बाँधे

www.bhojpurisahityangan.com

रखले में येसे समर्थ बा कि इन कहानिन में पात्र कउआ, खरहा, केकड़ा, बानर, सिंह, लोमड़ी आदि जंगल के जानवर सब बाटें जवना से मनई खातिर उपदेश मिलत बा। ई भोजपुरी पंचतंत्र आनंद आ उछाह से भरल तलाब बा जवना में कमल के फूल माफिक ढेर रसगर किस्सा-कहनी, लहलह करत बा। एक नीम्मन अनुवाद के रूप में ये भोजपुरी पंचतंत्र के तहियावल दस्तावेज के रूप में देखल जा सकी। सरल भाषा में लिखाइल बिना कउनो लाग-लपेट के जिनगी के निचोड़ देखल, पढ़ल, हंसल अउर कथारस के आनन्द लिहले खातिर ई 'भोजपुरी पंचतंत्र' पढ़े जोग रचना बा। भोजपुरी रचना संसार में ये संग्रह के स्वागत होई, ई हमरा के विश्वास बा।''

प्रोफेसर रामदेव शुक्लजी इस पुस्तक पर टिप्पणी लिखते-लिखते लिखे हैं-

''इंर्जानियरी के काम से रिटायर भइले के बाद इनके भोजपुरी गद्य में दर्जन भर किताब छपल बा। भोजपुरी पंचतंत्र पढ़ि के पाठक लोग इनके **'भोजपुरी बीर'** कहे लागें त अचरज ना होई।''

प्रो० शुक्ल जी टिप्पणी के अन्त में लिखे हैं-

''इनके अगिला किताब होई 'भोजपुरी योगी-कथामृत'। इनके प्रेमी पाठक लोग के अगिला साल में पढ़े के मिलि जाई।''

प्रो० शुक्ल जी की यह टिप्पणी शिवरात्रि, २०२२ को लिखि गयी थी। इं. राजेश्वर सिंह ने श्री शुक्ल के इच्छा के अनुरूप परमहंस योगानन्दजी की आत्मकथा पुरा का पुरा उनचासों प्रकरण भोजपुरी में लिख कर वर्ष २०२३ में प्रकाशित कराया और जमशेदपुर में दिनांक १६-१२-२०२३ को अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सत्ताइसवें अधिवेशन में लोकार्पित करा दिया। इस पुस्तक का २७ दिसम्बर २०२३ को मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर में एल्युमीनी एसोसिएशन के गोल्डेन जुबिली महोत्सव के अवसर पर भी लोकार्पण हुआ। इतना ही नहीं इस पुस्तक का लोकार्पण विश्व भोजपुरी सम्मेलन के मातृभाषा दिवस दिनांक २१ फरवरी २०२४ को काशी में आयोजित समारोह में भी लोकार्पण हुआ। इस समारोह में श्री सिंह को 'डा० विवेकी राय स्मृति सम्मान' से भी पुरस्कृत किया गया। यह किताब 'भोजपुरी योगी कथामृत' इं. राजेश्वर सिंह की भोजपुरी की बारहवां किताब थी।

इं. राजेश्वर सिंह की भोजपुरी भाषा की तेरहवीं किताब है 'भोजपुरी रहनी करनी योगाचार्य प्रणवानन्दजी' जिसमें भारत सेवाश्रम संघ के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के जीवन चरित्र के बारे में लिखा गया है।

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१०

साहित्य-खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक कऽ सगरो किताबिन से तनी-तनी

-सीमा सिंह

किताब : जिनगी कऽ दूबि हरियाइल

लेख : मदद अकारथ ना जाले.....

कहावत हऽ कि केहू कऽ मदद कइल कब्बों बेकार ना जाला। कउनो न कउनो भावें ऊ अपनिये मदद सरीखे होला। कइगो एइसन कहनी-कहाउत हईं जवने पऽ विचार कइला से, बाति सच्चों लेखा लागे लगेले।

एक बार कऽ बाति हऽ कि एक पेड़ पर, एगो चिरई ! बैठलि रहल। पेड़ नदी के किनारे रहल। चिरई देखति हऽ कि नदी में एगो चिउँटी पानी में डूबति उतराति हऽ कउनों सहारा ना पवले से किनारे ना लागि पावति बाऽ डूबे-डूबे भइल बाऽ। चिरई एगो पतई तोरि के नदी में गिरा दिहलसि। चिंउँटी पतई पकड़ि के वो पर चढ़ि गइल। पतई बहत-बहत कुछू दूरी पर जाइके किनारे लागि गइल। चिंउँटी पानी से बाहर आ गइल। एक दिन चिंउँटी देखति हऽ कि एगो बहेलिया बन्दूकी से पेड़ पर बैठलि एगो चिरई पर निशाना साधत बाऽ। चिंउँटी धियान से पेड़ पर बैठलि चिरई के देखलसि। देखते मन्तर ऊ चिरई के पहचानि गइल कि ई तऽ उहे चिरई हऽ जवन पतई गिराइ के हमार जान बचवले रहलि। चिंउँटी तुरन्ते बहेलिया के गोड़े के पास पहुँचि गइलि अउर जोर सो गोड़े में कटलसि। बहेलिया चिंउँटी के कटले निशाना ठीक से ना ले पवलस जवने से चिरई कऽ जान बचि गइल। चिरई पेड़े से पतई समय से तूरि के ना गिरवले होति तऽ चिंउँटी कऽ जान ना बचल होत अउरि जदि चिंउँटी कऽ जान ना बचल होत तऽ चिरई कऽ जान ना बचल होत। एहसे साफ जाहिर बाऽ कि केहू कऽ मदद कइला से आपन मदद होला। केहू कऽ मदद कइले से केहू के ना चूके के चाही।

केहू क मदद कइले से कइसे-कइसे का हो जाला। एगो अउरी कहानी अइसे जनम लेहले बाऽ एगो राजा रहलन। राजा कऽ मन्त्री अचके मरि गइल। राजा के आस-पास जवन मनई रहलन वोहमें से केहू मन्त्री होखे लायक ना रहल। राजा परेशान रहलन। मन्त्री के खोज बदे एक दिन बहुते साधारण मनई कऽ भेस बदलि के एगो बैलगाड़ी पर बइठि के चल दिहलन। रहता कचिया

www.bhojpurisahityangan.com

रहे। बारिस के कारन एक जगह बहुत भास भइल रहल। वोही भास में बैलगाड़ी घुसा के खड़ा कऽ दिहलन। रहता बहुत चालू रहे। गाँव-गवईं कऽ मनई एक के पीछे एक जानी आवल-जाइल करें। जे केहू आवे राजा अउर बैलगाड़ी कऽ हँकवइया गाड़ीवान राही के आवाज दे के बुलावें। अउर उनसे मदद कऽ गुहार करे लागें। केहू-केहू समय नाही बाऽ कहि के सीधे चलि जा तऽ केहू ई कहत चलिजाय कि हमरा से अकेलवें ना सपरी। जब कई जानी रहिहें तवें गाड़ी भास से बहरिया पाई। केहू-केहू तऽ तनी खुन जोर लगा के हारि मानि के चलि जाँय। एक मनई आइल



तऽ रुकते कहलसि के 'ए भाई ! तूहन लोगन बड़ी देरी से परेशान लागत बाड़ऽ। घबड़ा जनि। तनि कपड़ा निकाले दऽ। एक बैल निकालि के बाहर कई दिहल जाई।' वाह प्रसन्न मनई कऽ चमक बिसवास देखि के राजा बड़ा प्रसन्न भइलन। राजा कहलन कि एऽ भाई! मदद करऽ। हमनी के बड़ा परेशान बाड़ीं केहू मदद नइखे करत। लोग आवत बाड़न देखि के चलि जात बाड़न। ऊ मनई ऊपर कऽ पहिरल कपड़ा उतारि के अउर नीचे कऽ कपड़ा ठेगुना से ऊपर तक मोड़ि के तैयार भइल अउर भास में गाड़ी के पास आइके गाड़ी कऽ जवन पहिया जियादे धसल रहल ओह तरफ कन्धा लगाइके गाड़ी उठा दिहलस अउर ललकार के हाके खातिर बोलल। ओकरे ललकार से राजा अउर गाड़ीवान के प्रयास से बैल खींच के गाड़ी भास से बाहर निकारि दिहलस। राजा वोह मनई के हिम्मत अउरी पुरहर मन से मदद कइले से खूब परभावित भइलन अउर मन ही मन में उनके मन्त्री बनावे खातिर सोचि लिहलन। उनकर नाम रहल हरिहर सिंह। पड़ोसी गाँव रामपुर कऽ रहवइया रहलन। राजा वोह घड़ी बिना अपने के जाहिर कइले वहाँ से चलि गइलन। राजा अगिले दिन आपन एक कारिन्दा भेजि के हरिहर सिंह के अपने दरबार में बोलवलन। भरल सभा में सबके सामने ऐलान कइलन कि आज से हमार मंत्री हरिहर सिंह रहिहैं। उहवां के जे भर रहल अचम्भा में पड़ि गइल। राजा सबके चेहरा क भाव पढ़ि के, सबके सामने भास में फँसल गाड़ी के निकरले कऽ कहनी सुना के मन्त्री चुनले कऽ तरीका से सबके अउरि अचम्भा में डारि दिहलन। राजा कहलन कि मुसीबत में फँसल बैलगाड़ी के निकरले खातिर इनकर कइल प्रयास हमके बिसवास दिला दिहलस कि ई मनई राजा अउर प्रजा दुनहुँ के मुसीबत में फँसे ना देइ। जवन कवनों मुसीबत आ भी जाइ तऽ हिम्मत के चलते हरिहर सिंह आपन मदद सहजे कऽ लिहलन। एह तरह से लिखल दूनो कहानी से साफ हो जात बा कि केहू कऽ मदद कइल कबहूँ अकारथ ना जाला। अइसे सोचीं तऽ अपने मदद होला।

www.bhojpurisahityangan.com

किताब : कल्यान कऽ जुगुति

लेख : भगवान के पूजऽ हिरिदय से

हिन्दू भाई लोगन के देवी-देवता, अउरी भगवान कऽ गिनती नइखे। केहू के पूजलेकऽ कवनो खास दिन मानल हऽ तऽ केहू कऽ कवनो खास महीना। शिव जी कऽ भगत लोग सोमवार कऽ दिन अगोरिहें तऽ हनुमान जी कऽ मंगल अउरी सनीचर। दुर्गा माई कऽ भगत नवरातर अगोरिहें तऽ कृष्ण भगत लोग भादो अष्टमी। दिन-तिथि अवते लोग अपने-अपने भगवान के खुश करे के खातिर पूजा-पाठ करे कऽ मन बनाके, पूजन-कऽ समान जुटा के, मन्दिरन के ओर धाइ पड़िहें। केहू भगवान या देवी-देवता के पूजे बदे समान घर से जुटा के ले जाई तऽ केहू जल्दी में रही तऽ मन्दिर पर जाइके आस-पास नियरे दुकानी पर नीक-बाउर जवने बिकत रही, खरीदि के चढ़ाई।



केहू के घरे शादी-बियाह कवनो काज-परोज ठनाइल रही तऽ अउर कुछ नाहीं कऽ पाई तऽ पंडित-पुरोहित के बुलवाइ के सत्नारायन भगवान कऽ कथा सुने के ठान लेई। भगवान कऽ पूजा-पाठ कऽ मन बनावल तऽ बड़ा निम्मन-नीक काम हऽ, लेकिन ओकर कइले में हिरिदय कऽ लगाव अउर परेम बड़ा जरूरी बा। खाली खाना-पूर्ती व दिखावा खातिर पूजा-पाठ नाहीं करेके चाही। अइसन कइलेसे कवनो लाभ नाहीं मिलेला, बल्कि उल्टा भइले कऽ भी अन्देसा रहेला। बहुत बार अइसन देखल जाला कि सड़ल सोपारी, खराब चावल जवना के खुद खावेके इच्छा ना होई, पानतता, बसाइल घी पूजा-पाठ अउर हवन में लोग इस्तेमाल करेलन। मजिगर समान अपने खाये बदे रखिहें। यह मतिन बनावटी सोच अउर ओछ विचार से भगवान के ठगि के उनके कुछ हासिल कइल चाहेला, लेकिन भगवान ठगालन नाहीं। सड़ल-पाकल, बसाइल समानन कऽ भोग लगवला से भगवान के ओरी से भी सड़ले पाकल आसीर्वाद भी मिलेला। मनई भूलि जाला कि बुद्धि अउरी सोच के हिसाब से फल भी मिलेला। ई सोचे के चाही कि जदि केहू नेवतल मनइ के घरे कऽ सड़ल पाकल चीज परोसल जाइ तऽ ऊ कवने मन से खाई ? वोकरा मन में कवन भाव आई ? भाव के मुताबिक हिरिदय से आसीर्वाद देके जाइ, ऊ कईसन होइ ? वोहकर का फल होई ? साथी संघतिया अउर दामाद के नेवति के जवने मतिर उनसे सब पेस आवेला, जइसन उनकर खातिर-बातिर करेला कम से कम वोतना तऽ भगवान के साथ करेके चाही। भगवान तऽ भाव कऽ भूखाइल होलन, उनकरा के ऊपर कऽ ढोंग ना भावेला। जइसन भाव होला, वइसहीं फल भी मीलेला। भाव झूठ चाहे कलुषित तऽ फल भी झूठ अउर कलुषित होई। साफ मन से एगो पतइयो चढ़ावल भगवान के बड़ा प्रिय लागेला। समर्थ गुरु रामदास जी

www.bhojpurisahityangan.com

कहले हउवन-

'जैसा **भाव वैसा भगवान्** जेकरे पास जइसन भाव हउए वोकरा खातिर भगवान भी वइसहीं हउअन। भगवान अन्तर्यामी यानी कि सबके बाहर-अन्दर कऽ सगरो भाव जानेलन। उनसे छल ना चली। जे उनकरा संगे छल करी तऽ ऊ वोकरा संग महाछली हो जइहें। जेकर जेतना भाव सुद्ध होई ऊ वोकरा संगे वोतना प्रेम करेंलन, काहें से कि ऊ 'जइसन के तइसन' वाला हउअन। जे जवने ढंग से उनकर पूजन-भजन करेला ऊ वइसने वोहके फल देलन। फूल कऽ एगो नाम हऽ सुमन यानी की मन के सुद्ध कई के भगवान के कुछ चढ़ावे का चाही तब भगवान खुश होलन।

हमरा सबके भगवान के साथ साँच कऽ बर्ताव करेके चाही। जब हमनी कऽ हिरिदय से अपने भगवान के पूजल जाइ। तऽ भगवान भी हमरा कऽ धियान रखिहें। आजु कालि 'भाव कऽ अकाल' पड़त जात बाऽ। भगवान मनई के चाही की अपने भाव कऽ बचाव करे, वोह के बढ़ावे अउर एह लोक से परलोक ले साध के धन्य हो जाऽ।

किताब : पढ़ीं, समझीं, मनन करीं।

लेख : अन्दरुनी ताकत



केहू कवि कहले बाड़न कि **'आसा एक राम जी से, दूजी आसा छोड़ दे।'** एहकर मतलब ई नाहीं हउए कि भगवान के सहारे बइठल रहे अउर कउनो काज करबे ना करे। आपन हाथ-गोड़ न हिलावे अउर कहे कि भगवान जी सगरो काज करिहें। उनके सहारे कऽ आड़ लइके निकम्मा बनिके सूतल रहे। ई त आलस ह। एही से कहल बा-**'दैव दैव आलसी पुकारा।'** भगवान में विश्वास करेके चाहीं बाकिर निकम्मा ना बने के चाही तुलसीदास महाराज लिखले बाड़न-**'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।'** भगवतगीता में भी लिखल बा-**'कर्मण्येवाधिकारस्ते, मां फलेषु कदाचन्।'** कर्म कइल मनई के जिनगी के सकारल ह। कविवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर जी भी अपनी कविता में संकेत कइले हउअन कि भगवान के दया मँगले के बजाय संघर्ष करे खातिर ताकत कऽ माँग करेके चाहीं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी कैंसर जइसन खतरनाक रोग से पीड़ित रहलन। माँ काली कऽ सिद्धि उनके रहल। कैंसर से छुटकारा खातिर जदि माँ काली से एक प्रार्थना कइले होतन त माँ के किरपा

www.bhojpurisahityangan.com

से पलभर में रोग से मुक्ति पा गइल होतन बाकिर ऊ माँ से बराबर इहे माँग कइलन कि माँ हमें अन्दरूनी ताकत दे जवना से चाहे अउर कवनो किसिम कऽ संकट आवे त ओह से लड़ल जा सके, उबरल जा सके।

तुलसीदास जी लिखले बाड़न-**'हरि व्यापक सर्वत्र समाना।'** ऊ ई लिखि के स्पष्ट संकेत कइले हउअन कि भगवान सगरो-जहान में सब जगह व्यापक रूप से बाड़न, ई विस्वास हमेसा राखे के चाहीं बाकिर उनकर किरपा पवले कऽ हकदार मनई ऊ होला जे अपने अन्दर परोपकार, परमारथ, नैतिकता व सदाचार जइसन गुणन कऽ विकास कइले होला। नीक-नीक संस्कार के बढ़ले से अन्दरूनी ताकत भी बढ़ेला।

अंगरेज के गुलामी से छुटकारा पावे खातिर देस के क्रांतिकारी लोगन कऽ अन्दरूनी ताकत उनके फाँसी के तखत पऽ हँसत-हँसत चढ़ा दिहलस। एतने नाहीं ऊ लोग इहो कहलन कि हम फाँसी क फन्दा खुसी-खुसी एहसे गटई में पहिनत हई कि अगिले जनम में हम अउर अधिक ताकत से लड़ सकीं।

जेकरे अन्दर ई अन्दरूनी ताकत ना होला ऊ रोज-रोज मरेला अउर कई बार मरेला। मुँह लटकवले रहिअन, बुझाई कि मुअले कऽ अगोरा करत हउअन। जाने कब मउत आइ, कब दुनिया से छुट्टी मिली।

किताब : भोजपुरी भागवत कथा-सार

लेख : उपासना से भोग अउर त्याग क पावल

राजा परीक्षित श्री शुकदेव जी से पूछलन-'भगवान शंकर क उपासना करे वाले देवता, राक्षस अउर मनई अधिकतर धनी अउर भोगन से भरल-पूरल हो जालन, जबकि भगवान शंकर खुद



सगरो भोगन के तजि दिहले रहलन। एकरे इतर लक्ष्मीपति भगवान विष्णु क आराधना करे वाला धनी अउर भोग से भरपूर ना होलन। अइसन उल्टा फल ओह लोगन के काहें मिलेला ?' श्री शुकदेव जी कहलन-'परीक्षित ! इहे प्रश्न अश्वमेघ यज्ञ कइले के बाद तुहार दादा धर्मराज युधिष्ठिर भगवान् श्री कृष्ण से पूछले रहलन।' भगवान श्री कृष्ण कहलन-'जेकरे उपासना से ऊ खुश हो जालन ओह के सबसे पहिले खूब गरीब बना देलन। गरीब हो गइले से ओहकर सगा-संबंधी भी ओह के छोड़ के दूर हो जालन।' अब क उपासक धन पवले खातिर तरह-तरह क उपाय करे लगेला, बाकिर ओकर सगरो उपाय बेकार हो जाला। एह मतिन ओह के निराश हो जाये

www.bhojpurisahityangan.com

के पड़ेला फिर ऊ धन पवले के कामना से बचे लगेला। आखिर में भगवान के भक्तन क संगत उनके नींक लगे लगेला। एकरे बाद भगवान ओह पर कृपा करे लगेलन अउर ऊ सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म के पावेला। भगवान कहले हउअन-

मस्याहमनुगृहणामि हरिष्ये तद्धनं शनैः ।
ततोऽधनं त्यजन्त्यस्य स्वजना दुःख दुःखितम् ।।

-श्रीमद्भागवत, १०/८८/८

भगवान श्री कृष्ण कहलन कि हमार आराधना कइल अउर हमें खुश कइल दूनो कठिन हउए। एही से साधारण मनई हमार आराधना ना कइ के हमरही समान दूसर रूप में दूसर देवता लोगन क आराधना कइल करेलन। शंकर जी आशुतोष हउअन ऊ जल्दी खुश हो जालन अउर खुश हो के भक्त के लक्ष्मी के साथ अउर सम्पदा भी दे देलन। जे के पा के भक्त घमण्डी अउर बेलगाम हो जालन। एतने नाहीं ऊ लोग बर देवे वाला देवता के भूल के उनकर तिरस्कार भी करे लगेलन।

श्री शुकदेव जी कहलन- कि ब्रह्मा, विष्णु अउर महादेव जी तीनों लोग वर दिहले समान हउअन, बाकिर ब्रह्मा अउर महादेव जी खुश अउर रूष्ट जल्दी हो जालन। ई लोग वरदान अउप शाप भी जल्दी दे देलन, जबकि भगवान विष्णु एह तरह क ना हउअन।

किताब : भोजपुरी रामायण

लेख : श्रीराम-शबरी मिलन

चलत-चलत शबरी जी के आश्रम में श्रीरामजी भाई लक्ष्मण संग पहुँचलन। सिर प जटा क मुकुट हृदय प वनमाला धारन कइले सुन्दर साँवला अउर गोर दूनो भाइन के चरनन में शबरी लिपट गइली। प्रेम में मग्न हयी, मुँहे से कुछ निकलत ना ह। बार-बार गोड़े लगत हयीं। पानी से गोड़ धो के आसन प बइठवली। रसीला अउर स्वादिष्ट कन्द, मूल अउर फल ले आइके श्रीरामजी के दिहली। प्रभु बार-बार सराहि के वोके खइलन। शबरी हाथ जोड़ के उनके सामने खड़ी हो के निहोरा करे लगली-हम नीच जाति क मूढ़बुद्धि क हयीं राउर कइसे बिनती करीं।



श्रीरघुनाथजी कहलन-हमार बात सुन ! हम त एगो भक्ति क ही सम्बन्ध मानेलीं। जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़ा, धन, बल, कुटुम्ब, गुण अउर चतुराई-एह कुल्हि के भइलहू प बिना भक्ति क मनई वोही नियर लगेला जइसे बिनु पानी क बादल शोभाहीन लगेला। हम तुहसे नवधा

www.bhojpurisahityangan.com

भक्ति बता रहल बानी, ध्यान से सुन-

१- पहली भक्ति ह संत लोगन क सतसंग।

२- दुसरकी भक्ति ह हमरे कथा क चर्चा में प्रेम।

३- तिसरकी भक्ति ह बिना अभिमान के गुरुचरनन क सेवा।

४- चौथी भक्ति ह कपट तजि के हमरे गुणन क गान कइल।

५- पाँचवीं भक्ति ह हमरे (राम) मन्त्र क जाप अउर हमरे में दृढ़ विश्वास।

६- छठवीं भक्ति ह इन्द्रियन प काबू रखल यानी निग्रह, अच्छा स्वभाव भा चरित्र, बहुत काजन से वैराग्य अउर बराबर संत मनइन के आचरन में लगल रहल।

७- सातवीं भक्ति ह जगत भर के एकभाव से हमरे में मतलब राममय देखल अउर संतन के भी हमरही में मानल।

८- आठवीं भक्ति ह जवन कुछ मिल जाय, वोही में सन्तोष कइल अउर सपना में भी दूसरे क दोष ना देखल।

९- नवीं भक्ति ह सरलता अउर सबके साथ बिना कपट क बर्ताव कइल, हृदय में हमार भरोसा राखल अउर कउनो दशा में भी खुशी अउर दुख क न भइल।

एह नवों में से जेकरे में एक्को भी होला, ऊ नर-नारी जड़-चेतन केहू भी हो हमके प्रिय होला। फिर तुहरे में त सब तरह क भक्ति भरल ह। एहसे जवन गति योगिन के भी दुर्लभ ह, ऊ आज तुहके मिल गइल ह। हमरे दर्शन क फल ई होला कि जीव अपने सहज स्वरूप के पा जाला। अब तुहसे ई निहोरा बा कि जदि तूँ जानकी जी के बारे में कुछ खबर रखेलू त बताव।

शबरी कहली-हे रघुनाथ जी ! रउरे पंपा नाम क सरोवर जाइल जा। उहवाँ राउर सुग्रीव से मित्रता होई। हे देव ! ऊ सब हाल बतइहें। ई कहत शबरी भगवान के सूरत क ध्यान में राखि के योगाग्नि से देह जला के दुर्लभ हरिपद में लीन हो गइली।

किताब : राम पियारा साधु-सन्त

लेख : श्री हनुमानजी

प्रनवऊँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ।।

www.bhojpurisahityangan.com

भगवान शंकर के अंस से वायु के द्वारा कपिराज केसरी क पत्नी अंजना से हनुमानजी पैदा भइलन। मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम क सेवा शंकरजी अपने रूप में कइ ना सकत रहलन एहसे ऊ ग्यारहवाँ रुद्ररूप के वानर रूप में अवतरित कइलन। जनम लिहले के कुछ समय बाद ही महाबीर



हनुमान जी उगत सूरज के लाल-लाल फल बूझ के निगले बदे आसमान के ओर दौड़ पड़लन। ओह दिन सूर्यग्रहण लगे वाला रहे। राहू देखलन कि केहू दूसर सूरज के पकड़े आ रहल बा, तब ऊ ओह आवे वाला के पकड़े चलनन, बाकिर जब हनुमान जी ओकरी ओर बढ़लन, तब उ डर के मारे भाग चललन। राहु इन्द्र के पुकरलन, ऐरावत प चढ़ि के इन्द्र के आवत देखि के पवनकुमार ऐरावत के कउनो बड़हन सफेद फल समझलन अउर ओही के पकड़े खातिर लपकलन। घबड़ा के देवराज इन्द्र बज्र से हमला कइ दिहलन। बज्र से इनकर ठोड़ी (हनु) प चोट लगल जवने से टेढ़ हो गइल, एही से इनकर नाम हनुमान पड़ गइल। बज्र लगले से ई मूर्छित हो के गिर गइलन। बेटवा के मूर्च्छित देखि के वायुदेव के बहुत गुस्सा आ गइल। ऊ आपन गति बन्द कइ दिहलन। आखिर कार हनुमानजी के सब लोकपाल अमर होखे खातिर अउर अग्नि, जल, वायु आदि से भय न लगे एकरे बदे वरदान दिहलन जवने से वायुदेव सन्तुष्ट होके आपन गति चालू कइलन।

जाति स्वभाव से चंचल हनुमान ऋषि लोगन के आश्रम में पेड़न के तूड़ि दें अउर आश्रम के सामानन के तितर-बितर कइ दें। जवने से ऋषि लोग नाखुश हो के उनके शाप दे दिहलन कि-'तूँ आपन बल भुलाइल रहब। जब केहू तुहके बल क याद दिआई तब जा के तुहके अपने बल के एहसास होई।' तब से ऊ एक सामान्य बानर के नियर रहे लगलन। महतारी से आदेश पा के सूरज भगवान के नगीचे गइलन अउर उनसे वेद-वेदान्त, सगरो शास्त्र अउर कला क पढ़ाई कइलन। एकरे बाद किष्किन्धा में आ के सुग्रीव के संग रहे लगलन। सुग्रीव इनके आपन मंत्री बना लिहलन। जब बालि मार के सुग्रीव के भगा दिहलस तब्बो ई सुग्रीव क साथ ना छोड़लन। विपत्ति के समय ई सुग्रीव के साथ ऋष्यमूक प ही उनके साथ रहलन। भगवान श्री राम जब पंचवटी में आ के रहे लगलन अउर रावण श्रीसीताजी के हर ले गइल त उनके खोजत-खोजत भगवान किष्किन्धा अइलन, उहवें श्रीहनुमानजी से उनकर भेंट भइल। हनुमान जी अपने इष्टदेव के पहिचान गइलन। फिर त मनमाफिक फल मिल गइल-

प्रभु पहिचानि परेउ कपि चरना । सो सुख उमा जाइ नहिं वरना ।।

श्रीराम उनके उठा के अपने सीना से लगा लिहलन। हनुमान जी के निहोरा कइले प भगवान सुग्रीव से मित्रता कइलन अउर बालि के मार के सुग्रीव के किष्किन्धा क राज दियवलन। राजभोग

www.bhojpurisahityangan.com

में सुग्रीव के सनल देखि के हनुमानजी उनके सीताजी के खोज करे खातिर सचेत कइलन। ऊ सगरो बानरन के इकट्ठा कइ ले अइलन। बाकिर भगवान् उनहीं के एह काबिल समझ के बोललन अउर आपन एगो मुद्रिका दिहलन अउर कहलन-

बहु प्रकार सीतहिं समुझायेहु ।
कहि बल बिरह बेगि तुम आयहु ।।

सौ योजन समुद्र लाँघे क सवाल अइले प जामवन्त जी हनुमानजी के उनके बल क याद दियवलन अउर कहलन कि-'राउर अवतार त रामकाज करही खातिर भइल हउए।' तब जा के हनुमानजी के अपने शक्ति क बोध भइल अउर ऊ उठ खड़ा भइलन। सुरसा, सिंहिका, लंका आदि के मारत डाँटत आपन मर्दानगी देखावत सौ योजन समुद्र पार कइके लंका में दाखिल भइलन। विभीषण जी से पता पूछि के अशोक वाटिका में जानकी जी के लग्गे पहुँच गइलन। दर्शन कइ के आश्वासन दिहलन अउर अशोकवन उजाड़ डरलन। रावण क भेजल राछसन अउर बेटवा अक्षय कुमार के मार डरलन। मेघनाद इनके कउनो तरह बान्हि के राजसभा में ले गइलन। उहाँ भी रावण के हनुमानजी शिक्षा दिहलन कि 'घमण्ड तजि के भगवान श्रीराम के सरन में चलि जा।' राछसराज के आदेश दिहला प इनके पूँछ में आग लगा दिहल गइल। ई ओही आग से सगरो लंका के जरा दिहलन। सीताजी से चिन्ह के रूप में चूड़ामणि ले के भगवान के पास लौट अइलन। इनके एह काज के देखि के भगवान श्रीराम क हृदय भरि आइल अउर ऊ इनके अपने छाती से लगा के बहुत स्नेह के साथ कहलन-

सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं ।
देखेउँ करि विचार मन माहीं ।।
पुनि पुनि कपिहिं चितव सुरत्राता ।
लोचन नीर पुलक अति गाता ।।

हनुमानजी प्रभु क अइसन बचन सुनि के उनके गोड़न प गिर के फूट-फूट के रोवे लगलन। आखिर श्रीराम युद्ध करे वदे रवाना भइलन। समुद्र प सेतु बनल। सेना लंका पहुँचल, संग्राम शुरु भइल। हनुमान जी बड़हन-बड़हन सेनापतिन के मार गिरवलन, ढेर सारा राछसन के मार डरलन। श्री लक्ष्मण जी के मेघनाद क शक्तिवाण लग गइल। मूर्छित हो गइलन। सुषेण वैद्य के कहले प रातो-रात द्रोणाचल पर्वत पे शिखर के उखाड़ के ले अइलन। रावण के मारि गइले प लंका प विजय हो गइल। श्री हनुमानजी ई समाचार सीता जी के जा के सुनवलन। श्रीराम, लक्ष्मण, सीताजी के संग हनुमानजी अयोध्यापुरी अइलन। श्रीअवधपुरी में रहि के भगवान के सेवा करे लगलन। श्रीहनुमान जी के रोआँ-रोआँ में सीताराम क बास होला। एक बार राजसभा में ऊ सबके

www.bhojpurisahityangan.com

सामने आपन हृदय चीर के ओह में श्री सीताराम जी के विराजत देखवलन।

जब श्रीराम जी इह लोक क लीला खतम भइले के बाद अपने निज लोक में जाये लगलन त हनुमानजी हाथ जोड़ के अपने साथ ले जाये खातिर निहोरा करे लगलन। तब भगवान कहलन- 'हम त इहवें हयीं, कहीं जात थोड़े हयीं। तूँ देहिं धइले रह, जहवाँ-जहवाँ हमार कथा होयी, उहाँ-उहाँ तू जरूर पहुँचिहऽ हमरे कथा से बढ़ के पवित्र दुनिया में कुछऊ ना हउए। ऊ तुहके मिलत रही। एहसे जियादा तुहके का चाही।' भगवान् क आदेश स्वीकार कइके हनुमान जी पृथ्वी प विराजमान हउअन। सात अमर लोगन में एगो उहो हउअन। जहवाँ भी भगवान क कथा होले उहवाँ गुप्त रूप से हनुमानजी पहिलवे पहुँच जालन। हाथ जोड़ के सिर से लगवले कथा के अन्त तक मौजूद रहेलन। प्रेम के कारन उनके आँखिन से बराबर आँसू झरत रहेलन।

यत्र तत्र रघुनाथकीर्तन तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
बाष्पवारिपरिपूर्ण लोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ।

किताब : श्याम पियारा साधु-सन्त

लेख : श्री स्वामी हरिदास जी

लगभग पाँच सौ साल पहिले वृन्दावन से एक किलोमीटर की दूरी प राजपुर गाँव हउए जहाँ स्वामीहरिदासजी महाराज संवत् १५३७ वि० (सन् १४८० ई०) के लगभग जन्म लिहले रहलन। उनके बाऊ क नाम रहल गंगाधर अउर महतारी रहली चित्रादेवी। ऊ ब्राह्मण रहलन। लइकाईं में भी उनके भगवान् के लीला के नकल कइले के रुचि रहल अउर खेलत क ओही से जुड़ल खेल खेलल करें। माई-बाऊ भगवान क सीधा-सादा भगत रहलन, हरिदास के सोच-समझ के बढ़ोत्तरी में ओह लोगन के संगत क विशेष प्रभाव रहे। हरिदास क मन घर-गृहस्थी में कम लगत रहे। ऊ बाग-बगीचा, नदी के तीरे अउर एकान्त जगहिन में घूमल करें। पचीस बरिस के अवस्था में एक दिन एगो विरक्त वैष्णव के नियर घर से अचानक निकल पड़लन। ऊ सीधे वृन्दावन अइलन, विहारी जी क दर्शन कइलन अउर निधिवन में रहे लगलन। आशुधीरजी उनकर दीक्षा गुरु रहलन। कल्ले-कल्ले उनके त्याग, रसोपासना अउर संगीत के अच्छी जानकारी क चर्चा चारो ओर भक्त, सन्त अउर संगीत प्रेमी लोगन में होखे लागल। उनके चेलन क संख्या भी बढ़े लागल।

गावत क समय भाव के आवेश में अक्सर उनकर समाधि लग जाइल करे। प्रिया-प्रियतम श्री राधा-कृष्ण के सुन्नरई अउर मधुरता के सागर में ऊ रात-दिन डूबल रहत रहलन। उनकर उहे अचल धन रहल। भगवान के प्रति समर्पण करत कहल करें-'हरि ! जइसे तूँ हमके राखल चाहत हउअ, ओही नियर रहले में हमके सन्तोष ह।' उनकर पुरहर विश्वास रहे कि सब कुछ बिहारी-

www.bhojpurisahityangan.com

विहारिनजी के कृपा से होत रहेला। उनके दर्शन खातिर बड़े-बड़े राजा-महराजा कुटी के सामने खड़ा रहें, भीड़ लगल रहे। बाकिर ऊ कब्बो केहू क मुँह देखी ना कइलन। करका करवा ही उनकर एकमात्र सामान रहल।

एक बार एगो भक्त स्वामी जी के बहुत कीमती इत्र भेंट कइलस। ऊ भगवती यमुना के रेती में बइठल रहलन। बसन्त ऋतु क जवानी अपने ऊँचाई प रहल। वृन्दावन के मन्दिरन में धूम मचल रहल। हरिदासजी के मन में प्राण प्रिय रसिक बिहारी अउर उनकर रासेश्वरी राधारानी के कृपादृष्टि क मनोहारी दिव्यता उनके आँखिन में समा गइल। ऊ ध्यान में मगन हो गइलन, तनिको



बाहरी ज्ञान ना रहल। अन्तरमन से देखत-देखत भावावेश में अइलन अउर ओह लोगन के ऊपर सगरो इत्र छिड़क दिहलन। इत्र क शीशी जवन मनई भेंट कइलस उहवें रहल। रेत प कीमती इत्र छिड़कल देखि के मनई परेशान हो गइल। बाकिर हरिदासजी के आनन्दित होत देखि के हैरान रहल। रसिक हरिदास क आँख खुलल त इत्र भेंट करे वाला मनई क मानसिक वेदना समझि के चेलन के साथ श्री बिहारी जी के दर्शन करे के भेजलन। ऊ मनई बिहारी जी क वस्त्र इत्र से सराबोर देखलस अउर देखलस कि पूरा मन्दिर विलक्षण सुगन्ध से भरि गइल ह। ऊ लजा गइल बाकिर भगवान ओकर भेंट स्वीकार कइ लिहले रहलन, ई सोच के ऊ आपन भाग्य सराहे लागल।

अपने दरबारी गायक तानसेन से एक बार सम्राट पूछलन-'का तुँहसे बढ़ के भी गावे वाला कउनो मनई हउए ?' तानसेन स्वामी हरिदासजी क नाम बतवलन। अकबर उनके राजसभा में बुलावल चहलन, तानसेन उनसे निवेदन कइलन कि ऊ कहीं जालन ना। निधिवन गइले क तय भइल। हरिदासजी तानसेन क संगीत गुरु रहलन, उनके सामने तानसेन के गइले में कउनो अड़चन ना रहल। रहल बात अकबर क, सो ऊ वेष बदल के एगो साधारण मनई के रूप में गइलन। तानसेन जान-बूझ के एगो गीत गलत राग में गवलन। स्वामी हरिदास ओह के शुद्ध कइके कोकिल कण्ठ से अलाप भरल शुरू कइलन, तब अकबर संगीत के दिव्यता क एहसास कइलन। तानसेन कहलन-'स्वामीजी सम्राटों के सम्राट भगवान श्रीकृष्ण क गायक हउअन।' स्वामी जी संवत् १६३२ वि० तक निधिवन में मौजूद रहलन। वृन्दावन के नित्य नवीन भगवान के लीला के सुत्ररई में बढ़वले में उनकर सानी ना रहल।

किताब : दीक्षा-गुरु

लेख : श्री श्री सच्चिदानन्द दास जी (बंगाली बाबा)

श्रद्धेय बंगाली बाबा क भक्त दूसर धर्म माने वाला भी रहलन, अउर ऊ लोग भी बाबा

www.bhojpurisahityangan.com

से मिल के अध्यात्म क चर्चा करत रहें अउर मार्गदर्शन पावत रहें। कौड़ीराम-गोरखपुर क मशहूर गायक अमजद अली, बिसरा (गोला) क मुमताज : गुरुधाम में मनाये जाये वाला उत्सव में नाम संकीर्तन में प्राय: मौजूद रहत रहलन अउर मधुर गायन से भक्तगण के आनन्दित करत रहलन।

एक बार क बात ह कि बंगाली बाबा क एगो चेला बहराइच में नौकरी करत रहलन। ऊ अक्सर फैजाबाद विभाग के काम से आवत रहलन। फैजाबाद जात क रास्ते में अयोध्या से गुजरे के पड़े। ऊ फैजाबाद जात क अयोध्या में थोड़ी देर रूक के गुरुजी क दर्शन कइके आगे बढ़ल करें। वापसी में भी जदि समय मिल जाय त माथा टेक के ही लौटें। कार्यालय में भी आये दिन गुरुजी क चर्चा हो जाइल करे। एक बार चेला बहराइच से फैजाबाद चल पड़लन। उनके साथ



उनकर एगो मुहम्मद इकबाल नाम क सहायक भी रहल। अयोध्या नगर में बिड़ला मन्दिर अउर धर्मशाला ह। विड़ला धर्मशाला में गुरुजी वोह समय रहत रहलन। धर्मशाला के सामने चेला वाहन रोक के इकबाल अउर ड्राइवर से कहलन कि-'हम गुरुजी क दर्शन कइ के तनिक देरी में आवत हयीं।' सहायक मुहम्मद इकबाल गुरुजी के बारे में कइ बार सुन चुकल रहलन। उनहुँ के मन में गुरुजी के दर्शन क इच्छा जाग गइल। अउर साथ जाये बदे वाहन से उतर के साथ-साथ चल दिहलन। दूनो जनी गुरुजी के पास पहुँच के प्रणाम कइके भुइयाँ लगल आसनी प बइठ गइलन। गुरुजी तखत प बइठल रहलन। गुरुजी दूनो जनी के चाय प्रसाद दिहलन। चाय पियले के बाद कुल्हड़न के दूर रखल कूड़ा पात्र में डाले बदे चेला चल दिहलन। एही बीच एक भक्त अउर आइके इकबाल के बगल में बइठ गइल। गुरुजी इकबाल क परिचय पूछले के बाद बोललन-'नमाज केतना बार पढ़ेल ?' इकबाल कहलन-'दू वक्त !' गुरुजी फिर बोललन-'पाँच वक्त नमाज पढ़ले क नियम ह त काहें दुइये वक्त पढ़ेल?' पास बइठल भक्त बात सुन के जान गइल कि लग्गे बइठल मनई मुसलमान ह। ओहके जिज्ञासा हो गइल कि इनसे बाबा जी का बतियावेलन अउर का उपदेश देलन ? ध्यान लगा के सुनले क चेष्टा करे लगल। गुरुजी आगे बोललन-चलत-फिरत, उठत-बइठत हर समय 'अल्ला रहमत' जपत रहऽ एही से कल्याण हो जाई। बुजुर्गियत अउर मुँह में दाँत ना भइले से गुरुजी क आवाज साफ ना सुनात रहे। नगीचे बइठल मनई ध्यान से सुनले प समझ लेत रहल; बाकिर थोड़ि दूर क मनई के कुछ कठिनाई होखे। फलत: भक्त साफ सुन ना पवले से बोल पड़ल-'जी बाबा ! रउआँ का कहलीं ?' गुरुजी भक्त के रुचि लेत देखि के ओकरे प बिगड़ गइलन। ओकरे ओर रुख कई के डाँटत कहलन-'तुहरे से का मतलब ? उनके खातिर जवन जरूरी ह तवन उन्हें देत हयीं, तूँ काहें रुचि ले रहल हव ? बचपन से जवन ऊ करत आइल हवँ, जहवाँ ले पहुँचल बाड़न, उहवाँ से आगे बढ़ावे के बा कि ओह के छोड़ के फिर से शून्य से शुरू करावे के ह। उनके जवन जरूरी ह, दियात

www.bhojpurisahityangan.com

बा। तुहके जवन जरूरी होयी दियायी।' एहसे साफ जाहिर ह कि गुरुजी जाति-धर्म क भेदभाव ना करत रहलन, बलुक चाहे जवने जाति-धर्म क मनई उनके लग्गे आवत रहलन, उनके कल्याण क राह बता के कृतार्थ कइ देत रहलन।

किताब : घरेलू नुस्खे

लेख : बिनु खरचले रुपया तनी इहो करे के चाही



१- रोज सबेरे भगवान के याद करे के चाही।

२- हर मामला में विनम्रता क व्यवहार करे के चाही।

३- अपना संग व्यवहार करे वाला हर मनई के साथ बिना गुस्सा के प्रेम से बोले के चाही।

४- अपने खिलाफ मामला में बिना घबरइले धैर्य राखे के चाही।

५- अपने परिचितन के पुरहर आदर देवे के चाही।

६- अपने पत्नी के सम्मान के नजर से देखे के चाही।

७- केहू पुकारे त 'जी' कहले में देरी ना करे के चाही।

८- माता-पिता के आज्ञा क पालन बिना देरी के करे के चाही।

९- व्यावहारिक काम करत भी बराबर भगवान के याद करे के चाही।

१०- हर मामला में साँच बोले के चाही।

११- आपन चरित्र सुधार के आध्यात्मिक उन्नति क उपाय करे के चाही।

१२- विचार कइले के शक्ति में वृद्धि करे के चाही।

१३- अमुक काज हम कइ के रहब, अइसन निश्चय में दृढ़ता लावे के चाही।

१४- ज्ञानी जन क संगत कइके उनके उत्तम गुणन के अपनावे के चाही।

१५- रोज खुली हवा में घुमि के निरोग रहले के कोसिस करे के चाही।

१६- आत्मा में स्थित अखण्ड आनन्द क अनुभव करे के चाही।

१७- रोज एकाध घण्टा उत्तम पुस्तकन के पढ़े के चाही।

१८- हर समय, हर एक स्थिति में सन्तोष मान के सुख पावे के चाही।

www.bhojpurisahityangan.com

१९- प्रारब्ध के दोष न दे के प्रयत्नशील बने के चाही।

२०- दुनियावी लालच पैदा करे वाले चीजन से सावधान रहे के चाही।

२१- हर जगह ईश्वर के देखल सीखे के चाही।

किताब : भोजपुरी महाभारत

लेख : द्रौपदी चीर हरण

दुर्योधन विकर्ण के बोलवा के कहलन-'जा, पाँसा के समाचार के बारे में द्रौपदी से कहि के ओके सभागार में ले आव। ऊ अब हमार दासी हो गइल हई।' विकर्ण द्रौपदी के लग्गे गइलन। पाँसा क समाचार सुनि के द्रौपदी बोललीं-'जा के सभा में कहि द कि द्रौपदी सभागार में ना अइहें।' विकर्ण सभा में आ के कहलन कि द्रौपदी पूछलिन कि महाराज युधिष्ठिर पहिले अपने के दाँव प लगवले रहलन कि हमके। हम बतवलीं कि पहिले अपने के लगवले रहलन त कहलिन कि जा के कहि द कि द्रौपदी सभा में ना अइहें। युधिष्ठिर के हमें बाजी प लगवले क कउनो अधिकार ना हउए। भीष्म अउर विदुर द्रौपदी के कहले के उचित ठहरवलन।



बाकिर मद में अन्हराइल दुर्योधन के कब न्याय सूझत बा ? ऊ दु:शासन के द्रौपदी के पकड़ के सभा में अइले खातिर भेज दिहलन। दु:शासन के देखि के द्रौपदी निहोरा कइली-दु:शासन हमार लाज न गवाँव। हम खानदान क बहुरिया हइन। हमार धरम देखऽ। फिरो एह घड़ी हम राजस्वला हयीं। दु:शासन द्रौपदी के निहोरा प कउनो ध्यान ना दिहलन। उनकर गुस्साइल रुख निरेखि के द्रौपदी गान्धारी के महल के ओर भगली बाकिर दौड़ के दु:शासन उनकर माथे क खुलल बाल पकड़ि लिहलन, अउर घसीटत सभागार ले गइलन।

सभागार में पहुँचते पितामह भीष्म के ओर देखि के द्रौपदी कहली-'पितामह ! का रउरे कुल क इहे मर्यादा ह ? महाराज युधिष्ठिर आपन बाजी लगवले के बाद हार गइलें का ओकरे बाद हमार बाजी लगा सकत रहलन हँ ? ई कहि के द्रौपदी फूट-फूट के रोवे लगली।'

भरल अँखियन से सगरो पति के तरफ नजर दौड़वली, सबके विवश देखि के निराश होखे लगली। दुर्योधन द्रौपदी के देखि के जाँघ ठोकत इशारा कइ के द्रौपदी के जाँघ प बइठे के कहे लगलन। भीम गुस्साई के उठल चहलन लेकिन अर्जुन बाँह पकड़ि के बइठा दिहलन। भीम बोल पड़लन-'दुर्योधन ! युद्ध में तुहार जाँघ तूड़ब जरूर।' दुर्योधन दु:शासन के आदेश दिहलन कि

www.bhojpurisahityangan.com

द्रौपदी हमार दासी हयी। एहके भरल सभा में नंगा कइ द।

त्रस्त द्रौपदी सभा में मौजूद सगरो मनइन से लाज बचावे खातिर गुहार लगवली, बाकिर केहू आगे ना बढ़ल। रोअत द्रौपदी चिल्ला-चिल्ला के कृष्ण के पुकारे लगली-'हे दीनबन्धु ! हे भक्तवत्सल ! हे करुणासागर, कृष्ण एह विपत्ती से तूहीं हमार उद्धार कइ सकेलऽ। दासी क लाज अब तुहरही हाथ हउए। विन्दु जी एहके लिखले बाटन-

दुःशासन ने जब हाथ अपने बढ़ाये ।
तो दृग 'विन्दु' थे द्रौपदी ने गिराये ।।
न की देर कुछ द्वारिका से सिधाये ।
अमित रूप यूँ बन के साड़ी में आये ।।
कि हर तार थे आप का रूप धारे ।
हरे कृष्ण गोविन्द मोहन मुरारे ।।

दुखी द्रौपदी क पुकार सुनके कृष्ण द्वारिका से पैदल चलि दिहलन बाकिर घटना स्थल प वस्त्र रूप में हो जालन। वस्त्रन से ऊ घिर गइलिन उनके अपने आँखिन से साफ-साफ केहू ना देखत रहे।

याज्ञसेत्या वचः श्रुत्वा कृष्णो गह्वरितोऽभवत् ।
त्यक्त्वा शय्याऽऽसनं पद्भ्यांकृपालुः कृपयाभ्मगात् ।।४५।।
कृष्णं च विष्णुं च हरिं नरं च,
त्राणाय विक्रोशति याज्ञसेनी ।
ततस्तु धर्मोऽन्तरिती महात्मा,
समावृणोद् वैविविधं सुवस्त्रः ।।४६।।

-सभापर्व

द्रौपदी के चीरहरन के समय क घटना, मन क भाव अउर पीड़ा के कवि चन्द्रशेखर मिश्र जी एह मतिन लिखले बाड़न-

आँचर धइलेसि रे पपिया,
दुरजोधन पीटत बाटई तारी ।
खींचले-खींचले हाली से खींचिले,
कर्ण सुनावत बाटई गारी ।।

www.bhojpurisahityangan.com

कइसे कहउँ कहि जात न बा किछु,
लाज क बात जहाज से भारी ।
आइके का करबऽ बिरना,
अब नाभी से छूटन चहले सारी ।।
धाइ के ना अइबऽ, मन में -
करब जौ खियाल कड़ी बतिया कऽ।
दाह पूरा जइहैं तोहरे,
अछतइ जउ बैरिन की छतिया कऽ।।
आइ के ना करबऽ द्रौपदी पर,
जउ छहियाँ अपनी बहियाँ कऽ।
लोग इहै लछना देइहैं,
बिरना रहलऽ हरि सौतिनियाँ कऽ।।
अँखिया क कजरा ढुरल कि अकसवा से,
बदरा चोराई लोखा में घोरि देहलीं ।
दाँतन से अधर चबाई फुफकरलीं,
कि ओठवा पै ललका अनार फेरि देहलीं ।।
पांडव से, भीष्म से, द्रोण से, विदुर से भी,
मुँह मोरि रोइ-रोइ मन मोरि लेहलीं ।
कहाँ जाईं कस करीं, जस चाहे तस होइ,
मौन होइ सब बिरना पै छोड़ि देहलीं ।।
छोड़त खींचत साँस सरोतर,
जइसे चलेली लोहारे क भाथी ।
जइसे कोहारे क आँवा जरेला,
लगी धधकइ धुधुआइलि छाती ।।
देह चित बनि जातै सबै,
नयना भइलै बदरा बरसाती ।
ई त कहऽ ढुरलैं लोखा अब,
एकेक आँखी से नउ-नउ पाती ।।
कलपति नारी बाटै अगवै बेचारी बाटै,
सबही से हारी बस तोर बलिहारी बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

पाण्डव पियारी बाटै, बहिनी तोहारि बाटै,
पाँच-पाँच पूतन क सग महतारी बा ।।
ओहर से हारी बा एहर दुतकारी बाटै,
बहुत लचारी पति मिलल जुआरी बा ।
जुआ प हारी बाटै सभा में उघारी बाटै,
धाइ आवऽ आधे तन सेस अब सारी बा ।
मोहन, माधव, नन्द के नन्दन
हे जसुदा सुत, कृष्ण मुरारी ।
गोप सखा, बज्रनाथ, ब्रजेश,
गोपाल, गोविन्द, गोवर्धन धारी ।
ए हो मुकुन्द, किरीटी सखा जय,
द्रौपदी बीरन की बलिहारी,
सौ-सौ दुसासन का करिहैं हरि,
जेकर तूँ करबऽ रखवारी ।।

भगवान गुहार सुनते माया के भेजि के कपड़ा के बढ़ा हिम्मत दिहलन, कौरव साड़ी खींचत-खींचत थक के छोड़ि दिहलन, द्रौपदी कपड़ा से ढका गइली। भगवान पहुँचि के सबके सामने उजागिर हो गइलन। द्रौपदी उनके देखते कहि पड़ली-

अइलऽ चला भल कइलऽ बड़ा,
न त का गति होत हमार कन्हइया ।
जौ ले न आयल तू रहलऽ,
एन्हने जनलें हमें धाने क पइया ।
का तोहै देई बड़ी दुखिया हम,
जइसे कसाई के हाथे क गइया ।
बाँह अउ जाँघि कऽ जोर बढ़ै,
रन में बन में तूँ सुखी रहऽ भइया ।।

द्रौपदी क निहोरा प धृतराष्ट्र के भी दया आ गइल। ऊ बोललन-'बेटी ! तूँ माँग का माँगत हउ ?' द्रौपदी आँसू पोछ के कहली-'महाराज युधिष्ठिर ! जवन कुछ हार गइल बाड़न, ऊ कूल्हि वापस दे देयीं। अउर हमार सब पति आजाद हो जायँ, दास न बनल रहें।' महाराज धृतराष्ट्र कहलन-'बेटी, तुहरे खातिर हम सब वापस कइ देत हयीं।' ई कहि के ऊ सभागार से चलि गइलन। राही में दुर्योधन क संघतिया लोग कहलन-'राउर फैसला दुर्योधन खातिर बहुत बुरा ह। भीम क प्रतिज्ञा

www.bhojpurisahityangan.com

रउरे सुन चुकल हयीं।' धृतराष्ट्र के बेटवा के प्रति मोह फिर दबावे लागल। ऊ बचे क उपाय पूछलन। संघतिया लोग कहलन-'राज्य लवटवले के बाद बारह साल क वनवास अउर एक साल क अज्ञातवास के बाजी प फिर जुआ होखे। एह मतिन पाण्डव हरले के बाद राज्य पवले क मौका ही ना पइहें, न दुर्योधन मारल जइहें।' धृतराष्ट्र फिरो आज्ञा दे दिहलन।

लाचार होके युधिष्ठिर के फिर जुआ खेले के पड़ल काँहे से कि राज्य पवले खातिर धृतराष्ट्र क ई शर्त भी जोड़ा गइल रहे। एह बार भी युधिष्ठिर हार गइलन।

किताब : भोजपुरी पंचतंत्र

लेख : कौआ अउर हीरा क हार

एक जगहीं बहुत बड़हन एगो बरगद क पेड़ रहल। उहवाँ एगो कौवा अउर वोकर पत्नी कौवी रहत रहलि। बच्चा जनते एगो साँप आइके खा जाइल करे। सांप के एह हरकत के बारे में दुखी मन से ऊ जाइ के अपने एगो मित्र सियार से आके कहलसि अउर पुछलसि कि "अइसन स्थिति में हमरा के का करे के चाही ? साँप पेड़ के कोटर में रहेला, वोसे कइसे बचाव होखे?"

सियार कहलस-"तूँ कउनो राजा के नगर में जा। नगर में राजा, मन्त्री भा कउनो मनई लापरवाह



होखें त वोकर हीरा क हार उठा ले आव। हार के साँप के कोटर में डाल द। कउनो लालची मनई हीरा के पावे खातिर सांप के मार डारी।" सियार क बात सुनते कौआ अउर वोकर पत्नी उड़ गइलन अउर तलाश करे लगलन। एक जगह पोखरा के किनारे राजा के रनिवास क एगो महिला आपन मोतिन क हार गटई से निकार के पोखरा के किनारे धइ के नहात रहलि। कौवी हार झट से चोच में दबवलसि अउर ले के भागे लागल। रखावे वाले पियादा देखते डंडा लेके कौवी के पीछे-पीछे भागे लगलन। कौवी हीरा क माला कोटर में डालि के दूर जा के लुका के निरेखे लगलि। पियादा लोग कोटर में झाँक के देखत हउअन कि माला के ऊपर करिया साँप फन निकलले बइठल ह। पियादा डंडा से मार-मार के साँप के मुआ दिहलन अउर माला ले गइलन। एही से कहल बा-जवन उपाय से हो सकेला, ऊ ताकत के इजहार से ना हो पावत। बुद्धिमान मनइन खातिर कुछऊ असम्भव नइखे। देख, जंगल में रहे वाला एगो खरगोस मार डरले रहल सिंह के। करकट कहलस-"ऊ कइसे ?" दमनक कहलस-सुन।

www.bhojpurisahityangan.com

किताब : भोजपुरी योगी कथामृत

लेख : मुअले राम के फिर से जियावल

गुरुदेव के कुछ अउर चेलन के अलावा हमहूँ राँची के अपने कुछ छात्रन के साथ एक दिन भोरहीं गुरुदेव श्रीयुक्तेश्वर जी के साथ श्रीरामपुर के आश्रम के बाल्कनी में बइठ के ईसाई धर्म ग्रन्थन पर उनकर दिहल भाषण सुनत रहलीं। ऊ कहलन-

"लाजरस नाम क एगो मनई बीमार रहल। जब ईसा मसीह ई सुनलन, त ऊ कहि उठलन- ई बीमारी मौत क ना ह, बलुक परमेश्वर के महिमा खातिर ह, जवने से परमेश्वर के बेटवा क महिमा हो सके।"

इहवाँ ईसा मसीह अपने आप के परमेश्वर क बेटवा कहि रहल हउअन। जदपि ऊ असल में ईश्वर के साथ एकात्म रहलन, फिरो इहवाँ एह बात के उल्लेख क निजीपन से दूर एगो गहिर अर्थ ह। हमार गुरुदेव समझावत रहलन कि "परमेश्वर के बेटवा क मतलब ह मनई में मौजूद क्राईस्ट भा ईश्वरीय चैतन्य।" कउनो भी मुअे वाला मनई ईश्वर के महिमा के बढ़ा ना सकल। मनई अपने स्रष्टा क गौरव एक्कै तरह से बढ़ा सकेला, अउर ऊ हउए वोके पवले क कोशिश कइ के। मनई कउनो अइसन चीज क गौरव ना बढ़ा सकत जवने के ऊ जनते ना होखे। सन्तन के मस्तक के चारों ओर जवन तेजो मंडल ह उनके ईश्वर के चरनन में श्रद्धांजलि अर्पित कइले के क्षमता क प्रतीक ह।



श्रीयुक्तेश्वर जी लाजारस के फिर से जी उठले के अद्भुत कथा के आगे पढ़त गइलन। जब कहानी खतम भइल, त गुरुदेव लम्बा समय तक मौन रहलन, पवित्र किताब उनके गोद में खुलल रखल रहल। गुरुदेव आखिर में कहि उठलन- "हमहूँ के अइसने एगो चमत्कार देखले क सौभाग्य मिलल रहे। लाहिड़ी महाशय भी हमरे एगो मीत के मरि गइले के बाद फिरसे जिया दिहले रहलन।"

हमरे लग्गे बइठल लइके तीव्र जिज्ञासा से मुस्करा दिहलन। हमरा में अबहिन काफी लइकई रहल। खाली तत्वज्ञान क आनन्द लिहले क ही ना, बलुक खासतौर पर कउनो भी अइसन कहानी जवन लाहिड़ी महाशय से संबंधित अद्भुत अनुभवन पर हमके श्रीयुक्तेश्वर जी के मुंहे से सुने के मिल सकत रहे।

गुरुदेव बतावल शुरू कइलन-"हमार मीत राम अउर हम कब्बो एक-दूसर के बिना ना रहत रहलीं। ऊ स्वभाव से शर्मिला अउर एकान्तप्रिय रहल, एहसे हमरे गुरु लाहिड़ी महाशय के पास खाली आधी रात अउर भोर के बीच के समय में ही गइल पसन्द करत रहल, जवने समय दिन

www.bhojpurisahityangan.com

में आये वाले भक्तन के समान भीड़ ना होत रहे। वोकर लंगोटिया यार भइले के नाते हमके ऊ बहुतेरा आपन गहिर आध्यात्मिक अनुभव बतावल करे। वोकरे आदर्श संगत में हमके प्रेरणा मिलल करे।" ई कहते हमरे गुरु के चेहरा पर पुरान भाइन क कोमल भाव छा गइल।

गुरुदेव आगे कहे लगलन-"अचके राम क एगो कड़ी परीक्षा लिया गइल। वोहके हैजा हो गइल। गम्भीर बीमारियन में डॉक्टरन के बोलावले में हमार गुरु कब्बो आपत्ति ना करत रहलन, एहसे दूगो काबिल नामी डाक्टरन के बुला लिहल गइल। रोगी के सेवा कइले के हड़बड़ी के दरम्यान हम मनेमन गहराई से लाहिड़ी महाशय से मिनती करत जात रहलीं। आखिर जल्दी-जल्दी घर जा पहुँचलीं अउर रोअत-रोअत उनके सगरो किस्सा सुना दिहलीं।"

"डाक्टर लोग राम के देखले हवं। ऊ ठीक हो जाई।" गुरुदेव प्रसन्न मुद्रा में मुस्कात कहलन।

हम खुशी-खुशी अपने मीत के लग्गे आइ गइलीं। देखत हयीं त ऊ मरे-मरे भइल बा। एगो डॉक्टर निराशा के हाव-भाव के साथ बोल पड़लन-"ई एक-दू घण्टा से जियादा ना जी सकेलन।" हम फिरो लाहिड़ी महाशय के लग्गे दउड़ गइलीं। पहुँचते डाक्टर क कहल बतवलीं। गुरुदेव हमसे कहि उठलन-"डाक्टर लोग आपन काम जानेलन अउर उनके अपने जिम्मेदारी क पुरहर अहसास ह। हमके पक्का विश्वास ह कि राम ठीक हो जाई।"

जब हम राम के घर पहुँचलीं, त देखत हयीं कि दूनो डॉक्टर उहवाँ से जा चुकल हउअन। उनहन में से एगो डाक्टर चिट्ठी लिख छोड़ले रहल कि हम जवन कुछ कइ सकत रहलीं कइ दिहलीं, बाकिर एकरे बचले क कउनो आशा ना ह।

हमार मीत सचहूँ आखिरी साँस ले रहल बुझात रहल। हमरे समझ में ना आवत रहल कि लाहिड़ी महाशय क वचन झूठ कइसे हो सकेला, बाकिर राम बुझ जात रहल ई बात हमरे मन में बार-बार कौंधत रहे-"अब त सब कुछ खतम हो जाई।" एह मतिन विश्वास अउर सन्देह के बीच डाँवाडोल मन से हम पुरहर शक्ति अउर सावधानी से सेवा जारी रखलीं। अचके चौकस होइ के ऊ जोर से कहि उठल-

"युक्तेश्वर ! दउड़ के गुरुदेव के लग्गे जा उनके बता द कि हम चलि गइलीं। हमरे अन्त्येष्टि से पहिले हमरे देह के आशीर्वाद दिहले खातिर उनसे प्रार्थना करिह।" एह शब्दन के साथ राम गहिर नि:श्वास छोड़त परान तजि दिहलस।*

हम वोकरे शय्या के लग्गे बइठल एक घण्टा से रोअते रहि गइलीं। वोके हमेशा शान्ति प्रिय रहल, अब वोहके मौत क पुरहर शान्ति मिल गइल रहे। एतने में एगो दूसर चेला उहवाँ

---

* - हैजे क रोगी अक्सर मौत के आखिरी क्षण तक पुरहर होशो हवास में रहेला।

www.bhojpurisahityangan.com

आ गइल। हम वोहसे अपने लवटले तक उहवें रुके बदे कहलीं। बेसुध होत हम बोझिल गोड़न से फिरो गुरुदेव के लग्गे चल दिहलीं।

देखते लाहिड़ी महाशय मुस्करात हमसे पूछि पड़लन-"अब राम कइसन बा ?" हम भावुकता में कहे लगलीं-"गुरुदेव ! आपके जल्दिये पता लग जायी कि ऊ कइसन बा। कुछ ही घण्टन में वोकरे लाश के श्मशान घाट ले जाइल जाई, तब आप के लउकि जाई।" हम फफक के रो पड़लीं अउर उहवाँ सबके समनहीं विलाप करे लगलीं।

"युक्तेश्वर ! अपने आपके सम्हारऽ। शान्त हो के बइठ जा अउर ध्यान करऽ।" ई कहत गुरुदेव समाधि में चलि गइलन। ऊ दुपहरिया अउर पुरहर रात सन्नाटा में बीतल। हम अन्दरूनी शान्ति बनवले क असफल कोशिश करत रहलीं।

भोर के समय लाहिड़ी महाशय हमरे ऊपर सांन्त्वना सनल नजर डरलन अउर बोल पड़लन-"हम देखत हयीं कि तूँ अबहिनो शान्त ना हउअ। कल्हियें तूँ हमके साफ-साफ काहें न बता दिहल कि तूँ हमसे राम खातिर ठोस सहायता चाहत हउअ कउनो दवाई के रूप में ?" गुरुदेव एगो दीया के ओर इशारा कइलन जवने में अरंडी क तेल रहल अउर कहे लगलन-"कउनो छोटहन शीशी में वोह दीया क तेल भर ल अउर राम के मुँह में वोकर सात बूँद डालि द।"

हम विरोध जतावत बोल पड़लीं- "गुरुदेव ! कल्हिये दुपहरिया के समय से मुअल पड़ल बा। अब एह तेल से का होई ?"

गुरुदेव कहलन-"वोकर चिन्ता न करऽ, खाली जवन हम कहत हयीं, उ करऽ।" हमरे गुरुदेव क खुश मिजाज हमरे समझ में ना आवत रहे, हम अबहिन ले शोक के भीषण दुख से दुखी रहलीं। तनिक तेल लेइ के हम राम के घर के ओर चलि पड़लीं।

हमरे मीते क देहं अकड़ चुकल रहे। वोकर भयंकर अवस्था के ओर बिना ध्यान दिहले अपने दाहिना हाथ के तर्जनी से वोकर होठ खोललीं अउर बायें हाथे शीशी के ढकना के मदद से कउनो तरह बूँद-बूँद तेल वोकरे बइठल दाँतन पर डाले लगलीं। जइसहीं वोकरे ठंडा होंठन के सातवीं बूँद छुअलस, राम क देंह जोर से कांपे लागल। सिर से पाँव तक वोकर सगरो मांस पेशी काँपत रहलीं अउर ऊ अचरज के साथ उठि के बइठ गइल।

ऊ चीख पड़ल- "हम तेज रोशनी में लाहिड़ी महाशय के देखलीं हं। ऊ सूरज के नियर चमकत रहलन ह।" ऊ हमके आदेश दिहलन-"उठऽ, नींद तजि द। युक्तेश्वर के संघरी हमसे मिले आव।"

"जब हम राम के उठ के अपने हाथन से कपड़ा पहिनत देखलीं अउर वोह मुआवे वाली बीमारी के बाद भी हमरे गुरु के घर के ओर चले खातिर, ताकत वोकरे में आइ गइल, त अपने

www.bhojpurisahityangan.com

आँखिन पर हमके विश्वास ना होत रहल। उहवाँ पहुँच के राम लाहिड़ी महाशय के साष्टांग प्रणाम कइलस। वोकरे आँखिन में कृतज्ञता क आँसू बहत रहलन।''

किताब : गाँव से शहर जब आ गये।

रविशंकर की के मकान में तहसील सदर के रजिस्ट्री विभाग में लिपिक पद पर सेवारत रमेश जी रहते थे। यद्यपि रमेश जी स्वस्थ, सुन्दर, युवक थे, परन्तु रजिस्ट्री-विभाग की अनर्गल कमाई के कारण, प्राय: सायं काल सुरा-पान करना उनकी कमजोरी हो गयी थी। गाँव पर माता-पिता की सेवा के लिए पत्नी को छोड़े हुए थे। गाँव शहर से सुदूर बसा होने के कारण, बच्चों के लिए विद्यालय की समुचित सुविधा नहीं थी। बच्चे जब स्कूल जाने लायक हुए तो इनके साथ काम करने वाले अस्थाना जी इन्हें, परिवार शहर में लाकर, बच्चों को अच्छे स्कूल में डालने के लिए उकसाने लगे। अस्थाना जी का आवास रमेश के रास्ते में पड़ने से प्राय: शाम को घर आने के समय उनके वहाँ पर रुक जाया करते थे। बराबर जाने-आने से पत्नी भी रमेश से घुल-मिल गयी तीं और वह भी बच्चों को लाने के लिए बल देने लगीं। फलत: रमेश गाँव जाकर माता-पिता से मशविरा करके, पत्नी और बच्चों को शहर में ले आये। रमेश की पत्नी नीमा श्याम-वर्ण होने के बावजूद नाक-नक़्श की तेज थीं, बातचीत में चुलबुली थीं परन्तु दूर-दराज के ग्रामीण अंचल की प्रवासिनी होने के कारण, शहराती परिधान एवं साज-शृंगार से कत्तई अनभिज्ञ थीं। अपनी सादगी के कारण पड़ोसियों में कुछ दिन, चर्चा का विषय बनीं रहीं, फिर धीरे-धीरे पड़ोसियों से परिचय बढ़ने लगा और वह बेहद मिलनसार हो गयीं।

रविशंकर की पत्नी शैला को एक दिन अकेले में बातचीत करने का मौका मिल गया। फिर



क्या था ? शैला ने दिल खोल कर जो दिल फेंक बातें की मानो-नीमा की सुषुप्त भावनाओं और इच्छाओं की कुण्डलिनी जागृत हो गयी हो। नीमा को लगा कि शैला के रूप में एक अच्छी सहेली और मार्गदर्शक मिल गयी है शैला के समझाने पर नीमा ने कहा-'मैं अब जल्द ही अपने को शहराती परिवेश में पूरे तौर पर ढाल लूँगी। अब प्राय: अपनी बैठक वाजी में मौका देखकर नीमा को कपड़ों और साज-शृंगार की वस्तुओं एवं उसके उपयोग की जानकारी शैला देने लगी। साथ ले जाकर बाजार में खरीददारी भी कराने लगी।' पति से पैसा मिलने में कोई कोताही तो थी नहीं। शैला ने दो-तीन बार नीमा को अपने साथ ब्यूटी पार्लर ले जाकर हेयर स्टाइल एवं भौहों आदि को सुव्यवस्थित कराने तथा मेक-अप के तौर तरीकों की जानकारी दिलायी। नीमा धीरे-धीरे शहराती परिवेश में ढलने लगी। जैसे-जैसे समय गुजरता गया, उसका आत्मविश्वास बढ़ने लगा,

www.bhojpurisahityangan.com

बेहतर तरीके से सज-सँवर कर पति के सामने प्रस्तुत होने से, पति का और भी प्यार मिलने लगा। उसकी खुशी बढ़ती गयी और मुहल्ले की अन्य महिलाओं के समकक्ष अपने को कुछ समझने लगी। एक वर्ष का समय बीतते-बीतते नीमा पूरी तरह शहराती महिला बन गयी।

रमेश का भाई सुरेश, गाँव पर रहते हुए, दूर के इन्टरमीडिएट कालेज में पढ़ता था। इन्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, आगे की पढ़ाई के लिए शहर जाने के अलावा और कोई विकल्प न देखकर माँ-बाप ने रमेश के पास भेजकर आगे की पढ़ाई जारी रखने का निर्णय ले लिया। फलत: सुरेश पढ़ाई के लिए बहराइच आ गया। इन्टरमीडिएट में अच्छा अंक प्राप्त न होने के कारण, जैसे-तैसे रमेश महाविद्यालय में दाखिला दिला पाये। सुरेश अध्ययन में जुट गया।

घर के काम-काज से फुर्सत पाकर नीमा दोपहर में प्राय: शैला के पास गप्पे-मारने आ जाती थी और खुल कर दोनों हँसी-मजाक करती। शैला तो अपने को सदैव फुर्सत में रखती थी। उसे तो गप्पे-मारने वाले साथी की तलाश बराबर रहती थी। नीमा एक अच्छी साथी मिल चुकी थी। एक दिन हँसी-मजाक के दौरान शैला ने नीमा से मुस्कराते हुए कहा-'रमेश जी तो प्राय: शाम को नशे की हालत में ही घर में आते हैं। मैं देखती हूँ कि कभी खाना खाते हैं और कभी बिना खाये ही सो जाते हैं। बेचारे न तो कुछ सेवा तुमसे ले पाते हैं और न ही कोई सेवा तुम्हारी कर पाते हैं। खैर ! भगवान ने तो अपनी उदारता दिखा ही दी है कि कितना सुडौल सुगठित शरीर वाला अच्छा बाँका देवर भेज दिया है तुम्हारी सेवा करने के लिए क्यों ?' यह सब एक साँस में कहती हुई नीमा के चेहरे पर नजर गड़ाकर उसके भाव और उसकी प्रतिक्रिया को भाँपने लगी। नीमा मुस्कराते हुए नादान बनकर बोली-'अरे भाभी जी ! मैं आपका मतलब समझी नहीं? आप क्या कहना या पूछना चाहती हैं ?' शैला बोली इतनी मासूम मत बनो। एक बच्चे की माँ बन गयी हो और दूसरे का नम्बर है। नीमा बोली, 'जरा साफ-साफ कहिए।' 'साफ-साफ कहूँ? कहीं तुम्हें बुरा लग गया तो ?' ऐसा कह कर शैला नीमा की तरफ देखने लगी। नीमा ने कहा- 'मैं कुछ भी बुरा नहीं मानूँगी। आप स्पष्ट कहिये।' हाँ, इतना बता देती हूँ कि सुरेश मेरा बड़ा लेहाज करता है, हमसे ठीक से संकोच-शर्म के मारे बोलता तक नहीं, हँसी-मजाक तो दूर की बात है। शैला बोली-'किशोर उम्र तक प्राय: सभी बच्चे संकोची होते हैं परन्तु जिज्ञासाएँ कम नहीं होतीं। कहीं कोई बात सुन लेते हैं तो उसकी तह में जाने की कोशिश करते हैं। अभी बेचारे सुरेश को कोई ऐसी संगत नहीं मिली होगी जिससे भटक खुले। तुम्हारे जैसा भाभी मिली है जो कभी उसे कुछ सीख देना तो दूर हँसी-मजाक भी नहीं करती होगी। फिर बेचारे की झिझक कैसे दूर होगी ? दुनियादारी कैसे सीखेगा ?' नीमा से कहती-कहती शैला हँसने लगी।

नीमा भी शैला की इस चातुर्य भरी सारगर्भित अन्दाज में कही बात का आशय समझ कर

www.bhojpurisahityangan.com

हँसने लगी। दोनों कुछ देर तक हास-परिहास कर के अलग-अलग हो गयीं। शैला के कहने का अन्दाज नीमा के दिमाग में कुछ हलचल पैदा कर गया। अत्यधिक मदिरा-पान के कारण पति में जिस्मानी कमजोरी का एहसास नीमा को था। युवावस्था में पति-पत्नी को जिस तरह की ललक मिलने हेतु रहती है, उसकी कमी पति की तरफ से बराबर महसूस करती थी। परन्तु यह मन की बात किसी से कहे भी तो कैसे ? संकोचवश पति से भी न कह पाती थी। सोचती थी कि पति कहीं जिस्मानी उसकी भूख को सामान्य से अधिक मानकर संदेह की नजर से देखने न लगे। सन्देह होने पर जीवन नरक हो सकता है। यह सब सोचकर मन की बात मन में ही लिये रहती थी जिसे सहज समझदारी भी कहा जा सकता है। शैला के उकसाने पर इसके मन में भी यह बात आने लगी कि थोड़ा हँसी-मजाक देवर से भी क्यों न कर लिया जाय ? दो-एक बार जवाब नहीं देगा परन्तु बार-बार छेड़-छाड़ करने पर उसकी भी हिम्मत बढ़ेगी ही और हँसी-मजाक में साथ देने लगेगा।

दो दिन के अन्तराल के बाद, शैला और नीमा दोनों अकेले में मिलीं। शैला ने मिलते ही कहा-'क्यों सावित्री जी, क्या हाल है ?' नीमा बोली-'अरे भाभी जी ! आपने मेरा कब से नाम बदल दिया ? इसकी क्या जरूरत पड़ी ?' शैला बोली-'अरे भाई ! बात साफ है ताजा रसगुल्ला सामने रखा हो और कोई खाने के लिए हाथ आगे न बढ़ाये तो उसे संयमी व्यक्ति कहते हैं कि नहीं ? उसी तरह संयम बरतने के कारण, मैंने तुम्हे 'सावित्री' कह दिया। कोई बुरा तो नहीं कहा ?' शैला इस सारगर्भित अन्दाज से बातें कहना सुनकर नीमा हँस पड़ी और कहने लगी, 'भाभी जी, यकायक कैसे आदमी मंजिल पर पहुँच सकेगा ? एक-एक करके कदम बढ़ाना पड़ेगा। इतने दिनों का संकोच तोड़ने में आखिर समय तो लगेगा न ?' शैला बोली, 'अरे ! दो दिनों में अभी एक शब्द भी नहीं बोला क्या ? क्या किसी पंडित-ज्योतिषी से मुहूरत निकलवा रही हो ? अच्छा ठीक है, कभी-कभी किसी काम के बहाने, मेरे पास भी उसे भेजा करो, बोलने, बात करने में उसकी हिम्मत मैं भी बढ़ाऊँगी।' कुछ हँसी-दिल्लगी दोनों के बीच होती रही। घण्टों समय बीत गया, पता ही नहीं चला। बच्चे स्कूल से जाने लगे थे, फिर दोनों अपने-अपने काम पर चल दी।

शैला की पारखी नज़रों ने यह समझ लिया कि नीमा खुलकर विरोध नहीं कर रही है। उसके मस्तिष्क में भी इस तरफ कदम बढ़ाने की कशमकश चल रही है। एक दिन नीमा ने दोपहर में कोई चीज देने के लिए, शैला के पास सुरेश को भेज दिया और स्वयम् स्नान करने चल दी। शैला घर में अकेली थी। दस्तक देने पर ब-मुश्किल उठकर दरवाजा खोली। सुरेश को देखते ही उसकी हसरतें खिलखिलाने लगी। सामान्य हाथ से पकड़कर, उसे वापस करने के बजाय, शैला ने यह कहा, 'बड़ी बजनदार चीज लाये हो ?' इसे मैं अकेले कैसे सम्भालूँगी ? आओ अन्दर

www.bhojpurisahityangan.com

आओ, सही जगह पर रख दो। हल्की चीज के लिए इस प्रकार वजनी कह कर घर के अन्दर बुलाने का आग्रह करने के अन्दाज पर सुरेश हँस पड़ा और अन्दर प्रवेश करके खड़ा हो गया। शैला दरवाजा बन्द करके उसे अपने शयन-कक्ष की तरफ ले गयी और एक तरफ रखे मेज पर सामान रखने का इशारा करके, रखवा दिया। सामान रखकर जैसे ही सुरेश वापस लौटने को हुआ शैला बोल पड़ी, 'अरे देवर जी ! बैठो न' सुरेश बेड पर बैठने में थोड़ा सकुचाया। पर शैला के दुबारा कहते ही एक किनारे बैठ गया। शैला सुरेश के बैठने के अन्दाज को देखकर बोली- 'नीमा ने तुम्हें बड़ा दब्बू बना दिया है, लगता है, भाभी जैसा व्यवहार नहीं करती। तुम्हें अभी नादान बच्चा ही समझती है इसलिए तुमसे कम बोलती है और हँसी-मजाक भी नहीं करती। अच्छे बाँके नव जवान हो। यदि शादी हो गयी होती तो दो-एक बच्चे का बाप बन गये होते। नारी देखकर इतना घबड़ा रहे हो कि क्या कहा जाय ? कभी कोई छोकरी भी किसी पुरुष के साथ एकान्त लाभ पाकर इतना नहीं घबराती होगी। अरे मर्द तो उसको कहते हैं कि यदि किसी नारी की अँगुली छूने को मिल जाय तो 'पहुँची' तक पहुँच जाय। यह सब कहते-कहते शैला खिलखिलाकर हँस पड़ी।' जिससे सुरेश भी हँसने को मजबूर हो गया। शैला आगे बोली, 'भाभी और देवर का रिश्ता तो समाज में बड़ा मधुर और महत्वपूर्ण माना गया है। जो काम वर से अर्थात् पति से स्त्रियाँ नहीं करवा पातीं उसकी भरपायी देवर से करवाती हैं। क्यों, सुने हो कि नहीं ?' सुरेश यह सब चुपचाप सुनता और हँसता रहा। तब तक बर्तन धोने वाली दायी को आती देखकर, शैला उठकर बाहर चलने को हुई सुरेश भी अपने घर लौट गया। सुरेश के मन में भी अब इन भार्भियों से रसगर बात करने की हलचल पैदा होने लगी।

भाभियों से रसगर बातचीत से धीरे-धीरे सुरेश को भाभियों के बिस्तर का खिलौना बना दिया। मुक्ति तब मिली जब बी.ए. की परीक्षा देने के बाद ही दूसरे शहर में नौकरी मिल गयी और वहाँ चला गया।

भाभियाँ शैला और नीमा नई-नई योजना अपने मनोरंजन का बनाने लगीं। कोई और न मिलता तो दोनों आपसी मिलन के रास्ता को प्रगाढ़ कर लेतीं। यद्यपि इस तरह के आयोजन आज समाज में विकल्प शून्यता की स्थिति में सुनने को आते हैं। ऐसे में जब मन आन्दोलनकारी हो जाता है तो संवेग पर काबू पाने के लिए सिर्फ एक ही मुनासिब रास्ता बचता है कि आध्यात्म की ओर उन्मुख हुआ जाय और धीरे-धीरे यह उन्मुखता मनुष्य की जिन्दगी को हर नजरिया से सँवारने लगती है।

किताब : 'सुख जागे दुख भागे'

लेख : 'तलाख की तल्खियाँ'

कुआनो नदी के कछार में बसा गाँव कुहना, गोरखपुर जिला का एक हरियर गाँव है। इस

www.bhojpurisahityangan.com

नदी की तलटही के गाँव दूर-दूर बसे हैं। इसी गाँव के निवासी पण्डित रामचन्द्र तिवारी अपनी गँवई पहचान में सबसे अलहदा प्रकृति के थे। पण्डित जी की धर्म पत्नी सीधी-सादी तो थी पर नासमझ एवं कामचोर थीं। फलत: घर का काम-काज सहेज कर सुव्यवस्थित ढंग से नहीं कर पाती थीं इस पक्ष से अपने को कमजोर मानकर अक्सर अपनी बहन या भांजी को साथ रखते थे। पण्डित जी आँख की पुतरी एक लड़का इन्द्रदेव था। उसकी शादी बड़ी धूम-धाम से बड़हलगंज के समीपवर्ती



गाँव में पण्डित देवनारायण मिश्र की बेटी से हुई थी। बहू बहुत ही रूपवती सुशील और गृह-कार्य में दक्ष मिली थी। बहू के घर में आते ही घर में काफी बदलाव और भाव आ गया। मेहमानों की आवभगत और अच्छी तरह से होने लगी। तिवारी जी पहले से अधिक प्रसन्न रहने लगे थे। इनके कुछ रिश्तेदार बैंकाक-सिंगापुर में धंधा करते थे। इन्द्रदेव की पढ़ाई-लिखाई में रुचि नहीं थी। तिवारी जी ने बैंकाक के रिश्तेदार से सम्पर्क करके बीजा आदि बनवाकर इन्द्रदेव को बैंकाक के लिए रवाना कर दिया। इन्द्रदेव की शिक्षा न होने के कारण कोई सम्मानजनक नौकरी न मिल सकी। सम्बन्धियों के सहोग से कुछ कपड़े लेकर घूम-घामकर बेचने का कार्य करके जीविकोपार्जन करने लगा। दिन भर पैदल चल-चल कर जब भोजन करके रात को बिस्तर पर जाता था तो गाँव घर की याद सालने लगती थी। घर पर दो छोटी-छोटी बेटियाँ छोड़कर आया था। कभी के साथ गुजरे मोहक क्षण याद आते तो कभी बेटियों का सलोना मासूम चेहरा स्मृति में थिरकने लगता। गाँव घर की याद उसे इतना सताती कि कभी-कभी पुक्का मारके रोने लगता था। विदेश में होने की मजबूरी थी, वरना कबका घर वापस आ गया होता, धीरे-धीरे तीन-चार वर्ष गुजर गये। कुछ रुपया इकट्ठा करके अपने गाँव कोहना आ गया। परिवारजनों से मिलकर बेहद खुश हुई। तिवारी जी कम खुश नहीं थे इन्द्रदेव बैंकाक से आते समय अपने साथ कुछ विदेशी सामान भी लाया था। ऐसे समान स्थानीय बाजार में दुर्लभ थे, तिवारी जी विशिष्ट मेहमानों को विदेशी सामग्री भेंट स्वरूप देकर अत्यन्त प्रफुल्लित होते थे। इन्द्रदेव को बैंकाक से आये एक वर्ष हो गया और दुबारा जाने का नाम नहीं ले रहा था तो चिन्तित तिवारी जी ने उससे बैंकाक न जाने का कारण पूछा। इन्द्रदेव ने फिर बैंकाक से भारतीय प्रवासियों द्वारा किये जा रहे कार्यों व कठोरतम् जीवन-यापन की चर्चा निश्चित रूप से किया। इन्द्रदेव तिवारी जी का इकलौता बेटा था। वैसे भी अपनी नजर से दूर नहीं रखना चाहते थे फिर कठोर दिनचर्या की बात सुनकर पिघल गये और वापस जाने से मना कर दिया। इन्द्रदेव अब घर गृहस्थी में भी तिवारी जी का रुचिपूर्वक हाथ बँटाने लगा। दिन गुजरते गये अचानक एक दिन इन्द्रदेव को लकवा का आघात हुआ और वह बिस्तर पकड़ लिया काफी इलाज के बावजूद वह स्वस्थ न हो सका, शरीर से कोई मेहनत वाला कार्य करने में असमर्थ हो गया।

www.bhojpurisahityangan.com

इधर इन्द्रदेव की बड़ी बिटिया मोनी शादी योग्य सयानी हो गयी। इन्द्रदेव की असमर्थता देखकर तिवारी जी ने अपने एक रिश्तेदार की मदद से एक दूर के रिश्तेदार के लड़के से शादी रचा दी। दामाद एक महाविद्यालय में लिपिक की नौकरी पा गया। फलत: तिवारी जी अपनी एक पौत्री से निश्चिन्त हो गये दूसरी बिटिया बेबी अभी उम्र में छोटी थी भरपूर बचपना उसके मासूम चेहरा से अभी झलकता था। अत: तिवारी जी जल्द शादी करना उसके साथ ज्यादती होने जैसा महसूस करते और लोगों से कहते, कि अभी बेबी बच्ची है। यदि इसकी शादी कर देंगें तो घर सूना हो जायेगा। घर में मायूसी छा जायेगा इसलिए इसकी शादी थोड़ी देर से करेंगें। तिवारी जी और उनकी पत्नी इन्द्रदेव की अस्वस्थता से चिन्तित रहने लगे। इन्द्रदेव की हालत में कोई आशाजनक सुधार न देखकर उनके चेहरे पर मुर्दनी छायी रहती थी। वे आशंकित थे कि कहीं उन लोगों से पहले ही बेटा दुनिया से विदा न हो जाय। पति-पत्नी दोनों ही निरन्तर गलते गये। कुछ महीने बाद ही दोनों स्वर्ग सिधार गये। माता-पिता का साथ छूटने के कारण इन्द्रदेव निराश और उदास रहने लगा।

एक दिन अपनी पत्नी को पास बुलाकर अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए उससे बोला-'बेबी की माँ ! मेरी हालत देख रही हो, न जाने किस जन्म का पाप भोग रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि जल्द से कोई वर ढूँढकर बेबी के हाथ पीले कर दिये जायँ, फिर जैसे-तैसे दिन काटा जायेगा।' बेबी की माँ भी सीधी-सादी औरत थी। खस्ताहाली के चलते वह भी टूट गयी थी। सहमति में सिर हिलाती हुई रिश्तेदारी के कई शादी योग्य लड़कों की चर्चा कर डाली। सात-आठ किलोमीटर की दूरी पर एक शुक्ल परिवार था जिसमें पट्टी की एक बुआ व्याही थी। सर्वाधिक मुनासिब समझकर शादी का प्रस्ताव किसी के माध्यम से भिजवा दिया। शुक्ल जी घर के सम्पन्न थे परन्तु गाँव और आस-पास के लोगों को मुकदमा लड़वाने और मौका देखकर किसी की जमीन-जायदाद स्वयं हड़प लेने में माहिर थे। शुक्ल जी कोहना से इन्द्रदेव की पुत्री की शादी प्रस्ताव पाकर खुशी से फूले न समाये। दो-तीन वर्ष पूर्व लड़की को देखे ही थे। उसके रूप-रंग और गुण में कोई कमी तो थी नहीं, साथ में तिवारी जी की जमीन-जायदाद भी मिलने की उम्मीद थी। शुक्ल जी स्वयं कोहना गाँव आये। अपनी पूरी हमदर्दी जताकर शादी पक्की कर गये और अपने पुत्र की सारी कमजोरियों को छुपा गये। बेबी की शादी हो गयी। बेबी अपनी ससुराल चली गयी। एक सप्ताह तक अपनी सुहागरात का इन्तिजार करती रही। आठवें दिन आधी रात गुजरने के बाद उसके पतिदेव आये तो किन्तु कुछ आदर्श-वाक्यों को सुनाकर चले गये। बेबी की सुहागरात की जो संकल्पना थी धराशायी हो गयी। एक सप्ताह बाद जब आये तो अपनी शादी के पूर्व के जीवन की रसभरी दास्तान सुनाकर सबेरा होने पर शयन-कक्ष से बाहर हो गये।

बेबी अपनी भाभियों और सहेलियों से सुहागरात में पति से मधुर-मिलन की जो कथायें सुन

www.bhojpurisahityangan.com

चुकी थी वैसा कुछ भी घटित न होता देखकर आश्चर्य चकित थी। कुछ दिन बाद जब तीसरी बार रात में आये तो काफी इन्तिजार के बाद उनके हाथ ने शरीर-स्पर्श किया। बेबी ने सोचा शायद मेरी संकल्पना आज साकारित हो रही है। पर उस दिन भी किंचिति शारीरिक स्पर्श के अलावा और कुछ भी नसीब नहीं हुआ। पतिदेव दो सप्ताह के लिए कहीं बाहर चले गये। लौटने के बाद उसे अपने बाहु-पाश में भरकर प्यार जताया किन्तु बेबी के हक में यह रात भी खाली ही गयी। बेबी के मस्तिष्क में कई-कई सवाल कुण्डली मारने लगे कि ये आखिर मुझसे क्यों कटे-कटे रहते हैं। सहेलियाँ अथवा भाभियों से जो पति-पत्नी के सम्बन्धों के बारे में सुन रखा था वो क्या सब झूठा और फरेब है। कहीं ऐसा तो नहीं कि वो अपनी सात्त्विकता की छाप मुझ पर छोड़कर अपने आदर्श आचरण का प्रदर्शन करना चाहते हैं। मुझसे न सटने का आखिर कारण क्या है ? कहीं ऐसा तो नहीं कि इनका जुड़ाव-लगाव कहीं और हो जिसके चलते मेरी उपेक्षा करना चाहते हैं, आदि-आदि।

यह सब सोचकर मानसिक उलझन और चिन्ता में रहने लगी, एक दिन, दिन के समय कमरे में आये पर उसने कटाक्ष भरे शब्दों में कह ही दिया कि क्या पुराने दोस्तों से अभी फुर्सत नहीं मिली ? दिन की कौन कहे रात में भी आपको समय नहीं मिलता ? जब पत्नी के लिए भी समय नहीं था तो शादी की क्या जरूरत थी ? बेबी के इन वाक्यों ने पति को सोचने पर मजबूर कर दिया। रात बो बुजुर्गों के बिस्तर पर आते ही, पत्नी के कमरे में जाकर उसने दरवाजा बन्द कर दिया। आज पत्नी के हर सवाल का भरपूर जवाब देने को सोचकर आया था, परन्तु नारी हक में शरीरी कमजोरी जो पत्नी से छुपाकर रखना चाहता था उसे छुपा न सका। बेबी समझ गयी कि यह दैहिक सुख दे सकने में सर्वथा अक्षम है, इसी से कतराते रहे। समय धीरे-धीरे छः माह का व्यतीत हो गया। मायके से बुलावा आया और माँ-बाप के पास चली गयी। सखियों और मुहल्लों की भाभियों ने जब पति के पुरुषार्थ की हाल जानना चाहा तो बेबी खूबसूरती से टालती रही। एक भाभी जो उसे सबसे जियादा मानती थी, काफी अन्तरंग थी, उससे बेबी टाल नहीं पायी। भाभी से बात करते-करते आँखें भर आयीं और बोल पड़ी 'भाभी क्या पूछती हो ?' बस इतना ही समझ लो कि जैसी गयी, वैसे ही बैरंग वापस आ गयी हूँ। भाभी चौंकते हुए बोली 'क्या अभी भी कुमारी ही हो ?' यह कहते-कहते भाभी ने बेबी के चेहरे पर आँखें गड़ा दी। बेबी के चेहरे पर हँसी के बजाय गहरी उदासी और आँखें तरबतर हो गयीं। भाभी को बात समझते देर न लगी, फिर बोली-'यह तो अनर्थ हो गया, खैर जैसी विधना की इच्छा' यह कहते-कहते दोनों खामोशी में डूब गयीं। उधर से किसी के आने की आहट पाकर दोनों ने ही चर्चा का विषय बदल दिया। भाभी मुनासिब देखकर यह दास्तान बेबी की माँ से कह सुनाया। माँ की चिन्ता का कोई ठिकाना न रहा। बेबी की शादी करके वह अपने को चिन्ता-मुक्त महसूस करती थी परन्तु दैहिक कमजोरी की बात सुनकर हैरत में पड़ गयी। लगभग छः माह बाद ससुराल से बुलावा

www.bhojpurisahityangan.com

आया तो बहाना बनाकर बिदा करने से मना कर दिया। धीरे-धीरे यह बात बड़ी बहन एवं उसके पति को भी मालूम हो गयी। वे लोग भी कर ही क्या सकते थे ? इसी चिन्ता में एक दिन इन्द्रदेव दुनियाँ से ही विदा हो गया। बीमारी तो उस पर पहले ही भारी थी।

कुछ दिन बाद ससुराल से बेबी का जब पुन: बुलावा आया तो बेबी ने ससुराल जाने से मना कर दिया और मायके में रहकर माँ की सेवा करते रहने की बात कह दी। जब ससुराल वाले दबाव बढ़ाने लगे तो बड़ी बहन के पास काशी चली गयी और बहन-बहनोई से यह कह कर कि ससुराल वाले उसे नौकरानी बनाकर रखना चाहते हैं। पति का कोई सुख नहीं है, बहन-बहनोई की सहानुभूति अर्जित कर उनके साथ रहने लगी कुछ ही दिनों बाद बेबी ने जब अपना निर्णय सुना दिया कि वह अब कभी ससुराल नहीं जायेगी तो उसके बहन-बहनोई ने एक वकील से सम्पर्क कर काशी के एक न्यायालय में तलाक का मुकदमा दर्ज करा दिया। इन लोगों ने ऐसा सोचा कि शीघ्र ही तलाक मिल जायेगा तो इसकी शादी किसी और लड़के से कर दी जायेगा लेकिन वाह रे देश का कानून। बेचारी बेबी को निरन्तर दस वर्ष तक कचहरी के चक्कर लगाने पड़े तब कहीं जाकर तलाक मिला और वह भी बिना रख-रखाव की व्यवस्था के बेचारी बेबी के युवावस्था के बेशकीमत दस वर्ष कचहरी की खाक छानते गुजर गये। इस बीच समय गुजारने के लिए वह विभिन्न नर्सिंग गृहों में अंशकालिक नौकरी करती रही। समाज की नजरों में गिरने से बचने के लिए उसे क्या-क्या नहीं करना पड़ा परन्तु समाज में कोई ऐसा ब्राह्मण परिवार नहीं मिला जो आगे बढ़कर कहे कि पाकीजा है, आजो मेरे घर की बहू बन जाओ।

विवशत: एक दशक के लम्बे एकाकी जीवन और तलाक की तल्खियों से सम्बन्धियों के बगैर परवाह किये एक विजातीय व्यवसायी युवक के साथ अपना घर बसाने न्यायालय की ओर चल पड़ी।

किताब : 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी'

लेख : 'पन्द्रहवीं घटना'

भारतीय समाज में नारी का जीवन पति की क्रियाशीलता, परिश्रम एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से आच्छादित रहता है। पति यदि कर्तव्यनिष्ठ, सदाचारी, संयमी एवं समाज के प्रति जागरूक है तो उसकी पत्नी को भी घर-परिवार तथा समाज में सम्मान मिलता है और यदि इसके विपरीत काहिल, निकम्मा तथा आचरणहीन हो गया तो पत्नी के मानों भाग्य ही फूट गये। उसे जिन्दगी भर घर-परिवार एवं समाज से उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है तथा दो वक्त की रोटी एवं तन ढंकने के लिए वस्त्र की व्यवस्था से जूझना पड़ता है। सम्मान पाना तो मात्र अधूरे स्वप्न जैसा हो जाता है। यह घटना भी ऐसी ही नारी शोभा के जीवन की दु:ख-भरी कहानी है जिसका पति काहिल और निकम्मा था जिसके चलते उसका जीवन कष्टमय रहता था।

www.bhojpurisahityangan.com

शोभा एक सीधी-सादी सरल स्वभाव की लड़की थी। उसकी शादी हरपति नामक युवक से हुई थी। हरपति काहिल और निकम्मा था जब कि उसका छोटा भाई उतना ही तेज-तर्रार और घर तथा सामाजिक कार्य में अभिरूचि रखने वाला था। हरपति की शादी के एक वर्ष बाद ही माँ-बाप की पत्नी अर्थात् शोभा की देवरानी अच्छे घर से आयी थी। ससुराल आते ही घर का मौहाल समझ कर बहुत जल्द ही परिवार पर हावी हो गयी। पति का परिश्रमी होना तथा पारिवारिक कार्यों में अभिरुचि रखना देवरानी को मनमानी करने में बढ़ावा देता गया। फलत: पूरे परिवार पर छा गयी तथा अपने इशारों पर सबको नचाने लगी। शोभा सीधी-सादी होने के साथ ही पति की तरफ से निराश थी। फलत: रात दिन घरेलू कार्य में लगी रहती थी। देवरानी थोड़ा-सा काम करके घर के प्राय: सभी काम शोभा के जिम्मे डाल देती। काम समय से पूरा न होने पर खरी-खोटी सुनाने लगी। शोभा को परेशान और दु:खी देखकर कभी तरस भी नहीं खाती थी। शोभा अपने हाल पर अकेले में बैठ कर आँसू बहा लेती तथा खुद को कुछ सांत्वना देकर फिर काम में लग जाती।

एक बार शोभा के देवरानी का भाई राखी के दिन साड़ी-कपड़ा और ढेरों सामान लेकर राखी बँधवाने अपनी बहन के पास आया। देवरानी घमण्ड से चूर शोभा को ताने देने लगी। इधर शोभा के पिता शादी के बाद ही गुजर गये थे कोई भाई नहीं था मात्र एक छोटी बहन थी जो प्रथा के अनुसार बहन के घर नहीं आ सकती थी। फलत: उसके मायके से कोई आने वाला नहीं था। शोभा की तबियत एक दिन काफी खराब थी। कुछ काम करने की स्थिति में नहीं थी। फिर भी उसकी देवरानी ने उसके हाल पर तरस खाने की बजाय उसे ढेर सारे काम बताकर यह ताने देकर चली गयी कि जब अपने पति को निकम्मा बना दी हो तो, काम कौन करेगा? यह सब कार्य तुम्हें ही करना पड़ेगा। इन्हें शीघ्र निपटा डालो। देवरानी का कटु भाषण प्राय: चलता ही रहता था। पारिवारिक कलह न हो इस डर से शोभा सब कुछ बर्दाश्त करती थी। शोभा की दयनीय स्थिति का हाल



धीरे-धीरे पूरे गाँव में फैल गया। यहाँ तक कि चर्चा 'सरकार' 'शाह गोला दीवान सरकार' के कानों तक पहुँच गयी। उन्हें शोभा की दशा पर तरस आ गयी और उसकी सहायता करने के उद्देश्य से एक दिन उसके घर की ओर चल दिये। दरवाजे के पास जा कर देखते हैं कि एक महिला पशुओं को चारा डाल रही है। उसकी दीन-दशा देखकर समझ गये कि यह शोभा ही होगी। उसकी तरफ आवाज लगाते बोले-'बेटी ! क्या तुम्हारा ही नाम शोभा है ?' 'सरकार' को देखकर शोभा झट मुँह पर्दा करके बोली, 'हाँ, मैं ही शोभा हूँ। पर मैं आपको पहचान नहीं रही हूँ। आप कौन हैं ?'

www.bhojpurisahityangan.com

सरकार बोले-'बेटी, तुम मुझे नहीं पहचान रही हो, परन्तु मैं तुम्हें पहचान रहा हूँ। जब भी तुम्हें पिता और भाई की जरूरत होगी, मुझे पुकारोगी। मैं मदद करने फौरन आऊँगा तथा कभी पिता और भाई की कमी महसूस नहीं होने दूँगा।' ऐसा सुनकर शोभा 'सरकार' के पैरों पर गिरकर रोने लगी और कहने लगे कि आज ऐसा महसूस हो रहा है कि इस संसार में मेरा भी कोई सहारा है। 'सरकार' धीरे-धीरे प्रयास कर उसे देवरानी से अलग करा दिये। शोभा की छोटी बहन की शादी भी करवा दिये तथा उसकी माँ को अपनी माँ की तरह चाहने लगे। शोभा को कभी भाई और पिता की कमी नहीं महसूस होने दिये। प्रत्येक रक्षा-बंधन के दिन शोभा के घर जाकर राखी बँधवाना नहीं भूलते थे। सरकार के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर शोभा का पति भी सुधर गया और घर-गृहस्थी के काम-काज में भरपूर हाथ बँटाने लगा। फलत: शोभा जीवन सुखमय हो गया।

किताब : श्रीराम महायज्ञ की कथात्मक झलकियाँ



ध्वनि विस्तारक यंत्रों के माध्यम से कार्यक्रम के शुभारम्भ के नियत समय की घोषणा एक दिन पूर्व ही कर दी गयी थी। पन्द्रह जून २००३ को प्रात: छ: बजे से ही जन-समुदाय की भारी भीड़ इकट्ठा होना प्रारम्भ हो गयी थी। नर-नारी बच्चे सभी हर्षित होकर कार्यक्रम में भाग लेने उमड़ पड़े थे, महिलायें और बालायें ग्राम से दो कि०मी० दक्षिण दिशा में बहने वाली अति पावनी सरयू नदी से जल लेने हेतु अपने हाथ में कलश लेकर तैयार हो गयीं। अधिकांश ने तो कलश को अपने घर से ही सुन्दर ढंग से रंग-पोत कर एवं सजाकर ले गयीं थीं। जिन्हें देखकर उनके उत्साह का सहज ही अन्दाजा लगाया जा सकता था।

शोभा यात्रा-एक वाहन पर भगवान् श्रीराम की झाँकी बहुत ही सुन्दर ढंग से सजायी गयी, दर्जनों स्कूटर, मोटर साइकिल सवार आगे-आगे चलने और शोभा-यात्रा दर्शन करने हेतु तैयार हुआ। उनके पीछे कीर्तन-मण्डली के लोग कीर्तन हेतु उसके पीछे भगवान की झाँकी, उसके पीछे नारियों और बालायें कलश के साथ, फिर महात्मा जी और साधु-सन्त, इनके पीछे पुरुष-समुदाय पंक्तिबद्ध होकर खड़े हो गये। श्री रामचरित मानस के बहुचर्चित कुछ दोहे और चौपाइयाँ लिखे अनेकानेक बैनर लोगों के हाथों में शोभा-यात्रा की गरिमा में चार चाँद लगा रहे थे। महात्मा जी के मुखारविन्द से जय घोष करती गाँव के बीच से होती हुई सरयू नदी के तट की ओर जन-समुदाय चल पड़ा। ग्रामवासियों का उत्साह देखते ही बनता था। सनातन धर्म के जड़ की गहराइयों

www.bhojpurisahityangan.com

का अन्दाजा सहज ही कोई लगा सकता था। जय घोष के साथ शोभा यात्रा सरयू तट पर पहुँची। वहाँ स्व० राजा बीरेन्द्र बहादुर नारायण चन्द के भतीजे हनुमान जी के परम भक्त माननीय रवीन्द्र नारायण चन्द उर्फ लल्लन साहब जो वहीं पर प्रवास करते हैं, कुछ भक्त गण के साथ शोभा-यात्रा की अगवानी करने के लिए खड़े थे। उन्होंने कार्यकर्ताओं और ग्रामवासियों का उत्साहवर्द्धन किया और हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सरयू जी से कलश में जल लेकर लोग वापसी यात्रा पर निकल पड़े तथा भगवान का जय-जयकार करते हुए, यज्ञ-शाला के पास आ पहुँचे।

इस कार्यक्रम की सबसे खास बात यह थी कि गाँव के नागरिक जो नौकरी, पेशे से दूरस्थ नगरों में जाकर रहते हैं वे भी अवकाश लेकर कार्यक्रम में सहभागिता हेतु आये। उनमें से प्रमुख चेहरे जो देखने को मिले थे। वे श्री जगदीश नारायण दूबे, डॉ० राजेन्द्र प्रताप चन्द, श्री अनिल प्रताप चन्द, इं० राजेश्वर सिंह, श्री मनोज प्रताप चन्द, श्री जयप्रकाश सिंह एडवोकेट, श्री रामसागर सेठ, श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, श्री अशोक पासवान आदि। इतना ही नहीं कुछ ग्रामवासियों ने तो अपने नजदीकी रिश्तेदारों को भी बुला रखा था, जो शोभा-यात्रा में बढ़-चढ़ कर सहभागिता कर रहे थे।

किताब : नसीब अपना-अपना

लेख : मोबाइल और बन्दर

एक ही जनपद के न्यायालय में तैनात, पड़ोस में प्रवास कर रहे दो न्यायाधीश ठंड ऋतु में आवास से बाहर बने लघु उद्यान में कुर्सी डाले धूप की मधुर उष्मा का आनन्द लेते हुए, कुछ हास-परिहास के साथ गप्पें मार रहे थे। एक न्यायाधीश मिश्रा साहब के पास मोबाइल, दूरभाष था जिसे वार्ता के समय बीच-बीच में उपयोग कर दूरस्थ व्यक्तियों से वार्ता भी करते जा रहे थे। वार्ता के बाद मोबाइल बगल में रखे एक छोटे साइड टेबुल पर रख दिया करते थे। उसके पीछे एक बड़ा गुलमोहर का पेड़ था। पेड़ पर एक बड़ा लंगूर बैठा था जो न्यायाधीश महोदय द्वारा मोबाइल को बार-बार उठा कर, स्विच ऑन कर कान पर लगा कर कुछ सुनने और बोलने की गतिविधियों पर नजर गड़ाये हुए था।

अचानक उसे न जाने क्या सूझी कि पेड़ से चुपके से उतरा और मोबाइल साइड टेबुल से उठाते हुए, हाथ में लेकर, दूसरी तरफ आम के पेड़ पर भाग कर चढ़ गया। बन्दर के पास से गुजरते ही दोनों ही न्यायाधीश महोदय चौंक कर कुर्सी छोड़ कर, उठ कर खड़े हो गये। सामने बैठे न्यायाधीश पाण्डेय साहब ने कहा कि भाई साहब ! आप की मोबाइल गायब टेबुल खाली।

www.bhojpurisahityangan.com

फिर बोल पड़े 'अब क्या होगा ?' अब दोनों लोग बन्दर की तरफ मुखातिब हो बन्दर की गतिविधियों को देखने लगे और इन्तिजार करने लगे कि शायद नीचे गिरा दे। इसी बीच नौकर चाय लेकर आ गया। मिश्रा जी नौकर की तरफ मुखातिब हो कर बोले-'अरे चाय छोड़ो, देखो बन्दर मोबाइल लेकर भाग गया। कुछ उपाय करो।' चपरासी ईंट-पत्थर के टुकड़े ढेला आदि फेंक कर मारने हेतु लाने दौड़ा। पाण्डेय साहब ने कहा-'नहीं, मारो नहीं। कहीं मोबाइल लेकर दूर भाग गया तो ?' उधर बन्दर मोबाइल को हाथ में लेकर ध्यान से कभी उसे स्क्रीन पर बने हनुमान जी की तस्वीर को देखता तो कभी कान पर लगाता तो कभी उलट-पलट कर देखने लगता, लेकिन हाथ से छोड़े, न अलग करे। देखते ही देखते भीड़ एकत्र हो गयी। कोई कहे कि रोटी दिखाओ, कोई कहे सेब दिखाओ, कोई कहे केला फेंको। भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रलोभन की सामग्री लाकर उसकी तरफ फेंकी तो गयी परन्तु बन्दर टस से मस नहीं हुआ और न ही मोबाइल यंत्र हाथ से छोड़े।

तब तक एक वकील साहब, न्यायाधीश महोदय से मिलने आ गये। उन्होंने भीड़ इकट्ठी देखखर



जिज्ञासा भरी नजरों से सबको देखा और सबकी चिन्ता के कारण की जानकारी प्राप्त की। वे झट से अपनी जेब में हाथ डाले अपनी मोबाइल निकाली और न्यायाधीश मिश्रा साहब की तरफ मुखातिब होकर बोले, 'श्रीमान जी ! आप अपने मोबाइल का नम्बर बतायेंगे ?' मिश्रा साहब के मुखारबिन्द से नम्बर निकलते ही, वकील साहब की उँगलियाँ अपनी मोबाइल के बटन पर दौड़ गयीं और जैसे ही नम्बर मिला कर बटन दबाकर, बन्दर के हाथ में पड़े मोबाइल से सम्बन्ध साधा कि बन्दर के हाथ की मोबाइल की घंटी बज गयी और साथ ही साथ कम्पन तेजी से शुरू हो गया। बन्दर घबराया और हाथ से मोबाइल फेंक दिया। मोबाइल नीचे उद्यान की सीमा पर लगी झाड़ी पर जा गिरी। चपरासी दौड़कर लाया और साहब को सुपुर्द कर दिया। बन्दर की इस कारगुजारी पर, सब लोग हँसते हुए अपने-अपने घर लौट गये।

किताब : एक कहानी की आत्मकथा

(पृष्ठ सं० १६ से २० का और ४९-५० का कुछ अंश की झलक)

रमरतिया जैसी ही एक युवती पति वियोग से बहुत परेशान थी, उसका कामातुर मन उसे पुरुष-संसर्ग के लिए तीव्रता से उकसा रहा था। चूँकि पति की मौजूदगी में ही वह गर्भवती हो गयी थी इसलिए उसे गर्भ सम्बन्धी कोई खतरा भी नजर नहीं आ रहा था। इधर-उधर नजरें दौड़ाती

www.bhojpurisahityangan.com

पर उसे कोई भी मुनासिब पुरुष नहीं दिख रहा था जिसके साथ सम्बन्ध कायम करके समाज की पैनी नजर से बचा सके।

अपनी पारखी नजरों से उसने एक दिन सूरज को गौर से देखा। देखते ही प्रसन्न हो गयी जैसे उसके मन की मुराद पुरी हो रही हो। सूरज की नजरें भी किसी की तलाश में थी। उसने मौका देखकर एक दिन घर के सामने से निकलते हुए सूरज को इशारा करके अन्दर बुला लिया। इज्जत के साथ उसे बैठाते हुए सूरज से कुशल क्षेम पूछा, 'क्या आप की शादी घर वाले नहीं कर रहे हैं ?' इस पर सूरज ने कहा-'नहीं, ऐसा नहीं है, मैं ही अभी शादी के लिए तैयार नहीं हूँ।' ऐसे जवाब से तो उसके मन में आ गया कि कहीं सूरज नामर्द तो नहीं। फिर उसने दिलनशीं माहौल को हल्का करते हुए पूछा-'आप शादी क्यों नहीं करना चाहते ?' तो सूरज ने कहा-'मैं इस झंझट में नहीं पड़ना चाहता।' इस उत्तर से उसे कुछ आशा बँधी, किन्तु उत्तर में कुछ स्पष्टता नहीं थी। फलत: उसने अब शराफत का पर्दा हटाकर सीधा बेलौस सवाल किया, जो उसकी अपनी शरीरी जरूरत के लिए था। सूरज की माँगी मुराद में भविष्य का सवेरा नज़र आ रहा था। सूरज की हर किस्म की परिपुष्टता देखकर वह शर्माने का बहाना करती हुई खिलखिलाने लगी। सूरज को यह अदा बड़ी लुभावनी लगी। सूरज ने आव देखा न ताप बगल में पड़ी चारपाई और खुले आसमान का मंजर, एक जोड़ा कबूतर एक दूसरे का पंख खुजलाने में लग गये। दरवाजे की तरफ इशारा करके उसने साँकल लगाने को कहा। एक बार का शरीर सम्बन्ध-स्थापना से, सिर्फ इशारों की जरूरत होती है। किसी काम को अन्जाम देने में एक इशारा भर काफी होता है। एक माह तक यह सिलसिला बार-बार चला। किन्तु नवागता अपने पड़ोसियों से बहुत डरती थी। कारण था कि पड़ोसियों के दरवाजे भी इसके घर के आमने-सामने या अगल-बगल थे। फासला बहुत कम था। अत: उसने सूरज को अपने यहाँ न बुलाकर कहीं और जुगाड़ बैठाने का फैसला किया।

नई जगह के लिए उसने सूरज की बरदउल (बैल बाँधने की जगह) का चयन किया। क्योंकि सूरज की वरदउल उसके घर से थोड़ी हटकर थी तथा सूरज रात में अकेले वहीं सोया करता था। अब वह तीन चार-दिनों के अन्तर पर जब उसके पड़ोसी सो जाते तो रात में उस सहेट (मिलन-स्थान) पर पहुँच कर सूरज को जगाकर, घण्टों प्रेम-क्रीड़ा में लिप्त रहने लगी। यह कार्यक्रम महीने दो महीने तक चलता रहा। गाहे-बगाहे एक दिन रात को घर से बाहर निकलते हुए पड़ोस की किसी महिला ने देख लिया तो पूछा, कहाँ जा रही हो ? उसने प्राकृतिक आवश्यकता का बहाना बनाकर थोड़ी दूर गयी और अपने कहने का रिहर्सल करके लौट आयी। उस दिन से प्रेम-क्रीड़ा बन्द हो गयी। मगर आदत लत की हद तक जाती है। उसके मन एक नयी योजना आकारित हुई, उस नवागता ने पड़ोस की जवान, पर कुँआरी लड़की को पटाना शुरू कर दिया।

www.bhojpurisahityangan.com

थोड़े ही दिनों में, उससे अच्छी दोस्ती गाँठकर उससे खुल गयी और उसमें भी कामाग्नि को हवा दे दी। रात को साथ चल कर सूरज से मजे लेने-देने की बात पर उससे सहमति ले ली। एक दिन बहला-फुसला कर साथ ले गयी और जिस्मी सम्बन्ध कायम करा दिया। फिर क्या था वह लड़की खुद बराबर उसके साथ जाने लगी। अब दो के साथ-साथ जाने-आने से कोई शक भी नहीं करता था। यह सिलसिला महीनों तक चलता रहा। जब उसे बच्चा पैदा होने का समय करीब आ गया तो अपने पति को समाचार भेज कर बुलवा ली और यह सिलसिला भंग हो गया।

सूरज फिर अभाव और अकाल की स्थिति से गुजरने लगा। वह कुमारिका भी साथ की कमी के कारण अकेले घर से बाहर पैर निकालने में हिम्मत नहीं जुटा पायी। एक आध बार समय निकाल कर सूरज ने उससे रात में मिलने का आग्रह किया किन्तु वह अकेले मिलने से इन्कार कर गयी। हरिजन बस्ती में चक्कर मार-मार कर सूरज थक गया। अब वह हरिजन बस्ती को छोड़ कर अहीरों की बस्ती में जियाद: चक्कर लगाने लगा। खेत-खलिहान अथवा बाग-बगीचों में जब किसी युवती को अकेले काम करते कहीं देखता तो उसके चक्कर लगाता। सोचता शायद यह भी औरों की तरह हम से साथ कर ले तो काम बन जाये। सभी लड़कियाँ या बहुएँ एक जैसी नहीं होतीं। अत: उसे काफी समय तक चक्कर लगाना पड़ा। सूरज में एक खास बात थी



कि वह अकेले में युवतियों को देखकर संयम नहीं खोता था। कामावेश में आकर किसी को पकड़ ले, जोर जबरजस्ती करने लगे ऐसा उसके साथ नहीं करता था। बात वह स्पष्ट रूप से कर नहीं पाता था। अत: उसके द्वारा कहे हुए थोड़े से शब्द को सुनने वाले पर निर्भर था कि वह उसका क्या मतलब निकालता है। उसके द्वारा कहे हुए शब्दों का सार्थक मतलब भी निकाला जा सकता था और निरर्थक भी। अत: सुनने वाले अपने मनोभावों के अनुकूल मतलब निकाल लेते थे। टालने वाले उसे आसानी से टाल देते थे। मनोरंजन चाहने वाले उसके शब्दों की कुछ सार्थक और निरर्थक व्याख्या करते थे, कुछ समय तक उसे बैठा कर गपशप कर लिया करते थे।.....इस तरह सूरज को हर उम्र की महिलाओं को समझने का मौका सहज ही मिलता गया और इस प्रकार उसने एख दर्जन से अधिक युवतियों को अपनी हवस का शिकार बनाया।

इस समस्या का दोषी वास्तव में सूरज है या सामाजिक दमित इच्छा-भावना से उपजी कु-व्यवस्था। यह सवाल कई-कई सवालों, कई-कई कहानियों और कई-कई उपन्यासों की अन्तर कथाओं और दमित जन जातियों की आत्मकथा का हिस्सा है। इसके हिस्सेदार सूरज जैसे अनेक सामाजिक पात्र, कथानक हैं। गाँव से लगायत शहर तक ऐसी कहानियों-कथाओं की भरमार है। हमारे कथाकार न जाने क्यों ऐसी परिस्थितियों से न टकराकर अपनी कलम से ऐसे अछूते विषयों को छूने से

www.bhojpurisahityangan.com

गुरेज करते हैं। आज जरूरत है ऐसी घटनाओं से आँख मिलाकर सारे प्रकरणों को लेखनबद्ध करने की। ऐसा करने से सामाजिक कुरीतियों, अव्यवस्थाओं की कथार्सिस होगी और कितने ही सूरज और महिला-पात्र लुका छिपी की हरकतों और भटकाव की स्थिति से उबर जायेंगे। सूरज तो इस कहानी की आत्मकथा भर है। इस आत्मकथा की कथा में तो इस कहानी की पर्तें दर पर्तें हैं। इसकी माँग को भरने की शर्तें आसान भी नहीं हैं। हमारे कथाकार बन्धुओं का प्रयास चिमटा से अंगारा छूने जैसा है। ऐसी स्थिति से वैचारिक रूप से टकराने और निष्कर्ष निकलने तक इन्तिजार करने का है। यह कहानी सूरज के इर्द-गिर्द चक्कर जरूर लगा रही है किन्तु सूरज सरीखे कितने कितने ही पात्रों की खूबियों-खामियों की अक्कासी करेगी। गाँव-गँवई का ही नहीं शहराती माहौल में भी ऐसे कितने ही घटना चक्र हैं जो निरन्तर चक्रित हो रहे हैं।

किताब : एक कहानी बीच में है

(पृष्ठ संख्या ६ से १० तक का कुछ अंश की झलक)

रामहरी की माँ चन्दा गौर वर्णा गुदाज जिस्म की खुश मिजाज औरत थी। फुर्सत के समय में पास-पड़ोस की कन्यायें और सयानी लड़कियाँ गपशप करने के लिए चन्दा के पास आ जाया करती थीं। अपने हँसी मजाक से वह सबका भरपूर मनोरंजन किया करती थी। एक सनातन ब्राह्मण परिवार की बहू होने के नाते वह घर से बाहर नहीं निकलती थी। पर्दा का पूरा खयाल रखती थी। घर में किसी चीज की कमी भी नहीं थी। पाँच बच्चे पैदा हुए थे जिनमें से दो पैदा होते ही भगवान को प्यारे हो गये थे। एक लड़का और दो लड़कियाँ ही जीवित थे। बहुत ही सुखी दाम्पत्य जीवन चल रहा था। वह जानती थी कि लोग उसके पति को निकम्मा समझते हैं। वह पति को नजरों से दूर रखकर पति वियोग का दर्द अपने दिलो-दिमाग में नहीं पालना चाहती थी। कोई कुछ भी कहे इसकी परवाह भी नहीं करती थी। एक नित्यप्रति पति-संसर्ग की व्यसनी थी। यदि कभी एक दिन के लिए भी पति सुशील किसी रिश्तेदारी में चला जाय तो सारी रात जागने, करवटें बदलने में ही गुजार देती थी।

कहते हैं कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ साधारणतया काम-वासना घटने लगती है। परन्तु चन्दा के साथ ऐसा नहीं था। उसके अन्दर दिनों-दिन काम पिपासा बढ़ती ही जा रही थी। उम्र के खयाल से वह ढलती जवानी में थी। देखने वाले भी उसे अधेड़ उम्र की ही औरत समझते थे। पर वह अपने को किसी कमसिन से कम नहीं समझती थी। ऐसी मनः स्थिति की रंगीन बेला में चन्दा का अचानक विधवा हो जाना उसे पोर-पोर तोड़ दिया। नित्यप्रति पुरुष की आगोश में रहने वाली नारी को अकेलापन खलने लगता है। रात-रात भर का जागरण, धीरे-धीरे उसके मन विकार पैदा

www.bhojpurisahityangan.com

करने लगा। पहले तो अपने अन्दर हो रहे अन्तर्द्वन्द से उसने संघर्ष किया पर कामुक मन ही उसके विचार पर हावी होता गया। अब उसके मन में पर पुरुष-संसर्ग की कामना बलवती होने लगी। उसके लिए जरूरी था कि या तो कोई पर पुरुष घर में आये या वह घर से बाहर किसी पुरुष के पास जाये। लड़के, बहू, सास, एक लड़की के रहते और लोक-लाज के चलते पर-पुरुष का घर में आना सम्भव नहीं था। उसने अपना कदम घर की देहरी से बाहर निकालना ही उचित समझा।

कस्बे से लगभग दो कि०मी० की दूरी पर सरयू नदी बहती है। सरयू नदी के तट पर एक शिवमन्दिर है। आस-पास के गाँव और कस्बे के बहुत से श्रद्धालु व्यक्ति, नियमित भोरे सरयू स्नान कर शिव मन्दिर जल चढ़ाने जाया करते थे। इनमें अधेड़ और बुजुर्ग लोगों की संख्या जियाद: हुआ करती थी। चन्दा ने सरयू स्नान और शिव पूजा के बहाने अब रोज मुहल्ले की औरतों के साथ नदी जाना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे कस्बे की कई जाने-आने वाली औरतों से परिचय हो गया। अत: अब किसी विशेष व्यक्ति के साथ की आवश्यकता नहीं रह गयी। जब भी घर से निलकती रास्ते में कोई न कोई परिचित महिला का साथ मिल ही जाता था। कस्बे से चार कि०मी०, गोसाँई पडितों का एक छोटा-सा पुरवा था। दस-बारह परिवार ही गाँव में रहते थे। यहीं के कुछ परिवार शिव मंदिर में पुजारी का कार्य करते थे। दो-दो दिन की बारी से उन लोगों का क्रम बदलता रहता था। पुजारियों में एक नवयुवक पुजारी भी था। उसका बाल विवाह काफी पहले हो गया था। उम्र कम होने के कारण पत्नी बिदा होकर साथ में नहीं आयी थी। शादी हुए अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ था कि पत्नी का अकाल देहावसान हो गया। पुजारी अपनी पत्नी का मुँह तक नहीं देख पाया था। दूसरी शादी काफी प्रयत्न के बाद भी नहीं हो पायी।



पुजारी के साथ, मंदिर में उसकी विधवा सौतेली माँ भी बैठा करती थी। महिला भक्तों से दान-दक्षिणा एकत्र करती थी। चन्दा अन्य भक्तों की अपेक्षा कुछ देर से पूजा करने मंदिर जाती थी। इस समय मंदिर लगभग खाली रहता था। पुजारी की विधवा माँ से थोड़ी ही बीतचीत के बाद दोनों एक दूसरे की हमदर्द और दोस्त बन गयीं। अब चन्दा अक्सर पुजारिन के साथ बैठकर घण्टों अकेले में गप्पे किया करती थी। जिस दिन पुजारिन की बारी मंदिर पर नहीं होती थी वह अक्सर चन्दा के साथ इसके घर आ जाती और दिन-दिन भर साथ रहती। दोस्ती गाढ़ी होती गयी। दोनों खा-पीकर दोपहर और रात में एक खाट पर अकेले में पड़ी रहती थीं। दोनों के महिला होने के कारण कोई अन्यथा नहीं ले सकता था कि पुजारिन यानी पुजारी की माँ तथा चन्दा के बीच बहुत थोड़े समय में इतनी गाढ़ी दोस्ती आखिर क्यों और कैसे हो गयी ?

www.bhojpurisahityangan.com

.....पुजारिन से दोस्ती की आड़ में चन्दा ने एक दिन पुजारी को अपने व्यसन के रंग में रंग ली। फिर क्या था एक पर एक पुरुषों का साथ करती गयी। अन्त कब हुआ जब वह एक असाध्य गुप्त रोग के चपेट में आकर कष्ट झेलती दुनिया छोड़ चली। सच ही कहा गया है-

'बुरे काम का बुरा नतीजा।'

किताब : 'जिन्दगानी ! ये कैसी तेरी जिन्दगी ?'

(पृ० ८ से १३ की कुछ झलक)

उधर मनोहर भी काम के बीच एकाध बार सिर उठाकर सामने के कमरे बैठी महिलाओं की ओर देखा पहली ही झलक में वह प्रेमा को पहचान गया पर उसे विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि प्रेमा होगी। उसे ऐसा कुछ लगा कि यह उसकी नजरों को धोखा हुआ है। फिर उसने छुप-छुप के कई बार देखा। अपने आप पर हुए अविश्वास को विश्वास में बदला। प्रेमा की उपस्थिति ने उसके मन में हलचल पैदा कर दी। मन में आखिर हल चल क्यों न हो? यहीं तो सपनों की रानी थी। इसी ने तो इसके दिल के आइने पर अपना एकाधिकार ऐसा जमा लिया था, कि किसी और का आज तक उस पर बिम्ब तक नहीं बन सका अपनी ब्याहता रमा में भी उसने प्रेमा को ही ढूँढा था। रमा को कभी खुले मन से अपने सीने से एक बार भी नहीं लगाया होगा। यदि एकाधबार लोगों के कहने पर लगाने की कोशिश की भी होगी तो प्रेमा के ही रूप में। रमा पति उपेक्षा भाव को शीघ्र ही भाँप गयी होगी और इसीलिए तो मायके में चले जाने के बाद आने का नाम नहीं लेती थी। हाँ, भगवान ने समय व्यतीत करने के लिए उसकी गोद भर दी थी। मनोहर के मन में एक बार आया कि क्यों दौड़कर प्रेमा के पास जाये और गले से लगा ले। कितने दिनों बाद उसके मन की मलका जिसे उसे अर्द्धविकसित कली के रूप में ही देखकर दिल दे बैठा था सामने थी। आखिर कभी प्रेमा को अपने दिल की बात बयाती भी तो नहीं थी। बेचारी प्रेमा को क्या पता कि वह उस पर निछावर है। वह बैठी भी इतने लोगों के बीच थी कि वह औपचारिकता वश कुछ बात करने की हिम्मत ही नहीं जुटा पा रहा था। उधर प्रेमा के मन में भी मनोहर से मिलकर परिचय बढ़ाने की बात बार-बार आ रही थी। विद्यार्थी-जीवन में नहीं भी बोली तो क्या हुआ ? उस समय की बात कुछ और ही थी। तब वह लड़कों के बीच पढ़ रही थी, जिसकी जिम्मेदारियाँ कुछ और थीं। पर अब तो शादी-शुदा जिम्मेदार महिला है और फिर नौकरी भी करती है जब वह अनेक लोगों से परिचय कर के बात कर सकती है तो फिर

www.bhojpurisahityangan.com

मनोहर जैसे युवक से क्यों नहीं ? इन्हीं खयालों में डूबती-उतराती हुई उठी और मनोहर के पास आकर खड़ी हो गयी। नमस्कार कर के मनोहर का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। मनोहर चौंक पड़ा। हाथ जोड़ कर नमस्ते बोलते हुए हाथ से इशारा कर के बगल की कुर्सी पर बैठते ही बोली, मनोहर बाबू आप ने पहचाना ? मनोहर के भी मन आया कि वह सब कुछ कहकर अपने मन का बोझ हल्का कर ले। पर अपने मन पर काबू करता हुआ बोला- 'क्यों नहीं, क्यों नहीं ? अरे प्रेमा जी ! आप को भी कोई भूल सकता है क्या ? कहिए यहाँ कैसे आना हुआ ?' प्रेमा थोड़े में अपने नौकरी की बात बताकर बोली, आजकल स्थानान्तरण का माहौल है। मैंने सोचा चलकर कुछ पता लगा लूँ। अपना कोई परिचित था नहीं तो प्रधानाध्यापिका जी के साथ चली आयी। पर यहाँ आयी तो आप मिल गये। फिर तो मेरी खुशी का ठिकाना ना रहा। कहिए आज कल स्थानान्तरण सम्बन्धी मामला कौन देख रहा है ? मनोहर मुस्कराता हुआ स्वत: तैयार की हुई स्थानान्तरण की एक सूची निकाली और सामने रखते हुए बोला-'अब आप तो समझ ही गयी होंगी।'



प्रेमा अपना नाम दूसरे क्रमांक पर देखकर भौंचक रह गयी। वह तपाक से बोली-'अरे इसमें तो मेरा भी नाम है ?' मनोहर बोला-'अच्छा हुआ, आप आ गयी, बर्ना इस सूची को तो बड़े बाबू जी सरसरी तौर से देख चुके थे और अब साहब के पास जाने वाली थी।' प्रेमा ने सब कुछ भूल कर मनोहर से नाम काटने हेतु बिनती करने लगी। मनोहर मन ही मन सोचा-'देखो, वक्त की क्या नजाकत है ? जिसकी एक नजर के लिए मैं तड़पता था, वह आज आ कर मेरी खुशामद कर रही है।' मनोहर बोला-'अरे, आपको मुझसे केवल एक बार बता देना ही काफी है। आप इतना परेशान क्यों हो रही हैं ? आप इसके लिए चिन्तित न होयें। आपकी खुशी मेरी खुशी है। मेरे रहते आप को कभी परेशान नहीं होना पड़ेगा।' फिर क्या था प्रेमा उठकर घर की तरफ प्रसन्न मुद्रा में चल पड़ी। चलते-चलते मनोहर का काफी आभार व्यक्त किया।

रास्ते के सफर में प्रेमा के मन में पूरी घटना और मनोहारी व्यक्तित्व छाया रहा। विद्यार्थी जीवन एक बार फिर उसके मानस पटल पर खिंच गया। उसने बार-बार सोचा कि वक्त पर कौन काम आ रहा है। जिसने कभी एक बार कुछ कहा तक नहीं, आज वह कितने काम का है और जिसके साथ हमेशा रहती थी वह एक बार घूमकर भी नहीं देखता। दो-तीन दिन के अन्तराल पर वह सूची प्रकाशित होने तक कार्यालय आती रही। मनोहर से मिलती रही। सूची प्रकाशित होने पर नाम नहीं आया तो उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा। उसे मनोहर बाबू की शक्ति और सामर्थ्य पर भरोसा हो आया। उसने आखिरी दिन मनोहर बाबू से खुलकर कह दिया कि 'बार-बार हमें

www.bhojpurisahityangan.com

यहाँ देख कर लोग टीका-टिप्पणी करने लगेंगें। क्यों न आप मेरे साथ घर चल कर देख लें ? कभी-कभार आप हमारे घर आ जाया करें। आखिर हम लोग विद्यार्थी जीवन के साथी हैं। इसमें हर्ज ही क्या है ? मनोहर को इसमें एतराज ही क्या हो सकता था ? कार्यालय-समय समाप्त हो रहा था। वह प्रेमा के साथ हो लिया और घर पर जा पहुँचा। प्रेमा ने खुले दिल से अतिथि-सत्कार किया फिर जल्दी ही आने का वायदा करा के विदा किया।

मनोहर रास्ते भर ईश्वर को धन्यवाद देता घर गया। आज का अतिथि सत्कार उसके मानस-पटल को आन्दोलित कर रहा था। वादे के मुताबिक प्रेमा से पुनर्मिलन का इन्तजार करता रहा। इधर प्रेमा भी अपने स्वार्थ के चलते मनोहर के साथ दोस्ती करके भरपूर खुश थी। घर आने पर नौकरी की बात के अलावा घर-गृहस्थी आदि की अधिक विस्तृत बातें हुईं। बातचीत के समय मनोहर ने भी अच्छा अवसर पाकर अपने मन की मलका से खुलकर बातें की। मनोहर की खुशी का पारावार न था। फिर क्या था प्रेमा कि दिलचस्पी मनोहर में और मनोहर की प्रेमा में बढ़ती गयी। प्रेमा भी पति-वियोग से परेशान रहती थी। अब उसे समय काटने के लिए अच्छा साथी मिल गया। वह अवसर चूकना नहीं चाहती थी। उसे विश्वास हो गया कि जब तक मनोहर यहाँ पर नौकरी में है, वही होगा जो वह चाहेगी। फलत: मनोहर को हर तरह से खुश रखने का निर्णय लेकर उसकी तरफ झुकती चली गयी। मनोहर भी उसकी इशारों पर नाचने लगा। एक दिन प्रेमा का अकेले में पकड़ कर उसने दोनों के बीच रही सही दूरी भी खत्म कर देने का प्रस्ताव रखा। प्रेमा कब विरोध करने वाली थी ? आखिर उसे भी तो पुरुष संसर्ग के लिए तड़पना पड़ रहा था। फिर ऐसे पुरुष के सामने समर्पण करने जा रही थी जिसको हर तरह से अपननाने का निर्णय ले चुकी थी। फलत: एक दोनों की मुराद पूरी हो गयी। अब यह सिलसिला प्राय: हर मुलाकात में चलने लगा। एक दूसरे को देखते ही शरीर सनसनाने लगता था।

मनोहर अपने घर परिवार से बिल्कुल विमुख होने लगा था। पहले दो-तीन माह के अन्तराल में गाँव एकाधबार चला जाया भी करता था। पर अब वह भी नहीं जाता। इधर प्रेमा को भी शक होने लगा कि शायद कुछ लोगों की नजरें हमारी तरफ उठने लगी हैं। अत: उसने मनोहर को मशविरा दिया कि अपना परिवार एक बार गाँव से ले आकर घुमा-फिरा कर कुछ दिन बाद लौटा दे। ताकि लोगों को शक में बदलाव आ जाये। वह परिवार ले आया और अपने साथ रख लिया। प्रेमा ने इस बीच महसूस किया कि मनोहर इसके लिए कम समय दे पा रहा है। अत: उसने मनोहर को उकसा कर परिवार गाँव वापस भेजवा दिया। मनोहर फिर दीवाना बनकर प्रेमा के पीछे इशारों पर नाचने लगा।

प्रेमा मनोहर को खुश रखने के लिए अपने विद्यालय की दायी और कुछ लड़कियों को एक-एक कर खुशामद के लिए सौंपने लगी। इस कुकृत्य का पर्दाफाश एक दिन होना ही था। लोगों

www.bhojpurisahityangan.com

की जानकारी में आते ही हंगामा हो उठा। शिकायत विभाग के उच्चाधिकारियों तक हुई। प्रेमा का तत्काल स्थानान्तरण अन्यत्र कर जाँच हेतु अधिकारी की नियुक्ति हुई। विभाग की बदनामी हेतु मामला जैसे तैसे फाइलों में दफन कर दी गयी।

देश, समाज और परिवार के निर्माण में आचरण और व्यक्तित्व का एक महत्तम हिस्सा है। इनके बगैर समाज का कोई-चेहरा नहीं है। निरन्तर पतनोन्मुख होते जा रहे समाज का प्रेमा एक उदाहरण है। प्रेमा सरीखी अध्यापिकाएँ, समाज सेविकाएँ अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए अपने हित के लिए अपरिपक्व मासूमों को भी नहीं बख्शती हैं और उन्हें अपनी दरिन्दगी और कुत्सित मानसिकता से दूसरों तक पहुँचाने में भी संकोच नहीं करती हैं। ऐसी सामाजिक हरकतों का पर्दाफाश करना साहित्यकार का महादायित्व है। पर्दा डालने से, मोलम्मा चढ़ाने से विकृतियाँ ही विकृतियाँ साकारित होंगी।

इं. राजेश्वर सिंह क अबले प्रकाशित बीस किताबिन से तनी-तनी अंश ऊपर बानगी के तौर पर दिहल गइल बा। पढ़वइया लोगन के पुरहर सन्तोष तब्बे मिली जब किताबिन के ध्यान से पढ़िहें। हमके बिस्वास बा कि पढ़ले के बाद सराहे बिना ना रहि पइहें।

एगो अउर किताब पाण्डुलिपि में तैयार बा जवन अबहिन छपाई प्रक्रिया में बा। थोड़ी-थोड़ी चर्चा कइल जा रहल बा-

भोजपुरी रहनी-करनी युगाचार्य स्वामी प्रणवानन्द

(किताब) में कइल चर्चा क झलक

आजादी के पहिले के भारत वर्ष क पूर्वी बंगाल जवन आजु बंगलादेश ह, वोकरे फरीदपुर, जिला क महकुम के तहत बाजितपुर नाम के गाँव में स्वामी प्रणवानन्द जी क जन्म २९ जनवरी सन् १८९६ ई० के भइल रहल। वोह दिन माघी पूर्णिमा क बुधवार रहल। उनके माता क नाम शारदा देवी अउर पिता क नाम विष्णु चरण भुंइया रहल जे बहुते तेज तर्रार अउर रोबदार किसिम क मनई रहलन। स्वामी जी क नाम अन्नप्रासन के समय 'विनोद' रखाइल रहल।

सन् १९१३ में विनोद दसवीं कक्षा क छात्र रहलन। इनकर शरीर भारी अउर हृष्ट-पुष्ट रहे बाकिर स्वभाव एकदम शान्त अउर लइकन से मेल-जोल ना करत रहलन। इनके विद्यालय के प्रधानाचार्य क ध्यान इनके विशेष आचरण अउर रहन-सहन से इनके ओर गइल। ऊ इनसे अकेले में बात-चीत कइलन अउर रुझान जान के कार्यक्रम बना के गोरखपुर के योगीराज गम्भीरनाथ महाराज के पास अपने संग लियवा जाइ के दीक्षा दियवलन। साधना करत-करत विनोद एक दिन सिद्धि पा गइलन। आगे चल के संन्यास भी ले लिहलन। फिर समाज सेवा क ब्रत लेके समाज

www.bhojpurisahityangan.com

में दीन-दुखियन क सेवा करे लगलन साथे-साथ हिन्दू समाज के कुरीतियन क सुधार भी करावे लगलन।

सन् १९१७ ई० में 'भारत सेवाश्रम संघ' क स्थापना कइ के अपने संगी-साथिन व अनुयायीयन के साथ सेवा कार्य बढ़ावे लगलन। भारत सेवाश्रम संघ क देश में घूमि-घूमि के शाखा प शाखा खोललन। एह समय भारत वर्ष में एह संग क ४६ शाखा हयीं और विदेश में बंगलादेश सहित १५ शाखा हयीं-(बंगलादेश, शिकागो, नेपाल, लंदन, त्रिनिदाद, टोरन्टो, फीजी आदि)।

इनकर देहान्त सन् १९४१ ई० में हो गइल रहे। इनके द्वारा कइल सुधार कार्य :

(१) हिन्दू तीर्थ स्थानन पर जाये वाले श्रद्धालुअन से स्थानीय पण्डों द्वारा मनमाना धन बसूलल। न दिहले पर बदसलूकी कइल ।एह हरकत क विरोध कइल।

(२) गरीब व दुखी हिन्दुअन के लालच देके भा दबाव डारि के गैर हिन्दुअन द्वारा धर्म परिवर्तन करइले क विरोध कइल।

(३) हिन्दुअन में सनातन धर्म के प्रति रुझान कम न हो

❖

www.bhojpurisahityangan.com

११

अभिमत : खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

१५३

शब्दयोगियों की दृष्टि में इं. राजेश्वर सिंह

-पूजा सिंह

प्रो० रामदेव शुक्ल :

(क) इंजीनियर के वैज्ञानिक दृष्टि अउर भागवत कथा के प्रति.....गद्य के क्षेत्र में राजेश्वर सिंह के योगदान सराहल जाई।

(भोजपुरी भागवत कथा-सार)

(ख) श्रद्धालु भक्त लोगन के श्रद्धा अपने इष्टदेव.....राजेश्वर सिंह कऽ योगदान इतिहास में आपन जगह बनायी। **(श्रद्धालु क संतार्चन)**

(ग) संत क लक्षण चालिस बिन्दु में गिनावल गइल बा। एह चालिस में स्मृति, पुराण, गीता, महाभारत, रामायण आ योग-दर्शन में गिनावल सब लक्षण आ गइल बा। 'ई सगरो गुण सिद्ध सन्त में मौजूद होला, सब अउर साधक लोग पवले खातिर कोशिश कइल करेला।' एतना भूमिका के बाद राजेश्वर सिंह जी इक्यावन राम भक्तन क संक्षेप में परिचय करववले बाने। भक्ति साहित्य के इतिहास लिखे वाले विद्वान् राम भक्तन के दर्जनों भेद.....मोटका अक्षर में लिखे के परी। **(साधना से मिलल सन्त सुभाव)**

(घ) इंजीनियरी के काम से रिटायर भइले के बाद इनके भोजपुरी गद्य में दर्जन भर किताब छपल बा। भोजपुरी पंचतंत्र पढ़ि के पाठक लोग इनके 'भोजपुरी बीर' कहे लागें त अचरज ना होई। **(भोजपुरी पंचतंत्र)**

(ङ) इंजीनियर राजेश्वर सिंह क्रियायोग के खोजे वाला योगी आ उनके किताब के भोजपुरी पढ़वइया लोग खातिर सहजे सुलभ करा दिहले बाड़ें। उनकर ई परिश्रम भोजपुरी बोले वालन खातिर एगो राहि देखावे वाला काम बा। एह उपलब्धि से राजेश्वरजी भोजपुरी मनई लोगन में विशेष प्रतिष्ठा के हकदार होखबि ई बिसवास बा। **(भोजपुरी में योगी कथामृत)**

www.bhojpurisahityangan.com

(च) कविता, कहानी, संस्मरण, साधुओं और संतों के चरित जैसी अनेक बिधाओं में सक्रिय इं. राजेश्वर सिंह भोजपुरी के पोषक माने जा सकते हैं। इन्होंने भोजपुरी को सम्पन्न बनाने के लिए जितना धन व्यय किया है, उतना मेरी जानकारी में किसी भोजपुरी भाषी ने नहीं किया। भक्ति के अनेक प्रकारों में वित्तजा सेवा को भी पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। राजेश्वर सिंह को इस रूप में अवश्य अभिनन्दित किया जाना चाहिए। **(भोजपुरी के वित्तजा भक्त)**

प्रो० वशिष्ठ अनूप

'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल' आजु के समाज के हिसाब से ए संकलन क सबसे प्रासंगिक कहानी हऽ। विधवा बहू क अपने छोटे बेटा के साथे फिर से बियाह करावे वाले छोटक सिंह जइसे लोगन क आजु के समाज में बहुत आवश्यकता बा। .....ए दृष्टि से गाँव के संस्कृति के ई कहानी खूबसूरत ढंग से प्रस्तुत करे ले।

राजेश्वर जी क ई किताबि अपने माटी के मिठास आ सुगन्ध से जोड़ले क बेहतरीन अउरी प्रशंसनीय परिणति हवे। एम्मे कहानी .....हृदय से स्वागत होई। **(अपने माटी से जुड़ाव कऽ रोचत गाथा हऽ संकलन)**

डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय

इधर मानव जीवन की मनोवृत्ति को आधार मानकर.....भाषा भाव एवं शिल्प की दृष्टि से सफल कहा जा सकता है। (ये कहानियाँ, साहित्यिक कहानियों के परिष्कार के पूर्व की कहानियाँ हैं।)

डॉ० विवेकी राय

लिखला पढ़ला से काफी दूर रहे वाला.....। ईश्वर उनकरा के स्वस्थ आ सक्रिय रखें इहे हमार कामना बा। **('कल्यान कऽ जुगुति'-मूल्यांकन आवे वाला समय करबे करी)**

गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश'

'कल्यान कऽ जुगुति' निबन्ध संकलन.....। राजेश्वर जी एकर शुरूआत कइके रास्ता दिखा देहले बाड़न। **(कुछ हमरियो ओर से)**

डॉ० मधुर नज्मी

इंजीनियर राजेश्वर सत्यप्रिय, न्यायप्रिय, फकीर मिजाज़, कुशल प्रशासनिक अधिकारी

www.bhojpurisahityangan.com

हैं, सादगी इनके शालीन व्यक्ति का गहना है,.....इनके तार रूहानी रूमानियत से गहरे जुड़े हुए हैं। **(कचरस की मिठास वाली कथा-कृति 'जिनगी कऽ दूबि हरियाइल')**

प्रो० प्रभुनाथ सिंह 'मयंक'

साच-साच पूछा त असली लोकतन्तर आ परजातन्तर गउवैं में देखाला। धोवी आ ओकरे गदहा कऽ चरचा कइले के बहन्ना रजेश्वर बाबू ई बात समाज के सम्हने ले आइल हउवन कि जेके बड़मनई लोग छोट समझै लैं उहो आदमी, भले धोबी होखो, बाकिर आपन काम कइके रमचरचा करेला, आ समाज में अपने गुन के नाते बड़इयो पावेला।.....कहनी क चेहरा माथा कइसन ह, ओम्मे जिनगी क रस कउने .....राजेश्वर बाबू जरूर पहिलियै कतार में पहिलवै आपन जगह पाइ जइहैं। **(जिनिगिये कहनी ह)**

डॉ० रघुनाथ चन्द

भोजपुरी में 'श्रीमद्भागवत् कथा-सार' क लेखन एह रूप में.....जवने खातिर लेखक के साधुवाद : **(निम्मन प्रयास)**

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

(क) निबन्धकार एह पुस्तक 'पढ़ीं, समझीं, मनन करीं' के रुचिगर बनावे खातिर अनेक निबन्धन में छोट-छोट.....सही राह देखावे खातिर उतजोग कर रहल, बाड़े तवना क सराहना होखे के चाही। **(जिनगी के सही राह देखावे के एगो नीक प्रयास)**

(ख) अइसन राम पियारा साधु-सन्त के जीवन गाथा अनेक.....शुभं करोतु सततं राघवेन्द्रानुकम्पया ।

(रामपियारा साधु-सन्त : एक नजर में)

(ग) आज का भौतिक युग में भक्तिपरक ग्रंथन.....**श्री राजेश्वर सिंह के साहित्यिक अवदान। जन मन के निर्मल करीं पाई यश सम्मान ।।**

(श्याम पियारा साधु-सन्त : एगो अनमोल आहार)

(घ) भोजपुरी का बढ़ंती में तन-मन-धन से जुड़ल इं. राजेश्वर सिंह .....। पूरा भरोसा बा कि आगहूँ उनकर लिखल एक पर एक पुस्तक प्रकाश में आई। **(पुरोवाक् : कृति भोजपुरी पंचतंत्र)**

www.bhojpurisahityangan.com

(ङ) एगो मौन साधक का बहुमूल्य उपलब्धियन के नमन करत उनका के शतायु होखले के मंगल कामना का साथे हृदय से अभिनन्दन करत बानी। **(एगो मौन साधक के बहुमूल्य उपलब्धि)**

प्रो० रामदरश राय

(क) हमरे खयाल से इं. राजेश्वर सिंह क सगरो भोजपुरी लेखन तुलसी नाई स्वान्त: सुखाय बा। तर्क ई कि ऊ विज्ञान कऽ पढ़वइया विद्यार्थी रहल हउवें। अधीक्षण अभियन्ता के रूप में तकनीकी सेवा कइले हउवें। साहित्य के घुमावदार सीढ़ी में चढ़ले-उतरले क उनकर कवन गरज ! उहो, भोजपुरी के पगडण्डी पे ढहले-ढिमिलइले कऽ कवन उछाह ? लेकिन, ईहे शब्दयात्रा उनके सुकून देत बा। येही के कहल जाला 'स्वान्त: सुखाय सृजन'।

('भोजपुरी महाभारत' एक अनुदूति कथा ग्रन्थ)

(ख) मैक्समूलर, ग्रियर्सन आ सुनीति कुमार चटर्जी.....हमरे जइसन भाषा लोभी के आनन्द मिली।

(भोजपुरी 'भोजपुरी दीक्षा गुरु' : भोजपुरी जीवनी-साहित्य का ज्ञानग्रन्थ)

प्रो० सदानन्द शाही

(क) इं. राजेश्वर सिंह भोजपुरी में गद्य लिखले क बीड़ा.....। हमके ई देखि के बहुत नीक लागल की ऊंहा के सगुण-निर्गुण के बराव में नइखी पड़ल। **(राम पियरा साधु-सन्त)**

(ख) महाभारत के इंजीनियर सिंह भोजपुरी में लिखि के आम भोजपुरिया खातिर सरल, सहज.....भोजपुरी के मिठास के भी अनुभव करी। **(यन्न भारते तन्न भारते)**

(ग) कभी स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि संस्कृत के लोहे के संदूक में बन्द ज्ञान को उसके बाहर निकालने की जरूरत है जैसे हमारा किसान बिना लाभ-हानि केभाव से ऊपर उठ के हर साल खेती करता है और लोगों का पेट भरता है। इं. राजेश्वर सिंह जी भी हर साल ऐसे ही संस्कृत के किसी आकर ग्रन्थ को सरल भोजपुरी में प्रस्तुत कर भोजपुरिया मन की भूख को दूर करने का उपाय करते हैं।

(राजेश्वर सिंह : भोजपुरी गद्य के खेती करने वाले किसान लेखक)

www.bhojpurisahityangan.com

प्रो० चितरंजन मिश्र

(क) कुल मिला के इंजीनियर राजेश्वर सिंह .....एह प्रयास क सराहना क रहल बानी।

('दीक्षा गुरु' क महातिम)

(ख) भोजपुरी में महाभारत की पूरी कथा और पंचतन्त्र की कथाओं को सामने लाना उनके महत्वपूर्ण प्रयास हैं। परमहंस योगानन्द जी .....महान् ग्रन्थों से भोजपुरी के माध्यम से प्रभावित कर सकें। **(भोजपुरी के अनन्य साधक : इंजीनियर राजेश्वर)**

डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी

(क) ये सबका बावजूद इं. राजेश्वर सिंह के 'श्याम पियारा साधु-संत' फूलन से गुँथाइल.....हमार उनके खातिर ढेर सारा आसीस बा। **(भोजपुरी गद्य में इं. राजेश्वर सिंह के बढ़त डेग-'श्याम पियारा साधु-सन्त')**

(ख) भोजपुरी पंचतन्त्र में टेकाइल नीति से भरल किस्सागोई विषय के विविधता से भरल रहला के नाते पढ़े लायक बन गइल हवे। ई भोजपुरी पंचतन्त्र आनन्द आ उछाह से भरल तालाब बा.....। उनके हमार ढेर सारा बधाई। **(कहानिन से सीख भरल 'भोजपुरी पंचतन्त्र')**

(ग) मैं इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी को साधुवाद देता हूँ कि .....और ईश्वर से विनती भी। **('भोजपुरी रामायण' : एक सिंहावलोकन)**

(घ) इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी विरज सुभाव वाले व्यक्ति हैं। इसलिए उनमें .....सहृदय स्वभाव का साक्षी रहा हूँ। **(कर्मयोगी भोजपुरी साधक : इं. राजेश्वर सिंह)**

वृजभूषण राय 'वृज'

मुझे यह जानकर अच्छा लगा कि इं. राजेश्वर सिंह ने अपने माटी की बोली भोजपुरी में पंचतन्त्र जैसी संस्कृत की पुस्तक से परिचित कराया, वह भी अत्यन्त सरल, सुबोध, व्यावहारिक शैली में.....। मैं कृतज्ञ हूँ इं. राजेश्वर सिंह जी के प्रति, उनका यह योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

हिन्दी का शिक्षक होने के कारण मैं पंचतन्त्र की कहानियों से पूर्व परिचित हूँ, संस्कृत की पाठ्य पुस्तकों.....वह सरल, सहज, निश्छल एवं ईमानदार हैं। **(भोजपुरी भाषा के प्रति अनुराग)**

www.bhojpurisahityangan.com

इं. एम. आई. अन्सारी

इं. राजेश्वर सिंह साहब लगभग दो बरिस संत कबीरनगर में सेवारत रहे। इस काल में वहाँ के कार्यालय का माहौल.....ईश्वर उनको स्वस्थ और सानन्द रखे यही हमारी प्रार्थना है। **(साथ गुजरे कुछ दिनों के दास्तान)**

प्रमोद कुमार सिंह, एडवोकेट

मामा एवं मामी जी की सक्रियता एवं रिश्तों के प्रति आत्मीयता.....इसी तरह मामाजी का संरक्षण और आशीर्वाद हम लोगों पर बना रहे। **(ननिहाल की कुछ यादें)**

चन्द्रगुप्त वर्मा 'अकिंचन'

कतिकार या लेखक को एक सफल लेखक के रूप में .....ऋषि मुनि सा बन ऊर्जा के नवपुँज। **(इं. राजेश्वर सिंह, व्यक्तित्व व कृतित्व-एक विमर्श)**

प्रो० अलक राय

उपरोक्त के अलावा ये कई पत्रिकाओं में अपने .....जिनका जन्म ही 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की तरह है। **(कार्यकुशल व मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी)**

रत्नाकर सिंह, एडवोकेट

राजेश्वर भैया एक इंनीनियर होने के .....निरन्तरता इसी प्रकार बनाये रखें। **(राजेश्वर भैया : छोटे भाई की निगाहों में)**

इं. जे०पी०एन० राय

सुबह-सुबह लगभग छह बजे राजेश्वर सिंह साहब .....जो एक सदैव स्मरणीय होती है। **(एक कर्मठ एवं साहसी अधिकारी के साथ की अनुभूति)**

डा० बहार 'गोरखपुरी'

सबसे महत्वपूर्ण चीज जवन.....छूटल अधूरा काम जरूर पूरा करावें। **(मन, वचन, कर्म से समर्पित साहित्य कार ई. राजेश्वर सिंह)**

नन्द कुमार त्रिपाठी

सबसे बड़ी विशेषता काल खण्ड .....अपने अनुभव से सराबोर करीं। **(भोजपुरी के राजर्षि राजेश्वर सिंह)**

www.bhojpurisahityangan.com

डा० सुबास शाही

एक अधिकारी के रूप में अपने अधीनस्त.....यह कहा करते कि मैं जल निगम में कार्य करता हूँ। .....परिवार में पुत्र, भाई, पति, पिता, चाचा, बाबा आदि रिश्तों के दायित्व का आपने.....आपकी भागीदारी बढ़-चढ़ कर रहती है।.....आजकल भोजपुरी की बोलचाल की भाषा में हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का समावेश है। परन्तु इं. राजेश्वर सिंह.....इनके स्वस्थ जीवन के प्रति आकांक्षी हैं। **(जैसी मेरी समझ)**

तृप्ति सिंह 'सन्नो'

मैंने आपको जितना जाना है उसके आधार पर यह कह सकती हूँ कि आप जैसी सोच और.....अशेष शुभकामनायें। **(साहित्य साधक अभियन्ता)**

नर्वदेश्वर सिंह

इंजीनियर साहब क साहित्य सृजन क साधना .....स्थाई छाप छोड़त स्मृतिबद्ध हो उठेला। **(सरल भी सहज भी इं. राजेश्वर सिंह जी)**

कनक किशोर

जइसे बूंद जब समुद्र में लय हो जाता.....साहित्य के समृद्ध करत बढ़ रहल बानी। .....। ई भाव रउवा सिंह साहब के लेखनी .....अमृत महोत्सव के खूब-खूब बधाई आ मंगल कामना। **(अमृत के फरत फुलात जिनगी के पोषक)**

योगेन्द्र नाथ शुक्ल

राजेश्वर बाबू बहु आयामी.....चरित्रवान बन सकते हैं .....। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आदरणीय .....बहुग्ता को स्पष्ट किया है। **(तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते)**

सुरेन्द्र सिंह

साहित्य की समस्त विधाओ में .....सनातनी संस्कृति का बोध कराते रहते हैं। **(सरल, सहज एवं धर्मपरायण व्यक्तित्व के धनी)**

भीम प्रसाद प्रजापति

एक लेखक/कवि अपने जीवन में इस संसार में रहकर.....बन्दूक की जगह

www.bhojpurisahityangan.com

कलम लेकर मिलते। .....अत: हम कह सकते हैं कि इन्जीनियर राजेश्वर सिंह .....जगत् में और योगदान मिलता है। **(विचारों के खजाना-इं. राजेश्वर सिंह)**

सुभाष चन्द्र यादव

जिनगी के पूर्वाद्ध में मन में जवन उछाह, उमंग, जोश रहल ऊ कुछ पुस्तकन का जरिये सामने आइल। बाकिर जिनगी के उत्तरार्द्ध में मन आध्यात्मिकता का ओर अइसन लागल की ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, निर्गुण, सगुण, राम भक्तिधारा, कृष्ण भक्तिधारा में बहि के भक्ति रस का सागर में एक-एक मोती निकाल के जनमानस का सामने ले अइनी ताकि सबका खातिर सुलभ हो सके। ई कठिन साधना क सुगंध जब फइले लागल तब एह मनीषी के सम्मान देवे बदे बहुते समिति, संस्था आगे अइली और सम्मानित कइली। .....आजो इंजीनियर राजेश्वर बाबू पूरा स्वस्थ आ पढ़े-लिखे में सक्रिय बानी। अबही बहुत कुछ शेष बा जवन विशेष बा। आप द्वारा भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में ऐतिहासिक काम हो रहल बा। आवे वाली पीढ़ी एकरा आलोक में बहुत सारा काम सुगमता से कइ पाई।

चन्देश्वर 'परवाना'

चेहरा पर मुस्कान गजब बा देखि जिया हरसाला, भेद-भाव ना तनिक हिया में आपन सभे बुझाला, प्रेम-भाव सम्बन्ध निभावत भरत नेहि के खान हईं। इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी भोजपुरी के सान हईं।। **(भोजपुरी के सान)**

डॉ० ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी

इं. राजेश्वर सिंह बेहद सरल स्वभाव चतुर्गामी व्यक्तित्व के धनी हैं। आप लक्ष्मी और .....अपने विराट् रचना संसार का सृजन किया। .....इं. राजेश्वर सिंह से मैं कम से कम २० वर्ष छोटा हूँ, इसलिए .....योगाचार्य के वश की बात नहीं है। .....। आपके सहज, सरल, गम्भीर व्यक्तित्व .....भारतीय वाङ्मय पोषित होता रहे।

डॉ० गंगेश्वर प्रसाद द्विवेदी

राजेश्वर जी कुशाग्र बुद्धि के प्रतिभावान .....इनकी श्रुति व किर्ती उत्तरोत्तर बढ़ती रहे। **(सरलता-सहजता के प्रतीक राजेश्वर जी)**

www.bhojpurisahityangan.com

नथुनी प्रसाद कुशवाहा उर्फ रामपति रसिया

कल्यान के जुगुति के पढ़ला पर बुझाइल कि इंजीनियर साहेब के भीतर.....हमार इच्छा बा। **(आदमी के चिन्हे कऽ जुगुति)**

महात्मा हरिशरण दास

इन्जीनियर साहब के घरे के सामने.....अउर पुरहर आनन्द क वातावरण छा गइल **(भोजपुरी जगत क महान पुरोधा इन्जीनियर राजेश्वर सिंह से मिलन क एगो छोट कहानी)**

डॉ० फूलचन्द प्रसाद गुप्त

राजेश्वर जी अपने संकलन पे खरा उतरे वाला.....राजेश्वर जी कऽ ग्रन्थन क महातिम समझ में आवत बा। **(भोजपुरी साहित्यकार : इं. राजेश्वर सिंह)**

इंजीनियर दर्शन प्रसाद

क्रियाशील मनुष्य कभी भी सेवानिवृत्त नहीं होता। मात्र उसका .....अधीनस्थ कर्मचारियों के प्रिय रहे।.....। शालीन, सौम्य, सरल, सहज और मधुर व्यवहार..... .....आशीर्वाद मुझे मिलता रहे। **(शालीन, सौम्य व्यक्तित्व)**

डॉ० महामाया प्रसाद 'विनोद'

सॉच कहल जाव त भोजपुरी भाषा आ.....बहुलांश आध्यात्मिक विषय पर बा। .....। गाँव का राग-द्वेष विहीन माटी के ऊपज इं. राजेश्वर सिंह.....उपलब्धियनि क अम्वार लगे। **(भोजपुरी के अनन्य साधक : इं. राजेश्वर सिंह)**

डॉ० रामअवतार चन्द

इंजीनियर राजेश्वर सिंह के कृतित्व के आधार पर यह कहा.....सर्जनारत रहते हुए 'जीवेम् शरद: शतम्' को चरितार्थ करें। **(आधुनिक परिवेश में भोजपुरी रचना के जीवंत संत)**

सुधा शाही

भैया बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति हैं। यहाँ मैं .....सम्मान एवं पुरस्कार की अपेक्षा से अपनी कलम नहीं चलायी। **(मेरे भैया)**

www.bhojpurisahityangan.com

सुरेन्द्र कुमार सिंह 'चांस'

आज का मानव समाज अभूतपूर्व संकट .....विमर्श खड़े करने में मशगूल हैं। .....। मैं तो व्यक्तिगत रूप से इस विश्वास का आदमी हूँ ..... सनातन संस्कृति से जोड़ने के लिए। **(इं. राजेश्वर सिंह एवं सरलता, सहजता, अपनापन और धार्मिकता से जगमग उनका रचना संसार)**

इं. के० के० सिंह

इं. राजेश्वर सिंह प्रारम्भ से ही लेखन क्षेत्र.....ऐसे मित्र को पाकर हम धन्य हैं। **(एक अभिन्न मित्र इं. राजेश्वर सिंह)**

प्रो० जयकान्त सिंह 'जय'

भोजपुरी में लिखित आ आनुदित साहित्य के सूची .....विविध सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक संस्थन के द्वारा इनकर लगातार सम्मान होत जा रहल बा। .....। इंजीनियर राजेश्वर सिंह अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य .....मंगल कामना करत बानीं। **(भाव आ भाषा के सहज साधक इंजीनियर राजेश्वर सिंह)**

बागेश्वरी प्रसाद मिश्र 'बागीश'

चाल चलन, हाव-भाव, चिन्तन.....भोजपुरी रचना आ नाम से लउके लागेला।.....। सब रचना पढ़ते पता चलि जाला की कवनो लालच.....एतना सम्मान मिलल बा कि लिखला में कई पन्ना भरी जाई। **(पहरूआ)**

डा० बृज भूषम मिश्र

प्राय: होला कि अंग्रेजी माध्य से पढ़ाई करके.....बीस किताब लिखल-छपवावल कम बात नइखे। **(भारतीयता के भाव से भरल भोजपुरी साहित्य सेवक : इं. राजेश्वर सिंह)**

अनिल प्रताप चन्द

सरलता, सहजता.....व्यक्तित्व को निराला बना देता है। .....चाचाजी किसी को छोटा नहीं मानते हैं। प्रत्येक .....उतने से ही वे सन्तुष्ट रहते हैं। **(अतुलनीय, अद्‌भुत प्रेरक हमारे चाचा जी)**

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ० रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी भाई'

हमके लागेला कि राजेश्वर जी .....उनसे भोजपुरी भासा आ समाज के ढ़ेर उम्मीद बा। **(बहुरंगी इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी)**

अरविन्द 'अकेला गोरखपुरी'

भोजपुरी संगम के संरक्षक के रूप में पा के.....दूसरे खातिर अनुकरणीय बानीं। **(इन्जीनियर राजेश्वर सिंह जी)**

डॉ० सुधीर श्रीवास्तव 'नीरज'

जइसन कि उजागिर बा कि राजेश्वर सिंह जी इंजीनियर रहल बानी ऊहो मंडल स्तर के दायित्व संभलले..... .....भोजपुरी के समर्थ सिपाही बानी। **(साहित्य अभियन्त्रण के विलक्षण शब्द पुरुष)**

डॉ० अंगद कुमार सिंह

जन्मना गोरखपुर के और कर्मणा अमेरिका के विद्वान् .....स्वतन्त्र अध्याय बनाने के लिए पर्याप्त है। **(भोजपुरी योगी कथामृत : एक अनुवादित दार्शनिक प्रत्याख्यान)**

प्रो० सविता कुमारी श्रीवास्तव

साहित्य सेवा सबसे बड़ी सेवा है.....। भोजपुरी भाषा में सशक्त रचना आपने.....साहित्य लिखा व पढ़ा जाता है। .....भोजपुरी भाषा के लेखन में राजेश्वर जी .....लेखन भोजपुरी को समर्पित है। .....। राजेश्वर जी भोजपुरी भाषा के प्रति.....सम्मान व बधाई के हकद्वार हैं। **(भोजपुरी के सर्जक इं. राजेश्वर सिंह)**

रविन्द्र मोहन त्रिपाठी

मैंने अपने जीवन में बाबू साहेब ऐसा .....मात्र भोजपुरी के उत्थान के लिए। **(सद्मानव)**

डॉ० रामजन्म सिंह

अन्त में मैं यह लिखते अति संतोष एवं प्रसन्नता.....वर्ष २०२३ में निकाल कर आपने इतिहास रच दिया। **(अभियान्त्रिकी संग भोजपुरिया साहित्य सृजन)**

www.bhojpurisahityangan.com

धर्मेन्द्र त्रिपाठी

इंजीनियर साहेव कऽ अब तक प्रकाशित किताबिन कऽ सूची देखला पर आश्चर्य होला कि नौकरी पेशा वाला अदिमी इ सगरो कार कवने समय करत होई ? **(भोजपुरी संगम क रखवार : इंजीनियर राजेश्वर सिंह)**

डॉ० वेद प्रकाश पाण्डेय

अभियन्त्रण-सेवा में एक ऊँचे पद पर रहते हुए .....उन्हें सम्मानित किया है। **(इं. राजेश्वर सिंह : एक बहुआयामी व्यक्तित्व)**

❖

www.bhojpurisahityangan.com

१२

मीडिया : खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

अखबार की गवाही

-सीमा सिंह

युनाइटेड भारत

लखनऊ गुरुवार 14 अगस्त 2008

साहित्य और आध्यात्म के प्रेमी हैं राजेश्वर सिंह



सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर जनपद में कार्यरत जल निगम के अधिशासी अभियंता राजेश्वर सिंह को महाराष्ट्र ठाणे की एक संस्था "खानकाह सूफी दीदार शाह चिश्ती" ने 'आध्यात्मिक रत्न' मानद उपाधि से सम्मानित किया है जो एक इंजीनियर के लिए उसके व्यक्तित्व को परिलक्षित करता हुआ एक आइना है जो यह दर्शाता है कि एक इंजीनियर पेशे से जुड़े व्यक्ति के अंदर साहित्य और आध्यात्म के लिए कितना प्रेम है। एक इंजीनियर का सम्बन्ध साहित्य और आध्यात्म से, बेमेल होते हुए भी अनूठा है। जिसकी जीता जागता मिशाल है इंजीनियर राजेश्वर सिंह।

▸▸जल निगम में अधिशासी अभियंता पद पर हैं कार्यरत
▸▸'आध्यात्मिक रत्न' मानिद उपाधि से नवाजे जा चुके हैं

सन् १९५० में गोरखपुर जनपद के एक गांव गोपालपुर में जन्में राजेश्वर सिंह पिता स्व. समरबहादुर सिंह तथा माता स्व. परमज्योता सिंह की सन्तान है जिन्होंने बीई (सिविल) से शिक्षा ग्रहण करने के बाद इंजीनियरिंग सेवा की शुरूआत की। इंजीनियर के पद पर सेवा करते हुए भी इनकी रूझान साहित्य के प्रति बनी रही इनके साहित्यिक कला को उत्कृष्ट मानते हुए विभिन्न संस्थानों द्वारा सन् २००६, में सनरोज संस्थान उप्र द्वारा मेलोडी सम्मान, सन् २००७ में भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा महात्मा ज्योबिला फूले फेलोशिप सम्मान, तथा सन् २००८ में संगम संस्था गोरखपुर द्वारा संगम सम्मान देकर सम्मानित किया गया है।

सन् २००८ मे ही ठाणे महाराष्ट्र की संस्था खानकाह सूफी दीदार शाह चिश्ती ने उन्हें जिस्म से रूह तक रोशनी-रोशनी कृति पर विशेष सम्मान आध्यात्मिक रत्न से सम्मानित कर उनके साहित्यिक प्रेम में और निखार ला दिया।

संस्था के अध्यक्ष डा. आईए खान अनजाना ने ई. श्री सिंह के सम्मान की प्रतियां महामहिम राष्ट्रपति भारत, महामहिम राज्यपाल उप्र लखनऊ, मुख्यमंत्री उप्र शासन, प्रमुख सचिव उप्र, गृह सचिव उप्र, निदेशक हिन्दी संस्थान उप्र, निदेशक साहित्यिक अकादमी दिल्ली को सूचित करते हुए उनके सफलता की कामना की है।

ई. श्री सिंह द्वारा लिखित प्रकाशित पुस्तकों में एक कहानी की आत्कथा, एक कहानी के बीच में है, जिन्दगानी। ए कैसी तेरी जिन्दगी?, गांव से शहर जब आ गए, सुख आगे दुख भागे, जिस्म से रूह तक रोशनी-रोशनी, श्रीराम महायज्ञ गोपालपुर की कथात्क झलकियां, कल्यान क जुगति (भोजपुरी) मुख्य रूपसे शामिल है जो लेखक श्री सिंह की साहित्यिक रूझान तथा लेखन की कला को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

प्रधानमंत्री के जन्म दिन पर सेवा पखवाड़े में गोष्ठी का आयोजन

गोरखपुर। देश के प्रधानमंत्री मोदी के जन्म के उपलक्ष में चल रहे सेवा पखवाड़ा गोष्ठी कार्यक्रम के अंतर्गत गोपालपुर मंडल के प्रख्यात भोजपुरी साहित्यकार सरयू रत्न से सम्मानित इंजीनियर राजेश्वर सिंह ने कहा कि मोदी की प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा नेतृत्व करने की क्षमता ने ही आज उन्हें देश ही नहीं पूरे विश्व के सबसे बड़े नेता के रूप में स्थापित किया है, अपने धर्म संस्कृति व राष्ट्र पर गर्व करने वाला व्यक्ति ही सच्चा नागरिक है उनके इसी गुण की बजह से ना सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व में आज वह लोकप्रिय होते चले जा रहे हैं, अब वह दिन दूर नहीं जब उनके कुशल नेतृत्व में अपना देश भी विश्व गुरु के रूप में पूरे विश्व का मार्गदर्शन करेगा, मोदी जी का व्यक्तित्व विपरीत परिस्थितियों में और ही ज्यादा अच्छा निखर के आता है, पिछले 8 सालों में देश में आने वाली हर समस्या को बड़ी कुशलता से उन्होंने खत्म किया चाहे वह नोटबंदी हो, धारा 370, हो तीन तलाक हो, सर्जिकल स्ट्राइक हो, एयर स्ट्राइक हो, कोरोनाकाल की विषम परिस्थिति हो। उनके जन्म दिवस के अवसर पर मैं उनके दीर्घायु होने की कामना करता हूं।



अमर उजाला

राणसी, मंगलवार, 12 अप्रैल, 2005

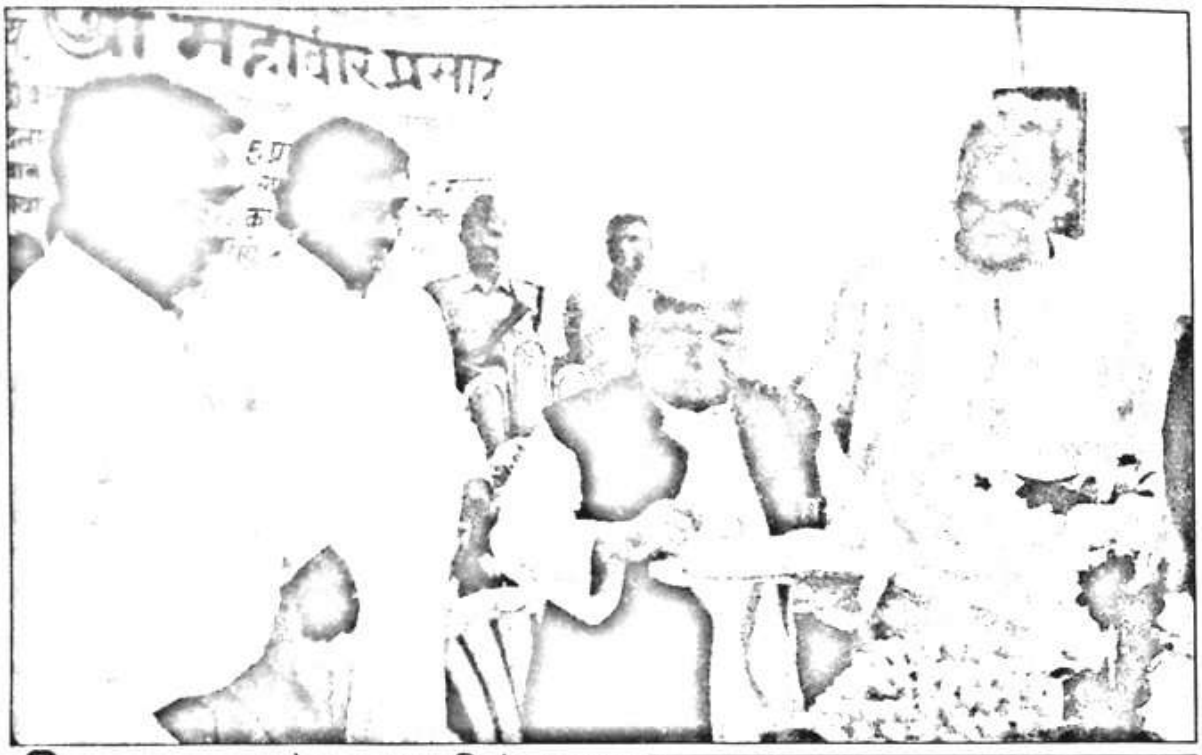
गांव से शहर जब आ गए' का लोकार्पण 14 को

अमर उजाला ब्यूरो

जमगढ़। उप्र जलनिगम द्वितीय र्ण शाखा के अधिशासी अभियंता ई. श्वर सिंह की कथाकृति 'गांव से र जब आ गए' का लोकार्पण 14 को गोरखपुर जनपद स्थित उनके क गांव गोपालपुर में केंद्रीय मंत्री त्वीर प्रसाद करेंगे। श्री सिंह की चार तियों का इससे पहले लोकार्पण किया चुका है।

राजेश्वर सिंह जलनिगम में अधिशासी भियंता के पद पर कार्यरत रहते हुए भी हित्य सर्जना में लगे हुए हैं। उनकी ना 'एक कहानी बीच में है', 'जिंदगानी ये कैसी तेरी ग दुख भागे', 'जिंदगी' पाठकों के हाथों तक पहुंच चुकी है। जबकि 'जिस्म से रूह तक रोशनी-रोशनी' जिसमें निजामाबाद के शाह गोला दीवान की कथा है, इस समय प्रेस में है। वह भी जल्द पाठकों के बीच पहुंच जाएगी। 'गांव से शहर जब आ गए' के लोकार्पण समारोह में राजकीय होम्योपैथिक मेडिकल कालेज चंडेश्वर के प्रधानाचार्य डा. रत्नेश्वर मणि त्रिपाठी, अतिरिक्त जिला जज, आयकर आयुक्त डा. रामसमुझ, परमहंस यादव व रचनाकार राजेश्वर सिंह को सम्मानित भी किया जाएगा। इसमें आजमगढ़ व पड़ जिले के साहित्यकार डा. मधुर नजमी, वैभव शर्मा, अरुण त्रिपाठी 'निर्भय', रामाधार व्याकुल आदि अपना पाठ करेंगे।

www.bhojpurisahityangan.com



दैनिक जागरण
गोरखपुर, 28 दिसंबर 2020
www.jagran.com

ई. राजेश्वर की चार भोजपुरी कृतियों का हुआ विमोचन



ई. राजेश्वर सिंह की पुस्तकों का लोकार्पण करते (बीच में) प्रो. चित्तरंजन, प्रो. आरडी राय व अन्य।

जासं, गोरखपुर : भोजपुरी संगम के तत्वावधान में संस्था के संरक्षक ई. राजेश्वर सिंह की चार भोजपुरी कृतियों 'श्याम पियारा साधु-संत', 'भोजपुरी महाभारत', 'घरेलू नुस्खा' और 'दीक्षा गुरु' का रविवार को विमोचन हुआ। रैंपस स्कूल के सभागार में आयोजित विमोचन कार्यक्रम की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने की।

उन्होंने कहा कि ई. राजेश्वर में साहित्यिक दृष्टि से भी इंजीनियर धर्म मौजूद है। भोजपुरी के प्रति इंजीनियर की निष्ठा और समर्पण का उनके द्वारा रचित साहित्यिक कृतियां प्रमाण हैं। आयोजन के मुख्य अतिथि डा. अलक राय ने कहा एक इंजीनियर की भोजपुरी लेखन काबिले तारीफ है। विशिष्ट अतिथि प्रो. आरडी राय ने भोजपुरी में साहित्यिक सृजन के साथ-साथ इसमें शोध कार्य किए जाने की भी आवश्यकता बताई। कार्यक्रम को डा. आद्या प्रसाद द्विवेदी, प्रो. विमलेश मिश्र और डा. फूलचंद गुप्त ने भी संबोधित किया। स्वागत प्रवीण सिंह और आभार ज्ञापन चंद्रेश्वर परवाना ने किया। संयोजक कुमार अभिनीत ने संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। संचालन श्रीधर मिश्र ने किया। हरिवंश शुक्ल, धर्मेंद्र त्रिपाठी, चंद्रगुप्त वर्मा अकिंचन, बृजेश राय, अयधेश नंद, अरविंद अकेला, रवींद्र मोहन त्रिपाठी, सत्यनारायण पथिक आदि मौजूद रहे।

सदाचार पर आधारित हैं ई. राजेश्वर की कृतियां

गोरखपुर। भोजपुरी संस्था 'संगम' के संरक्षक ई.राजेश्वर सिंह की भोजपुरी कृतियां सदाचार व शिष्टाचार पर आधारित हैं। मुख्य अतिथि डॉ. अलक राय ने सोमवार को रैम्पस स्कूल में ई. राजेश्वर की श्याम पियारा साधु संत, भोजपुरी महाभारत, घरेलू नुस्खा और दीक्षा गुरु के लोकार्पण के दौरान कही।

www.bhojpurisahityangan.com

गया है। क्षेत्र के 42 गांव की पांच घंटे बाद विद्युत आपूर्ति बहाल करा दी गई है।

सुंदर और सरल भाषा है भोजपुरी : अलक

गोरखपुर (एसएनबी)। भोजपुरी संगम के तत्वावधान में रैपुरा स्कूल में राजेश्वर सिंह की चार भोजपुरी कृतियों का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अलक राय ने कहा कि भोजपुरी सुंदर और सरल भाषा है उन्होंने राजेश्वर सिंह बहुमुखी प्रतिभा की सराहना की। प्रो आर डी राय ने कहा कि भोजपुरी को लेकर जो चिंता होनी चाहिए वह राजेश्वर की रचनाओं में मौजूद है। उन्होंने भोजपुरी ग्रंथों पर शोध कार्य कराने की सलाह दी। आर डी एन श्रीवास्तव ने राजेश्वर को भोजपुरी का सच्चा लोखक बताया। इस समारोह को डॉ जनार्दन सिंह, डॉ विमलेश मिश्र, डॉ आद्या प्रसाद द्विवेदी ने भी संबोधित किया। अध्यक्षता करते हुए प्रो गिरांरजन मिश्र ने कहा कि भोजपुरी में निर्गुण की परम्परा है। स्वागत व्यक्तव्य देते हुए प्रवीन सिंह ने पूर्वांचल के भोजपुरी ग्रंथो व रचनाकारों का विस्तार से उल्लेख किया। संयोजक कुमार अभिनीत ने संस्था के गतिविधियों पर प्रकाश डाला। चंद्रशेखर परवाना ने आभार ज्ञापन में भोजपुरी विधा और उनके रंगनाकारो की संक्षिप्त चर्चा की। इस अवसर पर हरिवंश शुक्ल, धर्मेन्द्र त्रिपाठी, शत्रुन्जय सिंह, चंद्रगुप्त वर्मा, बृजेश राय, रविन्द्र मोहन त्रिपाठी, राम सुधीर सिंह, एके दत्ता, प्रदीप मिश्र, डॉ विनीत, मिश्रा, सत्यनारायण पथिक समेत अन्य लोग मौजूद रहे।

लोकार्पण | इंजीनियर राजेश्वर की पुस्तक 'पहरी समधी बरत करी' का लोकार्पण

लोक व शास्त्र को जोड़ती है भोजपुरी:डा.रवी



याद किए गए स्वतत्रता संग्राम सेनानी डॉ. नागेंद्र



नागेंद्र नाथ सिंह स्मृति न्यास की तरफ से 10 लोगों को किया गया सम्मानित

दिये हुए सम्मानित

गोरखपुर 15 जुलाई 2024 दैनिक जागरण 7

भाषा ही नहीं संस्कृति भी है भोजपुरी : प्रो. चित्तरंजन मिश्र



www.bhojpurisahityangan.com

अमर उजाला

गोरखपुर सोमवार, 28 दिसंबर 2020



नियम स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में प्रो. त्रिभुवन सिंह, डॉ. अनंत राय, प्रो. अवधे राय, प्रो. दिनकर मिश्र, डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी, डॉ. जगदीश सिंह ने इंजीनियर राजेश्वर सिंह की पुस्तकों का लोकार्पण किया। अमर उजाला

'इं. राजेश्वर में साहित्यिक दृष्टि से भी इंजीनियर धर्म मौजूद'

अमर उजाला ब्यूरो

भोजपुरी संगम की ओर से इंजीनियर राजेश्वर की चार कृतियों का हुआ विमोचन

गोरखपुर। नियम स्कूल में रविवार को भोजपुरी संगम की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मंच के संरक्षक डॉ. राजेश्वर सिंह की चार भोजपुरी कृतियों, 'स्वयम शिवम सत्यम्-यंत्र', 'भोजपुरी महाभारत', 'धरम सुरक्षा' और 'रौशन गुरु' का विमोचन किया गया। वेंगलुरु विश्वविद्यालय के रिटायर लिपाल के पूर्व अध्यक्ष प्रो. त्रिभुवन मिश्र ने कहा कि डॉ. राजेश्वर में साहित्यिक दृष्टि से भी इंजीनियर धर्म मौजूद है।

उन्होंने कहा कि भोजपुरी के प्रति इंजीनियर की निष्ठा और समर्पण, उनके द्वारा रचित साहित्यिक कृतियों में प्रमाणित होते हैं। मुख्य अतिथि पद्म श्री राजेश्वर के गुरु और आयोजक डॉ. अनंत राय ने कहा, एक इंजीनियर की भोजपुरी संगम में सहज प्रासंगिकता है। विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर अवधे राय ने भोजपुरी में साहित्यिक सृजन के साथ-साथ इसमें शोध कार्य की भी जरूरत बताई। डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी, प्रो. दिनकर मिश्र और डॉ. फुलचंद गुप्त ने भी विचार रखे। संचालन कुमार अभिनंदन ने मंच की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। संचालन कौशल मिश्र ने किया। इस अवसर पर प्रदीप सिंह, सर्वेश्वर पाराशर, रविंद्र शुक्ल, धर्मेंद्र त्रिपाठी, प्रद्युम्न वर्मा अंकित, दुर्गेश राय, अशोक मेहरा, अभिषेक प्रकाश, राकेश चौबे, मदनमोहन पांडेय और मौजूद रहे।

दैनिक जागरण | 5

वाराणसी, 1 मई 2010 | आजमगढ़



सेवानिवृत्त अभियंता को स्मृति चिह्न देते मुख्य अभियंता एसडी राम।

सेवानिवृत्त अभियंता को दी गयी विदाई

आजमगढ़: जल निगम निर्माण खण्ड द्वितीय कार्यालय परिसर में शुक्रवार की देर शाम समारोह का आयोजन कर सेवानिवृत्त अधिशासी अभियंता अस्थायी निर्माण मण्डल जल निगम आजमगढ़ राजेश्वर सिंह को भावभीनी विदाई दी गयी। विभागीय अधिकारियों ने श्री सिंह को स्मृतिचिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। इस दौरान आयोजित कवि सम्मेलन में कवियों और शायरों ने अपनी रचनाओं से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि मुख्य अभियन्ता जल निगम गोरखपुर एसडी राम ने कहा कि अपने नेतृत्व क्षमता और दूरदर्शिता के चलते राजेश्वर सिंह मंडल अधिकारी व कर्मचारियों के प्रिय रहे। इन्होंने विभागीय भाव से ईमानदारीपूर्वक कर्तव्यों का पालन किया। विभागीय लोग इनसे प्रेरणा लें। कार्यक्रम को एआर रस्तोगी, आरके वस्त्र, रामनरायण, एके श्रीवास्तव, अलाउद्दीन, जेपीएन राय, जगदीश्वर, प्रदीप सिंह पटेल, नरेन्द्र राय, श्याम कन्हाई श्रीवास्तव, एमपी सिंह, रमाशंकर श्रीवास्तव, डीएस यादव आदि ने सम्बोधित किया। इसके बाद कवि सम्मेलन शुरू हुआ जो देर रात तक चलता रहा।



www.bhojpurisahityangan.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

संदेश वाहक

धर्म-राष्ट्र पर गर्व करने वाला सच्चा नागरिक: राजेश्वर



गोला, गोरखपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा नेतृत्व करने की क्षमता ने ही आज उन्हें देश ही नहीं, पूरे विश्व के सबसे बड़े नेता के रूप में स्थापित किया है। अपनी धर्म, संस्कृति व राष्ट्र पर गर्व करने वाला व्यक्ति ही सच्चा नागरिक है। उनके इसी गुण की वजह से न सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व में आज वह लोकप्रिय होते जा रहे हैं। यह बातें पीएम मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में चल रहे सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत नगर पंचायत गोला में सम्मिलित गोपालपुर के निवासी और मंडल के प्रख्यात भोजपुरी साहित्यकार सरयू रत्न से सम्मानित सेवानिवृत्त इंजीनियर राजेश्वर सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि अब वह दिन दूर नहीं जब गोपाल मोदी के कुशल नेतृत्व में अपना देश विश्व गुरु के रूप में पूरे विश्व का मार्गदर्शन करेगा।

लखनऊ/गोरखपुर 29 सितम्बर 2022 संदेश वाहक

www.thesandeshwahak.com

भोजपुरी की महफिल में पुस्तक का विमोचन

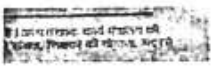
पैस उत्सव में इंजीनियर राजेश्वर सिंह की किताब का लोकार्पण किया गया



आमर उजाला

भोजपुरी भागवत कथा सार का विमोचन

गोरखपुर। गोरखपुर महोत्सव के दौरान 'कृति एवं कृतिकार' कार्यक्रम के तहत इंजीनियर राजेश्वर सिंह की पुस्तक 'भोजपुरी भागवत कथा सार' का विमोचन किया गया। प्रो. रामदेव शुक्ल की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में कपिलदेव, सुभाष कुशवाहा और डॉ. रंजना जायसवाल ने कृतिकार के रूप में हिस्सा लिया। गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल राय, डॉ. वेद प्रकाश पांडेय, सूर्यदेव पाठक पराग, श्रीधर मिश्र, चंद्रेश्वर परवाना, डॉ. कुमार नवनीत सहित भोजपुरी संगम के सदस्यों की सहभागिता रही। इस साहित्यिक आयोजन में सहयोग देने के लिए सुधाबिंदु के संयोजक रवींद्र मोहन त्रिपाठी को सम्मानित किया गया। इस मौके पर राजेश्वर सिंह ने अपनी पुस्तक के संबंध में जानकारी दी। इसके साथ पंत पार्क में भोजपुरी संगम की बैठकी भी हुई।



दैनिक जागरण

गोरखपुर, 28 सितम्बर 2020

www.jagran.com

'राष्ट्र क विकास म मातृभाषा अहम

'राष्ट्रीयता के विकास में मातृभाषा का योगदान' विषयक संगोष्ठी का किया गया आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी



दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। - संवाद न्यूज एजेंसी

मातृभाषा हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है :डॉ. प्रजय

ई. राजेश्वर की चार भोजपुरी कृतियों का हुआ विमोचन



www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भाषा ही नहीं, संस्कृति भी है-प्रो. चित्तरंजन मिश्र



◆ कवि नचनो प्रसाद कुशवाहा उर्फ रामपति रसिया सनन सम्मान से सम्मानित

राष्ट्रीयता के विकास में मातृभाषा का योगदान, विषयक संगोष्ठी

रीडर्स मैसेंजर नेटवर्क



गगहा।(ब्यूरो बड़हलगंज) गोरखपुर, राष्ट्रीयता के विकास में मातृभाषा का योगदान सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसमें शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास गोरख प्रांत द्वारा आयोजित मातृभाषा सप्ताह के अंतर्गत राष्ट्रीयता के विकास में मातृभाषा का योगदान विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमे बतौर मुख्य अतिथि ईएनवेश्वर सिंह(हिंदी एवं भोजपुरी साहित्य के प्रख्यात लेखक) ने कहा कि मातृभाषा हमें देश प्रेम की भावना को उद्वेलित कर राष्ट्रीयता से जोड़ती है। उक्त बातें राम गिरीश राय पीजी कॉलेज दुबौली में राष्ट्रीयता के विकास में मातृ भाषा का योगदान विषयक संगोष्ठी के अवसर पर कही। वहीं सर्वोदय किसान पीजी कालेज कौड़ी राम के प्रवक्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ अजय राय ने कहा कि हमें स्मरण रखना चाहिए कि मातृभाषा हमे राष्ट्रीयता से जोड़ती है। देशप्रेम की भावना जगाती है। किसी भी व्यक्ति में सोचने, समझने की शक्ति तथा अनौपचारिकता शिक्षा का विकास सर्वाधिक मातृभाषा में ही होता है। इसलिए राष्ट्रीयता के विकास में मातृ भाषा का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है।

कार्यक्रम में आए अतिथियों का आभार ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ अशोक राही के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन राजनीति विज्ञान के प्रवक्ता रणधीर सिंह ने की इस अवसर पर जयराम तिवारी, अखिलेश चन्द, संदीप राय, विनोद ओझा, सतेन्द्र गुप्ता, सुनील कुमार, अंजलि राय, शक्ति धर चौबे सहित तमाम प्रवक्ता और छात्र/छात्रायें उपस्थित रहीं।

www.bhojpurisahityangan.com

पुण्यतिथि पर याद किए गए नागेंद्र सिंह



मोदी जी का व्यक्तित्व व नेतृत्व ने ही पूरे विश्व का सबसे बड़े नेता के रूप में किया स्थापित राजेश्वर सिंह

गोला गोरखपुर । बाँसगाँव सन्देश । मोदी जी की प्रभावशाली व्यक्तित्व तथा नेतृत्व करने की क्षमता ने ही आज उन्हे देश ही नहीं पूरे विश्व के सबसे बड़े नेता के रूप मे स्थापित किया है। अपने धर्म संस्कृति व राष्ट्र पर गर्व करने वाला व्यक्ति ही सच्चा नागरिक है। उनके इसी गुण की वजह से न सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व मे आज वह लोकप्रिय होते चले जा रहे है। उक्त बातें यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में चल रहे सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत नगर पंचायत गोला में समाहित गोपालपुर के निवासी और मठल के प्रख्यात भोजपुरी साहित्यकार सरयू रत्न से सम्मानित सेवानिवृत्त इंजीनियर राजेश्वर सिंह ने कही। आगे कहा कि अब वह दिन दूर नही जब उनके कुशल नेतृत्व में अपना देश भी विश्व गुरु के रूप मे पूरे विश्व का मार्गदर्शन करेगा।मोदी जी का व्यक्तित्व विपरीत परिस्थितियो मे और ही ज्यादा अच्छा निखर के आता है। पिछले 8 सालो मे देश में आने वाली हर समस्या को बड़ी कुशलता से उन्होने खत्म किया चाहे वह नोटबंदी हो धारा 370 हो तीन तलाक हो सर्जिकल स्ट्राइक हो एयर स्ट्राइक हो कोरोनाकाल की विषम परिस्थितिया हो आदि। उनके जन्म दिवस के अवसर पर मै उनके दीर्घायु होने की कामना करता हूं।



8 दैनिक जागरण गोरखपुर, 15 जनवरी 2019

www.jagran.com

गोरखपुर चेतन

'पढ़ी समझी-मनन करी' पुस्तक का विमोचन



'भोजपुरी भागवत कथा सार' का विमोचन

गोरखपुर : 'कृति और कृतिकार' कार्यक्रम के तहत भोजपुरी संगम संस्था के संस्थापक ई. राजेश्वर सिंह की पुस्तक 'भोजपुरी भागवत कथा सार' का विमोचन हुआ। विमोचन कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. रामदेव शुक्ल और संचालन देवेंद्र आर्य ने किया। इस अवसर पर पुस्तक की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए ई. राजेश्वर ने कहा कि भागवत वेदों का सार है, इसके श्रवण मात्र से मनुष्य में भक्ति भाव का संचार होता है। आज की व्यस्त जीवन-शैली में संस्कृत श्लोकों से युक्त वृहद भागवत का अध्ययन कठिन है। ऐसे में भोजपुरी में रचित यह पुस्तक कथा का अध्ययन करने की सरल व सुलभ माध्यम बनेगी। ई. राजेश्वर की इससे पहले आठ हिंदी और तीन भोजपुरी की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

www.bhojpurisahityangan.com



प्रेम सदन में पढ़ी गई पुस्तक पढ़ी मनन करो पुस्तक का विमोचन किया गया।

भोजपुरी की महफिल में पुस्तक का विमोचन

राजेश्वर ने लिखी 'पढ़ी गुनी मनन करी' किताब

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। [illegible] भोजपुरी संगम की ओर से रविवार को प्रेम सदन में [illegible] लगभग एक दर्जन कथाकृतियों के प्रणेता कथाकार [illegible] राजेश्वर सिंह की भोजपुरी में लिखी गई तृतीय हरियाइल और कल्याण के जुगति के बाद तृतीय भोजपुरी कृति पढ़ी, समझी, मनन करी, का लोकार्पण किया गया। सभागार में गजलकार डॉ. मधुर नज्मी, डॉ. रविंद्र श्रीवास्तव, प्रो आरडी राय, साहित्यकार श्रीधर मिश्र आदि रहे। भोजपुरी विकास पर सभी ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। मौके पर खवींद्र मोहन त्रिपाठी, केवी लाल, अनिल प्रताप, मनोज, जय प्रकाश, प्रवीण, रचित, राज कुमार, निधि, दिनेश, अखिलेश, दिनेश बहादुर, रजत, अनिल कुमार दत्त, अभिनीत, राजेश, संजय, कृष्ण गोपाल, विजय शंकर आदि मौजूद थे।



रेपस स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में प्रो त्रिलोकी सिंह, डॉ. अनंत राय, प्रो. आरडी राय, प्रो विमलेश मिश्र, डॉ. अजय प्रसाद द्विवेदी, डॉ. जगदीश सिंह ने इंजीनियर राजेश्वर सिंह की पुस्तकों का लोकार्पण किया। अमर उजाला

'इं. राजेश्वर में साहित्यिक दृष्टि से भी इंजीनियर धर्म मौजूद'

भोजपुरी संगम की ओर से इंजीनियर राजेश्वर की चार कृतियों का हुआ विमोचन

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। [illegible] भोजपुरी संगम की ओर से [illegible] राजेश्वर सिंह की [illegible] पुस्तकों का [illegible] विमोचन किया गया। [illegible] विभाग के [illegible] त्रिलोकी सिंह ने कहा कि [illegible] में साहित्यिक दृष्टि भी मौजूद है।

उन्होंने कहा कि राजेश्वर में एक इंजीनियर की निष्ठा और समर्पण [illegible] साहित्यिक कृतियों में [illegible] मुख्य अतिथि [illegible] ने कहा कि एक इंजीनियर को [illegible] एक इंजीनियर को [illegible] भोजपुरी संगम के अध्यक्ष [illegible] विशिष्ट अतिथि [illegible] प्रो आरडी राय, [illegible] डॉ. जगदीश सिंह, [illegible] अनंत राय, [illegible] अमर उजाला [illegible] मौजूद रहे।

गोरखनाथ नगर आयुक्त और चीफ इंजीनियर को फोन करके कार्य की जांच कराने का आदेश दिया.

भोजपुरी पुस्तक का लोकार्पण



GORAKHPUR (8 Jan) [illegible] संगम की ओर से रविवार को प्रेम सदन में [illegible] लगभग एक दर्जन कथाकृतियों के प्रणेता कथाकार [illegible] राजेश्वर सिंह की भोजपुरी में लिखी गई तृतीय हरियाइल और कल्याण के जुगति के बाद तृतीय भोजपुरी कृति पढ़ी, समझी, मनन करी, का लोकार्पण किया गया. सभागार में गजलकार डॉ. मधुर नज्मी, डॉ. रविंद्र श्रीवास्तव, प्रो आरडी राय, साहित्यकार श्रीधर मिश्र आदि रहे. भोजपुरी विकास पर सभी ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए. मौके पर खवींद्र मोहन त्रिपाठी, केवी लाल, अनिल प्रताप, मनोज, जय प्रकाश, प्रवीण, रचित, राज कुमार, निधि, दिनेश, अखिलेश, दिनेश बहादुर, रजत, अनिल कुमार दत्त, अभिनीत, राजेश, संजय, कृष्ण गोपाल, विजय शंकर आदि मौजूद थे.

घरेलू नुस्खा एवम प्राथमिक चिकित्सा की संगोष्ठी की बैठक



गोरखपुर। मंगलवार • 15 जनवरी • 2019

राष्ट्रीय सहारा www.rashtriyasahara.com

कृति व कृतिकार कार्यक्रम सम्पन्न

गोरखपुर (एसएनबी)। गोरखपुर महोत्सव के तहत विश्वविद्यालय परिसर में तीन दिवसीय कृति व कृतिकार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें महानगर के वरिष्ठ साहित्यकारों व पाठकों ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित कराई। महोत्सव के आखिरी दिन चर्चित कथाकार प्रो. राजेश शुक्ल की अध्यक्षता में ई. राजेश्वर सिंह की पुस्तक भोजपुरी भगवत कथा सार का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में सुभाष चन्द्रकला, डॉ. रंजना अग्निहोत्री, डॉ. सुनील पवन ने भी [illegible] किया। विवि के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल राय, [illegible] वेदप्रकाश पांडेय, सूर्यदेव पाठक 'पराग', श्रीधर मिश्र, बंदेश्वर परवाना, डॉ. कुमार मनोज, सहित भोजपुरी संगम के अनेक सदस्यों की सहभागिता रही। विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण साहित्यिक आयोजन में सहयोग प्रदान करने पर सुविधा में सहयोगक रवींद्र मोहन त्रिपाठी को सम्मानित भी किया गया।

www.bhojpurisahityangan.com

१३

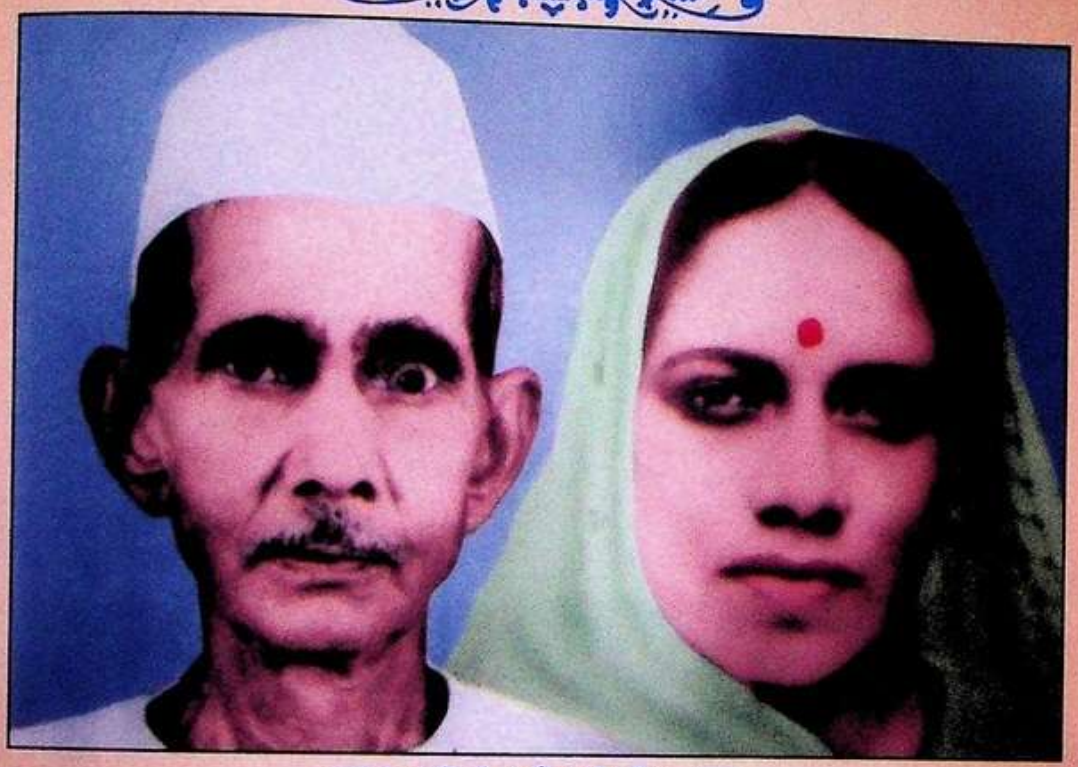
चित्र : खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

छायाछवि वीथिका

- इं. प्रवीण सिंह, सीमा सिंह

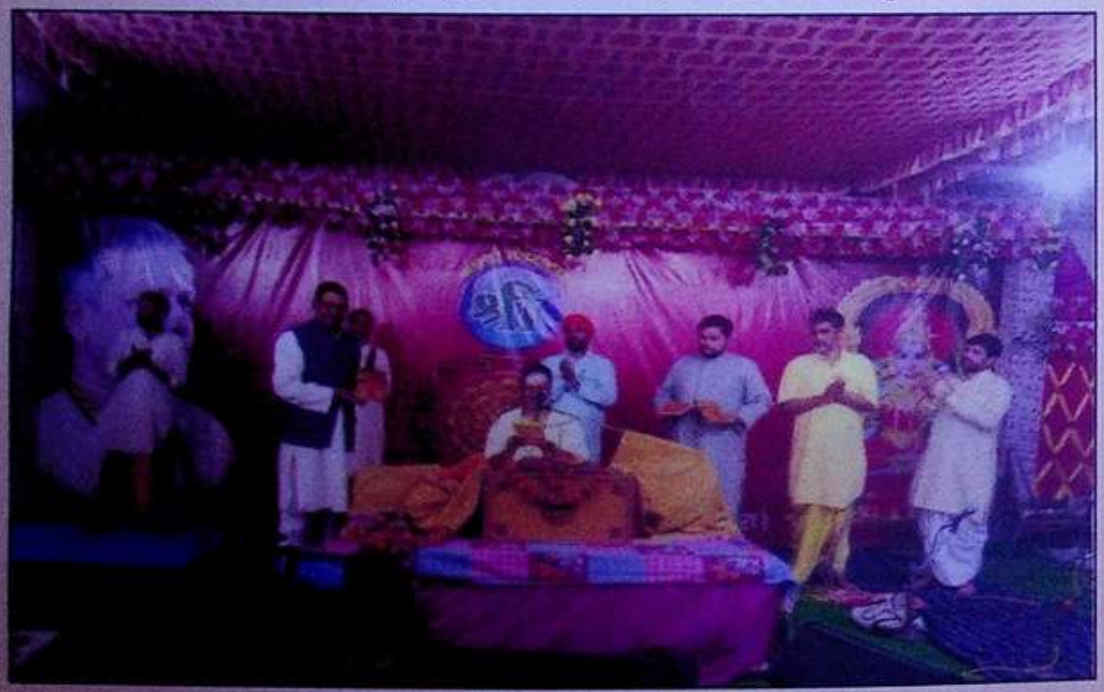


इं. राजेश्वर सिंह की माताश्री परमजोता सिंह
एवं
उनके पिताश्री समर बहादुर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com



गोपालपुर (गोला) के पैतृक गृह जिसमें इं. राजेश्वर सिंह का जन्म हुआ था।



दिनांक 27.02.2023 को गोपालपुर (गोला) गोरखपुर में आयोजित भागवत कथा के व्यास पीठ से ज्योतिष सम्राट विश्व विख्यात कथा वाचक श्री राघव ऋषि जी द्वारा भोजपुरी पंचतंत्र किताब का लोकार्पण तमाम भागवत प्रेमियों के उपस्थिति में किया गया।

www.bhojpurisahityangan.com

इं. राजेश्वर सिंह के शादी की पचासवीं सालगिरह
दिनांक : 05.07.2021





www.bhojpurisahityangan.com

इं. राजेश्वर सिंह के शादी की पचासवीं सालगिरह दिनांक : 05.07.2021
के अवसर पर परिवारजन





www.bhojpurisahityangan.com



भारतीय सेना में प्रशिक्षण के बाद दिनांक 11.12.1999 को पासिंग आउट परेड में शामिल होने से पूर्व सेना का वर्दी एवं बैच अपने ज्येष्ठ पुत्र नवीन सिंह को पहनाते हुए इं. राजेश्वर सिंह एवं राजकुमारी सिंह।



इं. राजेश्वर सिंह के पुत्र ले.क. नवीन सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com



महाकवि सूंड़ फैजाबादी की स्मृति में दिनांक : 18.12.2005 को वेस्ली इण्टर कालेज आजमगढ़ के प्रांगण में आयोजित राष्ट्रीय एकता काव्य समारोह के अवसर पर कथाकार ईन्जीनियर राजेश्वर सिंह को अंगवस्त्रम (ऊपर के चित्र में) एवं स्मृति चिन्ह (नीचे के चित्र में) प्रदान कर सम्मानित करते सदर आजमगढ़ के माननीय विधायक श्री दुर्गा प्रसाद यादव।



भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली से महात्मा ज्योतिबाफूले सम्मान प्राप्त करते इं. राजेश्वर सिंह दिनांक : 10.12.2007

www.bhojpurisahityangan.com

विश्वभोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय महासचिव के साथ ''योगी कथामृत'' के भोजपुरी अनुवाद पुस्तक के विमोचन





विश्व भोजपुरी सम्मेलन वाराणसी दिनांक : 21 फरवरी 2024 को महासचिव उपाध्यक्ष एवं अतिथियों के साथ पुस्तक भोजपुरी योगी कथामृत का विमोचन (सौजन्य : पत्रिका यात्री)

विश्व भोजपुरी सम्मेलन वाराणसी दिनांक : 20 व 21 फरवरी 2021 में इं. राजेश्वर सिंह की पांच भोजपुरी भाषा की पुस्तकों का लोकार्पण।





बी.एस.ए.बी. इन्टर कालेज गोला (गोरखपुर) के 75 वर्ष बाद हीरक जयन्ती समारोह के अवसर पर विशिष्ठ अतिथि के रूप में प्रबन्धक डॉ. विजयानन्द तिवारी एवं प्रधानाचार्य द्वारा सम्मान।

www.bhojpurisahityangan.com

फील्ड हास्टल, आज़मगढ़ का शिलान्यास मा. मुख्य मंत्री सुश्री मायावती के कर कमलों से इं. राजेश्वर सिंह द्वारा वर्ष 1998 में कराया गया।





भोजपुरी विकास मण्डल सीवान (बिहार) द्वारा संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-2021 प्राप्त करते इं. राजेश्वर सिंह।

राहुल संस्कृत्यायन स्मृति समिति आज़मगढ़ द्वारा प्रेमचन्द सम्मान, प्राप्त करते इं. राजेश्वर सिंह 31 जुलाई वर्ष 2009



www.bhojpurisahityangan.com



माननीय नगर विकास मंत्री श्री नकुल दूबे जी को पुस्तक ''जिस्म से रूह तक रोशनी-रोशनी'' भेंट करते इं. राजेश्वर सिंह, वर्ष 2007

फिराक गोरखपुरी के 126वीं जयन्ती दिनांक : 28 अगस्त 2022 को उनकी जन्म स्थली ग्राम बनवार पार में मनाये जा रहे उत्सकव में विशिष्ठ अतिथि के रूप में इं. राजेश्वर सिंह सम्मान करते ग्राम प्रधान डॉ. छोटे लाल यादव 'प्रचण्ड'।



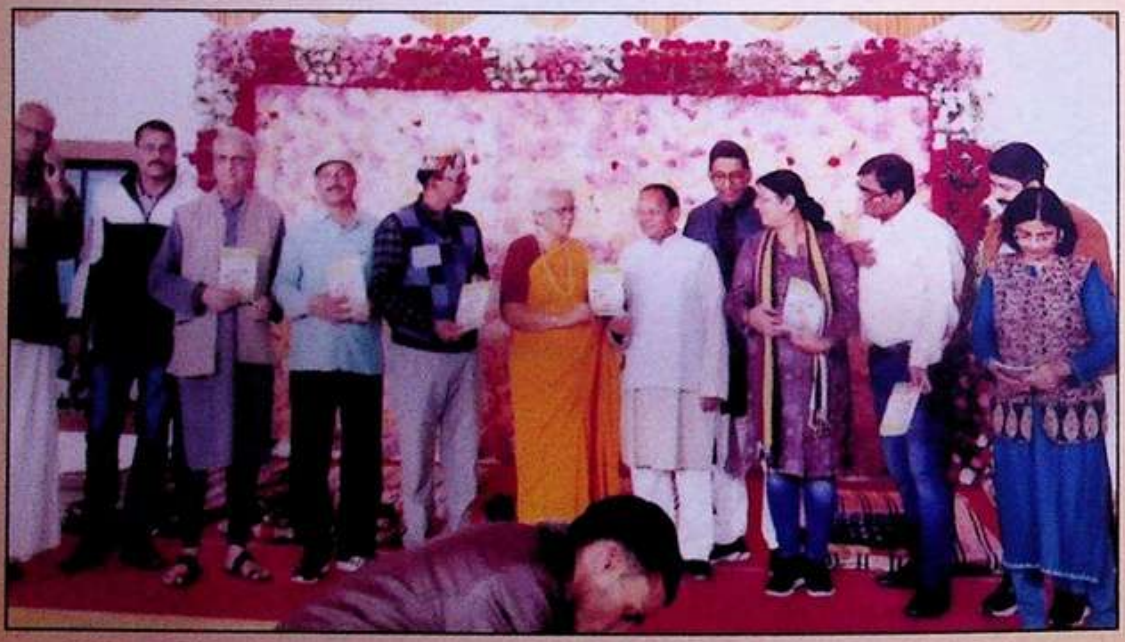


वाराणसी लिट फेस्ट 2023 के काशी साहित्य कला उत्सव के अवसर पर दिनांक 12.02.2023 को स्वतंत्रता भवन बी.एच.यू. (वाराणसी) के परिसर में किताब 'भोजपुरी पंचतंत्र' का लोकार्पण सर्वश्री पद्मश्री रजनीकांत द्विवेदी पद्मश्री डॉ. देवी प्रसाद द्विवेदी, प्रो. आनंद कुमार त्यागी कुलपति महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ प्रो. हरिराम द्विवेदी, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, प्रो. अनुपम शाही श्री व्योमेश चित्रांश आदि के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

www.bhojpurisahityangan.com



भारत सेवाश्रम संघ की गोरखपुर की इकाई के स्वामी नितश्रियानंद को किताब भोजपुरी रहनी-करनी योगाचार्य प्रणवानंद जी की पांडुलिपि दिनांक : 30.03.2024 को भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।



डॉ. सरिता बुधु, मारिशस एवं उपस्थित अतिथियों द्वारा दिनांक : 23.12.2023 को अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के जमशेदपुर में आयोजित समारोह में इं. राजेश्वर सिंह की पुस्तक घरेलू नुस्खा के द्वितीय संस्करण का लोकार्पण।

www.bhojpurisahityangan.com



स्व० नागेन्द्र नाथ सिंह, सदस्य विधान परिषद् के नवीं पुण्य तिथि पर आयोजित समारोह के अवसर पर साहित्यिक सेवा के लिए 'नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान' प्रो० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय के हाथों से प्राप्त करते हुए
चित्र दिनांक : 25.08.2021



फिराक गोरखपुरी के 126वीं जयन्ती पर आयोजित समारोह में आगन्तुकों को सम्बोधित करते इं. राजेश्वर सिंह।



नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति व्याख्यान एवं विभिन्न विभूतियों का सम्मान समारोह में इं. राजेश्वर सिंह।

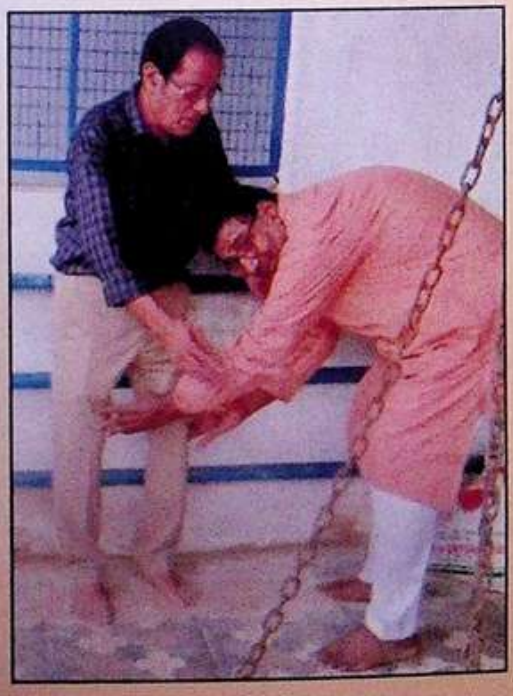
www.bhojpurisahityangan.com

इं. राजेश्वर सिंह की पुस्तक ''एक कहानी बीच में है'' का लोकार्पण वर्ष 2004





प्रोफेसर अलक राय साहब को उनके जन्म दिवस दिनांक : 9.4.2024 को 82 वर्ष पूरे होने पर बुके एवं पुस्तक 'भोजपुरी योगी कथामृत' भेंट कर उनके स्वस्थ एवं सानन्द जीवन की कामना इं. राजेश्वर सिंह



वर्ष 2023 में तुलादान के सिलसिले में गीता बाटिका के गोशाला आने पुर इंजीनियरिंग के शिक्षागुरु और आध्यात्मिक गुरु के गुरुभई प्रो. अलक राय साहब दैवयोग से पहुँचे मिले और श्री सिंह को आशीर्वाद देकर धन्य किये।

www.bhojpurisahityangan.com

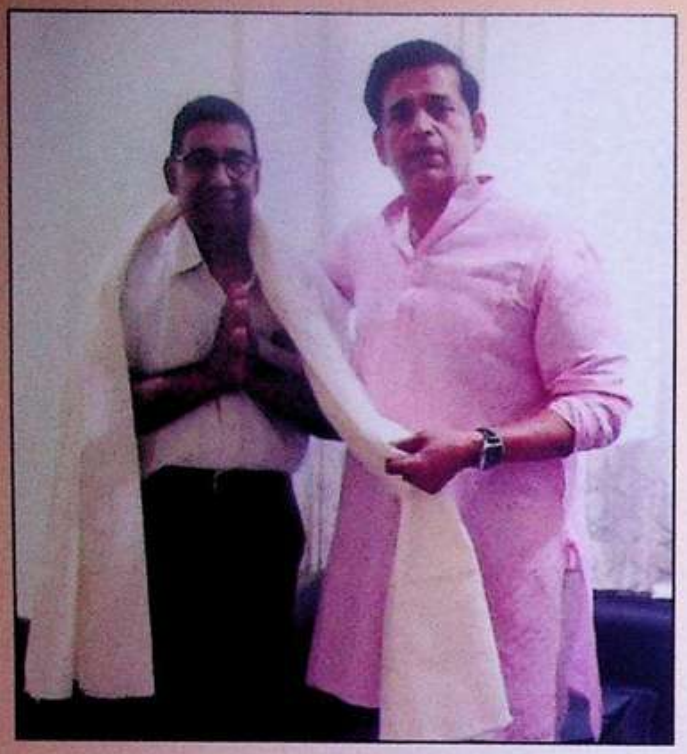


दिनांक : 31.7.2009 को राहुल सांकृत्यायन समिति आज़मगढ़ द्वारा आयोजित प्रेमचन्द जयन्ती समारोह को सम्बोधित करते इं. राजेश्वर सिंह।



आज़मगढ़ में कवि सूंढ़ फैजाबादी के स्मृति में आयोजित कवि सम्मेलन में कमश्निर, आज़मगढ़ मण्डल श्री वी.वी. सिंह द्वारा इं. राजेश्वर सिंह का सम्मान।

www.bhojpurisahityangan.com



यशस्वी सांसद और भोजपुरी सुपर स्टार श्री रवि किशन जी द्वारा दिनांक :17.06.2023 को भोजपुरी साहित्य में योगदान के लिए इं. राजेश्वर सिंह को अंग-वस्त्र पहना कर सम्मानित किया गया।



यशस्वी सांसद और भोजपुरी सुपर स्टार श्री रवि शंकर किशन जी द्वारा दिनांक : 17.06.2023 को किताब "भोजपुरी" पंचतंत्र का विमोचन किया गया।

www.bhojpurisahityangan.com



मदन मोहन मालवीय प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय गोरखपुर के पूर्व छात्र मिलन समारोह 2023 के अवसर पर 'भोजपुरी योगी कथामृत' पुस्तक का लोकार्पण डॉ. जे.पी. सैनी कुलपति एवं उपस्थित अतिथियों द्वारा सम्पन्न हुआ।



नवभारत निर्माण समिति द्वारा बी.एच.यू. में आयोजित बनारस लिट. फेस्ट में भाग लेने जाते हुए प्रो. अनुपम शाही के साथ इं. राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com



श्री कमल किशोर, वरिष्ठ साहित्यकार राँची को पुस्तक 'भोजपुरी योगी कथामृत' भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।



प्रो. जयकान्त सिंह 'जय' महा सचिव अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन से सम्मान प्राप्त करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।



श्री कमलेश पासवान माननीय ग्रामीण विकास राज्य मन्त्री भारत सरकार को पुस्तक 'भोजपुरी योगी कथामृत' भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com



तहसील दिवस के अवसर पर आम जन के समस्या निपटारा करने हेतु कैम्प लगाकर प्रतिक्षारत इं. राजेश्वर सिंह वर्ष 2006



अपने द्वितीय पौत्र धर्मवीर सिंह के इण्टरमीडिएट परीक्षा में उत्कृष्ट अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा गोरखपुर द्वारा प्रदान किये गये डॉ. रघुनाथ चन्द स्मृति नवज्योति पुरस्कार, प्राप्त करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com



सरयू अमृत महोत्सव बड़हलगंज गोरखपुर के आयोजन दिनांक :19.12.2021 को सरयू रत्न सम्मान ''इं. राजेश्वर सिंह'' को प्राप्त हुआ।



सरयू अमृत महोत्सव बड़हलगंज गोरखपुर के आयोजन दिनांक : 19.12.2021 को भोजपुरी रामायण किताब का लोकार्पण अयोध्या के पीठाधीश्वर रामशरण दास महाराज के कर कमलों से तमाम समाज के अग्रगणी लोगों के साथ हुआ आप के आशीष का आकांक्षी।

www.bhojpurisahityangan.com



श्री वी.डी. सिंह कमिश्नर आज़मगढ़ मण्डल द्वारा पुस्तक ''एक कहानी बीच में है'' का लोकार्पण साथ में हैं कवि/शायर डॉ. मधुर नाज्मी।



डॉ. सरिता बुधु मारिशस को अपनी भोजपुरी पुस्तकें भेंट करते इं. राजेश्वर सिंह।



इं. राजेश्वर सिंह के गुरु श्रद्धेय बंगाली बाबा जी अयोध्या में अपने शिष्यों के बीच।



इं. राजेश्वर सिंह के गुरु श्रद्धेय बंगाली बाबा जी अयोध्या में अपने शिष्यों के बीच।

www.bhojpurisahityangan.com

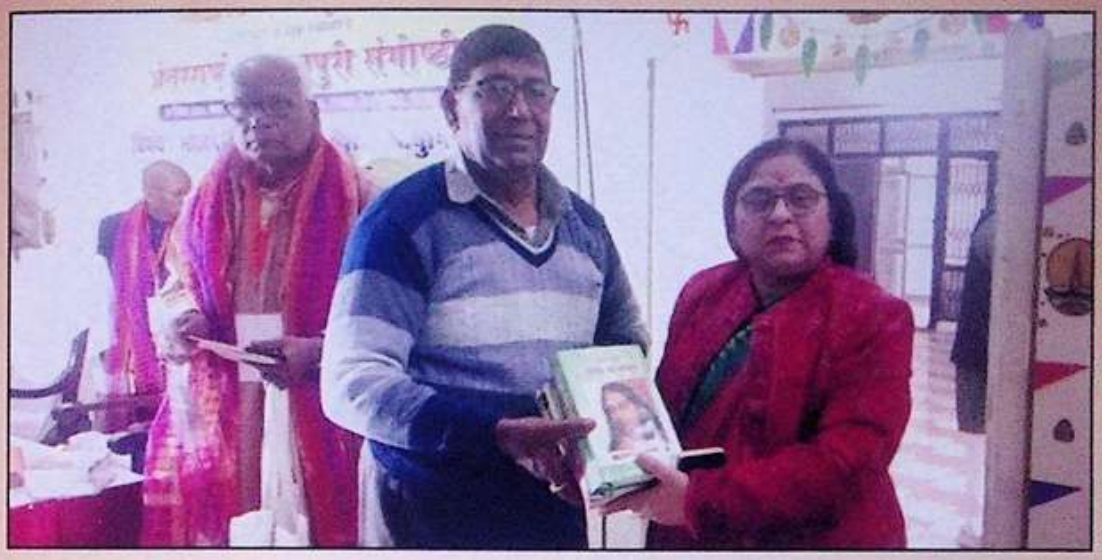


विधान सभा क्षेत्र के ग्राम टाड़ा के पृथ्वीनाथ ब्रह्मस्थान पर आयोजित श्रीराम कथा के अवसर दिनांक 29.8.2022 को कथा वाचक पूज्य शशिकान्त महाराज को 'भोजपुरी रामायण' पुस्तक भेंट करते हुए ।

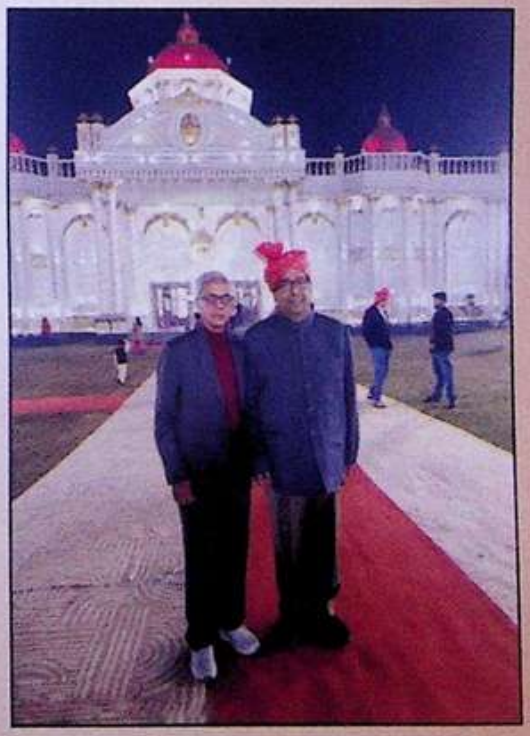


विधान सभा क्षेत्र के ग्राम टाड़ा के पृथ्वीनाथ ब्रह्मस्थान पर आयोजित श्रीराम कथा के अवसर दिनांक : 29.8.2022 को कथा वाचक पूज्य शशिकान्त महाराज को 'भोजपुरी रामायण' पुस्तक भेंट करते हुए ।

www.bhojpurisahityangan.com



प्रो० पूनम टंडन, कुलपति पं. दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर को योगी कथामृत पुस्तक भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह



बाल सखा डॉ. अवधेश कुमार सिंह के साथ दिनांक : 19.01.2025 को वाराणसी में इं. राजेश्वर सिंह।



भोजपुरी संगम द्वारा आयोजित भोजपुरी संस्कृति मंच में पुस्तक लकीर, घरेलू नुस्खे, दीक्षा गुरू का विमोचन।

www.bhojpurisahityangan.com

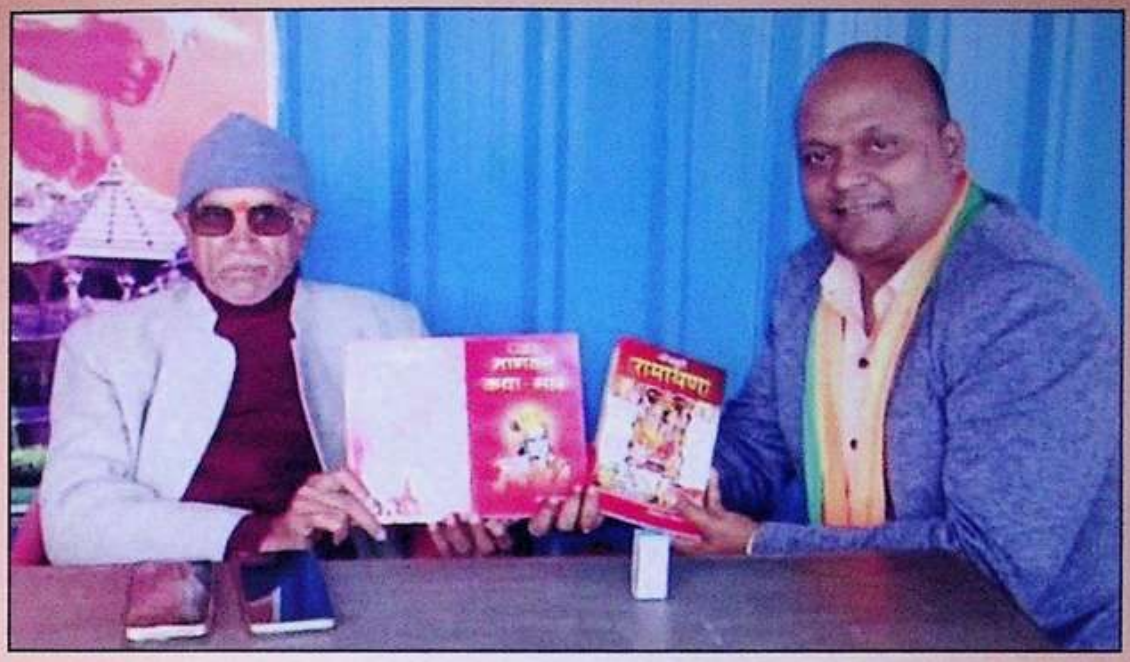


गांधी इण्टर कालेज, महुआवार, गोरखपुर के वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्ष डॉ. सुभाष शाही, मुख्य अतिथि माननीय विधायक श्री राजेश त्रिपाठी के साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में इं. राजेश्वर सिंह



भोजपुरी संगम गोरखपुर द्वारा आयोजित 'सत्तन सम्मान समारोह-2023 में श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग' को सम्मान-पत्र प्रदत्त करते हुए इं. राजेश्वर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com



विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा श्री राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव श्री चंपत राय जी को भोजपुरी रामायण व भागवत कथासार की प्रति सौंपते हुए इं. राजेश्वर सिंह जी के पुत्र इं. प्रवीण सिंह।



डॉ. राम कुमार प्रधानाचार्य, बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज एवं भजन सम्राट श्री नंदू मिश्रा को भोजपुरी योगी कथामृत भेंट करते हुए।

www.bhojpurisahityangan.com

''भोजपुरी संगम'' की मासिक बैठक की कुछ झलकियाँ





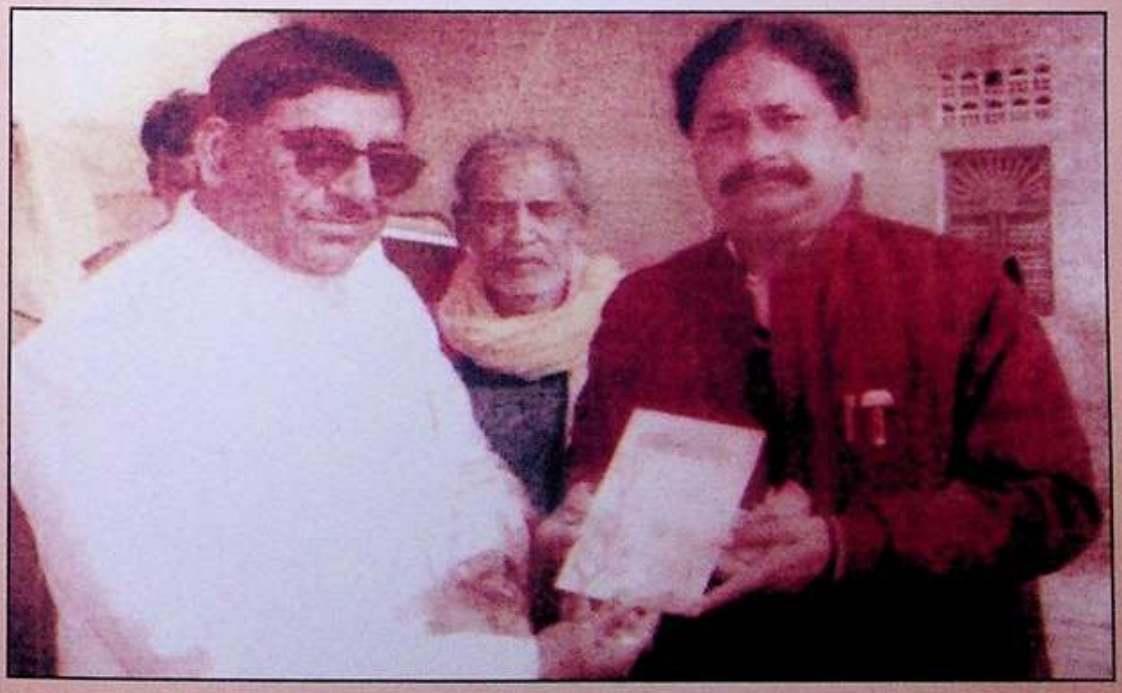




www.bhojpurisahityangan.com



कथाकार राजेश्वर, मा. राम दर्शन यादव अध्यक्ष समाजवादी पार्टी,
आज़मगढ़ जनपद को अपनी कृति भेंट करते हुए।



मा० वसीम अहमद, विधायक गोपालपुर आज़मगढ़ को अपनी कृति भेंट करते हुए कथाकार।

www.bhojpurisahityangan.com



मा० दुर्गा प्रसाद यादव विधायक-सदर को अपनी कृति भेंट
करते हुए कथाकार इं. राजेश्वर सिंह



कथाकार राजेश्वर, मा. रामआसरे विश्वकर्मा उच्च शिक्षा राज्यमंत्री को
अपनी कृति भेंट करते हुए।

www.bhojpurisahityangan.com



इं. राजेश्वर सिंह की पुस्तक 'राम पियारा साधु-सन्त' एवं शिक्षक राम नरेश शर्मा की पुस्तक 'ढेबरी' का लोकार्पण माननीय अतिथियों द्वारा।



इं. राजेश्वर सिंह की पुस्तक 'राम पियारा साधु-सन्त' एवं शिक्षक राम नरेश शर्मा की पुस्तक 'ढेबरी' का लोकार्पण माननीय अतिथियों द्वारा।

www.bhojpurisahityangan.com



श्रद्धेय रबीन्द्र नारायण चन्द 'लल्लन साहब' को 'संगम' के संस्थापक नरसिंह बहादुर चन्द एवं डॉ. रघुनाथ चन्द जी के साथ अपनी पुस्तक राम पियारा साधु-संत भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।



इं. राजेश्वर सिंह के चार पुस्तक 'घरेलू नुस्खा', 'श्याम पियारा साधु-सन्त', 'भोजपुरी महाभारत' व 'दीक्षा गुरु' का लोकार्पण दिनांक 27.12.2020।

www.bhojpurisahityangan.com



इं. राजेश्वर सिंह की चार पुस्तक ''भोजपुरी महाभारत, दीक्षा गुरू, श्याम पियारा साधु-सन्त व घरेलू नुस्खा'' के लोकार्पण हेतु मंच पर प्रो० रामदरश राय, प्रो० चितरंजन मिश्र, प्रो० अलक राय, डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी व श्री जनार्दन सिंह।



अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी संगोष्ठी में प्रबुद्ध जनों के साथ इं. राजेश्वर सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com

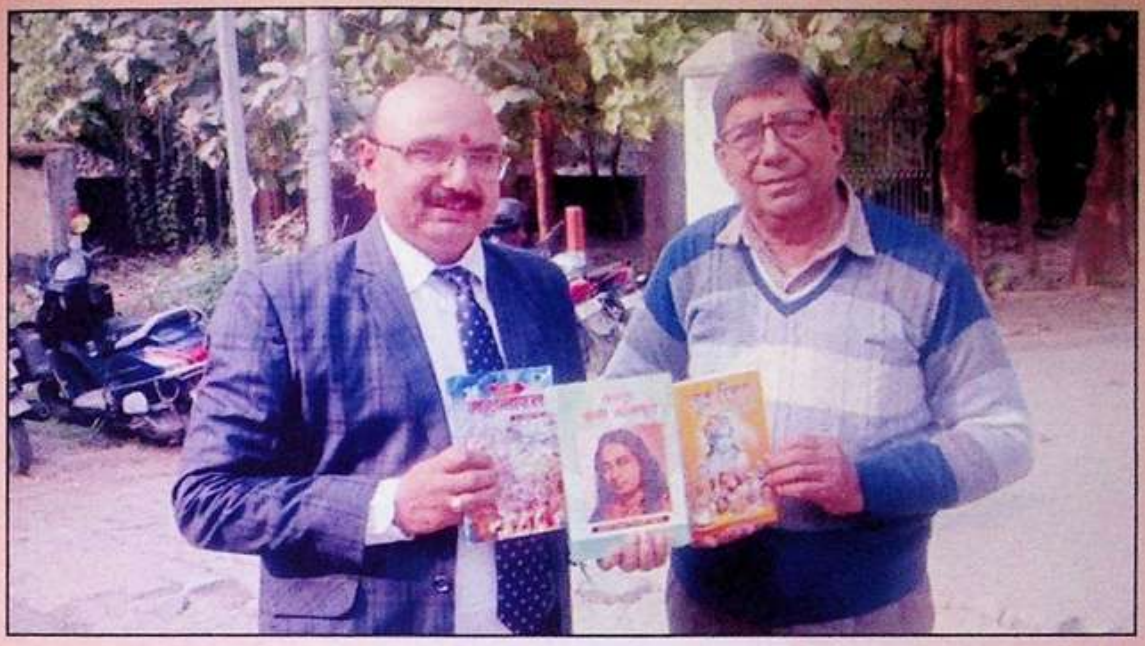


प्रख्यात लेखक, समीक्षक श्री रवीन्द्र श्रीवास्तव (जुगानी भाई) के साथ प्रवीण सिंह व इं. राजेश्वर सिंह के मिलन का यादगार क्षण।

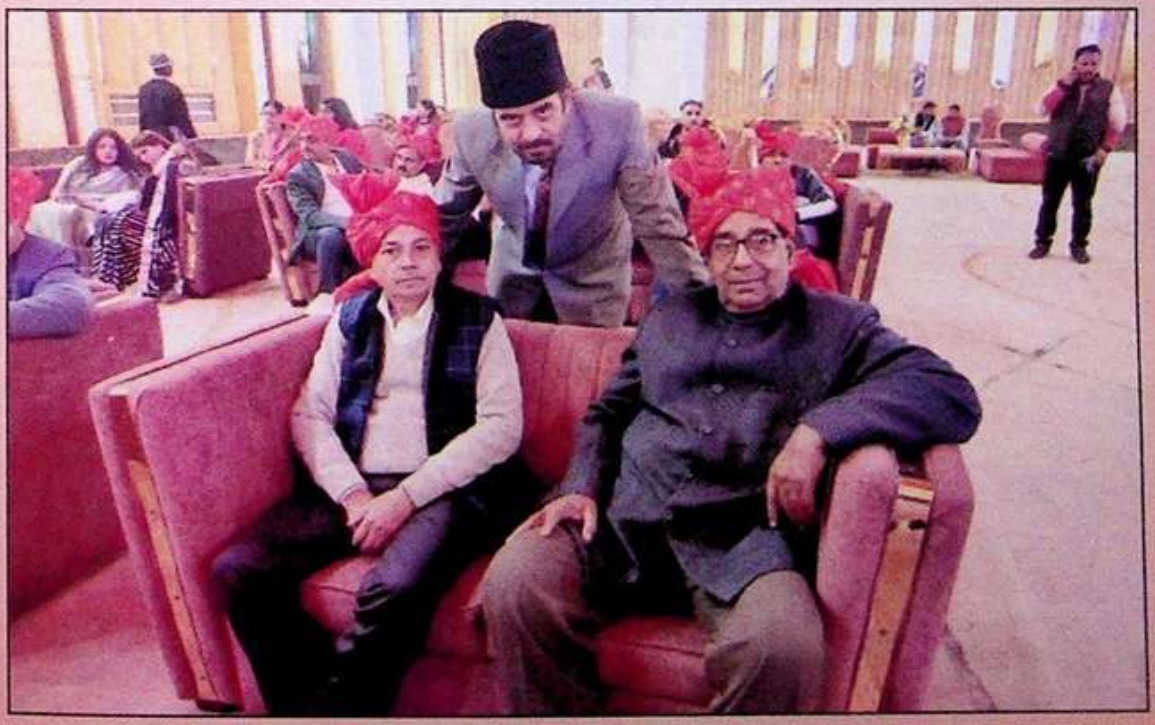


प्रो० राजा वशिष्ठ त्रिपाठी एवं इं. राजेश्वर सिंह के मिलन का यादगार क्षण।

www.bhojpurisahityangan.com



प्रो० शरद मिश्र, विभागाध्यक्ष (बायोटेक्नालॉजी) दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय को अपनी कृतियाँ भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह



इं. राजेश्वर सिंह अपने अनुज जय प्रकाश सिंह एवं भोला नाथ सिंह (पीछे खड़े) के साथ।

www.bhojpurisahityangan.com



मार्कण्डेय राय पूर्व अध्यक्ष 'पैक्सफेड' को किताब 'भोजपुरी योगी कथामृत' अपने गाँव गोपालपुर स्थित आवास पर दिनांक 08.10.2024 को भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।



भाजपा प्रदेश संयोजक (व्यापार प्रकोष्ठ) श्री विनीत अग्रवाल ''शारदा'' को ''भोजपुरी पंचतंत्र'' पुस्तक भेंट करते हुए इं. सिंह के पुत्र प्रवीण सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com



उ०प्र० सरकार के माननीय आबकारी मंत्री श्री निखिल अग्रवाल जी द्वारा बडे. कौतूहल के साथ 'भोजपुरी रामायण' का अवलोकन।



एन.ई. रेलवे के मुख्य जन सम्पर्क अधिकारी श्री पंकज कुमार सिंह जी को पुस्तक 'भोजपुरी पंचतंत्र' भेंट करते हुए ई. प्रवीण सिंह

www.bhojpurisahityangan.com



भोजपुरी सुपर स्टार संजय पाण्डेय एवं निर्देशक मानवेन्द्र त्रिपाठी को भोजपुरी योगी कथामृत एवं श्याम पियारा साधु-संत भेंट करते हुए इं. सिंह के पुत्र प्रवीण सिंह



प्रो० राजा वशिष्ठ त्रिपाठी (अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक) एवं गोष्ठी में आये अतिथियों को पुस्तक 'घरेलू नुस्खा' का भेंट।



राम गिरीश राय पी.जी. कालेज दुबौली गोरखपुर को 'राष्ट्रीयता के विकास' में 'मातृ भाषा का योगदान' विषयक संगोष्ठी में सम्बोधित करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com



इं. राजेश्वर सिंह की चार पुस्तकों का लोकार्पण दिनांक 27.12.2020 के लिए आने वाले अतिथियों के स्वागत में उनकर पौत्र स्व. श्रेष्ठ वीर सिंह।



इं. राजेश्वर सिंह की चार पुस्तकों का लोकार्पण दिनांक 27.12.2020 आमन्त्रण।

www.bhojpurisahityangan.com

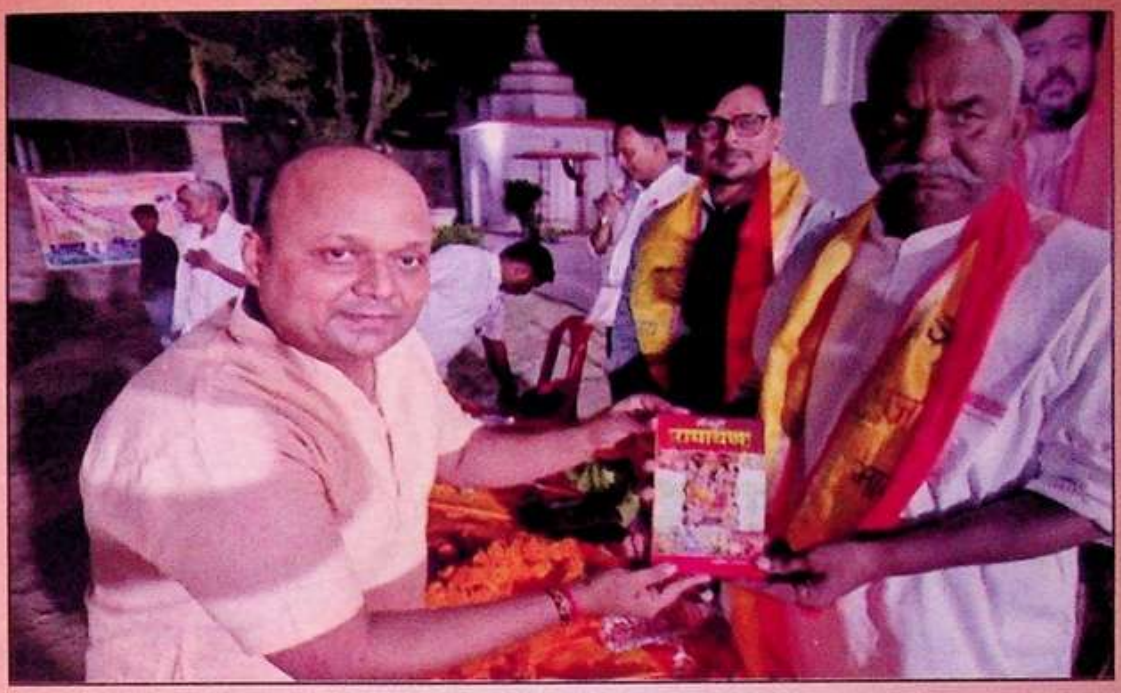


पुस्तकों के लोकार्पण दिनांक 27.12.2020 के समय
इं. राजेश्वर सिंह के पुत्र इं. प्रवीण सिंह द्वारा सम्बोधन।

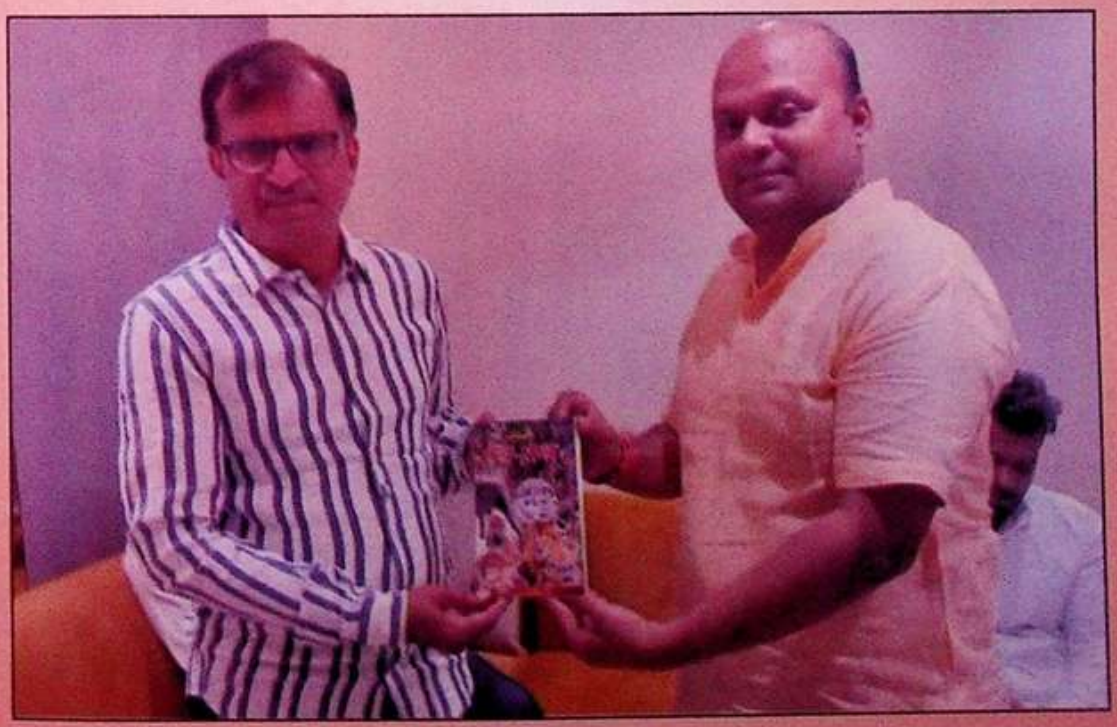


पुस्तक 'राम पियारा साधु-संत' के लोकार्पण के समय लेखक
इं. राजेश्वर सिंह द्वारा सम्बोधन।

www.bhojpurisahityangan.com



विधान सभा क्षेत्र खजनी के माननीय विधायक श्री श्रीराम चौहान जी को किताब 'भोजपुरी रामायण' भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह के पुत्र इं. प्रवीण सिंह।



श्री डॉ. मंगलेश कुमार श्रीवास्तव मा. मेयर गोरखपुर को पुस्तक 'भोजपुरी पंचतंत्र' भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह के पुत्र ई. प्रवीण सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com



प्रो० अजय शुक्ल, आचार्य दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय (हिन्दी विभाग) को अपनी कृतियां भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।



राम गिरीश राय पी.जी. कालेज दुबौली गोरखपुर के प्रधानाचार्य डॉ. अशोक कुमार शाही द्वारा इं. राजेश्वर सिंह का सम्मान।

www.bhojpurisahityangan.com



केन्द्रीय ग्राम्य विकास राज्य मंत्री श्री कमलेश पाशवान जी को भोजपुरी पंचतंत्र की प्रतियां प्रदान करते हुए इं. राजेश्वर सिंह के पुत्र इं. प्रवीण सिंह।



पूर्व सांसद एवं पूर्व उपाध्यक्ष महिला कल्याण आयोग श्रीमती अंजू चौधरी को पुस्तक भोजपुरी कथामृत भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह के पुत्र इं. प्रवीण सिंह।

www.bhojpurisahityangan.com



प्रो० सदानन्द गुप्त, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ की पुस्तक 'भोजपुरी योगी कथामृत' भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह।



श्रीराम कथा गोपालपुर के अवसर पर दिनांक : 05.10.2024 को पधारे चिल्लूपुर विधान सभा क्षेत्र के मा. विधायक श्री राजेश त्रिपाठी जी को भोजपुरी योगी कथामृत पुस्तक भेंट करते हुए इं. राजेश्वर सिंह जी

www.bhojpurisahityangan.com

१४

ग्रन्थशिल्पी : खण्ड

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

ग्रन्थ के शिल्पकार

-लेफ्टिनेट कर्नल नवीन सिंह

१. प्रो० रामदेव शुक्ल

मध्यकालीन काव्य के विद्वान, ख्यातिलब्ध कथाकार, उपान्यासकार और समीक्षक; भोजपुरी भाषा साहित्य में कथाकार एवं उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्धि, राज्य एवं राष्ट्र स्तरीय अनेक साहित्यिक संस्थानों द्वारा सम्मानित, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर। आवास : शीतल सुयश, राप्ती चौक, पोस्ट-आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर-२७३००३। मोबाइल : ९९५६५८५१९३

२. डॉ० रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी'

भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार, लोक साहित्य के विशेषज्ञ, कवि, समीक्षक और व्याख्याता। दक्ष मंच-संचालक। आकाशवाणी गोरखपुर के पूर्व वरिष्ठ अधिशासी। अब स्वतन्त्र लेखन एवं अध्ययन। जीवन काल में ही पी०एच०डी० के विषय। मोबाइल : ९९३५४५८०६३, आवास-रावत पाठशाला के सामने, तुर्कमानपुर, पोस्ट-गीता प्रेस, उ०प्र०-२७३००१

३-डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी

प्रखर वक्ता-साहित्यकार। सरल-सहज व्यक्तिगत। लोक-साहित्य के विशेषज्ञ आचार्य। भोजपुरी काव्य-वाङ्मय पर विशेषाधिकार। कहानीकार और निबन्धकार। उ०प्र० हिन्दी संस्थान से 'साहित्य-भूषण' सम्मान। अवकाश प्राप्त अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सतीशचन्द्र पी०जी० कालेज बलिया (उ०प्र०), पूर्व अधिष्ठाता : वी०ब०सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय। आवास : मालती कुंज, सिद्धार्थ इन्क्लेव विस्तार, एच०आई०जी० २-३२, तारामण्डल-गोरखपुर। मोबाइल : ९४५०६३९१७०, ९४१५६३२५३८

प्रो० चित्तरंजन मिश्र

पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ०प्र०)। भोजपुरी-वाङ्मय के विशेषज्ञ, किन्तु, हिन्दी में सर्व साहित्य के वैदुष्यविग्रह। पूर्व प्रतिकुलपति 'महात्मा गाँधी अन्तराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा (महाराष्ट्र)'। अध्यक्ष,

www.bhojpurisahityangan.com

आवासीय विश्वविद्यालय शिक्षक -संघ (उ०प्र०)। बहुज्ञ व्यक्तित्व। सहयोगी स्वभाव। विचारशील साहित्यकार। सम्प्रति साहित्य अकादमी, नई दिल्ली में हिन्दी भाषा-संयोजक। मोबाइल : ९४१५३१४४७२।

प्रो० रामदरश राय

भारतीय भाषा विज्ञान का अध्येता-व्यक्तित्व। चालीस पुस्तकों का लेखन व सम्पादन। प्राक्तन निदेशक : पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर। अध्यक्ष पूर्वांचल हिन्दी मंच, गोरखपुर। पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय परिषद उ०प्र०। भाषा पुरुष 'भाषा सम्राट' और 'सारस्वत सम्मान' आदि दर्जनभर अलंकरणों से सम्मानित। 'शब्द पुरुष', 'काव्यपुरुष' और 'भोजपुरी पुरुष' आदि आधा दर्जन मानग्रन्थों के सम्पादक। पुस्तक-समीक्षा, कवि-काव्य-आचोलना, शब्दकोष-विमर्श, मीडिया-विमर्श में विशेष अभिरुचि। 'भाषा प्रहरी' के केन्द्रीय आलम्बन। कृतकार्य आचार्य, हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर। अतिथि सम्पादक : 'सरयू के स्वर'। सम्प्रति 'हिन्दी की विश्व भूमिका' पर वृहद गवेषणात्मक अध्ययन।

मोवाइल : ९८३९८०९५५८।

वृजभूषण राय 'वृज'

पूर्वांचल के प्रमुख कवि-हस्ताक्षर। चार मौलिक काव्य-कृतियों एवं पाँच अनुवाद-काव्य के प्रणेता। स्थापित ललित निबन्धकार। कवि-किसान-शिक्षक का समवेत व्यक्तित्व। निरहंकार व्यवहार, पर शिखर स्वाभिमानी, साहित्य के प्रति रचनात्मक लगाव। साहित्य साधना केन्द्र : नउवर तीहा मुहम्मदपुर, बड़हलगंज, गोरखपुर (उ०प्र०)

मोबाइल : ९९३५५८१४१५।

प्रो० (डॉ०) अलक राय

साठ सालों से शिक्षण कार्य में लीन, वर्ष १९६४ में मदन मोहन मालवीय इन्जीनियरिंग कालेज में शिक्षण कार्य प्रारम्भ। कुछ वर्षों बाद विदेश में तीन वर्ष तक शिक्षण कार्य। कई यूरोपीय देशों में अध्ययन एवं भ्रमण-जर्मनी, इटली, फ्रांस, इगंलैण्ड आदि। आई.टी.एम. महाराजगंज में डाइरेक्टर जनरल। कई संस्थाओं के आजीवन सदस्य के साथ ई.सी.आइ. के वरिष्ठ व्यावसायिक अभियन्ता हैं। उनके पढ़ाये हुए चार हजार से अधिक अभियन्ता समाज में बड़े-बड़े पदों पर कार्यरत रहे। इं. सिंह को अभियान्त्रिकी शिक्षा प्रदान। ये श्री सिंह के आध्यात्मिक गुरु के गुरु भाई भी है। इनका आशीर्वाद श्री सिंह पर बराबर बना रहता है।

www.bhojpurisahityangan.com

श्री सिंह अक्सर इनके गुणों की चर्चा करते रहते हैं। आवास : शिवपुर, शहबाजपुर-गोरखपुर। मोबाइल : ९९३५१४३९१६,

प्रो० (डॉ०) वशिष्ठ अनूप

समीक्षक, लेखक, गीत-गजल का रचना धर्मी व्यक्तित्व। अनेक हिन्दी ग्रन्थों के लेखक और साहित्यालोचक। शीलवान आचार-विचार। आचार्य एवं अध्यक्ष-हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी। अनेक संस्थाओं से सम्मानित। आवास : २०४/११, राजेन्द्र अपार्टमेन्ट, रोहितनगर (नरिया), वाराणसी।

मोबाइल : ९४१५८९२५१२।

नन्द कुमार त्रिपाठी

मास्टर इन कम्प्टूयर साइंस एण्ड विजिनेस मैन्जमेन्ट, जमनालाल बजाज मुम्बई से परास्नातक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्डोजर्मन कल्चरल सोसाइटी मुम्बई एवं स्वामी विवेकानन्द इन्जीनियरिंग कालेज, चेम्बुर में प्रवक्ता के रूप में सेवा से अवकाश प्राप्त, हिन्दी एवं भोजपुरी में कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास आदि विभिन्न विधाओं में लेखन, विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं एवं पत्र-पत्रिकाओं से जुड़ाव। संस्थाओं से अनेक सम्मान प्राप्त। आवास : रजहट, गगहा, गोरखपुर व अधियारी बाद दक्षिणी, गोरखपुर। मोबाइल : ९३३५३७०२३६।

डॉ० अनिल कुमार राय

प्रगतिशील साहित्य-चिन्तक। प्रखर वक्ता। बेबाक विश्लेषक शिक्षक-आचार्य। संवादप्रिय व्यक्तित्व। मिलनसार स्वभाव। भाषा-साहित्य-व्याकरण-साहित्यशास्त्र आदि प्रमुख विधाओं में दो-टूक विमर्श। प्रमुख साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध। पूर्व अध्यक्ष-हिन्दी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ०प्र०)।

मोबाइल : ९४१५०८०५००।

रवीन्द्र मोहन त्रिपाठी

कवि, लेखक और समीक्षक। लगभग सवा दो सौ पुस्तकों के प्रकाशक। आदर्श पितृ भक्त। 'कचरा पेटी', 'तर्पण', 'वायस्कोप' ग्रन्थ के रचनाकार। 'सुधा-संस्मृति संस्थान' के संस्थापक। प्रख्यात साहित्यकार और स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री सुधाविन्दु के सुपुत्र। आवास : ५२७, कृष्णा नगर प्राइवेट कालोनी, बशारतपुर, गोरखपुर (उ०प्र०),

मोबाइल : ९९३५९२६९४६।

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ० बृजेन्द्र नारायण

मूल निवासी : ग्राम-खलारी, जिला-राँची (झारखण्ड), शिक्षा : एम.ए. (अर्थशास्त्र, हिन्दी, भूगोल), पी.एच.डी.। हिन्दी कविता, कहानी तथा भोजपुरी कहानी एवं उपन्यास लेखन में अभिरुचि। सम्प्रति कार्यक्रम अधिसासी, आकाशवाणी व दूरदर्शन, गोरखपुर।

महेश नारायण त्रिगुणायत

हिन्दी एवं संस्कृत के भाषा-वर्तनी-विशेषज्ञ। भाषा विज्ञान और पत्र-साहित्य के अध्येता। कोश विज्ञान और व्याकरण-विधा के जानकार-भाषाकार। प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक मीडिया-तकनीक-विशेषज्ञ। स्फुट काव्य लेखन भी। राष्ट्रीय विचारधारा से सम्पन्न संघर्षरत व्यक्तित्व। मोबाइल : ९९३५५४७६९१।

डा० फूलचन्द त्रिपाठी

भाषा शास्त्र, रीति शास्त्र और लोकशास्त्र के अध्येता-शिक्षक। दोहाकाव्य, गजलकाव्य और नवगीत के आख्याता-आचार्य। समीक्षक, लेखक, सम्पादक, वक्ता और संगोष्ठी के दक्ष संचालक। प्राचार्य, बी.यस.ए.वी.पी.जी. कालेज, गोला-गोरखपुर। मोबाइल : ९९३५४७३८६७

डॉ० फूलचन्द प्रसाद गुप्त

महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, गोरखपुर में वरिष्ठ हिन्दी प्रवक्ता। भोजपुरी काव्य-साहित्य पर पी-एच०डी० की उपाधि। नाथ-साहित्य की समझ। भोजपुरी कहानी, काव्य, निबन्ध और व्यंग साहित्य पर प्रकाशित दर्जन भर पुस्तकें, कई प्रकाशकाधीन। 'शब्दपुरुष', 'काव्यपुरुष', 'भोजपुरी कऽ बेटा' और 'सरयू के स्वर' जैसे ऐतिहासिक ग्रन्थों के सम्पादक मण्डल में सदस्य। सुकण्ठ गीतकार, समझदार मंच-संचालक। परिश्रमी शिक्षक, व्यवहार कुशल मनुष्य। 'भाषा प्रहरी' एवं 'भोजपुरी कऽ बेटा' ग्रन्थों के प्रधान सम्पादक। मोबाइल : ९७९३०६७७४१।

कुमार अभिनीत

भोजपुरी भाषा-साहित्यानुरागी। भोजपुरी कवि-साहित्यकार स्व० सत्यनारायण मिश्र 'सत्तन' के पुत्र। पितृ-कर्तृत्व के अनगामी। 'भोजपुरी संगम' गोरखपुर के संयोजक। सरल एवं मृदुभाषी व्यक्तित्व। परिषदीय विद्यालय में शिक्षक। आवास : ६६, खरैया पोखरा, बशारतपुर, गोरखपुर (उ०प्र०)। मोबाइल : ७३५५००७४८७।

डॉ० अंगद कुमार सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर-हिन्दी, जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बासगाँव, गोरखपुर। स्वतन्त्र और संयुक्त रूप से दर्जनाधिक पुस्तकों का प्रकाशन। 'शब्दपुरुष', 'काव्यपुरुष' और 'भोजपुरी

www.bhojpurisahityangan.com

पुरुष' के सम्पादन और लेखन में सक्रिय रचनात्मक सहयोग। उत्साह-सम्पन्न युवा साहित्यकार। शोध-पत्रों एवं आलोचनात्मक लेखों के प्रकाशन में विशेष रूचि। मीडियामुखी पत्र-साहित्य से सम्पूर्ण सरोकार।

मोबाइल : ७४६०८५६२०६।

कनक किशोर

हिन्दी एवं भोजपुरी के दक्ष रचनाकार, विनम्र व व्यवहार-कुशल व्यक्तित्व।

भोजपुरी में काव्य संग्रह-'हरियरी रोपत हथेली', 'गाँव गावे गीत', 'कठपुतरी (अनुदित)', 'अन्हरिया-अँजोरिया'। 'धधकत-सुरुज', 'पियासल धरती'। भोजपुरी कथेतर गद्य संकलन : 'रंग-विरंग', रंग-विरंग-२, रंग-विरंग-३।

हिन्दी में काव्य संग्रह : 'जिनगी धुआ-धुआँ', 'छिपी मुस्कानों की दर्द', 'हरित उलगुलान', 'भाप बन उठती जीवन के गंध', 'जोहार भोजपुरिया माटी भाग-१', 'लघु कथा संग्रह-भोजपुरिया माटी-२', 'व्रत कथा-जोहार भोजपुरिया माटी-३', आलोचना संग्रह-'जोहार भोजपुरिया माटी-४', गद्य संकलन-'रामकहानी आपन-आपन', आलोचना के चौपाल भाग-२ में, आरोही रचनावली-तीन खण्ड में, भोजपुरी कथा कोश सहित चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह क स्मृति ग्रन्थ-दू भाग में। इसके अलावा भी कई पुस्तकों की रचना, पत्रिकाओं में बहुतेरे रचनायें प्रकाशित। आवास : बी/९, नेताजी नगर रोड नं०-२, कांटा टोली, रांची-८३४००१ झारखण्ड। मोबाइल : ९१०२२४६५३६, ९२७९२००४०१।

अमित सिंह 'बंटी'

कर्मनिष्ठ, अपने धुन के पक्के, परिश्रमी युवक, ठेकेदारी के साथ-साथ हिन्दी-भोजपुरी के साहित्य रचना के गुण सीखने ली लालसा। ग्राम-पोस्ट-हरिहरपुर, जिला-गोरखपुर के निवासी। ये इं. सिंह के साला श्री महेन्द्र सिंह जी के द्वितीय पुत्र हैं।

मोबाइल : ९८८९९६०६५६३।

जयनाथ यादव

समाचार पत्र जनवार्ता हिन्दी दैनिक से लेखाकार पद से सेवानिवृत्त। सेवानिवृत्ति के बाद कई समाचार पत्रों में सलाहकार। पत्रकारिता में अभिरुचि, सहकारिता क्षेत्र से जुड़ाव। समाजसेवी, वर्तमान में कई समाजसेवी संस्थाओं व संगठनों से जुड़ाव। 'पूर्वांचल प्रिंटर्स'-वाराणसी और 'पी.डी. एण्ड वाई.वाई. मिनरल वाटर पैकेजिंग'-गोरखपुर के संस्थापक। इं. सिंह के बाल-सखा। स्थायी निवास : ग्राम-रकौली, पोस्ट-गोपालपुर, जनपद-गोरखपुर, वर्तमान आवास :

www.bhojpurisahityangan.com

गायत्री नगर कालोनी, पाण्डेयपुर-वाराणसी (उ०प्र०) मोबाइल : ९४१५२०५२२०।

जयप्रकाश नारायण राय

उ०प्र० जल निगम से सेवानिवृत्त, जूनियर इन्जीनियर, कर्मठ, लगनशील एवं व्यवहारकुशल व्यक्तित्व। जिम्मेदारी से जूझना, हार न मानना, यथाशक्ति सफलता हासिल करने की ओर अग्रसर रहना, कन्धा से कन्धा मिलाकर संगी-साथियों का मदद करना स्वभाव में शामिल। आवास : एन ३/६५ सी-४, प्रज्ञानगर, सुन्दरपुर-वाराणसी-२२१००५, मोबाइल : ९३३५४३८५९७, ९४५०७३४०६।

रत्नाकर सिंह

पिता इतिहास विद् स्वर्गीय डा० रामवृक्ष सिंह, विधि स्नातक, चार दशकों का पत्रकारिता अनुभव जिसमें नवभारत टाइम्स-नई दिल्ली, अमर उजाला-वाराणसी, दैनिक जागरण-गोरखपुर, लीडर इलाहाबाद से जुड़ाव। 'आज' गोरखपुर में सम्पादक रहे तथा वर्तमान में लोक भारत कानपुर से गोरखपुर में राज्य मान्यता प्राप्त पत्रकार एवं सिविल कोर्ट गोरखपुर में विधि व्यवसाय। ये इं. सिंह के मामेरा भाई हैं। निवास-मुहद्दीपुर-गोरखपुर। मोबाइल : ८७०७३९७८१९।

सुभाष चन्द्र यादव

सेवा निवृत्त प्राचार्य, दारोगा प्रसाद राय डिग्री कालेज, सीवान (बिहार), सुकण्ठ गीतकार, मंचीय कवि, भोजपुरी एवं हिन्दी के गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं के सशक्त रचनाकार, सोलह संस्थाओं से सम्मानित, कई पत्र-पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित। आवास : रानीडीहा, खोराबार, (संस्कृति पब्लिक स्कूल के सामने) गोरखपुर। मोबाइल : ९३०४२७०९१३, ९९७३५५५३२१।

अजय यादव

परिषदीय विद्यालय में कुशल शिक्षक, युवा कवि व नाटककार, पिता सुकण्ठ गीतकार सुभाष चन्द्र यादव। आवास : रानीडीहा, खोराबार-गोरखपुर (संस्कृति पाब्लक स्कूल के सामने)।

मोबाइल : ८०८१५०२५२५, ८२९९३६४०१०।

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

भोजपुरी साहित्य सृजन क प्रेरणास्रोत, पचासों बरिस से साहित्य सेवा में लीन, सरल, सहज, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी, हिन्दी सहित भोजपुरी के विभिन्न विधाओं हास्य व्यंग्य, उपन्यास, नाटक, कहानी संग्रह, गजल-संग्रह, गीत-नवगीत-संग्रह और बाल-गीत संग्रह आदि में लगभग तीस पुस्तकों का सृजन करते हुए साहित्य जगत का निरन्तर सेवा, वर्ष २०११

www.bhojpurisahityangan.com

में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के चौबीसवें अधिवेशन के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने का गौरव प्राप्त, अनेक संस्थाओं से सम्मानित। सम्पर्क : द्वारा-श्री देवेन्द्र मिश्र, सी-४९९/एफ, इन्दिरानगर, लखनऊ-२२६०१६। मोबाइल : ९४५१४६२७७३।

इं. राजेश्वर सिंह

हिन्दी-भोजपुरी में इक्कीस पुस्तकों का प्रणयन। भोजपुरी-साहित्य लेखन में विशेष अभिरुचि। 'महाभारत', 'भागवत कथा-सार', 'भोजपुरी रामायण', 'साधु-संन्यासियों के जीवन-चरित', 'पंचतन्त्र', 'योगी कथामृत' का भोजपुरी-गद्य में लेखन व भावानुवाद। अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित। पूर्व अधीक्षण अभियन्ता उ०प्र० जल निगम, पूर्व वरिष्ठ सलाहकार, बिहार सरकार व मध्य प्रदेश सरकार। आवास : एम.आई.जी.-७७, राप्तीनगर प्रथम, गोरखपुर-उ०प्र०-२७३००३।

मोबाइल : ९४१५२०८५२०।

विजय प्रताप शाही

सोरठा, दोहा, चौपाई, छंद एवं कविता, गीत, गजल-गीतिका आदि विधाओं में हिन्दी, भोजपुरी, अवधी भाषा में साहित्य सृजन। प्रताप इन्टरप्राइजेज, राप्तीनगर एवं प्रताप आटो सेल्स एवं सर्विस सेंटर, गोरखपुर प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध। 'श्री हनुमंत प्रकाश' पुस्तक के सर्जना से बहुचर्चित। आवास : ११८, एल.आई.जी. राप्तीनगर प्रथम चरण, गोरखपुर-२७३००३।

मोबाइल : ९९३५०२५९०१, ६३८८२३६३६०।

डा० ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी

कुशल शिक्षक, श्री दुर्गाजी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चण्डेश्वर-आजमगढ़, प्रकाशित रचनायें : भोजपुरी खण्ड काव्य-शकुन्तला, दमयन्ती, मुक्तक संग्रह : न तो कश्ती मिली न किनारा मिला एवं दर्द का व्याकरण नहीं होता; गजल-संग्रह : 'तुम भी इसी इसी शहर में, हम भी इसी शहर में,' एवं 'कबीर हैं, कबीर रहने दें।' महाराज सुहेलदेव राज्य विश्वविद्यालय आजमगढ़ के स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम में भोजपुरी खण्डकाव्य शकुन्तला सम्मिलित, उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा सर्जना पुरस्कार, आकाशवाणी, दूरदर्शन से काव्य पाठ प्रसारित राष्ट्रीय काव्य मंचों पर आकर्षक काव्य पाठ एवं उत्कृष्ट मंच संचालन।

आवास : महगुपुर धाहर (ग्राम व पोस्ट) जनपद-आजमगढ़-२२३२२३।

मोबाइल : ९४५५८८५८६५।

www.bhojpurisahityangan.com

बागेश्वरी प्रसाद मिश्र 'बागीश'

भोजपुरी एवं हिन्दी कविताओं के सिद्ध रचनाकार, गद्यकार, कवि-गोष्ठियों में सक्रिय सहभागिता। लखनऊ, दिल्ली आकाशवाणी एवं दूरदर्शन गोरखपुर से कविताओं का प्रसारण, 'गीत के गाँव में', 'बहका हूँ बार-बार', 'गीत-बागीश' के रचनाकार पूर्व प्रधान प्रबन्धक, उ०प्र० राज्य चीनी मिल, लखनऊ। आवास : ११६-बी, विष्णुनगर, बशारतपुर, गोरखपुर। मोबाइल : ९४५११२६११५।

चन्देश्वर 'परवाना'

सुकण्ठ गीतकार, कहानीकार, कुशल मंच संचालक, कई काव्य-समूहों के प्रणेता, उ०प्र० हिन्दी संस्थान से राहुल सांकृत्यायन सम्मान से सम्मानित। भोजपुरी भाषा-साहित्य के प्रति समर्पित, अध्यापन कार्य से सेवानिवृत्त। आवास:भठही राजा, अहिरौली बाजार वाया कसया, कुशीनगर-२७४४०२। मोबाइल : ८९५३३००९३३।

भीम प्रसाद प्रजापति

युवा कवि और लेखक। कई काव्य संग्रहों और कहानीं संग्रहों के रचयिता। 'हाइकु' काव्य के प्रणेता। योग्य शिक्षक। विनम्र एवं मिलनसार स्वभाव। प्रधानाध्यापक, प्राइमरी पाठशाला लबकनी-१, गौरी बाजार, देवरिया (उ०प्र०)। मोबाइल : ९८३८८५२२१३।

डॉ० अमिताभ पाण्डेय

गीतकार, कहानीकार और पत्रकार। दक्ष कवि-मंच संचालक। व्यवहारकुशल, मृदुभाषी व्यक्तित्व। कार्यालय अधीक्षक : सर्वोदय किसान पी०जी० कालेज, कौड़ीराम, गोरखपुर उ०प्र०। मोबाइल : ९४१५५४०६५१।

वृजेश कुमार राय

युवा कवि एवं योग्य शिक्षक। कवि गोष्ठियों में सहभाग। 'गुरुदक्षिणा' काव्य की रचना से नयी पहचान। 'युद्ध' काव्य के प्रणयन से काव्य प्रतिभा की विस्तीर्ण पहचान। संयोजन और संगठन के साहित्यिक दायित्व में विशेष अभिरुचि। मोबाइल : ९९३५६२७५००।

डॉ० अजय राय 'अनजान'

युवा कवि, लेखक और वक्ता। काव्य गोष्ठियों में सक्रिय सहभाग, कई पुस्तकों का प्रकाशन। 'पहला कदम' काव्य प्रकाशित। 'अंगद के पाँव' प्रकाश्य काव्य। 'शब्द प्रहरी' : कुबेरनाथ राय जैसी प्रकाशित शोधकृति से उभरा आलोचक व्यक्तित्व। असिसटेन्ट प्रोफेसर-हिन्दी विभाग, सर्वोदय किसान पी०जी० कालेज, कौड़ीराम, गोरखपुर। मोबाइल : ८३८१८३९०००।

www.bhojpurisahityangan.com

किरन विश्वकर्मा

काव्य-साहित्य एवं कहानी लेखन में अभिरुचि। पता : १०६, सावन्त आर्केड, शिवमन्दिर रोड, अमरनाथ (पूर्वी) महाराष्ट्र-४२१५०१। मोबाइल : ७०४२७३७८९४।

इं. एम.आई. अन्सारी

अवकाश प्राप्त सहायक अभियन्ता, उ० प्र० जल निगम। इं. सिंह के विभागीय सेवाकाल में अधिशासी अभियन्ता के पद पर, संत कबीर नगर में तैनाती के समय प्रमुख सहयोगी। मोबाइल : ९९३५०२३७११।

प्रमोद कुमार सिंह

अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, लखनऊ। आवास : ६३२/००३/१८७ शिवपुरी, निकट-जल निगम पानी टंकी, कमता, चिनहट-लखनऊ-२२६०२८। इं. सिंह के ये भाँजा (भगिना) हैं।

मोबाइल : ८०५२५४८४२८।

डा० 'बहार' गोरखपुरी

उर्दू, हिन्दी एवं भोजपुरी के सशक्त रचनाकार, काव्य गोष्ठियों में सक्रिय सहभागिता। होमियोपैथिक इलाज पद्धति में अच्छी पैठ, समाज सेवा में सतत् लीन। आवास : ३४४-जाफरा बाजार, गोरखपुर (उ०प्र०) मोबाइल : ९६९५२२१७३८।

डॉ० महामाया प्रसाद 'विनोद'

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका के प्रधान संपादक, लगनशील, कर्मठ, अपने धुन के पक्के, मृदु-भाषी, भोजपुरिया रस में सदा रस-बोर रहने वाला भोजपुरी रचना में सदा लीन रहने वाला समर्पित इंसान। आवास-बिहार विधान परिषद, आवासीय परिसर-आर० ब्लाक, आवास सं०-२७, पटना-८००००१।

मोबाइल : ९४३००५४२३६।

इं. कृष्ण कुमार सिंह

उ०प्र० जल निगम में सेवा करते हुए मुख्य अभियन्ता पद से सेवानिवृत्त, अति सज्जन, सरल, मृदुभाषी, कर्मठ, लगनशील व्यक्तित्व के धनी, धार्मिक प्रवृत्ति। इं. सिंह के इन्जीनियरिंग पढ़ाई के समय के सहपाठी, अभिन्न मित्र। ग्राम बसन्तपुर, जनपद-बलिया के मूल निवासी। वर्तमान आवास : सी ८५ सेक्टर-एम, अलीगंज-लखनऊ-२२६०२४। मोबाइल : ९४५०९५७२७२।

www.bhojpurisahityangan.com

डा० राम अवतार चन्द

समाज सेवी, प्रखरवक्ता, घुघली-महाराजगंज में चन्द क्लीनिक, कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़ाव। साहित्य सृजन में अभिरुचि। आवास : लेन नं० २, सन्त राधा बाबा मार्ग, सेक्टर-३, जंगल सालिकराम, गोरखपुर। मोबाइल : ९४१५८२३५२७।

डॉ० सरिता सिंह

सुकण्ठ गीतकार एवं कवयित्री, कहानीकार, समाज सेवी, स्वास्थ्य कार्यकर्ती। नारी पुष्प पलाश, अन्तर्हीन, सफर, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन, विभिन्न संस्थाओं से सारस्वत सम्मान। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से काव्यपाठ। मोबाइल : ७९८५४६६९९६।

चन्द्रगुप्त प्रसाद वर्मा 'अकिंचन'

हिन्दी एवं भोजपुरी के सशक्त रचनाकार, विभिन्न संस्थाओं से सम्मान प्राप्त, सरल, सहज, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी। पन्द्रह पुस्तकों के सृजनकर्ता, समाजसेवी, समीक्षक। आवास : १९, रूद्रपुर (बेनीगंज-ईदगाह रोड) गोरखपुर-२७३००१। मोबाइल : ९३०५९८८२५२।

प्रेमलता 'रसविन्दु'

कुशल शिक्षिका, समाज सेविका, हिन्दी की गद्य-पद्य दोनों विधा की रचनाकार, मंचीय कवयित्री। कई संस्थाओं से सम्मानित। आवास : पुराना गोरखपुर (वासुदेव मंदिर के पास), पोस्ट-गोरखनाथ, गोरखपुर-२७३०१५। मोबाइल : ८७५६६००५२५।

डा० गंगेश्वर प्रसाद द्विवेदी

हिमांचल प्रदेश में स्वास्थ्य विभाग में चिकित्सा सेवा करते हुए उप निदेशक पद से सेवा निवृत्त, हँसमुख, मिलनसार, अपने कर्तव्य के प्रति सदा जागरूक रहने वाला। इं. सिंह के गाँव के रहने वाले बाल-सखा। वर्तमान पता : १७५/१४, यमुना विहार, वार्ड नं० ५, पोन्टा साहब, जिला-सिरमौर (हिमांचल प्रदेश)-१७३०२५।

मोबाइल : ७०१८७००४६२७, ९८१६०२९५०७।

नथुनी प्रसाद कुशवाहा उर्फ रामपति रसिया

सीधे-सादे, सरल पर पुरहर स्वाभिमानी, भोजपुरी कवितई में रचल-बसल, कई पुस्तकन के रचनाकार। 'अँजोरिया में बदरी' 'घेरले बा बदरी', श्रद्धा, ओरहन, गोरखपुर शहरनामा किताब में चर्चित साहित्यकार। पता : गाँव-मोरवन, पोस्ट-माधोपुर, जनपद-कुशीनगर।

मोबाइल : ९९१८९२९०९०।

www.bhojpurisahityangan.com

इं. दर्शन प्रसाद

उ०प्र० जल निगम से सहायक अभियन्ता के पद से सेवानिवृत्त। सरल, सहज, मृदुभाषी, लगनशील व्यक्ति। इं. सिंह के आजमगढ़ तैनाती के समय प्रमुख सहयोगी के रूप में सेवारत। आवास : एल.आई.जी.-६०, नेताजी सुवास चन्द्र वोस नगर, निकट सूरजकुण्ड, गोरखपुर-२७३०१५।

मोबाइल : ९४५०६८७७६०।

अरविन्द 'अकेला गोरखपुरी'

'अँजुरी भरि गीत' काव्य संग्रह के रचयिता, भजनानन्दी, भोजपुरी साहित्य सृजन के प्रति समर्पित, व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के धनी। आवास : रामकृष्णपुरम्, पो०-जंगल सालिकराम, पादरी बाजार, गोरखपुर-२७३०१४। मोबाइल : ९४५१५२०८१७।

रमेश राय

कुशल शिक्षक, सरल, सहज एवं मिलनसार व्यक्तित्व। साहित्य सृजन में अभिरुचि। राय सनसथी, कुण्डलिका, अँधेरे का फूल, बेगम सती का चौरा, मुकदमेबाज, उपन्यास एवं राम रसायन (राम कथा), धार्मिक काव्य के रचयिता। अध्यक्ष : पूर्वांचल साहित्य समिति, मुहम्मदाबाद गोहना, जिला-मऊ। (उ०प्र०)। आवास : ग्राम-भुजही, पो०-सवंसरवा, जिला-मऊ। मोबाइल : ९४५१६४९३८२।

हरिशरण दास

सिद्ध पुरुष श्री राम सुभज्ञदास जी महाराज के समाधि स्थल ग्राम-बहीडाँड़ी (बासगाँव, गोरखपुर) पर सतत् साधनारत। बाल ब्रह्मचारी महात्मा, जून-२००३ में श्री राम महायज्ञ, गोपालपुर के प्रमुख आयोजक/कर्णधार। पता-समाधि स्थल-बहीडाड़ी, पोस्ट-बासगाँव, जनपद-गोरखपुर-२७३४०३। मोबाइल : ९९३५९७६०९१।

पवन शर्मा

हिन्दी व भोजपुरी में गद्य एवं पद्य के सशक्त रचनाकार, काशी वासी, इं. सिंह के अनुज भोलानाथ सिंह के अभिन्न मित्र।

मोबाइल : ९३३०७७७२६१।

प्रो० यू०के० वर्मा

साधक शिरोमणि, गायत्री शक्ति पीठ से सतत् जुड़ाव के साथ समाज में आध्यात्म के प्रति लगाव बढ़ाने हेतु उत्साह वर्धन में अभिरुचि। होमियोपैथिक विधि से उपचार में गहरी

www.bhojpurisahityangan.com

पैठ होने से समाज में स्वस्थ जीवन के लिए प्रयासरत। सिवान (बिहार) के स्थायी निवासी, वर्तमान में राप्तीनगर प्रथम, गोरखपुर में प्रवास। मोबाइल : ९९३५३१२२६०, ९७९२१४१९४९।

सुरेन्द्र कुमार सिंह 'चांस'

सरल, सहज, मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी। पैतृक गाँव में रहते हुए कृषि कार्य और लेखन में सक्रिया। लगभग १५० पत्र-पत्रिकाओं में कविता, गीत, आलेख, समाचोलना और लघु कथायें प्रकाशित। काव्य मंचों एवं आकाशवाणी से कविता पाठ, स्टोरी मिरर डिजिटल प्लेटफार्म पर कविता, कहानी, कोट्स का नियमित लेखन जिससे गुग्गुल पर सुरेन्द्र कुमार सिंह बोलकर खोला और पढ़ा जा सकता है। प्रकाशित कृतियाँ : लिखना मेरे लिए (कविता संग्रह), मनुष्य हाजिर है (उपन्यास), नया प्रेम (गीत संग्रह), रोमांश चल रहा है (कविता संग्रह)।

आवास : ग्राम व पोस्ट-राजापुर, जनपद-मऊ (उ०प्र०) मोबाइल : ८४००५४५९९९।

डॉ० प्रवीण तिवारी

बी०एड०, एम०ए०, एम०बी०ए०, पी०एच०डी० जैसी उच्च उपाधियों से विभूषित कुशल शिक्षक वी०यस०ए०वी० इण्टर कालेज, गोला-गोरखपुर। स्वभाव से सरल, सहज, मिलनसार, समाज सेवा के लिए सदा तत्पर, दिवंगत परिजनों की याद में 'आँसू पोछो-वृक्ष लगाओ' एक सामाजिक आन्दोलन के कर्णधार जिसके अन्तर्गत ५००० से अधिक वृक्ष लगा चुके हैं और लगाते ही जा रहे हैं जो एक प्रशंसनीय व बन्दनीय कृत्य है।

आवास : माँ शारदा चित्र मन्दिर, गोला, गोरखपुर। मोबाइल : ९९५६०२४०१४, ८२९९१८१२०३५।

रामनरेश शर्मा 'शिक्षक'

स्वभाव से सरल, सहज, मधुर भाषी एक कुशल शिक्षक के रूप में सेवा करते हुए लघु माध्यमिक विद्यालय से अवकाश प्राप्त, सुन्दर, शिक्षाप्रद, लघु कथाओं से भरपूर पुस्तक 'ढेवरी' के सृजन कर्ता। आवास : हनुमन्त नगर, पादरी बाजार, गोरखपुर। मोबाइल : ९००५८४०८२६।

डा० सुधीर कुमार श्रीवास्तव 'नीरज'

सुमधुर गीतकार, हिन्दी एवं भोजपुरी दोनों भाषाओं में साहित्य सृजन। प्रकाशित कृतिया : 'कौस्तुभ', 'मैना', 'रफ्ता रफ्ता चल मुसाफिर', 'जिन्दगी की तप्त राहें'। सम्पादन : 'राम

www.bhojpurisahityangan.com

का ब्रह्मत्व और रावण' कई समाचार पत्रों से जुड़ाव।

आवास : समीर स्ट्रीट, राजेन्द्र नगर पूर्वी, गोरखनाथ, गोरखपुर।

मोबाइल : ९४१५२८३२५८, ९९४००१६६६९।

सीमा सिंह

हिन्दी एवं भोजपुरी साहित्य पठन-पाठन में अभिरुचि, व्यवहार-दक्ष, पाक विद्या में निपुण, कुशल गृहणी। ये इं. सिंह की द्वितीय पुत्र बधू हैं।

प्रो० (डॉ०) सविता कुमारी

प्रोफेसर-हिन्दी, हेमवतीनन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी-प्रयागराज। लेखक, समीक्षक, व्यवहार-दक्ष, मृदु वाग्मिता का सबल नारी व्यक्तित्व। आवास : फ्लैट नं० ए २-१०५, जागृति विहार, आवासीय योजना, लाकिंदीपुरम्, प्रयागराज-२११०११।

मोबाइल : ९४५०६०५१६६।

इं. प्रवीण सिंह

अच्छे समाज सेवक, विभिन्न संस्थाओं से जुड़ाव, हिन्दी एवं भोजपुरी साहित्य में रुचि, प्रखर वक्ता। ये इं. सिंह के पुत्र हैं।

आवास : एम.आई.जी.-७७, राप्तीनगर, गोरखपुर-२७३००३।

मोबाइल : ८७५६९७०१७१।

तृप्ति सिंह (तनु)

गृह विज्ञान में मास्टर डिग्री प्राप्त कुशल गृहणी, हिन्दी साहित्य पठन-पाठन व सृजन में रुचि। ये इं. सिंह की पुत्री हैं।

मोबाइल : ८२९९३९०३६९।

योगेन्द्र नाथ शुक्ल

प्रांतीय मंत्री, उ०प्र० माध्यमिक शिक्षक संघ गोरखपुर। कुशल शिक्षक, भावपूर्ण लेखों के माध्यम से अनेक पत्रिकाओं से सम्बद्धता विद्यमान है। आवास : म०न० १२५ पी, आजाद नगर सेक्टर ४, (महानगर पब्लिक स्कूल के पीछे), गोरखनाथ, गोरखपुर (उ०प्र०)। मोबाइल : ८३१८७४५७९५।

www.bhojpurisahityangan.com

सुरेश सिंह

प्रधानाचार्य, जूनियर हाईस्कूल, बट्टूपुर, कप्तानगंज, बस्ती, कुशल शिक्षक, विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से समाज सेवा, प्रखर वक्ता। आवास : मूरघाट कटरा, बस्ती बाइपास-बस्ती। मोबाइल : ९७२१५५३०६६।

रमा सिंह

परिषदीय विद्यालय में कुशल शिक्षिका, हिन्दी व भोजपुरी साहित्य में रुचि। आवास : मूरघाट कटरा, बस्ती बाई पास-बस्ती (पिन-२७२००१)। मोबाइल : ८६०४३५१६५७, ये इं. सिंह की भतीजी हैं।

भूपेन्द्र प्रताप शाही

उत्तर प्रदेश सिंचाई विभाग से सेवानिवृत्त, बरिष्ठ नागरिक, सामाजिक कार्यों में अभिरुचि, राप्ती नदी के कछार क्षेत्र में पेड़ लगाओ-हरियाली लाओ अभियान चला कर वृक्षारोपड़ में बढ़ावा के प्रति कृत संकल्पित। आवास : ग्राम-सेमरा बुर्जुग, पोस्ट-सेमरा खुर्द (बड़हलगंज), गोरखपुर। ये इं. सिंह के मामेरा भाई हैं। मोबाइल : ८४७०८००३३५।

तृप्ति सिंह (सन्नो)

सुकण्ठ गीतकार एवं कवयित्री, 'नारी-मन के भाव' काव्य संग्रह की रचयिता, छः से अधिक पुस्तकों में साझा काव्य प्रकाशित अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में भी काव्य प्रकाशित, कइ संस्थानों से सम्मानित एवं पुरस्कार प्राप्त। पता-फ्लैट नं० ३१३, सर्वहित अपार्टमेन्ट पॉकेट, सेक्टर १७, द्वारका, नई दिल्ली-११००७८१। ये इं. सिंह की भांजी हैं। मोबाइल : ८९३३८८३०४७, ७९०५९२३७७१।

अनिल प्रताप चन्द

इतिहास विद्, पूर्व प्राचार्य, शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर। ये इं. सिंह के भतीजा हैं। आवास : शान्ति तेज सदन, ७६ ई, कालेपुर-गौतमनगर, गोरखपुर-२७३००९।

मोबाइल : ७५७१९८४०८८, ९४७३८३०४६७।

इं. त्वेष प्रताप चन्द 'उत्कर्ष'

को-फाउन्डर एण्ड पोर्टफोलियो मैनेजर, इन्वेस्टमेन्ट एण्ड डेविट सालुसन, जनकपुरी (वेस्ट डेलही)। ये इं. सिंह के पोता हैं। स्थायी पता : शान्ति तेज सदन, ७६ ई, कालेपुर, गौतमनगर, गोरखपुर-२७३००९। मोबाइल : ९७७३७५७३५५।

www.bhojpurisahityangan.com

जय प्रकाश सिंह

अधिवक्ता, दिवानी, कचहरी, गोरखपुर। ये इं. सिंह के अनुज हैं। आवास : ७६, कालेपुर, गौतमनगर-गोरखपुर-२७३००९।

मोबाइल : ९३८९२४५०३१।

डॉ० सरोज सिंह

महिला इन्टरमीडिएट कालेज, बासगाँव में शिक्षण कार्य से सेवा निवृत्त, हिन्दी व भोजपुरी साहित्य पठन-पाठन में अभिरुचि। ये इं. सिंह की अनुज पत्नी (भयहू) हैं। आवास : ७६, गौतम नगर, कालेपुर-गोरखपुर-२७३००९।

डा० विभा सिंह

भोजपुरी एवं हिन्दी काव्य तथा कथा साहित्य की अध्येता। मंच संचालक। असिस्टेण्ट प्रोफेसर दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर। ये इं. सिंह के भांजा-पत्नी हैं।

मोबाइल : ९९३५७४२७५४।

डॉ० सुबास शाही

पूर्व प्रधानाचार्य, गाँधी इन्टर कालेज, महुआपार-गोरखपुर, प्रखर वक्ता, व्यवहार कुशव व्यक्तित्व, माध्यमिक शिक्षक संघ के गतिविधियों में रुचि। ये इं. सिंह के बहनोई हैं। आवास : ग्राम-पोस्ट-महुआपार-, जनपद-गोरखपुर। मोबाइल : ९९३६३७२०२८।

सुधा शाही

जूनियर हाई स्कूल के प्रधानाध्यापिका पद से सेवा निवृत्त, कुशल शिक्षका। ये इं. सिंह की बहन हैं।

आवास : ग्राम-पोस्ट-महुआपार, गोरखपुर।

मोबाइल : ९००५४५३९०२।

भोला नाथ सिंह

समाज सेवक, हिन्दी कथा साहित्य में अभिरुचि, इं. सिंह के अनुज। मोबाइल : ९६८२१०७८७०।

नर्वदेश्वर सिंह

हिन्दी एवं भोजपुरी के कई पुस्तकों के प्रणेता। भागवत कथा एवं बगइचा बहुचर्चित रचना, कइ पुस्तकें प्रकाशकाधीन। सुकण्ठ गीतकार। सेवा निवृत्त प्रधानाध्यापक, कई संस्थाओं

www.bhojpurisahityangan.com

से जुड़ाव के साथ समाज सेवारत। आवास : ७ के/२, भाऊ साहब देवरस कालोनी, राप्तीनगर फेज चतुर्थ। मोबाइल : ६३०६५५४८५५।

प्रो० (डॉ०) जयकान्त सिंह 'जय'

विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग, केन्द्र लंगट सिंह कालेज, बी०आर० अम्बेदकर विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर (बिहार), महामंत्री-अखिल भारतीय भोजपुरी सहित सम्मेलन, पटना (बिहार), राष्ट्रीय संगठन मंत्री-विश्व भोजपुरी सम्मेलन, देवरिया (उत्तर प्रदेश), संयोजक सदस्य-सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (छपरा), चालीस बरिस से भोजपुरी लेखन आ आन्दोलन से सम्बद्ध, व्याकरण आदि के अनेक पुस्तक प्रकाशित। कई अभिनन्दन ग्रन्थ, पुस्तक आ पत्रिका के संपादन, अनेक प्रांतीय, राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान आ पुरस्कार से सम्मानित आ पुरस्कृत।

डॉ० रामजनम सिंह

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, महाराणा प्रताप इण्टर कालेज, गोरखपुर, कुशल शिक्षक, प्रखर वक्ता, महाराणा प्रताप शिक्षण संस्थान के सजग प्रहरी। कई पुस्तकों के रचयिता, शालीन लेखक। मोबाइल : ९४१५२४६१४६।

धर्मेन्द्र त्रिपाठी

कुशल शिक्षक, विचारक एवं समीक्षक साहित्यकार, अध्यापक-श्री गाँधी स्मारक इण्टर कालेज हाटा, कुशीनगर।

आवास : एल०आई०जी०-१५, राप्तीनगर चतुर्थ, चरगाँवा, गोरखपुर। मोबाइल : ९४५१५१३२३८।

डॉ० अवधेश कुमार सिंह

शिक्षोपरान्त लगभग चालिस वर्षों तक स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर रसायन विज्ञान का अध्ययन, अध्यापन एवं शोध-कार्य, वाराणसी स्थित हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रसायन विज्ञान के अध्यक्ष पद से सन् २०१४ में सेवा निवृत्त। ये इं. सिंह के बाल-मित्र हैं। आवास : ५०, दुर्गा बिहार, भरलाई-शिवपुर-वाराणसी-२२१००३।

मोबाइल : ९९३५३९४८४८।

डॉ० ब्रज भूषण मिश्र

भोजपुरी साहित्य सृजन का कई दशकों से प्रेरणा स्रोत व विभिन्न विधाओं में पुस्तकों के सृजन कर्ता, अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन से विगत चालीस वर्षों से जुड़े वर्तमान

www.bhojpurisahityangan.com

में अध्यक्ष पद सुशोभित कर रहे, अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित। आवास : श्रीनिलयम्, आदर्शग्राम, रोड नं०१, कोल्हुआ-पैगम्बरपुर, मुजफ्फरपुर-८४३१०८।

मोबाइल : ९९०५०३०५२०।

पूजा सिंह

आंग्लभाषाविद् युवा साहित्यकार, दक्ष मंच संचालिका, पाक शास्त्र में निपुण, हुनरमन्द व्यक्तित्व, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अभिरुचि। ये इं. सिंह के ज्येष्ठ पुत्र बधू हैं। आवास : ८/१७१, करियप्पा विहार, दिल्ली कैन्ट।

मोबाइल : ८३४२८३८१७२।

ले० क० नवीन सिंह

भारतीय सेना में लेफ्टीनेन्ट कर्नल पद पर रहते हुए राष्ट्रसेवा। राष्ट्रसेवा करते हुए अपने मातृभाषा (भोजपुरी) में रुचि रखना। ये इं. सिंह के ज्येष्ठ सुपुत्र हैं।

मोबाइल : ९५८३५३५३६७।

डॉ० सदानन्द शाही

सीनियर प्रोफेसर, हिन्दी विभाग-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (अवकाश प्राप्त), भोजपुरी अध्ययन केन्द्र के संस्थापक समन्वयक, कुलपति श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, छत्तीसगढ़, निदेशक-प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, सम्पादक-साखी एवं कर्मभूमि। आवास : एन. १/२, बी.डी.ए. फ्लैट, नरिया वाराणसी-२२१००५

मोबाइल : ९४५००९१४२०, ९६१६३९३७७१।

वीर बहादुर चन्द (एडवोकेट)

वरिष्ठ अधिवक्ता, तहसील गोला, समाजसेवी व अध्यक्ष-मुक्तिधाम सेवा समिति, गोला-बाजार गोरखपुर (२७३४०८) आवास : गोला बाजार-गोरखपुर।

मोबाइल : ८२९९८७३५०४

डॉ० रामसमुझ

पूर्व आयकर आयुक्त, शोध आधारित सोशियो इकोनामिक्स समस्याओं एवं उनके समाधान सम्बन्धी गम्भीर समस्याओं एवं उनके समाधान सम्बन्धी विषय पर लेखन कार्य। आवास : तारा मण्डल, गोरखपुर एवं गोपालपुर-गोलाबाजार, गोरखपुर।

मोबाइल : ९७९४७०७५२२

www.bhojpurisahityangan.com

अनिल यादव

व्यवसायी एवं कई धार्मिक संस्थाओं से सम्बद्धता। इं. सिंह के बालसखा जयनाथ यादव के सुपुत्र हैं। मूल निवास : ग्राम-रकौली, पो०-गोपालपुर, जिला गोरखपुर। वर्तमान आवास : गायत्री नगर कालोनी, पाण्डेयपुर-वाराणसी

मोबाइल : ९४१५२२१७४४

डॉ० अशोक सिंह

राष्ट्रीय महासचिव, विश्व भोजपुरी सम्मेलन, अध्यक्ष-जीवनदीप चैरिटेबल ट्रस्ट, बड़ा लालपुर-वाराणसी। भोजपुरी साहित्य सृजन में विशेष रुचि।

कार्यालय : सिंह निकेतन, एस. १७/३३१-जे, मलदहिया, वाराणसी।

मोबाइल : ९११५१९९८००

ध्रुव चन्द

शोध परक साहित्य सृजन में रुचि।

आवास : वार्ड नं० ५, बिसरा नगर पंचायत, गोला बाजार, गोरखपुर।

मोबाइल : ८९२२०२४२९४, ८८४०६३८९४८

❖

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

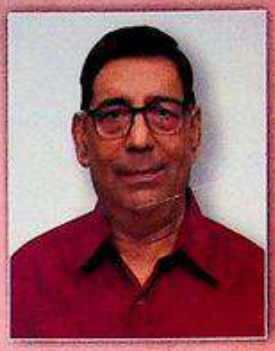


अद्भुत वैदुष्य के धनी इंजीनियर राजेश्वर सिंह जी के व्यक्तित्व और मस्तिष्क की विशालता का सबसे बड़ा प्रमाण है कि इनमें बहुत ज्यादा विविधतायें हैं। वे अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा के बल पर तो एक ओर सिविल इंजीनियरिंग में अच्छे अंकों से बैचलर तक की डिग्री लेकर अपने परिश्रम, योग्यता ओर क्षमता के बल पर उ0प्र0 जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद पर सेवा देने के बाद अवकाश प्राप्त होने पर बिहार सरकार के नगरीय विकास विभाग में वरिष्ठ सलाहकार के रूप में सेवा प्रदान किये। तत्पश्चात् दूसरी तरफ दर्जन पर भोजपुरी भाषा में उच्चकोटि की मौलिक और संस्कृत भाषा से अनूदित साहित्यिकी कृतियों का प्रणयन कर भोजपुरी भाषा के साहित्यकारों में प्रतिष्ठा अर्जित की है। अनूदित कृतियों से लगता है कि राजेश्वर जी की अभिरुचि भारतीय दर्शन और अध्यात्म की तरफ गहराई तक पहुँची है। 'योगीकथामृत' जैसी अनमोल अनूदित कृति के द्वारा राजेश्वर जी ने एक महान योगी जिसकी जन्मभूमि गोरखपुर नगर है, को भोजपुरी प्रेमियों के समक्ष प्रस्तुत कर, एक गंभीर और श्लाघनीय कार्य किया है।

- डॉ0 आद्याप्रसाद द्विवेदी
(अतिथि सम्पादक)
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
सतीशचन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया
पूर्व अधिष्ठाता, कला संकाय,
पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर
मोबाइल : 9450639170, 9415632538

www.bhojpurisahityangan.com

इं. राजेश्वर सिंह के परिचय की पारदर्शियाँ



पूरा नाम - **इंजीनियर राजेश्वर सिंह**
माता - स्व0 परमजोता
पिता - स्व0 समर बहादुर सिंह
जन्मतिथि - 4 अप्रैल 1950
जन्म स्थान - वार्ड नं. 9 गोपालपुर (गोला), जिला-गोरखपुर-273408
शिक्षा - बी. ई. (सिविल) वर्ष 1973, एम.एम.एम. प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर
वर्तमान पता - एम.आई.जी. 77, राप्तीनगर प्रथम, गोरखपुर (273003)
पूर्ण व्यवसाय - उ.प्र. जल निगम में अधीक्षण अभियन्ता के पद से अप्रैल 2010 में सेवानिवृत्त, बिहार नगरीय विकास विभाग में लोक स्वास्थ्य अभियन्ता के रूप में वरिष्ठ सलाहकार।
मोबाइल – 9415208520
ई-मेल - rajeswarsingh1950@gmail.com

सम्मानोपाधियाँ :

- भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा '**महात्मा ज्योतिबा फूले फेलोशिप सम्मान।**'।
- राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा पुरस्कृत।
- राहुल सांकृत्यायन स्मृति समिति आजमगढ़ द्वारा '**प्रेमचन्द सम्मान।**'
- सनरोज संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा '**मेलोडी सम्मान**' 2006।
- हिन्दी सेवा संस्थान कुशीनगर द्वारा '**हिन्दी साहित्य सागर सम्मान**'।
- '**आध्यात्मिक रत्न सम्मान**' सूफी साहित्य कृति 'जिस्म से रूह तक रौशनी-रौशनी' पर खानकाह सूफी दीदार, चिश्ती, ठाणे-मुम्बई द्वारा।
- विक्रमशीला विद्यापीठ भागलपुर (बिहार) से सम्मानोपाधियाँ '**विद्यावाचस्पति**' '**विद्यासागर**', '**भारतीय भाषा रत्न**' एवं '**भारत गौरव**'।
- '**साहित्य कला शिरोमणि**' सारस्वत सम्मान अखिल भारतीय हिन्दी भाषा सम्मेलन वर्ष 2011, भागलपुर (बिहार)।
- मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कालेज, गोरखपुर (उ0प्र0) के एल्युमनाई एसोसिएशन द्वारा वर्ष 2011 में **सामाजिक कार्यों में योगदान** हेतु सम्मानित।
- 'संगम सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था' गोरखपुर द्वारा '**संगम साहित्य सुमन**' सम्मान-2020।
- नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति न्यास गोरखपुर द्वारा भोजपुरी साहित्य सेवा के लिए '**नागेन्द्र नाथ सिंह स्मृति सम्मान**'-2021।
- सरयू अमृत महोत्सव-2021 द्वारा भोजपुरी महाभारत लिखने पर '**सरयू रत्न सम्मान।**'।
- भोजपुरी विकास मण्डल, सीवान (बिहार) '**संत कुमार वर्मा साहित्यकार सम्मान-2021**'।
- अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा किताब 'श्याम पियारा साधु-सन्त' पर '**हरिशंकर वर्मा पुरस्कार**' वर्ष 2023।
- विश्व भोजपुरी सम्मेलन द्वारा '**डा0 विवेकीराय स्मृति सम्मान वर्ष 2024**'।

ISBN : 978-81-87760-54-2